यअभिकाकेन्ध्र



ヌダインス・ガー

善'翌二'प्र'य'ळे ज'२।

सहर्भरिके ननमून भने।	3
रेग्रास्त्रस्त्रस्त्रसर्वेग्रास्तरः भ्रुःनः निर्यस्तिः स्त्रा	3
धॅव ५व नहेश मदे छ्वाय महिश	4
নমূর্দ্রের্ন্ত্র্র্ন্ত্র্র্ন্ত্র্র্ন্ত্র্	9
कें राजी के प्राप्त सेव स्वा	14
नश्रुव्रामात्रस्था उत्। त्याया सेत्। तुः हिंग्या सामे हे हे । या	
नश्रुव:म'दे	14
गशुर:रन:बस्रशःउर्'ग्रम्स्रशःदग्'तुःवळर:न'ते।	19
क्यानवेर्नोरश्यानने स्वारिक्षेत्रास्त्री	24
हेशः श्रुट् । क्रेवः सं : स्टायमायाया था शुः पर्मे । नि	24
के न गहिषा न में देश के बारा हिष्ट मान है न	
হ্য'ন'শ্যবাধ্যুমা	26
क्र्याक्ष्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	26
क्रॅशन्न्द्रायंत्रकुषायान्नि।	35

सह्या. पृ. श्रुव से र-५ म्हे - १३ र-५ - १	40
यसःग्रीः इत्यानिष्यामहेत्रः महेत्रः पदेः द्धयः प्रा	41
देशमानभुद्रमधेरिष्ठ्रमञ्जूदावदार्श्वेषानेनमभूदायादी	41
नक्षेत्र ग्रु: न्यो : नवे : न ले श माहेत् : ग्री : सळंत : हे न : ते ।	43
गिवेशाया क्षेत्र होता क्षेत्र होता स्व	48
नेशने हे सूर प्रहेत प्रते खुष दी	50
নমম:নম:নমূর:দের:ক্র্ম:ন্দ্র	51
र्श्वे र नश्चेत्र रहेवा दे।	60
नक्षेत्र'मदे'मद'र्षेत्र'दे।	63
य नश्रेव परि हे य प्री याय दी।	66
शुँट रहे या सर्देर न सूर्या ने न सूर्य पाया विश्वा	70
शुँदःक्ष्यःद्रिशयःयाद्गेशयश्रा	71
ने ज्यः वें वा हें वा नवावा य दी	88
न्यानवे हेत्या श्वेराचे त्वरानवे श्वेरान्य सुवान प्रा	100

त्रः से 'त्या यहीं सः से अपन्त हुरा ना प्रोहेश	100
न्यायर्चे रार्ने वाळे पायम्यायां वे।	103
विव फु के प्रमाय प्रमाय सम्माय की	107
त्रम्भेदे दे इस म्वावना त्य देश मान मुर्ने द स्य मित्र	112
श्चेशःतुःगश्चराश्चीःययःतुःगश्चरःस्नःत्रयश्चरः	
तर्नु प्रते कुषा न <u>ि</u>	112
श्चेरान्यम्बर्धान्यान्त्रीःश्चर्यान्यस्त्रीःश्चर्यान्यस्त्रम्	
ব্দ্রিব্-মন্ত্র-মুক্রবা	114
श्चेशनुःकुरः ५ ५ ५ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	127
कुट.रि.यश्रम्भाराःश्रुटःयःर्द्रमायःयित्रेश	127
वहिना हेत श्री स र्नेत निहेर मी हैं निहीर प्राप्त निहेश	127
वहिया हेत विरेर रेर रेर रे अयात्र राय के या हे रा शु	
इक्'रा'नश्रस'रा'य'नि	128
वक्रेन्द्रन्यः या नर्ज्ञे ययः यदे हे या द्ये वा या वे ।	128

नर्भे सम्भागित्र सम्भा	130
दक्ठे'न'इत्र्यदे'र्ह्ने'हे'सू'तु'विग्'नर्भुेट्'य'वे।	132
दक्ठे'न'इत्र्न'से'हे'सूर्न्न क्रिंस'स'दे	134
देश'सम्'दक्के'न'नश्रथ'मंत्री	139
व्यापके देश से प्राचित्र व्याचा स्थापन	141
व्यापके देश से प्राचित्र व्याचा स्थापन	145
दक्ठे नदे कें कें अया विवाध मान विवाध मान विवाध मान	
भ्री स्व स्य स्य स्य स्था शुभ दी	146
वहिना हेत ही अर हे सूर वर्गुर न वर्गे न निहेश ही	
नने सूना नससम्बन्ध	149
र्शिकायपुर्भेया.यर्षकायश्वातात्वायुर्वे	151
र्ट्रात्स्र्रिः स्वानस्य नस्य म्यान्त्रे।	161
ল্য-ব্রামান্ত্র-মূলানমূলানমমানারী	163
व्हिना हेत् श्री अर नदे नवे वन्य नक्षेत्र राज्य निहेशा	171

न्गार क्या

नश्रुव रायायह्वा राये श्रुन्य राश्चुन्य पर्मे	
शुर्-तिःयःति।	171
याट.ज.यध्रेय.अभियश.शी.वर्ची.यषु.ची	171
ने त्यानहेत् त्या भुन्या शुःदर्शे प्रदेश खुवा वा विश्वा	172
हे.६म.मुभ.भूनम.श्र.शूट.चतु.क्व.तु।	175
श्चित्रश्चार्श्वरात्रम्य स्त्रात्रम्य स्त्रात्रात्रम्य स्त्रात्रात्रम्	186
यरे.ज्येयाश्वाश्वाश्वाश्वार्थः क्षेत्रः कष्णेत्रः कष	
নষ্ট্রী সু:মান্যান্যান্ত্রা	205
অমান্ত্রমান্ধ্রী মান্তমানান্ধ্রমা	205
श्चेरःनश्रमः खुषः न्द्रश्रयः निवेष्यश	206
श्र.श्र.में.भें.यश्रश्र.त्य.याद्येश	211
वे.चर्चा.धे.चर्चाराच्ये	244
र्ष्ट्रेनर्भःचित्रःश्रुटःचितःस्यःदे।	253
श्चेशन्तुःवर्त्तेदःद्वदःश्चेदःविदेःवयःग्रीःदेयःदःवः	

न्गान्र:ळग

র্ন্ন স্ত্রা	265
नससम्बुद्दन्द्रस्यायाष्ट्रस्य	267
सूना नित्र दिस्र नित्र के अन्ये निया अन्य अस्य सि	269
त्रिंर.य.श्रेष्ट्रेया.यश्रयायश्रया	272
য়ৣ৾য়ৣয়ৣয়	295
गुर्व प्रमुद्द मी क्षे र्व्य प्रविद्द निर्म स्थान्य स्थान	
শৃপুষা	299
हेंब्रह्मरमायिः भ्रेष्ट्रिक्ष्याची	299
देशत्वश्चार्श्रम् स्वरिष्ट्रवायाम् हेश	306
दक्षे पर्से न न न हो न सक्षा राष्ट्री म स्कूषा या था था	311
हेव'यत्रेय'मञ्जाहेश'ग्रे'क्रॅं'व्यामययाय'यवी	320
बर-सर-वर्ग्रेट्-सदे-लक्ष-ग्री-स्ट-विव-गान्व-लः	
ব্ৰন'ম'ৰ্ব্য	337
हेवःद्देः कृत्रुरा वित्रः यः यक्कियाः यः प्रा	339

न्गार क्या

यसहिष्ट्रातुःविषाःनर्द्वेस्रयःस्रयःनर्ह्वेषाःसदी	344
श्चेशन्तु केत्र रेदि यस ग्री रेस या	361
वेगा के दाष्ट्री पहुंगा क्षें से समान क्षेत्र मिन्दर न क्षेत्र या प्रा	364
शेसशरे हे सूर नश्चेर पदे खुष य नि	371
कु मार ल नहेन न र हे १ दूर हो न ल मा राज्य राज्य ।	372
त्रुट्ट कुर्व ग्री सेसर्थ श्रुट रवंदे देस य वि	376
यव्द्याः कुः त्रज्ञ्यः नत्त्र्वः यः न्दः।	376
פֿתיבּ ביתוימינו דיבואריבי אוריב ביבואריבימי	
वेग के द शी प्रथा शी हारा के दा है र न क्ष्र र पाया	
याश्वरायश	377
শ্র্মশ্র্মা	381
মার্মান্যা	381 382
स्वाप्त्रम्यम्। स्वाप्त्रम्यम् स्वाप्त्रम्यम्	381 382 385

वि'न'स्दे'मावुर'यान्हेन'न्य असूर'न'या सुरायशा	402
नन्गामान्वर नहें नदे सव धें व न्य स्थानहें अ पदे	
हेशन्भेग्राग्याययान्ते।	402
नन्गाम्वर नहें नदे नश्याम में स्थान नश्चे न सर	
तुर्यायाची	403
नन्गाम्बद्गान्हे नदे मेग्रास्यस्य द्रस्य नहीं स्राप्ते सुंया	406
क्टॅ.चार्याच ब्राट.च.ची	413
अ.बूच.स.बूच.सर.बुट.ज.चाश्रुश	413
र्चेच.रा.भु.धेशश्रासर.यश्रीट.च.जा	422
विषयायः मुन्तर्भ्यात्रा हित्याया	435
शेशश्चान्त्रेत्रशङ्कित्यायाः हिंदाः द्वायाः वाश्वा	439
शेशश्चान्त्रेत्र्यान्त्र्यान्याः ह्यान्त्रेत्रान्त्रेत्र्यान्त्रेत्	440
व्यथः भेषः रे:रे:यः यः यक्ष्यशः यथः श्रद्धः कुषः	
शे'द्युन'पर'नभूद'प'दे।	441

वेग्'यः केत् 'सें ह्ये 'यः नक्ष्रयः कुंयः द्राः	460
र्श्चे न्यः श्चे न्यः श्चे नः मदे रहे यः न्दा	471
<u>ম্বাম্প্রক্রিক্র ক্রিক্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্</u>	
सर-ध्रेत्राय:र्ज्ज	471
श्चेत्रामदेःसम्भित्राम्भूनाकुषायानि।	472
क्ष्याचित्रमाग्री सम्भित्र त्रुतायाष्ट्र	504
यबूर्रायद्रायराष्ट्रीय.क.यश्चराक्ष्याक्षा	514
यक्र्यंत्र्यीश्राम् स्रीयं यश्चराक्ष्याताःक्ष	548
বশ্বমান্ত্র শ্রী শ্বম শ্রীর অ'বাশ্লুবা ক্রিঅ'অ'থু।	578
नेशम्बर्गीःसम्ब्रित्यानश्चनःद्धयायाः	580
ग्वित् भ्री कुर क्षेत्र प्रम् भ्री प्राप्त कुर प्राप्त के प्राप्त कि प्राप्त	596
विट्रायर:र्नु। यर:ध्रेवः श्रः याद्वेशः यः नश्चनः यः वे।	604
র্ম.পুর্ব-প্র্বান্যপ্রমা	624
वि'यावर्थ'ग्री'र्कें यार्थ'यर्डेव'र्य'वे।	624

न्गाम:ळग

ने या नहेन न रावे पान राज	627
र्श्वे र न दी	627
न्ह्र्यावि.क.मध्रा	627
सुर्याग्री:र्श्वेन्'ययाहे'यन् नर्यानर्श्वेयामाने।	628
नर्झें अ'रावे'रे अ'रा'हे ८'रा १९ प्रा'ते	629
हिरारे वहें वा श्रीवा से पार में के पार पार पार में के पार	632
शेसशन्द्रीम्शन्यःयामिन्यते स्विन्तः हैं त्रुनः हुः न्युनः ही	632
शेस्रशम्दार्थः वर्हेग् । यदे गावि । द्रियाश्वारा	
それで見てでてい	634
ने त्या से समाहे न्यून पाहिन प्राये कुषा या पासुसा	652
न्स्रेग्रामायायात्रन्यये दिंगा तुः हे सूर्य ज्ञानाया विश्वा	664
ने 'व्य'नहेत् 'त्र्य' शेयय' न्व्य स्त्रे 'न्वे 'नेय' नेय' व्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाया	684
नर्स् सम्मान्त्र वि नात्र मानु नात्र कि न ना मानु मानु मानु मानु मानु मानु मानु	693
वि'ग्रव्यायः नहेव'व्याययः नर्गेन्'मिटे खुंया	

श्चेर्प्रस्त्रभ्त्रा	710
विट्रायर:र्नु पहिना हेन् यदे यस नर्गे र् खुषः	
নমূর্ম্মান্যান্ট্র্মা.	717
म्या सर्हेर या न स्वा रहेर स्वा या न नि	732
ध्रुमा अर्चे र मी र्के मार्थ पर से त र में त र	732
इर-र्नेब-५८-८-४-र्नेब-क्री-माश्चर-र-व-र्नेश-माञ्चर-व-५८॥	733
त्युः श्रुवः ग्रीः द्वीं हर्यः यः द्वीयः वदेः खुंयः हेः कृतः ग्रुदः वदे।	737
क्रूट्राच हिट्रा मुक्ता वाह्य वादिव वादि स्टूब्य वाद्य हिया .	741
ने किंत्र ना हत्र त्यान् न न या निर्देश त्या ना शुर्या	747
र्मन्यायान्त्रः स्थान्य स्थान्	748
न्याया ग्रु खेया या सम्मेया जेता न्याया ग्रु खेया या सम्मेया जेता विकास में सम्मेया विकास में सम्मेया विकास में	748
न्याया ग्रु:र्रेश्वा संत्र विष्या मान्य विष्य स्थ्या श्र	
न्यायाः सः याहे या.	749
न्याया ग्रु:र्रेश प्रहें द 'इ' उद 'छ्रिय के श'रा 'द्याया'रा थ'	

न्गाम:ळग

সৃষ্টিশা	749
सुग्रभाने सान्तुःसदेः बुद्रासें मायो द्वारा से स्वार्थितः से स्वार्थितः स्वार्थितः स्वार्थितः स्वार्थितः स्वार	
নশ্বান্যম্নস্থ্রা	752
५५ ⁻ ४८ १५८ के ४६ ४८ वर्ष १८० वर्ष १८	752
ख्यायाने याने हे सूर रामाया रादे रहे वा दी	764
ने 'व'न्तु' स' प्रस' त्यत्र 'हे 'क्षूर' नित्र प'ते।	767
गर्वे र छे र र वे हे र र र इसस छी स सुद से छे द र र र	
নমূর্ম্মশ্যমনী	783
देवाश्वरश्य न्युन् नर्वेन् स्री नर्वेन् नम्याश्वर्य नगाया नश	
शुन्दिन्नेन से नुरूप पति	783
ळ्ट. भन्नः चीयः मचीयः यहेवान् अत्यन्त्राच्याः सन्नः श्वेतः वर्ष्टीयः	
भे.व्यामन्	793
য়ৢॱनविदेःয়ৣे'न'धेव'सेव'नह्ग्रथ'व्यायात्रेग्'मश	
शुव्राविवासी वुर्यासम्प्रम्भवासी	819

न्रें अर्थे प्रेन् सेन् सेन् संग्रास्य स्थानिया प्रमेन् स्यानेन् स्थानेन्	•
र् जी:र्रायम्प्रम्यःपादी	824
न्याया ग्राम्बार स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स	831
रट.खेबोश.कु.टेबोबो.चे.टूश.च बेट.च.ल.बोश्रेश	841
न्हें अ'ग्री'नें ब'न्याया' ग्रु'हें अ'न बुद्द न'वे।	842
ने नियाया श्रीयाविष्ठ त्या श्रीय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्	858
नवावा ग्राया में तर्म श्री श्रिन्य स्थ्री माने स्था श्री माने भी	861
न्वाया ग्रु त्यों या य में प्रवास्या स्ट याद यो अ ग्रेन् या व्याया है आ	869
वयः स्टःगे देवः देशः ग्राबुदः च दे।	869
ने महिरासुदे हे यासुप्तज्ञत्यात्रयात्रयात्र्याः	
नश्चेत्रपन्ते।	928
व्रेन्-सन्-त्यानहेत्रत्र्याक्ष्मानः कुन्-त्यानश्चेन्-प्रदे कुवावा	
শ্ৰুষা	929
ग्राम्यामी प्रद्यासे द्याह्र स्याद्य प्राप्त स्था	930

ने त्यानहेत्रत्रभाग्नार व्या श्रुःसाम्न तुर तकर निरे र्द्धाय दे।	957
क्रूज्ञ.चर्या.स्रेर.योध्य.त्यच.त्र.ची	972
क्षुनिन्द्रमार्ग्वेसस्यस्य श्चेन मर्श्वेद्दर्ग्व स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः	985
ञ्चनाः अर्चेदः मी 'र्नः पुः प्रे ने ने ने ।	992
न्नेया.शर्त्रूर.यश्च्रीश.राषु.क्षंत्र.ता.योध्रेश	997
क्षे.च.ट्रे.जशक्षेच.शबूट.श्रु.खेच्यश्ची	1010
श्चिरःद्धयःश्चेःम्बर्ग्नश्चरानश्चा	1025
नर्से समाममाञ्चना सर्वे दानुन पिते क्वित् ने ।	1029
	1034
यसःश्चेदिःर्देव्यस्य	1038
2222	1042
<u> ५५२ जुर र्</u> र्ड्से द केंग	1049

र्थेव से रा

य विद्या अनुवास विद्या स्वास्त्र स्वास्त्र विद्या स्वास्त्र स्व

शेरःश्चरःन्यरःवह्यःन्जुरशःनशेन्व्यशःग्रेश

नेन'नर्डेश'डेव'रा'क्स्स्रार्श्याप्तर्गेरा'व'र्नु'कु'कु न्वर्राप्तेव'सेन'र्नु'स्वरार्केग









বহী শান্ত মান্ত্রী ব্যাহার iBooks র্জির ক্রী ব্যাহার বিশ্বর প্রথম ব্রাহার ক্রিয়া ব্যাহার দিয়ার marjamson 618@gmail.com

७७। | त.स्.ची.मे.सहै.क्रे.पि.ता सेय.क्र्यायारची.ज्यायायाची.ययायश्चित यदे भ्रा विषय प्रश्रादर्शे प्रदेश में प्रश्री विषय विषय विषय विषय नविन निवास मित्र म बेर्भ्रेवर्रिन् र्यं देशी श्रूर्यं श्री अर्केन । कुलानदे सह्दारा गुवर्शी हिरानश्रूर्यं वश । ग्राम्यासेन्दिरःनुः श्रुवामयाः इसार्मेवान । सी समावहसामितेः न्वरश्रायाञ्चनात्रस्याये । विदानुन्यनायरान्नायान्य स्त्रायाः है निवेद निर्मेर्य प्रायमेय सहन पह सामिर मुद्रा भिष्मेय में निर्मेय सेन डेशर्दे शयाशुस्राम् । पिर्मासु म्याम्याया प्रति विनया या निर्मा सुना पर्काया। निटम् केत्र में महिश्रायशयेग्या नक्त्र प्रो । वर्ग सेंदि सुन क्रुं केत्र हें द नदे सेन । भूषान वर वर पर नर्जे द पदे पहुन रेन साम सर्वेन । नरे पर नर्भेर्द्रान्द्राचनश्चात्रश्चा । वार्यवास्त्रम् वार्वेशःवाहेतः क्रम्भायान्यम् । नेटान्माक्या । नेटान्माक्यान्यम् । नेटान्माक्यान्यम् । क्ष्टा । अट.ब्रॅंश.क्ष्रश्राचेत्र.वात्रद्र.वा.श्री.श्रावश.क्षेट्राविता.क्षेट्र.वाश्रुटः

र्यायक्षेत्राह्मिश्चर्त्वः स्था । श्वरः द्वः स्याशः स्थाः प्रवेदः स्थाः । प्रमुद्धः स्थाः स्थाः स्थाः । प्रमुद्धः स्थाः स्थाः

বর্দ্রমান্ত্র বাধ্যুদ্রম্ম প্রস্থান্ত্র প্রাথ্য বা केत्र में त्यु क्षूत्र प्राचित्र केत्र यो है या यो व्यय के या प्राचय या विवास के या प्राचय या विवास के या प्राचय या विवास के य सिंद्र रादे सर दर्शे रादे क्रे र्ने सर्वे गाने के सार्याया क्रे सान्या सुरा ग्रेशक्षराशु त्रूट निर्देश देश प्राचयर उत्या क्ष्या स्वाचित्र स्वाच्या स्वाच स्वाच्या स्वाच्या स्वाच स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स গ্রদ:ক্তুন:অম:গ্রী:বेম:ঘর:শ্লী'ব্ম:শ্লুঅ'ন'দ্দের'ম'মন্ম:শ্রুম:গ্রী'মদ: विष्ठित्रप्रवे रक्ष्या है यादान अदाय स्त्रा निष्या देश है वि यविश्वास्त्रस्थरात्ते श्रूचान्येव ग्रीत्वान्यान्यान्याः श्रूचायदे श्रून्यायः ८८। यन्द्राचित्रःक्रिंश्चार्याः स्त्री द्याः याश्वर्याः चीः स्त्रीः स्त्रिंश्चर्याः स्त्राः विश्वर्याः स्त्री धराविदाया त्राष्ट्रीयादे विष्याया विषयर वसूत्र धादरावया देवे यप्रयास्ययादी केंया है या पार्टिय के पार्ट्य केंया है। के पार्ट्य है है। *ख़ॣॸॱॸज़ॸॱऄॸॱढ़ॺॱॺय़॓ॱख़ॖख़ॱॻऻॶॖॺॱऄॕ॒ॺॱॸॖॱॻॺॱख़॓ॱॸॸॱॸॿ॓ॸॱॺय़॓ॱख़ॖख़*ॱ यिष्ठेशः हुरः वरः य्वायाश्वाराः यश्वारदिरः देः द्वीः अः स्ट्ररः वलदः यरः हरि।।

ने 'क्षेत्र'व' ग्रह्म 'क्ष्य 'या या विष्ठ के 'या प्रदेश क

सहर्पार्यदेशके नामसूत्रापादी

हेत्र'ने'य'र्षेत्र'हत्र'नहेश'र्यरे'र्छ्य। नहेश'त्रश'नश्रुत्र'य'यान्चुन' सहन्पितेर्छ्य'र्ये। ।न्न'र्से'ते। वेर्ड्र'न'केत्र'स्त्रण'र्केश'सहन्पितेः नर्हेन्य'नक्तुन्द्र'य'यथ। अन्'र्सेम्थ'न'र्हेन'र्ण्य'सर्केग'त्।।ने'त्'र्सेन् स्वा विक्रान्त्राम् स्वाप्तः स्वे न्याः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्व

धॅव 'नव 'नक्रेश' मदे 'कुं या या पि श्रा

 हिर्म्सर्रुक्षित्वर्षे स्विभागवेषाः स्वाभावेषाभाक्ष्राची स्वाभावेषा नास्रवःस्राञ्चेःर्रेषःसदेःहेनाःनोःनःस्रानसःसरःन्यनासःसःविनाः८८ःनइ८ः नशने नश्यानम् सहिन् नश्यास्त्रम् निर्माणे नामा सामा मुन्दि स्तर्भा निर्माणे ख्र-भक्तेवर्भे मुख्र-भेष । दे वर्षा दे वर्षा भेषे मुख्या वर्षा । वर्षा हित्र मुख्या वर्चेराम्ची:नवराद्व्या:नमयाम्ची:हेरहेवे:बयायांचेयायाःवीराहेरहे सावदः वर्त्ते अर्थासुर नसूत्र पार्चेन पार्वे त्रु सा दू दु त्या त् वृष्ट्र त्या द्या है। हैंग्रयास्य तुर्यानेता ग्रयत्यळ दाये भेराग्रयत्य हे हे वेया ग्र नर-नम्बाबाने न्वादावे केराद्या कुंबा कराया देश या ना बहु बाय दे मुःसःनुःसदेःश्रुदःश्रूनःहेदेःहेदेःश्रेषाःपःषःश्रुद्धःपद्यःष्वातुदःन्दःषान्सद्यः टवा.श.संश्रासाया.श्रावशायर.चीर.धे। वाश्राट.क्रंवाशायाटाहेट.श्रावशार्श्रा स्रुस: ५, ५ विष्ट्र स: स्वुद्र: नः त्रा द्रः मी सः इससः ग्री सः स्वारा ग्री स्वी वारा नसः में । दे द्रश्च सुः सः द्रदः धे द्रसः सुस्रामः श्री सः द्रदेशः द्रदः से व्यसः से देवा सः सरः रवः हुः हुरः व निश्व यः प्रदः वर्षे व अरः ये वा यव यः कुः के व ये व हुरः वरः नभुवानावानहेत्रत्या नर्हेत्रायया हिंदाग्रीयावरारी हें रावसाया लेव.सर.भीय.क.रच.थे.चोचोन्ना विद्यातचिर.च.केरी सकाकुराङ्गी.सह. ग्रवश्यम्बरप्र्यायप्रदेवायाकेवारी वीष्यम्बर्गान विश्वास्

त्तरामी प्रक्रेय त्राप्त प्रविच्या का स्वीचा का स्व सहत्र की स्वीचा स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वाय की स्वय की स्वाय की

यथा ब्रिट्दे १६८ वें अ वेग परे क्रिंट लुग्य वया ब्रिय विस्था गण्या स्यविवर्तुःश्रुरः अहत् छेर। । क्रिन्शः श्रुत्रित्रयः न्राः श्रुवः प्रवेर्त्वाः श्रुतः सक्र्य विषयान्त्र पर्वा निषयान प्रमानिष्य प्राप्ति विषय प्रमान ह्रेग्रथं प्राप्ता सेंद्रियं प्राप्ता सर्वे राज्या संस्ति प्राप्ता स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स् वीयाहायात्रवात्याहेराहेर्भिटायार्वेवायायात्र। हेर्दाययार्थेवाप्तरावद्ययात्ररा सब्दायालराश्यान्दरानश्र्याने स्थाने विशा त्तरश्रासदे प्रस्नायदे पावि केत से प्रमुक्ति क्षेत्रा स्त्रायदे पावि स्रासे से रे.लट.ब्रुच.टट.यर्ड्स.वयाचब्रट्य.तयाचयाच्य.चस्व.वर्षाच.वह्नेव.त. केव सें र शुरा हैं जिया न हें दारा श्वर हैं। । श्वर क्वा के स्थाद में से सारा न्द्रभ्वासन् वर्षेत्रसम्बर्ध हिन्दे सर्देय हेत्रसदे क्रिंत्रत्वा वर्षा ख़ॖज़ॱय़ढ़॓ॱॸॺॺॱय़ॱॠॺॱय़ॸॱॸॹॱॹॗॸॱढ़ॸॱ<u>ॗ</u>ऻॼॖॸॱख़ॖॸॱॿॖज़ॺॱॻॖ॓ॺॱढ़क़ॕ॒ॱ इसराश्ची महिराना । र्से स्वरक्षेरा हे उदाया सुमायक्या ये। विरामश्चरता मासूम् वुस्रामान्द्रस्रेटाहेते।हानाउदाग्री।वृद्रक्राग्री सेस्रार्सेटानि गन्ययायायार्थे न्ता । इन्यर्न्य ग्रीत्यायक्षेत्र त्या हे नद्धार อผมายารราวรมาย์วิเรอรมาสมาสิทมามิรารราดิาราหายายา मंदे नित्रम् मा महेन नित्र में नित्रम् में निर्मे न र्देव'धवानरर्देर'वर्षामानवरग्री'र्देवा । धुर'यह्द'रे'वे'ननमामी सुया यग्रा विशयवुरायाष्ट्रमा नन्गायशयावन्यावेशयवेशवराकुरा शेशशः ब्रुवाशः वः विद्वा क्षेत्रं भेश्रा शेशशः देशः ग्रावः हुः इत्राधिः इते.व्रेग.राषे.ब्रूर.खेग्रश्चरा । स्ट.क्षेर.योव्यायःक्षेट.क्र्डे.हेत्र.ब्र्यायःदटः स्या वियायर्रे स्प्राचिता । अया विया प्राचिता विया या स्प्राचिता या स्प्राचिता या स्या या स्प्राच या स्प्र यास्यापळ्याचे विषाम्बर्धस्याम्भूम् स्टामी सुष्यासूर्या नेपार्या । नश्चेत्रपिते देशपात्ता दें हिते त्रुवाश हेवाशपिते देशपिते किता देते <u> ५८.र्घेय.त्रभाष्ट्रभाष्ट्रमाष्ट्रभ</u> नडर्भापते सळस्र भाषा भारते । यन्य नम्य संगि छं या निव न् न् नसूर नवरा नर्हें दायया इव दर्भे याने विष्यु स्वाप्त या विष्य विषया धेव धेन से सहि । नग धेन इव नि गोर्थे के सेन । श्रुट नि हे रामरा विस्रराग्नी नक्ष्मन पाइस्रराष्ट्रिया सेत्राया न्यया न स्राप्ती न स्राप्ती न स्राप्ती न स्राप्ती न स्राप्ती न स पिश्रास्त्ररश्रादे हे श्राशुःदर्शरशे निरुश्नादे शक्ष्यश्राध्यश्राधे पद्मदान्य वश्रुर:बेरा वक्कःष:द्रुर:बर्:यर्श्राद्यर:द्रुर:वर्:दर:वे: ध्रेर्प्तर्रेशःग्रेःकेंग्रायन्त्रायम् ग्रेन्यिः इस्ययम् वर्ष्यः वर्षे र्या ग्री मात्र भे अ प्रदे आप्र अ प्र स्था र माद्र या र माद्र र प्र स्था प्र स्था प्र स्था प्र स्था प्र स्था प सर्भेश्रासर्ग्वश्रायात्र्याम् स्रशामी हेशाशु नक्ष्र्यासर मुह्या

नश्रुव्राचायात्रुः चास्त्राचा विश्व

 ख्रिं त्यीं स्वीत्त्र स्वीत्त्र स्वात्त्र स्व

र्वेन्न् सहन् रहं या है। श्रृ ह्वा साहान् वेद हो सार्य है न का नहें द से रा न्यत्र पाह्य प्राप्त हो साहान्य हो साहान्य है साहान्य है स्था सहन् साहान्य है साहान्य ह

वासर्दे स्वाराग्री वालु रावा द्यारा सामा सामा सामा वास्त्र प्रिया सामा वास्त्र प्रिया सामा वास्त्र प्रिया सामा श्रियः त्रायः इस्रयाग्यरः तुः पद्धाया श्रियः दुरः वतः धेतः द्वयः नरः अह्न वेवा परः हेवा प्रदे दे अश श्रुवाश पः इस्रश लेवाश पर प्रश्र व है। नश्रूवःमःनेवःमें के दे अन्दर्वयानमः अह्नाने । श्रुम्वानम् भनेवः बिर्-र्-नश्रुव-याश्रु-र्-राया-र्मायाध्यु-ति-रायक्कै-र्-राम्नु-सञ्चु-नर्भानश्रुव-यदे श्रेयान द्वायाया क्रिंट या है दा ग्री में नियान मुन्द स्थान है त दश्यवर्षाण्ची काषाञ्चर विराधिराया हो राषा वस्य या उत्तर्वे वा प्रदे कु द्वा वी अपित से पुर्निर वी अ न सूत्र स विद्यो न अ स र जु अ स । क्रें न र से त के त र्रे माः अष्यः भ्रेष्य अष्ये वा अष्य राज्य वा वा व अष्कु व्या व वे र वे रिकास वा प्रवास व स्यास्या भुद्देत् भीता हु । दूराया हु । न'य'नहेत्रत्र्र्राराष्ट्रेन्द्रात्र्र्याय्र्चेर्यस्ट्रेस्यर्द्ध्यायायावायःविवायीयानश्रुत् पर्वः इत्यः व्यव्यान् क्षेत्रः वाया वित्रः प्रक्रियः व्यव्यान् क्षेत्रः व्यापा वर्देश येवाश पर नगवा हेट। वावव पट वेवा पर न बुट न क्रा श त्वा धरः तुरुष्त्रभा द्वेतः हे सः वैवा प्रदेश्वस्त्रः प्रदेशः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षे उत्रापात्रस्या उत्रापा भुदित ग्रीया वितापर सहत दि।

 मःनरःसःळदःमःस्रभःनक्कुद्रःमदेःस्रदःम्मःद्रदःस्रदःमःद्रदः। धेःद्रसःग्रीः ग्रम्पात्रम्हें अप्यम् त्राय्या सुर्या पार्क्षम्य के स्राप्त्र सुर्या स्राप्ति । वशुरार्से । श्रेनिन्देव केवारी विदेश्या वे माश्रुया मायदे । दि वा धीन्या ग्रीशःहेशःशुःन त्रुरःनवी नर्हेन्यायमा न्ययः ध्वानग्रीशः परिःहेः <u> ५८। ।५४७:केंग् नर्गे५ ५६२ कुल सें ५८। ।५४२ में ५६वा हेद ५५८ सुगः</u> ८८। हि.स्.इ.पद्धेयःस्त्रीयात्रा विकायात्रियात्रायात्रम्या व। भि.जम.व.जम्ब.भर्षम.री । वय.म.८८.वे.मे.क.यह। ।८म.क्रम. ह्या. हु. या अव. रा. या या या विका या शुरु रा रा क्षेत्रः र्ही । क्षा अया विका विवा मन्दरम्यायरम् नकुर्प्याविश्व ध्रिःसाया ग्रुस्यापा त्र्या नकुर्प्या प्रमाप्त व्या नकु<u>र्</u>रपः श्रेर्नकुर्रप्राचाशुंश्रार्थे। । वाश्वरः स्वाश्वाश्वरण्यायाः थ्र'र्रा ग्विवं पर गुन्य अवदे न गुन्य र निवः क्रिन्य गुन्य गुन्य गुन्य । विदा न्द्रभःशुःग्रायव्यन्यदेः व्यःवी नक्ष्रेन्द्रप्रायम् ह्याः हुन्यक्षेवः पदेः व्यः यदी । भूक्ने पर्दरम् ये स्त्रीरम् । इर्द्र में इंद्र में । प्रदेशम् युवर्षेत मःसराभे प्रा । वित्रम्परात् वे सु क्षुत्र वशा । या वे या वशाय विया प्राय कुता मधी विमान्द्रिक्ष के मदी मिद्रम्भ मित्रम्भ मित्य

मश्रुद्दश्याः भूत्रः है। द्रिशः श्रुवः र्वेद्वः यदिः श्रुः यात्रः यात्रिशः व्यव्यात्रः विद्यायात्रः विद्यायात्रः विद्यायात्रः यात्र्वः यात्रः यात्यः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः

ने भू तुते क्विन नर्षेत्र पर्ने पाकु पार पि के खु कुत्र नप से निन हराया वःश्चित्रायान्ययानीयायीत्रायान्य वार्षेत्राच्या वार्षेत्राचीत्रायान्य वार्षेत्राचीत्रायान्य वार्षेत्राचीत्रायान र्ने निरस्य हित्र स्याय अवस्य स्वीत में हैं कि के स्वीत में स्वीत के स्वीत स्व यासे हो। यदे स्ट्रीट से पदी। पि हेगा न नेया गहेरा गयट न पट स्टर स्टर ग्रेन्ने। अरयरेशन्यर्येङ्कः यरेद केद यग्रा द्यार्के र्येङ्कः या युन्तः अ। ग्रुट कुन देन वार्ड र व्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष क्रें च्रान्य र क्रान्य विष्ठे वा प्रम्य क्रिया प्रम्य क्रिया विष्ठ वा स्था विष्ठ वा स्था विष्ठ वा स्था विष्ठ व यक्तेत्रभा नर्गेत्रया नेशस्य हे ही ह्यान्य हेत्या नत्र अत्राहु यशः मुश्रास्त्रः चेत्रप्रेत्वमुत्रपद्देवः केव्रार्थे देश्वेषाः स्रश्रास्त्रः वस्त्रः पदेः वर्त्रे अः क्रें त्र मा कुवा नवे वितुर गात्र अं शिवने प्राप्ति के वा सर्रेर्न्स्यान्ध्रे कुयानराङ्ग्यान्य विष्णे वो केत्र से इसया शुः भेयानर গ্রনী

केंशगीःकेंप्याम्भ्रद्गाया

क्रमान्यस्थान्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य

नंश्रुव पात्रस्य उद्दायाया से द द दिना या प्रदे के ना नश्रुव पा दी।

तुःनःधेवःर्वे । विश्वःगशुरुशःमः श्रूम् क्रुयःनशःयेगशःमरःन*न*नःमःहेः क्रेन्यर्वे ।नेवस्थाउन्यवायानासेन्यम्हेवायामाने। यन्यवाराचवा गरिमाप्तर्करम् मुन्नदेष्यस् रुपे निष्माप्तरिमार्वेष्यसम्भागरि पि.श्रमा.श्रे.तात्रा.श्री.ताय.ता.श्र.भ्रमात्रा.तर्शेच्या. शेसश्चारम्बरह्मश्चारी निवेद देव देव देव मिहेव श्री देव निश्च निवास के वा गर्या गुर्वाचा प्रमां का जा जा जा गी'यस'य'नक्षुन'न्गें राने। ह्यास्त्रन'सेसस'यद्येय'यस। साहिन्देस' नविन मावन नगाया हिराम मञ्जेन सम्पर्देन संधिया हिमा हु सिह्य स मेर्प्यरही । यापरा इसरा रन हुल हुना या धेरा । वेरा रहा इसाय होया यशःग्रदः। वर्षः श्रुदः दे कुः भ्रेषाः श्रुदः या । दे वळदः यदे दगवः व यश वियाम्बर्म्याने। स्टामीयाद्देष्ट्रायायविदायादेयादामावदायायसूदायसः भे त्यापदे भ्रिम्भे विवापवासुस मी व्याप्य प्रिस मिन्स स्वाप्य न्मदे नित्रें नित्रुन होन् हो वर्षा भी वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वरत नर हो द दस्य राज्य से राजित हो ता हो ता हे ता हे ता हु ता सह द ना ना वा वेशमाशुर्भानीता कुषानदे धुमायश्यामा वुरक्ता सेस्यान्यर इस्रशः ग्रीशः दे १६दः वें सः ग्री १९४४ ग्रामा स्टास्य मुर्सा ग्रीशः यसम्बद्धाः स्वतः स्व नश्चेत्रप्रस्तुःविद्यायस्यस्य उद्येशस्य हुर्वे ।देर्पा ग्रद्धेरस्य सु

विगायाकेत्रास्याधितायदे द्वीत्राविष्ठ्वा प्रमायाक्षेत्र विगायाके विगायाके

वेगानाके तर्रे दे त्ययाया वहुगानायायया त्रुत्र सेंदाना द्रात्र त्रुत्र सेंदा भेवरमानिकार्षेपाना सुवर्धेपानाची नेनाप्यवर्शी भेर्भेप्रिपावकारहरा नः इस्र राष्ट्रे निया में मान्य मान्य प्रमुम् ने स्व सम्माने या सु वि नरे देव नाहेर ल से नास मदे दसे नास नसय उत्तर प्राय रे सामाहिनास रावस्था उर् वेषा केत्र राया ग्रार द्रस्य शुः त्रूर प्रेष्य । ग्रार सेस्य इसराग्री:नेवर्तुः कुरायदेः से र्सेट्रायया नेवाया वास्यानु केट सेवया दे कुः सळ्दः परः ने : पेदः दे । वावदः परः परः न्वाः परः हे वादाः परे स्वरः कुंशके क्रिंव स्वाया में विद्याया में विद्या श्चेत्रः श्चेः रेग्रयः वस्ययः उदः वदः उदः धेदः धेतः तुः रेग्रयः सवदः द्याः हेन्ययः राधिताया ने निस्तून सदे ने वा पा के तार्री पा स्त्रीत सम्मान के तार्थी वा स्त्री वा स् ৾ढ़ॕज़ॺॱॻॖऀॱऄ॔ढ़ॱॸढ़ॱॻॖऀॱॸऀज़ॺॱॿॺॺॱढ़ॸ॔ॱॿ॓ज़ॱय़ॱक़॓ढ़ॱय़ॕढ़ऀॱख़ॺॱॸ॔ॖॱढ़ॸ॔ॖॱज़ लिय.व्री नित्रः श्रीमः अरमः श्रीमः पश्चितः सदिः व्रेताः यः क्रेतः स्विः व्यमः श्रीः व्यमः यग्रानुग्रह्मार्युद्रास्त्राम्बस्रसारुद्रायद्रास्त्रे के के कि के कि स्तर्भार्ये के कि स्तर्भार्ये के कि स्तर् नश्चेत्रायाक्षेत्रायदे मुनायदे मुक्ष्याक्षेत्रायदे भ्रित्रात्रा दे म्यस्य उत् ग्राहा वेगाळेत्रमश्राभाक्ष्यामासेत्रमित्रमेत्रमे । । ग्रायाने सार्मयानु स्रीतामित वेगापाळेत्रार्धेनाप्राप्राचेगान्यत्राची श्रेश्वेन्त्रयान्त्रन्त्राय्या

इस्रायाची स्वत्या दें हिते वेषा स्यायह्या सामा वे स्या वे वेषा वेषा स्वते । यसम्बर्भाश्वत्रें स्वर्भात्यूरिन्। यस्रिस्य स्वर्भिर्भे स्वित्व वर्रे प्यर क्रेश से ग्रामा है। य से वा तुः द्वेत प्रवेश्य सामी में ते न समापा ब्रास्ट्रियातुर्भेस्रस्य स्ट्रीत्रस्य द्वार् स्ट्रियातुर्मात्य स्ट्रियात्र स्ट्रियात्र स्ट्रियात्र स्ट्रियात्र यम्प्रिं नाधीताया ने ते त्रम्यायात्रस्य राज्य नित्रेत्र निर्मेश सम्प्रम्य स्था है हे हे से यम हे भूत त्र वर्षे निय से मिन की से मानी हो मान हो । हा से सम्रा वे दें र भे छ। वियादरा यारेया धेवा दुवा क्षेत्र या दी। वियाधार देरा यर.धु.चेचू विश्वावाश्वरश्वरा वावय.लर.र्घवाश.ग्री.वार्थर.र्थरा <u> २</u>:अरः ७८: बुदः र्सेटः नः ५८: बुदः र्सेटः सः धेदः स्टेश्वः सः महिराः महिराः वा बुद दर्वो अ: सर वा शुद्र अ: या । स्य अंति चुद र कुव से स्था द संदे र्स्ट्रे अ: स क्षेत्राधेत्रावेत्। क्रॅ्सारान बुत्ताते स्वाधेस्याविस्याम् सुसायार्से ग्रायार्ये गुत्रा कुनः शेस्रशः न्यदे नक्षुनः या स्त्रीनः यमः विश्वः सुन्यः या धेत्रः यथ। सेस्रशः नश्चेत्र्वरानश्चनःयाःश्चित्रायरः।वर्षाः स्वत्रायः नविदः तःश्चेतःयः वर्षाः ग्वित प्रति त्यस स र्रेय हि से दि से वा प्राया प्याप से दायि है र हे अविदादर्शे दिर अञ्चाति दि हे हे हे हे हे हे हो हि सम्मान्त्र हो हो दिर वायर वा हेवा रामारुम्। । न्यारिके से के सारुष्यामा हुरा। वियादेन नममा से न ग्री न्या क्रियाया ब्रिट्र प्रदेश भूत्र श्रायाश्चर श्रायाश्चर श्र्याश ग्री श्रें स्राया यही त्राया त पिश्रः स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् विद्यायाया स्ट्रान् देशकः वर

त्रुव्यक्षेत्रः व्यव्यक्ष्यः व्यव्यक्ष्यः व्यव्यव्यव्यव्यक्ष्यः विष्ट्रेष्यः विष्ट्रेष्

ने भूरत्रात्रीवारा नर्याय उत् श्री वात्र राजावा व्याय रे सावि वारा राम्बर्टर्या इस्र अस्वित हु। सम्बर्धिया स्याम्बर्धिया स्याम्बर्धाः स्थान वेॅिट अप्वेंट अर प्रहुवा पाय केवा पार प्राप्य स्विवा अप्वेचा अप्रेचे प्राप्त प्राप्त के स्विव के स्विव स्विव स देग्रायक्टर्यद्रों यात्री । यादेयातुः द्वेत्रायवे ययाते । कुषायवे । धुयायया कुल'न'वन्य'न्रस्यार्चेत्र'न'क्ष्रसमार'नत्यायाया ।ग्रादाययायार्सेयार्चेदः रायदी धित्र पावत साधित। विकामशुरकारा सुरा करका क्रुका शुर नर्जेदा यदे प्रयाशी माल्र भीर क्षु तु धोत्र प्रयार्दे स तु सी सुर हैं। विरे के द हैं है दे वेगानायमाग्राम्यान्यान्यम् वर्षान्यम् स्वर्षान्यम् स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः ब्रॅट नर्दे । देवे क्रेट र् नागर क्राया थी त्यय बुद ब्रॅट भेद सन्नर दर <u> न्यःक्षेत्रान्दःश्रृं यः यः न्दः नेयः यः जादेशः विश्वः न्दः न्दः नवयः यः नश्रूदः ययः </u> য়ৼয়৾৾য়য়য়ৣয়য়য়ৣ৽ঢ়য়ৣ৾ৼ৽য়ড়ৢয়৽য়ড়ঢ়য়ৣ৽য়য়৽য়ৢয়য়য়ৼঢ়ঢ়ৼয়য়৾য়য়য় ळेव सेंवें । ने ख्रु तुवे में न साहे न व ळें रा ने ने ता ने साय हम सूर ने हे न यन्ताव्य इस्र भेर्त्र विदाह्य स्पर्ते वेषायां विदास स्र स्थर विगः भ्रेरेशः यः तः रेसः यः स्ट्ररः वेगः न्स्य न् ग्रेः क्रेर्ने न्दरः सः रेतः पुः ध्रेतः यः इसरार्श्वेटावेटा स्वारायायटा कुटारे देवासावासुसाया सेवाराया श्वेटा नरःवशुरःनशःवज्ञेषःकेःषःवशुरःहेःवेरःह्यायरःश्चेदःयःकेशःधुःनवेः क्रॅंशर्श्वेट्रप्तदेख्याणे श्वेत्राया केत्राये प्रायम्प्रायम् प्रायम् देवे वित्राय

र्वेना हु र्श्वेन धर दशूर रें।

नेवे भ्रिम्प्रस्था सवे सर्वे व्यापा हेव वसा ग्रास्ट्रम्य प्रस्था स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त वनामिकेना पळ ८ कि. चति का क्रेन ५ ५ वर्गु २ ५ वर्षे खंखा वा देशाया नहना धरः त्रुराय। दःक्षः हमरा सुः वेदिरा चर्दिराः स्ययः हमरा सुः सुदः विदः। दर्देराः য়ৢ৽ঀয়ৢঀ৽ড়ৄ৾ঀ৽য়৽ঀৢয়৽য়৽য়য়য়৽য়ঢ়৽য়ৼ৽ৡ৾৾ঀ৽য়ৢয়৽ঀয়ৢঀ৽য়৽ঀৢয়৽য়৽য়ৣ৽ त्राक्ष्यरासुः वेत्रापावीयात्रयावीयात्रः वेदाः स्रुयः नुः नश्यययः त्रापेते स्रुरः क्षित्रायायात्रायात्राक्षेत्रायाञ्चरायात्राय्याच्यायात्रायात्राचित्रा । देशः ते[.]नेन्न्स्रे.म्नेग्रायम् र्ह्नेदेः स्रवःहे के हे के न्रेन्से ने न्या वस्राउनः ढ़ॺॺॱॺॖॱऄ॓ढ़ॱढ़ॖॺॱय़ॸॱॴॸॱढ़ॹॗॸॱॸॕऻॎऻॸॎॻ॓ॱॸऄॱॸऄॺॱॻऻढ़॓ढ़ॱॾॗॕढ़ॱय़ॱ रेवर्धिकेवे विष्यवस्था म्ह्रवर्धा वस्रवर्धित । नियामान्द्रे सुः या वियामाश्चर्या ही क्षेमान्द्री न सुन्यविः निया हिल्ले न धेवर्दे । निःक्ष्र-वान्ययःन्याःवन्यः यद्गः स्वायः ग्रीःयावनः वययः उनः यारः बयाः या डेयाः वळं रः क्रुः चवेः व्ययः त्रुं या स्थान्य या वितः यथः वरिते होः नश्रुव राष्ट्रम्भ रुद्दायाया सेद र्द्दु हैं गुरु रादि के न द्दर थूव हैं।।

गशुर:रन:वसर्थ:उर्गन्यर्थ:रगःरु:दकर:नदी

श्चिरः वरः यः वर्दे दः यः इस्रशः वः वस्रवः द्राः पुतः श्चीः यतः वदेः वस्रशः

उद्दार्यान प्रते व्यवसारी कुषानि या सुदार मा सुदारी द्वारी सुदारी सुदारी सुदारी सुदारी सुदारी सुदारी सुदारी सु निव्यायस्य स्वर्थः स्व क्रमाम्बर्धमाधेनाधेनाधेनाधेनास्त्री । देख्याध्या म्याधेनाक्रमा यशक्रशस्त्रम्यायण्यायस्यहेगाःहेत्यदे न्यं प्राचित्रके । । सास्य ने हिन्स के वा वे खुवा न विव गुवा सिव हो या सिव या विव से वा या हो । धेर-इट-र्श्वेट-रट-छेट-ग्रीयानवगायर्ट-से-ग्राट-धेर-दे-भे-त्युग । स्वर द्धयानिना धिराने । यदान्या द्वें या विष्या विषया विषया विषया म्बार्याक्ष्या । ने यात्र कुषानि यात्र यात्र यात्र यहे में नित्र के में में ति के म्बाया गन्सर्भासंदे सर्के गाधिव हैं। । ने भ्रावयन कंन भ्रव ही नर्गे नर्भाय हो या नर **ब्रि:**रन्याग्री:पार्या व्यात्रस्ययाग्रीयार्पोर्यायाः से देताया विराहास्रेतः र्रे इस्र राग्ने राद्ये द्रात्ये या ग्री प्रसूत पर्डे राद्य स्वर द्या इस्र रास्ट्र र्दे। ।देवे:धेर:अव:रमा:इअ:धर:दमा:धःधेव:व:माल्र:केव:बें:इसशःथः देशन् स्ट्रेन्न विवादवेषि राष्ट्री अत्राद्यात्य के क्षास्ट्र स्था सुद्र राष्ट्र विवाद विवाद राष्ट्र न्वेन्यावर्षेयाकेवार्थे क्रथा ही नेवाया नेया से मार्थे न्या व्याप्तया ने न्या <u> ५८ से सबुव सदे त्यस क्रेंब व वे में रावर ग्रुप्त विं विं विं वार प्यर माल्र</u> केव से इसमाय क्रममायेव श्री मावद सेद मित मित के मास् शु शु मानेद क्रयायोव नी नावन स्रेट सेंदि नेंव स्रेव प्रदेश्यव प्रवा त्या त्या राज्य प्रवा राज्य स्था । वशन्यापरे के सम्मान्य निष्य निष्य

गिहेश खेँ न्यम प्रहें वा या वे विषय के न्या क

देशवः वर्ष्यदे दाइस्यश्या श्री श्रुप्तिः वाद्यश्या शर्के वादिः वाद्यश्या स्त्रे व्याप्तः विद्या स्त्रे स्त्रे विद्या स्त्रे स्

क्यायर्चे राया के वार्षी प्राप्त के वार्षी व्याप्त के वार्षी वार्ष्य प्राप्त के वार्षी वार्ष्य के वार्षी वार्षी वार्षी वार्ष्य के वार्षी वार्

वशकेंशः ग्रेन् ख्वाशः वाववः न् ः इन् वार्डेन् न्वेंशः यः ग्रुन् वः वेंनः वः धेवः षो भे भे अप्यम् के अप्रोत्पर्येत् ग्रुट्या वा स्ट्रामा वा स्याप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप मः इस्र राग्यारः स्र राज्य प्राप्ता स्र राज्य स्र सर्हिन यथ। क्रेंब मंदे न्या के या क्रिया ने । शिर न्या के या के या है या या विषय है या या विषय विषय विषय विषय विराम् । विरामिश्यामा स्मा स्प्रम् स्प्रम् स्प्रम् स्प्रम् स्प्रम् या सुरानी नक्ष्र पाने किंगायना हु तो तु पाने तु ना हो द सुना भा गहरायायनेनरायाया हैंग्रायायते नसूराया ने गहराया सेनराया वःहेः क्ष्रमः नाहवः वः स्वाः पः क्ष्रमः नश्च्रानः पोवः प्रशः ने नाहेशः ह्यः प्रत्रशः शुः नश्रुव विव व रा ने र क्रुवा रा श्रु तु प्येव वे । । त्युरा रा पावव र तु र र श्रुव व रा मुगार्भागविदानु होनावानवान पानानु । विद्यानिका विद्यानिका । ग्वितःविगागहतःयःसनःत्र्यःश्चनःपःतःगवितःविगःनश्चनःहःगःयः उदः। ने भूर पर नर्भे अपि रेस राम श्रम्य या पर रेस राम राम सम्म तुरःनवेःक्षार्यः ग्रीकार्हेग्राकाराः वारःधेवः यः ने छेन् नक्षेत्रकाराः वका तुरः नवे भे रास्ता ग्रेरान क्षेत्रा सम् ग्रुप्ते। मान्द्र नु स्पेर् मे हु स्पूर्य ग्री यान्य्रम्भवात्रयान्यान्यविवाते । वियान्यस्यार्थे । निःश्रमःवान्ययः বাধ্যুদ:ম্ব:দ্র্বীদ্র্য:দ্র্রাথ:দ্দ:নড্র্য:ঘর্র:অম:গ্রী:বার্দ:রম্রম:ড্রদ:র্জ্ব:

नर्नश्रात्रादे । द्या व्यय उद्या वहें वा क्षेत्र द्वी राज्य स्यय वा वहेंगार्स्रेस होता नहात्वरानर्सेस न्वें राम इसरायार्स स्वर्मा प्रदेश नेशन्तर्ग्रीशन्धन्ने १३ सर्श्या शुर्ये दर्य देश ने सामन्त्रेया द्राया वित्राया व्याशुर:रव:व्यथ्यःउट्याट्यथ्यःदवा:हु:दक्रर:र्रे॥ दे·क्षुःसःधेत्रःसरःयसःग्रीःसुसःधेंदसःसुःसःहेषासःसदेःकःनुसःदवादःरेः या श्रेंश्रें र हैं वा परे भे शर्म पर प्राचित्र वा मारे हैं प्राचित्र श्रेंश श्रें सुर श नश्रे म्व्रिं केत्र से इस्रायान्स्रय म्वा मु से प्रकर नर स्वा ने न्वा यास्त्रीते में क्वामार्केन पार्क सान् सर्वेन द्वार स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व इस्रयाद्यान्त्रान्त्रान्ते निह्नान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्र र्ना ग्री भार् ग्रुन् 'नुर्मी भारा भारत भूगा हु सूर त्या ने 'प्यर हु सभा से त्र ग्री के 'ने र वरेर्नायायात्रम्भारावेरमळेवारुम्भेर्मात्रेर्यात्राहेर्यायाहेर्या *ॻऻॸॺॺॱॸढ़ऀॱॺऄॕॻॱॺॱ*ऄढ़ॱढ़ॱढ़॓ॱॸ॓ॱॸॻॱॺ*ॾॕॸॱॸॱॺॺॱॿॗॻॱॸढ़॓ॱॻऻॸॺॺॱ* म्यास्त्रिक्तं शुः विवागी शः हेत्। ते स्वर्धः स्वरं से अवा उत्ति के ता त्रीं दशः वर्त्रोवान्द्राच्याः वान्ययाः वित्रम् क्रिन् स्रे वर्त्याः वित्रस् वर्रोयः ५८: नरुषः पविः पविः सुग्राषः केवः र्वे : इस्र शः ग्राटः के ग्रायः से ५ : सरः वान्यान्वा कुःल्यान्य याने प्रवाश्यावान्यया प्रवेश्यके वा कुःवहे वा प्रवेशे येया यदे खें वा हैवा इसरा ध्रवा सासे दायर वर्जे वा सर वर्जे राह्यी

क्यानवे नवे नियान ने स्वा हि के नाम दी

मश्चर्यस्य द्वीर्य त्वीय द्रा व्यवस्य विद्रा के ना इसमा महिन्न के ना इसमा विद्रा के ना इसमा विद्रा के ना विद

हेशः श्रें न के व र में निर्माणिया या शुरवर्शे न दी

 नःवस्थाः उत्। तस्याः नस्याः नस्याः नसः परिः स्थाः स्थाः यदः प्रश्ना भी भी या स्था । यह साम्या या माने प्राची या स्था । वाशुरुरारादे नगदायाया दे न बरावर निरादि के साथा वाया दे रदासर वर् नेयामित्रे केया श्रिम्पर्ये । वामित्रेया श्रिम्पर्ये या श्रीम्याम्याने । नविवानिनामायाभूमायायनेनमायाधेव। नने।यन्वायाप्याद्वान् राधिवार्ते । तर्दे ते रेवाश्वारार्दे तर्दे ते शे रेवाश्वारार्दे ते शहेरा हैं रा नर्दे । तर्रे ने जुर कुन से सस र्मय इसस ग्री के र र मासुर स पर्दे । तर्रे ते[.]१९व र्चे यात्रस्यया ग्री के ८ १५ , पाश्चर्या परि वे या बे सात्र के या श्वेरा पा प्रेतः र्दे। १९६१वे : २८: अ८ अ कु अ इस्र अ छे : के ८ ५ ५ १ म् अ८ अ १ १ दे । क्रॅंशर्श्वेरःनःधेदार्दे। । पर्दे दे गुराकुनः सेससार्मय स्वरास्य सामा धेवर्दे विश्वाचेर्त्वर्केशः श्वेरावाधेदर्शे विश्वावाध्याया विश्वाश्वर्यः वरेदेरेकेशमःनेवर्षेश्वरेशके हैर्रे प्रदेशके विषये वार्षे राष्ट्रेय नुदेश्चिरत्देरते। । अर्केन्द्रेन् वस्य रहन् निवा होन्द्रया । वार वीयः सर्रेश्वेर्भेरा हेर्प्यते । क्षेत्रापारे दे के राह्य प्रयाया । वार वी या नहिर वे भ्रेत्यो । त्या वर्षे या वयत प्रम्यूम या वया । वाद वी या या देशे भें त ग्रेन्यये। भ्रिमायने दे के याद्यन्यम्य। वियामग्रम्यार्थे। भ्रिन क्रॅंशर्श्वेट.पर्वेट.य.ज.सू.श्रट.२.बॅट.ययट.र्बेट.यक्षेय.राष्ट्र.सू.यट्ट.कु.<u>त</u>्य. शुःश्रूदःनशःवनदःमशःश्रूदःनमः तुर्वे । देःष्यदःश्रूमः तश्रूमः तीःदेशः राक्रेट्रासाद्धानीश्वाच्चीयास्यत्यीत्राच्यात्रश्चेत्राक्षीत्राद्धान्यायाश्वाच्ची नर्षे | देशमनेनेनम्स्येष्यः विद्यान्ते। विद्यान्ते। विद्यान्त्रः विद्यान्ते। विद्याने विद्याने। विद्याने।

के न गहि स न म्यून परे के साथ हन न न न है है स न जा न साथ

क्रवःमवेःक्ष्यःदम्। मन्दःमवेःक्ष्यःदम्। सह्माःमुःश्रवःर्श्रमःतुःग्रः

कें अ क्रव मंदे कुं या या गुरा

क्रिंश्चिं संदेश्विं द्वे त्वे त्वे क्रिंश्चिं व्यक्ष्या विष्या व्यक्ष्या व्यक्ष्या विष्या व्यक्ष्या विष्या विषया विष्या विषया वि

<u> थ्रुव सर से प्पेर्ट पा पेश । गा बुग या इसया सर्वेट पा है प्राप्त । है पा विदा</u> न्नो न्दर्भेना सदे कें या विकासका इसासर के या सर त्यूरा विकादरा श्चेरास्त्ररायराग्रहा वारविवार्चेरायराधेर्द्वार्द्वाग्रस्य। विवारा धर-द्यायः वा नहत्र संदे दे द्वा द्वा निष्यः स्वा हो विद्या हो ख्वा खेद सर वशुर्व । स्ट मी विश्व शहर दे हैं हैं निवे से वाशा विश्व स्वा सुव से वा यदे न्या वहें समासर्कें दाका धेता । व्यम्भ रहें वा सम्प्रासें दारा में वा सारी। सर्केन सिन्यासरा सुरास्य स्त्री स्त्र म्यायान्यान्त्राच्यान्त्राचित्राची स्थान्य स्थान्य स्थान्त्राच्या स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान स्र-्वःश्चेशःग्रीःसर्क्वा विवाशःग्रीःवरःवःस्रावशःसःसग्नाःवरःवश्चरा विशः न्दा व्रायदे हे अयह गान सुन या श्रेट से माने । श्रे नदे हें दाय अ केंग्रायःकुरः वरः नरः त्युरा । वेयः ग्रायुर्यः प्रतेः व्यापिः प्रतः प्रतः स्वायः यःश्वेदःवनायःवयःश्वेयःयःवश्चेदःद्या । नाववःष्यः। यदयःक्वयःवर्द्युदःवः नक्कुःषअः वःषीवः विदः देवे रेके अःग्रदः देः ददः वर्षः दर्गेवः पवे देवः ग्रीयः रेव में केवे वर्ष के अन्ता वर्ष वा वर्ष वा मुक्त के वा मुक्त विकास वा है। केरनश्चेत्रप्रश्चेवावीय्त्रभेषात्ता नेशर्या वेशर्या हित्रप्रदेशहः ख़ॖॱज़ॱॸ॔ॸॱहेॱॺॢ॓ॸॱय़ॱॾॖॺॺॱऒॿॕॸॱज़ॸॱय़ॹॗॸॱज़ॺॱॷॸॱज़ढ़॓ॱढ़ॸ॔*ॱ*ऄॺॱॸ॔ॸॱऻ सबर-शुःरत्रःषशःयर्शःपःर्रः शुरःकुरःकेत्रःप्रदेशःयत्रशःतुःक्षेरःतशःयत्ः र्णेत्र के निरंदि भी अन्ता निरंद्व अण्या निरंदि निरंदि स्व क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्

गहिरामानी सदि स्रेट सेंदि सर्दे त्यमा गडिग ए ५५ हिट गुरामा क्रिंश, संदेय, भी । ने . या तम्रा विटा सुनः वन् से । मुर्गि । क्रिंश सुन्य या सक्रिंन या ठ्यानदी । सरसाक्त्रसादरानरारे यादर् लेसानस्रेत्। । हेसामस्रासा सूर्य अटशः क्रुशः ५८: वर्षः वरः वसूशः वः शे द्वे वे विः वः श्रेवाशः पवे वग्नरः क्षेप्तरक्रेत्रम्थायळेत्ते अस्त्रम्थाया श्रम्भित्वेता ह्या स्याया गुवावयाहेवा ब्रॅट्शस्येन्यन्दर्क्ष्यः श्रुप्तायाम्बर्यः स्ट्रम्पेन्यः से गुप्तम्यासुद्र्यः राष्ट्रम् अष्ठवाहे। विस्थायान्यायायावी त्याशुष्ठवायान्यामाक्षे बेद्रायाद्रम् श्रेष्टु वेद्रायाद्रम् श्रेष्ट्रियाद्रम् श्रेष्ट्र याञ्चाद्रम् याञ्चाद्रम् याञ्च ळॅथानार्ज्ञामीराक्ष्रासर्वे । इनिमार्थेन ग्रीकेंत्र सेन्सामान्दान्यान दे कैंशन्दरकेंश्राचायान्यस्य न्यान्यस्य विद्वार्त्त स्थान्यस्य । ग्रम्भाष्ट्रमः भेराया से मुः नाते। स्याधिस्र भाषा सम्माना स्वास्य ना *५८.च५.८४.५८.क्व.*८च्.८५.५८.क्व.क्व.क्व.क्व.क्व.क्व.क्व.क्व. वर्रे वा के अद्भव के सूक्षाय वर्षे र नर्दे । क्षेत्र य वि र न का वा का ग्राहा । र न हुन्ययः नवे सून्यायन् । न्यानवे न्याय ने इसायर न सुन्। । न्यायः ८८.र्बर.राषु.श्रमा.मी.श.यक्षी ।क्षमा.मी.यर्थ. ३.५४८.य्येट.य.युवेयी ।यी.श.स.

यश्चेत्रित्र हेर्याहेया यहत्। । स्वर्ह्ण द्वेत्र हेर्या । हेश्र यश्चित्र श्चेत्र हेर्या । हेश्र यश्चित्र श्चेत प्रते क्षेत्र हेर्याहेया प्रति । । स्वर्षेत्र हेर्या । हेश्र यश्चित्र श्चेत्र श्चेत्र हेर्या । हेश्र यश्चित्र श्चेत्र

क्रवासदेरकुषान्द्रभाषामिक्रभा भूनाग्री भूवाम्यास्यास्या वर्षेन हुनानक्षेत्रपर्दे । १८८१ दे है विश्वास्त्र स्तर्भात्र विश्वेत र विश्वेत र विश्वेत र विश्वेत र विश्वेत र विश्वेत भ्रे पार्डर पर्दा पार्डर र् बेद ग्रुट विवय हैय द्या हेर खूय कर यव वरः र् से मावसः सरः वमासः वसः वर्षे नि । दे नि विव र् से सं यक्षरः सदेः व्यून:पश्चन:तु:बेद:ग्रुन:देवार्य:यन्य:बेरावोर्हेन:य:न्ना वाहन:तु:बेद:ग्रुन: वेवान्यर्न्व बुद्ध्यत्यागुव्देश्चर् भुव्यक्षायायायार्थवायायाद्या भुविदे न्वाः सेन् ग्राम् १६वः प्रवे न् स्राः स्राः न त्रम् । विक्रियाः न म्हि । स्राः या तुरुषा यमा नहेन । या से निरुष्य स्था कुसरा मा स्था स्था से स्था से सा स न्वीं अप्यक्ति सें स्क्षेप्तक्तु स्वरूप ने प्वाप्त प्राप्त प्राप्त का ने प्वाप्त अपने प्राप्त का ने प्वाप्त अपन क्री महेत में रासरें त्यमा येगमा सरार मा हु हैं ता सी राय बुरमा निया डेशक्षेत्रात्राशुर्यात्राशुर्यायाधीव है। । दे प्यर ग्रुट या त्या ग्रुव पेयायर वर्देन्'स'न्रः के'गिरुग'स'न्रः स्वायायायान्रः धेन्'न तृन्'स'न्रः सेससः वस्रयार्ट् भीयान्यस्यात्यात्र्यात्र्यान्यात्र्यात्र्यात्र्या

दर्क्ष्यात्र्वाप्तक्षेत्राचाया स्टायात्र्रात्रात्रेत्रात्र्वायाः

रात्री हुँ निष्ट्रमालमा शस्ययत्त्र ग्रीमानन्य प्राप्ता । श्रुव परि नमा नवित्रः चुःन्वे अः त्रा । वर्ने नः कवा अः वः अवा अः हे अः न कुः धी । वनः ग्री अः हवाः स्वानस्य द्वा से नस्रे न परे क्रम् क्वा राज्य में में के से द्वा स्थान्य क्ष ह्या हु द न धिद र समा दे त्या दे र दि स्विमा समा हो द द विमा मा साम दि । विमा श्रीश्वान्यम् भेषाम्बान्यम् केषाम् । केषाः भ्रान्यः भ्रम् नामः निष्यः नव्यामानी न्येमाना सुरास्त्रिमानार्भेग्रामाने स्त्रामानार्भे स्त्रामाने स्त्र नन्नायात्राञ्चत्रायात्रयायात्र्वेत्या नेप्ताञ्चत्यात्रप्तात्रवात्रात्रेत्रे डे ने र १६व गुरा राया र से व र गुर र र १६व के र से व र र र र व व र ग हे व ययराने भूरावर्ळे या नान्दा हे नात्र शहरानु से वर्जे निराम् कुतानु वर्षे ता है । म्बर्प्यक्ष्याः विद्यान्य प्रमान्य विद्यान्य व के सूर्यायमा ने स्वायमान् ज्ञान क्ष्या नामा वर्षे वार्यमा निर्माण स्वारा क्ष्या नामा विष्णा नामा विष्णा नामा व भ्रव या न भ्रेव या भ्रम् । नायेया न से न यम प्रमान ने या निव या भ्रव या भ्रव या भ्रव या भ्रव या भ्रव या भ्रव य यम्त्या विकामास्य स्वरिष्टीम्मी हिकास्य मस्वर्याय सूत्र मी वर्षे नश्चेत्रपादी वर्प्यशञ्चव्ययशञ्चर्याविश्ववत्याविशःश्वराक्रेवर्धान्ति राःस्रेम्। क्रेंशःस्रुःनशःगशुरशःसदेःग्निसशःरगःनरःहेशःशुःनस्रुत्रःसःयः

यात्यःस्य विश्वस्थात्यन् सान् स्थाया वेशः श्रुषाः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स

ववः हवः १ अरु। सुरः वः यः वदः वर्षः वदेः वदः वे अः वश्चे दः धरः ग्रुः अर्ह्रान्यशत्वुरावाष्ट्रम् क्रिंशाच्यावसूत्राचित्रयान्ययाप्रस्यासुः याञ्चरयादाः कवायाः सँवायाः वार्वियाः से व्ययः यस्य सर्वेदः वयः वदः प्रवः श्रीयः क्रयमाशुरमेद्रास्य होत्री क्रयमासेद्रायेत्र सन्तिस्य स्वास्य सन्देशमा यदे के वा श्रूम से के दार्ये । दे प्यम सहे उद यवा य मान मान सह स्था श्चन व्रुव रे रे पाहेश पाहेश नश्चेत प्रशं हैर प्यर ही प्रज्ञूर न सूर्य हैं र् र् र् व র্ষিণা,ম,সু৴,ম,প্রমার্ক্ট্র,স্ক্রান্ধ,মন্ত্র,প্রবিশ্বর্ম,মান্ত্র, गन्ययःनगःगीःर्नेतःयवःरेःरेःगहैयःगहैयःउद्यःहययःशुः ह्वन्यःययःथेः कैंगाप्रमा वयाग्री:कः वयमाउट्राईग्रामायायायार्थे सेंट्राप्रदेश्वेमार्यः ग्रैशन्धन् केट कु ने दि कुव न विव न प्यन प्यक्य न विव न से न से व प्यन से व केव में उंड्रावैं शियान्वायान्यें दायया देरायदाक्तुत्र दुः सेस्रया देर्या या । धुन रेट रुष शुन्द माने स्रेन हो र हेट । । यहे उन मट र यम र कर्पाण । वराविषा सूर्या से से साधिया है। यही सा विष्या प्रार्थित स राष्ट्रमःर्ने । नेष्ट्रमः वर्गमः वर्गमः वर्षः द्विः वर्षः वेषः विवर्षः वाषः केष्ट्रे। ने पिन्य मान्य क्राया ने किया उया नु सिन्य क्रिया के स्थान मानर्यायान्त्रे भ्रिम्पु मान्यराम्ये मेन्द्रिया स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति

वगुरानमा अवापानरंपानमाञ्चराभेषात्रुरानराञ्चनाञ्चेरानापिताञ्चरा ब्रम्यावावनायावनाययाधीः वरानानमायाः हिराने विद्यानी कुषार्थाः यश भ्रीत्वात्वत्विरासुर्यात्वे सूचा तस्याते। विराम् स्थायात्र यः वरः ना । दे वे धुवः देर वदः ग्रै अ क्रेंब से र र र र र । । वदः इस र पार्शे विदे मुर्पार श्रुव पा नर्दया । या प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त । श्रुव यःअविरान्नेनायाने हेन्ते। निर्याग्यन हेन्ते न्यायवाययाने वि भ्रुव पर्दे प्रतर्भ प्रमासी अपने अपने विद्या प्रमास । राने निरमान्या । वातायक्षा निरमायक्षे निरम्पत्री स्विताये स्वित् । स्वितायमाया यमञ्चम श्रीयाय हेया है। विनाय ने हिन श्रीया में स्वीया विनाय विनाय नसूत्रायात्री त्यार्या शुरास्त्रे। स्थित्र प्राप्त राया स्थापात्र प्राप्त राया वया । नर्झे साराया वे सिर्देव परावर्डे व से हो न । रेग्या परास से वर्डे व गा या ह्यान्द्र यद्या विकाद्या दक्ष दे र न तु न व न र से दि है के का न न न र या र य ब्रिट्रिंश के अस्त्र स्वरूप स्वरूप विद्या स्वरूप के स्वरूप यन्या वन्यायी वन्दे यार्थे वस्ये व्याप्तविद्या वियन्ता हे नियन वह्रमान्यस्य ग्रामा सुर्या ग्रीसादि । द्वा सुर्या स्वा । व्हिमा स्वा पर्दे । मश्राक्षे विवायम् । अत्रान्ध्रान्यम् वार्षः व्याम् वार्षः विवायम् । विवायम् वार्षः सव दशुर रया विशामशुर शासि धीर र्री।

ग्रवस्यस्यस्य व्याप्येव ५ हो ५ प्या हो ५ प्या हो ५ प्या विस् नित्र देखार्चे अप्तर्मे अप्याद्दार्चे अप्तर्भने अप्याद्या गुरुप्तरे प्रमे अप्याद्या हो ८ दा भी वा स्था विकास के स्थान स् ग्वन्द्रिकेट्री दिख्राणा व्याप्ते व्यापित व्याप्ते व्यापाया गुरगार। दिलाविस्रालेग्रासरसे द्वेसात्। दिते दुलाविस्रासी र श्रून्छिन्। ।ने धि र्वे या स्व श्रुया श्रेव। । वाया हे र्वे या श्रुन् श्रून्या । क्ष्याविस्रयायेग्यायम् र्द्यस्य हो न्त्र । नि दे क्ष्याविस्रय हो मान्यस्य कुंवाविस्रयायेग्यायम्भी कूंस्यायः होते निष्ठी गिरिष्ठी मञ्चा किर्णा नहित्र. विमाश स्वर श्रेश सुरी । मार विमा सर र र विश्व मार र र । विष्य विस्थ वियायास्त्रस्य स्थायस्य । वियाप्ता सेवायाम्य स्थापस्थितः सेवा नेशयन्ता । हिन्ने वहित्रन्या श्वेन सेन्ने स्वायन्य । बेन्नक्रन्धेर होन्य नेवे। विश्वन्य नेविश्वास नेविष्ठे से विद्यूर में। यह मैशः श्रें न् होन्या । ने न्यानर्वेन् स्व र्शेयाय न्यायन्य स्याया र्वेशन्तर्भेशन्तर्भवास्त्रित्राच्येत्। विश्वन्ता विश्वन्तर्भवानः यशःग्रम्। नम्मान्ते स्रुनः १ सम्मान्ते । हे हे हि लेश। विके निते नुसा हे हि सामा श्चान्त्र होत्। । महिर हेत्या सुर भित्र हुमा नस्य वसूरा । श्चाया नम्य

चतः हे श्रामायदे द्वाम् । विश्वाद्वा प्रमाय विश्वाद्वा । व्यव्यक्षेत्र विश्वाद्वा । विश्वा

ते नवित्र माने मान्य स्था भी न्या न्या नित्र स्था नित्य स्था नित्र स्था नित्य स्था नित्

याग्र्राच्याः भ्रेशाने। देवशार्भ्येत्राश्चेत्राध्याः विदार्धेत्रान्त्राच्याः विदार्धेत्रान्त्राच्याः विद्याः नशक्रिंशी:ईशःशुःर्स्रेनःमावैगान्त्रीयाने। क्रेश्रेयामधे मन्त्रा यान्द्राचार्त्रास्त्रा क्षेत्राते। विद्याद्ये क्षेत्राया स्वीत्राया स्वीत्रा विद्यास्य ५·४दे:तुअःकुयःश्वअःत्वःतःर्रेअःश्वेतःपदेःध्वेरःव्याःपद्य <u>ग्</u>रारःकुतः सेसस-न्यस-नेते नसस-पार्केस-हत-पति-क्रेन-न्युन-पर-सिह्यत-तस-क्रॅंशनाशुर्याराष्ट्रमःर्ने । यर्नेमन्नन्नानीयायेयायेयाउदावययाउदाग्रीः र्देव-दु-अ८अ-कुअ-र्बेच-धर-द्या दे-र्बेच-ध-व्य-देवे-कु-व्य-वक्षुव-दर्वी था दे-याने यान में या के या के या में य อ्रथाद्रशार्सेन् ग्री र्सेन् र्सेन् ना र्याया ग्रया के प्रकार है। ব্যন্ত্রীক্ষ'ম্য

क्रिंगान १५७ मिल स्थान १५० मिल

क्रॅग्रन्तिन्ययान्यस्थित्वयान्यस्य क्रिंत्यन्तिः क्रंत्यान्तः क्रंतः क्रंत्यान्तः क्रंत्यः क्रंत्यान्तः क्रंत्यान्तः क्रंत्यः क्रंत

यदे कें रा में कें दार केंद्र रा रहार न मुर के के परेंद्र रा मर कें रा में केंद्र रा श्चेत्रामानाधितामानेवाम्बर्धिताधिताने। हेन्त्रामानेवा वर्षासु श्चे इता यन्दर्भन्यर्यस्यकुर्यन्द्रा ह्रें क्रिय्दर्भन्यस्यकुर्यन्द्रा ह्रें द्र व्यापरावर्षुरावाद्या वह्रवायाद्याय्यायरावर्षुरावाद्या वेशास्या न्द्रभ्वास्य वर्ष्य प्राप्ता वर्ष्ट्र वा हेवा हेवा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व हैंग्रथं सर द्यूरान प्राप्त पर्देत क्याय कुर नर द्यूरान प्राप्त वे सूर कुर नर वर्गुर न प्राप्त वार्ते स्था कुर नर वर्गुर न प्राप्त वर्गुर ग्री श ने त्यासूर्याश्वासे हेन प्रमाद्यीमाना । यह सास्य स्थाने साम्य क्रम्भःग्रीमःन्त्रीरमःमरःवशुरःनःन्तः। भ्रेष्मःषीतःमःक्रमःनेःयःनशुरः नर'वशुर'न'न्र'। क्षु'क्रअअ'ने'त्य'ग्रीते'त्रेत्र'नक्षेत्र'नरत्युर'न'न्र'। क्षे सहयानाम्यस्थानीसाने त्यात्वानासाम्बेतासम्बेत्यस्य स्थापन्यस्या निनेशः इस्रार्थः से से द्वारायक्ष्यः निन्ता के ना निक्षं ना स्ति स्वारायक्ष्यः ना प्रा देशक्षे वहिवाश सर्वेन सम्वयुम्न न प्रमा विद्वान सम्बर्धम नन्ता अविश्वास्य नश्वाश्वास्य स्तुरान्ता देवे के शामी श्री द्वारा देवे <u>षरः हे अः शुः इतः परः ग्रुः वरः देशः परः दशुरः वः हे। वे अः श्रेण अः अर्रेः हेः दुः</u> सराम्बुट्यायदे यदार्थेदाया श्रेटा वनायादया से साम्बुट्याये । देखा नश्चराया वर्ग्यरहेटावाडेगायशानह्नायाद्राराद्राय्याच्या क्रॅ्रेन'य'न्टरळें अ'य'ने अमें नक्रेन्'य'ने मुख'नवे' खुअ'ना शुट'न'न रें य'

व्यत्त्र रहेन् ग्रेश मन्त्र न न्याया रा से माया यह न मा के रा है । <u> अरअःक्रुअःह्रअअःग्रेदरःनगुरःनदेःवेरःधेदःप्रअःक्रॅअःवःगुरुःपःकेदः</u> र्रे निर्देश्व राष्ट्रे खें बाह्य निर्देश निर्देश है अर्थ निर्देश है निर्देश त्रुर्दे। | नर्ययापाद्यार्श्वेरानाहे क्षात्र्यात्र । त्रात्रापादे । क्षेत्रेर्या मु अर्के अ व्यापायायायायुर्या परि तर् भी यायु प्रवासी राज्या सूत्र यन्दर्रेशयःश्रुवन्दर्रेश्यःद्वर्ययः यद्यः यद्रः यद्वेवः यविवायानेयायः य यःश्लेशःतुःन्र्यःपःन्दःर्हेशःग्रेःद्धयःयःनेदःनुःग्रवशःपवेःवनुःवेशःनश्लेनः राद्रायिरायात्रुस्यायञ्जीमा ग्वित्रसर्वे नर्देग्यायये स्वादिग <u> ५८.व्र</u>ी.वर्ज्याचेर.सवे.खे.ख्र.स्ट.लट.लट.सक्र.सक्र.चवे.क्क्रु.च. <u> ५८:व५वा:क्रे५:क्वॅ्राश:वि८:वावव:ग्री:क्वॅ्र्य:वा५८:कॅश्वाय:५२ो:सह्यू५:</u> व्रेन्पन्त्वरार्वे राषार्शेवारायदे वर्षेत्रप्त स्वर्थात् स्रा ८८.योवय.अ८४.भि४.व्या.सप्तु.व्या.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.सप्तु.स नन्गामी नने नदे प्राचिन में सूर्य नु नर्या । श्री मा निया न्या निरावार्डराञ्चार्टराध्वाययार्वीयावार्डरायावर्वीयाने वार्डरावेटाधेटात् दिट निवे अ र्से विष्य सु र्स्ट या ग्री वि नि नि स्वयाय विनि वस्य विन् निवास स्वया वि यदे श्वाशाय हैं व र् निहें व व ने दे वित्र स्था न न न न कि रहें व र कर र नर्न्द्राचर्न् भी देश भी ख़ु इस्र राज्ये केंद्र त्या केंद्र राज्य स्वर् स्वर् भी नर्भे त्रापर्क्षेत्रे अक्षेत्र कुष्टिया व्याप्य विश्व गर्नेदःया नवेदःश्चेः अन्दशः स्वः हुः ग्राश्यः नशः नेदः देशः धदेः प्यदः यगः

न्मे न्द्रम्मह्रम् क्षेम् अन्दरस्य स्तर्भन्ते। न्यास्ते के अभावतः ८गार-संख्या अवियाने ह्या हुः श्रवा ने वा ये न सर है। । श्रु के वा या ने वा श्रवा नःश्रुसःसदेःदर्भेसःनश्चेत्रःस्यः। ।सावसःससःसेःनगदःवससःउरःहसः यरःश्वरमा विस्रभः मदेःश्रें नर्भाते विस्रायानश्चिमायरः वि वित्रसळत् दुः वर्षेत्रः इस्र स्थान् विदाने विव निष्या वर्षेत्र । विष्या वस्या प्रति । इट वर सेत्। विश्वादर भ्रेसादर ववतादर वर वर वादर। विविधादर सव ळळें अपों अम्बस्थान्दरने । विन्वदे गर्से अम्बन्दग्राग्रह्मे । वर्षित्रः इस्र राष्यः वे रहे । धार्य स्वर्षः द्वा । वात्ववः त् स्वर्षः सः हवा रहः वत्वाः क्षेत्रप्ता । श्रेस्रश्रास्त्रप्ते प्रवाश्वर्थाः मुश्रायम् श्रियः । यदः ध्रेत्रः वहिना हेत के अन्तर न सूत परी । निर्ना नी निर्ने निर्वे पे जिर्ग्त्र सूत्र सेसमा विसमासुरसःसी।

ध्यान्यत्यत्यत्यत्यः विश्वान्यत्यः विश्वान्यः विश्वान्

हिंदिने भेग भेदायात्र धेवात्र नित्रा नित्रा हैदा केवा से विस्तर से मैश्राहे क्षेत्रामन्द्रम् नेश विद्वार्थिया में स्थाने स्थान स्थान स्थान नर्हेन्यरसे ग्रुषी । र्सेन्यायह्याय ग्रुस्य स्था ग्राय हे सेन्ये स्था शुरत्। । वार्रेवः यः यहनः ग्रदः यन् दः यह। । विशः वार्यदशः रेषः । वाव्रदः लर्ष्यं वात्राच्या वर्षाच्या वर्षाच्यात्राच्येर हे क्रिया है न क्यानायायत्वाक्षेर्केषाभेरम्बन्यम्मे । भूनामर्वेनर्यायाया स्वान्सवानायावन्तासे से भारत्यान स्वानिस्ति । प्रवासान स्वानिस्ति । नविवर्ते। । सन्वर्रायर्शे नाया श्री व्यापर्शे विद्यो नियम नियम व्यादर्शे नायाययाश्ची दश्यायव्यादर्शे विद्योगन्ति । यर्गे ने वार्षेवार्यास्य प्रत्यात्रहेर्यास्य प्रत्यावस्य वाद्यान्य वाद्यान्य विद्यान्य प्रत्या विद्यान्य विद्यान्य प्रत स्वाप्यर नर्सेयान यासे होते । सर्वे में गोर उत्र प्रावृत्ते स्पाप्त के न यव उव दर ब्रेट व उव दर द्रीय या या की व निर्मा की विकास की *न्नः क्विं न्यान्नः विं नाश्चान्यः नविं वार्यः श्वेनः वार्यः न्याः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः व* रयःग्रेन्द्रन्युः कः र्वेष्युर्यः यद्दर्गे कः श्रेवः ययः ये विष्यः महारकाने। ने नमायकार्थेमायाया के मन्न न्यु र हो हो का नवे नमर न्यु গ্রহান্ত্র

सह्या पुर श्रव सेंदर दुः है भूकर दुः न दी

नन्द्रायाद्रम् अष्ठ्रायाया सुद्राया विष्ट्रम् । विष्ट्रम्यम् । विष्ट्रम् । विष ८८:अवर विवानी क्षेत्र वात्र अस्य अस्तु वर्त्त या इवा से अवर्षे वर होते। ने·ष्ट्रःतुते·द्धयःग्रीशःर्केशःन-१८७८ हेरः ५८ तः त्रुदः ने १४ वः यदरः हे ः सूरः गुश्रुद्रश्चादे स्वरापेट् इस्रश्चादेव से अन्तर त्यू द्राया केंश्वर प्रभूत नवर्र्, र्रेर्न्न यानहेव वया केंयार्र् केंया क्षुन्य या या न्याया या विषय বর্ষপ্রেমান্ত্রীর্বারার্ম্বরমবামার্মরারম্মান্তর্বান্তর্বা বামর্মান্তর্ गर्भेग'रा'क्सभ्याग्रह्मादक्ष्रां प्रकट्रायाह्मा प्रकट्रायाह्मात्रह्मात्रह्मायाह्मा वर्गुर नर ग्रीवेग्र ग्रम् श्रीर दर्ग द्या राष्ट्र या श्रीय राष्ट्र या सहर छेट <u>वित्र सर र्</u>जात्स्य राजा यह वे स्था संग्री रास स्था स्वर प्रत भेतः हुः के 'नर' अहं नुः ने । ने 'ते 'गान् अरु' मः केतः में रः श्रूटः श्रे 'वर्ने 'वः रे रू য়য়ৡ৾৾ৢ৾৾ঢ়ড়৾ঢ়য়ৣ৾য়য়ড়য়ৣয়য়য়ড়য়য়য়য়য়য়য়ৢড়৾য়ঢ়ৼয়য়৸ঀঢ়য়ঢ় ড়ৢ৽ঀ৻৻৴৻ৢ৽ঀঀ৽য়৽ড়ৢয়৽য়ৢয়৽য়য়য়৽ঢ়৽ঢ়ৢঀ৽ঢ়ৢয়৽য়ঢ়য়৽য়ঀ৽য়ৢঀ৸য়৽য়ৢ৽ वर्ते नः के अया सम्बद्धा दि न अया व के अया है वा व अया हुवा अव न वे र रेशःग्रेशःसःसवदःरे:८८:ध्वःधरःग्रःक्षे ग्रम्सरःगःक्षेत्रःपदेःक्षेत्रःपर्वेदेः

याडेशायडेशाइस्रशायक्ष्याया होता। याडेशायाडेशाइस्रशायक्ष्याया होता। यादस्रशायाडेशाइस्रशायक्ष्याया होता। यादस्रशायाडेशाइस्रशायक्ष्याया होता।

निव नियान्ययान्द्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रिया

ययाग्री:इन्नानिक्यामिष्ठेवनिष्टेवन्तिः द्ध्यान्ना

नश्चेत्रव्याः त्रीं हि श्वराश्चित्राः त्रेयाः पर्ति । प्राप्तिः व्यापित्रः विश्वराधितः वि

देशमानश्चेत्रमधेरधेराद्धराबदाश्चेत्राते।

श्रुट्र से देश स्वर्ग्य स्वर्ग्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्य स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर

येग्रायाम्ययाः उत् ग्री प्रतृतः ग्रावयाः वे । त्या प्रते । त्ये या प्रवे । प्राया प्रवे । प्राया । या प्राया । ने निष्ठेत मने कुषा नाया के स्री हार कुन से ससा नमने से से में नाय सा सर् त्। जुरः कुनः से ससः द्वारे श्रें दः पः वससः उदः वर्षे नः उदः पेरसः सुः हें गसः यन्दरने नविवन् सम्बन्धि कुष्टी वायन्दर्भ वायन्ति वायन्ति किराने वहें बर्ना अर्दे वर्ग स्थे अर्थ प्राप्त मा मुस्य प्राप्त हो स्थि । ন'ব্দ'র্ম্বর'অম'ব্দ'। মদম'র্ক্তুম'গ্রী'র্ক্তম'রমম'ডব্'রের্র্বন'র্ডিদ'র্মান शः हैं नार्यायाची त्रुः सायान्यायया त्रुः सार्यायया त्रुः । त्रुः यःश्चेत्राव्याद्रमः मुन्यकेन्द्रम् स्यायाः स्थाप्ता स्थापः नहेत्। स्याक्त्रम्यूर्यार्याचे विश्वाश्रद्यायते ध्रिर्मे सिंहि नवे विषात्राम्या इयार्वेषानञ्जनायायात्वायायायायाके नासेन्ने। कें वरेदे नु न न सूर्य द्वा नुराध्य के न पाय प्य स्ट्रिन स्वा से द से र से र से र র্বনের নের র্মানের মার্কনমার রামানের মার্কীনের ক্রমানের নির্মান বির্মান बेर्नस्यान्दर्द्यम्बर्द्रा

ने भूर त्र न भेरा नाहे व र में व र से व र स

नस्रेन गु:न्मो नदे नने रामाहेन ग्री सळन हैन दी।

श्चेर्यासुर रन द्वीरस वर्षेय प्रत्य स्थान यःरेसःग्रेसःविर्वसःसरसःग्रुसःग्रेष्यसःवेषाःसःकेत्रःरेष्यःवविर्धः न्नो नदे न ने अ निहेत विमा क्रेंत न प्येत के । ने के अर्ने क्रेंदे क्रुंत यथा निनेशमहेतर्वानानेतर्वाना । धित्रह्याभागस्तित्वर्गास्य गीर्थासुमा । ने छेन स्वाप्त हें मिर्याया श्रुप्ता विश्व विश्व । विश्वे विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व क्रें, प्रश्नर्याया पहेता वियान ने या पहेता के या दुः प्राप्त प्राप्त वियाया र्श्चेन'स्र राम्भेन'द्रों रासर'याशुर राजें। ।दे 'धर'रदा स'त्य'वरायावन' वर्षानाम्बर्धासेर्प्यम्मासुरस्याम्बर्पित्र्यानवे सुःसार्स्या सरस्यो कुर्नरह्यान विवादवें शर्शे विंत है भूर नहुयान विवा न्वीं अःश्रुअःवं। यारः हुरः हुरः वीः श्रुनः यः हु अः व अः हेवा अः यदेः धें वः हवः नुः श्रेट्य प्रमाश्राम् कृत्या वित्रा वित्रा श्रेष्ट । वित्र वित न्दः अश्रुवः प्रते कुन् प्रत्या श्रुण श्रुण श्रुण श्रुण प्रते । ने वि प्रश्लुवः प्रते व श्रुवः प्रते व श्रुवः प ळे.चाशुस्र-१-१स्रामस्य-१त्याचात्यःसँग्रस्यानाशुस्र-स्यास्य । ११ त्यान्यः नर्ने र्द्धयाविस्ररा शे नक्ष्मनाया है। र्रे र्से मात्रमा स्वाप्ता ह्वा पुरवन प्रसा नन्दन्य भी । श्रेस्रश्रम् स्त्रम् न्यादन भी । समुद्रभि यो ने सम्मिन मधी। अन्ते र्से से सम्बर पर्दे धेता विश्वास निमान सुर ह्या प्रेचेन प्रया

यदिलःश्वःसःश्वःत्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस् यदिलःश्वेःह्रस्यायदःश्वेशःश्वनःयव्यःस्त्रःस्त्रःश्वःशःशःयःस्त्रःस्त्तःस्त्रःस्त

वि'न'वे। ने'सूर'येग्रयंसर्श्वन्यन्द्रियः प्रत्रेश्यसर्श्वन्यवे प्रह्माः क्र्यां त्यः इतः सः इदः ने अः निव न मेरे वं स्था शे अयः वदः इ ने नरः नव्यः मदेरिट्टेप्टें वहें वर्शितसून मास्रीय मदें। वित्तर वित्तरी सेसय प्रयास्य नेशर्ना के नक्षनाया क्षेत्राया है । ने क्षेत्रानक्षनाया निष्ठा के कि निष्ठा नरः तुरुष्यवे हिंगुरुष्ये प्रेति प्रति स्वाप्त स्वाप्ति । सुर वी वि वि त्र प्रत्र प्रत्र प्रत्र प्रत्र प्रत्य श्वर वी श्र श्वर वी श्र श्वर वि श्र श्वर वि श्र श्वर वि श्र श्वर वि श्वर वि श्वर श्वर वि श गशुस्रायार्सेग्रायायायायारातुःर्वेसायात्राय्वायार्वे । त्रो नि ने सार्वेदायदेः वियावया वेषाकेवाग्री सुः या ग्राचाय विदाय वा व्यवस्था स्था स्या विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय यार त्यू र क्रेंब रा बिया दर्वे वा या शुर हैं। । दे के द हैं या वा या दी। वी वा रवा ग्री नक्ष्रन मान्निन सम् उदार्के अन्तन्या अन्य मिन्स मान्या धराद ने वि वित्रस्वात् शुर्मायार्वे वित्रम्व वित्रस्व वित्य

यश्नन्त्रव्यान्त्र्यां श्राण्यात्र्यां विश्वान्त्र्यां श्राण्यात्र्यां विश्वान्त्र्यां श्राण्यात्र्यां विश्वान्त्र्यां श्राण्यात्र्यां विश्वान्त्र्यां विश्वान्त्रयां विश्वान्यां विश्वान्त्रयां विश्वान्ययां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्ययां विश्वान्त्रयां विश्वान्ययां विश्वान्ययां विश्वान्ययां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्ययां विश्वान्त्रयां विश्वान्ययां विश्वान्ययां विश्वान्त्रयां विश्वान्त्रयां विश्वान्ययां विश्वान्यया

रान्द्रा क्षेत्र हे अ गुव वया नक्ष्र या हे क्षेत्र पर्दे । वि के नि वया वया क्षुव ख्या वे अँदे त्। डे ड अपदे के अपन् निष्ठिष है यो निष्ठिष है यो निष्ठिष । ग्रम्पर्याचीरा होत्र सार्श्वेम्। वर्षे वाद्याया स्वाप्या स्वेत्र पार्श्वेन्य स्व वर् न विगान्ने रायाधे र समागन्य न हें र न उर्राही ग्वर ही ने दिया र्श्वे न नहत्र निर्मे । भ्रें न श्वर्यान निष्ठ । यर यर विष्ठ न स्थान भ्रे वक्षन्यवे न्याय सुन् नर्वे । ये में नवे विषय स्था नक्ष्माय पार्थ स <u> ५८.५.६५.६०। ५८.५६८.५६.५५.५५.५५.५५ ५८.५५.५५.</u> वर न दुव ग्वाव त्या अर र दे के अप्यादर से द क्षे न न वे विषय से दि स्वाव से विषय से वि देव'त्'ग्रच्ग्रयाय'य'रे'होत्'यद्रद्रायेत्'ते'ख्र्'य'ख्र'खेत्'प्रयाद्र्याद्र्या रायायम् गुरुम्ब्रेम्या स्थायम्यायाये सेन्येन प्रमानिन स्थायम्य गुवाग्रीकानानेकाक्षेणीं स्रूकामायकाक्षे भीकाने खार्से पिनामकाकु हे नाया सव ग्राह्म । ने सूर व नक्ष्य स इस्र राय नक्ष्य स्थान स ने न्या मी नश्या अप्यय धिंद न्द्र नहें न्य अप्रदेशी पर्के न नश्चन पर्दे न्वो नदे न ने श शु शे दें श हे । इव न्व श्री न श्वा श न हें न प्रश दर्छ न नश्चन'म'य'र्डन'न्न'र्नेन'न्'योहेर'न'यगद'विग'गोर्थाईन'य'ने'र्थेन'न्य' वेश्रास्थ्रम्भामान्यसेन्द्रां वेश्रास्थ्रानान्द्रानम् देन्सेन्यम् कैंपार्स्यन् वशुरावविष्ट्रीराहे। हेरारे वहें वाकु वार्या वाका ही सवे त्यावाद वो क्षेरावी। |र्श्वेस'स'सेन्'स'सर'र्से'न्न||सर'न्'र्वेस'स'न्ना'वर्नेन्'वशुर्म। र्ख्य'विसर्

ने स्वराह्म स्वराह्म

त्यर्स्यः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स

गहेशमा हेत हो न हों न सादी

निक्तिस्य विकास्य विकासिय वित विकासिय विकासिय विकासिय विकासिय विकासिय विकासिय विकासिय विकासिय

ग्राम्बग्रेने व्यापेव प्रवाद श्वरामी श्चेतित् अभूमानमा ग्राह्य है। श्वेता ॻॖऀॱय़ख़॔ढ़ॱढ़ॆऀ॔ॖॸॱॸॆॱॸॖॺऻॱय़ॱख़॔ॸॱढ़ॱक़ॕॕ॔॔॔॔॔॔॔॔॔ॹॱय़ऄॱॸऄॣॱॴढ़ॆढ़ॱक़ॆ॔॔॔॔॔ढ़ऄॱऄ॔ॸ॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔ न्याः ग्रम् १६ से हि स्रेन् से से स्वार्थ । स् र्रितः भ्रें त्रायदार्थे तात्र प्रदेश प्रमाय से विषय प्रायम प्रमाय से विषय विषय से विष <u> त्राचित्रामित्रेत्रासळ्त्राकेन् प्रसम्भाउन् । क्रमानेन्ये । स्राप्तानेन्ये । स्राप्तानेन्ये । स्राप्तानेन्ये । स्राप्तानेन्ये । स्राप्ताने स्</u> नेयायान्यायानयाने रानेयान्यान स्रेतायाया सक्ता हेनायने प्राप्ता करा नेशनश्चित्रशन्त्राधित पृत्राभी सर्वेद प्रमाना स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स क्रेन्ने। न्तुःस्तेःक्रेन्यं त्यमा द्विनायःसुःसून्ययःसेसयःनानुन्यःपया। विन्यत्वसायरहें वासासी विद्यापासुरसाय सुराहें द्विवास सुर दे। रटमी सुन्य राज्य कन्य राज्य निष्य निष्य में के रास्त्र निष्य राज्य निष्य राज्य निष्य राज्य निष्य राज्य निष्य ने प्रदान ने रूट भी कुट प्रानहना अन्य अने रूट में अने व्यट कुन से अस न्यदे से से राष्ट्र पायमा राजी पर्देन या निरासे सामित से निरासे न यदे भ्रिन्में । दे राष्ट्रा श्री अर्के वा वा अरक्षु अर्ज वा बुर्ने न वा व अर्थ श्री वा अर नन्दायमाधारप्राप्तार्वा स्तराहे यानन्दायमा सुरास्तराहे या है या हमा सरा वर्तेन् प्रवे र्ह्में दे अध्यक्षेत्र कर्र्ह्मेन् न् से स्ट्रा न स्ट्रा के स्ट्रा न दे रहे स्ट्रा से स्ट्रा से स <u> थ्वायान्वीयाने। नेयावे श्वेराये ये नाया श्वियाया ने या श्वेराये ये वा वे ।</u> |ने'मिहेश'र्ड अ'ग्रीशक्तिंग'माअ'श्रूअ'त्। ने'मिहेश'र्धेन'ग्रूट'रे'र्सेदे'र्केश' १८५ म्हर्मा के स्वाद के न्या के स्वाद के स्वाद

नेशने हे क्षूम नक्षेत्र मदे कुषा दी

श्वायान्य विद्यान्य विद्य

ने 'क्ष्र-'नगव'देव' अर्वे अ'स' श्रे 'न्- 'हिन्' पर्- प्रेन्' ज्या के त'हे वा अ' सदे 'ग्रेन् परे 'हे वा अ' सदे 'ग्रेन् परे 'हे वा अ' सदे 'ग्रेन् परे 'हे वा अ' सहे त' परे 'हे वा अ' महे त' परे हे वा अ' महे त' परे 'हे वा अ' 'हे वा अ' महे त' परे 'हे वा अ' महे त' है वा अ' महे ते हैं वा अ' महे त' है वा अ' महे ते हैं वा अ' महे ते हैं वा अ' महे ते हैं 'है वा अ' महे ते हैं है वा अ' महे ते हैं हैं वा अ' महे ते हैं वा अ

नश्रमानश्रेत्रमित्रकुषान्ना

राक्षुत्रेते से समाते । तुः सह दशाया दे । तुः नाया महा द्वारी । सदिः द्रान्यक्षः विदाने वे प्रवाद्य प्रवाद्य विदाने प्रवाद्य प्रवाद्य विदाने प्रवाद्य प्रवाद्य विदाने प्रवाद्य मंदे हिर्दे वहें व त्या ग्राम्। देश वस्य उत् द्वार देश हैं र हे द्वी ने^ॱप्परः सळ्त हेन् :ळरः न :बेना यः हेन् :ग्रेः शुः सुरः सुरः यः श्वुः न :श्वेः नहुनःगुशुरःर्दे। । अहं यन दे शुश्राग्रदः श्रे शेदः धरः नहुनः धरः होदः धः वै। र्हे हे सुर्वि सेस्र भित्र वित्र निष्ठ वित्र से वित्र नर्दे । सर्दे दे हे द त्या सह द व से हिना य द द दे से हिना य श्वर व द द वेशमाशुरशःश्री । व्लायदे नुप्तदे । तुर्म्यस्य अप्तर्मात्र नात्री साक्ष्मात्रदे शेशराने। विस्वस्थाउद्ग्निस्यर्थाधेत्रासुः से श्रीं नर्दे। सिं में नर्या श्रुव्रश्वेरम् म्यामा हिन्दिर्देरमो निक्षान्य हिन्देरमे । क्षेत्र, प्रमायम् विवाद्य विवाद्य विवाद्य विवाद्य विवाद्य विवाद वि षिर्दे भ्रात्रे वर्षे वर

त्र-तिस्नान्द्रः स्ट्रान्त्रः स्ट्रान्तः स्

विगानुराने। वेगाके दानी निर्माने रामाने दाया महेदा है दार्के राम्द्र रामान से रा यश्रास्ट्रीं । यहिषा हेत ग्री:त्रव्रःक्षुःत्रितेःक्षेत्रकारदे। त्वःषकाः त्रम्भः क्ष्रमः कुः त्रूटः तः वःष्परः ৡ৶৾ঀ৾৾ঽ৻৴৵ৣ৾ৼ৴৸৵৻ঽ৻৴য়৻য়য়৵৻ঽ৾৾৴৻য়ৢ৸৻য়৵৻ড়৸৻য়৸৻য়৸৸৻ ने'ना'त्रश'तुरःळ'भेर'सर'श'रगर'श्लभ'र्सेश'नीर्धनश्रा हें'र्नेदे'सर्त्र'त्र'त सह्यावेगाग्रम्युनायर्गामस् हेर्निदेख्यात्स्। असेरिहिन्सुर्ग्वेगा कु ग्राम् त्र प्यम प्यम् ग्राम् प्रमान विष्या प्रमान माने स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य ८.भिय.८८.कु.चपु.८.भिय.घष४.२८.४४.तर.श्रूट.बुट.४८.भि. न्ययः नरः पद्देवः पर्दे । न्यो न ने अ क्रेंबः परे वयः वया । मुखः श्रीः क्षरः नुःयःधेवःक्रवःग्रीःकुःभेःवग्रुदःगशुदःनःददः। श्रुवःश्रवेःवयःवशा श्रेंशःग्रीः <u>र्भादारिते हे से जारासर्वे नाद्या के सुरान्त्री अर्देरान्य पद्यापासाम्परा</u> नु'नार'न्यद'न'न्य'देर'दें य'नाशुर'न'क्ष्र'रें । वेना'य'क्ष्'नुदे सेयय'ने। त्रायदे ग्रायः नेव रु ग्रायः नदे त्रिम खे न त्रयया ग्राम क्रिंग विव रु प्रदेश नर्दे । वि.सं.येदःश्रेश्वरादी वःश्वरायक्षात्रेत्रात्रेत्रात्रे । न्नो न्ने अः भ्रुप्तर्शे त्यः भ्रेन् खुर्यास्य सहयः रेयः ग्रीकः नगदः नर्ने कः याया सुनर्वेदिः र्सेन साह्या सेंग्स्स सेंग्र न्यें त्यें कें सेंग्सेंग्य नेंग्सेंग्य नेंग्सेंग्य ब्रूट न विना वर्ना ज्ञुरायया हिंद श्रीय नगव न सें त्र में वया विनें वया वर्देशवर्दे स्वानु से सह्दर्रेश ग्रीश हे रु.गाश हो व ग्रीश न क्वनश स वर्द

यिष्ठेश्रायाञ्चायात्री प्रोवित्राक्षेत्राप्तायात्रीया बुद्रश यथ। ८८.स.र्सूर.पर्सू.स.स्म.पर्सूट.स.स्री जित्र.प्रम.सम्बर्ध. विरायमेयानमः होत्। ।र्नेगामामामोया विराक्तः में इसमायमार्भेया । १८ यानदेखेग्यासर्वेदाह्येत्रायळॅदाह्येदाधेता । प्रामार्केनायायेदाहेदासेयसा <u> ५८ वेन । ८ कुयः श्रॅट वेट ग्रम्थ पदे स्व प्येन । ५५ पर्वे र ५८ ग्रेन्र</u> न्दःम्दः मदेः मर्के म विषाः प्राचित्रः न्त्रोः सूनः स्वाधिता विश्वः न्दा क्रिंशन दुःसायश्राग्रम्। जामनी शायदेव सम्येश विद्यमाय। । प्रमाये विष्या स्रि सर्केना धेन हो । ने श्वेर हैं नि श्वन संदेश से सा । निन संदेश हे सा सु वहार न र्ने त्र से प्ये शक्षेत्र त्या । ह्यु म् मू त्र में मि प्र वित्र हे या सु प्र में प्र से प्र से प्र से प्र से प ब्रैंग'गे'क्कें'त्रअप्ट्रप्यं अप्तर्पत्रम्यस्य उट्टा ग्रेंगाविस्यास्ट्रिया । हैं कें या क्रेंत्रम्य नेंद्रम्य क्रेंस क्रुव हो द्राय सदा सें पेंद्रमाय पेंत्र न्त्र हिंद्र पर उदानहेशामासी नर्ने पालु यामया है में दि लिया दया हे पा के दारी खेंदा त्र के भ्रे भ कुट भ्रे भ वस्र भ उठ न्तु सायाय नहेत्र त्र भ भ्रे नाया हिट में ट ह्वा

यायात्रासयापदेग्दर्भेयाययासेरावादाङ्कीःवासुरावादा। हें तें त्या आ है भागान्स्र रामा लु लेश भ्रान केत में शाल्या माना है है कि में स्थान पान नवर में नवर में नर्देग स्रे सद रग ग्रुन र दर्भ भेद र दर्भ र दर्भ ग्रुर नःक्ष्र-रन्रःभेवः हुःगयः केर्दे । ने यः श्रे रःन्गेवः सर्वेगःन्रः यशः यन्यः *न्नन्नेव नवि त्यान्न या सन्नु प्येन् ग्रम् वर्ने म*न्ने स्वायान्न पर्वे । । ने प यदात्वार्थाः श्रेतार्थश्चित्रात्रक्षात्रात्वे। ययात्वार्ट्हे हे द्वदात्रभूत्रात्वेः कुर्यथा न्यारान्यदेग्न्याया क्षेत्रान्येदायाक्षेत्रायथाहे सूरानस् नरः ग्रुः वे त्र अरुषः भ्रुषः नर्डे अः ध्वः वर्षः वः देः भ्रुः नः ने न वे वः नुर्दे। । ने ः वस्रश्राह्म । स्वरायम् भ्रेम् रावे स्वरायम् । विश्वाना स्वराय या वेगामकेतर्विसर्भिन्नसम्भाग्यत्रास्त्रम्भेतर्विस्तर्भेतर्वस्तर्भेतर्वस्तर्भेतर्वस्तर्भेतर्वस् यम्याशुर्यानेमा वर्षानाम्यान्ते। व्रम्यान्यम्यान्ते। ने न्यायी ने विद्या है प्रमायम्या क्राया विषयम् वियाय विद्या स्था क्री विद्या यदे र्ह्ने हे त्युद्द विद पेंद्र प्रदेश है स्यूद्द न सुद्दा हु स्थायद्द ळे८.२.वर्भ.५.भ्रेंब.६्या.स.स्य.स.स्यय.१५८.५.५५.५५.५५.५ मित्रे क्वें द्रानि । दे प्यदाक्क द्राने प्यशा क्वें न द्र्यें व क्वें के प्यव प्रवासी श्चित्रेत्रेत्रयः परामा बुराये । पित्र प्रताम बुराय प्रति । श्चित्र इससाम बुरादार्दिसासी प्रमान । विसाम सुरसाम सुरा चुरिस्र *ਜ਼*ৢ੶ਸ਼੶ଐ୕ଵ੶ॸଵॱॶॺॱक़॓ॱਜ਼੶୴ଵॱॻ॒ॸॱॸ॓ऀॿ॓ॱऄॗॕॖज़ॱॹ॒ॸॱॿॸॱॵ॔ॸॱय़ॿ॓ॱॸॆ॔ॺॱॿॺॱ

नह्नाश्रान्दरायाद्देशाम्बानाम्भीनोग्राश्रात्मुराया श्रुन्यश्राते । यः यर क्रेंत्र क्री देश द्रश्राय अपन्त्र वा शास्त्र व्यापन क्षेत्र क्र क्री देश द्रश्राद्र प श्रुट्यादास्टायाद्द्याग्रुवायग्रुट्यादे क्रुट्यायग्रुट्या दिवे श्रीट्यास्य त्तुः अ'धेव'व'र्क्केव'रेक'रेक'रेके'र्थेन'श्चर'नेवे'र्देश'व्यशंहेवा'यवे'हेश'न्धेवायः नस्रस्य वा स्त्रीत्र से स्रस्य स्तर तु स्त्रुवा निष्य है । निष्य है सदसर्हेत्रसें दसायदाना सें वाया ग्री सत्तु सर्झें त्र हें वा पा ग्रुट निवे के तदर नन्नार्यात्रस्यायायन्। यस्ति । ने सूर्त्रम् न्या मे स्वास्ति स्वास्ति । द्रम्प्रत्युम्भे । यद्राक्ष्याविष्यश्रास्यास्य पुराष्ट्रस्य । यद्रस्य विषयः यदेः ॲवः हवः ॲनः यः इस्र राषः क्वें राषे ने दे दे चित्र राष्ट्र दे हैं निरार्थे व हतः विनार्थे व हवः नश्रमः नुति । ने सूर में अश्रान मुंत म्रुत मित्र से मिर से मिर स्थान ब्लॅंबर्फ्न क्रि. ब्लेंब्रिया अप्यहें वर्ष अप्तर्रा धार्या योगा अर्थे अप्तर्थे हो। द्ये र व। रटः भे प्टेर्न् राये से वारा प्याप्य का का स्वारा से प्यान स्वार्थित प्राप्त से से स्वारा से से स अर्वेद्र-प्रवे क्वें श्वाय द्वा प्रया प्रया प्रवेद्र क्वें स्वित क्वें या की या विद्रा मन्दा अदःस्दायः श्रुविः सदः सं सर्वेदः अदःस्ति विवादिन स्थाने सर्वेदः नदे हैं भ्वाय द्वा व देय हैं द सर्वेट नदे हैं विष की यार्वेद य नदेत र्वे। ।गव्रापराहें र्वे के तर्थे स्वानन्तु सावहें तर्वेर ग्रेर क्वेर स्वान स्वान सेसराउसाम्मानदेवायहेवामराष्ट्राचि देश्वीत्रसासकेवाप्सव पेर्पा वेगानाके तर्भेदे त्यया ग्री देयाना श्री न्दर ग्रुट क्रुव ग्री श्रुवाया विदाया वहेत वशक्रेट्रप्रशाम्बेर्म्स् द्वाराम्बर्धात्र्व्यक्ष्ये हिंद्येट्र्यं

नविदःर्दे॥

ल्य निष्या में भाषा म वै। द्ध्यायकयार्शेम् राष्ट्रेन प्यानः क्षेत्रामा यहन् याहिमा रह्मा स्वराधनः वहन् याह्य न्यम् से नाम हा नर्गे रात्री नर्गे वासके वा ह्वे वाया हा साम हे वाव न्नो न तमे य विन् से न्नो न वर्मन सम्द्रिना स स्यास्य स्वापन से में स्वापन से हि चत्राकुट चत्रा ने याप्या से ने याप्या कुंवा विस्था प्राचित्रा प्रवास द्धयाविस्रयायक्यायायदरार्द्धेनामदेख्तर्भेनाम्भेरार्दे । हिःसूरार्द्धेनामः यः न्वायः नः न्नः न्यः भ्रमः अविदः से व्यवदः न्नः सः न्यः न्यायः नमः ह्यो र्श्चेन'न्देर्व'क्रस्रस'त्य'वे'स'न्द्र'नेस'र्से'न्द्रेन'ने'त्र'य'नहेव'वस'नुर'कुन' ग्रीः र्वेदायायाया है प्रयायाय स्वाप्त देव स्वायायाय स्वायायाया स्वायायाय स्वायायायाया स्वायायायाया स्वायायाया र्श्वेट:वर:वशुर:श्रुअ:श्रे:न्वाव:व:न्ट:र्ट्य:य:वर्श्वेव:वेट। न्वो:ववे:केंशः याने निरास शुक्र समा श्रेनिया थी निर्मा निर्मा समा श्री निर्मा २८। २वा.र्वयः श्रेशः व्याययाययः यहा वियानन्व । वायः हे सहः कुनः से ससः न्ययः खुदः र्वे नः यः नृदः विः र्वे नः चः चे तः न्यः से तः न्यः से तः न्यः से तः व *५८:ॡ॔॓॔*य:ब्रिस्रश:५८:वर्डेंद्र:५८:५३र:वर्ड्स्य:व्युत्र:५८:वर्स्य:वाह्रद:५०र: र्नाद्राष्ट्रवायम् वृदाकुनासेस्याद्रावेष्यस्त्रीःकेषास्यास्त्राप्राद्रा NA मुर्भ परे क्वें न द्वें त दे त दे अ के अ मुर्भ स्व के प्राप्त के कि दिन स्व कि स्व कि स्व कि स्व कि स्व कि स ळेंग'८८'भे'ने'हे'से८'ग्रे'ळेंगशस्य वर्षान्य स्वाप्त स्वाप्त से से दे हो नसूत्र

धरःवायः हे :श्रेवः नर्धेवः ने व्यावार्थे : श्रेन्धरः हेन् : धःन्नः वगुरः हे : न्नः अर्केन्'रा'त्रसम्भारत्'ग्रीभ'रेस'र्मे'न्न'नस्देन'नग्नराम्याम्या धेवन्वक्रिंशसधेवन्यदेन्य्यास्याद्वन्ते श्रीया वेयायास्य स्यादेन्द्वीरम्या मार्था न्याप्त्रीय है अर्था न्याप्ती क्रियान द्वारायया नन्या धुवःरेटःतुःविवरःवरःविद्यश्रायः र्क्षेत्रावरः होतःयः नदा वद्याः धुवःरेटः र् महि स्वामिस मङ्गीनस निरमहिर स्वामिस है स श्चेन्यवे कु अर्के वे वर्त्त् होराववे वहीव होन्द्रा वन्या यस स्वासर व्यायायायाययायवरार्से क्रिंत् हो ५ ५५ व वर्षा श्रेरायदे वर्षे दार् नर्वेदश्रायावर्षेषाचेदाद्वा नद्याःध्युवारेदार्थे सावदाःखेश भ्रुव पान्ता नन्या पर्ने न कवा या या श्रीवा या परि से या गुव हा प्रवास ना नर्गे द्राय्यश्याप्य गर्वेद्रात् द्रिं राम्या द्रमे प्रति निष्या महेद्रात्स्यशः वे निर्वारम् अर्धित वस्त्र कर्षा कर्षेत्र स्त्र विष्ठे स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स यम् होन् पर्वे । यथायने यन् स्थायने या क्षेत्र पर्वे । ग्राव प्रवास मेरिः र्श्वेर्प्ययायर्देशयाय्त्री विश्वयाउद्यासिव्यत्ते में दिस्ती त्या स्रेवः नर्ते । वस्र अन्तर सिव निव मिव अन्तर सिव सक्र्यान्त्र्व । र्याच्यायाः वियान्त्रेयः मित्राच्यायः मदे र्स्वार्या श्री प्रशिवाय वित्र स्ट्रिन मिनी प्रविश्व के राज्य के निविश्व के स्वाप्त के निविश्व के स्वाप्त के स्वाप्त

गी'न्ग्रन्सिकें के प्रसम्भाउन प्रमेखानम न्त्रेन प्रके लेका हे का कु'न्र्रा लेटा 5. नर होता हे श मार्यरश्चर संस्था स्थान स् गहेत्रस्थराते निर्मा हेरा बस्य एटर ग्री पर्मे र ख्रु र पा सर्त्र र र मो निर्दे निक्रामित्रेत्राची द्वारा धीन त्या चुर्या है । द्वार् एक क्षेत्रा ने द्वार्य वहें निक्ष धेन्यनेन्यामीन्त्रकेषाठेगानुन्द्रायम्युर्वे । सर्नेस्थयायद्रकेषाः ने सूर श्रुर में । वावव प्यट सेंट में नर्गे द या यह वे न न वा वी दिवो निनेशक्रिंश्वा विकाग्वायार्वे वात्रावार्वे वात्राया विकास्त्र विवास क्षेत्र विवास क्षे सेसरान्यदे हुँ न त्यस प्रत्या हैन न। । प्रेन वेस सेसरा गुडेग नससरा वर्षावर्ते र विरुष्ट र्शे । वर्ते प्रवाप्त्र भेता राष्ट्र वा प्रवास्त्र वा । विरुप्त प्रवास्त्र वा । विरुप्त प अः<u>ध</u>र्नःमश्राःअःवर्च। विराक्ष्रनःषवःवयाःष्ट्रिरशःशुःश्चेरःनःषेव। । प्रोः निनेशायदी द्या यहिंदा स्थायम हिंग । मिनेश वम हो द श्रव पा स्राप्त हो। |नर्रःकेषेःकरःवनेनशःभ्रःननरःनक्तःविदःवर्। । त्तुःषःभ्रःत्रःनगरःभिषेः क्रॅंश ग्रीश क्रुश वि नदे सुँग्रा सूँव है साम्राययान प्रदा | न्या न्टर ग्रेंग्राय शुः श्रुर्मर्परस्वत्रायद्वर्या विषा । दे पद्विरशेस्र स्व स्व श्री स्व विष्ट्र स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स दिर्यार्श्व । विराक्ष्याये समार्ययाय विष्युत्ते भ्रीताया । यरमासुयाय्यया र्रे. बिट. क्षेत्र क्षेत्र बिट. या विदे द्या यद्या यने अय्यद्य क्ष्य यस्य स्या मर्भान्यवर्धे द्वारे । निन्निर्वेद सर्वेद न्या क्षुन्य राष्ट्र व्या । विने न्यानन्यायान्ते क्षेत्राक्षयाध्येत् विष्या । ने त्यन्ते क्षेत्रका श्रीका न्यो निष्य क्षेत्र न्या निष्य क्षेत्र न्या निष्य क्षेत्र न्या निष्य क्षेत्र न्या निष्य क्षेत्र न

श्चें रामशामध्रेत खुषादी।

त्रुः अः श्रुः न दुः रः यथ। वर्षे रः अदः श्रुँ अः यः देः विवाः नर्वे श। व्रुः अः न्क्रेशः ब्रेन्ग्नरः धेवः ब्रा विश्वहेषः ब्रेन्ग्ग्वः श्वरः वि । नेःन्रः नेःवः वनर्दे नहम । दूर्र म्यूनः र्रेन दूर्व हे भवन्दि । विश्व । दि हे विदेव म हेट्रावासुरसाम् । भ्रेसादसाद्वीसार्वे वससार्वे वस्त्राचित्रा शुःसहेशःसरः श्व विशानश्रिद्यासः सुर् सर्दरः तसुर् संसहेशःसः नसूतः मन्दर्भे अहे अप्रार्श्वेद्यायायनद्यद्याय हो द्या विषेत्र अप्यान श्रुवायां दे र्भे गर्अस्रे। बर्वेरप्रतुषानप्राप्यस्यामियान्रेर्वानगुरानप्र नगायनिव न् नशुन पर्वे । ने स्ट्रम प्यम् स्रेते क्रिव स्था नगुम है क्रेन्यान्यान्द्रियार्चेन्द्र्या । क्षुन्यये क्षेत्र्यान्तेयाये हेन्यके सम् व्य विराद्या वह्रवाराहे अद्भवत्य मुक्तारा वश्चवारा देश दि धी सेस्राहे लट्टियासयी.यर.घुटी विश्वायशिष्टशःश्री टि.ज.ट्टि.स्.यी के.यंथे. यथा रदमी द्या के ना क्षेत्र दर्भे कर है। । श्रे कर से कर सुद्र स्थादि । । रद श्रेयामी शह्या नक्षेत्र ग्रुत्य विरश श्रेष्ट्र पार्थे न सः श्रेस के द्वीसा विस

५८। १.व्रेव.भ८भ.क्रभ.वश्रभ.वर.का १६०.६.स्व.२.१९८.८.वर्षे । ने सुयानर्भेन त्रस्यार्क्षे नार्याधित है। विक्रीयाय्य पन्ने सामुना सर्के ना हि वर्मम् । विश्वाम्बुर्श्वाराष्ट्रमः में । ने प्यरायमा से मानवे व्याप्तर्थ। न वर र्रे प्पॅर्न्न निवर्त्र प्रत्यापन्त्र या वर्षा के पा क्ष्य था है। व्यान्ते या निवर्ष यत्याद्यः याय्यायोदायः हेयायायोदायायुदार्दे। । वृः यञ्जाययायादा सेः बर्ने केर्ने पर्देर्ने पर्धे था । इस बर्ने केर्ने केर्ने प्राप्त पर्वे केर्ने हिर धरःश्रूरःभःकेन्।।ने:न्रःने:वे:ब्रःसरःन्तुत्य।।वेशःभःन्रःस्वनः द्रा । ने प्यरः श्रूनः अदे देशः दशः स्वाशः नश्याः भदेः अस्ताः प्रेतः भवः ने प्य नःविगान्नीयःग्री सुःसदेन्स्यान्यानेगयान्यानेगयान्यान्नीयःस्या न्यः नियः वयः वया अन्यः स्थाः त्रायाभी विकास की विकास की विकास की स्थान की स्था की स्थान की स्था सूर-वान्स्रश्नायश्वार्थः त्वायः वर्त्तः वश्चवः यः प्रेतः यः दे दिन् वार्टिः वे रः प्रेतः वितः है। श्लेशपदिःस्वरायया यवःपदेःयवःतुःसर्केन्यान्तःवी ।वर्श्वःवदेः

म्याने स्वायते निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा स्वायत् स्वयत् स्यत् स्वयत् स्ययत् स्वयत् स्वयत्यत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत्यत् स्वयत् स्वयत् स्वयत्यत्

अधिवरमञ्चावरमञ्जूष्य । विश्वर्या नुग्विसळेष्य श्चेवर्यश्याप्य । न्वोर्यदेर्केश्वर्यने प्रत्यस्त्र विश्वर्य । विश्वर्या नुग्विसळेष्य श्चेवर्य स्य श्चेवर्य । विश्वर्य । विश्वर्य

वेशनाशुरशम्या देवे नङ्की नाया श्री कुत दर्गे शसी । श्री देवा शमा यः भ्रेष्ट्रम् प्राचे भ्रेष्ट्रभ्रे अर्म्म स्वर्थान द्वामिष्ट स्वर्म स्वर्थान स्थितः ग्रर-दे-द्रमाक्तुः अळ्द-दु-तुअव्यय-दे-व्य-भ्रे-त्य-भ्रे-त्य-भ्र-त्र-वक्र्य-प-दूर-भ्रेद-मःश्रीवार्यात्रम् स्रीत्रम् स्राय्या स्वायाय्या स्वायायाय्यायाः स्वायायायाः त्यात्रा । ये त्यारे पा के वा वी या श्रुट्या । विया वाशुट्या पा प्रेट्या प्राप्त प्राप्त व्या येग्रयम् नुयाने से तह्या माधित हैं। | दे सूर नस्ने तारि से प्या सहें र्ना हु स्रेव हो न बर बेर सेवा विश्वा मुस्य स्था से स्था है सा ही नर्गे सूया यार्श्वेर्प्याविवाप्तवे राष्ट्रे। से हिं प्रदेखियात्रमा गुरुप्तवादार्थे सूर्वापदे विद्या <u> देट-तृ नङ्ग</u>्रेश-पदे छे र्स्ट्रेन-पश्चा योशेषानदे तु नवद पळट तृ से पह्ना यन्दर्भेत्रमित्रकेषाञ्चनाः से प्रक्रियान्दर्भेत्रमित्रभेत्रमे ब्र-पर्वेर्गन्यवरावा क्रेंबायाया नक्षेवानग्र-हो नार्ने विषाणिकाया न बुद्दान दे सार्वेद्र सार्वे यादा बना त्याद में द्रिसारा है। स्दारुना के सात्या है सा षरः भ्रे निक्कः नरः हः शुक्रः रेदेः अर्थेः न्यवः वः शुवायः वः निवायः अपनिवायः वस्रकारुन्य के नाने स्वाका स्वानिक हिनाका धेवान सुनाने । त्राने किस नुनिष्ठेवासावी रिंकें निवेष्वयावया नायानारे रे सुन्दात्रात्र निष्ठ्वा रे रे

र्श्नात्त्रम् भ्रेष्ट्रम् व्यायाः श्रायम् न्यायाः स्त्रम् । याविष्याः भ्रायाः स्त्रम् । याविष्याः स्त्रमः । याविष्याः स्त्रम् । याविष्याः स्त्रमः । याविष्याः स्त्रमः

नश्रेव मदि सव पिंव दी।

८८। रगे.यदु.यन्नेश्रामहेष्यम्भ्राम्भःस्ट्रास्यःस्ट्रा रष्ट्रायम् स्राप्तिःस् ८८। तम्प्रत्यत्रत्रहेर्स्यस्याच्याच्यास्य विद्यम्य **શે**:ક્રેક્ટ્રિન્ય:નદ્યસે:વર્ગાય:વેદ:દે:ત્ય:દ્રફ:સ:દ્યક્ર:યચ:ર્બેફ:ક્રફ:શ્રે:ર્જેગ્રચ: ग्रीशःहे । अर्वे हे । अर्वे र । वर्ष । अत्राज्ञान्य । वर्ष । अत्राज्ञान्य । वर्ष । अत्राज्ञान्य । वर्ष । वर्ष वस्रश्रास्त्र त्युवास्य त्युक्तात्र विष्यात्र हेत्यात्र हेत्र विष्यात्र हेत्यात्र हेत्या <u> ५वो न वें न क्राप्त पावव की में व के ५ के मार्थ में वाय पर प्रकार </u> नर्दे । ने सूर पर क्रेंट र्से नर्गेंद रायका रेग्र की तुर्वे न ने का गहेत्र:ग्रीय:प्यर:दग्रा:यर:बेत्र:यदे:ग्रुट:कुन:येयय:द्यय:द्वयय:दे:दत्र: वर्तेरक्षित्रहें। । निर्मानियेन निर्मानिय मिर्मानिय मिर्मानिय । श्रेश्रश्चरम्यत्रम्भश्चत्रे चिटःक्वाश्रेश्रश्चर्यत्रेत्रम्यत्रम्यत्रम्यत्रम्यत्रम् <u> चे</u>न्ने। । न्वो नदे नक्ष्याकेष यो अन्य अन्य अन्य स्था स्था । इस्रयाचे प्रहेगाहेव प्रयासर्देव सर प्रयास प्रयास प्रेव हैं। । नगे प्रदेश के स गहेत्रायानहेत्रानग्रामानुषापदे नुमास्य स्थायान्य स्थायान्य स्थायान्य स्थायान्य स्थायान्य स्थायान्य स्थायान्य स

वस्र राज्य के निर्देश स्था है देश के स्था निर्देश में स्था निर्देश में स्था निर्देश में स्था में स्था में स्था र्धेरमःशुःन बुदःनदेः चुदःकुनःसेसमः द्रायः इसमादेः त्यमः दरः हेत् सेरमः यः इस्रश्रः श्रेशः श्रवः यरः द्रगायः वः धेवः वे । विशः दर्। देवाशः श्रेः तुः द्वोः नदे'निनेशमहेत'ग्रीशहेशसु'निष्ठत'रा'ल'त्वाशपदे'ग्रह्मसुनासेसस न्मवःवः अन्यः क्रुयः वर्षेयः वन्यः इसयः त्रुवायः सहेयः परः वर्षुरः र्रे । प्रमो मदे मने रामहेर मी क्षेम प्रमाय मान रामहर महिर मि कुनः शेस्रशन्द्रवाया वस्रश्रास्त्र हिताया है निर्मा निर्नेशमहेत्रची क्षेत्रायाचे केंस्य सेन्यायान्त्री निर्देशनिर्मेशमहेत्र इस्र हे नर वशुर हैं। । द्यो नवे न ने रामहेद धेद खड़े द सदर सन्य न या देव'बसर्थ'ठ८'सदेव'र्'पर्शेर'र्र्स् । वेश'रा'र्ट्स ग्रेश्टरा'यश्चार्स्य स्थित वियासायमा ग्रम्। देवामाग्री तुत्रमादेवामाग्री तुःसँ द्वापी माने न तुन स्वामा मश्राह्मायायानहेवायान्यान्यहेवायान्यान्यहेवायाम्यहर्वे ।ने सूर्यान्योः नदे के अ वे अ प्रश्नान अया पार्नी न र दरे प्रश्न के र न र ने न र प्रश्न र र्भे । देश-द्रयो न्वदे खश हो द के दः द्यो न्वर वर्शे नश द्यो नवि र्शेषाश अगुः नरः हो न दो । प्रे । यथा श्रेषा । प्रे । यथा श्रेष । हो न । हो न । यथा श्रेष । यथा श्रेष । यथा श्रेष । यथा श्रेष ५८'मावव'त्य'मार्५'नर'शे'ग्रे५'र्ने। । नर्म'र्५'मावव'हेश'शु'नशूर'नश' वे त्वःवः सेनः प्रदे ग्रुटः कुनः ग्रे ख्याः हे ग्रयः सरः ग्रेनः प्रयः ख्याः दवः सरः व्यायायदे सेसयाउदाइसया ग्रेन्द्रिं ग्रेट्स्न्र्या म्या व्याया स्था । दे नया ग्रह्मा सेससन्धरात्वासायानहेत्राते । व्यवान्त्रत्ये । व्यवासायान्या ।

गुर्दे विश्वासुरश्रा

याव्यापरायान्वेयायाहेवायस्वेयायगुराययाची प्याप्यांस्ट्रीर्स्या ब्रैंदःनर्याग्रदःत्यरादे तर्देद्याद्यान्य सद्यान्य स्त्रान्य स्त्रान्य स्त्रान्य <u> नम्मार् सेन्यायाधेवास्यानासेन्या श्रीप्राची सम्मस्यसाचेत्राची सामित्रा</u> रार्श्विषराग्री:सव प्यव स्वित पुरक्ते हो। यदे श्वेद सिंदे सर्दे प्यया देय बेवः यात्री निश्रात्या हो ना नियमा हु स्रोत् स्य स्वत्य स्वत्य स्वर्षे स्वति स्वत्य स्वत्य स्वति स्वति स्वति स्वति स यशः इस्रशः कें प्दीरः रीस्रशःया शेंग्रशः प्रवसः सुःगो पाः शेंग्रशः पाः सुरु। ८०० सेससायाविद्यान्य जुरावसानु वासाय व्यापन वासाय भ्रे प्ययः रंथः ग्रेयः ग्रुटः ग्रुटः प्रस्तुरः दे । देयः यदयः मुयः ग्रेयः प्रा तुःसेन्दायात्वान्वे स्वान्त्रेत्रः तात्रक्षेत्रः यात्रक्षः सर्वेत् । यात्रक्षः तक्ष्यः तक्ष्यः वक्ष्यः वक्षयः य न बुद्दान व्ययः चुद्दान इययः सृद्धे प्रचित्रा वीयः वीयः वीयः वीयः विद्याने विद्याने यः नश्रेवः नग्र्यः हो दः यं वे 'धॅवः हवः नश्यः ही शः श्रेः हिनः यः ददः ध्वाः यर्दे। वेशन्ता अरशःक्रुशःभ्राधिःभ्रतः ह्वास्य स्वस्य स्वर्धाः नः न्यमः हिसेनः स वस्रश्चर्यात्रात्ते त्यश्चर्यं विश्वर्षेत् । देश्वर्यश्चर्या मुश्वर्या गुर्वा ॡमः त्वः अः नक्षेत्रः यः प्रदः नक्षेत्रः यः प्रदः नक्षेत्रः नग्ने सः नुष्टे । विअः मार्थः सः यदे हिर्दे । क्रेअ रन्य वयायया ग्रम्। न्याय क्यय दे शुया ग्रम् से पर्य र म्रे। । र्षः नवे रुषः ग्री अ र्षो न न म्रेन यर ग्रा । रे र्र छे न रे पी पिंत हन ह्या । केट्र स्यानर्भे अयम् यदाने अयम् वसून् । विश्वास्य स्यान्य र्हे. चते. विष्यः वश्या दें भ्रेष्यः ययः दुः श्रेष्याः दुयः दुः वश्यः विष्यः वश्यः वश्यः वश्यः वश्यः वश्यः वश्य दुदः यशः श्रुष्यः यः वश्यः देवे व्यवः वश्यः वश्य इस्रशः उदः दुः पुदः पुदः शुदः श्रुष्यः वश्यः वश्यः

यानक्षेत्रामधिक्षेत्रामधिक्ष

निनेशामहेत्र, नुश्राम्भेत्र छ्यार्थेमान् छे यहेर वहर गर्नेव-र्-अश्याने न-र्-शिःसर-रन्-वर्गेविःश्वानश्यान्याः हिःसेर्-सः त्रान्यमाः हुः सेन्यमः श्रीन्यमः वश्चामः हो। यमाः सः हेः न्यनः वश्चमः नवेः कुर्यथा वर्षेत्राध्वावर्या वारादवाः श्रेवाद्येवायावरूषायरः वर्षेत्रायः ने न्यायी इसाधर श्चेताय है सुनु यायाया वर्डे साध्य यन्यायी साध्य स्वामा वनानः रेहे । स्नान्य वर्षानि वर्षेना हेन सूना सम्वर्षम् सी वर्षे <u>ने भ्रम् अञ्चर्भ विया । याक्षर यादे याम्या में । देव ग्राम द्वर विया या हेन यम हाः</u> थे। द्रवार्ये निश्चेस्र ने देश्वेर हेन । सक्स्य से से द्राया से नाम से नाम ह या । निश्चत्यः नः निर्मा निर्मा । निरम्भः सः स्वीति स्वान्यः स्वानि । नेरके नम्भूयाया सम्बदाया अर्थे। । ने व्यान सामा मान समा । ने व्यान समा नक्षारी है। विषाद्रा व्यावर्षायया ग्रामा क्षेत्राद्रीत वारी क्षेत्र मन्। । पास्य मन्द्र सम्बद्ध म्हरम् सम्बद्ध । पार्ट्स म्हरम् सम्बद्ध ।

यशिरमःश्र्रा।

यश्रम्भःश्र्रा।

यश्रम्भःश्रम्भः विषयः विषयः

ग्वित् प्यर पॅर्व हित्र सा क्री अ मा इस अ सी क्री वित्र मुस्य मा स्था ग्राम स्था स्था मा स्था

बे'न्वो'नदे'नकेश'गहेत'न्ट'धेवा'र्वेचश्याराम्यात्र'नक्षेत्र'त'र्धेत'हत्र'ह्रस्यरा पिन् ग्री अप्यम्भिन केर हे अप्यामस्य अप्यन्ति प्रायमे व्यामिन स्थापित नश्चेत्रप्रशाह्मस्यापात्रस्यार्थ्यस्य स्वत्रप्रश्चेत्रप्रम् न्त्रप्रश्चेत्रप्रम् न्त्रप्रश्चेत्रप्रम् न्त्रप्रश्चेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्चेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्चेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्चेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्चेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्चेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्रप्रम् न्त्रप्रभ्वेत्यम् यथा वर्रेन क्याय न्दर्व सूर न्दर यहि सुग मयय उद ग्री यविर शुर यने भ्रेमायने में म्राप्त भ्रेपे ने ने ने मानी भ्रेट में भ्रानुमें विकादमा हा <u> द्यायश्वद्यायायश्चारा । ज्ञारकुवाश्रेस्याद्यव्यत्रे ज्ञ</u>ीवाश्वाद्याया दे·खुअःउंअःवहेग्रयःयरःग्रेट्-ग्रेःश्र्य्ययःदेः-द्गेःनः-दरःश्रेययःक्रयःयरः <u> न्यायापिकायात्र्रेयायम् ग्रेन्न्य</u> । या स्टेश्यिकारीकार्यस्य ५८.क्रुंशःग्रीःख्रायहेषाःगः५८। ८४.श्रूंटः५.पश्चुरःवरःश्रेःव्रायः५८। देशसम्म् अभूमः तुर्वासम्प्राम् सुर्वासम्म निर्देत्रसः संदिः होतुः स्वा ग्रम् गम्मियार्ग्याश्चित्रार्ग्याश्चित्रार्ग्यात्राश्चित्रार्ग्येश्वर्थाः वित्रार्थित्रार्भित्रार्ग्येश्वर्थाः ग्री-त्या श्रुव स्वर श्रूद्य या वि द्या द्या हि स्वा द्या है स्व द्या है स्वा द्या है स्वा द्या है स्व द्या है स् શે·સ·નનાસેન્નાબદઃસ·જે·યસપ્ટુદા | વિસપ્યન્દા સદ્વાનનેસપ્શે: क्रॅंअअ'यश्रागुर्। ५५'रासे५'ठेर'यहुरस्याप'५८। । नह्नुर्'ह्यु५८स् याउव। । यापयापयापनेयापराये। ग्रुवाप्य वेयाप्य वेयायायाये। ह्या । नाय हे सेना य हे द य द्वा । सेना से ना से द य य से द य प्या । सेना यः ब्रेन्यरः र्नेग्रार्श्वे विद्या । श्रेष्ठ्रवः यः यद्येयः वरः वर्ष्युर्म । वर्ष्ट्रवः वः याधिवानक्षेवामवे थे। । ने धि क्षेवा श्रीवा श्रीवा उवा वश्या । ने ना मान नश्चर्या स्वरं विवास वि

इगामने नगमी देव नशुमा ने स्मान स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र ल्रिस्याशुः ज्ञानायायाये नाम्ययाया प्यम् स्यान्य स्वर् । ज्ञान्य स्वरं । ज्ञान <u> न्रोग्राया मुत्रारे उयाया श्रुत्याम्या वे ग्राराधार थे मुत्राया श्रेताया श्रुत्या श्रुत्या श्रुत्या श्रुत्या</u> त्रथःळे*ॅ*र्थःनेगान्तेनःतःते सार्वेनःनम्याद्वनःमदेनननेशःगहेतःन्यःयःयः कुव रेट र् नहेव र्वे राया देवे के प्यट सकर गानवे वया वया हा स नक्षेत्रनिर्दे दं त्रक्ष्रम् अर्दे न्या अप्ति नाशुर्ना नक्षेत्र द्धाया अपे अयमः नक्षेत्रक्ते विक्षे क्रिं प्रम्क्षेत्र प्रमुद्द न्या निक्ष महित नक्षेत्र प्रवे क्रिं ब्रूट नर्भा स्वार्थ देश विवादी सामे द भवे वाश्वर स्वादर द विद्या वर्षे वा <u>ढ़ॺॱड़ॸॺॱॸॖ॓ॱॺॕॱक़ॗॱख़ॱऄॸॱढ़ॹॎख़ॱॿ॓ॸॱॻऻॶॸॱॸॻॱॻॖॆॱॸॕढ़ॱख़ॱॻऻॿॕख़ॱॸढ़ॆॱ</u> <u> न्यायाम्ययाण्ची माश्रुटाङ्क्षेयाण्चेयान क्रम्यानम् न्यायाम्याव्या</u> दशक्षायर गुर्दे॥

दिः क्रेंयः हें दः सेंद्र अभी दः हुः र ग्रायाः ह्या सारा क्षेत्रः खुं या से भी सारी हा नेयाग्रद्राक्षे ग्रेद्रायम्द्रायायार्केयाद्वरायाम्ययायान्त्रायायान्तेत्रायया यःश्रेवाशःग्रेःक्वें प्रत्यूदःदगायःवशःश्र्यःवन्त्रःप्रदःप्रदःप्रेवः । व न्भेग्रयम्भ्रयम्भेयासम्बुयाने । अदान्दायदानु । वर्षे स्वयः र्थः सः इसरा द्वारा ने से दे दिया है। प्रविद : ५ : सा सुद : प्राम्य स्वारा स्व रात्रयान्ववायावीरार्धेयायेययायरात् च र्येत्रत्राची रेंक्या इयया ग्राटा रदायावनदारम्यान्सून। द्योगनदेगनेयामहेत्सी सळत्हेदार्येद्यासु क्रियायाम्यस्ययाग्यारायारायारायायाया देख्रानुयानुराकुनायाक्रीनाग्रीः नर-र्-हेश-शुःवहें व्रायवे कुर-र्केष्यशानश्चा हेट-र्श्वेव त्यस्य सट-र्-वार्वः म्रे। ने भूम गुरुष तम्मेर से में मार्थ सम्भीत में निर्मा न कुषाश्रयाह्याः हुः दुः ददः वियायाहेतः वर्षेषाः वयादेयया श्रेषेया प्रवेश गर्वेद तु र्वे र न वर १६ तु र १ तु र १ देश

श्चितः स्वास्त्र म्यान्य स्वादित्र

श्चिरः खुं व्यन्दे अन्तरा ने व्यन्धेना हैनान्नाना सर्वे । न्दर्शे

श्चेंट ख्या प्रेंश या विश्वायश्च

बुव ग्री में में या है । खूम ग्रामाया प्रामें के माने ग्रामें। वारोरःब्रीरःप्रवे:इस्रावरःधेवःप्रभा वावर्यापरःवेवार्यायरः वी:दैरःव्या यः भुग्वाशुरः श्ववाशः ग्रीःहेवः येवाशः धरः न्वाश अर्केनः धराविषे सेनः धरः नर्यायानर्गे न्या हे साम्यान्य ने न्या हेन्या स्यापिता स्वापिता स्वापिता ॻॖऀॱऄॗॣॸॱय़ॱय़ॺॱऄॺॺॱऄॗॗॕ॔॔॔ॱॸढ़॓ॱॷॸॺॱॶॱय़ढ़ॱढ़ॖ॔ढ़ॱढ़ऴॻॱॸॖ॔ग़ॕॺॱय़ॱॸ॓ॱ यशग्वत्रमदे पर्दे । या पर्त्ता या या स्वाया स्वाया स्वया यस सेससः र्सेट निद्या विद्या विद्या समिता स्वापि सेट निर्मेण स्वापि से वर्षेत्रवर्षात्रुनमःगसुन्यायया ग्रवस्याययने नायासुर्वाद्वराधेमः नश्ररक्षेक्षेत्रार्थे गुर्रारम् अभूवार्थे गुर्रा से त्रुर्रा नुर्दा से द्रित्या से श वर्षित् वं अः भुन्यः शुःवर्षे । वं न्दरः श्रे श्रयः वश्चेतः पः कृतः न्दरः वर्दे अः दे शः यः विगान्य सर्वामी त्रसासामयायाम् केवार्श्वे रामार्ग्यन संभित्र विग्न मंदे-त्रु-अ-इस्र-१-ए।विद्-।धर्-अर्-श-कुर्-श-र्मे स्र-१-५८-বরবার্মার প্রের র্রার্মান্দ করে সার ক্রার্মার র্রার্মার বর্ষার ন্রার্মার বর্ষার নর্মার বর্ষার নর্মার বর্ষার বর্ষা বর্ষার বর্ষা বর্মা বর্ষা বর্মা বর্ষা বর্মা বর্ষা বর हु:सेट्रप्राचल्वासायराचसससाहे केंवासावार्सेवापिये लेटावासयावाट्या ने न्यायम कुन्या भ्री निवेष्य श्रुव भी वार्षेषाया नयमा पान्य प्रायाय भी वा श्चेन'म् श्चे दःनवे खून हेना हो द से द से द के र ले द हो सु द से न स स स क्केंट्रिट्र न रहें अरथ प्यन् र गुट्र त्य अर्थित र तुर क्केंट्र र ग्री या न र र

इससानसूर्यापंते प्यताया वर्त्राच्या कुर्सूर द्वीरार्सी इरे त्या स्वा वक्षयानवें प्यमायान्यान्ने मह्म महम्म मने स्वापने हि से नि सुन्तान्ता डेश'रादे'कैंग्रश'नडर्'ग्रेडिग्'स्रे। यहेग्'हेर्'ग्री'प्रस्थ'र्सेग्रश'रे'न'र्' र्भःरे:रेवे:स्रम्भःक्रुसःसःधेवःश्चे। श्वेंग्रस्य दुःग्वःतःत्वृग्रसःमः য়ৄ৴য়ৢ৾৾৾ঀ৾৽ঀ৾ঀ৾৽৸৻৴ৼ৻য়৻ড়ৼয়৻৸৻ঀ৾৻ড়৾৾ঀ৻৸৴৻ঀয়ৣ৴৻৸৻৴ৼ৻৴৻ড়৴৻য়ৢৼ৻ नदे कुषान वस्र राज्य देशे वारा त्रा वात्र राजा विद्य की वाष्या वा कुषा सुरा षर: अरशः क्रुशः गृठेगः पः धुगः पळेषः त्वरः पर्शेनः त्रस्यः न्यगः हुः सेनः यायायहरू मुर्यादे रहें याया द्याया वर्षा सुना वर्षा व सुर है र्र्से या वे या श्चित्र प्रेस्त प्रेस से सारवीय प्रमान निर्मिष्य श्वीय श्वीय स्थित यासुर्याग्री वाद्यार्थे। वाद्यार्थे हुँ दाया बेर्यार्थे वार्या विवासी ฮูญาาเฮู้กุลารุะเรูลาขิลารุลงาเรลมลาธราพิราขิเผูญรุเมรัส शुर्यापाष्ट्रमान्येवायापाममानी खुर्यावेटा इयया ग्री ह्या द्वामन प्राप्ता सक्रमःसरःश्रुवाःवास्त्रमा नुर्ते। निःष्यरःखुवाः इस्रमःश्रीः नवरःसदिःश्रुन्। राःषाः र्न हु-द्र-प्रदे क्रिन्य नक्षेट्र-दे नेय गुरु द्रय नक्ष्रस्य हेरी । ख्या नहिन वीयास्त्रवार्त्रयायायार्यस्त्रस्त्रम्ययाक्षेत्रस्त्रयाने संयास्त्रीयास्त्रम् वे नर्से न त्रस्य स्वेत र तुः के दें विश्व क्षेत्र नर्से त र धे ने स्वेश मुस्ति । धिनः ग्री स्वाकी स्वामिका क्षेराक विकास देश के मार्था विवासी स्वास र्यारे रेते केट व्यट ह्या बस्य उट् ग्री म्या या प्रमानि स्था

मक्रेन्यते प्यत्र विष्या व्यात्व स्थित स्थित सक्रेन्य स्थित स्थित स्थान विश्वास्तिः क्षेत्राश्वास्त्र स्वाहिश्वाहे। शे हिंगान्स्रास हे ख्रान्म से दे प्याया र्शेग्रयायाये से 'हेंग्। स्ट्'र्'यूट्य शियाया इस्य श्री । सेट्य से से 'हेंग्। सू क्रियायाश्चेताते. पश्चेतात्रेयायात्रेयायात्रेयायायात्रायात्रेयायात्रयया उर्दा । शेषासून्ते देषार्थे कुर्उन्दर्यन्य प्राप्त न्त्र न्त्र न्म्याना इस्र अर्थे । श्रुमाना है श्रुमा है अर्थे हैं स्थे स्वे स्वार्थे । या न्या अर्थे या वे निर्वाशक्त्रस्थरा शुः सर्के वा वी । स्यम् से वे श्वें स्थासम् त्यः से वा सः प्रे विसः विरःदिन्यासयः नन्दः रेवः के निर्दे रेन्यः दिन्यासयः निर्वा । नन्याः संवेः नर्गःर्भेशःश्वरःनर्रःश्वराष्ठेगःसर्दे। । व.च बदःर्श्रःसः वे.मेंशः वस्रशः उर्ग्धिः अर्केनामें । दी अर्केना दे श्रें शक्तुः धेंद्र करा पुराने श्रेंपा रा ने राहे श्रेंदर *पश्चित्र, दे. दर्फ्ट, यपुर्वे अ. यश्चे अ. यपुर कु. ज. श्वे व्यास्*र याते श्रेंयावियारेवि श्रे या निर्मावितान न्या निर्मात्या

न्ग्रेयायिन्यः श्रेयायि । वर्गेन्यः वर्षे वर्षे वर्षे श्रेयायि । वर्गेन्यः वर्षे वर

म्र्यासर्य । क्रिंशत्वर्त्तरम्भ्रीत्तर्त्तरम्भ्रीत्तर्वर्ण्यावि । वित्रस्यमः वर्ष्ण्यावि । वित्रस्यमः वर्ष्ण्यावि । वर्ष्ण्यावि

मुँग्रामान दुवे विमानवि क्षेत्रामान वर्षा विमान दुवे विदान नुनु कुन फु इस पर स्था कु रा हे सा कवा रा भी टार्चे वा रा पा से टापिट सिहे दा रा नहेशन्यान्त्रास्त्राम्ययायात्यात्र्यात्राम्ययायात्यात्र्यात्राह्या क्रॅ्रेन'यर'नक्षुत्य'स'ग्रान्नाने । क्रॅ्रिन'न्सॅन'से स'से स'से स'स्रान्स् सरसः मुरावेसः वर्तेदः दसः वन्दः साम्दः विष्यः वादिवसः सदेः प्यत्यमान्त्री ह्यान्द्रप्यम्बर्ध्वरावेशास्त्रे क्षेत्रायान्त्रमान्त्रे सुन्त्र नडुते विट न् सु प्र त्य अप्य प्र विष्य दे वा से विषय स्थान विष्य स्थान यःस्वारुःसु, यदः प्राद्यात्रु सः भूतरुः सु, यदे । यः त्र भूति । यदे । सु, यदे । सु, यदे । सु, यदे । বিষশ:য়ৢ৾৽ৼৢয়৽য়৽ৼয়৽য়ৢ৽য়ৼয়৽৸ৼয়৽য়য়য়৽য়ৼ৽য়ৢ৽ঢ়য়৽ वदवःवरःवत्व्वार्यःसरःख्रारःद्यवाः हःस्रेदःसरः ग्रुत्रः हे वार्शेवः वःवादवः न्। । नर्भे नदे प्यम्यमान्। ध्रमा दळवा न न हे अपने के माना न न हो। र्वोद्दर्यो प्यत्र त्यवा द्ववा वी द्वो प्रस्था सर्वे द्वाद्य स्वा स्व वि स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स ठवःवस्रशःउन्दिः बुद्रासेन्द्र् चुर्राहे हें वार्रायदे चुन् कुनः ग्री कुनः वन्द्रः यः इवार्धे अः नर्श्वे अः यस्य स्वसः प्यद्ये । विष्ट्रे सः क्षेत्राः ने द्वाः वीः र्देव⁻वीं नरः तुरुष्यः धेर्वाववर्तुः अः धेरुरायरा नयः तुरुर्वः से स्नुर्वायः नविद्र-त्र्युश्वरनश्रेद्रवस्थराग्ची:सुद्र-सें द्रमण् कुःसेद्र-सःवहेदार्दे॥

त्रुरु'रा'य'द्रम्यत्यत्रक्षेत्र्यारा'ते 'स्ट'मी'द्रमो'त'श्चेत्य'त्रस्थट'त्युर्स्र नर्भे नगरे नगम्यायापान्त्र श्रुत्यापान्त श्रेयानदे नगे न इसया शुर हु लर.कुश.घर.चर.कुल.च.८र.वायश.सैचश.शे.पर्यश.ये.विर.कुं.बर.तर. वशुरानाम्बर्भाग्यादान्वयाप्यदाक्षेत्रवाद्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या श्चर्तः न्दरः श्चेत्यः विदः शेः बद्धः प्रसः हो दः प्राम्युः सः प्रसः द्वी । देः दशः दशेवाशः राम्ययानम् नुयान्यास्यान्। नन्यान्तेनायास्यान्यान्या নদ্যান্যন্ত্রী মাধ্য মেক্রর মদ্দেইর দেই নদ্যী প্রীর ক্রি বিদ্যানী ক্রি শ্বু মেরন न्यास्त्रूरानु व्यायायायात्रा वलेशायाहेतायात्र्यायायायायायायायेनाये ने किंति हैन हैं निकास दे निक्ति ही हो है का कें ना सदे हैं क्षा बका करा नि व्याः हुः क्रें नार्ता व्रेर्ता वरावी नाराक्षत्र व्यवस्था वरावे नारावितः श्रीशनक्ष्मनः तृत्वाश्रीया वेशायनः सरः नुः तन्त्राः स्वारीयः वाश्रीयः नः নাব্ব:ধ্ব: মূর্ট্যা

न्र्सानिक्ष्यः हिष्ट्रान्त्रुत्तायानिक्षा हिष्टे हित्र्यः वित्रान्त्री हिष्ट्रान्त्र्यः हिष्ट्रान्त्री हिष्ट्र

ने श्वाचित्र श्राच्या विद्या त्या विद्या त्या विद्या त्या विद्या विद्या

म् । याम्यका क्रियान द्वी अत्यान व्याप्त निर्मा क्ष्या व्याप्त क्ष्या व्याप्त व्यापत व्या

पिट.ये. ह्यें टे.रायु.जंश.कंयु.जंश.की.जंश.यी. पंक्यी.श.यं.पंक्यी.रायंश.क्र्या. वळग्'र्याःकेंश्यश्रुत्'र्यायात्र्राह्मयात्र्यः ह्यायात्र्राह्यः व्याप्त्राह्यः व्याप्त्राह्यः व्याप्त्राह्यः व र्बेट्-स-८८-वि.ज.स्वाय-मदे-ब्रेट-ट्-क्रुजि-स्र-यद्य-यदयान्यस् |८ग'मी'यश'दे| सुट'स'सर्देश'मधे'मशुट'र्नन'मञ्जमहेश'ग्री'सुट'र्देन' *केर*ॱगुंद्रॱळुन'सर'हे*र्'स'र्र*स्थर्देश'स'क्र्स्थर्थ'पि'र्नेद'र्र्रावद'य'र्स्ट्रेद्र' नरः हो दः प्रदेश ह्या नर्दि । धिदः ग्रीः खश्चा न सः ग्रीः श्रुवः नरः पः प्रवः न प्रदः न्नेव पर सें र क्रें हे क्रूर वें सपते हें व से सस पर एटर से सस न्गु स हिर देखिद्दान् होन्यन्यक्षायर्ष्ट्रयायर्षेत्रयात्रे स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान য়ৢ৽ঢ়য়৽য়য়৾৽য়৾৽ঢ়য়৽য়ৼড়য়ৼ৽য়ৡঢ়৽য়ৣ৽য়ৢয়য়৽য়৽য়ৼঢ়ঢ়ঢ়৽য়য়য়৽য়য় होट्रायम् । हिन्रस्य ५८ अळव्रस्य १००० महिन्रस्य हो हेन्रस्य ५८ स्था ग्री:ळ:ब्रेंट्-ब्रुट्-प्रःके:क्ष्यःनकःनब्रुद्रःप:देवःख्रयःट्वाःवी:प्यव्यःग्रटःनब्रुद्रः व नश्रव है।

नड्रसॅं'ने'लं नेस्वित्र'नुर्श्वेन्यं क्षेत्र'न्यं क्षेत्यं क्षेत्र'न्यं क्षेत्र'न्यं क्षेत्र'न्यं क्षेत्र'न्यं क्षेत्र'न्

न-१८ दुषः है । क्षेत्र नहना नत्र नु नवे । इसः ने अ दुषः ने । क्षेत्र हिना नत्र <u> बेट्र केट्र लेख पर होट्र पर्देश</u> । दे प्यट इस या निक्षे हो हट हे ही खुरा ही यशयार्श्वेष्यश्चित्ववि'वद्धःर्ये वादाया इस्रायादावी साहै सूर्या नहता यर ग्रुप्तरे वाले हे त्य इस मारे राहे यह हैं वा यर ग्रेट्य है। दिये राह्य *ॻऻॹॖॸॺॱय़ॱख़ॗॸॱऄॺॱढ़ॺॱॸॆढ़ॱख़॓ॱॸॱख़ॖॱज़ॸॆॱॸॸॱज़ॸॆॱॻॖ॓ॸॱॸॆ॔ॱॿ॓ॺॱॸॆॗॕॻॱय़ॱ* क्ष.युर्दे। । पार्वेश्वराये हीं वीश्वरायाट पुंच्यरायाट यीश्वर हिन्द्रर यहवा सर ठु नदे द्विष्य रे व्या इसाय ने राने व्यू महिषाय स्री न ये मत्या वर्ते नदे छे कर पर्कें र या श्रेषाश्रामवे पात्रश्रास्य स्था पर्वे विर ने यश्रामा वित न् पर्वे नितः दुष्यः इस्र अभी अवस्य ने प्रमाने विक्रां के अपनि विक्रां विक्रां प्रमाने विक्रां विक्रां विक्रां विक्रां गशुस्रायादी र्सामादामी के इसामामादामेश है सूरामहगासरा गुनि दे त्यानेदे के द्वारानेयाने स्ट्राहेगारा है। नियान स्टें में राक्ट्रा स्ट्राहे यर ही दें से दूर नर लेश दश दे सूर हुँ द हेर देवे के यर लेश निवर वर्हेगामाक्षातुर्वे । निविष्मादी व्ययाने निवाहे स्ट्रेन हेगा इयामाना मीया *⋛*ॱख़ॣॸॱॻढ़ॻॱय़ॸॱॻॖॱॸढ़ॆॱॺॺॱॸ॓ॱॺॢ॓ॸॱॸॆॻॱक़ॺॱय़ॱॸ॓ॺॱॸ॓ॱख़ॗॸॱढ़ॕॻॱय़ॸॱ होत्रपञ्जी रमेरामा वर्षे नवे के लेव ए नश्यम्य अलिट हिमाना बन र्वा वर्षे नरः हुर्दे ले अप्यायार्थे ना अप्यायर्थे प्रदेशन क्षुन हु है । से नुप्या हु अर्था हु न यम् होन् पा भू नुर्दे । अर्दे म् व हेव से प्रमास्य स्व से दि ग्राव हो न हे ह स ॲॅ॔ऀ॔॔॔ॱड़ढ़ॱय़**ॸॱ**ॿॖॺॱढ़ॺॱॸ॓ॱॸॺॱॺॊॱॿॖॱॸॱॸ॒ॱक़ॱॵढ़ॱय़ॱॸ॓ॗॺॱय़ॸॱॿॖॱॸॱ

प्राचित्रस्थान्य स्थान्य स्था

वसाग्री कॅन्द्रियामही कॅस्यावि न्ह्यामह्मा न्हराहित्यस धेवामही न्हराहित्सव योस्यान्द्रियाक्ष्य क्ष्या क्य

रवःचर्यात्री पिवः सर्वे निर्धः निर्धः निर्दे निर्धः ने प्यट वर्षाय हो द प्रदेश्याहे द सिं देवे हे स द्वीया स वर्षे स प्राप्य स्या यस नमा हेस-नभेगमाने मार्थसायमा स्ट्रास्ट्रिन्स्ट्रेन्स्य हुन्दिर हेशन्भेग्रास्त्री पर्नेग्निः रेन्निन्स्रिः नश्रिः नश्रिः वर्त्रः विग्राः ग्रहः र्स्रः धेशः नष्ट्र-रेट-सकेयासमानक्त्र-पान् श्रुमामानाष्ट्र-श्रूट-नामेसमानि वर्षातु न प्रश्न तुर निर्दे हेर्य द्येग्य हो। वर्षा ने द्या ती व्रुव निर्देश मः अव्यात्व त्वर्यः भावियाः श्रीयात्रः श्ली द्वा विष्ठियाः वे प्रभूतः याद्विरः सूरः व्या ने या नहेत्र त्र अत्र निश्च ने ना अप्त अप्त मुक्ते निश्च निश्च विश्व किया निश्च निश् यशः गुरुषिः हेशः द्रीयाशः देः शृष्यशा न्यूत्र स्यायशः गुरुष् देशः न्ध्रेम्बर्भि वसन्दर्वस्थि कुरिन्निन्द्रक्ष्यं मिन्द्रमे अरेष्ठ्रम्बिन्द्र पः ५ : अ: ग्रुशः दशः नश्चुनः ठेटः अ: ग्रुनः दः श्रुः टदः श्रें ग्रशः ग्रुशः श्वृगः नश्यः इनार्सेशःसूनानस्यानर्दे। । सहयानः १ समानिः देवे सुरातुः सन्दर्नः यःश्रीम्रायद्यम्बद्धंदःहिन्देन्द्वन्यम्यद्या दिस्रायः भेरान्यः दे नेयः श्रेन्पाहे केर ग्रुर व्याम्य मिया में स्वाय स्वा कुव नुपा ध्या श्रेन् हिर स्वा नस्यानुः सार्श्वेदानर्दे। । सदान्यदासेन् प्रदेशके सार्वे। याव्यामी सर्वे नः इस्रश्रः हे 'र्नेदे 'र्ने द्रान्य रेपान्य प्रमान्य स्वान्य हेश्यासराञ्चरायायशा तुराया दे। वशार्यावशा तु विदेशिराञ्ची पाश्या ती। ब्रेग्राम्यम्यम्य वर्षः वर्षे म्यून्य वर्षः न्याः इत्र वर्षः वर्षे न्याः वर्षः वर्षः वर्षे न्याः वर्षः वर्षः व

ने भ्रः ततर : यत्र : वेताय : वेत्र : ने : वर्ष : या ने हेत् : त्र या : या त्र या मर्दे । दिर्क्राचीः भ्रीमः दुः वर्षान स्रोतः सम्भाने वर्षान स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स् यः नहेत्र त्रान्त्र निष्ठा के राष्ट्र राष्ट्र निष्ठा प्रमान्त्र निष्ठा राष्ट्र हिन्यर ठव पर्नेन्व अ श्रेव पर होन्य ने न्या मी अ हान हु अ य ने प्यर वर्चर्यानु केत्र में र वर्णु र वर गुर्दे सूर्यानु वर्षस्याय हे त्रा वेद्या सुन क्षः वटः वेटः वीयः नयूः यः यदिद्यः यः वः क्रियः ग्रीयः नयूः स्रुयः यः न्दा येययः ชสายผลาชราปิ รัฐ าลฐาาผูมาหลากผมาหลากลดากราทุญรมา सदरः इतः सरः द्विति । निर्नेशः श्चेरशः स्थाः ग्वारः । वि वशः श्चेतः दरः दरः नरः रेगानाधिया विर्देन क्याया ले सूरा येन सरा महेन न ही हो । हि गया मुरायायायायायहेसयायदे मुरायायाया । यळवा मुरायायायायाया ग्रम्भ प्रमय विग् भ्रम् । विश्व ग्रम्भ स्प्री

भे दिया प्रमानिक स्थानिक स्था

गश्रम्भा हेत्रस्र देवारी निम्मास्य विष्य क्षेत्रस्र विष्य हित्र हित्र हित्र हित्र हित्र हित्र हित्र हित्र हित् र्रे.म्.र्यं.र्यं अक्ष्रभाशाः है.क्षेर्यं ये.यं क्षेत्रं त्रभाषक्षां त्रार्यः त्र्याः त्राञ्चेताराष्ट्राययायेययार्धेत्यासुःश्चरयाययार्देत्वाष्ट्रतातुःतासेःसूरः नन्द्रास्त्रास्त्रास्त्रा । वर्दे प्रम्प्त्रम्य स्त्री से स्त्रास्त्रम् स्त्रास्त्रम् स्त्रास्त्रम् गशुस्राया बुदानी में में म्माबुदासळस्य यादिसानी के साथे माया प्रमान त्रुवः सळ्ययः क्रययः न त्रुटः दे। । १९०१ न देः गुवः श्रुटः दे । त्रुवः सळ्ययः धेवः मर्भाने । प्यम्भेन से निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा न नरः तुरुष्त्र राक्षः नरः पाया ननः पदे के 'ह्या नरः तुः हे। गहे दः ग्रीया तुरुः धराग्चानवे प्रमुद्दान इससामित्र ग्रीसा मुसाधराग्चानवे भ्रीतारी । दे स्नूर खुरु-दे-नहरू-द-पो-नदे-धुँग्ररूप-नहेंद-द्युरु-पाहेरु-ग्र-न-प्-नेद-ह-यश्रासुर्द्रात्वेरायव्यापरायम् स्री । ११याविरेके वाप्रशापरावशः ब्रेन्-बुर-क्रेन्नर-यनगुरुव्ययन्-दुन्वग्रथः प्रान्दन्क्रे मट्याप्यित्रयाप्यस्यति स्ट्रेट्र्यव्यात्रस्रोट्यो स्ट्रिट्र रोटानो सूराकृषानाने। हे सूरात्तानमें प्रस्था उत् ग्री निरान केरानो ने खुर्बा इत्या के ना न्दा के समाना नेद्र वा सर्वे ना न्दा नहता प्रकार में ता नार्वे द यनिवर्त्। भेष्यनम्हयप्रिंम्यन्रहेंव्ययम्हयाकेन्य्रेग्यः वस्रश्राह्म विश्वास्त्र विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्र विश्व

नमसामाही तर्नाममान्यान विषय। सूरानदे तर्भिमाही देन ग्री'सळद'स'येग्रासम्पन्त्रम्'हे'देन्'न्र्राध्रु सदे'सेसस'ग्रीस'हयाहे। नेशमिहन्यम्भित्रकेरिकेरिकेरिकेरिक्षायास्त्रम्भित्रहर्मे। । इत्रमही केश <u> ५वो न ५६ ५८८ खुर प अक्र प ५८८ वर्षे अर्थ प ५८८ वर्षे अर्थ प छ्र ।</u> नदे न्द्रम्याम्बेन्न् स्थार्थेन्मे न्या न्या हे सार्था प्रमानम् न से द्राप्त । ने सा ते^ॱनाहेन्ॱवेना'सदेॱळेॱ'षट'स'वेना'स'न्ट'वर्नन्स केंस'ने'न्ना'य'सेसस' ने प्यत्र सद र् हे या शुप्तह्या प्यत्र प्रशुप्त र स्रे स्वे त्र त्या हे द शी के प्यद नगे श्रू र श्रू र नर्दे। नियान विवादी ने स्ट्र र र न से वायर के हिंवा बॅर्सरायानार सुर हुर दारे लेख दया नर तु से त्येद हैर ब्रेंर नर हेर नर्दा विटानदेवर् ने रादे ना राया प्रायया पर से दी इसाम बसरा रूप र गिहेर्ग्रिअर्देद्रपायासेससामित्यानरास्रीतेर्प्यरान्हेद्रावनुसाम्रीसा बेद'रादे'रोसराग्रीस'रे'द्वास'पविद'र्'बुस'द्यस'ग्रीस'रुप'पर्दि । देस' वे पादेन से प्रमुपा हेन खून प्रते न् सप्यस्य से पिया प्रमास्य स्वरास्य

यिष्ठेशमञ्जी ग्रेसन्यन्यायीयस्य अन्य मुर्याग्रेशम्य विन्तिये से १९०१ न वस्रभाउद्दार् नश्चनायर होर्दे स्रुस्रात्रभादे नश्चनायि हो राद्वात्रपा होत्र र्से अप्तर्तु न्यान क्रीट्रा । देश दे अदश क्रु अप्री अप्नाद प्रति के प्राची वे व्रयः सूर्यायमा सूर्या कर् सेर्पय स्वरा विष्या विष्या विष्या स्वरा स्वरा विष्या स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स वीयानेटाबी १९८१ नान्टान्वी नदे केंया इस्यान केंत्र नया नश्चनाया सूरा यट.लट.टे.केंट.वेंट्र क्षेत्र.टे.श्रेश्या.टेश.च्या.चेंच्या.चेंच्या.चेंच्या.चेंच्या.चेंच्या.चेंच्या.चेंच्या.चेंच्य नर्हेन्यम् होन्देः । वर्षान्यक्षानवेःगुन्हेन्यने । वर्षान्यस्वे नासेन्छेन र्नेनःथ्वरनुः श्रुन्यः ग्रुन्य के र्नेन सेन न्यान्य यात्रः स्विना विनास्य सर राष्ट्ररावन्दाराधिवार्वे ।देष्ट्ररावादिवेष्ट्रम्नवशामीःश्चेदाख्यात्रुवः बॅरायाधेवायायार्वेगयायार्श्वेरायादराद्रीयायवितरायह्यादराष्ट्रव सळ्सराश्चित्रम्यात्राम्यरात्री वर्तात्रराम्ब्राम्यात्री वर्तात्रराम्बर्गास्त्रम्यात्रम्य ग्री-८भ्रग्नाशः इसःग्नाटः भ्रीटः वस्रायः उद्गायः श्रुरः गरः ग्रुद्गा विदःसद्धस्यः शुः द्दे खुरा तुः न न न दि । बेदा है ।

गहेशमः श्चेंट खुंया

ने खं खें मार्हेमा न्यामा संदी

ग्राह्म प्रतान्वे द्रिया प्रमेषा प्रतान्य व्याप्त विष्टा के वार्षे म्हार स्वर्थ स्वर

दग्-हु-दळर-च-त्यःर्ह्ने-वि-अ-र्द्धिम्य-दाह्मस्य-व-रे। प्रस-पर्द्धे-स्य-दि-स्टे-हे-धुवावाधराधराक्षेत्रभेत्रम्यराव्हेवार्श्वेयावित्रम्भे र्वार्शेरम्हेवायवेः ৵৾য়ৼয়য়ৢয়৻ড়ৼ৻ৼ৻ড়ৼ৻ৼৢ৾ৼয়ৢ৾ৼ৸৻য়৾৽য়য়৸য়য়য়য়ৣ৽য়ৢয়য়৸ড়য়৸য়৾য় धेरप्रा हैंगापात्रसम्भाने सक्तासरप्रहेतामाधेतासमाप्रकराक्तातामा गोगायाचेरायवे धेरार्रे वियाचेरार्रे। । यदी विषययायेव ग्री गावरागाहवा वर्षासार्हेग्रम्भायते उत्पार्हेत्या केवार्सा धिवाहे। सर्दे सेवे सुवायस्य पदी निवरणेन्या होन्या विस्थायसायमायन्त्रा देवा प्राया प्रेम् वेशःर्वेशःमदेःर्देवः इस्रशः नश्यस्यः हुरः वीः वेशः र्नाः ग्रीशः द्धंपः नवेदः रुः धीर्या गुरुषायायय। धरार्वा मदेरेर्द्व सर्वे सुरु रुहेंग्रायाये नर्झे सरा व्दरप्रवृद्दान्यरम् शुद्रश्रापदे भ्रिस्स् । देशस्य माद्राष्ट्रश्रश्रास्त्रः सुःदे प्दर र्रेर्याववःयश्याम्बर्वस्याववः स्रेन्यः ग्रीयः रेयः यरः ग्रेन् देवयः र्वेयः यदे दें तरे रूट में अख़ट द्र रेग्र यय ख़्य मिव्र दु न्य अअअ हे रूट क्रेंतर्अःग्रेर्अःदेर्अःसरःग्रेत्। देःसूरःवेंशःतर्थराग्रेशःदेशःसरःग्रुर्अःहेःवेः क्रॅंअप्टर्ज्यान्त्र, त्यार्त्य त्यार्त्य त्यार्थे अप्तर्त्वे यात्र होत् त्यात्र होत् यात्र होत् यात्र होत् या नर्भाषराषरान्धराग्रीतान्ध्रीयामान्दायी। नुर्धेनामेन्यान्ध्रीयान्ध्रीयान्ध्रीयान्ध्रीयान्ध्रीयान्ध्रीयान्ध्रीयान् ग्रान्वीं रात्रे। वें रान्ययाची राज्यत्यायन याने त्या के न्यें न्यमायहें ग्रा यन्ता श्रेंश्रें राहेना यथान्ध्रनात्रश्राम्यात्रेश्रामा श्रूरानि हेना र्रे। । देशवः श्रें सम्बस्य उदायहें वाः श्रें सः दुः यदें दाया वे दिसे सः व व यः हें वाः याडेगान बुद द्रशाय बु प्रस्र शास्त्र प्रदेशिय के प्रेम के स्वर्ध के प्रेम के प्रेम के प्रमान के

ने प्यर में अ जुर मी भे अ रना ग्री में तर् में अ य प्रदा न सम्राम्य वीःवेशःस्वःग्रीःर्धेदःत्ःवश्रयःयःवर्तेःत्वेशःयःष्ट्रस्वर्त्वेश्रयश्चरःवीःवेशः र्याग्रीः श्रृंत्रप्तः श्लें अप्यायम् प्रमें अपि अपे अप्याप्त रे वि प्रश्लें अअप्याय अप व्दानवे भ्रिम्मे । दे स्नम्य व्यापा वर्षे स्राय व्यापा स्वर्थे । दे स्नम्य वर्षे स्राय वर्षे स्वर्थे । র্বীমম'নম'ন্ত্রীদ্'দ'ত্রীর'নমা নমমম'ন্তুদ'নী প্রমাসনাম্বরামম' हुर:वी:वेश:रव:वहुर:वर:वाशुरश:य:धेव:वै। ।देशव:वैशय:दे:उंशः अर'न'र्डअ'र्'ने'यश'तुर'नदेखेशेश'र्न'अर'य'रे'अर'न'र्डअ'र्'नश्रअ' रासरानान्ता देशसानार्यसान्ते । स्यान्तानान्ता নমম'নাথ'ক্ত'নম'নাধ্যুদ'মন'ন্নীদেম'দেন্ত্রীঅ'ন্দ'নতম'ন'রম'নাধ্যুদম' राधित ही। वें या नयय ही या नित्र वा सन सने नर्से या परे ही रासे ता सर ध्रेते में कु गर्डे द पाउँ स दूर नर्झे स पाद गावद दे दर दर्शे या से द है गा नर्झें अत्वेत्र नुशुः अयाववर पुः नश्चव व अः क्रुवा अयाववर पुः क्रेपा भेरा क्ष्र-माशुर्यान्। देवेषासे ५.५.५ वर्षु म. विदःवेयाम् माशुसारेया ग्रीया श्चे नदे द्वायाश्वर रच श्चे दे इस यावया ग्यर येवास सर न विवास प्रेत

या यससर्देर्पर्म्यायास्त्र्र्म्यास्त्र्र्म्यास्त्र्र्म्यास्त्रित्र्व्या र्डेल'णर'लेग्रासर'श्रुस'सर'दशुर'र्री १८९'र्ग'मी'ग्रावर'स'हेंग्रस' रादे हिनाया स्था क्रिन् से दे है ने से ते से हिनाया सार है से हिनाया सार है से हिनाया सार है से हिनाया सार है है है है से हिनाया सार है है है से है है से हिनाया सार है है है से हिनाया सार है है है से है है से है स विगान्दरम्बुद्रायः श्रुद्राचा धेर्या श्रुराचा धेर्या महिष्य द्वा महिष्य स्वा श्री द्वा स्वा श्री द्वा स्वा से कें क्रमभाये ताया सदा कुर से विदान दिया वाल्य पर सूर्य या हो दारा देश केंश्राप्तृत्र सान्दराक्षुः हें नाः श्रीनाश्रान्य शान्तः सक्ष्यान्य स्त्रान्यः सक्ष्यान्य स्त्रान्यः स्त्रान्यः इस्रयान्त्र, क्रम्यायाया स्वाद्यात्र स्वाद्यात्र स्वाद्यात्र स्वाद्यात्र स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य देव ग्राम क्षेत्र माधिव माधिव विवाय हेर-नर्सेग्रमः अर्धेन-धदेः से स्रेन्यः स्रेम्यान्त्रः से सेन-धर-दशुर-हे। दर्नेनः यदे अवाया अवर्षे दार्चे माळुनायदे छे ने वाय हे दाव अवर्षे अया गुनाय हे न धरःवल्दायायान्विष्यायादेग्यावञ्जेययात्तुरायेराळे यायदेवाया यशयदर्ग्यस्य १५ स्वे स्वे स्र

सर्वेदः द्राचे स्थान्य स्थान्य । हे से स्थान स्

नवित्राचरक्षेत्र न्युत्र न्युत्र न्युत्र न्युत्र न्युत्र प्यत्येत्र प्यत्य न्यत्य न्यत्यत्य न्यत्य न्यत्य

ने भ्रम्यान्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्

सळ्त्यः श्रुं त्वे व्याणाः भ्रम्यास्य स्याप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्व

र्नेद्रास्त्रियाम्बर्गान्यस्य हे.क्षेट्रस्त्रेरावस्यान्त्रसः यर वर्रेन प्रते भेषार्य पुरव्या प्रते श्री । नेते श्री र व्या हे रहा नर्झेमर्भागारंभान्। नहेन्द्रमाळे नर्भान्त्रामा हुनानान्द्रास्त्रेन्द्रमा याधीन ह्यान् वर्षे नम्भूमन्य यसार्वे यानम् र्सेम्नियायम् न्यायाम् न्वेशः धरः द्विति । पाव्यः धरः द्वित् सर्वे वा पाशुसः वः सेवाशः धः वः धितः प्रतः ग्री वित्रायम् अत्र में भी यात्रयाने त्या नहेत्र मंदी न्त्रा मदर अत्र में मादिया नः सरः नः नरः वरः प्रवे : यवः प्रवे : प्रदः सुः न् : सः वर्षः सर्वे दः नर्यः ने : यः ने वः गहेर:इग'र्सें ५८। इर:द्ध्य:ग्रें सेसस'८८:ध्रेत्र:द्वा'य:सेंग्सप्रें र्ह्हें ८। रार्टे सक्दरवदर त् सार्वेट त् कुत् क्या दे त्वा लया वर्ह्मे वा हु से द सदे <u>ব্র'ম'ব্র'ম'ব্র'ম'ব্র'মইর'ম'র্রমম'ই ক্রুম'য়ৢ'রের্</u>র্র'র'রয়য়ম'ভর্'য়ৢর र्शे स्ट्रिन्। सदे लेस रन ग्रेस नासुर रन्न ग्रे में तथा न सुन तस्य न स्ट्रिस रावित्यास्यात्यकासकार्क्केत्रास्य सम्भाग्नीकार्द्धवादिनायायाव्य য়ৢয়৽ঀয়ৢ৽ঀৼয়৽ঀয়৽৸ঀ৽ৼয়৽য়ৼয়ৼয়ৢঢ়ৢ৾ঀ

क्ष्रिंग्यं क्ष्रिंग्यं वित्राचित्रं क्ष्रिंग्यं क्ष्रिं क्ष्रिंग्यं क्ष्रिं क्ष्रिंग्यं क्ष्रिंग्यं क्ष्रिंग्यं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिंग्यं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्रिं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्रिं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्ये क्ष्रि

नश्चनःमदेःकें तःन्भेग्रायःन् अप्यान्धन्तःने श्चे न्यःभे वश्चरःन्यःने या गुनानर पुने न सुनाम दे र सुँ या ता दिना सुँ या हिन् गुर्दे विया ने राद दे र्तिः र्वा ग्राम् त्रेम् प्राची ने स्वादि हो में त्रिम् विद्या ने स्वादि स्वादे । त्रिम् विद्या ने स्वादे । त्रिम विद्या ने र्रेल हुन्धन क्षेत्र अर व हैर रे त्रहें व ने व व व व व व व व व हैर वे ते त वर्षायार्गे वरावार्षयाते। वर्षे सूराद्ये रावा वार्ये राद्या द्वायारा नः अविश्वास्त्राधरः द्राधरः तृ स्त्रेरः वर्श्वेषाश्चिरः धरः द्राः धरः तृ स्त्रः शुःरुदःनरःवशुरःनश देवशः इक्वितःयः श्रेषाश्राधिः क्वितः कः हे वर्देदः वर्देन नु न क्षुर न राक्षेया या न विव न क्षेत्र वा केंत्र वे केंत्र वे केंत्र विव केंत्र विव केंत्र ब्रॅंट्यर्ट्टरहेयर्श्केंट्रक्र्ययायात्वारेंदिःययादत्वयर्ट्टरदेव्रेंट्रवेरहेया न्भेग्रायान्स्र्रियायायार्थेग्र्यायाये स्नान्यात्र्याय स्त्रीत्राया स्त्रीत्रा हैंग्।रावे:वेशर्मश्रास्याग्रीशर्ने:प्रमानी:हेशर्मश्रीमश्राधर:प्रमानीस्रा यःशेस्रशःग्वः हुःगर्रः वरः वश्चरः वदसः श्केष्टः वरः वश्चरः वदेः धेरः हेरः ग्रीयानायेरायेरावयेनायायाविदार् द्वार्श्विम्यास्ययाययापीर्धिर र्धेग्रयम् होत् हिर्दे अते त्वा श्रेत्या निष्या विकामित्र हो प्रियम् অমানরমান্দান্ত্রদাস্তুরাগ্রী মৌমমাগ্রী দের ঐের অার্মান্ম সামার শ্লবমা त्रअःवज्ञूदः चःक्षूरःश्चें श्चें रःहें वाः घवेः वेश्वः रवः क्रीश्वः देः दवाः वीः धें तः हतः

षटःषटःनश्चें सःमःसेससःनङ्ग्वःपरःवशुरःनवसःद्वः धिन् होन् शेश्वाशेर कुर विद्युत्त क्षेर न्यार हिंग्यश्वर स्थरावाधिन अर्देव <u> ५:र्स्चिम्रअः सः ५८:५मादः नरः तुरुः ५२% त्रः ५३ सः भे सरः नक्ष्यः । इतः स</u> नर्ने । ने क्षर्मु स्व वे क्ष्मा मार्म क्ष्म स्व दि । स्व वि व गहर्भात्रकेंग्रायो ने भू तुते रहार क्रें या के के के के किंग वसवारायार्चवारायोद्ग्यीया न्येर्चा सवार्चवस्यासवार्चित्रं वास यवियायावियायीयायादायी के याये रास्यादह्या वियादी याददा स्रीयायाया वस्रश्राह्म स्वादेश स्वाद्या स कुत'ने'न्न'ने'न्ना'रु'ग्रु'न'अहेत'वेर'यश'शु'तुर'नदे'ॡंय'ग्रीश'अर्देत' शुअ:५:५२ अ:४२:५० दे:४:अग्र-१ वद्य:अग्र-१वदे:र्स्नेन:अप्रथ: वर्देन्यनेरञ्जूर्यनरानेन्यनेवन्तु इत्यवर्तेर्यश्यान्यान्यो छे रोसराने निस्तारोसरायार्थे ग्रायाये दे सान्दारी ग्रायायायायी दिनायाया ৡ৾**৴**৽য়ৢ৾৵৽য়ৣ৾৽ৢৢঢ়৴৽য়ৢ৵৽য়৽ৡ৾৾৻য়৾ৼ৵৽৸৽ঽয়৽য়ৢ৽ড়৸৽য়৽৸৸৽ मंद्रेन्ना न्वो नदे द्विवासाया सर्वे नम्नियायायाया सर्वे न्यु द्विवासा मक्षेत्रभ्रेशस्त्रस्य प्रमायन्य स्थायभ्रेत्रस्य देशस्त्रे स्थायस्त्र स्थायस्त्र स्थायस्त्र स्थायस्त्र स्थायस् धरःश्चे रावराद्ये दायादे दिरादे दिया व्यापीत कु के वरावर्द्ये रायादर जीता

हु:इय:५:प्रवर्गः प्रदर्शः वार्थे वः ५८ है। प्रवायः वर्षः विद्य है। है। है स् বয়য়য়৽য়৾৾য়৾৽য়ৼ৽ৼয়ৢ৽য়ৼ৽য়ৢয়৽য়৾য়৽য়৾য়৽য়য়৽য়ৼ৽য়য়ৢৼ৽ৼ৾৾ৢ वियाम्बर्म्यार्थे । मावरायराये अयार्थिमायायाचे मायायह्र कम्याया धरायात्र रायदे हिरारे विद्वा की वियाया की तार्की विदेश की विद्वा की विद्वा नन्दर्सेन्सर्वे ।देखन्गेव्सर्केन्यःश्रीम्थःस्टेखेदन्द्रसर्वे क्कें भुग्राश्चाया कुन्देरान पेर्निन ने हैरान गर्डे रायर भेन हु। हेरे गहेत्रसँ ते 'पॅत्र हत् अर्वेट प्रदेश्चे त्र अर्थे अर्थ ग्राचेट्य प्रदेश प्रदेश प्रदेश ळ्ट्र.केंब.टे.कश्राचिश्वरश्चातुःहीर.ह्या । शु.ध्या.स.ट्ट.केंचा.चर्चता.चर्चा. श्वासायदे हे सान् सेवासास वित्त देते हैं खुवासा न्या कुर्व ने ना ना सिंद र्केन्या वर्षेन्य स्वेन पुरक्ष क्षेत्र केन्य के वर्षेन्य क्षा क्ष क्षेत्र क्षे मदे से सस मार्थे द न प्रें द मार्थे द में स्व हैं द में स्व हैं स्व स मार्थे में सम स ग्व्रात्र्यात्रयाम्ब्राह्यायदे भ्रीत्रः स्

देशक् न के श्वाहेत त्यादि न स्क्रीत्य क्ष्या के स्वाहेत स्वाह

यदः प्राची शःशेयशः यः नश्चितः द्वशः श्रः शःशः यदः वाशुदः श्चेतः ग्रीशः नश्चितः हे। अन्नवःन्याः धरः वळन् छेटः क्रें अः वळन् स्वे अः धः वियाः यी अः छत् स्वे अः धः दिर्द्रम्यादाम्बर्द्धराना ने स्वेन रहाये मार्था ने से सार्वा ने सार्वा ने से सार्वा ने से सार्वा ने से सार्वा ने सार्वा ने से सार्वा ने से सार्वा ने से सार्वा ने सार्वा ने से सार्वा ने सार्वा ने से सार्वा ने सार्वा अन्याधित नेरावयायत्या राज्यारे स्वराधी स्वराधी देवे में या यय या सी न्यान्दाक्रयायोदान्तीःन्यावेयाक्रयायदान्त्राचन्दान्दाक्रयायोदाः ग्रीःभ्रम्यश्वादेशायमायायस्यहित्रायदेःविमाहिनाःधेत्रायदेःश्रीस्त्री ।दितः ग्रदःचलदःपः त्रस्रारुद्दः हुस्रारायो दःदः विद्याः संभिदः सवदः सुदः नशः र्र्भूटः कुः हे नरः नश्रूश्राः रे प्यटः गुद्दः नुर्वे । गश्रूटः रनः वस्रशः उदः ग्निस्रश्राद्याः पुःवळ्राः श्रेष्टिक्यां देते । श्रेष्टित्यां देशाया हेता साहेता स्राप्ता हेता स्राप्ता हेता स वदे हे या शु हो दान स्थूद विद शे श्रूद त्या या श्रुद्ध राजा स्थ्य या श्रु हे श्रू या है। यर्रे स्वाराणी वाल्ट के नाया देट र् सूट्याय स्वयाण्ट यया नर्सेया मदे के न्द्रमी अपाद प्रश्नु द्रामदे ग्वित् ने द्वा भी सुँग्रास् स्राम् देत वरःश्रूदःवर्था क्रुश्रःयरःगान्त्रःयःद्ववःदर्गेश्रःयरःवर्गाःववदःक्षेताः सरमासुर्नेवासामसाने उसायसासार्स्स्यार्से । क्रिन्स्यायार्यवाहेवा <u> न्याया यः यन्त्र भेतः हे ।</u>

द्वे श्रूम्य विद्या स्वाप्त क्षेत्र विद्या विद्या

न्यानवे हेत्या श्वेरार्थे त्वरानवे श्वेरात् न सुयान प्रा

श्रीर में हि स्नर खेत मंदे रहेया थे। | न्दर्मे खाम्युम। न्याय हिंदर्मे अः न्याय हिंदर्मे हिं

<u>न्रासीन्यादर्वेरारेशान्त्राम्याकेश</u>

नयानन्ता वर्धेत्राचर्या । न्हार्याची व्यवाहन सेवार्या के सूनाया यथा विस्रशः भ्रीसः दुनः दर्शे दर्शे नः दुः सदे दे ने दि । सि विस्रान कुनः र्श्वेर-दे-धिय-दय-व-ह्या-हु-ह्रेद्या वियामाशुद्य-य-सुम् भे-वियामानकुद्र-<u> ५८:ज्ञयः न ते : ५० वर्षे । भ्रे विभः भाष्यः । भ्रे मा विषः । भ्रे मा विषः । भ्रे मा विषः । भ्रे मा विषः । भ्र</u> यरःक्षःतःवहेत्रः न्दः न्द्राः वेत् । धिः न्यायः केनः नदः नुख्यः वरः क्षेः वः ८८। कियायपुरम्पायस्त्रितात्राच्यायस्त्रम्यायस्त्रम्यात्रास्त्रम् भुग्रायाया हैन । क्रिंसेराधु हैन ग्रायाया यह सम्बाधि । भ्रे ना वेया नहीं भी विंसः भ्रुवः नकुरः ये। १२ द्याः दरः वयः विंसः यः नहे अवस्य वे। भ्रिः यः नहेंयाः यदे सुन्तु वन् प्यन् सर्हित्। विश्वानाशुन्याया सुन्दे । ने प्यन्यिनः इस्रानि से कु निर्देश्यायास्त्र वितान्ता होत् सुन्य सान्य प्रान्य वितास्त्र वितास्त्र वितास्त्र वितास्त्र वितास इ.य.श्रूप्रशासास्त्राच्यात्राच्यात्राच्याः स्त्राच्यात्राच्याः <u> ५८.२भूष. अक्रूचा.चाश्रम.घुर.सर.घह्रय.सह.जूचा.कै.व्य.५८.। अरश.</u>

मुरुष्य वर्ष्य प्रमान स्थान स् *ॸॸॱॿॱॺॺॱढ़ॆॱक़ॗॸॱॸॕॸॱढ़॓ॺॱय़ॸॱऄॱज़ॖॺॱय़ॱॻऻॶॖॺॱय़ॱढ़ॆॱॸॺॱय़ढ़॓ॱक़ॕॺॱय़*ॱ भे भें अपने । । दर रें दावा शुभ दे रहें अपी हैं भें पर निव हु द्वादाय खुद बर् क्षेत्राग्यर सूना नसूना ग्रीका सदर नका क्षेत्र त्या प्राप्त हो क्षेत्रे देर में वे। वर्नेशः श्वेरशः वर्षेषः प्रमः वर्षेशः सेनः प्रमः प्रमः व्यव्यवाशः सेनः प गहिरायान्त्रन्ति है । विवासन्त मुन्योगाहरायया वर्नेन्यवे गुन्य ह्या हु या धेर्या संदे तर्दे न खु त्या यन्तर ने। तर् ने या से न साम है । यस स *ॻऻॸॖ*ढ़ॱॸॿॎऀॱॸढ़ॆॱॻऻढ़ॺॱढ़ॼॺॱय़ॖॱक़ॆॱॸढ़ॆॱय़ॖॕॻऻॺॱॻऻऄॻॱढ़ॱक़ॕ॔ॸॱख़ॺॱॸॗॺॕऻढ़ॱ मित्रकुषान् प्रिन्छित्। नेराञ्चेशायात्रमान्दावके मित्रके सामित्रमायाः सेससप्तरसेससप्तुरानी कुप्तायम्मायास्य स्थानस्रायः केत्रसरार्धे रामात्रसः सर-अर्देव-स-वश्वाशुद्य-शेष्ठि। । या बुवाय-सेद-द-पेद-पिदे-पद्यवाय-स-से-र्विसाधरासी रेग्नासाधरारेरा से सामित्री सामित्री से सिन्नी मित्रा सामित्री यदे अत्यान से न्या से विसायमें इन हुन के निस्तर से विस्तर में न्दायहर्षे । ने अवादे निवाया क्षे विकास विका द्या क्षे व विका क्षेत्र वा विवास यायम् नात्रमानकुरार्से दे द्वा हु द्वो च ज्ञानवे द्वा वा से दास्य दासे र्विस्रायालेसा हुद्या विसामासुरसायासूरार्देश

र्रें क्टर न है। मेर भ्रम्भाषा शुरा श्रें र विर प्यम प्यम प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा स्थाप म्रश्रेग्रायास्य । व्ययास्य स्याप्यापास्य सस्ययास्य स्थापास्य होत् पु न दुवा पाया धोव पर्वे । वावया या प्रता प्रदेश प्रदेश हेव प्रता प्रदेश हेत्रायशायन्यायदे नगरळे या त्रस्य यह भुः नदे नात्र या तर्या नाया न रास्रेप्तर्वायाने वरे रास्रेस्रेर्न्या श्रुसामाया हार्ये । व्रासेर् रास्र हुर हुर नस्यःविरःक्र्यानस्यायदेः कः मुद्राधेदाध्यायरायाः मित्रिं राधावेया गुद्री गर्वर पर्चे र स्थे रे अरश कुश चें द र र र अर्के श कें दा । न क्ष्रद र गावर श ८८.५.६४.५६म । यावय.हीर.क्षेट.वे.चड्ड.च.स् । विश्व.सर्से । दे.ता.श्वरश् मुशः र्रितः पवसः वर्षुदः वः दे। वङ्गवः पः मुद्रसः सेदः पः वाशुसः ग्रीशः र्र्हेवासः नश्रवश्राम् क्रिं वर्करमु नर्दे । न्यायंत्रे के या से वाया है। यह या मुया स्था ने दे रे दि रहे वा स्था ग्रीय केंया केंद्र पर्दा किंया नक्ष्र पान्य या निष्ठा यह या मुखा निष्ठिया नश्रूव'रा'व्यासु'रव'त्ययायायद्याप्यर्'र्'र्देव'र्यायदे'र्यास्ट्रेय'स्ट्रिय र् नेर्नियं के वार्षिया मुन्यं प्रति के सामान्यं विष्या मन्या में सामान्या में सामा ॶॱढ़ॾॖॻॱय़ॱढ़ऻ<u>॔</u>ऄॕॴॱॸॕॖॻऻॴॱय़ॱॸॖ॓ॱऄॖॸॱॻॖॆॴॱऄॗॱॸॕॱक़ॺॴख़ॱॸॺॱय़ढ़॓ॱऄॕॴॱ सर्दिरशुसर्, ग्रुनिदेशस्त्रुः धेर्भर्ने वात्रस्त्रे वात्रस्त्रः हिवास्य प्रस्ति वस्त्रः यायाहेशासुपद्वापर्ये । यावदाशिधिरास्ट्रीरावहेपराशे प्रभेदाया र्रे निर्मे वे निर्मानी वार्के वार्मे वार्य क्षेत्र निर्मे विष्मे के निर्मे कुर्यार्षेर् हेरळें या सुरायदे क क्रेन पेन प्रयापन्त पर्वेर में । १९न

न्यादर्वे सः देव के नान समाया दे।

गहरामी निर्मान क्षेत्र निर्मान क्षेत्र निर्मा क्षेत्र निरम क्षेत्र निर्मा क्षेत्र या तुरावाया भी रहं वार्के राष्ट्री प्राचे प्राच्या वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्या वार्ष्या वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या व यान्त्रें त्रापाते पुरावर्षे पाया यह स्थान के प्रति का स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स न्दायन्त्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः यथा हे स्ट्रम् सूदानु विवासन्य विवयाय थे। किं.ज्र.प्यायकारकार्याक्तकार्यात्रकार्याक्ष्यां क्षेत्रका किंत्रकार्याक्षेत्र सर्गायर र सुर न । वर्के निते वहे मा हेत ने स्वा वर्ने र सदर है। ५८.५२। विश्वास्यस्य संदेश्चिरः र्से श्चिरः देश्वरेश्चिश्वास्यस्य हिन्यम्न् द्वीया केव्य श्री त्यस्य नश्चन या वि हेव्या मन्द्र मन्द्र स्वीया से किया मश्रास्त्र न्त्र नित्र हेत्र ने स्नु तु विवार्षेत्र निवार्षे शाने । र्से नार्श्वे न्यायश् नदे निविष्णायस हेत पर्से निविद्य स्टिन स्ट क्रॅनर्या केत्र से प्येया हेट्र पाटा पीट्र पाटा । यस टे ख़ु ट्ट सु पीया हेट्र सेत्र सु से व न न हो । सि पर से पर में पर से व से पर से पर से पर से पर से पर से व से से पर से पर से पर से पर से पर स १८। सरवार् वह्यारायसायरा सेराक्केसानवरारे स्राप्तानस्या

हेन्द्रम्थाश्वर्शी।

सन्नद्रम्थाश्वर्शी।

सन्नद्रम्थाश्वर्णी।

नेश्वात्वात्ते त्र निर्देश्वात्त्र विष्ट्र विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्व विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्व विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्वा विष्ट्र निर्व विष्ट्र निष्ट्र निर्व विष्ट्र न

र्नेत्रमुत्रा । ह्यार्क्यान्यया ही सार्वेदासकेषा । धीन्यविदार्वे सातुः यसा न्ध्रमासदी जिंद्य-ह्म् दान्ची से स्वर्भाती सि विमायदि रादे प्राचि से से दि वेत्। विश्वन्तः श्रुत्विषाः वर्षः यहा वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः नन्गामी अन्तो मिं अअ अ स्तु अन्ता । त्रि व्यय न सुय प्रामान्दर से न न वर्ने यश हिंद्र भवदः वावव से दर्शे । वाय हे न्वर्वा वी र दे हिंवा र वर्षा। र्झेट्याम्यान्त्रेयान्यः । विक्वेन्यरायम्यान्यः विक्वान्यः विक्वान्यः विक्वान्यः विक्वान्यः विक्वान्यः विक्वान न्व केव में भूर वर वशुरा । नुशुरा से वर्षे नु नु नुग्रा थ पुर मेर नु। । वर्षा वी.खेंश.ज.चज्रेवाश.चैंस.यी विक्ट्रीस.स.ज्ञास.च वा अरुषा यार्ट्रायस्य स्वार्ट्रे वर्षा वा विवारिकेट स्वायः सव सव स्वायं का वि विवार क्षरक्षेत्रक्षरक्षरा । नन्नाक्षेत्रक्षरान्दक्षरन्नित्रः । विराधरा न्रुयः नः नेरः विनः वा । स्वायः ग्रेयः सेन्यः यरः ग्रुयः यः नविवा । नन्याः यः वर्दरसेस्रस्ये दुः । विसः स्ट्रिंट्सः वर्षाः ग्रह्मः स्विसः हे। । वर्षाः वीः र्विट व के विवार्थित्। विश्वामा शुर्या स्थ्र स्ट्री व्रिवाय विष्य वश्वास्य भूतःभू नाया नयानादर्हेन्साभेदेःसुभार्भेनासाइत्त्वसाम्सुनाना<u>न</u>ा केर:अञ्चुत:ग्रात्रश:या । ग्राय:हे:यदे:यद्या:यहें त:यद:शे:होद:ता । ग्रायद: सर्भुरानसाम्बदान्तरायह्मायसूरान्। ।ने सस्धिरानसामारमिसा र्र्ह्मेट्राचरावश्चर । विश्वावह्यायात्रश्चराम्श्रुट्यायादे त्यत्रारे से निर्देशत्वर्था मुग्रान्यः सह्तः मः सूरः गुर्दे।

ने ख्रमः सममः मुमा त्या क्षेत्रा हो में ता के ना ने निवेत नु मात्र साम्रान्यः क्र्यायायपुरम् क्रि.क्रीयात्रात्राक्ष्याचिष्रयात्रात्राच्यायात्रायायात्रायायात्रायायात्रायाया हेव प्दी अपने ह्या हु नक्षुन नु अप्याय ह्या या स्यय ग्राम्य स्थय है । हो स्थर सर्देव सर्वे निर्देश लेगा राज्य हैं राजे 'हें व के निर्दे हेव है ने 'हे गड़िरा ही । *ক্রু* অ'ৡব'য়৻৻রের্ব, মেন্দ্রর প্রান্তর বিল্পান্ত বিল্পান্ত বিল্পান্ত বিল্পান্ত বিল্পান্ত বিল্পান্ত বিল্পান্ত বিল क्रॅट-५:व्रॅग-४:व्र-५:५५ ध्रे:अर-७८-१५२ अ:वॅट्अ-४र-१५गुर-वेट-५०: नवे हेत्र भे वर्षेन वर्षेन अर्थेन त्र क्ष्या नक्ष्य नक्ष्य नक्ष्य वर्षेन स्वर्धन स्वर्यन स्वर् नर्यानशुर्यायाचे विवार्षेत् सूत्रात् न्यायास्त्री वसर्वायायाच्यात् या वातः विगान्नो नशः धुगाः पदे सी । नङ्गवः पः ग्राम्यः सेनः ग्रीयः र्वेनः दय। । वर्नेनः वे से द्रायमानमान विष्या । इत्या प्रायमान । वि न्वायहेवाहेवस्र्रेलाह्य । श्रेयवन्शुम्बावराध्यायम्यम्यह्व । मेवळेवसीर मुवार्क्षरायाची वियापार्स्ट्रियायस्त्राम्याच्याची । प्रयोग्य द्वियायाचीः यससेन्यम् भिन्यापद्रिक्षापद्रिक्षेत्रास्य प्रिस् । सि संस्वत्रास्य । सि स क्ष्र-दे-नदे-सूना-नस्याकेता ।दे-नसासार्स्यानसुराधिदासीता ।दे-यसा सर्केना मुर्से देश मासेना विकामस्दर्भ में विश्वेर नमस्य स्थानि सबर-लर-क्षेर-म्.ज्येय-पर्ट्र-क्षेय-म्.च क्षेर-नी क्षेर-पर्व्या-जया पर्ट-ज म्रास्व हिव वर्ष दी। । ५ वे २८ मी देव हि दुन । धव घ से ५ यर पदी थ वै। विस्रस्य उत् श्रुव सम् से गुःर्दे। विस्य दमा से पी गुःष यहेव वस्य वै।।

मश्रमा । श्री त्राचित्र विष्ट्र विष्ट

विव हु हे द नगयन नगय माने।

ने भुरत्वे नयान ने प्यमा खुम्याबि यथा म्वर्वे वया ने वर्षे रात्रे रात्रे नेराक्ने, पाने अपकेन संदेश हता प्राप्त ने ने अपनि पर्वे राक्ने अने से ने से देश क्रे.श्रॅशःस्ट्रश्यःद्वःद्वःवदःविदः। यदेःवर्ग्यादेशःवशःविःवर्धेशःहेः <u> द्यापर्चे रावर्चे पाने अपके मुंगिर्या दे त्या पर्ने पर्चे राष्ट्री राष्ट्री पाने श्री प्राप्त</u> ग्री:हे:श्रॅशपविशपदि:ह्याप्राप्ताप्ता पर्नेपर्मेप्रा न्द्रायर्थे गिर्देश गाय्य अक्रेन्य स्नाये । ने द्राय पुरक्षेन्य स्नाय प्राय स्मा डे⁻धेत-श्रुयन् नवि-नक्तु-स-यया यय-र्थे-केर-त-से-इययनी । न्य-स-याधिवार्श्विष्यायद्विष्य । दियावार्श्वित्रं स्वर्था । यया केरा देशसम्द्रत्वर्धम् वर्षे विश्वास्ट्रस्य यदे वर्षे से वर्षे वर्ष राःषरःसयः केरः द्याराः भेदः राभे दिनो । तदुः यः शैनाशः पदिः र्ह्ये नाशः पेरशः शुःवहें त'रासराया देशाग्रराद्य वर्गे रावर्गे रावे ही रादरा ग्रव्यापरा इरक्तिसेसस्प्राचायायादिरहिष्ठान्तुः सुर् देषारे रेस्या ग्राट नस्रयः

धरः अवरः भेरः रु. वावशः दर्वी शःव। श्ले : वारः भूवः वश्वाशः धंदेः भूवाः मायन्यानु सासुर विरागहेत् में याया वर्डे याया सरागी सुराया रुपारी यायें र राइस्र राज्ञेश्वाद्यात्रीर न्यूयायात्र स्वात्र साम्यायायात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स क्षेत्रवर्रात्रव्यात्रः क्षेत्रः स्ट्रम् स्वराम्यायायः वर्षाः देशः शुः श्रेतः विरा वायरः तुः वह्रमामवे क्वें क्वें सम्म हो न वने वर्षे के न में व ववन ने प्राच के कि व ह न्गेविक्षे । निःक्ष्रस्याञ्चर्यात्वर्षस्यक्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्रावर्षे याशुरात्र विशेषायायवयविषाद्यो प्रायो । । पादाळे द्यो शुरु भ्रायाथ्य धरा | निर्मो न निर्मा भी श्रास गुरु का | निर्मा श्री मानस्य गुरु हैं निर्मा भी १२े के निर्मामी अर्डे हिम पेर्ति । दिमो न दमा ग्रम् अर्था । श्रेमा सदमा ग्रम् हेर नगम्यायाया । नश्चयाया हो ना नहीं या नहीं विद्वारी हिंदी श्वाप्यम र्वेशक्षित्वया । देक्षेद्रस्वर्त्वर्वेशक्ष्यः स्वर्त्त्वेश । स्वर्धः स्वर्त्तायेदशः गहरक्षेटमी । तुःगर-दुशःश्रयः अग्रेवः छुटः भ्रूर। । शेःहेटः वेदः हुर्चनः नगरमञ्जरमा । भूर केवा चारेवा ग्रुम स्वा सम ग्रुटा । वभूष सम सम् बेट्रम्बर्यादस्य । विवासेट्रप्रिंट्रम्य न्यायाय विवासीय । वट्रे वर्वे र से वर्वे क्रें र है र वे या विराम्य र से है र दें। ग्यायाने प्रवादम्या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा

वश्यापर निर्वे र क्रे नश्चर नर से नगरे क्षुस्र व क्षा न व्यानक्ष्य ने हिंद नवित्र-तृःश्रेवा प्रायस्य प्रस्य प्रायाश्या मश्या प्रश्ना प्रस्य प्रमान न्द्र वर्गेर न कुन्न ने के अध्यक्ष वर निरम्भ ने किया विष्ट हों ने किया है। वया । दे वे क्यावर से प्रमुर हे। । परे स्ट्रर दे वे श्रिर प्रवेव द्या । श्रेया याववर्द्यास्य हुः हु। विश्वास्य स्वरिष्टे स्ट्री विष्ट्रस हे द्वारा न'नशसंश'रादे'सबर'यर हेत'यरे हेश श्रें र'य'नमें य'त'ते केत हु हुर র্রমানম্বন্ধুমান্ত্রার্ক্তমান্ত্রুবানমান্ত্র্মান্ত্র্বির্দ্ধুমান্ত্র্র্ধু र्रे येत पर्दे द न हो । न ने य हो द या का का सकें के र ना द य ना हत निरानुगाराप्ता । दुर्शाञ्चयाञ्चरायात्रशागुरापुरायम्। । यो छेराक्रेशा र्वेन'न्गव'नर्याक्षे'न्नर'वीय। ।न्य'र्केय'र्भुन्'पर्याने'वर्ष्यक्षेयासर सह्ति । वार विवा वासे र स्रूर रेन केन सुरा राधिया । दन सुवाय प्रस्वा धरःवरीत्राचे वर्षा यहा विष्यः विष्यः से सुर्वे । स्वर्थः विष्यः से स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्व |नश्चित्रपादेखें केशम्बास्त्रव्यायाया | विश्वाद्या र्स्नेनश्चित्रप्ययायाता श्रेषे निर्देश से विव पुः हे न नगर हे न शुरुवश्रा निव नु नह गाय गार धिव ने छिन्। न हुन छे न सुन। विकामा सुनका सदि श्विम में। नि प्यम हुन पर्योग्स केव में श श्रुव श्रूपानवा ने श्रुवायावा श्रुर नाया ने भ्रूम प्रक्रिया नाया न्या वर्चेरवर्रे हेर्परर्ग्यायन्य मास्र्रियन्। वस्रवाध्याव स्वेष्ट्रास्य <u>ᢖ</u>ᠵᠴ᠄ᢅᆍᢌ᠂ᢌᢋ᠂ᢩଵऀᡨ᠂ᢅᢅᢍᠮᠵᡃᠴᠵᡜᢌ᠈ᡸᢅᢩᠳᢌ᠈ᢋᢌ᠃ᡧᢖ᠂ᡱᠵ᠂ᢩᠪᠳ᠂ᠮᡆ᠈ᡷᢋ᠈ᢅᢅᡱᠽ र्शेट्स्यश् मृद्रार्शे विवासित्र देशावात्र्र राष्ट्र राष्ट्र वासित्र देश र्वेन'बेर'न'र्वेस'मस'एर्गे'से'तुस'नवित'र्'सर्ट'विग'न*बुट'*दस'न्न्य' इन्डेन्डेन्डेर्स्येषुःस्तर्भेन्यायर्भेन्यस्त्रेन्स्यस्त्रेन्द्रम् न्यावर्त्ते र विनायायदाने भू तुवे न्यायान हे न्या के या वर्षा न विनाय वियारी हैं निया शुराय सूर हैं ने सुन् है न है न नु नहीं या यर होते। ने भूरान्यानवे हेताया श्वेरार्थे यो वायर्ने ना सकत हेना कराना विवास श्वेर यायाळें यायवे प्रयाप्त याया । दे या प्रयाप्त याया के याया वि वस्रशंक्त्यते नियम् नियम् वार्मित्रं विष्ट्राचित्रं विष्ट्रं विष्ट मदे भ्रेन्स् । नश्चन तुर्याम दे। भ्रेत्रेन ननेयामहेन न नर्या भ्रेन न्यायर्शेन्द्रन्यये श्रीन्द्री । ने प्यत्र के यदीन नश्चन नर्गे श्राम दी। वर्देरः अप्तश्चनश्चर्त्रात्रे न्यात्र अस्ति । वर्षे राष्ट्रे न्यात्र वर्षे श्चिरः र्रे । प्रभुष्ठित्त्वरान्ध्रुनान्वे रामान्ते। वसायके याने सामाने प्राप्ति हिरा र्रे। १२े व न मुराया शुराया के भी न में दिन स्था मुराया है स्था मुराया है से स्था मुराया है से स्था मुराया है स नवे ले लें लें निया निवे प्रश्नि के लें स्ट्रिस् श्रुन निवे श्राम लें निया निवे निया निवे लें स्ट्रिस श्रुन निवे श्राम स्ट्रिस श्रुम स्ट्रिस श्रुम स्ट्रिस श्रुम स्ट्रिस श्रुम स्ट्रिस स्ट्रिस श्रुम स्ट्रिस स ८८.७च.र्ज्ञा अ.४.४.४.४.चीय.घट.वी.४.वी.४.५७.४.५४.कूच.४४४. वश्राभे वह्या प्रवेश्ये विष्याप्रभाने याहेश शुरु र र वश्चराप्र पश्चा वर्षामाशुक्षानु गुरु किंगामि । ने स्ट्रिम् विष्ठे न न्वन या ने प्यने माणि वर्रेषास्त्रिन्दिन् ग्राम् क्षेत्रार्क्षेत्रार्क्षेत्रार्क्षायाः स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्व ने भूर क्षे श्वरक्षे वाया वया वया यया या क्षेत्र विष्य के वया सूर विश्वर व

क्ष्र-नमममान देखामानुमान्यन्ति-स्तिन्दिः क्षुनुः भेत्रामा वन्नर्भानुते र्श्वे न्या हे न न नाव रहं वा नु न सूया हे हि सूर वर्ष्या पारे सूर नन्द्रभावस्थान्त्रभावः नर्भेस्थार्थे । द्रिष्यः क्रुवेः भ्रेष्ट्रम्भावः नर्भे श्चिर्यन्दे त्र्ये उसाविषा र्वेन पायदर दुषा विस्र साथ सेष्र साथ प्रति न्यो नः इस्यान्याः श्रूष्याचेयाः चेनः नुष्याद्वेनः स्वान्याः । वर्षेत्रायायाळुवाविस्रसाह्यस्य प्रमान्त्रायस्य वित्व त्र हुत्याया स्वीत्रास्य धरामें प्राया श्रुष्ट्र श्रूष्ट्र व्ययाचे स्थाने स् इ. शर. मृ. षुया. र मृ. पु. पु. य श्रीय. तयर स्वेष. थे. थे. थे. य स्वेर. य श्र ने लान्यम्यायात्रयाय्य्ययात् यते त्यों वै हेत ही न्दाह्य प्रमाहेत नगव नम्स्रोस्रस्याद्वि । वर्ष्यस्य स्तुतिः श्चेर्यस्त्रेत्रम्याद्यस्ति। देवास्रास्रास्त्रस् सम्बद्धानने वर्षे त्यानिहें याने प्यानियान विन्तान स्वताने के याने में दारा नर्झें अपर्वे । निर्मे निर्मे स्वेशनें याम अपर्ने या महत्त्र सह निर्मेश कें रा ग्वन गुन ने अ अ इत्यान अ जुर ग्रा श्र र भे न र या र र र र र गुर्दे॥

मालगान्यानेश्वान्यानेश्वेद्राने हेन्याने हिंद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यान्यानेश्वेद्यानेशेद्यानेश्वेद्यानेशेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्येद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्येद्यानेश्वेद्यानेश्वेद्यानेश्येद्यान

यमश्चेतिः इसामावना त्यः देशामा मञ्जेतः सामानिक्षा श्चेशः तुः मश्चाश्चाश्चाः यसः तुः मश्चरः स्वाश्चरः प्रदेशः स्वाश्चरः मश्चरः श्चेशः तुः मश्चाश्चाः श्चें विश्वास्त्राम् स्वाश्चरः प्रवितः प्रवितः स्वाश्चरः स्वाश्चरः स्वाश्चरः स्वाश्चरः स्व

भ्रीयात्राम्यात्र्यात्री त्ययात्राम्यात्र्यात्राम्यात्रयात्राम्यात्र्यात्री

सरसः मुसः ग्रीसः विवासरः व्यवसः नक्षेत्रः सः प्रः प्रः प्रः प्रः विवासः नमन्भामान्यः प्राप्तः व्याप्तः स्त्राप्तः स्त्राच्याः स्त्राप्तः स्त्राप्तः स्त्राप्तः स्त्राप्तः स्त्राप्तः स सेसराउद्दिन्दिःदेन्देन्द्रः धेदःसम् केंस्यासुद्रस्यः प्रस्य उद्याहर शेशशास्त्र मी दिन मिन श्रुवायर में प्रियं । दि स्वर व वश्रुवा मुं श्रेय । उर्वा भे दिव के पारे अ है। पार्य अभूय अ सिंद स्वर्ध दिर सम्म मुग देश येग्राश्चा ।देःयःग्राद्यश्चात्रयःग्चीःसद्दःसर्चेःत्रञ्चतःयःयश्चात्रस्यसःहेः ८८. बिय. मूर्या क्रिया मुर्ग में मारी क्रिया के मारी क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क कें प्दी पा के या के राकी हो दायर प्दी वा हे दा ही अदी अही री या ही सुदा शुया क्रियायायाद्यायायायात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीया यसः र्सेन्यम् गरः विगायनसः वे गरः नगमे मा । विर्मेरः नवे नने ना उसः न्यात्या । मर्द्धिन में बर्द्द याहे मर्छे न्या । क्रे अर्त्द में के श्वरायम लेखा । वेखा मुश्रुद्रश्चादिः श्चेत्रः स्त्री । देशाये मुश्राया मुहेशः हे। दिवस्य व्यवस्था स्त्रीया न द्रश्राची वर्तात्रात्रवस्था वर्षा स्थित स्थित में त्या द्रवा में वित्रा क्षेत्र में श ८८.४८.४८४.भ्र.४.भ्र.५.५४.५३४४.५.६.४५८.१५५४५.५ वस्रयार्वि से अर्था प्रतिराद्ये राद्ये र र्जन्त्रसे। सेरान्यक्रियाची श्रीन्यास्त्रवर्णायास्त्रीं नामसेन्यस्थितः रायशर्मेवानवेष्ट्रम्पारमानी में त्रुन् कें न्यून्य का है ने वेष्ट्रम्य वाष्ट्र नक्ष्रन'रा'नाशुस्र'यद्ग्रा'रा'धेर'रादे'स्रेर'हे। यस'क्षेत्र'यस्। श्रेर'रादे' यदे त्यः क्रियः सुर्या अभिया प्रदेश यश त्य अः सूर्या यदया हेत्। यादः वियाः ररःविःदंशःर्देवःगहेर्। श्लिशःतःदेःवेःविशःव। विशःगश्रुरशःपवेः म्रेन्स् वित्रं म्रेन्यम् अर्भेत्रायम् वायरम्वायस्य मित्रामेत्रामेत्रामेत्रामेत्रामेत्रामेत्रामेत्रामेत्रामेत्र या निहेत्त्वराग्धरान्सून में निश्वरा निश्वराया मुराम्य मार्थरान्य स्व निर्देशक्रिम्देरिक्षेत्राच्या विश्वाम्बर्धिकार्यास्त्र इस्रास्ति स्वास्ति वनशर्ते मिहेशहो गुर्शर सूर्याश ग्री वेगा पर केत्र में प्रमास में ये हु हीत मदे नेपा म के द से दी । दे पि के अ दे श्ले अ नु के द से दे के अ र् र र द द श्ले श्चेशन्तु केत्र में ते । श्वेर हे केत्र में दिया वित्र नगर नु श्वूर मश्चेश्वर रव ग्री:सृग्।नस्यावस्याउट्।वट्।यट्।ग्रीयदे।ध्रीर:रु,यट्यामुयार्वेन:ग्रुरः <u> इसक्षे व्रेन्द्रमान्दर्भे सम्मित्रमान्त्रे सम्मित्रमान्य क्षेत्रमान्य से स्ट्रिस</u> है। यस ब्रैंव यस। रट कुट हैं वास रावे स्वानस्य की सा वाद विवा मालव में सूमा नस्य गुवा । प्यट दमा बद पर गुव वर्ष वहें दा । क्रे राज् ने वे अर्केन भेतर्रे विश्वास्य भेटा क्रेश्य राने साम्य राम्य श्चेशःतुःगशुंशःश्चेःश्वर्वेःगहवःयःद्वन्यःयःनशुःनम् षरःगरः वर्गाः गशुस्रः श्रेः श्रें सः सदरः सः धेतः श्रें सः सः सः धेतः सदरः सः धेतः त्रअ.यर्जेश.तपु.क्षेता.ष्ट्रिष्ठश.ग्री.र्जूष.त.ताट.ट्यो.तट.धेटश.त.टट.र्जेथ. नवर खेर हैं। १३व वें अन्दर ख़्व मवे ख़्य ब्रिस्स ग्री क्रें सम्पर्म न यमः ब्रम्थायान्य स्वराधितः मे । व्रम् क्रुनः श्रेस्थान्यते स्कृतः विस्रशः ग्रीः श्रृं अप्याप्य प्राप्त स्त्राच्य स्त्र स्त र्रे दे च स प्येव दें। । यहिषाम दे प्रचेट प्येव दें। । यह सम्येव सकें या प्येव र्वे। विरामश्रम्यायने पर्ने पर्ने पर्मे प्रवास मानव पर क्रे या नाम प्रवास पर्मे विषय । वर्चर-दर्भक्रमावर्षमार्ख्यासरम्भविमामस्रस्था । वस्रार्श्वेत्रप्वेतः र् सहर दियोयायय। स्निन्द्रिन र् श्रीमानिक्र श्रीयायर स्नुयाया सुरा ग्री'अळ'द'हेर'ग्राशुरश'र्शे । भुभेश'तु'ळुर'दु'त्थ'ळे'त्रदे'खूर'त्येद'स'द्र्रदेष्ट्रे साञ्चरायेवारामहिकार्येदार्वेदाग्रहायदेरावे महिकारा है। देणदासदेवा सर्वितः वनसः सर्वे रः नः वः ल्यासः यः न तुरः है। । याहे सः या

नसून'रा'वा'गिहेस। स्रे अ'त्र'ग्रास्य स्री'व्यस'ती'र्स्य स्रापित रादे

र्नेन'गर'भेन'मर्दा रेस'मरे' क्षेत्र'पित्र प्रिन्य सेन्य सेन्य [८८.स्.से १.केर.से अ.यं.योशियारी.यंत्री अ.यं.कुयायं.कुयायं. શુઃરેસ'મ×ઃક્ષુેસ'તુઃગૃલ્द'ગફેસ'શુઃત્યસ'બદ'સ'&દ'વ'સેન્'મ×ઃવન્ नर्भाने महिर्भा हो मा केत्र ही न्यूया ही क्ष्मिश स्था प्यवा प्यवा प्यवा हो क्षित <u> ५२ॅ ५:५५५५२ वेट्र १ के. वेट</u> वकें नन्दरनदेव भन्दा । हिव वया खेव न्दरक्ष सम्भेता । वहें व स बस्रश्रारुन्यन्तान्ताने। विदेशने विदेशने विदेशने निर्देशन अर्चे महिरार्चे । विदेशे वे निर्वे के निर्वे में निर्वे प्रवेश विदेश मार्ग व स्वार स्वर त्रः स्रे| | देशः दत्तुरः यसः ग्रीः यदः यनाः धेव। । क्रें शः ग्रावः स्रें रः प्रें दः हेनः हेना सः नम् । तम्, त. श्रुट हेते कु मुंद त्युट । । वनम सामम श्रुट पासवर पम म्। दिसाववुरासर्केषाची र्सेट्साधिता विसावासुरसासदे सिरार्से। दिसा वःपर्नरःश्चेरःप्रवेःनरेःनःरुअःषःश्चेनःग्चरःग्चेरःप्रवेःश्चेशःतुःकुरःतुःन्दः विविस्तावायमान्यस्याद्यास्याची दिवात् वितानुस्ति नुस्ति भ्रीमानुष्ति । वी त्यय र् त्विन प्रासेव ही। ने विषेश न् र मुक् सें र वि त्या प्राय विवा रॅदि'लस'र्से ट'नदे'अत'यम्'रु'हेट्'रा'भेत'र्ते॥

बेर्-मदेख्यादरेन्त्र । वाववःयवः क्रेवः रुः श्रुवः वेरः यथा । श्रुवः र्येः श्रुरः र्रेर-भून-भे-नेन्। । प्यार्यकाश्चेर-हे-व्युत्र-प्रकाती । भून-हेना-रे-रेर-मःने ८८। १८८ की माने र कुर खुर खुर ना दी। । मानव ल माने न से ५ माने र खेट र्ने । | इस के अ क्रेंब ५८० वर्ष १८०० । वि विया वर्ष ५ क्षर व्यापिया परिवास भ्रेअन्तरकेत्रस्वरश्चित्रपाधिया । वर्षयातुरखेत्रप्रम् त्वराविरमेगया । विया वाशुरुरायाः भूरा वनवाःवीः खुरु। कुःनिरः नरः नतुः वः भूरः श्रेरः ये रायः वर्गीःकरम्पायाः स्वासायदे स्वाप्तस्य में प्राप्त स्वाप्त में स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्व केव रेवि गुव र्श्वे प्रेश हेव अकव प्रप्य न्य शही देव स्वत प्र शहर सुम वर्षाचेषापाळेवार्धेरावह्षापाधिवार्वे। विवादरार्धावर्षाक्षेत्रात्राळेवार्धा वर्षावित्। प्रमः नेषाया सेत्। कुरावित्। प्रमः मुवः सेतः प्रसः सुव्याप्यः ठे·जुःबे·म् ने·गहेशःन्मः बुदःसॅमः नवेः यसः श्रुमः निः से सः नुः से दः से विः यसन्भेत्रमित्रक्रिं वार्वी धीव हे ने स्वयुक्त खुषावे विक्र प्रस्त्युक्त दे। न्रेंशन्ता न्रोंशन्त्री ।न्तर्भिती वेगामकेन्रेंन्त्र्वामितेत्र्वा वे ज्ञानक्ष्या की अर्केना पुरशेस्राय श्रीताय है निक्ष्य वा श्रीसाय वा श्रुम् प्रद्वायया ह्या स्वरासेस्य स्रोत्रा स्वरासेन्य स्वरासेन्य स्वरासेन्य नदे नर्डे त रूर नर्ष्य्यय पदि क्या वर्षा स्थय। । नरे निवेश स्थय ग्री । श्रभःवेशःन्हेर्न्। विश्वाश्रम्भःमः कुषःनदेश्रभःशयः ग्रम् कुरा से समाद्रावे सामित्रे से मार्चे मार्चे तात्र साहेत में प्रोत्ता के ताम मार्चे प

या ने त्रमानुसमान मेना केत मदिना सेन त्रमा भी मान सामित समान सुमा नवे भ्रिन्भे । देशक नेवा केव ५ वह वा वर्षे ५ स इस श भी श दे से सस सेसराने नस्नेन प्रदेश्यन पेंत्र नर्सेसरान्य स्नेन प्रतापान स्वरापेंत्र या र्श्वे भुग्रम्भ प्रमेषाना विगान्ता यदाष्या नत्त्र मा सुन्रम पर्मे न्तान्य स मन्त्री सम्मन्त्रम् से सम्मित्रा ही स्यामा क्षेत्र मित्र मित्र सित्र सित्र सित्र सित्र सित्र सित्र सित्र सित्र शुरामानक्ष्रनानहुर्याद्वार्यायम् वाश्वर्यार्थाः । दे सूर गश्रम्यामदे स्व र्षेत् प्यम् न स्व मित्र मित्र स्व र्षेत्र प्या स्व स सन्दर्भ द्वेशम्बर्भम्यस्य मुन्दर्भ नदे वर्षे विक्रम् नश्रवाशः इस्रशः नेशः बेदः प्रशः क्चः केरः वसेवः चः नः । वाश्ररः नुः हो नः । क्रम्भाग्यात्रात्रेम्भागुवावस्यार्भेतात्रम्भावत्रात्रेत्रम्भात्रम्भागः गी-र्नेत्रः वरः पार्टः वस्र अरुट् अधितः पार्त्रस्य अर्गाटः सेस्र अर्थः देशः प्रहेत् द्रसः नरे ज्ञून हु त्युन राषा र्वे द र नाद्य अन्य मन्य र स्वा नी सद र्वे द वार्चिन वर्दे दार्गी वर्त्त्व या नर्देशायाया धेताया निवा येदायी व्यव धेतादे दिवा सेससानक्रेन्।यसादतुरानसासेससाने।नक्रेन्।यायादनन्यरात्र्वे लेसा श्रूयाग्यदाळेचार्ययात्रावश्रूयायात्राचीः श्रूत्रायात्रम्यायात्राचीत्रात्रायायाः वें। । ने अन्तर्श्व तर् अर्देव अर्थे न दर दे अन्ये मुर्थ की स्वरणें व मिहे अर्थे हैं। यः र्चनः पर्ने नः निष्ठे नः प्राप्तः श्रे अः नुः रुदः प्रते नः प्रतः प्

ने ॱख़ॣॸॱय़ढ़ॱऄॕढ़ॱॻऻढ़ॆॺॱय़ॱॾॕॸॱय़ॸॕॸॱऄॗॖॖॖॖॺॱढ़ॺॱय़ढ़ॱऄॕढ़ॱढ़ढ़ॱॿॖॆॱ सेसरानर्झसारायायहुणारात् सेसरानेते स्वानुसरामान्दारेहेरहे क्रेव्राच भेर्त्र प्राच्या दे प्यर स्टर्म न असे हरू सामा स्टर्म मानस्य ग्रीशः सन्दर्भः निर्दर्भः नद्भः निष्ठस्य । स्थः निष्ठस्य । निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः । निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः । निष्ठाः निष्ठाः । निष्ठाः निष्ठाः । न वर्ग्यासेन्याविगायासेससाउदाग्वदाविन्यान्यात्रस्या नशर्येदशःविदःसूनानसूयाग्चीशःसद्गरनायाक्षेःनर्वेद्रायार्वेदःशक्षेद्रादे र्श्वेन्यह्मायमा सेसमाउत्नेन्याक्समायार्थेता । मनमीनेत्रन्यने वर्तते सेसम् । ही प्रसन् प्यम् रूपि स्थान । वावन ही देन रूपा प्रान्ति । वेशम्बर्धरश्रम्बरे धेरार्से । देवे धेराक्केश्चर्यक्र रिवेश्वनश्रास्यायः ट्य.त्यूर.र्मेय.यर्ष.श्री.यर्प्ट्र.रा.त्यय.क्ष्त.ट्रा त्युर.यी.सैयश.श्री. सर्वे देशक्षात्र स्वाप्तर्था विद्वे ति विद्वे ति विद्वे ति से स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्व वया नेवया पहेत्र र् शूर प्रते से समा उत्त समा प्राप्य पर र मी हममा विमा ने यस ग्रम् क्रुन ग्री से सस हो निस्त क्रुम विमानम् हुन हिम्म নমম'ম'র্ম্ব্রু দ'ন'র 'রুদ'ক্ত্রন'গ্রী'ম৾মম'নউম'ম'ম'৸র'ম'য়ৣ'নর 'রনম' ขิ ฺฟุลฺลาขั้วฺฟฺูลฺลางฺงฺเฉฺฐัาลารุะาผฺลาฉฺลงเลฺลงเลฺนาณาฆัฦฺลานฺลิา र्श्वे न्यान्यमा श्रुट्गी र्श्वे द्वाया प्याप्त प्राप्त विष्ट्र विष्ट्र त्या श्रुप्त विष्ट्र विष्ट्र

यदेरकुराद्याद्येराची केंग्राज्ञेरात्र्यात्रात्रात्राचे च्या ग्री सेस्रा क्री चतु त्यत्र त्यत्र तिया शास्त्र स्था स्था ग्रीट ते वा शास्त्र नम्भूत्। र्स्रेनास्रागुराने त्यारेशासाह्रेनासम्बर्धाः र्स्रेनास्य <u> ने न्वा इक प्रमानु शाक्ष स्वार क्ष्या ग्री से स्वार क्षेत्र प्रमार क्ष्य प्रमार क्ष्य प्रमार क्ष</u>्य प्रमार क्ष्य निवर्त्वारेशनि ने सूर्या तुरावर भ्रेशन्त केवर में दे त्यस न्दर त्यस से र्शेनिप्रवेषासेन्न्यस्य स्वित्रस्रेशित्रस्य सन्देशायास्य स्वित नर-५.चुर-ळुन-ग्री-शेस्रशन्य-देश-स-पार-प्यर-धे-ह्रे५-पश्र-शेस्रश-दे-ह्रो५ नदे नोनाश श्रमा धर द देवे नर द देवे के द से विश्व स्था द स द से नशायदी या न्या निष्ट्रमा स्वापन स रेंदि:भ्रूनशःशु:नल्द्राय्य्र्रायेष्यश्यरःश्रूदशःत्रशःग्रुदःकुनःग्रीःश्रेसशः नर्डेश्रायायापीत्रायाकुनायाचे भ्रेन्त्रा ने त्रश्रायेययाने नहत्रायमा ग्रायि म्रेन्द्र, भ्रुन्यादम्, ब्रुन्ध्रद्धायाधेन्यः स्वार्यन्त्र, यहत्त्वयः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः ठा र्रेंबर्परकेंग्यायात्र्द्वरावयात्रेत्रात्र्यतात्र्वात्र्यात्रात्र्वतात्रात्र्यतात्र्यता ने वस ज्ञार से सम ग्री हुँ न पा द्वित ज्ञा न न न स् न वि सँ न स पा सू न पर वर्देन् प्रवेश्चित्र वर्देन् स्रद्रम् सुद्र स्था क्षेत्र व्यापा स्थान स्

न'न'यह्म'मदे'र्स्स्स्य स्म्रम्म्म्यास्य विमानेस्स्म्स्स्य देवस्र ह सूर वी राया वी राया रे वा नर्दे रा नु वि ना निव प्यर वि ना स्कुर वि रा <u>५८.५४। घेषा अभागी भागी भागात्रात्रात्रात्रात्रात्रा १८%। व्राप्ता भागात्रात्रा १८%। व्राप्ता भागात्रा १८%। व्</u> क्षरायाधीरायद्वराही क्षरायाधीर सामायाधीर द्वर्यायायायाया समायाधीय सामायाधीर समायाधीर धेत्रः तुनाः श्रे ः त्रः तक्ष्रयः केटः हिन् ः परः न् ः श्रे अशः निने ः यदेः नश्चे नश्यः यः यः है ः क्षरपर्देर्पा क्षरपर्वे विष्ठुर्पा स्वर्ग विष्ठुर्पा क्षरप्र क्षरप्र क्षरप्र क्षरप्र क्षरप्र क्षरप्र क्षरप्र क गित्रायायेग्रायरानक्ष्मार्ये। यियार्झ्रेन्यया सर्देन्नेयान्स्रेन्यरे ध्रेर्, वि'वावर्यान्रभेर्ययरात्र्यर्थर्याचे सर्वे सर्वे व स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्र ग्वर,रे.ह्.स्.ध्रेर.क्रेयाक्ष्या.अह्रायक्षेर्यस्त्रेर्यःह्रीय.रे.स्रीय. नेदेः भ्रीतः नुष्यात् विष्यात्र व्यान्यात्र विष्यात्र विषयात्र विषयात्य विषयात्र वि वक्रेट्राच वर्ष्ट्र स्वे स्वे स्त्रुप्त वा से द्राया से कैंद्र प्रमः तुरुष्ण नर्से अः कुंष्ण अः कें मः नमः नसुम् अः क्र अः के अः मनः ग्रीः में कि स्वायर्वेर्ग्यस्य स्वार्थि।

ते स्वराया प्रति त्या विष्या प्रति त्या स्वराया स्वरा

र्याद्यन्तराह्य माशुक्षायक्षेत्राया देश्वेषार्या क्षेत्रः विषात्रीः राधिवासमा दे द्वाची में दिसाद्दान्य स्थाप्त प्राप्त विश्वापान्य ग्रीशाग्रुटाकुनाभाष्यादेशायाकेनाभागम् । निःश्वानुदेश *ড়ড়*ড়ড়ৢয়৽য়ৼয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽ড়৾য়ৢ৽ঢ়য়৽য়ৢয়৽য়৾য়৽ড়য়৽য়৾ৼ৽ঢ়য়ৢ৽য়৽ गुनः हैं नः ग्रीः नदेनः सदेः मर्ने मान्यः प्रदा देः विं नः केदः नद्याः सेदः सः याहे सः येग्रअस्र हेंग्रअस्य देन्द्र द्रायाये यदेव स्थाय वहेव संवे ग्रिन्य यिष्टेश्यान स्वाप्त स्व र्धेग्रथः रे.च बुदः दशः वर्धेः वरः श्रे: व्रेट्टो | द्वः श्रः थः वह्याः शः थश | गृदः भ्रे रेंदिरदर्भाषीय। । यत्तर्त्यत्रम्ययात्वो नदे द्वर्मी भ्वायाः भूवयाः ग्रीभा मिजायदात्रात्र्यं भिष्यः मिलासक्ष्यः स्वासक्ष्याः भिष्याप्री विश्वाप्री स्वा राःक्ष्ररःर्रे॥

मुश्रास्त्राश्चाश्चर्या विश्वराध्याश्चर्यस्यर्याश्चर्यस्यर्यस्यर्यस्यर्यस्यर्यस्यर्यस्यस्यर्यस्यर्यस्यस्यर्यस्यर्यस्यर्यस्यस्यर

वस्रका उर् र्रा विर् सर् र् ग्रायर स्वाका वका ववा ववा के वर ग्राह्म मभा निनेशमिहेत्रनिहेत्रकुषार्हेत्रायशाद्यन्यम्नुकुराधानियाने तथा नन्द्रमें हे अरुप्तव्यम् अर्डे व्या हे न्य अर्ड्ड् द्रमें सिम् अरुप्तव्यम् वर्ड्ड য়ৄয়৻ঀ৻য়য়য়৻ঽ৴৻৸৻য়ৣয়৻৸য়ৄয়৻য়৻য়৻ড়৻য়৻৸৻ঀৢয়৻৴৻৸য়ৢৼ৻৸ঢ়ৢঢ়৻৸ৼ৻ र् उत्तरि क्षुर नर्भ में ना न क्षुर क्षुर प्राप्त प्राप्त क्षुर कुर के माने। धें न हर्निन हुन् हुन्ने निर्मात निर यगानी भूर न इसस ग्रीस सम्बन्ध प्राचन केर में सम्बन्ध न स्वास नश्रमाश्री सन्ता सन्त श्रमात्री न्या के ना न्या के ना निर्मेश स्त्र स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर वर्चेरन्दा वेदिः अः क्षेर्यः व निष्ठेत्रः विष्ठेतः विष्ठेतः विष्ठेतः विष्ठेतः विष्ठेतः विष्ठेतः विष्ठेतः विष्ठे इयायर्डेरप्रा वीरासाक्ष्रावार्षेवासार्यस्याची इयायर्डेरावारास्टराया ঐগ্রম:ধম:নশ্লুন:র্নি)

दे स्वा विद्यान श्रुप्त स्वा विद्या स्वा त्या स्वा विद्या स्व विद्य

डिटा डिश्याम् भीत्र हुई द्वायायया । श्रुवायायवद्याय दिवार्थेद ठ्या विश्वान्ता है सूरावर्षेत्र ते वर्षेत्र रायशा विर्वेश प्रवे सुग्राय ते । हुर नदे छै। किर गामविर पर से भ्रेंस्य राम्या । दे पी माद्य राय से स राःभूम् । विविम् नवे मुः अर्के के विमे विभाग । विम्वानियः विष्यु । शुरुत्। विद्रागाम्वर दरक्षे अष्ठ असम्। श्रिद्र परिः श्रिअत्र अस्तुर वर ह्य विश्वान्ता भुन्यायर्थे भूगायरे दुष्य विश्वयान्ता भूतिया विश्वा मित्रकाराधिका । श्रेस्रकार्यदेः श्रेस्यायास्याय त्यासिका । यासिका स्रीता सुन्ना । यःश्रेवाशया । श्रेस्रश्निर्धित्यः वस्रश्चर्यः । विःत्रारीसः ग्रीसः क्ष्यानविवासुन्। विभान्ता सनसान्तानेसान्यासुरार्धाना विभावसा ल्याः अर्हेरः इतः तर्हेरः नर्हेश विशागशुर्यः विरा हेरः रे तर्हे दः रहेवा श ग्रे'ले तु'लश'ग्रहा | ५८'से श्वेदाहे दे श्वेतश'लश जुहा |हें वाश'रादे ग्रह क्रिनासेस्र नहत्वा अिन्यदेखें स्यार्श्वेन्यने साळवासा विन्यासु वहें त'यश क्रुन' ग्रेश सुँगशा । ५५' र्से ग्रश हें र दे ते सुव सुस र्से ग्रा । ह्य यायद्याम् याद्रायद्यात्याया । देयायसून द्याक्षेत्राय्य द्याये। । विद्या शुःनश्चरःयःस्वः हुःनर्हेन्। विष्यःयःग्रयःनवेःन्वरःनश्चरःन। व्वःष्यदेः देव ग्रीश पिरश शु र्वेन । शुश रवा शेस्रश दे स्य रवा या । श्रुव य रे दे न्देशः गुनः श्रेन्। । हेनः वहेन । अवायना व्यवायमा गुनः विदेश । अवायन विदेश

र्यायाः द्धाराव्यायाय या भीता वियापाश्चरया स्त्री।

गिरेशमान्में सामि गियाहे हुसानु हुमान्ने मिर्स स्मिन इससाक्षेत्रानुः केन रिवः क्रिनः वर्षे धिन न क्षेत्रानुः केन रिवः प्रसः रेसः न्ः त्रशास्त्रार्केषाः सेत्। भ्रेशातुः कुरायत्रीरात्राः त्रुत्रः सेताये व्यसः सेताये शा बश्चर ग्रु के दर्वे अपने वा क्षेत्र या शुअ के के से हिर या या दर्वे अप केव में गिरेश थें न ने। यन सुर हो शन्त कुन यदी न न सुव सें न न ते हैं स भ्रेशायराधरारराष्ट्रिताभ्रेशातुः केवारीराविशायके विश्वरिवारीया न यर्षियायान्दा र्ह्ये स्वाद्ये दाया शुक्षायाय के वर्षे । यह के ख्याया वै। भ्रेअःतुःर्वोदःसःवादेशःयःष्पदःसर्देवःसर्वे द्रान्यदःसःर्देवःवादेरःद्र्वेशः स्थानग्री'नर्मुन्दि'ग्नाट'बग्नाके'व्ह्येट'ग्रिथ'व्य'प्यट'टे'ग्रिथ'ग्री'न्यथ्य' मार्श्वेरानाम्ब्रम्यार्भेत्रात्र्येत्रात्र्युराविराधेवात्र्वान्यम्भेत्रामधेर्धेरात्रा श्चें त्या द्या अर्द्र न्य राजार प्यर से द स्य र त्यु र निवे र ही । यावव प्यर में रासदे सूया वा उत्रायायमा सुतार्से राजा सूत्र के सूर्या सूरात्या भ्रेश वितायत्या स्रासा भ्रेर या भ्रेर या स्राम्य स्राम स्राम स्राम स्राम्य स्राम्य स्र नशर्देनाः अर्देनाः अर्भुशाः सन् ने नित्यानितः सम्बित् प्रशास्तिनाः प्रशास्ति *จิ*าผมเผมเผ<u>ฐ</u>รารามิรารั∏

 न्त्रम् स्वरानगदस्याने। क्षेत्रास्यर्थानेत्रास्यर्थान्त्रम् यर्गेवर्गेरमुन्युवरग्रीयरग्रा प्रत्येम्यम्बर्ग्यम्यम् यर्थेर्वर्थः । ध्रियः वे देश प्रमाये वाया प्रवृत्ता वाता हो माया स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त विष् ग्रीशरेशपरायेग्यायार्दित्। विश्वासर्दितसर्वेत्रार्येग्याया यःरेअःउत्रःत्वित्यरःगशुर्याःत्रा यसग्रायः विवायः सेत्रीयः ग्रम्। यम्बुम्कुनःशेस्रयम्बद्धेःमैस्राग्चेश्वनो नवेःश्वेष्रायायम् ग धरप्रयुवाधराग्चावदे भ्रीराशेश्वशास्त्र ग्रीशासदे भीशास्त्र स्वराह्य स्वराह्य ৾য়য়ৼয়ৣ৽য়৾য়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৼঢ়ৣ৾৾ৼ৽য়ৼয়ৢ৽য়য়৽য়ঢ়য়য়৽ঢ়য়৽ঢ়ঢ়<u>৾</u>য়৽য়ৢ৽ नसूत्रासाहे सासुप्तह्याप्तराहो नुर्ति । ने न्याप्ते सारवादही न न्यून पर नमून्यायदीराहेशासुपद्वापरादीरार्दे । । नेप्रवाक्षेश्यारवाक्कुक्रेन्या हेशासुनमून्याद्यानाहेशासुनद्वान्यम् होन्नो वदीन्तेनेवासेस्य इस्रायार्भेत्र श्रेन्यार्भे मेस्रान्यन्य साधित है। विश्वास्य साम्या वेगाःसदेःनससःसःयःश्रुदसःदस्य देःनस्यासःयःयह्गाःसदेःद्धयःदेसः उव-र्-पूर्विकायम्म्यूनकानिम्मेवि मेवि मेवि मेवि क्रिका क्रिका विकास क्रिका यश्चर्त्वस्त्रश्चा । न्यायदे देवायायह्यायाय। । व्यवस्तरे हेवायायदे यरयाक्त्र्याक्त्र्या अर्थाक्ष्याक्ष्याच्याक्ष्या वियापान्या नविः पक्षां क्ष्रकार्के कार्रा कार्रकारा प्रक्षेत्र स्थान स्थान

श्चेशन्तुःकुरःदुःदरः श्रुवःश्चेरः नवेः त्ययः श्चेः देयः य

निष्ठेश्वराष्ट्रित्ये ते ते त्या विन्ता निष्ठेश निष्ठ

कुट्टिय्यश्रम्भुट्य प्रिम्यायिक्ष

यहेगाहेत्रधे अर्देत्यहेर्यो वित्रक्षेत्रप्ते । वित्रक्षेत्रप्ते । वित्रक्षेत्रपति ।

वहिमा हेव श्रे अ र्देव महेर श्रे के स्वी हैं न ही दाया महिया

यहेगाहेत्यि स्तिन्दिर्देर्दिर्देश्वरात्युर्द्धाः विष्ठाः विष्

वक्रे न द्वर्या स्थान क्षेत्र स्था न क्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था स्था वक्षेत्र स्था स्था वक्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था स्था वक्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था वक्षेत्र स्था वक्य स्था वक्षेत्र स

वक्रे-न-इक्-प्रायान्ज्ञ्य्यायादे हे या न्यायाया वी

 न्नायास्याप्यान् वित्राप्यते क्ष्यां स्थान्य स्थान्य

ने मुन् सुन स्वार्थित स्ट्रिया विकास स्ट्रिया स

याहेशःया

नश्चें सम्भागित्र मित्र पित्र दे।

यक्षेत्राह्म् अरु इत्यये ह्या हित्या अर्वित्य ह्या हित्रा हित्रा

क्रिंगार्डरा भुन्यासुरवर्गे नर्दरसुष्याविस्रयायासेग्रयायाये वस्यान नर्दर इस्रशःह्नाः हुः ५८: ग्रुशः धरः हो ५: धरेः वर्डे दः वशुश्रः श्रीशः वार्शेवाः धरः हो ५: ममा खुरायार्शेवारायश्वेदारी सेदाया इसराया श्वेदारी द्यापा सुद्राया स् र्वे त्यर न्यायर पर हिन्दिवाय है। दर्वे न इस्य ग्राट ने र दिनि प्य वरें वर्षा देवा के विवा कि ने विश्व के ने विश्व के ने विश्व के ने विश्व के निष्य के *য়ৢৼয়৽ঀয়৽ঀৼয়৽য়*৽ড়৾য়৽য়৾৽ঀয়ৠ৾৾ঀৼয়ৢ৾৽য়ৼয়য়৸ড়ৼ৽য়ৢ৽য়ৼয়৽ৠৢ৾য় य्या अक्र्याम् । इस मसस उर्ग्ये वर्ष न यर में हिस अक्र्यामें । ५५ ॱऀॳॱॿॺॺॱढ़ॸॱॻॖऀॱढ़ॸॱढ़ॱॴॸॱऄॱहज़ॱय़ॱॸॸॱढ़क़ऀॱॸढ़ॆॱढ़ॸ॔ॱऄॺॱॺक़ॕज़ॱ धेव हो वर्र न्यायी अ वे विस्रस्य म्यासुस्य ही वर्रे न सन्दर्स स्याप्य प्राप्त र कुलावस्थाउन्सेलाहे। वेशार्थे। निष्वविदान्देंदर्सेन्सामान्दाहेशासरा र्श्वे द्राया म्याया स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप <u>য়৴৻ৡ৸৻য়ৼ৻৸য়ৢ৸৻৸৻৸৻ৼঢ়ৢ৸৻৸৸৻য়ৣ৾ৼ৻ড়ৢ৾ৼ৻৸৻৸৻য়৸৸৻৸৸৻</u> ग्रट.यर्चेग्रश्तर्धे ।क्रुश्रश्चरायश.ग्रटः। खेश.यट्टे.ई.ब्रॅट.यट.यट.क्र्येशः श्चित्। दि नविव के शक्ष्य श्चिता कु तर्र ने शक्या । नर्र ने शे हे न सर्वेदादीरायारेंद्राया । पळे प्यत्यां कुषारेंद्र्या प्राप्त से प्र वियन्ता मन्यसर्दिन्दिन्द्रिः स्वानस्यन्ता सिर्म्यन्त्र्यः नदेः भेरन अर्बेट न्या विह्न प्रयान्त्रें नर्दि नदे विश्वास्त्र या श्रीया विह्याः हेत्र स्वाध्याया वर्षेत्र श्वरात्या स्वाधिका या श्वर्या श्वर्या सर्दर्भु अः नुवेः देवः नश्चनः पवेः नु अः वेः नवः नवेः हेवः छ्नः परः

वक्रेन्य्य प्रवे क्वें हे क्षुन् विषा मक्कें प्राप्त विष

भे वुश्यभे विव ग्रम् वहिषा हेव ही अदे देव म्व वर्षे वे हु वर्षेषा पार प्रम सर्दि सर्हे न्दर्देश येग्रा श्री क्रुं सन्धूनश्रान्य वक्के नाय वहिग्रा सर गुःक्षे देःवादीःदेशःभूगाःगःत्रश्रेश्रयाःगःत्रश्रेशःदिःद्याःत्रभूतःहःव्येदःप्रशःवक्रेःवरः भ्रेम्माराज्य भ्रेम्पाराज्य देवाने प्रमासानभूतराष्ट्र भ्रेम्पाराज्य स्थार वर्ग्येद्राचरावर्ग्युराते। श्रेरास्त्रयायय। स्वातुःवश्चेर्ययाग्यरा इसम्प्रिम् । ने या सव मार्चे विवा पिन्। । ने सूर यह वा हेव कें साहेन या नहनाशन् । श्रे इस्र श्रेना मा नुसार स्था दर्गे नि । नि । नि । नि । नि । यशःग्रद्दायायाः सद्द्रास्य स्था । श्रिः स्रदे के त्यः स्वा नस्य प्रतृदः तुः ट्रेंग्रथ। । पळे वर प्रशुर प्रदेश प्रहेग्रथ प्रशासित्य प्राप्त । याद प्रथ नन्गानी भेन् ने पर्मेन प्रमुन न्। । ने किन नन्ना नी या ग्रया सम्भेत्या थी इत्। । न्यार रेदि एका ग्रार र न पुर्वी सका सर ग्रुका । के का या वा वका व वक्रे नर्भाशुः विवादि वास्रा विसावाशुरसाम ५५ ववि वक्कु मायसाग्रम्। नन्गाने वके में सूस्रासेस्रामा । जार वारेस मराधें न सुरामा । नेस ने वहिनासाराधितसानहराष्ट्रीम्। विकेषानम्बाखाधरानायावस्त्रीया विका वाशुरमःमदेः भ्री । दिमःमःसम्भादरःस्टिमःश्रीतः द्वारः नरमिंद्रिक्षे वर्षे सूसर्ज्या दुः प्यराद्राध्यर दुः से ह्या सामस्यस्य दि दे द्या धिन् श्री मातृ हा निर्मा स्वाप्त के प्राप्त के प्राप्त

वक्रे न न्व पा है क्षेत्र न क्षेत्र या दे।

इ.च.चोश्रेश क्रि.अक्थ.टेगी वया.चक्ट.त.प्रमाश्रेश.क्री.सू.प्रमा नर्झेम्यास्य होते । देखान्य सुमा देयास्य एक नामम्य सम्य द्वार हो। देशसेन्'नश्यापान्ना वक्षे'नदेखें'केंश्यामिन्नायापान्नीयाग्रा भ्रे.सर्य.स.चश्रम्भ । ८८.मू.ज.चीश्रम्भ तक्ष.चर्चा.ह्रम.सर.दूरः यने प्यट क्रें व क्री य न क्रें वा फु से द प्यायस्य य वि । खु य है प्यतः विवा वी क्रें : नः त्रुर्या ग्रुर्य दक्षे न देरा हो। भ्री ह्या परि देश स्था या या प्राप्त स्था मिश्रास्टायरयाम्या विरयाम्यास्ययाम् १६८५ स्थाम् । अस्याम्या वर्रे हे र्श्वेर सहर हा भ्रि. वे सवार श्रें या है र वे या विया ये। र्न्स्रिन्गुम्दिके निर्देम्नि ने हिन्यम् नाम्नु मान्नु स्कि नमः श्रे खुवाश प्रदी । शार्श्वे वाश दे वि ध्यें दाया साधिव हो । वास सूर वा से दासु सर्वेदे वर व से ना नि में इसस ग्री मार्स न हु ल्या य वर से वा विश र्से । श्रॅव-५८: धे. अदे.र्याक्षान् . प्यट-श्रेयया उत्तः स्यया पळे. यया पहें यया पा याष्ट्रिन्यम्भेन्याद्वी नेकिन्यमा बुन्निन्यस्य बुन्निन्यम्य मा ।ग्रावाकी अरख्यायदी वित्र व नमार्मेग्रामार्थे मार्थे । किंगायाम्यान्याभी देशास्य मुन्या केंगाया

विक्के निर्वाता में अप्यक्ष से मिर्ने विराध्याका त्या के विकास का निर्मेता है विराध्या के विकास का निर्मेता के मदी मुल्यसं लाग्नम्सर्यायस्य नियम् मुग्रास्ति वर्षामे केत्रासः प्रुः अविम्रश्याम् विमाप्तुः सूमार्भे प्रविष्म् वसायारे मार्वे द्रास्त्री क्र *न्रःभिरःन्रःभिरःचोषःपःन्रःषयःचान्ररःवे*र्धः अअअअउन्न्रः सेस्रअअउतः য়ৢ৾ঀ৾৾৻ড়ঀ৾৵৻ৼঀৼ৾৻য়য়৵৻ঽ৾৾ঽ৾৻ঀ৾৻য়ৼ৻ৼয়ঀ৾৻ৡৼ৻ঢ়ৄৼ৻ঀ৻৸৻ঀৢ৾৻য়য়ৣ৾ঀ৾৵৻ ८८:रूपाय:८८:सुद:इयय:ग्रीय:पर्सेप:यर:सु:पर्दे सःधेदर्दे । क्रियःरें केवारी ने निविवान् प्रहिषाकाया केवारी निविप्यने निवार्षेटा है। ने निवार्षका अर्गुग्रायशयर्भेश्ययः द्वेत्रायव्यः द्वेत्रयः ग्रीयः नहीं गः नव्यः देनः ग्रीयः नहीं गः यदसःइसःन्दःस्वारःन्दःस्वार्धः । प्रवेः यार लेखा मान पर प्राचार प्रकेष न पर मुर पर्देश मिल में के वर्धे। म न'ने'न्र'ण'नन'म'वहेंसर्भभेन'रेंद्र। न'न'ने'न्र'सेन्'म'वहेंसर्भभेन् दिन। स्निन्यने स्वास्यार्केनायायायस्या उत्तर्देसया वित्तरेता वक्रीया वे.ब्रॅग.प्रह्मश्चिट.प्र्ट.क्षे टे.ट्या.जश्चे.अग्र्येयश.तश्चरायश. য়ৢ৾ঀ৵৾য়ৢ৵৽ঀঀৣ৾ঀ৾৽ঀ৾৾৻য়য়য়৻য়ৼয়৾ঀ৽য়ঢ়য়৻ৼয়ঢ়য়ৼঢ় क्ष्रव: इसरा ग्रीरा वि नमः क्षाप्त वे साधित हैं। विराधी। गासाप्त विषादर्श ८.कै.पकु.पक्ष.पहियात्रात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य रात्या दिः क्रेलिने त्यरार्थे वात्ररान् भ्रात्रे वार्या वक्षे विस्तान्य से वर्षे वर्ने नशामाशुदार्देगा

कें त्यः श्रूवः यः से दः वेदः वदी दः ते दः वरः सः कदः दः प्येदः यः वर्षसः यः वी सरवारी वर्षाता राष्ट्रे वीयायाय स्तर्भात्र स्वर् वरेरेरेरवर्षेन्वमुद्याद्धरावर्षेनाध्रमायरवर्द्धेव वियाम्बर्धर्या सूर्रिर्अवतर्रे रुं अविषाधिवर्ते । दि बुन हु कुषा ग्राम्दे विष्यम् श्री के वहर्मानिवाहुरू माहे। वे वे ज्ञानार्शेमानशावहर्मिक ज्ञानापमान्या र्शेट्टन्यावर्षा वर्षा ग्राट्टिन्से दिट्ट सक्त से से द्राट्टिन हो <u> न्याः ग्रम्भेर्ने त्यः श्रेयाश्वासः श्रेम्प्यश्वासम्भातः स्वास्थानः स्वास्यानः स्वास्थानः स्वास्थानः स्वास्थानः स्वास्थानः स्वास्थानः स्वास्यानः स्वास्थानः स्वास्थानः स्वास्यानः स्वास्यानः स्वास्यानः स</u> ने ययर सूर र्'स विवा वर सूर विर के खूवा य पर सूर्व स सूर हैवा ग्रर बेद्रायरावर्रेद्राचेद्राहेदाअळद्रागुद्रान्यराक्षाळदायराधेदायदेधेराहे। र्श्वेन्यह्यायया हेन्यळन्र्येन्यायेन्येन्यम् ।ळे वने ह्या एर्येन् वशुरविद्या श्रिवःसवदःश्रद्धरावद्याः विद्याः । वद्याः १ वद वशुरा विशामशुरशासदे ध्रीर देश

न्नरः सेन् प्रस्र स्टर्भी यावश्रा शुं भे या ना भूमा वाना निर्मा नश्रा स्टर्निन बेर्'यर'वळे'वर्गागी'इर'र्'विर्'यवे खुंवाह्मस्र स्ट्रींर्'स्य द्रस्य निर्देश धरः ग्रुः क्षेत्रे कें अर्था यथा द्रियः व प्रवायः वे च मुद्रुयः व प्राया । श्रुवः वे पादः ८८.याट.चळ्या.सदी । श्रेष.ग्रीश.याहेट.ज.याहियाश.स.क्षेत्रा । श्रे. इस्रश.श्रेया. ग्रुटरेरनेवेवर्ते। इन्धेरवरेशयरन्यर्ग्यर्ग विवासमान्यर र्वेरःवर्गा ।वर्गरःमंदेः इरः र् :वर्ष्ट्रेवः मः भूरा । भ्रेः इम्मः श्रेंवाः ग्रुरः रे :वर्वेवः र्वे । कु'सुर-इम्'हुप्यम् प्रते कुम् । व्रिम्पार्य से द्वार्य से दे स्थानम् । दे निष् श्रे भी कें पर्वे ना अपने कें नाम रायक्ष राम सेना निर्माय में कें निर्माय के निर्माय के निर्माय के निर्माय के नन्ता निःलरःस्वानस्यास्वारान्ता । ह्यूरानानिः वरावहिवावशुराने॥ कु'य'न्तु'न्य्रां अ'त्रे अ'य'नविवा । न्ये र'व धुमा अ'हे'न्तुम'र्वे मा अ'ग्रे आ । इययायके निर्माद्भर र भेला वियाम्बर्स या स्मर में हिं में के दारीया नदे नशुरन्वरानर्झे अञ्चन कु के सर्देयायायया ग्रम् श्रेदानशुर्वा शे ह्वाः र्ह्रेवः गादेः श्रेवः नदः तद्य वर्षेः नदेः श्लेः वर्षः नदः वर्षः नदः अर्द्धः न विर्मे निर्म के तम् निर्म का सिर्म के निर्मान के तम् निर्मान के तम् निर्मान के तम् निर्मान के तम् निर्मान के तम यश्चीष्रायात्र्री वियान्ते न्याये स्वीत्र या सुन्या स्वी वियाव वनान् स्वी बद्दान्यस्यस्य प्रदेश्विष्ठाः स्वृत्ताः स्विष्ठाः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर ह्याया के रें व्यायो ने या कुराया कुराया कुराया कुराया कुराया का

णरणर नश्यश्वर देश पा श्री व्हर बर र श्री पा श

केंद्रे अवर पक्के निर्वा वी अ निर्वे अ व अ पही वा हे द स रें पर हु पर्वे नरःसः बदःदेवेः नरः इससः सुः षदः दर्शे दळना १३वः नासुसः नदः होदः ग्रदः कें त्रे त्र राज्ञे त्र्ते त्रे भूत्र राषे से द राज्य स्व राज्ञे न बुर क्षे क्रम् उवा उवा पर के क्रिंद सर वहे वा हे व सर्वे या हु। व न वक्ष वर्षायमें नःषेवःवें। ।देशवः नरःश्चेः मर्शेवः धयरः वः नः नरः कः नवेः वें छः यायदेवाहेत् धेः सर्भायर्थे पर्यो निष्टे र्येन सर्व बुद त्र सान्वाय नर्भे । गुः हे। न्दोर्ना व्याधर्मेन स्वित्ते से स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्भात्र विषय सूरायायम् निर्मानसारे या द्वायानर से देशायान विदारे । दि या प्राचित नकुःसदेःदग्रेयःसमःइहसायःयम। सेःधेःदसदःर्नेःर्वेग्।सदेःसळ्दःस्रेमः वै। गिर्नार्वादियाःहेवः अरयः वायवशः शुर्माय। दिःवशः वह्रस्य वयः देवेः हेन मे नवेन। । वर्षे अपने विषा सेना समायके नम्या हुम मुल्ली। विशानमा ध्रेव के वें वा नवें वर्षे वा मंदे वा नवा वा माना के वें वर्षे के वें के के वि म्रेटार्वरारायासूटावरासूरायाधीय। विवासरासूराकें हे वदी वरासूटा यावे नि ने नि हिंदा देवा । श्रे अवसान इससा ने पके नि हिंदा हैन

गर्सेन्'मदे'ळे''य'' पटार्केश गुःनदे सेट्'मर्

देश'सर'वळे'न'नश्रथ'रा'दे।

शे. रूट भ्रे। देव सेट रूट के सट में विवादी सूर पट्यापर्या पर प्राप्त स्थाप यदरमिष्ठेर्भे असे राद्या विद्या मान्य प्याप्त स्थाप्त माणेरा नामान्य ग्रीशःग्राटः तुः या विवार्देवः यो दः दुः प्रदारा वा दः विवादि । या विवादि । या विवादि । या विवादि । या विवादि । ग्वराञ्गनरासुःक्षेत्रयाद्यादे स्याप्ताद्रायात्रे स्रायाः क्रॅंश हो न् प्यम् पर्देन ग्राम् न सुन प्रदेश सुन से न स्था क्रें स्था हो न प्रदेश सून स वे दुर बर त्या के दर्श कर वर्ष दुर्ग प्रत्या वे त्या ग्रह हो र वे गिहेर्गीयाविनयार्थे। विंग्वइदे वियायर्थे। विंहे श्वे क्या पासे। सुन्तः राइस्रमाग्रीमाग्राम्यद्या स्रमायमाग्रुम्यदे स्मारान् सामग्रीस्या यशःग्रम् वर्ते ते से इस्रशके ते सर्वेग फुर्नेम पर वे नकु वित्रमा

ने सूर्य के प्रेने दे सुव कें नाया बसया उन हो ही प्रया बुव ना हे गा द नदे न शुन्य अन्त्र अन्तर्य स्ट्रिस्ट के निष्ठ नुष्य शुन्त्र स्वी खुव्य र स्वान्त वशुराया वक्के नवे नश्च के नगमा हु से न सर ने साम में न के वे से मान वर्दिनसुर्वेदायर्गवायन्य वास्त्रसुसर् रामसस्य हे स्टिंग व्याप्त वनानउद्देश्वान्यायद्द्वानुष्ठी क्षेत्रास्त्रम् ग्रीसर्वे वहेनाहेत क्रेंब-ब्रॅटशन्य । यावश्रामा श्री मह्वन्याय श्री त्यूम् । ग्री श्री हा ध्री निया वर्रे प्यरा । इत्र प्रस्तु न रहेर् र त्युरा । वर्ते न वर्रे स्र तुर हे वर्षे र प्र या भ्रिं में तहेन्या राय से दाय देश सम्बद्ध विश्व में स्वर्थ में स्वर्थ सम्बद्ध विश्व विश्व कि स्वर्थ में स्वर्थ सम्बद्ध सम्बद्ध स्वर्थ सम्बद्ध समित्र सम्बद्ध सम्बद्य नन्गाकेन ग्रीसानगाम निमासास सेन सम्मन्य कुन्याय निमार्श्वी । सिन्दर म्नाप्तरायके निवेषार्वे प्राचेष्ट्र निवा । अश्च के नामा पुरसे न्या विवा या विह्नेता हेत स र्रेय हमा दर्रे राय में त्री विश्व राष्ट्री विश् यान्यायनम् सेस्रा विसान्ना गुन्ते गारी ह्येन्स पीया यस गुना वके नन्गान हे न से न पर हता । भी साहता निवास न मार्थ न प्राप्त न मार्थ न मः अर्देवः नुः वेदः निवान् । अष्यः मः शुः विवानवाः मेन्द्रः श्रेन्। । नेदेः श्लनः नमयः केत्र नर्वेन् स्त्रेन् न्या । सन्यः त्रे स्थाः नवनः वर्केनः स्त्रेनः स्त्रेन् । ने स्त्रेन् स्त्रेन् । ने स्त्रान् । ने स्त्रेन् । ने स्

व्यादके देश से न्या समानि

ने ने ने न्या स्वतः स नरःश्चीःवनाःनारःत्यःदिरःस्रादेशःस्रश्चाःनेःदेरःत्रुःतुःत्यःवक्वेःसेःवक्वेःनारः न्दरम्याक्षे केन्द्रम् देव ग्यान क्षेत्र प्रके निवे क्षेत्र या बुन क्षाने नेन वक्रे ख्रुसमित्रें नक्केन्द्रनें राहे। ने ने ने दिस्से वक्रे ख्रुसमित्र स्वा केन्से वक्षे सूस्राया र्हे साधी वक्षे निवे सुँग्राया तुरादा के विने मार्थे नामिस <u> चेत् चेत् क्रायहेषा हेत् धे अये म्रायश चेत् पा के वेत् प्रायश चेत् पा चेत्र प्रायश</u> वक्के निर्मा मी अप्त बुर क्षा सु रहा रहा निरम्भ मही वित्र रहा विके रही विश्व स्थि धेरःर्रे । हिः सःरे रे निवेद पके निवेश्य मार्थ ग्रम्भ द दे पहिना हेद सःर्रेयः त्री:र्नेद:अट:र्से:प्रयुव:यथायाःवी:दाःषट:दे:त्रुय:यःयोग्रयःय। वी:द:दे:ह्यट: यमःत्यमःने नर्गे अय्याधीव वे । । नये मःव। ममःवः वार्वे नःयः नवार्थे हो नः मदे न्या के द में विवा न्या पदी दया पदी दे नय स्था के ना के ना व्या वनामार य दिर के भे अ द वना से से द अ से वे के जु न के अ भ न र वर्द्रो ।वगारे रे दशरे रेर पके सूर्य पवर्य मन्तरे रेर पव केर वके

नेशनिकेश्यामेरमेन्त्रशायकेश्रुयामिकेश्चित्रभूत्रम्भीत्रम्भीतासी । विदेश्या गर्यस्ययम् वह्स्यात्रःक्षेट्रायदेश्वेष्यादेश्यायसेट्राययस्य स्ति ह्येट्रास् भ्रे श्रुव रादे के वे रे श हो। जावव क्ष्य र र र र र जी के कर व्युव रादे रे श मासेन्द्रवरायणकेरारेश्वामासराया वह्रसातुःक्षेरामदेकेंदेःविदातुःस देशमधीवाहे। न्यार्थिके के लिन्यमा हु सेन्यवर हुराया न महिनाले नडुः वें त्राया सेरा समय हो दार्गी अप्नेदा दासुः प्यदान्त्र मार्वे ता सम् यारायावक्के सारे सामाञ्चरावदे श्वेमर्भे । ने सूमायारा सर्हेन यस। यहे वः अप्टेशः शः अरुदी । वैरान दुः दर्भा द्रम्याः कुः अद्या । देशः दरा क्रिंसशः यथ। र्यं र्रे. हे. त्रं त्यर अर्हर या हि. हे. वि. हवा अर्हर हे. व्युम् हि. हे. हे. र्ने अर्ध्यम् । विश्वार्ते विश्वेषा अर्वेर से विश्वार । विश्वार क्षेत्र यात्र बेर्'बर'र्से'न्रा । न्र'व्यावन'यवर'वक्षे'वशुरुत्। । ने'व्याबे'वर्ने'वर्षितः वेशक्षा । पार्शेव मदेन में दर्जेन के विवाधिन । प्रार्वे वा सदयान पर्के नर वशुरा । दे विवायकेषा वर्षा यदेश स्तरी । दे विवाय केषा में पा क्या दा

च्नी।

ब्रिन्निवित्तिः हेना प्रस्था कृता वा । व्याया मन्द्रित्य व्याया वित्रा । व्याया प्रस्य कृति । व्याया प्रस्य कृति । व्याया कृति । व्याय कृति । व्य

वक्रे में व भीव हु अदा विदायार्थे व में व खुदा व यय अया य वे। श्रेया पदी या शेस्रशार्धेन् प्रवेषार्वेन् प्रान्त शेस्रशासेन् प्रवेषार्वेन् प्रवेष् सरप्रके निर्मा त्रावर्षे देवा सास्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व सरप्रके निर्मात स्वाप्त अप्पॅर्न्सनेन्त्रामी असे सूर्यके नित्रं ख्यान्ता ने नित्रं वित्रः तुर्यान्त ਫ਼ੑਸ਼ਖ਼੶ੑੑੑੑੑਸ਼੶ਖ਼ੑੑ੶ਫ਼ੑੑਜ਼ਫ਼ਫ਼ੑਫ਼੶ਸ਼੶ਫ਼ੑਸ਼ਖ਼੶ਸ਼ੑੑ੶ਗ਼ੑਫ਼ੑਫ਼ੑ੶ਸ਼੶ਫ਼ਜ਼ਜ਼੶ਖ਼ਫ਼੶ਫ਼ੑੑਜ਼੶ਫ਼ੑਸ਼ਖ਼੶ नर्वोश्वाया ने न्या ग्रम्स्य स्वाय विया व्याय विया यावे न्या हो न्या स्वाय हो न नदे।विस्रशः इस्रशः कः सः र्स्रू स्रशः प्रमः प्रमेषः प्रमेनः तृ मुनः प्रमेनः ने ॱश्रॅमः पर्श्वमः प्रश्रामार्वे नः पर्ने निमानी स्टान्न । श्रुम् स्थाने स्वर् ख्यार्श्वेनात्याधीन्।नह्रवानु स्वेनान्। ।ने स्वराधनात्वन्याः क्रेनायय। वक्री नदेःदर् ने अने श्रेंना दरे ह्ना हु न्या सूर न र्, अअन भ्रें र हे भ्रूर हेना

रे रेरफ्स्स्य प्रस्ति हो । विश्वा ५८। रेव केव शेट च त्यश्रामा वके चर्या केव मी वरणावश्रामा हिंद न्यरविरादर्गायराये पविषा विषान्ता प्रवेश श्वेर्यायया ग्रामा के वे नार्वे न सन्द्वन नी सन्त्र न सन्त्री । कु पी कु तु न न स ग्राम् से मुना न <u> २२, वाषः इतः २२, वाषः २५, वाष्ट्रे ५ : श्रेष्ठः वाषः वाषः । अ५ : विसः वारः </u> यम्बर्भिक्षेत्रे में स्थानिक निष्य मा न नर्यादर्ग्नर्या विद्वाराया वेरान्त्रः हो विद्यायाया इसराया नरे दि बेया । इसम्प्रात्त्र हिन्द से मेनाया से । वियाना सुद्रासी । भ्रीनाया अःष्ट्रःवितः तुः नर्दे निवे नु अःषेत्रः प्रशः के न्देरः नु नित्र अः पवे व्यवः निवरः स्वः । अःष्ट्रःवितः तुः नर्दे निवे नु अःषेत्रः प्रशः के न्देरः नु निव्यान्य । समुः केत्र न समासः मः के सः भितः हुः हुः न न न । व । व सः सः सं मासः मितः सूतः म्ययाग्राम्यम् कुरावयात्रम् ययाये सूर्वयाकुरावेटा। येर्यासूर् राक्षशःग्रहः नदे नदः (बु.वुशःशुश्रःग्रीः व्युहः नः क्रेवः सें क्षशः क्रुशः धरः वशुर्विस्त्रव्यः सञ्च निर्मायने निर्मायन् । निर्मायन् विराविष्यः । निर्मायन् । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विष्य मःकुरःनःन्रा क्रिनाशःग्रीःनश्रनाशःग्रुनःकुरःविरःहेशःश्रुनःवितःपुःकेःनशः नक्ष्यानहें न त्यार्थे वाया प्याप्य स्यु कुर न स्र र त्या के न स्र र त स्य या या नेवरहर्गोर्वे । पार्वेवरक्रेवरक्षश्राम्यके क्रेवर्र्याम्यम्योर्वे शेर वक्रे नदे भ्रेर्, दे नवदन हुर दर ग्वर अपिर दर में ग्राय से ग्राय प इस्रश्रादर्केषाया देप्पाग्रम्भवत्त्र मुम्मुम्भवत्त्र स्थापान्य स्यापान्य स्थापान्य स्य क्षित्रायान्द्रात्री वर्षेद्राया वेद्र्या श्रुद्राया स्वाया व्यवस्था विद्राया

त्रः सहंदः र्वे सः नक्षुसः चः संवाधान्य विश्वः विश्वः त्रिः क्रेवः त्रिः क्रेवः विश्वः त्रः क्रेवः विश्वः त्रः क्रेवः विश्वः वि

व्यायके देश से दान्य समानि

त्युमः स्वीत् न्तुः न्तुः स्वात् स्व

त्यर्भरायक्षे हिश्यस्य । विश्वस्य । विश्वस्

वक्रे नवे कें कें राम निष्या मान्या विष्या मान में भारा माने भारा माने भारा माने भारा माने भारा माने भारा माने

ग्रीश ग्राम्य वर्षे माल्या वर्षा विश्वासी श ग्राम्य वर्षे प्राप्त विश्वासी वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर् माल्य र् पर्मे न लेगारे अयम रेटिया रे प्यर रे मेर रेट रेट सूसर् र न ससस या नेते.र्भाशुः वे कें भारवयः विषाः भुवशः न्राः अर्गे व र्राः न्युरः षाहे व र् वर्गुर्स् खान्यस्य स्राप्त्र हो। गृष्ते गिष्टे होर्स धेना स्राप्त्रे ह्या होता विकास रार्श्रेव यथ ग्रेया विंद वे पेंद्य सु नहर शुराय । ग्रयर परे यथ दर हेरायत्रेयावेटा । पळी प्रमामी राजे प्रमास । प्रमोप्तर हेमा सास गर्नेगर्यायम् । वर्जे नावस्य उत् द्वीर वे गावस्य । विवाद पर हिंद हे रा श्रीतियर्ग्यम् । अद्येष्ठित्रम्यस्थित्रियः स्थित् । स्थित्रम्यम् । स्थित् । इ.च.२.ध्र.च्याच्या क्रंचड्याइ.क्षेत्राध्र्याच्याच्याच्याच्या वहिना हेत नावत नव्द रहें। । ह्या रहा या रहा राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र । । या हेना र् अर्था अर् न्य द्वार्थ के विष्य विष्य विष्य स्वयं विष्य स्वर्ध विष्य श्रेन्या अक्षेत्रा विन्या अक्षेत्रा विन्या अन्य श्रुन्य श्रुन्य स्वायाया ग्रम्। ग्रेनियर्स्स्य अक्षेर्याय्य स्थायक्ष्या । ग्रेन्स्स्स्रिम्स्यास्त्रे वयाचीया हिसासु प्रज्ञान प्रवास के सम्दर्भ । सर्हे स के हिन ग्री सक्त के स

नःलूर्यस्य व.र्.र्या तम्मा विया विया स्तर ही रामा विया र्यो मा विया र्वानि देवे विक्षित्ते के नियम् विक्षित्ते विक्षिते विक्षिते विक्षित्ते विक्षिते विक्षित्ते विक्षिते धुग्राशःग्रीशःनश्चनशःववदःशेःन्गेवःधवे। । अर्वेगःकुदःग्रादःधेवःनेःनेवः र्। । नियायर्ट्सिर्स्य स्ट्रिया स्ट्रिन्याय प्रदी । यस ग्रीस सम्स्य स्ट्रिस ग्रे'नर्डेम। विमागस्यमायदे स्ट्रेम्में । देमदः क्रेम्नायमे ग्रुम्पर यसमी मिले धेर मरायन दर्गे राहे। रे हे निय लय रहा देर मे सूर र्भेयाभ्रीम्नामानर्भेसामायदीस्टाधेन्ते हे विज्ञेयाद्राधे जुदायार्भेग्रास राळें विदेवे सूरावागुवावसवावसार्या केवा सुविसासु से से दारा के सा र्रेषा पृष्टुन ग्रीका वर्त्रो निरम्वेका देवा के का की दार के का ग्रीन हो से निर्म्न का वर्षाकें वर्दे लायाकग्रायां विगामिर्दे रेदिया वर्दे हें लाया हो या सी वियावयाग्रमा वरायार्क्षेत्रायार्येतायान्म्यः द्वीतायार्श्वेमा सुन्मात्वाया गर्सेवःचःवरेनसःविरःरुसःविरःर्रःचडसःदसःददःहदःग्रीसःनसससः वा वें नक्तरणरक्षे भ्रे भ्रवाया विषा ग्रार वर्षा ग्रवाय के विष्य स्था में प्राय *डे* 'बेग'क्ष्रर'य'क्र्रे;च'धेद'म्ब्युट'र्हे। ।ग'स'च'य'द्रसेग्रथ'संक्रें'चर'ब्र्थ' र'त'र्थ्याञ्जॅर'भूत्। दर्वे'त्रय'त्यार्थ'र्द्र'त्ये'ये'यार्थेत्'यार्थेत्'या ने भूरत् र्हे अ भूँ ग्राया स्राया अ पूर्व राज्य वित्र प्रह्में या वित्र । या भूँ ग्राया स इन्नाम्बुयायाकुं अळवन्त्राहे क्षूर्वळयायारे न बुद्या मर्थे न स्र विद्वित्रायाः मुत्राविष्याः स्ट्रित्रः स्टे विद्वात्वात्रः स्ट्रित्रः स्ट्रिते स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रिते स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रिते स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रिते स्ट्रिते स्ट्रिते स्ट्रित्रः स्ट्रिते स्ट्रित भ्राचरात्राव्यत्त्रात्रात्रात्र्यं स्वाध्यात्रात्त्र्यः । विष्याविष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः व

वहिना हेत्र ही सरहे सूर वशुर न वर्शे न निष्ठे राशि न ने सूना न रासा निष्

ने कु क्षेत्र वित्तान्त्र वित्त के त्या स्था के त्ये स्था वित्र के त्ये स्था के त्य

श्रॅट:क्क्या । रन: हु:नश्चेस्रशः हे:पाउट्र:पर:ग्रा । विश्वापाश्चरशः प्रदे: ध्रेरः र्रा । ने यः वर्षे र नः श्चिन् यर नु र वर्षे वे सूना न सूयः न श्चिमः य वे भीव ह नावद के है। वर्ष हम्म मार् है द सूना नस्य ही सर्के मासून निर् कुषान्यस्यस्य ते भेराद्युरानसार कुषान्र देवासार नर्हेवारान्र श्रुवा नश्रुवा ने से नवी नवे वह सहस्य स्वार्थन स्वार्य स्वार्थन स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्य हुंपहें अप्याप्ता सूगापस्या सेपर्दे प्रस्य के प्रदेश पर्दे प्रायोग्य न्नो नदे दर्भात्र सर्वे दर्भान्नो न नसून पाय न्नादन न महानी कुस्रकात्यान्यम् अत्मात्ववात्यात्यम् स्ट्रीतः हे स्ट्री नित्राचात्रयः ल्येट्र विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्य विद्यात् वर्षाञ्चनरायमें भुगराइगारासेंग्रासाहस्रायो वर्षे मीत्र नुः साविगा धरमेशवर्ष्वात्रेत्। ।देवस्थेस्रश्चित्वह्रम्भरस्रेस्। ।वेशन्ता माल्य प्यतः सूमा नस्य प्रेंब प्रवादी । श्रु निया है माया से या नर होता । नन्गाने वहेग्रास्य इस भूगान्या । गुन हु न बर ल नन्गाने न वर्षा वेशमाशुरश्रासाक्ष्रार्से । सूगानस्याग्री र्षेत्र न्त्राने स्ययाश्ची रायह्या हु र्रानी कुर्य वुरावि सूर्वा वस्य की र्वरात् वुरावशाम्य राजी देव्याप्तर्भ्यायभ्याश्चित्यम् वश्चिम्यायायायायम् वर्षे

ने भूर तर्त वर्षे देश्या नर्य या नर्य प्राचा न्य या न्य

र्द्रायम् र्या थे र्वाया भी स्वारम्य प्रस्य प्रस्य । प्रस्य

न्युयानदे सूना नस्यानस्याम्यानि

श्रेश्रश्राप्तवात्रीयात्राक्षेत्राचीत्रा हेर्पित्राचित्राचीत्राचात्रा ग्राम नदे-न्रुयःन-न्ना है के नदे-न्रुयःनदी । न्न-से ही यने न्यान्यमा कनः शुस्राह्मिक्षिराभूरामी दिवा वापराभेषा थेराया हे वसार्मवा स्वरानि केरा नविः द्वेर नी शः कें र पाय पाय पाय पर्व प्येर में । दे प्रस्ति मही प्रस्ति प्रस् र्रे प्यट र्शेश्व देश शेश्वर उत्ते न्या स्व र्ष्ट्व यन् शत्र राय्य स्थित्त ঀৗয়৻য়ৢঢ়৻য়৾৾য়য়য়ৢয়৻য়ৠয়য়৸ৼয়৸য়ৣয়৻য়য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢয়৻য় या विवा श्रुव सम् हो नि विश्व सम् कुषा है । सामा विवा सम् विवा सम् यविदाययाष्ट्रित्स्ययापटार्थयायम् शुरुष्ठेवा हेयायदे सुद्धूटार्टी । दे वर्षाः त्यात्राः हे स्ट्राः स्ट्राः स्ट्राः स्ट्राः निष्णः निष्णः हः सेटः यक्ष्यराशुर्धिदानराद्युरार्दे । विवादवादादी वेश्यराउदादेराश्चेराया इससान्ध्रायाश्वराहस्यसाग्रीसान्तरावित्सानुरानकुरान्साकराग्रीपा इयायाञ्चाळेषायात् याराचेषाच्या स्थान्य व्याच्या व्याचिषा है सूर नहनाया ने भूर अर्कें व ग्री अ ग ने वा केंद्र वहें वा यर ग्री न पदे स्वा न स्वा क्रस्य क्ष श्रींट्राचर्रात्यार्ट्स । वर्ष्य्यायह्र्ययाय्त्री येययाव्यारे स्ययापियाः ए.पर्यान्त्रान्त्रेयायाम्युः के.रशितासीराम्ययाग्रीयासीयाम्यः गर्नेट्रप्राक्षुत्रामिक्ष्राण्या वर्षे वर्षाण्या प्रत्या वर्षाण्या वर्षे वर्षाण्या वरा रे.टे.चाहेशःग्रीशःपक्षेत्रःपा टेप्ट.कु.सू.वश्वशःवट.प्रशावियाःग्रीःश्चरःत्रयः हुःवननःन्। ।नेःनिवन्,नुःख्यान्दःहन्दःक्ष्रमःनेःकेन्नोन्दःस्याः वी वर्षेट्र साक्षुत्र या ग्राटा वर्षेट्र स्वर हो द्रार्थ । यह त्र साद क्षुवा या ही । विष्याविष्रः के वार्षि विष्ठ । प्राचिष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ । प्राचिष्ठ । प्राच वक्षेर्रो । देवरायरवर्षायत् स्रेरवराष्ट्रवाराशीः यर्वेरकेत्रें सुर दशःभ्रुग्राशः ग्रीःशःग्रिः यः ग्रिंदः यः द्रादः य ग्रीदः यः द्रादः य ग्रीदः यः द्रादः य ग्रीदः यः व नर हो ५ दे। १ देग ने के प्यर विया ने सूर रन ह वनन में। १५ वर्ने ५ त वै। शेस्रश्रास्त्राने प्रवाणात्रश्राप्तर्से या विदास्याश्राप्तरा स्वीपित्र प्रवेष्त्र प्रवाण यर हो ८ दें। विवास य ५८ से गाँव है प्यवस वस सेवा यर हो ८ दें। ५:वेंदर्भे।

विरान्ध्यानराग्चेनार्ने । सनामुः कं नामानी भूगमाग्री गमया विराहेः गशुस्रायायम् रसास्याच्या तसा है से गायस गार्धे त गहिसा स्वाप्या गहिसा ८८.८थ.भ.भें. मू. १८.४.५८ वर्षे १८.४.५५४ वर्षायात्रास्त्रास्त्रा इस्रश्रासे से त्राप्त स्वाप्त विद्याय से निर्माय से निरम्प है। নমান্ত্রমার্ডিনমান্ত্র্যানান্দান্ত্রনামান্তর্মান্তর্ভুমান্ত্রীদানর্জ্রীয়া नशःगरःविरःग्रादःहःवनरःनदेःवरःर् श्चे दुःद्धंगशःशुःनद्धगःवशःनर्श्नेवः नन्भेरत्वान्दर्भराम्बर्गाम्बर्गास्यम्भुत्वेदि । देवे के स्वायास्य द्वा <u> इस्र अविवाद्य गोर रुष प्रवाद विवा सुर्य प्रवे के प्यर मुरासूर द्या</u> ख्यायाण्ची:यावि:याद<u>मेयार्ये । नि:ययायायायायान</u>्यान्याः श्रेयायान्यान्याः यरवरत्रवर्षा विष्याः याववरवे कं यादरावर्षे । अवराभेरावर्षे। न्तरः र्धिनारु तरु रुष्या नित्रमा स्वतः निक्का स्वतः त्रार्थे दः सः ग्रादः हः स्वतः विरासकेन्यायम् सेयनम्यिः भूग्रास्टिसिनेस्सेसस्य स्वर्ते <u> २वाःवीःसवाश्वःसः २८:श्वः २८:कुश्वःसः २८:३श्वःसः इस्रशः रीक्षः क्रीशः वश्वेवाः</u> वयाम्यायात्र्याप्यम् होत्ते। वयम् अवि श्वेदार्या विवाद्यायायाया बे खे त्वर नग हिन पर तर्गार्मे । द्विम्य मान्य मार्थ या पर हे दर वर् के स्वित्र राजवे क्रा के विषय स्वाप्त के स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्व नरःसःकर्भशाद्याःमितः भ्रूर्यः हीत्रःसशासेस्रशाद्यः र्नेशःसः उसः र्वे । प्यरः भ्रुवाशः ग्रीः विनः स्रदे स्दरः तुः भ्रुवाशः ग्रीः स्रद्याः सः स्वः तुः स्वरः नः न्वायव्यापुरम्बार्ये विष्यायायीः याविराध्यायायीः रेकेत्रार्या स्ययः

क्षेर्राचेश्वाचित्र, देव्याचात्र, विष्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र क्षेर्याच्याचित्र काली क्षेर्याच्याचित्र क्षेत्र क्षेत्र

ळें ळं ५ 'दें। । दे 'न वेद 'द् 'शे 'शें 'न कु 'द्र 'हेश 'न कु 'द्र 'न वे 'न कु 'द्र 'न कु द नकु:८८:ब्रेंट:रुवा:नकु:वे:ख्रुअ:इ:नाशुअ:स:वश:वावव:पशुव:८नट: होट्रप्रदेश्वरः इस्रम् ग्रीः देस्रायः विवर्, विवायिषेवा प्रेवः त्या हेत्रः स्ट्र ते^ॱख़ॖढ़॓ॱख़ॕॱॾॢॕॸॱॸॸॱढ़ॆ॓॑॑ॺॱॾॢॕॸॱॸॸॱॿऻ॓ॱॾॢॕॸॱॸॸॱॿॖ॓ॱड़ॗज़ॱॾॗॕॸॱ व्ययःवि । ने न्याके ने सामा स्थान विया वया वया वया करा की वया के ने स <u> चुर्रासदे स्टर्से क्रेंट द्रश्वी दुर्गा क्रेंट गी नस्त्र चुरा क्रे। सर्हेट एय । से ।</u> इस्रश्रा के त्या विदेत्य न विदेत्य विष्य के सम्भावित के समित के सम ग्रे हेर विया यहिया वित्य यहिया या हेरा प्रमुस्से विया प्राप्त था यःश्रेवाशः ज्ञवाः रेशः विवा विर्देतः खेते के प्रतः हेवः ववाः सहसा विश्वानः रे न्याः इस्रश्राग्रीः के । पर्देनः पदिः भ्रान्यः पद्यः नः प्रेता । मनः पुः कः भ्रेनः स्रवसः येन्दी। नर्भी नभूय मर्दे। वियाग्य रुष्ट्रा में यदे नर्दे या विराधार है। ८८:वर्द्धी

कें सम्बन्धान निमाना मुनाविष्य निमानि निमानि कें ने निमान्न स्त्री निमान वर्गुरःर्रे । पिर्वेशःभवी देः ८८ वर्षायः कषायः भवः श्वीः यदे यद्यः र्रे ः स्ट्रेरः सर्यानार्षेत्राचा श्रेस्याउदान्त्रम्यक्षियानात्त्रानीयानम्यानात्तः नेरावरीयावशासर्वी सवाळनारीटा है। वर्षा वे विद्याने वावर्षा सक्ष हैं व वेशन्तुःनः वेद्रान्यश्रदे द्वानीश्रान्यवाश्रान्दरः भाद्दरः कुश्रान्दरः दुशः राक्रयश्वित्रविदाम्हायात्व्यश्वराद्यायात्व्यश्वराद्यायः वै। यन्याने न्दरायन्वयाळग्यायान श्रुचीये से ग्वन्ययायये त्ययाणेन ने। शेस्रश्रास्त्राम्बर्शावर्केषानान्यानेस्स्रितान्द्राम्द्राम्यानव्यान्ते। यवाश्वास्तर्दरः १८८८ विवा ग्रां व वार्षे दाया यहेवा व रहे द्वा श्वर श्रे हैं। । दे <u> ५८.५८चश.क्योश.स.स.स्योश.क्त.स्य.ची.क्त.स.स्य.ती श्रीशश</u> ठव नावरा पर्वेद या ना ने प्रवापित से प्रवेद से प्रवेद से ने विषय सामा निवास कर के प्रविद् रात्रःविरायश्चर्यात्राध्याशाते। देर्पायीशायतायार्पाद्राहिरायमा वरीमाश्रानित्र इसामरामानेमार्गे । ने निमाने रावसीयान वर्षी श्रे में निमा द्रिम्यावयाः क्रियाय्याय्येषाः विद्याय्येषाः विद्याय्यायाः वि ख़ॖॻऻॴॻॖऀॱऄऀॸॱॶॺॱॴऄऀढ़ॱॡ॔ॻॱऄॕॸॖऻ<u>ऄॴॴढ़ढ़ॣ</u>ज़ॱॻॱॸॖ॓ॱ <u> न्यानेर श्रॅम्य न्यान्य वे व्याप्त व्याप्त व्याप्त विष्टे वे विष्ट्र व्याप्त विष्टे वे विष्ट्र व्याप्त</u> ড়ৢঀ৵য়ৣ৽য়ড়ৢ৽ঽ৾য়৽য়৽ড়৾৾ঀ৽য়য়৽ঀ৾য়৽য়ঀ৾৽য়৽য়য়৾ঢ়৾য়৽য়৽য়ৼৄঀ৽য়য়৽

भेगायन्थायम् वर्षे । दे प्रवादि । अर्के द सके वर्षे प्रविद्याप्य । स्वर्य । नशःगडेगाः हुः हुर्दे। । नलेः यं दे। निवाः सः वेः न्दः व्दन्नशः कग्रशः यः दः कुः ग्लूट र्म्म अंत्र के श्रामु न त्युम में तुर के कि लाम स्वाप का स्वाप के स्वाप के स्वाप के स्वाप के स्वाप के स शेशशास्त्र गात्रशादर्के या ना ने निया शुरात्रशास्त्री में निया के ना मदी रमेरता बरशाळुशानगराना से के तर्भे सूरानमे तरा दुराया यःश्रेवाश्वाराम्युवाश्वाराम्वेदार्दे । कुःग्लुदानेवेव्यवाश्वादेश्वार्यात्रेश्वाराम्वेश्वाराम्बेश्वाराम्बेश्वारा यगात्र न् त्रुगा स न्दर अक्षेत्र स न्दर कु न बुद न न न न स्दर्भ से र त्रुद र र्ण्या से से राया सकेया प्रत्या कुरा ही राष्ट्रात्या राष्ट्री ते के तार्या प्रत्या नःयःग्रान् मुत्यः न् : नव्याः क्षेः के त्ये निः के अः त्ये वे । निः न्याः मी अः नन्याः क्याः गैरारुटायटा से भेराभेटा से सर्वेटा से वित्र ग्राटा न ग्रेरा से सिंहा से सिंहा ন'র'ৠৢয়ৢয়'য়ৢ৾৾৾'য়ৢয়য়৾৸য়৸ঢ়ৢঢ়য়য়য়য়৸ঢ়য়ৢয়৸য় प्रमाश्राक्षा । ने न्या ग्रम्थि रहें का यावि स्माय में निर्मा है। हे प्रिम्प <u> ५८% के नगिष्ठेश या के किंदा देश या से ५ यस ने यस मित्री वित्र ग्रह</u>ा है श्रेन्द्रभूगानस्याने नगार्श्वेन्द्रविष्यमार्शे तुमामामा अन्याने श्रेन्द्र मिले ने निम्य मा प्रवासिक से मार्थिय निष्य में मार्थ में मार्थिय निष्य में मार्थिय निष्य में मार्थिय निष्य में मार्थ में मार्थिय निष्य में मार्थिय निष्य में मार्थिय निष्य में मार्थ में मार ग्री वर् के र्राप्त कर् वि वर्ष प्रमाने दे स्थाने के स्थान कर्ष प्रमान कर्त क्राप्त प्रमान

क्ष्याक्षिक्षेत्राक्षेत्राची देवाच कुत्र राज्य विषय ने विकार सवा क्ष्य है अः क्षेट्र है अः क्षेट्र मी अरकेंद्र मादा मावदा मत्त्र प्पेट्र में। । दे प्या कुः मुक्त ख

वै। भ्रूम्यार्था स्टेर्स्य या प्रतास्य स्थ्या म्यूया स्थ्या स्या स्थ्या स्या स्थ्या स् नुःविष्यमान्त्री । कुःनुमः मेलानवे । हुन्यमः ने। कुःनुमः मेलानानिनःनुः वित्रम्थान्त्री । भ्राम्याम्यान्त्रा क्रीन्त्रन्ते मान्त्रा व्यक्तिमान्त्री क्रियायर्त्रेन् स्यायाययाय विषय्य । स्थित्र व्यायायाय । स्थायाय राक्रेत्रःस्थानहनास्थापादेवाः र्वे विदावाध्यसः तुवाः तुवाशासदे । । सङ्कः क्ष्र-वार्यासंदे विदासम्त्री क्रिंत्रमें व्ययायन्यान्य स्वराप्तम् व्याप्त नदुत्राने प्रशासन् नर्गायापति । प्रज्ञाक्षरान्याया केत्र रेवि विन्यर वै। यग्रायाः भेतः हुन्यरः नरः शुरः द्यापः नकुत्यः ने व्ययः यरः नरः परः याश्रास्त्री । दे द्या यो यो दे देश द्रा यावश्रा यो कंद द्रा स्या वश्रा व स्था व र्यदे न्द्रियावि है नविव हैं। भ्रिया स्वयायया सेन्यर भ्राव कें स्वया द्ये साया । गावसामाने व खवावगा ह्या ग्रामाना । नेसाने दुसामाना वहिमामविष्ठ-त्राक्षित्वा । नन्मात्यास्य वर्षेत्र-सुग्विमाने सुग्व । हेसा शुव राम गावश राम गाशुम्र से भी।

स्वार्ध्वर्थात्र्यात्र्यात्र्यात्र्वात्त्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य विष्ठाः श्रीत्रात्र्यात्र्याः श्रीत्राक्ष्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः विष्ठाः विष्ठाः श्रीत्रः स्वार्थात्र्याः स्वेष्ठाः स्वार्थाः स्वार्थाः त्रिष्ठाः स्वार्थाः स्वार्यः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्य ग्रवसःविदःविदःहःदें दें दें दें दें । वेसःग्रस्यःस्।

धुन्दे रुं अ नु सूना नस्य ने नना ही नि से नि से न स्यान साने न्यास्य बन् ग्री न्य न्य ने प्यम् स्रोते न्य स्यापित स्थापित स नम्भुेश्यानिःश्रेश्रश्राह्म इत्राह्म अर्थाः क्रिके कितः क्षेत्र क्षेत्र अर्थाः इतः नुश्चायः न क्षेत्रः रॅंर-क्रुेश-पदे-शेसरा-उदाह्मसरापरा द्वी-साद्वी-साद्वी-रिवृण्याना-रेगायर हुर्दे। विश्वाय दरा सहैंदाय होया द्रासें इरश्याय स्था द्यो हुँदा न्य । न्येर्यं वर्ते वर्षायायाया इते हिया श्री श्रूराविया वर्श्वन हुन दुः या विया हैलर्गामीशः हुरः तुरः नगरः क्षेत्र देन स्थायः विषा मीशः विकान हुः नहुः वन्यःविरःहेवारे रे में राज्ञा नवो र्ह्वेरःनव । रेसाय ने या वाध्याया महिता ৾ঀ৽য়ৣ৽য়ৣ৴৽ঢ়৽৽য়_{য়ৣ}ৢ৴৻ড়ৢ৽য়৽৾৾ঀ৾৽য়৽৻ঀৢয়৽য়ৼ৽ড়ৢ৾৾ৼয়৽৻ वे के शसूराम्। कुन्तराउव न् भ्रेशायदे से समाउव क्सा मी के पेरिया श्रामात्मश्रासम्भे मासी क्षुम् । नमे क्षेम् नमा । कुन्तमा उत्तरिः भुनि स्रामाने । निवर्त्रःकुःतुरःहेषःनःमिष्ठेगाधिवर्ते। विश्वःग्रःनवश् मुश्यःसरःवेष्यरः न्नोः श्रॅम्प्न । मङ्गाक्ष्मान्यायाः हेः भुः हे । स्रान्याने । मह्याः स्रम्यायाः य केव में महिमाधेव के । विश्वास्य स्था स्था के ने उस मी नम् न् हीं में ही।

हैं कें नित्रम्ब्यानि कं मुख्याम्य म्यून्य कें ति । व्याम्य विश्वेष्य कें ति । व्याम्य कें ति विश्वेष्य कें ति विष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विश्वेष्य कें ति विष्य कें ति विष्य कें ति विष्य कें ति विष्येष्य कें ति विष्येष्य कें ति विष्येष्य क

वर्त्रोयायमाग्रम्। सेसमाउदान्स्यानान् दुन्त्वार्दे निप्तादे सेसमाउदा वस्रश्रास्त्राची । विष्टि स्वर्त्ते । विष्टि । विष्टि । विष्टि । विष्टि । नवे नुशुखान क्रम्य असे अस से विया गिर्देश समामित्र विया गीर्स से विया सामित्र वि मैश्रासर्दिन परम्युन पाधिन है। दे प्रमामी इसापि हो ज्ञानी इसापार् सा व्यूरेत्री विषय भ्राप्त भ्राप्त भ्राप्त भ्राप्त के स्त्री कि स्त्री विषय स्वाप्त के स्त्री विषय स्वाप्त के स् <u> ५८.५ूचा.वयर.लूर.सदु.झुर.ऱू</u>। विश्वाबश्चरश्चा ।५.५४.व.५.२वा.ध. भ्रे नित्र कु ने देवान्य पळन्य प्रम्भिन्नि नुप्र कुन हे नय है या ने ने निवर षरः सरः से विश्वात्वा स्राच्यवायायायायाः प्राच्याः प्रसे दार्येतः यथा धेन्यने नर्स्नेन्य के सेवाय प्रथने न्वा नयस्य स्था प्रेन्य धर ग्रुः क्षेत्रे दे द्वाद्य द्वार वर्षे द्वाया अग्रुः शुः दशुः वरळद्या उद्याया अ बेर्पिते हीर हैं। देप्ट्रियण होंद्रिया प्रशाद्या वर्षिया वर्षे है यथ हा स वया वि.म्री.प्रमायने.यम.यावया वियानमा यक्षाः भ्रीम्यायया ग्रम्। भ्रेगा उद्गन्त्रग्रायाया प्रस्था विवासी । त्रामी अपन्म प्रमा क्रिन्द्रम्म भारत् स्वाप्त विष्या प्रमानम् विषय प्रमानम् भारत्य विषय प्रमानम् विषय प्य श्रे प्रदेशका यादायाका हैं हे वे प्रदान विवादी । प्रश्रुवा न श्रेका या अर्थे द र्टार्झेश्रासार्ट्या । इत्रार्ट्यायायार्यार्यात्राय्यायायाः विवायाः स्थायायाः ।। वहिनायायायक्रीन्यायक्रम्य से नवन्य देन । इस क्रीवाद्यया सुर् इस्रशः क्रेंशः हे प्रकृषा विश्वः वाशुर्शः श्री वर्षिरः नवे सूना नस्य भी तर दर दर वर्षे वे सूना नस्य नहें र र गाव

या नेते वर वर्ष ग्राम न्या निवास के वर्ष निवास के निवास क गठिगायासर्टाईवाशुसानमुसानर्सास्तर्रात्रात्रात्रात्र्या ग्रीमा न्युयानवे सूनानस्य कुट र ययद क र स र यद से न से न मदे भ्री । न्ह्या नदे नद्या ग्रम्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वय स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं क्षेष्ठ प्रभेषाञ्चीरमायम्। यदे या गुरु श्री व्यवस्य क्षेत्र वर्षा । यदे यदे यद्या बेन्न्सुयानस्यान्यः स्वानस्यान्यः स्वान्यः । विन्तः देवः देवः विवासन् । स्व शुअन्तकुःधेश । रनः हु: इया निनः सूया नस्यायार यया । निर्भावेः न्द्ययानवे सूना नस्या कुरा दुः त्यवरा वितायर से निक्र करायर से सिन र्दें। इवेश मुंब्रम्थ श्री १ ने सु नु दे सूमा नस्य न से नु र र र में। क्रें गशुरा ही हे श क्रें द विंद पीद पर देश पर है श हों द छूट 5्रअॱग्रद्र'या में अ'सर्-तुःन'वा क्षेत्रेअ'तुदे स्वाउं व्येद् ग्रीअ'दनद्र'सर्-तुः ह्रे। ने हेन प्रमा भे नगे दे प्रमाय के सम्माय के मार्थ के निष्ठ के प्रमाय के न ॻऀॱढ़॓॓ॺॱॾॖॕऻॖ॔॔॔ॸॱॻॖऀ॔॔॔ॸॱवी । ठेॱढ़ॺॱॸ॓ॱह्यॱठ॔॔॔॔॔ॺॱਘॸॱॺॱॺक़ॆ॔॔ॺॱय़। ।ॸ॓ॱढ़ॗॸॱ हेर्'ग्रे'इय'ग्रेशपनर्'यर'यहूरी विशस्त्री

5्रायमेंदिःसूगानस्यानस्यानादी

र्ट्रात्म्, स्थमासर्थिक, यमाक्ट्राया सम्मायां मूर्ट्रा केंट्र

भेदेः थें नुन्न् नुम्ने प्रमाया प्रमाया विवासी निवासी स्थाप मश्रामार्शेन्यान्यान्यान्यान्याम् न्यानेन्या भ्रान्याक्षेत्राचेन्या कुःतर्भःगवस्यावदःसेन्द्रस्यतेःन्द्रभःगविःस्रभःन्न्द्री ।सर्द्रनः वर्षेयायश्रादी र्नायर्थे देशमान्य क्षान्य स्थानिय क्षेत्र प्राप्त स्थानिय स्था धेवर्दे । १२ द्रामी मवस्य के इन् वे कु अर्के केवर्य धेवरे माववर्वरे १ यशर्व्ह्रेशप्रप्तप्ताधित्रहीं विश्वास्त्रम्श्रेष्ट्री विश्वास्त्रम्था 5्रावर्विवः भ्रेष्वावयात्रायार्थितः यात्राविक । विकेटान्या विकार्यवा नर्याश्वर्सेन्याया वित्वसूर्रात्वो नार्वेनाया याडेया:ब:भेद:हु:ब्रे:चबद:घा । वि:डेया:ब्रु:हेया:चव्य:दट:रु:ब्रा:यदटा । भि: यमासन्दर्भ विमान्दरविषया युःमद्रम्भः यह्न में समेनिया विभार्शि । ने त्यः क्षेत्राया यहन प्रत्येया श्री प्रत्या विष्या यह या विष्या यह या विष्या यह या विष्या यह या विष्या यह य नसूत्रिं । निहेनाः सैनासः वेसः सदैः सैनासः ग्रेः सुसः देः नर्गेषः नः न्दः सुः न्त्रमारार्श्रम्थान्यस्थान्। ने ने से से प्राप्त संभित्र संस्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य यःश्रेषाश्चात्रेन्। प्राचेषात्राच्यात्रेषाः अविश्वात्यः विश्वात्यः विश्वात्यः विश्वात्यः विश्वात्यः विश्वात्यः वर्त्ते देवारा समुद्रा की वार्ते द्रायदे द्रवर द्रायदे द्राय हो। वि वर वर्त्तु र विदे न्नो'न'ने'सुर'यन्य'यर्केन'यये'न्नो'नर्ये ।ने'सूर्य'यय'ने'नेन'तृत्तुन् बिटायसाम्चीः श्रेन्द्राचे स्वरायस्य स्वराते । भेर्ने वास्य यहारा श्रेष्ट्राय स्वराय त्रअःगन्नःस्रअः यहनः क्षेः यर्गेषः यः यः वे देशः यः यवितः तः कुः न्नः सः के न्नः

ली.रेवाश्राजी.कैवा.यक्षात्रायश्रातात्री

मे निर्माण्याः स्वर्णकार्यम् स्वर्णकार्यः स्वर्णकारः स्वर्यः स्वर्णकारः स्वर्णकारः स्वर्णकारः स्

धेरवर्गेनायरहेर्याप्रा कुष्परइनाहिनातृस्य दिन्त्र वर्देन् पर्वे । वर्षः भ्रें अप्यव्यन् वी श्वेन या विन्य के वा क्वा के वा विन्य के वा क्वा विन्य के वा विन्य के रात्यापात्रवरानान्द्रात्राच्यक्षात्राच्यात्र्यस्यात्र्यस्यात्रे अः ग्रुअः धरः रूटः वी अः त्रअः क्र्रीं अः क्रेट्रः ते वि ग्युटः पत्रवः पतृरः से ' त्रु अः धर्वे। बराङ्ग्रीयायाङ्ग्रीनापार्धेनापादी। ये खेरीयोदानाउदादीयानुनयादी वियापा ८८.५८४८४.स.४४४४.२८८४५८४४.५६५५.स४.५५०५५५५ विष्टेष बन्तः वेशः ग्रुप्तरुष्ते। निम्द्राचा वेश्वा वेदः वेदः यह साम्यः द्रै'८'न'५८'मोर्<u>क</u>ेर्'स'५८'श्चर'म्'म्'म्'स्याय'नबय'नहुट'ग्चु'नर'त्र्य' र्शे । विक्रियां है र्रायो भाषा राज्य विद्याया विद्याया विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या नवदनहरायार्श्वेरिक्षात्राची । देरिन्यायी यात्रकाती अर्देरिक्योयायका धे'द्वारु'इसरु'ग्रे'कुय'र्ये'दे'वानेद'हे'वेरु'ग्रु'न'धेद'र्दे । दे'द्वायी' ग्रम्भागीः स्वाम्यार्थिः विवास्य विष्या वह्या तुरि ह्योटा विदेशे विग्रम्या स्व <u> भृ नक्क अ नडद पाद प्पेंद दें। जावद दे दे प्य अ पर्देश पाद वा प्येंद दें। ।</u> वेशमञ्जूदशसः सुरः र्री।

यायायार्थ्य । वि.क्रुचा.राचायार्थ्य यायायात्रेयाः विट.चाक्रेट्राचीः हो । वि.का.ला.च्रुचाः नभ्रमभग्नामुः तुःयग्रम्। । विः ठेगाः सळ्दः विदः विः स्थः वनः स्थे। । वशः शुःदनरःनदेः।परःननशः हो दःधःदळवा । द्यारशः रेगाशःदगशः हे स्वाः <u> ५८: श्रे.अ.२८। वियाःश्यांश्वांश्वांश्वाद्यः याद्यः श्रे १३ १ विष्यं क्षेत्रः याद्यः । वियाःश्वांश्वाद्यः याद्यः । वियाःश्वांश्वाद्यः याद्यः । वियाःश्वांश्वाद्यः । वियाःश्वाद्यः । वियाःश्वादः । वियाःश्वाद</u> र् पर्केषा हिरासम्बर्गा अप । श्वाना मुस्ता श्वीत परि स्वापाय पर्काण । थि न्नार्थान्त्रस्थरात्यार्थेर्थायादेःन्सार्थान्त्री । त्रिःनव्दाःकंव्यान्त्रीत्रादेःहेःसव्दाः यर। व्हिंदःविरःवज्ञयातुःसेरःवज्ञूरःवदेःद्याःवीय। विश्वयःयःउसःग्रीयः मुर्णर भ्रेम्यर पर प्रमुर्ग वियार्थे । दि पर केंग्यर पर पर दि र से र <u>ब्र</u>ी:८८:ब्रेचा:अ:इअअ:ग्रीअ:विट्:यर:ग्री:ब्र्चा:नब्य:नब्रुव:हें। ¡८य:नवे: बर्था ग्री श्री मा सुवा परिवाय परिवाय स्त्री स्त्री स्वा मी प्रमाण स्वा प्रमाण स्व प्रमाण विरायार्थित्रायाः इस्रयास्त्रित्यायदि । श्रीविर्देश्यात्रे डे निर्म्सिन्द्री । अर्द्धदाविरादे अर्द्धदार्श्वित हे नि दश्यो प्रम्सिन्द्री । वनरःनदेः।वरःननशः हो दःभन्ते । त्रश्चादः।वरःवनरःनरः हो दःभःवळवः। नः क्षेत्रः नर्दे । अवाग्तर्वापदे र्वाची अन्य श्रेवा अप्यत्वे दर् खुः विअः र्रे नर्रेषा नदे मुहाधार क्रेस्य स्टिन्स् । वि देवा वि दे वे देवर नःविवाशःसदेःसन्वाःसशःवानःनमःश्रूनःवा वःहेवाःवःहेः स्वाःवीःसुनः श्रेव्रतुःश्वर्स्वायाग्रीयानाद्यवयायरावम्यायम् वर्षेवा म्। । अर्वेदःत्र अः न तृदः न दर्देदः दे दे दे दे दे दे दे है द ग्यू । । भू भू द १ १ थे न अः

क्रुयोश्नार्थः स्वात्वश्रीरश्नायत्रेश्वात्रार्थः। विर्वश्चात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रा यदुःक्र्रःवशुरःर्रे । रुषःक्ष्यशःक्ष्र्रःषर्षःक्ष्रंवर्ष्ट्ररःरेःक्वेष्वःश्रूरः डिटा । उड्डन धूँ न पार्श्वे पहिरमामायायर स्ट्रिटा । ने प्यट परी प्यानगमा नश्चेन्रअसे से के स्वाचिन्रअसे । । अन्याय नुस्र स्त्रीय न सर से सम्र र्रेट उत्रुत्वात् । कुः गाने र क्ष्मियाय प्रदेश या या प्राचित्र । नदी । नृतुःनःवळे रःनःभ्रवाः वो रःवन्त्वाः धरः श्रॅमः वः ष्यमः । निःष्यमः विदेशः वे ळव तिया स्ट्रिय सदी । स्ट्रिट स्ट्रिय स्टर्स या प्रते स्ट्रिय स्टर्स या प्रते स्ट्रिय स्ट्रिय स्टर्स या स्ट्रिय स्ट क्षेत्रपुर्वा । प्रते वे पेरामावया करा श्वेव प्यता वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षा । श्वेवः यश्चित्राश्चारास्त्रेत्रकरारात्त्रायद्वायास्यासरायद्या । व्हार्क्यः हेर्हेदेयः विटाइस्रयादिशाकोरास्रिताः क्षुत्राधी । वित्राचीराद्यरास्रेराद्याः तास्रयः यःकरः नुःदनन। । कं नशः हेन् यः नुःधुना ग्राम् ने कं मान्या । भूनाशः मश्राम्यामायायायायायाम्। होन्नो । भीवः तुः से नवनः स्थाः सेवः नश्राम्बार्स्स्रास्त्राचा । वर्षे वाश्वार्क्षेत्राश्वारते ग्राम्बर्धे व के विवा । विवा श्रेया.श्र्यामी.वि.का.रेशया.क्षरं.श्ररःश्रष्ट्रश्रात्रया.मि.श्रुक्तः केव रेवि कु पत्रु दर्भ ग्रामा । अग्राय स्वाय प्रायम् । शुरायम् । विष्धे र्वाचीय कुष्धे विवाय प्रतर भ्रेस्य प्रमाय विष्य गशुरराम् इसरा ग्रुट परासारी । क्रिये क्रियं दी। स्रियं दिसा पावि प्रट सर्हें दायश से इससा ग्रे ह्वा नाविया पा पे द्वा राग्रे व्या पा विया प्राप्त स ने भूर प्रवादर्गित सूगा नस्याने क्राया से स्था से स्था सी पास से साम र्'यम्'राम्बर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं वर्मान्यं विद्यायाञ्चार्यायाञ्चार्यायाच्यात्राच्यात्राच्या विद्यात्राच्या विद्यात्राच्या ลลด:ล:รุะ:ลธูะ:ล:มิรฺ:น:รุะ:ญฺพ:๗:ฆฺะ:ภู:พัฦฺพ:ฆฺิพ:พั:ลҕฺล: राउँ अप्थरान वेँ न्'न्ग्रयम् क'न् श्रुखन्द्रम् स्रुखन्द्रप्थे 'न्ज्र्यान्द्र र्रायम्य विवासी अया विवासी स्वास्त्र नन्गामी असि सूरानर्वे न सूर्यानु निस्तर ही क्ष्ययायान्यम्य स्यापी व रहा वहिम्रास्नितःस्त्रम्।यदेःधेर् भ्रीःवशुर्यः यः अर्धेदः नरः र् नर्सेसः यरः शु यरक्षे वशुराने। सरमावे यथा गुवरनगय रेवे श्रेर सेवे राजिशरमा *ज़ॖॹॗॖॾ*ॱढ़ॺॱक़ॣॕॻॱॸॖॱॻॾॖॻॱय़ॱॸॾॱॸ॓ॱॿॻॱढ़ॖॾॱॶॺॱऄऀॻॱॻक़ॗॻॺॱढ़ॺॱऄॱ वें राज्ञीयानन्ता वें दुःवयायाची तुःयायान्तान्यराष्ट्रन्यवे तुः होतः मन् ग्राव न्याव में अप्येत मिले अप्येत प्रमुद्द न्य मी अप्येया हे अप्रमुख

ममा सेंदु:वनायाची:नुरुष्ठेव:सेंर्ड्डिन:नुरुष्टें।नवे:सर्विन:वर्षासेसरा ठव-८श्चाय-प्रस्थाने पार्केट-य-८८-या नेवा-य-य-र्शेवाश-यदे-श्च-र्शेश्चर्यात्र श नक्षराधितायाद्या गर्डिनायार्थेग्रायाः भूगानसूत्यायर्थेनातेना न स्वाया बर्या के वर्षा विवाद में त्राहें या विवाद में दिया वा स्वाया विवाद के त्राहें में स्वाया स्वाया स्वाया स वेशः श्रूर्या रात्रा गुर्दान्य देविः कं र्वे गिर्देशः स्वापुः व्यूराद्या वे वे र्या र्अयद्ययम् होर्याने वयायर्गम् क्षेत्रेरि वया क्ष्याय प्रमा रे पाहे साने व ए:अगान्यायाने भीयान प्राप्ति । प तुवे सर्धे व सर्दि हेर हैर हैर स्वर्भ सम्बर्भ न हैरि । दे त्र सर्थे दु विषय ग्री:तुर्या न्नो:र्ख्यामहेराहेरानुश्रेम्यार्यः न्नी:न्नान्नः पात्रः विः ययात्र वृद्दान्य नहें द्वाया है यया भीता । हे या या सुद्या प्या है या है या नर्हेन'वशुर्थाहें साबिट'बर्थास'बें सामिटे में टिन्, नुसुत्थान'इन'ने बानर' भ्रे. ब्रेन् त्या वर्षा व्यावे व्यावे व्यापित व्याप व्यापित व्यापित व्याप व्यापित व्यापित व्यापित व्यापित व्यापित व्यापित व्यापित व्यापित व्या र्शे क्रिन्यते मान्य मान्य निया हि विन म्य क्रिया या हिया हि स्वार मान्य यदे में अराय र्शेवायायदे सुर्वे यात्र रायुर सिताया प्राये । अळव:देशप्पाप्ता गुवाप्तायायायेषे ळाचे गुवेशप्ताप्ता क्षेत्रा स्वाप्ता हुन विश्वापत हेवा वर्ष्य अस्त्र निया है अस्ति व अपदि मा सुर्वे के सुर्व अपदि । ने पाहिका न्वायः त्रशः से दुः ववायः श्रीः नुः यः श्रूश्रः यः न्दः न्वोः स्तृ यः विदेशः यतः पेतः यदे द्या द्राप्त व्याप्त वर्षेत् वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत

वर्चेश. क्रिश्र. जेव । द्रश्राचित्रं रश्या चक्कि. वर्चेश. क्रिंश स्था खेट. क्रिं मन्यायराद्याः सराध्यायवे स्वरायके स्वरायका स्वर्ते राज्ञे । सर्वे स्वरायके स्वर्ते राज्ञे । नःरूरःइरशःसःक्षरःगशुरशःसःत्र। यसमाशःम। नन्मःरमानीशःषरःथुः भेदे वर वर्ष भी वर्षे या है रवा सेंद्र गासुस र भे हों या यस विवास न यिष्ठेश वर्गे नः स्वे दिन्ति राज्य राष्ट्रे से राष्ट्रे दे से राष्ट्र से स्वार्थ क्रिया स्व यने श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रेन्न, श्रे गिरेश भेर जुर वश क्षव कर हैं व सें रश क्षें र पर से व कुर न रे सूर क्रॅंशनन्द्र-प्रार्थेयःवेशःव्याप्यम् स्ट्रिंद्यायःम्रीःनुशःक्रेशःनधूदः त्रअःत्वाः नर्डे अः यः त्रे नः यम् या शुरु अः श्री । दि अः तः वोः वे रे विवा वि रे राय अः श्रुवःसदेःवर्ह्हेव्यव्युव्यवश्रुद्रिःसन्दर्धित् वर्षःयःवश्रुवःविदा देःवर्ह्छवः र्ते कुते सन्ति स्वाप्तस्य नर्से सम्मानस्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप या र्द्धेत्रमालयानत्वारामात्राधाराने यसाध्यामात्राम् कुर्येत्रमाधेत र्वे । १९६७ ता भ्रे अ र तु रहिर पर्दे र पी र न समार र सा थ्व र तु भ्रे र खं पा पेव र तु न्यराया र्हे.कॅट्रग्रट्स्ययायादे व्हान विवास स्रुवासदे नर्द्र कुत् युन-त्रवन-त्रशनक्षेत्र-न्त्रीश-र्श्वा

म्या नेरक्षेश्वर्तिक्ष्यस्य ग्राम्य नेर्प्तिक्षे न्यत्र क्ष्या न्या स्था नेरक्षे स्थाने स्था

ग्रम्भारायया वटायायन्त्राचार्मिनार्भेनाः भूतायाः स्वाराविष्या मेर्-सःनममभाषावहिषामःनिरःभूषाःमवेः र्भेः हेःभ्रेः हाषासुरः हैं। । देवेः ग्वर्,रु:क्रूर:क्रें,रु:हेव्,यबर:यशरे.क्रूर:यश्वश्वर:ब्रूर:यश्वराक्ष्रें,रः नन्ता श्रेषायायह्वायासुरन्त्यर्वे विरन्नो नःस्रावस्वस्यास्यत्त्रः राद्यार्स्टिः र्र्स्नेद्रात्यसाम्रीयात्रात्रश्चरात्रयासरास्ट्रास्त्रेत्रात्राद्या वासराद् वह्यामिते क्वें नुः संविद्या त्या वृद्या सामा के वा मार्थ के सामे में त्या प्यान न्या नर्नेव उवर् रु जुर् भेरिया र क्षेरे क्षेर्य स्थान समस्य दिन दिने र क्षेर नवे के वहेन्या पर ने न्या प्रया क्रिन पवे क्रुन्य नरवा पर से क्रेन् रेटा नेवे[.]कें गुन्न-न्दन्गुन्यसाधेवन्यवे वर्षे रायेवन्य क्विया शुक्षेत्रप्रवे श्चित्र है। श्रुट्रिय व्यथा यह के द्वो श्रुट्र भूष थ्वर पहा । द्वो च च द्वा मीर्यासानुरात्। । प्रार्थितासूया नर्षाया गुत्र हेरिया । । ने के निर्वामीया ठे[.] गुरुषेत्। । ठेशःत्रा शुःविगः यहेगशः केतः यदेः यशः यद्ग । येगशः धरःश्चेत्राधराग्चेत्राव्यारावेश। वित्रभाष्ट्रित्राधाराध्यात्रवश। विवाधाः निवरः भुन्यः नृषाः स्वाप्ताः स्वाप्ताः । सुन्यः निवरः भुन्यः सेनः सर्वरः । वै। । ने वर्षः गुवः हुः धे खुवा व्युम्। । वावर्षः ने मः क्षुन्रयः धेनः खावा । ने । कें निर्वामी शहि सूर हा दि नश कुषान वर्ते निर्वासी वर्ते न र्र्युन यदेर्देवरवर्रेवरम्। क्रिंवर्यकेवरव्हेषायरम्ग्रवर्यवरम्। १देर्दरहेद्ययः भुन्यासु सकी वियागसुर्यायासुरारी विदी प्राति स्वायायास संसे कुश्रासर इत्रास हेरावाववा त्यात्ववाश्रास्य देश सर वह दर्वे श लेटा

यहिशम्। यहिशम्।

वहिना हेत श्रे अर नदे नवे वन अन्तरे देन या वा निर्मा

नश्रुव्यायायह्नायिः र्र्वेष्ट्रित्यायाः श्रुव्यायां श्रुट्यायाः वर्षेत्रायाः वर्षेत्रायाः वर्षेत्रायाः वर्षेत्र वस्रयायद्वायाये स्थित् क्षेत्रायो प्रद्यायाः श्रुट्यायां वर्षेत्रायाः वर्षेत्रायाः वर्षेत्रायाः वर्षेत्रायाः व

नश्रूव प्रायायह्या प्रदेश्वी न्याया श्रुवया वर्षे श्रुट प्राया प्रदेश

न्यान्त्रान्त्रेत्वर्भ्यास्त्री । न्यान्त्रेत्वर्भ्यास्त्रेत्वर्भः स्वान्त्र्यः स्वान्त्र्यः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान

55:31

ग्राटायानहेवावयाश्चित्रयास्यात्र्यात्र्यात्र्या

क्ष्र-अळंत्र सें सुत्र त्वा ह्वेत रु सत्। विंवा त्यु सूर हेवा र त सूर हेत्र रा क्ष्मा | दे नविव सरमा मुरास शुः धेरा न मुः स्या | विदेवा हेव नर्सेदः वस्रशः र्से संस्थाय प्रमाय प्रमाय । ने स्था प्रमाय स्था स्था स्था स्था । भ्रेगा'स'र्स्रेनश'केत्र'भेत'तुःसे'न बन्धा । विरामस्य स्थाना । नगरः रॅदि'यश'६स'कुर'विर'दग'रॅदि'यश'केश'नेद'रु'र्स्रेनश'के'नश'रद' वर्ते र खुर नदे रहं व नश्यश्य र श्राय दिवा श निर भूवा र भ्रे श द्या भूनश मेन्यियवित्रवित्राचित्राची । क्रु सर्वेदि वर्ष सम्यास्यान्या । वर्षेत्र क्रयायः यःश्रेवाश्वाश्वानवर्षि । कुःश्रेवःग्रेश्वाने ख्रश्चेश्वान्या । देःदेरावारः यः भुन्याशुः सकी वियागशुर्यारा सूरारी । सर्रे रात्रार्रा वार् र्शेम्रायायायहिम्रायायप्ता नर्गेद्रायळें मायाने यया र्श्केन यये त्राया वःभ्रुवरुष्वर्शेष्परःदेःदरःवर्ष देःगहेरुःश्वारुःद्रगायःवह्रुवःसःविगः लूर्य-भीर्यात्म्,लर.लूर्यात्मितायात्व्यात्र्यात्मात्र्यात्यर्यः ধন:গ্রুই।

ने स्यानहेत् त्रश्चम्या सुन्यम् पर्वे प्रविष्णयाया परिया

युवार्ट्स्याम्बुटामान्दा देःश्चिम्याखाः विमायादेः श्चुः सळ्दादी । प्रदासी युवार्ट्स्याम्बुः स्थान्य स्थान्या व्यादिन्याः यादेः श्चिमायादेः श्चुः सळ्दादी । प्रदासी स्ट्रिन्ते। विरायः पर्ट्रिन्यः इस्याः श्रीत्रया। वियाण्याद्यः प्रस्ताः स्त्रयः स्त्राः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्यः स्त

श्चित्रशर्शे देश्याये श्चित्रश्चे विश्वायः विश्

नेश्वान्य निष्ठान्य विश्वान्य विश्वा गडिगामिते क्लें स्वादकत त्यात् भे क्लें नाम भे खेटामय स्वेट मानामात्या देशनाम्भेत्रम् । रम्भेत्रम् यम्भेत्रम् । रम्भेत्रम् । रम् यायाक्कुंदे याळ दाया से दाय से द्वाराया या स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित यगः र्से. चर्यायात्रका श्रुप्तरा शुः दिहेत् । या श्रुप्तः वर्षा श्रुप्ता वर्ष्या वर्षा थ यदे भ्रिम्भे । देवे भ्रिम्यावर्षेया यह भ्रिम्हे के द्रिया इह या व्याप्तिया सहर्भात्रा देखायरायेखें स्रास्त्राचा हुसेर्भात्राच्या भुन्यः शुः वर्त्ते नरः ग्रुः भ्रे। नस्यायः देयायः नस्ति । वर्धे । वर्षे । वर्षे । वर्षे । वर्षे । य्रेट्रिट्र इस्रयःग्री मि्यायासुःग्रुट्र रावियास्त्रित्। वियायाहे केत र्रेशपर्से नित्री । समयन्त्रापिष्ट्रिन्यानिष्ठे न्यानिष्ठा । भूतिया मुन्ति । के अदयन। । नहे नर धून विद शुग्रामा नहेर अह्य। । देर नहें न ये वे से यहत्या विद्वारहायाव्य शुः सक्ष्या विद्वारे से स्था उदागुदा ही। यर्गेत्। श्चि थे स्यानवार्यः यग्याया । यर्गेत्र र् हिंद्र नत्वायायाया त्रभा । ते : श्रुत् : श्रु : त्रिक्ष : त्रा । श्रुत् क्ष : त्र । विष्ठ : त्र क्ष । श्रु क्ष : त्र विष्ठ : त्र क्ष । श्रु क्ष : त्र क्ष

हेर्याश्चित्राश्चित्राश्चर्यात्री

 क्षेर्रः स्थान्यात् व्या । स्थान्य स्

मश्रद्दाने व्यवस्त निर्मे विद्या हिन् क्रिया हिन क्ष्य क्ष्

सिंदिन सम्सिंदी । दे से खेर से वा निष्य सिंदि से वा निष्य सिंदि । कि रा शे वर्षिरःवें रनः हुःनक्क्रेरःनरः अहं । । डेशःगश्रुरशःशें । । वावदः अरः। नक्कः यः पद्धारायमा वितालया प्रमानमा । ने यम सहमान । थे। ।गश्रुरः दर्रे द्रमाने ह्रानः यथा ।नर्द्रहे पहिंगा यानि वर्ते द्राप्ता । हिन्शी मार्य दे तर्देन कवाराशी । द्यार्य विसंदरकर होत तदी । वे इन् इव दे न विराया विषय अपिय है न न न न न विषय विषय वि लर.री.भुश्रासदी रिय.र्स्यायहूंशश्रास्थायरियोश्चरत्यती रि.क्या रे.में.सर्देव.पर्हेसस्यायस्य हिंहे.ट्रप्यप्तप्तराचाया हिंदावां वेवासः नरावे से क्षुन्। वित्रासे सदय हिराहे सासु सह्या विवास पर हुर नशर्मे क्षु । विन् के नश्र के लेगशनश्र पश्र । मे विन न में में विन ॻॖऀॱॻऻॶॖॖॖड़ॱऻॖढ़ॎढ़ॱय़ॱॾॖॺऒॻॖऀॱऄड़ॱय़ॾॖॕॻऻॱॺड़॔ड़ऻॗऻड़॓ॱढ़ॺॱऄड़ॱय़ॱय़ॺॺॺॱ वर्शेशवा विर्देर्क्षणश्यिते सुग्रम्सस्य ग्रह्मेया विरस्य सम्स्य ग्री-त्र्वारायदीवःविदा ।ववाःसेदःहसराग्रीःस्नुवराग्रदःसह्द। ।वदेःवः उव न्या क्रें न की न स्था । विंद या श्रद गाव न दिया । साम श राइस्र रामे प्राप्त निष्ठ विष्ठ विष् रेनः इस वहें समारम् । पासुर वरे भ्रे में ग्राया सुर्वा । वेस पासुर सार क्ष्र-इब्राधर-बुर्दे॥

त्रुपार्था भेरेत्र प्रताया क्षेत्र प्राचित्र प्रति क्षेत्र प्राचित्र प्रति क्षेत्र प्राचित्र प्रति क्षेत्र प्र भेरामा स्थित प्रति क्षेत्र प्राचित्र प्राचित्र प्रति क्षेत्र प्राचित्र प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्र्याक्षाक्षात्राच्या विकामश्रीस्कामान्त्रम् स्वाक्षात्राक्षात्रम् विकामश्रीस्कामान्त्रम् विकामश्रीस्कामान्त्रम् विकामश्रीस्कामान्त्रम् विकामश्री विकामश्री विकामण्या विकामण्य

यह्राना । यावयः में रि. विया यक्ष यायाया यो। । वियादर। वस्याया देया नर्माय नर्देन तथा ब्रिन क्रियान तथा पर्मे न न । या इन्या स्ति पर्मे यारः सक्रेश । यारः ५८ : यहे याः हे तः साञ्च र : यहे । । शुक् : क्रें या शः ने : प्यरः यारः वियाः अक्षेत्र। वित्रः याशुर्यः पः भूरः इतः धरः गुर्दे। । देः द्याः वे त्याः स्वार्थः हेशर्उद्वरद्धयासर्दरावस्थायासे। क्षेत्रुक्षेत्रायावसाद्वरापराग्वसाद ५५.स.लट.झू.रं.स.बर्भ.झु.जा लट.२८.लट.रं.२४.सर.घर.व्याय. इवान्यः क्रुवः रेटः वरः वशुरः है। दर्गेवः अर्केवाः वाववः वावेशः शैः धेवः हवः वाष्पराने निरायन्ति । ने सूरानर्झे समायस्य वर्षे वा र्इन वासुरारवा निरा न्वीत्रावनीयाययार्थे के राष्ट्रम्याम्बुरानी हो । पित्रान्त के स्वाप्ता ने न्या ग्निस्ररात्मा दुः वक्षराचरावश्चराय। दुध्दार्श्वेसाया हैंगा साधितासूस्र स्र क्रयायोव क्री कें पर्देर पाइययाती पर्दे भ्रात्ते कें वायावारी वापादा ब्रैनः सः श्रें दः नवे श्रें द्वायाना नयः श्रेंदः सः धेनः स्था दयः नवे हेनः यः क्षेर-में न्यम हु सेन्य लेक प्रते मेम सक्ते सेन्से स्वर्ध स्वर्ध

दर्ने इसस्य न् स्व क्ष्य क्ष्

होत्रायान्ञ्जीविदाविदातुः कुत्रायम् छ। । हे १८ मा अदातुः हेवा होत्या। ने या ग्रम्य राये हें गाय ने प्रामीया । ने प्रविम नु में प्रासे समाविया वशुम्। १ने निवेद कुषानाधी दे भुग ग्रन्ता। । धो भी यान्यमा हा येन प्रमा ब्रुन-द्वर-द्व। हिना-धर-हेश-शु-द्वर-धर-वर्झेश-व्यान। दि-त्य-सेसस गर्विषः रनः हुः यननः सरः यगुरा । देः वे : यक्रमाः यत्माः यग्नेरः वेदः मावशः सवेः के। भिर्भानुन्यामधिष्येष्वेषास्यानुष्यिन्। विदेवान्नेवाकुषायाञ्चासेनः नन्गायम् राजेन्यम् । पर्देन्यमः मुन्तः कुनः तुः ष्यरः क्रेंत्यमः पर्देनमा । वेसः ८८। खुरु:८८:८वा:८८:खे८:४२:८८:व:खेरु। हिवा:हु:य८य:क्रुरु:८वा: मी'नस्ग्राय'मार्हित्। नि'सूर'नेय'वे'सेयय'ग्री'कुर्न्न र्स्स्यय'मय। हिन् सळंत्र: न्: प्यट: व्यहे पा: हेत्र: सर्वेद: संक्षेट्रा । त्रस: विपाने : ते : तः विट: से : निरः वया निःयः व्यापिरे स्याप्यस्य र्हेन् स्याप्त स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स् रास्री क्ष्यमाने । स्वाप्तस्य स्वर्धिमानमाने । विभा নাগ্যদ্রম:শ্রী।

रदः ने अ : बेर दा नदे : दर्भ व : की अ : दर्भ दे : दर्भ का अ : व्या : इंगामुक्षादि साम्रेन ने स्वादित्र स् नःदशःशः गुनः श्रुशः दशः र्ह्वः शेः नदेः नः ग्रेत्। अदशः क्रुशः ग्रेशः वदेः दृरः वदेः श्रूरःहैं। विश्वायान्या वद्गीन्यावद्गीयाः वया यश्चित्रक्षित्रक्षेत्रके निर्देश्य के यात्र यह सम्मित्र निष्ठित है। द क्ष्राध्ययः नुष्राश्चेषः ने द्वापा क्षेत्र निष्ठा विष्ठा होनः निष्ठा होनः निष्ठा होनः निष्ठा होन कुरु:ग्री:वाशुर:रुश:शेर:वीर्शःर्वेर:व्रशःरदःवेश:वेवा:वी:र्वेवा:तु:ह्या: वीर्यादर्वे न प्रेंद्र वाशुर श्रेष्ट्र या सम्वार्यात्र मुख्या प्रवार वार्य स्थाप विश्वयाना स्रेतामा स्रेन्य वर्षा ब्रूट:दें। । देश:व्यायाः क्रुय:क्रुय:क्री:पेवि: प्रवापट:प्यट:वश्ययः प्यायः श्रीट: वर्गाःपः वयारेयानेयाचे पर्देरयायायवन्। ने जुराव। ने ज्ञारायया जुरावये केया ८८.कूरा.मुच.मह.८मो.पर्षे.त्या.त्रा.त्रा.म.म.म.म.म.म.म. शुन्यादर्शे मन्दर्र दर्शे या दे से दान ने स्थान मन्दर्भ के मान्य का सुन्य शु वर्त्ते न भी न विष्यान प्यान केंद्र राजे न ने ।

र्क्ष्राणे प्रवाहित अद्या म्या व्याप्त्र म्या म्या क्ष्र प्राप्त क्ष्र प्रमानिक क्ष्र क्ष्र प्रमानिक क्ष्र प्र

वन्याने निया के व्यव मानवाय विषय है। ने निया के किया वर्ष भ्रेमायकेषाण्चीतर्वाभ्रयायार्भे नाया केषाण्चेमाया केषानन्वार्धरा गुराम केंगायमा गुराम केंगा गुराम केंगा केंगा ग्रैर्या व्यापास्त्री विराणिश्वर्यास्त्री । द्वी वर्त्व ग्री व्यापास्त्री वर्षे वर्षे वे वस्यारा प्रदेशार वया इसराधेव या दे प्यर के राग्ने प्येव प्रवादवा है । ने खुषान विवाद न सुना परि क्षेत्र विवाद सम् से निर्माण के साथ मान धर्युत्यायया न्वेयत्त्रके के या क्षाचा के या के वा के वा के वा के वा वा वा क्रॅंश ग्री विटा क्रॅंश व्हें दाया क्रॅंश या क्रॅंश या क्रॅंश या क्रॅंश वा क्रेंश या क्रॅंश या क्रेंश या क्रेंश อาจาอิราย ळेंयाची क्षेराधाया ळेंयाक्षेरायाच्यायाचा रहा निवन्त्री अर्इरन्य रहानिव की अर्माया श्वेर हे निवे के अरवा श्वेर हे ८८ हेव.त्री स्वा. थे. र पुष्ट मुच्या हेवा. थे. क्वा. थे. क्वा. थे. क्वा. थे. क्वा. क्वा. हुन्गरस्य श्रुन्यदे श्रुम्य स्राम्य विषय व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप N

सक्नावी नाववःश्रीः सवः नानी सः तर्ना नामः नश्ची नः सक्ष्यः श्वेरः न्या स्त्रे सक्ष्यः श्वेरः न्या स्त्रे स्वा स्व स्त्रे स्त्रे

र्दे। विश्वेतःयशःश्चेः श्चितःयस्त्रे। देशःयः क्षेत्रः खुदः खेवाशःयसः वर्देवाशःयः न्ना क्रेंब्रिस्यन्न्य्यान्यस्यार्श्वराचायान्येषायान्ना सर्वित्यरः र्श्वेप्यम् होत्रप्रदेश्वदेशयम् उत्रही । भ्रम्यप्रदेशहत्यम् हे स्याप्यस्य नश्चेत्र'नगुर'य'गुर्याप्रयालेत्र'मर'ग्रु'न'द्र'। सर्देत्'रु'ग्रु'न'य'गुर्याप्र वेव पर जुरा पर । कें अ अ श्वर पर दे पर से अ खूव के वा वी अ वर्शे वा अ रायागुरायराबेदायराग्चायर्वे । श्रुवायदे । श्रुवायदे । श्रुवायदे । श्रुवायदे । सर्हेर्न्यन्त्र देशक्ष्मित्र क्षाय्येर् राम्याय्ये राम्याये राम्याय्ये राम्याये राम्ये राम क्रिंग्न्य वित्राचे वित्राक्षेत्र श्रुत् श्रुत्र श्रिंत्यो विष्य विश्व वित्र व <u> शुः इतः पवे विदः पर्रः वे। पदे वृरः पर्वे अः युवः पद्यादे वे वे वे अः ये प्रायः ग्री यः</u> गशुस्र रेदि 'पेंद 'हद से से र 'इद 'सर्दे। । नर्से द 'दसस 'दसे य न यस गुर यदे हिन् यर दी वार बवा न्र कें अ की न्वर नु कु अ यदे वर्षे नु ब्र अ अ सर्केना'वसेव्य'न'से। सरसम्बस्य मान्यानिक्याने स्वर्गातिकाने स्वर्गातिकाने स्वर्गातिकाने स्वर्गातिकाने स्वर्गात हुरुर्भः धित्रः या देः धरः वारः ववा वा वे वा दरः स्वरः से वः वहेतः सवैः वर्शेदः वस्रभावमेयानामे। नगोवन्त्रायानेसामरानवीपीनामवे मेर्

प्रशासिक स्थानिक स्था

न्यवः ने शःवशा नर्गे वः यर्के वाः वाश्वयः विः वः शुन्यः शुः वहे वः श्री ने न्वाः ग्री वित्रास्त्रा क्रिंत्र सदे वित्र सम्बे। सम्स्रा क्रु स्र ते क्रिंत्र से दे हिंद् विष्युः भूषा विष्युः भूष्यः भ्रत्ये ने त्या सूर्वे विष्यः भ्रेषे विष्यः स्थायः नर्सून प्रमा नन्नाने सून प्रामान्य स्था निर्देश सून हिन्य नन्गः भुन्यः यक्षे। । ने रेवे श्वनः त्वे न हिन्। । भ्रेन से सम्दर्भ व्यक्ति स्वा विश्वान्ता सुः स्रेम्यायावन मी मव्दास्यायाया । है सुः है सुराह्मया नश्यश्या । ने सुने सुन अर्वे व हिंद त्या । नद्या वी शेशश्रादे द्र प्रमः शुर् । ने सूर वस्र रहन सिंदि से दारी । शुर सबरे क्रिंद श्री राज्य मा सेसरायुवा | नर्ससानक्ष्माक्सराग्रीसार्भ्रेत्रसे । भ्रेत्रसार्हिनग्गर भ्रे अर्बेट दें। विश्वर्शे । नश्रुव परे हिट पर दी कुषान दे नश्रुव परे प्रथा क्रॅब्रॉड्याइयायराग्चराचराग्चेरायरा वरायर्देराये क्षुप्रार्ट्रा ग्रिया हान्नो नान्ता हेशायान्यायमा होनाया ही में यायदे मह्न या है ने न्या यशर्ध्रेग्'राष्ट्रे। छिन्'र्यर्ययाश्चर्य्य्रेन्'यश्च यानःश्चन् छिन्'ग्रे'नक्ष्र्रायः वै। । नरे नर्भ नरे न पर्वे न नशे र भा । रे सूर हूं नदे से र हिंद शे। । नत्र खियायायाचे तर्चे तर्ने न्दर्भ वियानमा वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र यशःग्रम्। यह्वान्मरक्ष्याः यामः याम्यान्यान्यम्। ।गुन्नम् अक्तिः स्रम्सः ब्रामित्। । ने केर रमय में ब्रिंग नमय प्राप्त । । मानव खे के मामे ब्रिंग स्र

यम्भा प्रिन्देन्ने महिन्देने महिन्देन महिन्देने महिन्दे

शुन्राशुःर्रोटाव्यानश्चनायरागुःनदेःरेयायायाष्ट्रेया

त्रमु'न'स्यराद्युद्दान्दान्दा अव्दान्तास्यराद्युद्दान्द्रित्वाकाराधिन्तः विक्रांत्रेत्र स्त्रम् स्त्रम्त्रम्त

चेत्रप्रे के क्षाया भुवस्य शुर्ते प्रवाद क्ष्य क्षाय क्षेत्र क्षाय क्षेत्र क्षाय क्षेत्र क्षाय क्षेत्र क्षेत्

यक्षेत्रः विक्रम् विक

सर्यात्मभावन्त्रात्मभावन्त्रम् अर्थः अर्थः विवासिक्षमः स्थाः स्था

ना । ने ने प्यम् म्या नयो नये व मे । व स न्यम् वे मावव नया या । भुनस शुःशॅरःनःसाधिन्द्री । न्सामिते के साया सुन्सामिता । पक्के विराम् श्रिन यदे से समान्द्रा । द्रा १८ ते त्य । या । सा से ना सा स्वार । न्दःवर्त्रियायायासीय। वियायासुद्यायासून। सुपाव्यायासुनयासुःसीः वर्ते निर्मा सेस्र उत्तामित्र वर्ते स्त्रीत्तर निर्मा सुः स्रेम्स उत्तर निर्मा भे त्र्येवार्यायायायायाया । दे त्यान्तर्ये दे विष्कृत्यं वे स्वार्धे त्या विष् वियःवह्याः श्रेयाश्रायवदः स्याश्रात्रीः भ्रुयश्राश्राः श्रेष्टिवात्रा विप्त्याश्राः शुरापियावियन्वान्द्रायायाष्ट्राचे द्वीया देण्यदासुन्यायाध्यायाधिता अक्षिअत्रक्षाने प्रवास्था ह्रें प्रवोधान के स्वाधान के स्वाधान है। स्वाधान स्वाधान के स्वाधान के स्वाधान के स बेर्ने निर्मात्व क्षेत्राचर्यायायक्षेत्रचेर्येयायायक्षयायान्ना क्ष्र्याया यात्रम्यार्थे निर्देशे निर्देश प्रकरमानित्र में मिहेशमाने भे मिन्स्त्र वर्ते वार्श्याम्यायायाय हेवा या न्यायके राजान्या वे वार्षा व्याप्या विवास प्राप्त विवास प्राप्त विवास प्राप्त यक्र्यायश्वरायाञ्चन्याश्चर्याचित्रं के संभित्रं भूत्रः नित्रं मुत्रः नित्रं मुत्रः नित्रं मुत्रः स्थरः <u>५८:अञ्चुन:यर:शे:ग्रे५:यर्दे।</u>

चेश्वनःपरिःनश्चनःग्रुयाशुस्रात्ते। स्ट्रसःश्चित्रःग्रीःश्चुत्वाशःसेःर्सेनः चेश्वनःपरिःनश्चनःग्रुयाशुस्राते। स्ट्रसःश्चेशःग्रीःश्चुत्वाशःसेःर्सेन्सुयः

सर्भे प्रविषापात्ता वाहतः सर्वेषापार्थे वास्य श्री से स्वास्य प्राप्ता स्वास्य नकुषावनषाश्चरषात्रवार्ष्ट्रेतामाष्ट्ररानगुरानदे विटानु न वेषा श्चेरमायमा हे सुर नहे मिलेगमा भुग बुगमालेट समाग्रहा । नश्चेमाय के.पर्य.तार.प्रेर.भाषका.सका.सकूरी । कुका.योशिरका.सूर्। । धिर.प्रेसा.पत्रीर. यथा नेट्रा शेर श्रुश श्रुवारा द्रा श्रेता परे द्रो पर्व द्रव इस्थाय। सूर रॅदि'सर्गे' उत्रिंद्र'ग्रीस'र्केस'सस'र्केस'स'प्येद'रा'ठे 'लेस विस'रा'य' नर्रे नकुन्धेन् प्रदे कुः श्रेव कृते ने गया शुः श्लेय है। क्षेत्र पारें न श्लून्य श्ली त्रात्रा भूग्रेते कुषारेदि वर त्र्त्र वर्षेर वर्ष्ट्र पर वाश्र्र राज्य । खरास्रवाळेषायायया द्वेवारायवित्रायायहेषास्राप्तवाययायन्यायवे हेया *য়ৢॱक़ॖज़ॱय़ॕॱॺॾॆॺॱख़ॺॱॹॖॆॺॱॺक़ॕॸॱढ़॓ॺॱख़॓ॺॱय़ॕॱॿऀॺऻॱॿ॓ॸॱॸॖॱॸॹॖॺऻॱॺॱॺऻ* म् अं विगामी अपदी क्षुत्रे राष्ट्रे राष मा वर्षान्या नेवाना प्रमान्य कार्या । विष्णायव गहिषासु पर्युषामायः त् न दुना दश सर्के द हे द त्य न न न श श सर्ने न पद हो द सुश रहर त्य भूर्भुव्रामंदे स्रुव्यामा महाराष्ट्रवार् स्रुव्यामा स्रुप्ता स्रुप्ता स्रुप्ता स्रुप्ता स्रुप्ता स्रुप्ता स्रुप वर्रे दे वर्रे वर्षे विश्वास स्थान प्रावन स्थित स्थान नवर में लग न भून पत्रा के द में न भून पाया वहा न प्राप्त है ग यदे।वियार्देवायार्थेवाया ह्यार्थे सुरार्दे स्थार्य्ये स्थार्ये स्थार्ये स्थार्ये स्थार्ये स्थार्थे स्थार्ये स्थार्थे स्थार्ये स्थार्थे स्थार्थे स्था स्थार्थे स्थार्थे स्थार्थे स्थार्थे स्थार्थे स्थार्थे स्थार्थे स्थार्थ

वहसान् ग्रम् अं विवायां विवास सुरस्य दसाय ने यो वास हे साहे वहा येग्रथात्रः स्टार्यायारः द्यो प्रथा हीतः प्रदेश्याक्षेरः वि प्रवि हीतः त्रका येतः य यग्राम्याल्याम्या हेर्निवेख्यान्या हेर्निवंद्वायह्यामवेर्न्न्न्याणे सुर्या श्रे त्येवाश्वराश्चेत्। क्षुत्वर्ते देवेत्वा सुर्श्वर्था क्षु वित्रात्ववा वित्रे वित्र यःगुत्रः वदरः ने ः भूरः अह्र अह्र अह्र विषाः अःग्रांशःशःश्वरःविदा श्रेग्रांशःनसःग्राहरःवह्याःसःदरः वेदःसःदरःसः म्रे.म्.रट.प्र.चक्कितःश्वरःवर्द्द्वाःसःरटा क्षेत्रःरटःश्वेचशःषेःवधिरःयःरटः वर्वीयाध्याः सँग्रायायाः ग्रायाः वययाः उत् श्वत्यः ने के या ने में दायके ग क्षरागुर्यायरा होत्रायर्थे । त्रेने निष्ये स्थाय सुराय मुद्दार निष्ये । र्श्वेरःभूत्। हेर्नि:सदयःरेशःशुर्त्वेत्रःयःत्। स्वायःयःविवाःविदःयःर्क्वेयःशेः क्रवासाया धेनाःस्वित्वः विनाः स्टिनाः नी सः स्टिसः त्यानसूत्रः सः नी ने नासः वस्य ८८.४४.१५४.४८। ४८.४.४५.७८.५४.७८। ४८.२०१.१४.५८. र्बे के प्यर होत् प्यर प्रत्वा है। के अन्दर के अञ्चान प्याया या वा अपन प्रेयर व वळवानवे कुः धेव इतियान मुद्दे वदी नाया केंगानी हित्या पदे कुः या वार्शेवा पदी प्यथा झें हरा कि के कि कि वा सुदारें ॥

न्गे'यन्त्र'व्ययःस्य प्रमुद्धाः याची श्चित्रं यो हिन्द्र या प्रमुद्धाः विद्याः या विद्य

नर-दगो पर्तु दर्गे द सर्के ग स्ट्रिस् ग्रु रा स्ट्री द्या न रास्त्र स्ट्री स्वा न रास न सुरा नःयथा धेवः हवः वर्दे दः यः ववायः वः वावयः यः धेया । यः देवः दवाः वीः श्लेवः यानह्याः भेरा । नन्याः ने शिन्यम् तस्यायाः निनः नन्याः सर्क्याः ने या । ने सूसर्विसेसस्य न्रेनेट्रि । क्रुणस्य दि नगासेट्रगुन्छे स्य स्री वर्षेत्राक्षेत्वस्य । वर्ते वे नमून मायदे वा वे अपाशुरुषः श्वा । भ्रूव मानेव में के न्म क्या वर्षे माने केव में भ्रूव माने माने प्रोत्ता वर्षे वा मदेःसरःस्ट्रिन्यःसरःक्षेत्रःसरःक्षुत्रासरःक्षुत्रास्यःसःस्ट्रीतः द्यगायेत्रः सूरावस्त्रवास्त्री रदाने दिनावित्र सर्वे वा वा के वित्र स्त्री वा वित्र स्त्री वा वित्र स्त्री वा व र्'तर्मे न्यम्यम् ग्रह्म्प्रक्ष्यः क्षेत्रः क्षेत्रः त्या स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वरं स्वरं दे वहें व कुयारें यथ। हे वर्षायाधीयथा गुरुषाय। विश्वयातु दे वर्षाय धरःदशुरा विश्वाशुरुशःश्री

श्रुवःश्रॅदःचीःवश्चवःश्वःचुन्यःच्वे। देन्देवःकुःवःश्वःवश्चःचितः स्राप्तःविद्यःस्वःचित्रःचित्रःचित्रःचितःचितःच्यः स्राप्तःचित्रःचित्रःचित्रःचित्रःचितःचितःच्यः स्राप्तःचित्रःचित्रःचित्रःचित्रःचितःचितःच्यः स्राप्तःचित्रःचित्रःचित्रःचित्रःचितःचितःच्यः स्राप्तःचित्रःचित्रःचित्रःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचितःचित्रःचित्

कुरुपर्सेन्द्रस्य ग्रीय दे वर्षा हेन्ग्रम् । ने प्य वीस्य प्रस्य विस्था प्रस्था वर्गुम् विशागशुर्श्यास्त्रम् विष्ठशाहेत्यशास्त्रेत्वशास्त्राचिते येग्रथान् जुर्ष्वस्था उर्दर्गेत् सर्केग् गी देत्र र्वेश पर्वे ग्रायर जुरुष् नुष्यायान्त्रीं निर्देश्यक्षयाय्यायकेंद्रायम् नुर्देष । देश्याप्यम् यकेंद्रायानुः न ५८। ग्रेट्रायश्चरम्यादिशस्य । १८८म् त्यायश्चरत्यम् सुत्यसर्वेद्रायः वै। यदयःक्रियःग्रेज्ञ्च्यायाग्रेःश्चर्द्यायःयळेद्रःपर्दे । यळेदःहेदःयः यर्केन्यते। यन्यामुयाग्रीमिन्न्यकेन्द्रेत्रार्येषायायायकेन्यते। सर्विक्षुसर्वासर्वे देगिष्ठेशस्टामी प्रवट्धे त्यासर्वित्त् श्रूर्य यासकेंद्रानि । सर्देवासुसासाधिवासने सकेंद्रासने। सरसामुसाद्रादेने सर्केन्द्रेन्न सर्देन्द्र संगुर्द्र प्रायास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स ग्रे.ब्रेन्,रं.अकूर्त्रात्री । शरशाभिशाशीत्रात्रात्रशाहेशाशीत्रात्रीतः ५:भ्रुगात्रुग्रभः५८:अर्के५:हेदःग्रेच्गाःयःश्रेग्रभःभःग्रे५:सःयदःसर्देदःशुस्रः याधिवायियकेंद्रायकें । देश्विक्षायादासुद्राया यकेंद्राया वर्षेत्राया विवा गी कें अंदेन दे वस्य उर् ग्री कें अंदेन दें। । ने दे श्री मा अमें दान ग्री मारा गिहेशर्भे विदेश्यवर सर्केर या र्शाम् सुया मुरामी अरम मुरामया स्टर्नर मुंग्राय वि. शे. येट. याचे. यकूरे हेर त्यालर यकूरे हेर से याय प्रायकूर हेर वे अर्देव द् जुर् या गुर श्रे वे अर्के द या श्रे श्र या वे पर्शे द वस्त मु के त्या गहिरामाने में निया ग्रामा के राज्ञा के राज्या मार्थिया मार्थिया निया ग्रामाने में स्थान प्रकु:के'नर'वाशुरश'पश अदशक्तुश'शश'देवे'श्चु'वा बुवाश'र्शेवाश' याडिया'य'सर्केट्'रा'त'र्केश'हेट्'र्न्चेर'सेट्'रा'त्त्र'यर'त्र्या स्था । उट्'य'सर्केट्'रादे'दर्येत'रा'याहेट्'य'याय'केट्या

र्रमीशन्त्रानिक सर्वे न्यानि वे वे वि द्रान्य स्थान्य ना से ना <u> ५२८:वीशःग्वदः हे८:५:श्रे:वह्याःयर:४८:वीशःययाःय५४:हे८:</u> या शेसश.६४. सूना नस्य न नर्शे न दसश कुन विन से नुराम प्रे निन गैर्भासर्केन्यानुर्भात् निन्निराद्युर्म्स्य स्थान्यस्थितः हे न्नायुर्धान्यः मावर मिंद अर्के ५ ५ माव्या मावर पर मञ्जूष मार्थ मार्थ होत्रमंदी स्टामाववामाहेशमादि मुक्सें स्टामाही में माह्यसाही नर्सें वस्रभाग्नी प्रत्रमात्राके कुरावे स्थापरायद्वी ।हेरामार्गरामेर सर्केन्यादी वानवयान्यावयावयान्यावीस्थाकान्याव्यान्यान्यान्यान्यावस्था ग्री मार्शे शः श्रुव ५८ : प्रें ग्रुठ ५८ : या श्रुवा भरे श्रें शः ५८ : श्रे श र्नेनानी भ्रेट न प्रदर्भेया स्रिते श्रुप्तर सम्स्रे श्रुप्तेन स्वत्य या प्रदाया वा स सरःश्चानःन्दः सुनाः पळेषः नःन्दः अर्देतः नुः खूदः नःन्दः स्रथः श्चे <u>सु</u>रः नःन्दः नर्रेंद्र-सःश्वःॐवार्याय्र्द्र्द्र-सःद्रदःषदःषवाःध्रयःध्रवाःग्रःचःदरःवाषर्यः मुँग्रायाशुःनर्भेरानाद्या विदायार्थेग्रयायायाचराधीःवियायवेःश्चेत्रायाद्या र्देर-तु:५८:श्रुव:ळ:५८:५५८:कुव:य:श्रेंग्थ:५दे:कुव:५८। व:व:५ेय: র্'ব্রঅ'ন'ব্দ'শ্র্ম'ঘ'ছ'য়ৢর্দমন্দ্রম্ব্রম'বৃয়্'বয়'য়ৼয়'য়ৢয়' ममा नेते सकें न हेत पासकें न पर्वे कि के निते सकें न पर्वे हेन नग्न

ने न्यायी अप्युव ने र से र सके न स्था ने प्यर ने स्थार में अर य न र य वर वया पात्र रात्र विदासे राष्ट्र या में राष्ट्र विश्व हो । प्राप्त हे या राष्ट्र विश्व हो । यदे ह्या कुन कुन क्षें न क्षे न त्वादे । ग्वाद व व के देव के त्या पा उद या पी द यदे सके दिन स्वाप्त स्वापत स्व र्अःवह्यायी । स्टायीश्राययाः स्ट्रास्य होरास्ट्रा स्थायसः होरा यन्ता अभ्यायाधीत्यायम् होत्यान्ता क्रम्यार्थेष्ययान्त्यायहेया यमःक्रेंब्राब्रॅम्ब्रामाःख्वायाधीवाम्ब्राचीनायान्। ब्रम्ब्राक्कुब्रायान्नायवेः कुलार्से सेवासालसा हेरानग्रम् वें नातुने दसासी होरामानमा समुदासदे न्रें अर्थे अर्थे द्वार्भे द्वार्भे । अत्रुद्धार्भे अर्थे देशे अरथे तुद्धार्भ वा मुकानुवायान्दरस्य सिकायम्वायान्दरम् ग्रायायान्य स्वायायान्दरस्य मित्रसे र्नेग्'य'र्सेग्'रु'५५८। ग्वित्'प्पर'र्षे'ग्रुट्'रुट'र्न'सेत्'र्भ'र्न्ट'र्न्नय'र्न'रुट' नर्दे। । वटःवेटःचीःअर्केट्रःयःदेःद्याःग्रदःस्टःचीशःनञ्चनशःयःददःयाव्रवः यशनक्षरश्राचा ने निविदानिना स्ति सके ने नामानिस्ति सके ने नःवहेषाःहेदःग्रीः।वस्रश्रादायादःधेदःसःवःद्वावःनःददःक्रुःकेदःसेःवःस्रा यन्दरः भ्रवः यदे स्रोधस्य ग्रीसः श्रियः यद्यः यद्यसः यो स्दरः श्रुसः व्या स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स <u>ড়ৢ৴৻ৢয়৾৽ড়৾৾৾৴ৢয়৾ঀ৾৽য়৾ড়৾৾৾৴ৢয়৾৽ড়ৢ৾য়৽য়ৢঢ়৽ড়ৢয়৽য়ৢ৾৽৻ড়৾য়ৢয়৽ড়৾৾৴য়৽</u> शुःश्रूनःने। ने त्यः वे ह्वा हु से समा हुस सामने ना न ह से समा न्वायः न स नर्हेन्यम् नुर्वे । नुर्गेन्यर्केनाः श्वेन्द्रम्य केनाम्युयः नर्गेद्रयः ययः

यश्रिस्य साक्ष्म नित्तार्थे स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व ह्रास्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्व

ते न्यानी अयळे त्रायि के त्रात्ती त्रायळे या या शुर्या या या त्रायि के त्राये के त्रा

स्र-ग्रीयायर्केन्यायाकवात्रवरार्केवायायरार्भे केवायाकुराद्याया मर्भाकुः प्यत् कत् वादाया वेदिशः श्रुद्धितः यो भाग्यदः श्रीदः ववा भावसः मुक्षाग्रद्द्वारोयानायद्दानारेकारोदिदावेकान्यरानदेनासुदार्ह्वेकायका वर्द्धरार्देश । द्रमेरावाबेराया भेवा प्रामिवा प्रामिवा व्याप्र स्वित्त वर्दे नया द्र्या शुःसानन्नान्यस्थ्रसायन्त्रत्ने भूसायहेषाः से सिन्याः भूस् वदे सिते नदे येग्रथात्रस्थाउन् प्रतुन् प्रति । विन्यान्य प्राप्तान्य । विषय्य । उन् । कुर कन्सेन्यर्वे त्येवार्या श्री राजें व्यवहरायर्थ केंवाया वर्षे व्याप्य प्रा यदे मिर्निय मुर्भ नर्भे द न्याय मी निरम्ने द परम्मूर हेग । हेय सर्दे याय गश्रद्यायाष्ट्रम् त्रुक्तुः यात्तुम् व क्रेयानेव कुष्म भीव कुष्म या भीव के नर्मायार्द्रयान्यम्यायान्त्र्रिन्यया हिन्निन्द्रान्त्रे वित्रन्तान्त्री विह्नाः हेव'ग्राश्रुय'व'य'यळे य'हे। । विंद् 'वे श्रुव'ग्रव्य स्यय'ग्री'यळेंग । ग्राय' याद्र अह्र भंदे याद्र अयायाया विषा अपिय अवय त्रुपा अ अकेश यदी । सकु: नरः वेरः नवाः है १ द्वः नरा । विंतः वः श्ववः नरः वार्वेतः न वी यः यदी । म्यायरःश्चेत्रायाश्चयायायळेया वियापाशुर्यायासूरःरी।

विरागी अर्केण या श्रम्य प्रति विरागी अर्थे राउँ अप्यासि निरामी अर्थे राउँ अप्यासि निरामी अर्थे राउँ अप्यासि निरामी अर्थे राउँ अप्यासि निरामी अर्थे प्रति । विरामी अर्थे प्रति ।

नश्चेत्रप्रेत्रश्च त्यायाया श्चे देयाया इस्याया श्चित्रे स्व श्वा स्व राष्ट्री स्व श्वा स्व राष्ट्री स्व श्वा स्व नमा सहत्व तं क्षेता से बेदा नमसमा द देव से में निर्मे समा द कुर पा से श्चे प्रदेश्चेंदिः अशुः विद पुः कुर प्रदेश्च अश्वेर मी अशुः य प्रहेद पा अद रयाः लेव दें। १ ने न्वर प्यतः द्वाया स्वर सार्विया श्रीया स्वर द्वाया है साया स्वरा ळेव'र्ये। । विंद्र'य' यहेव'वय' यद्या'यी' वें। । द्यर ग्री'त्य'ग्री खुर्ये 'सूर् किट.रेक्ट.सुर.ये.वसुरा.चर.वर्चेत्रा विश्व.वर्षिटश्व.स.सेर.सू विष्टूर. राष्परादर्देशर्रे खास्रादर्वेग्रस्टानी द्राप्तादर्वेग्रस्थित ग्रीस्टा नःक्ष्म नन्याधिन्यसङ्गन्यस्य द्वार्यस्य विषयि । र्शेग्रम्थरम्थरम्भः स्ट्रिन्य्यर्स्स्या स्थान्य निर्मेन्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान है। । सर्केन प्रिके में मान्य मन्याय उट सासके या । वेस ने मन्य है। में में नवे वियान्य। त्नार्थे मंत्रे साउन विया पुः श्वर श्वें याने यहन विया प्रमा गानुरार्श्वेराण्चे वियान्स्यायेराणेरासेमाय्य यासमे र्सूराह्येरा यशिरायान्द्रात्र्री सि.केरायद्रावियायया रयान्द्रासुरार्झ्याञ्चाळः हिरारे नासुवा ने नमारेरातु निविश्वेरियास्य भेरानानुवा कु तुरा न *ख़ॱॹॱॴॱॖॖॖॱॸॖॸॱॸॖॖॱॸॖॖॱॴॱख़ॱऄॕॴॺॱय़ॱॸॶॖॸॱक़ऀॸॱॸ॓ॱढ़ज़ॖख़ॱॴॶॸॱॸॱख़ॗॸऻ* सर्केन्याकुराद्यायक्ष्रभावसासाया के स्रम्भार्यादी नित्रादित्त वा कुर रेस द्रश्व रावद प्रदान से देश देश न सार्वि र वी स्वा येव सूर पश्चर से विंद पी रारेश परिवा या प्रोसेर श्रद है ज् इपि है रा

ग्रे:र्श्वेराश्वरःभ्रम् व्यान्यम् वितायदे से समान्य केता से समा ग्रीभासुभावतुष्ठाञ्चमानुःसरःश्रुवानन्दा। सुभारे रे वापादावनानान् मु क्रॅंट्रायार्श्वेषात्रायराञ्च्याते। विटावस्याउट्र नुर्वेद्वत्याक्त्यात्रात्रात्र्यस्य नभ्रयामानु सम्सक्ति मासद्दाना धितान्त्र सुमासूमा सुमास्त्र स् नियायान्य विर्मितिने भेष्या स्थान्य स्थानिक स् निवर्त्रः कुटर निवर्धे अर्थे। । देशक निवर्धे महिन्य स्वर्धे महिन्ये । इस्रशायश्रासर्केन्यान्दानेसामें ग्रानाकु केत्रों ग्रानाधेत्याने स्रानुन्ता अष्ठत् छेटा भ्रेटात्रवा पात्र अञ्चवा प्रते प्रस्य । स्रोत्त स्वर्वे वा वी सः स्वर्थः क्रुसः ८८.घट.क्य.म्रम्भरायः इस्त्रायः नर्द्वेत् । विमःगश्रुटमःमः सूरः चुर्दे। श्वेरः हे । हे या शुः इतः प्रयादर्शे । या वतः प्यरः रहे या यदे । क्षुः तुः या दर्शे दः या दे। सेसस उत्पावत पट हे त्या ग्रीस सुनस सुपर्मे न त्या न हे नस दर्मे न नर्ये । व्यानानित्रान्तित्रान्ति अभिन्ति अस्ति । व्यानिस्त्र व्यानिस्त्र । यासर्केन्द्रस्याम्स्याचायनेनसःविन्यदेगाःहेत्यवेष्ट्रम्यस्याव्यस्य वै। ज्ञानःहै प्दर्विणा ज्ञेन सन्दर्भे रामा के प्दर्भ ने विणा सर्वेद प्यरान् गेंद्र सर्केनामश्रमायानहेनामाना नेन्नान्नाहेरास्य स्वापिता मायाम्यामायायययाउदादुःनहेवादुःशे दुदानयादुयायययाउदादुःनगेवा सर्केगायार्त्त्रावियानम् जुर्वे।

सवःलूचःश्रमः थेयः थेयः त्रवः वाश्याः यक्ष्यः त्रवः वाश्यः रः श्रीययः

शुःवर्गे न गुःन वातिशा नशुःन वात्रा व गुःन विद्या विद्या व विद्या रॅदि'नर्सेन्'न्स्स्रामु'केन्द्रेन्'यर्झन'म'ने। दक्षे'सेन्'स्स्रुदे'म् बुद्रायस्। |दसवार्याय:पदे:दवो:दर्व:वय्यय:से:ह्या | वय्यय:से:ह्य:व्य:दर्द्रस्यय:ग्री| |इस्रायरःश्चेत्रपदरावस्राधः । विया । वेस्यादा सरःश्चेत्रपश्चायसः ग्रम्। अनुवर्धारम्बर्धम्यस्यात् व्यवस्य । विस्रवर्षाव्यस्य मालयः भे : तुर्भा । विर्भः मासुरसः भः भूरः र्ही । दमायः मः पर्देशः हुः दमायः नःवर्षेनःमन्ते। इतःमदेःक्ष्यंशायमा ग्रान्तेगानेतःन्यक्तः सम्म ब्रा । यरया मुयाहेया बुर्जि हो । यर राजा यरया मुया सुनया र्शेट्स । निर्माश्चे भी हेट्स भी विशम्बन महिश्य प्रदर हुर दश ग्राह्म यदे तर् निष्ठा म्राह्म म्राह्म वर्षे तर् निष्ठा म्राह्म निष्ठा म्राहम मिष्ठा म्राहम निष्ठा म्राहम निष्ठा म्राहम निष्ठा म्राहम निष्ठा मिष्ठा मिष् वीशःहेर्पायोगशासराहेर्पे स्थानशाद्यायाता हे प्रयोगात् प्रयोगात्रा किरारे वहें बादराइयायर द्यायाय विवास दी किरारे वहें बादरा के यार्य ग्री'नक्ष्मन'मश'र्मेष'नर'दगुर'नर्दे । निवि'र्छद'गिरेश'मदे'नशुर'न'छेद' वे। क्रेंव'म'न्द'र्के अ'न्द'र्मेग्य रह्न'म'य'र्से अ'व्याक्षुन्य सु'न तुद'नदे' स्वान्य स्वान्त्र स्वान्त् स्वान्त्र स्वान्त्

वर्त्ते अः श्रुरः वर्षः ग्रीः वष्रयः यः वह्रवः यरः ग्रीरः केरः रेः व्ययः क्र्रेयः यः क्रीः वः यः नर्गे । र्रें तः नर्गारा प्रें त्यरा ग्रें श्रे नः प्रस्थरा नर्गन्य । बर्'सर'द्युर'नदी नक्ष्मन'न हुअ'शु'क्षुनअ'शु'दर्शे 'नअ'श्रेम्'स'दर्मा' धरः क्रेंद्रः धरे : क्रीन्य श्रा दिन्य वा मी हिंग्य धरा नहेंद्रः धर्मेर नुदे : बेया য়য়ৢৼয়৾৻য়য়৾৻৾য়য়৾৻ঢ়ৣয়ৣ৾৾৾য়ৼ৻ঢ়য়ৣৼ৻য়৾য়৾৻য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়য়৻ঢ়য়ৣ৾৾৻য়ৢয়৻য়য়৻ नेरास्त्रेश्वास्त्रास्त्रास्त्रेश श्रुवसायम् वर्षे व्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यान्या म्रेर्-र्स् । यार द्या अरश मुश्रम्भवश र्सेर या । दे द्या द्य वर्सेर वर्से से वर्गमा शि.ली.क्षेत्राचे.क्षेर्याच्याची । ने.र्या.क्षे.ली.क्षेत्रावर्ध्याची । विया क्रॅशन्दर्गो तर्तु न त्यापदा दे स्ट्रिय पाश्चर्या श्री । दिया न स्ट्रिय प्रयाया मदे भ्रेनामायाया वे नश्रम्या स्तर्म्या याया वे तह नामायम् र्रे। विश्वेर्वस्थाकुः केवारे विश्वायां वे। सूरावल्यायाः सूरार्रे। विवः वर्तेरिक्षे भूटानायदा स्यामानेमानर तुर्वे । सीन्द्रिक्षायपे सीन्द्र गर्डेट्र ग्रीस से रहेगायाय है। यदें त्यया वहेगायायय सुगाय से से स्वयं वै। सियाकेरारीप्रत्यवायाळयाप्रा ।गुवाप्रवायप्रदावे यळेँ प्रावया म्या विष्ट्रित स्विट स्वर्भाया सुन्य पर्यो से सुन्य दे नार्डे में स्वर्भाय स्वर्भाय |भुनशरे'अर्केग'शुर'अ'धेव'त्य| |भुनशरे'त्य'वे'नहेव'वश'शरा |धूना' नर्थयःगुरुव्यश्रः शे.म्यायः विदा । यादः के यादः विवा अदशः मुशः ददः। । के शः ८८.८गु.७२४.श्रेचमा.शूट.जा सिंगा.यर्जा.सेंगा.यर्जा.गीय.उर्वेट.८८.। यी । श्रीत्र प्रत्य प्

डे'नश्रश्रश्राच्यश्राउट्'वर्गुन'मंद्री क्रिंशपृत्रिनु'न्'न्नाट'नश्रुन' मंदे र्चिमा सम्दर्भोत् सर्केमा या सर्केन् रहेमा सुनस् सुरस् स्राह्मा निया सम् गर्भेषानानहनानाने स्वारिष्यीनाम्ह्री । श्रीमान्यक्राम् । श्रीमा ग्रेयः व्यापायय। ५५ :प्रयाधेः वियाञ्चेदः चरः वर्षुर। वियाग्रस्यः यः क्ष्मा न्याना विन्यम उर्वा हेन् केन केन अन्य न्यान विन्यम उदायार्स्स्रिनाया ने राजे मेरासे से से से सामाय सम्प्रिक्त स्वा धॅर्न:इर्न:म्राम् शुर्वा द्रिया निर्मा हेर्ना यह माशुर्वा प्राप्त स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्व र्भुत्रावर्षे वुदे । १ में दायकेषा पश्रिया वादा प्रवित् पार् शिस्या श्रॅग'मी'भ्रेर'यर'भ्रे'गर्हर'बेर'नश्रुर'नर'ग्रु'न'वे। शुरु'नर'श्रॅग'नर' वेंद्रशः श्रुं दिने विदेश श्रे अपन्य विद्याय व न्गॅ्व'सर्क्रेम'नहरक्'हे'ळे'र्न्यश'गुद्र'हुम्'नश्र्य'नक्रुट्'सर'वहुट्' नदेः द्वेम हे त्यानन गुरासुन्या के मिर्ने स्ट्रिया नुष्या वित्या वुः विरा नवर्षार्उयाग्ची केर्र्या भूत्रया महिरानदे के वा श्रुप्तर थे वृद्गि विवास वार पर्वे प्यर देवे दे निवास निवास राज सुनस सु पर्वे न

यानसून हे सामदे नसून गुः विना में रास इससा नासुर है। तुरसा सामर्थित

ने भूर बुद सेंट वी नक्ष्म ग्रुज्य दी यस क्षेंद्र वर्षेय पर वर्ष्ण न निवरणेत्राया र्रे रेरिनस्ना नुन्दर्भे ग्रास्त्रस्ते स्रे स्रे प्रसानित्र हैर युःसःगशुस्ते। सुन्यादर्शे प्यत्यानुगाराययाद्युरासे। देःसूर्रा सु ग्राच्यायाळेग्यायाच्याप्ताप्ता । भ्रुवायायो म्याया । प्राया क्षें त्र अः क्षेत्र पर पर वहवा विवाय या वा शुर्या पा या विवाय या वा शुर्या या या विवाय या विवाय या विवाय या व यान्नः श्चे : वेरः स्टा । यादः वयाः न्याः नदः सः न्याः या । नसः यरः नसः चरः चः नः धेवा विश्वः श्री विष्ठः यः न्वनः यः नश्चः नः यशः वर्षु हः नः इस्रशः या गः यानविःग्रस्त्र्यादिः क्रय्याञ्चेतुः तुर्माग्रस्त्राचार्यः विदायः विदायः विदायः न्वेवि.स.च.ता.ब्रह्मश्वाश्वराविदा विदायशास्त्रश्वरायायाः वर्षेट्राययाः रेस्राव्यावज्ञुरारी। । नक्ष्मनाज्ञारे प्रवाप्ताप्तापायायायायायाय्या नवे कुर वशुर खुंवादी। वि देवा शे शिवे नक्ष्रन शुन्द से वाशु अ दर कुन र्भुवंशशुर्वे नर्मः विष्यानी भ्रम्याया विषय विषय विषय सर्केन्यक्षेर्व्यान्दरव्याव्यवर्यार्वेद्राच्या विक्रियाः स्वित्रम् मदे कुर हो दिव ग्यार श्रेवा वी हो र प्यार श्रेवा विहास र विवाय र वि नहरः धरः दे 'द्रमा'द्रदः से सबुद्र संदे स्ट्रेंद्र संय से मुस्य सामासुस्य या है स

नश्यार्नेत्या ने न्या सामुत्य न्या स्वाय मार्थित स्वाय प्राय स्वाय प्राय स्वाय प्राय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स नस्रुवारात्यात्रह्यायि र्से केवारी धिवाविता सुन्यात्रे केया उसासेवारा र्षेन्द्राम्बर्भियान् जुन्नानायानहेत्रामाधित्रममा श्रीन्द्रामा निम्हर ग्रीयासी निहे नान्ता वितान्त्रा ग्री वितान्य सम्मान स्थान के स्थान निहास सम्मान स्थान स्थान सम्भानिक स्थान सम्भानिक स्थान सम्भानिक स्थान सम्भानिक स्थान सम्भानिक समितिक समिति नशर्मेद्रान्त्रशर्मेद्रान्द्रसेयानम्यमुम्यन्यस्म स्मान्त्रम्यद्भेषान्यः तुःयश्रःशेःयन्यःयःयःयनन्यःयात्रन्नःतुः केर्दे। ।नेःक्ष्रनःवक्रेःनःत्रत्वेनः निवशन्तरवर्षेत्रभ्रेन्यवस्रस्यायस्य देवास्यस्य देवस्यस्र्रेन्यस्य भुन्यादे न्गेंद्रायळेंगाग्रुयाधेदाय। देखाभुन्याशुन्व स्वेटादेदे नक्ष्मनः ग्रुःन्द्रः अप्यायः नरः ग्रुअः भः तः क्षुन्यः ग्रीयः है । क्षूरः क्ष्रीनः स्रुअः त्र क्रिंसरायस्य श्रीन्यितः त्रुवाः हु वार्षेत् होन्यस्य । न्यारे होन् रचवाः हस्यः यानसूत्रा दि नवितानिनासामार्सेतामास्री विदारमा इससा ग्रीसा ग्री न्वें राज्या विरामश्रम्य यह राज्य स्वर्धित राज्य में विराम हित्र राज्य है विराम हित्र राज्य है विराम हित्र राज्य है विराम हित्र राज्य है विराम है व वर्त्वाते भुन्यानभून पवे भून्या भून्यान्दे याते रहेया नित्रा सर्केना भ्रे ने भें न प्राप्त प्रदेश का मान कर के निया न्गॅ्रेन्सर्केमाने प्यरायशन्दारी प्रदेन्स यो क्रेंन्स स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र श्रुम्यामान्ता व्यवान्त्र स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वय हेते हिरावश्यात्वे प्रश्नात्व विश्वात्व विष्व विश्वात्व विष्य विश्व विश्वात्व विश्वात्व विश्वात्व विष्य विष्य विश्वात्व विष्य

नदे लेग्राश्रम्भारत्यो स्यापित्र के राम्मीत्र प्राप्ता सुरा

यश्चराश्चेर्प्यश्वराप्यापिश्व

श्चिरः नश्रमः र्द्धयः दर्देशः दृरः । श्रें श्रें राश्चे श्वें राश्चमः पर्दे । दृरः श्वें

श्चिरः नग्रमः रुषः प्रदेशयः प्रविष्यमा

यश्रामेश्रामित्रं व्यामे। श्रीश्री भे में मित्रामिश्रामा वित्रामा र्कॅर्न्स् अर्थि:इस्रायाउदान्तीःनरेजात्राद्यात्राक्षेत्रकाउदान्सुकानराङ्ग्रीका पात्र ह्यूट नशेयानायह्यापायानहेत्र त्या श्रुवा याप्यत् कट् वस्य राउट् वे र्श्वे व द्वो प्रदे त्यया प्रयाय प्रयाय प्रत्यु द्वी । व्री द्वी प्रदे त्यय त्ययः नर्यान्नत्त्रान्द्रमान्द्रमान्द्रम् न्याः भ्रेषानायम् स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्व नर्ने नाम्या सेन्द्री देन केन सेन्न यथा सेन्नो न यथा स्वानस्या गुवा । ने नि विव द्वा वर्धे वस्र रहिं। । नि वे व्यक्ष नि वर्धे वस्र रहिं। ८८। भ्रि.नःगुर्वः हुः नदेः नः ५वा । डे अः मुख्य अः श्री । देवेः श्रे रः नदेः नः ५८ः स्वानस्याम्स्याते सुर्भेरायया शुरावादा वार्रे वे द्वाराद्वा यः श्रें ग्रायः से संस्वतः प्रदे कुं यस चुरः नः यर से तः परः द्वो से द्वोदेः यश्रुं यश्रान्ते सूर्वा श्रुं निर्व नते सूर्वा वी हिन् पर सूर्वे केंवाश्राप इसस য়ৢ৴৻ঀঌ৾৾৽ঀ৾৾ৡঌ৾৽য়ৢ৾৽ঢ়ৢ৾৾ঀৢৼৼৼ৾ৠয়৾ঢ়৸৽ঀ৽য়৽৻য়য়৽য়য়৽য়য়৽ र्शे र्शेन् प्रतृद्द प्रवेष्य अप्य विषय देश पा उत्तर्व स्था से सुप्त वा प्रेर पा हे दिया वै। वरःमः अरुषः क्रुषःमः त्रस्या उर्दः ग्रीः प्यरः द्वाः मदिः क्षुः नः विषः मः द्वारः रॅदि कें अ'गुर्दा की माने माने अपने माने

यश्रादमेयाके'नदी यश्रान्नो'नक्ट्रानु'यश्रागुरादन्र्यानु'नरे नःविदःहःके नःवज्ञुरःय। यशसी न्नो नःकुरःहःयशःग्रहःवज्ञशःनःसूनाः नश्यःभेत्रः पुरक्ते नावतुरानशात्रामी कुष्वत्रशामी प्रमेयावरान दे भी देया ग्री:कु:वन्नर्यात्या सेना:पारकेट:द्वार्यात्या सेना:पारक्ट:द्वार्याया ग्रम्। विदेवा हेत्र सः रेवा विदेवा या केत्र प्रमा । सुमार्गेवा केत्र से हो मार्य स् है। विंदरमर:शॅदरवंदेर्जायवेदर्वे। विश्वद्यस्यसः स्टूरर्ज्यस्यः ग्रम्। विद्याःहेतःसःर्रेयःयमेः केतःवदेत्। वित्रः केतःम्याःग्रमः ग्रेमः विद्याः है। विश्व स्थय सुद कें गय श्वेद पाय विद्या विद्य श्वे । विद्य कुट हु यय ঀয়য়৻য়ৢ৻৾৾ড়৾য়ৼ৾৻৻ঀয়ৣৼ৻য়ৼ৾ৼড়ৼৠৣ৾৻য়ৣৼ৻য়য়৻য়য়য়৻য়৻য়ৄৼ৻য়য়৻৾ৼয়৽ रानश्चेत्रपादी खरामादीत्यमा मानमाहिरमायर्भेरत्रहेरायानस्यमः यहेश्यायदेश्वयायान्त्। त्रायान्तरकृत्तरम् अश्वयावृत्तम् । <u> इ.चक्च.र्टर.बुट.स.र्टर.धिट.कॅ.चक्चेट्र.चैट.च.र्टरा</u> अह्टश.धैंय.यंश. वर्त्वुद्रानवे ग्रोन् खूर्द्रान्य ग्रोन् र्वे ग्रान्द्रान्त्र स्त्रुद्रान्ते स्त्रुद्राने स्त्रुद्रान्ते स्त्रित् स्त्रुद्रान्ते स्त्रित् स्त्रुद्रान्ते स्त्रुद्रान्ते स्त्रुद्रान्ते स्त्रुद्रान्ते स्त्रित् स्त्रिते स्त्रुद्रान्ते स्त्रित् स्त्रित्रे स्त्रिते स्त्रित् स्त्रिते स्ति स्त्रिते स्त्रिते स्त्रिते स्त्रिते स्त्रिते स्त्रिते स्त्रिते नविवाने। सुरान्दासहद्यात्त्वान्दात्ययानकुःयार्थेन्याययादेयायरा ह्यों । गावर पर सुय विसम ५८ से गार्र पर से न ५८ से न न न **ब्रे**ॱस'स'६सर्स'विट'र्स्र'स'वाशुस'ॲट्स'शु'द्वा'र्स'र्ह्हेग्रस'र्स्स'ब्रुस' धरःकःवर्षावःरेःद्रअयःधरःग्रुयःभःत्रसयःग्नुरःश्चेःचरःगश्चरयःहे। कुः सर्द्धराल्यायया वर्डेसाध्रमायन्यानानी के वन्यावस्थापरे प्र र्रेर्कुः अर्कें केव रेरिवर वर्षावया प्राप्त वार वी के रे प्रविव वा नेवाया

यायित्राचायहेषायहेषा हेव त् जुराच देवे के वे कु अर्के केव सेवे वरावा यु: ५८: युवे: तु: ५८: युवे: तु: र्वे: ५० व्या: कुर: नर्वा: युर: विवर: कुर: नरःशुरा नर्डेअः ध्रवः यन् अः नःवे क्वः अर्ळे केवः सेवे वनः वः ग्लाः ननः ग्लावे नः ८८.भीषु:यं.सं.सं.पी.करावरी.क्षेत्र.क्ष्रा.क्ष्यात्रक्ष्यात्री चर्यात्री.क्षयवःसूर्यायाः सर्भे त्रायम्या वर्षे अध्याप्तर्भावि । वर्षे अध्याप्तर्भावि । वर्षे अध्याप्तर्भावि । वर्षे अध्याप्तर्भे वर्षे । वार खवार्या वर्डे सञ्चर वर्ष ग्रीस वगव सुखाया सुवे वर्षा वार द्याःखेवार्यास्य वाशुद्रस्य दिः क्वें स्याद्यायाया स्वातुः हुद्राद्यसः द्ध्या विसरान्यायाधेरमासुः ह्यायायम् सानुयाने। केंगानुसरायान्यकें। नः १ अरु मान्दर दुषः विअयः १ अरु स्टियः सुः है न्यायः मन्या गुरु त्या ने न्यायी भ्राना पर इर से रागुर है। ने से सस उत्र न्युयान इससा सु है। श्रेशुंणी निवर्षेश्वरासुदेशुंग्वर्श्वराह्मश्राशुंशुंग्वरावस्तराही वेश मुश्रम्भःश्री । ने प्यमः श्रृवः यायि माना यहे वा वी माना स्वराया विष्याया न रन वुद वे न स्वार्गे न कु द द । क्रिंद रामके र सुन ग्रे न क्रुद राम वे नः स्वाःरे निवे निता क्रिंत पार्दिन सुरुषा ग्री निस्त्र पाया ग्री ना स्वा निक्त इन्दा नन्ना उना ने क्रेंब मदेन क्रव माया है न स्वा में न्त्रा कें ना न्य वर्ळें न'न्राकुवाधिसराष्ट्रसरायदेन्नर'नेरामुरास्नेरायन्राम्से वर्गुराय। रटारेवे क्रिंता ह्या ह्या या या वर्षा हे या शुवदा वर्षिरा वर्षे वी वर्णे वा ह्यें द्रान्य स्थार द्वार विस्था देश स्थार स्थार हो।

देव ग्राम ने प्रमानी क्षे माना याम न मुनाम प्रमान के या प्रमे

नर्मान्यात्रम्यात्रम्यात्रात्रम्यत्रात्त्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम् विरा नभूवायान वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे निष्या वर्षे वरत केत्रायात्वार्यात्रस्रय्यायात्रियायायात्रस्ययात्रत्यात्रस्य । नरम्बन्द्री ।देवे:धेर्द्रम्यर्वामी:वश्याद्यार्थे:व्यट्यीन:अपविद्यहेशः शुःवज्ञदशःवशःवदेःसूनाः केवःसँ विश्वेदःशयः वःदशः वह्वःशयः ग्रुशः वशः नःयःदनन्दन्द्रभे। क्रियाययाया यानदःयः गुःन्नाग्नवयःयः नेदी। ग्रीनः अःस्वारेनाःवर्तेः नः नवेव। विम्यायः सरः त्याः प्रमारः त्याः । नेः नमः वर्चे.यदुःईशःश्रीवर्यः। हि.क्षेर्यात्रायक्चियोश्राक्षिरायःये विष्रावियोशः स्यानस्यावर्षेत्रा । देनविदायसान वारासानुसाने । स्रोससाउद न्यान्ते प्रत्येत्र पर्वे । हे सूर यस न मुग्य सर न केंग्य पाय । यस व्यायानदे न्यायम् नियविदाययान नियविदाययान नियाया उवरन्याने नरे पर्येर पर्ये । विशन्ता श्रेया मंत्रे तर्र हुर हुर प्रवरा । शे वर्षेत्रसुसःत् वहुरासे ह्या । कुःधे नेवाराय वर्षाराय स्वायाय । स्वितः ळेत्रावर् ग्रेमाना वरावगुरा वियान्ता भ्रेमाना कुराग्रमानिया हिरा म्। भिरविद्यार्थे दित्या शेस्र अभिष्य । कुः धेर विषय सासुत्र न धेरा । क्रित् क्रेव्यार्यं ने विवर्ष । विदः वर्यं विवर्ष विवर्ण विवर्ष विवर्ण विवर्ष विवर्य विवर्ष विवर्ष विवर्ष विवर्ष विवर्ष विवर्ष विवर्य व र्ना हु नार नर त्युरा । द्यो न सुर ग्रुस ग्रुस न्या हे द ग्री । श्री न वे व से वेंदर यासेयसंभित्र । कुःणे वित्रासार्भुदानाधिस्। । तुसाक्वेदानादान है निवेदा

र्। । इर वर नम्माम परि द्वो नि स्मा । नह्न स र न हुन र नर नि सूर वियन्ता क्रेशम्बराययायम्। न्वोन्तर्भे न्वोदेख्याक्ष्यस्य त्रुयःचया । भेः ₹ययःषः ने व्यदेयः पंते दः दः वयुरा । देः भः तः दगाः के दः दः यानश्चित्रयाग्यान्। कें स्वयाग्वितायाश्चे त्ययानवित्रः श्चित्। स्वानुश्चे त न्दः र्द्धः विस्रसः यः सैन्सः स्थान्यः व्यासः न्दः या स्वासः न्दः या स्वासः विस्रसः वि र्केंदे पेंद फ़द द्वार प्राप्त है। द्वित्य दे राम के लेट दे राम सम्बाधन ग्राट र्दा भिःसदेःकें यः शुःषदः नदे नः दर्भनः से नद्भन्। दिनासः यः सैनासः रान्ययः पराष्ट्रेना या अवन्य स्वेता । स्वानुष्ट्रे वा विस्रयायः र्शेम्यराष्ट्रित्राष्ट्रम् । न्यून्यम् नुभन्त्रात्रात्र्यम् क्रुयाः मुःयर्के मानः नानित्र वि:सर्व:कें:य:देस:यर:नदे:व:कुस:यर:वकुर | | दवो:दर:से:दवोदे:यस: यश्रायहेगाहेव.स.स्याहा । नरे.र्ट.स्या.यर्चा.पर्टे.पर.स्य.धे. व्यात्रमा विवासक्षरमाने प्रवी विदेश्यमायास्य पुरवन्। । प्रप्रासे प यन्वानिःहैः सूरः वर्देनः यरः श्रेन्। विश्वःश्री

स्थराश्चित्राचार्त्ता स्थरात्ते स्वास्त्र स्व

विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास

र्शे र्शे म्रे नगमानामानिया

यश्रायश्चर्यं र्रें तें रावश्चर्यात्रा यश्चर्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

यद्वीत्रस्य वित्राचित्रस्य वित्राचित्रस्य वित्राचित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य

वृत्यादित्यायावित्त्व्यायावित्त्वयायाव्याद्वात्त्वयायावे याव्याव्यायावे वित्याव्यायावित्राय्वयायाव्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्यावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्याव्यायावे वित्यावे वित्याव्यायावे वित्यावे वित्या

ঀ৾ঀ৽ৼ৽ৼৼয়ৢ৾য়৽ৼৼ৽ঀৼ৽য়য়য়৽ঽৼ৽ৼৼ৽য়য়৽ৠ৾৽য়য়য়৽য়য়য়৽ঽৼ৽ৼৼয়৽ र्नेत्रः ग्रीः र्क्षेष्राया यस्य या उत्तर्दा र्नेत्रा विष्य स्वर्थः उत्तरः श्रीः विद्यस्य प्राप्त । नश्चन्वयान्दर्द्वरानः इस्रयाने सायान्यस्ते हैं दे द्वापी नाद्याने राधिवर्ते । सुदे नन्यारी ने निविवर्त्ता ये नाय दुवे यथा सी यथा परि <u>५नावे खु:५८:बेर:ब्रें,ज:५८:ब्रॅंन:स५८:बे:ब्रेंन:सदे:५ने:ब्रें,८ने:व्हर</u> র্'রের্রন'ম'ন্ন'ম্ন'ঝন্ঝ'ক্রুঝ'গ্রী'রুন'ক্তুন'ন্ন্'রুন'ঝ্রাঝ্য'ন্মরি' য়ৄ৾৴৻য়৻য়য়য়৻ঽ৴৻৴ৼ৻য়ৼয়৻য়ৢয়৻য়ৢ৽৻য়য়য়৻য়৸৻য়ৼ৻য়ৣ৽য়ৢয়য়ড়ঢ়৽ र्वे। विश्वाशुर्यार्शे । देवे ध्रिम्यान इपवे स्वर्मे त्र्या शे द्वो न इर्धेन गी रुंष विस्राय प्रमुग्नास प्रते देव। द्वासाय प्रह्मा प्रायस ग्रामा से र्रेवि:क्रें) तें क्रियं प्रत्याया स्त्रीय प्रत्या । प्रत्य वित्र क्रियं या प्रत्या के प्रति या क्रअन्दरा किंकास्थाः क्षेत्राच्या कार्याच्या विष्ट्रेत्र सम्बद्धाः कुं ते : र्ढं य विस्र रायस मान्य से न विस्र मसूर र स्या सुर र से वि सूर्र्युयाविस्रासूर्रेष्यापरार्द्ध्यासेस्रापरापरायसेदाद्रात्र्युराकुः बेन्ग्यमा विर्मित्रे वेषाळेव पर्मि विषाञ्च व वे विवाह ञ्चन है। यदे श्वेम र्रेदि:सर्दे:प्यस् द्र्यो:पदे:प्यस:पड्डार्से:पदे:द्या:यीस:सदस:क्रुस:सु:प्यूर: म्। नाराहे श्रेरावर्केंदे नर्रात्र वात्र निवास स्थानित विवास सामा श्चेनश्चरत्या द्वाराक्ष्मायदे भूत्र राज्ये चेनाय केवर्ये या स्री राञ्चाव बेर्यायपर्यापर्ये विषय्ये विष्युत्र क्षेत्र क्

स्वाय्यात्र क्षेत्र विष्ट्र व

यशन्दरव्यशन्त्रमान्दरयान्वरायान्यस्याम् व्यार्थिदेशयशः वर्चर्यात्रा नगरःसेंदिःवयावर्चयात्रा वयाग्रीः इयात्रेः ग्वन्यावर् वसूनः नर्दे। । ५८: से.ज.चाशुस्र। वचा सेंदि जस जस ५६ स.५८। क्षे.जट ची छिन धर-१८। ने १५वा वी वड्ड शर्ज वसूत धर्वे । १८ से दी र्श्वेवा वर्षे ५ १४ वाट बेना वर्ने वर्ने न्यान्य न्याने निर्देश के अन्तर न्याय प्राप्त के वर्षे द्यार र्टा अवतः क्षे : भूरा गुरुष्ट्र गुरुष्ट्र । यर पा गुरुष्ठ । यर पा गुष्ठ । यर पा गुष्ठ । यर पा गुष्ठ । यर पा गुष्ठ । यर पा गुष् ने'य'र्श्रेग'गर्डेन'ग्री'गवि'दी र्श्रेग'न्न'थ्व'मदे'सेसस'ठव'हे। ने'यन' गर्सेन्यःस्यार्म्यः स्टाकेन्यार्भेन्यः क्षेत्रः स्वाप्यार्थेन्यः स्वाप्येन्यः रायान्वित्यात्यात्र्यात्र्रिन्द्र्यात्र्रीत्राचित्याय्या र्येवाः कवायायार्येवार्या वेशमाशुर्श्वा । नश्यारायामाशुय्यायय। यत्रेनेशदी नविः से। नविः सेसराउदाक्षातुःवासेसराउदातुःवतुःवेसामाद्रासेसराउदासेदामरा वर्षेयामान्द्राक्षेय्रयाच्याचेयामान्द्राक्षेय्रयाच्याचेयामान्द्राक्षेयामा न्दःसेसस्य उत्तुः त्रुः नेस्य प्राचि हो। त्रुः नेस्य न्दः मेस्य प्राचि स्र सप्तियानान्ता महिसासन्तान्त्री प्रतियान्त्री । प्रतीयान्त्री । प्रतीयान्त्री । प्रतीयान्त्री । प्रतीयान्त्री व्या उर दरेर्दा ध्रम वितार्वे द्रायम प्रमा स्थान सर्केन् श्रे वर्त्र वें र वर्ष नर्षन्त्र। नर्रे र गविषे श्रेमा सेन् प्रश्ने प्रश्ने प्रश्ने वर्षेयायाविषाचार्येयात्रीयात्रीया श्रीमायद्वीयात्रीयात सूस्रामागुरार्सेनार्से। यात्वासामाधिनारायन्तिसासामहायानासी नर्वोसा र्शे । द्धंयायरे ते भ्रमासार्ग्यायापर हे रेमसासर ने सामर होरी । हें त बॅर्यस्यानी र्वामध्यमारास्ट्रिंग । गुन्रह्में स्वी नयरायस्यरेंद्र यदे । श्रुरानाया श्रुराना से दी रहा में या ग्रुया यह या विदाने ही है । इस में या विदाने ही है । इस में या विदान यमिष्ठेर्यान्। ज्ञान्या स्त्रा हे क्षेत्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र रेग'स्गर्भ'ग्रे'र्स्नेर्स्थ'र्स्नेर'न'ग्रुस'स'य'र्सेग्र्स'म्याप्ट'पट'र्स्टान्दी । सबर ब्रुगाने। श्रुराय देवे मेन स्थान स्थाने देवे के दसर् सामान्त ग्री कें भी नर्दे | दे प्यट सहैं द त्यश इंदर सक्स द भी न त्या | दर्देश से द सुर्यान्वतः भ्रेराष्ट्री नियान्यस्य स्वीत्राप्ति स्वीत्र स्वीत्राप्ति स्वीत्र स्वी

याचित्राचरायेत्राचित्री वाल्त् च्री सार्षेत्राच्याच्या स्था व्याचित्राच्या व्याचित्राच्या व्याचित्राच्या व्याचित्राच्या व्याचित्राच्या व्याचित्राच्या व्याचित्राच्या व्याच्या व्याच्याच्याच्या व्याच्याच्या व्याच्याच्या व्याच्या व्याच्याच्या व्याच्

या विद्यान्ति स्टान्स्य या विद्यान्ति । विद्यानि ।

स्वाप्तर्याणेस्यवित्वित्ते वहुवाप्तर्यः स्वाप्तर्यः क्ष्र्यः विद्याय्यः विद्याय्यः विद्याय्यः विद्याय्यः विद्यायः विद्य

उदादी रना हुर अदि । रेगा था ग्री था नशुर था पति नगा अर अदि ना रहा यी साया से वासाय दे वाहेत त्र सार्चे सार्चे सार्चे वा वासार्चे न सुरार सारे प्रवासे र वःस्टानीयःग्रहःनशुह्यादाद्य । क्रुवःसःद्रः नङ्गीयःययःनशुह्यःयदेः ने पाळ न प्रते विस्र राज्य राज्य । पावन की राज्य पावपान रे सून पर्कें र यार्वेनानाधेसर्गनासुरसामस्य रहानीसान्नानीसार्वेनानाधेसासेहा धरःवसूत्रिं हिं तें केत्रे संश्राण्या हे द्राय्या वर्षा भी भी श मन्त्रे म्हामान्त्र मान्त्र मान्य मुद्दी । यद स्वा भेद मन्दी सहय भूमा गर्नेगर्भारादे प्यत्रायां स्थित द्वेत हत् वहरू श्रीया प्यताया सेतः रायारावे वा । विर्दराय वरायसा हो वास्पर्दा । वास्पर्यस्थायवा सरा नर्भेर्द्रान्याधीत्। विश्वामाश्चर्याते। हेर्निकेत्रान्याधीतायावीयात्रा न'ने'मि'न्र'न-१नदे'यस'न्र'हितु'न्र'नु'सँदि'सर्न'न्र'कुन'ग्रे'नुन् यन्दरम्दर्भी विषापर्दे विषायन्दर्भ शुक्रे । विषय श्रेष्ठ स्वी ह्या स्वी तुः इस्रशः ग्रीः हे प्विंदः द्रायकेंद्रा हेव ग्रीः यादशः द्राः केंद्रे स्वर्धिः सर्देवः <u> शुअप्तर्धायाने या गार्ने दासंदेश अर्धे गुश्रायनर प्रतुर उदार्द्य अपाय</u> र्शेग्राश्चार्ये ।श्चित्रन्देर्विन्हन्त्वन्याग्चेया ने याध्याक्षेत्राचानित्रा ।न्या क्रिंश्यक्रिंद्रित्रः भ्रार्थियायाद्रा । श्रिंद्रः क्रुवः स्रोध्ययाद्रयात् व्यायाय्याद्रयः र्शेग्या । यावतः से ५८६ हे हे न ५६५ । वाया ५८५ वायया न १८६० । १७१वासीयादे में अन्याद्या विकामासूरकाते। हैं में के वार्यका ग्राहा है स्था यश्रिकार्शे । द्रुकारीवारादी ह्रुप्यळवादह्यापादादाह्रुप्यळहात्रेश्रुया

अन्दर्तु विष्ट्रिया परिन्तु कुरन्दर नठरू मान्य निर्देश नावरा यावरा यन्तरविषायःश्रुत्रसे तुर्विषायः स्वाप्तर्थे । क्रॅंन'वे'यव'य्वे'यर'न्'वेन'यर्वे ।श्चेंन'न्येंब'हन्वन्य'ग्रेया ने'य' रुषाभेत्रचुनित्ते। ब्लियळ्त्रव्ह्नान्द्रभ्रुष्यासन्द्र। विःकुटन्द्रवस्य भ्रास्त्रभात्रा स्वाप्तस्याधेर्भ्यानरे स्वास्त्रा । प्रमाप्तम् न ग्रवसः र्सः सेवः धेव। विसः म्रास्ट्रसः हे। हैं में केवः में प्यटः हे प्रदः प्र याष्ट्रन्यम्'ते'हेत्'स्रित्सिद्र्याण्यान्द्र्यासेत्न्यम्'सेत्ना श्रीम् राम्युस्ते राम्यो स्वामा स याष्ट्रा के श्रे मा नमसामाया ग्राह्म यमा वर्षे में नम् नायमा है या नेरावर्षेत्रायालेत्रायात्वियानार्वेत्रायराम्यास्यास्य श्रे क्षर्भार्श्वे द्राष्ट्री सम्मानायाय द्राप्ते भाषिकामायाय विष्याय सम्मान्याय सम्मान्याय सम्मान्याय सम्मान्य र्शे । सर्हें दारोयायमधी रदारी प्येदारियद् ने मारी मात्र ही रहा यद्रायावर्त्रःश्रॅट्याययाययात्र्यायय्यात्रः स्वाय्याय्यात्रः याववर् विवायो स्कृत्यः याने त्यसामान्त्र संदे धीता समायन् भी सात्र सात् माना सामाया द्या माना है। वशुर्वित्रविरस्यायात्रियायत्विर्वे । दिव्यायाय्यायायायः स्ट्रा दे। ।गुन्रह्में दे। क्षेःक्ष्रभाष्य ह्यें नाय वर्षेन्य वर्षेन्य वर्षेन्य ह्यें । ह्यें म नदी नर्भानायमा नावनायार्यमानायमान्त्राचित्राच्चापायायायाया वर्षेयायम् ने सुन्तु यान्देसाम् विदेश्यमायमा सेनामान्त्र निन्ते। सून्स

न्हें अपि । यह र है अप्याय प्रति । यह र ह्या है । यह र है था । यह र है था । यह र है । यह र

नह्रवर्त्रञ्चर्त्राविरवे। अर्घेर्त्राच्छ्रित्रमान्धेर्त्रपाह्यम् नेयानानित्रान्ते प्राप्ता वेष्ट्रिया नामित्रे वित्राप्ता वित्रापता वित् में निर्मा । निर्मास त्यामा सुरायमा तर्ने निर्मा सहर नाया सार्वेरा नर्नश्रुर्न्नर्द्रास्त्रासर्वेद्रान्यसर्वेद्रानर्न्नश्रुर्न्नरास्त्राम् र्शे । हिन्दे सें द्रश्चे गशुस्र सें । गुन हें द्रिने य द्रश्ने य न हें हु न र वर्देन् पर्वे । श्रुर्न न वे। श्रुप्तवसाउट से श्रुप्तसाद्दर पेत्र पदसासुका नश्चर्नावे अळदा अशा श्रेंद्रा भेंद्री भेंद्रा भारती अप मार्स्य मान्द्री र्देन:हे:वर्र:वेगागे:धेर:र्;श्रूर्य:ग्रट:वर:गश्रुर्य:शें। ।वर्देर:वह्ननः *ॸॸॎख़ॱॺॸॸऄॎॹॱॾॖॸऄॎ॔ॱॺऻॶॺॱॺॱॸऄ॔ॺॱॸॺढ़ॸॸ॓॓ॱॺऻॶॺॸ॔ॱढ़ॹॗॸ*ॱ नरमाशुरश्विमा अहिन् इत्वोयानुम्मानीमिन्नायान्यस्य यसर्रुर्युर्यर्यस्य १८५ । वर्ष्यायायस्य दे। देर्वायी सबर् ब्रुवायी क्षराचानक्रीरायायायराची याञ्चयाप्ती याच्याची याच याच्याची याच्याची याच्याची याच्याची याच्याची याच्याची याच्याची वै। यर्स्यार्से अर्ची नाधेवाहे। अर्ची वर्ष्ठेमा नगुरा परं अर् पर्वे नर सह्दित्वोयायस्य नित्री । देवे सासाद्य क्षेत्रा स्वायायस्य । सा यदेःगविःदी सेससःउदःसम्बदःसःन्दःसेःसम्बदःसःहससःसी । नससःसः यानारायायया वर्षेयान्दर्हेन्सेर्यान्याने स्राचीन ही । ग्रान हिंदि ही सेसराउदासमुद्रापायान् हो नमाये निमान्या सेसराउदासी समुद्रापाया

भे तर्भायम् पर्देन पर्दे । श्रुम्य निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा । गरः धरः दुरः वर्गः वर्द्देन् चुः श्रुद्रः भ्रेष्ठ्रः गरः दुरः वर्द्देन् भः परः न्तरः नुर्वे भः पः र्राविव गर्रिर में भ्रिर्त क्षायर विवादी वसुराय स्था समय वै न् हो नर हा नश्च स्थानर रेगा नर होरी विशामश्चर सं है। वही न सं न क्रियाः श्रूर्याः यो निर्देश विद्याः स्त्रुत्रा स्त्रिया विद्या गुरुत्र रायद्र श्चे प्रदेश्वाविर शुर्र प्रदेशे अअअ उठार्देश । प्रयाय प्रदानिय पर् बॅर्सिने स्रम्यविवार्ते। गिवार्से मिने स्वास्त्र मिने स्वास्त्र मिने स्वास्त्र मिने स्वास्त्र । र्श्वेर्रायात्री नदेवासी नदेवामारायर सुरानसारी माराससारी सामित्री सुन यश्रञ्चर्नियसःद्वाधिसरास्यागुनःश्चित्रित्रःग्चे द्वीत्राम्यस्य स्वराने स्था स्वारास्यान्त्र । सन्नर्त्यात्रे। नस्याया सन्नर्ते ने त्यारमा स्व য়ৣয়৽য়৾য়৾ৢঀ৾ঀয়৽য়ৠৼয়৽য়৾য়৽য়৾য়৽য়ৼ৽ড়ৢয়৽য়৾য়৽ড়ৢয়৽য়৾য়৽য়৾৽য়৽য়৾য়৽ धरःसर्हेन्द्रमेषायश्चान्त्रम् । प्रमानग्रयायश्चानिःदे। देवासेन्यः वर्षेश्रामवी विश्वासर्भ्यास्थ्याम्बर्धर्याम्यास्य वर्षे स्वीति वर्षे यदेर्देवरे हेरायरेरावर् केशवश्राचाधेवरो वर्षायाँ हितेष्य भेर्वेश्यदेधिर्दे किंत्रसें अंतर्भेत्र विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य दी सत्तर्रेज्ञत्तरे शुरम् स्थान्य स्थानमा स्थित । श्री मानिया स्थान या स्थान या स श्चानराहें सामर्दे । सबराब्यादी न्यानग्रयाञ्चराबेदारादी । ने प्यानग्रवी नर्त्र-१८१४ से प्रवन्धे न्द्र-१४० दिन सक्ता वर्षे न्या द्रा स्वर्धे न्या वर्षे न्या वर्ये न्या वर्ये न्या वर्ये न्या वर्षे न्या वर्ये न्या वर्य

विःश्वान्द्रात्वान्यायः पुर्वान्याः विश्वान्यः विश्वान्यः वित्रः विश्वान्यः विश्वान्यः

यद्भवःश्रेश्रश्ची विश्व विश्व के के स्ट्रिस्ट के स्ट्र के स्ट्र के स्ट्रिस्ट के स्ट्र के स्ट

<u> थृव प्र प्र प्र ज्ञान्त्र भी में राष्ट्र भी मान्य प्र प्र प्र प्र में प्र भी में प्र प्र प्र में प्र प्र प्र</u> र्रे.श्रम्प्रमम् होत्रप्रभावकुस्रभायवे सेस्रभात्म प्रमानित्रप्रमा वी'वार'धेत्र'स'रे'वर्वा'वीर'शुरु'ठेवा'श्रुस'स'वत्तु'वदे'सेसस'र्र्र यन्ता नम्मनः सेस्रसः नेसः में स्कानः सेन् हिराहेस न्सेम्सायसः नेसः सम् वर्चराना भी श्राम्या ने या ग्रीया में ता प्रोस्या में स्वराप में स्वराप में । से स्वरापे भे'न्वो'न'नकु'मा'त्य'क्य'दर्चेन्'भेंन्यदे'भ'त्यभ'र्भेन्य'नम्बर्धा । लूटकाश्वाका कूर्यकाराष्ट्र यथिय प्रमान क्षा क्षा की की का विष्ठा की है। <u> न्रॅब्रने नन्यायी ज्वरन्यू र केर केर के पर्रेन्य निवर्न्यू र सुराव के या रुटा</u> য়ৢয়*৻*য়৻ৼঢ়৻৸৾ঀ৾ঀ৾৻ঀৣ৻ঀঢ়৻ড়ৢঢ়৻য়৻য়৾ঀৢয়৻ঢ়ঢ়৻য়য়৻য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়৻য় थॅं जुन्यवरने क्षरको अर्थायन्। क्री अपन्तायने प्रति संस्टर्य ८८.कुंषा उत्रायार्श्वे वाश्वासरावाब्दा ग्रीशालेशादा है। सासुटा श्रुसामा ५८%। नन्गायाकुयार्भे न्दरनेदाद्भेदाद्दराद्भिराह्म अनिकानगुराक्षेत्र सुराह्म <u> ५८:३४:वें ४:श्रेव|शर्वेन'दें ४:४५५८ श्रुध'य'५८। ग्रेःथ'न५वाधेःय'य</u> <u>अूर्भुअवअनेवेक्ट्रिंप्लॅ</u>ब्यूया हेन्या इन्यार्थे प्राप्त हुन्य न वहैगा हेत तथा ग्वा वद्या प्राप्त करा हो ता हो प्राप्त करा है प्राप्त कर है प्राप्त कर है प्राप्त करा है प्राप्त करा है प्राप्त करा है प्राप्त कर है प्राप्त करा है प्राप्त कर है प्राप् मन्भेत्रमान्ता स्यान्त्रम् स्वत्यान्त्रस्य स्वत्यान्य स्वत्या मासकुरमामराश्चेत्रापि छित्रायायेत्रापानश्चेत्रायाया स्वासीया NI N

मर्वेद्र-श्रेस्रश्रःश्रेष्माविष्ट्रा यद्भविश्यः द्रा हेव्स्थ्रेट्र स्वी क्षेत्राः हुन र्से हे भून निवेद दें। गुरु र्से म्हेन नहेना साम से निवास स्टिन स है। नगर्भः नर्भः नर्भः नर्भः नर्भः न्याविवः वयः स्रामीः नर्भो अः विद्याः ही न म्निन्दार्च स्थान्य स्थान स तुरु। यत्रमः त्रुपादी यहेषाः यः सैषार्यः तुः यसः देशः यदसः वषाः यदरः नर्दे। विदेखितक्ष्यं क्ष्यं ग्रे-कु:वानेन्द्रास्त्रवुद्रासंदेर्केशस्त्रव्यद्रास्त्रम्त्रादेष्ट्रद्रास्त्रावे सूद्राची सेस्रा ८८। गर्देर्या होर्याया श्री पर्वेर्याय श्री पर्वेर्यये श्री स्थाप्त पर न्राधरानुः द्वायानिवासेवासानिकानिकः विदायानेन्यानेन्यान्यानिवा नु पहीं व सदि से सम्मान्या नहेगा सन्देग सन्देश सम्भान स्वर् नदे सेसस न्मा वर्दिन सेसस न होन माने के से न है स न हो वास ययात्त्वुरानाधिः भेषामया विषानीया है या देवा ये ये यया है। ये यया थू। दूरा ने स्रेन मस्य राज्य मित्र से स्याधियाया ने मित्र मात्र मित्र वेद्रअः श्रुद्दिन्द्द्रवो नाया श्रेवाश्वासा के वदी वा कुस्रशास्त्र श्रेवामा द्रा यायाद्यादम्र्येर्श्यद्यस्थात् क्षेत्रात्राध्याप्यार्मेत्र्येययार्थे।

विया प्रमाश्च प्रवित्यं वित्रे वित्रं प्रवित्रे वित्रं वित्रं वित्रम् या विषय प्रमा

वर्ष्विमान्ती भुरामायदेनमामविःर्देनायायदेनायरावर्ष्वभागवि ।हिनः

गुनःश्चिम्त्री श्चरायायनेवर्यायरायम् पर्देन् पर्दे । श्चिरायाची वर्षयाया ने लार्श्वे राजान इसमानि । ने लारानि है। कु न्रायम् राज्य है । न्दःधिन्दिर्देशस्यास्त्रम्यायनेनस्यादि । क्रुःयासून्यादी वेगसः नरःश्रुत्यत्रःहेश्यसःश्रुत्यायःश्रीवाश्यःश्रीत्रःहे विश्वर्यात्। यःश्चरः नः वी ने पिष्ठे शः श्ची इस श्ची वा से प्राप्ति । श्ची ने प्राप याग्रुसायम् सर्वेदायनेनसामान्दायद्वेत्रमये होतायासूरानही या न्दाया सेन में विशासमें विशेषित मी होन सामा सुरान है। वह माहेन स् धे से दर्दे विश्वास्त्री । भ्रे निरायक्ष्म स्वति हो द्वाराय भ्रम स्वति । से स्वया उत् नह्रमाने हुं ना से दार्दे विमानि विमा नर्डेसम्भर्भग्रास्त्रेन्द्रित्रम्प्ति । स्वर्ष्यम् व्यादि। सुर्म्यम् न्यान्यस्रे मर्दे। विदे प्यर द्वेश हैं ग्रम है। ने य ग्रहे दे में न न विद र से ने य प्र र्हेरमः प्रदेश्मेम्रमः द्वारायायात्रायात्रमः द्वार्श्वयात्रीः सेम्रमः द्वा द्धयानवित्रसेत्रसंदेर्द्धसायादेशस्त्रास्य हिंगास्य स्वाप्तर कुत्र नु विवास रादे से समान्ता के तारा निरास के निर्मा के तारा में का निरास के निर्मास के नि र्शेनामा से दिन्ते मा सुराया प्रदेशमा समा स्वाप्त समा स्वाप्त से समा स्वाप्त समा स्वाप्त समा समा स्वाप्त समा स वैवाः क्षुः ने अः रें क्षः नः क्षेत्रः केरः केरा न्द्रीवाराः वर्षाः नेराः वर्षाः निर्वारा वर्षः नियाम्याञ्चेत्राञ्चेत्रार्वेद्वामदेश्येययाने ख्रामे नियान्तर्भवरावे । निःख्र सःकंदःवःवे से हें ग्रथः से विया प्रमः श्रुः नः ग्राव्य प्यदः पितः विदः से विद

यहिस्रामाधुः प्यान्तस्त्र न्याः यहिस्रा यस्य स्वर्ते छैः प्यान्तर्म व्यान्तर्भे न्यान्तर्भे न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्तर्भ क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्यान्त्र क्षेत्र न्यान्य क्षेत्र न्य

होत्रायानावनात्रे प्रदेशत् प्रद्या केराने देश मध्यायाया महित्यात्रा हे वर् नः अर्बेदः वः धेर् न् नावः नः न्दः धुवः देदः से व्यान्यस्य स्वेदः नयस्य । मदेखें अअअ ग्री अ ग्री द्वारा ह्या हुन्दरम् अध्य स्वर्धे द्वारा हिया हुन्दरम् स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये षर: सर: र्, वार्सेर: स: र्र: सूवा वस्य: इवा से वस्नेर: सरावार्सेर: स: र्रः वहिनायायानभ्रोत्रावयान्यायाचीत्रात्राचन्त्रायान्त्री नार्येत्रायात्राव्या य.८८.र्ज्ञ्चा.चर्चा.च.८८.चग्रुच.त.८८.४४.वचा.तर.र्ज्ञ्च.च.८८.र्श्वेट.हे.चर. ह्ये स्वारं पर्देव निव न्या मिर्देव मि गठेग'नवेद'र्'नक्ष्रन'र'प्याद'णर'क्षे'येद'य'क्क्षेत्र'न्रानकुर्'न्रान्यु नर्शेन् न्यम् । नृत्यम् । ब्रॅं क्कें राजन्दावर्त्रायदे के अअवाया के निया की निरायन्ता त्यात्या *য়ुॱ*दॅॱळंॱढ़॓ॺॱय़ॱॸ॒ॸॱॿॖ॓ख़ॱॲॸॖॱय़ॱॸ॒ड़ॕज़ॱय़ॱढ़ मर्दे। विवासम्अर्देवसम्बेवस्यस्य श्रीनित्री सर्वेद्रेषु वर्तेनसम्ब वी भ्रायायायहेव प्रथा के अप्येत् प्रयाया के त्राया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व भ्रे प्रावे निष्य में अप्ये निष्य के मुक्त मुक्त निष्य निष्य के निष्य में भी निष्य में र्ने सूर्याय सेवाय सेवा सुवाद सुदाय नहेत्र हे वार्येद सर्वे विवेशययः ध्रेपादी र्नावर्री में राक्षेत्र में प्राचित्र से स्वाया से माला साम्या साम्या स *ज़ॱ*ॸॸॹॖॱय़ॱढ़ॱज़ॸॱॵॸॱॻऻॹॖॻऻॴॸॸॸॱऄॗ॔॔ॸॱॴॸॸॱॿॖॸॱऄ॓ॴॴॸॸॱ

स्यान्त्र्यान्त्रः स्यान्त्रः स्यान्त्यः स्यान्त्रः स्यान्त्यः स्यान्त्रः स्

ञ्चनाः अपन्ताः प्राचित्रः यादिता अपना द्वेना यादितः या स्वरासे स्वीता यादितः या स्वरासे स्वीता यादिता स्वरासे स धराग्राया अभिवायेवाविष्यशास्त्रीयादी सरामें प्राप्त वारामें प्राप्त प्राप्त वार्ष नह्रम्यायायात्त्विरावर्धेमायान्दरन्यम्यापान्दर्यमेषायान्दर्यस्य न-८८-क्रूब्रावित्रावाद्यमायान्द्रम् नित्तुः कुन्यादर्यमायान्द्रम् *५८.५ब.५क्रू.५.५८.४८४.भू४.५८.५वे.५५्४.५८.*४ळू*५.*५े४.कु. इरायर्चे नायर्वे विवानाधेयानि यर्षे नात्रे वह्नायर ग्रामेर मास्यस्याने निराद्येता नदसा हुत्ये साम्यन पा द्वाया मित्र स्वर्म स्वर्म निर् र्श्वेदःसन्दरन्ते। श्वेंदासन्दर्गे स्वंदासायाक्षयार्थे हो दारान्दा यदायमा भेवःसावरावह्याःसादमा त्याभेवासात्रभेवायवयायायसाञ्चरा अ:ब्रु:न:ळॅट:नवअ:वठ्:य:५८। नव्य:शेव:य:अर्ळेट्:हेव:ग्री:हे:वर्वेर:५८: न्नो प्रमुक् क्री गुक्र न्नाय राज्य राज्य र्थे क्री ना ह्रक ना ने प्यय रिश्व राज्य राष्ट्र राज्य राष्ट्र राज्य वै। ग्वितःवर्देन्छेन्न्रसुन्न्वर्वेन्यसःर्देन्यसःर्देन्यसःर्वेशनह्नुसुन्नः য়য়য়য়য়য়য়য়ৣয়য়ৣ৽য়ৼৢঢ়ৼয়য়ৼয়য়য়য়য়য়ৣ৽য়ৼঢ়য়ৣ৾য়৽ गर्डेन्'स'र्सेन्।स'म्रासुस'स्रेन्'नर्सेन्'स्र्यन्ति ।न्नो'यन्त्र'न्ते'स्रिन् नह्रमञ्जूषानाने प्रसम्भारत्यो । सामाने प्रसामी । सामाने । धुव देर से व्यान ने या पार्ट द्वी निय ने या ने या हो व रहा साय हिर स्वाय

न्नो'त्र्व, त्र हो न्यान्य प्राची व्याप्य क्षेत्र प्राची विद्याः विद्

नद्दनःशेश्वश्चाविष्यशिष्टादी न्ने प्द्वन्तः श्रेष्टः हेतः श्रीः निर्मेरः व्यादर्दिनः पान्तः विष्यशिष्टः श्रेष्टः श्रेष्टः प्याद्वः प्रस्तः श्रेष्टः प्रस्तः प्रस्तः श्रेष्टः प्रस्तः श्रेष्टः प्रस्तः प्रस्तः श्रेष्टः प्रस्तः प्रस्तः श्रेष्टः प्रस्तः प्रस्तः श्रेष्टः विष्यः श्रेष्टः विष्यः प्रस्तः श्रेष्टः विष्यः प्रस्तः विष्यः विष

मनी नुमामाशुक्रास्त्रभने माशुक्रासे न मान्यमार्थे साम्यसामान निस्तर स्थित नर्दे। निष्यरायाती नगे से नगे दे त्यरायाती राध्य में मार्थ न स्वाप्य में प्राप्य प्राप्य प्राप्य प्राप्य प्राप्य नक्षेत्रमें अर्थायत् मुर्था अर्द्ध, मुर्था स्थानमानीः नर्वरम्यसम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः नित्रम् सम्बद्धाः यश्रिः अरिः अर्धे अर्धे अर्थः क्रिं । यावे दे। अर्थः क्रुं शर्के अर्वे अ इस्रायायायवायोर्दि होतायद्या । स्रायम्बर्धियायायाद्याप्तादेयाः प्रायम्बर्धा हे श्रेन पर्केंदे नम्न्या विवा हु देश सम् श्रेनि नदे प्रश्ना हुम्या है प्रत्या वा न्वो न ते वित्र हेवा ग्रम् से होन् न दि । से समुद्र मुँग्र सेवान दी से <u> न्वो नदे सुवाय भ्रम्य हे पर्दे न कवाय नम्बाय स्यान्वो नदे यय भूदि ।</u> यदी ।यनेशक्षेत्राययाग्यता ह्यान्त्यस्व यस्वे न्त्रायहेव से बेन्। पिर्वः हवः पर्वे व्यवः पविः ययः हुनः पवेः यय। । नवोः ननः से नवोः इयः श्री । ने प्यर न् में द सर्के मान्य श्रीम्य स प्यें द एव प्रतर प्यव स्वरे माने प्रता यः अप्यः र्शेम् अप्यः यद्गे म्यायाये मिले मिले अर्थे से प्रयासे मिल

गहिराया हिराया हैं नर्या में नर्या न्या के न्या है। न्यों न्या के न्या के न्या विद्या के न्या के न्या

<u> २८.वि.व.भ.बू.च.कु.चढु.बुर.र्स्</u> । ने.लट.र्घ त.कुर.वीवची.जश्च.प्युट. नःक्षानुःक्षे हेः भ्रनःत्। अरुषः क्रुषः नरः क्रियः नरः नगेः वर्तनः नगः वर्षः व कुर-८-विगान्नरशन्यपरकेन-धेर-विगुर-हे। शरशन्तुश-५८-केंश-५८-<u>५वो वर्त्त्वः क्र</u>ीः अः ब्रीकः धरः <u>त्र</u>ुरुअः धः दे ५५वा व्युरुः युक्तः धरः । श्चरास्यान्यान्यान् याद्वराक्ष्याः वित्यान्य विद्यान्य वित्यान्य विद्यान्य व नमुश्रामान्त्री कॅरानासार्श्वेरानरान्नामरावशुरानासेराने। विराध्वीपति धेरा गयाने वयान् पर्नायने स्वीतियान ने ने से समाउन न् सुयान केता र्रेरः सूरः या गया हे विया रुष्टरुष्ठ रे से अधिव व वे रे वे वरा मी वरा सवरा बेर्'मदे'वर्षेर सुर्'त्वा केर्दे वा से वा स्थान वाश्रुद्रशःश्री । विद्रायरात्राद्रवो वित्रु विश्व विश्व स्थायत्राये हिवा वाया वर्चर्यान् । द्वारा क्षेत्रा विष्या विषया में स्वार्थ ने स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के र्रमःश्चे न'न्म। नक्कु'याधुक्'रेम्'र्याक्षम्'यम्'यम्'यम्'र्येषा'न्वेव'यार्र्यन्न्रस्यः ५.५५.५मूरक्याः अर्धः स्ट्रिशः है। वैं सर में र सूर्या नस्य हैं र न य विं के सर है य र से य के नर हे अदे स्ट्रेट रें यं राग्युट रास्त्री । गाव्य पट द्रेगे पर्यु पट द्रेगे स्ट्रेट प नर्थे अर्घ से हिंग या से ग्रास उसा धर स्ट मी सार्थे दाया दर हि सामा या क्षेत्रः नः नृतः विराधियायया वित्या श्रेति । नृतः वित्यः नित्यः वित्यः वित्यः वित्यः वित्यः वित्यः वित्यः वित्य नःलरःविवः हुः के से। सरें दे हिदायया शुः में हैं व सें द्वापीय सा । दर वी प्यतः व्यवा वा हुन रूपः सुदे। । द्वो व्यत् द्वा द्वा व्या वर्षे रूपः वे तर्या । वि रूपः ।

क्रयायाञ्चेत्रेत्राच्या । यो खेरदारायाक्षातुः धी । श्वरायाची खुराखार्चे सामा ह्मदी । निर्मो प्यत्व निर्मा प्यया प्याप्त निर्मे प्यत्व हो । प्रमो प्यत्व हो प्यया विषय हो । श्रुन् । श्रुवःर्यः नदः वे तदः नवे स्रो । ह्यूनः न श्रुवः हे श्रेवः स्रवे । हिसः सरः शुर्राम्याद्रमे वर्ष् स्थित्याञ्च द्राम्य से से सि स्थाय स्था स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स <u> चुर्यास द्रा विश्व संभित्र के दर्श द्रा विश्व स्व स्वाप्त स्वी । विश्व स्व स्वाप्त स्वाप्त स्वी । विश्व स्व स</u> वर्षःश्री विरुषःश्रुरःवरःवेःश्रेःशःश्रिः । श्रेःसन्वान्वाःवीशःवारःवःधी। यावर्यापर ने र वे 'ल्यायाया ह्यये। । हियायया र यो पर्व यावयापर र । । मक्षत्रसंग्विकामराधे नुषे । विकार्ये। । द्यो पर्व ग्री वर्ष सामा ढ़ॖज़ॱऄॺॺॱॸॖॺ॔ढ़॓ॱॻॸॱॿॻॱढ़॓ॱॸॖॻ॓ॱऄॱॸॻ॓ढ़ॎॱॿऀॸॱॶऀढ़ॱॸॖॱॾॕॗॕॸॺॱ*क़ॆॱॾॖ॓*ॱॗ*ॸॸ*ॱ सदे र्श्वेनश्वानश्चेत्राया यह वा सदे स्वान क्रिया क्रिया व्याद विवा विश्वा *ॺ्रा*सुँग्रायान् द्वेदे सेस्रायान्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप नशः विराने निरासेस्राया क्वाना ग्रीस दिनास ने पर्ना नसास दुरसारा ব্রি:ক্লীন্দ্রী মঝ্যাডর রমঝ্যভন্ শ্রী নের্দ্রী নাম্যারম্মাডন স্থ্রী নাম্যানম্য ग्रद्भारे स्थानित स्थान मुद्राची हो अ क्षेत्र न निवास द्वार न क्षेत्र का साम क्षेत्र के साम क्षेत्र के साम क्षेत्र के साम क्षेत्र के स यदे ग्रुट से सराया वर्षे द से सरा दर विंट विंग क्रेन्ट है र से सूत्र या क्रुरा त ब्रम्भूमान्युर्यास्त्रा देयासन्दर्यासेयास्यादह्नासदेख्याः कुदेः सर्ने त्यमा द्वित्रायात्र दुवे से समारु त्यी से ता द्वित्त ता या तुस्या पवे से समा

हेत् श्री श्रींत्र शर् श्रींत्र शर् श्रींता क्ष्म श्री श्रींत्र श्रींत्र प्रति श्रींत्र श्रींत्र प्रति श्रींत्र श्रींत्र प्रति श्रींत्र प्रत

इम्राक्षा कृष्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र का क्ष

षट:क्र्य:प:क्र्य:द:क्र्य:क्री:क्र्य:पर:क्र्र्य:पट:क्र्य:पर: श्चेत्र पर प्रमुर है। गहि सुग उद ५८८ में नदे इन रहर व ५८८ से ग पदे यश्चित्रान्द्रात्र्वीद्राक्षद्रशासात्रुशासाद्दरार्वेषास्य द्राते । से से द्रीदासि वियान्यस्यायया स्यापादर्मेन्यान्यस्यान्यस्यान्यस्य ग्रसर:बेर:देवे:ग्रहेद:सॅ:५ग्रे:च:हेर:सवे:स्रावस:स:ख:धर:वर:ग्रह्मसः यी ने निया भे से नियम हिन या भें नियो के त्र भे भ निव नियम हिया सदि यविश्वास्तरः हैं साराया दे ग्रिः नाधेदार्दे। निद्यार्थे के दे स्वार्थे ग्रामा ॻॖऀॱक़ॖ॒ॺॱॺॖॆॸॖॱॸॖॸॱॺॖॺॱय़ॱॸ॓ॱॸ॓ॺॱॻॖॸॱॺॸॱऄ॓ढ़॓ॱॺॗॕॸॱक़ॖॱॺळॅ॔ॱ४॔ॺॱॺॱॺॢऀॸॱ ર્સે ત્રેત્રાઇયાની અત્રાચેયા અદયાનુ યાની અર્જે દાફેત્રાયા અર્જે દાયા થયા सर्केन्द्रेन् भी दुर्द्रा पद्देन प्रवेश्वर्शन्त्र स्था भी प्रकृते कर प्यर् से मेंन् यरम्बर्धरयात्री यदे.व. यस्यात्राचिरः क्रियात्री स्रेसस्य दिराया विद बेन्डिन्न्स्यार्थे त्यान्निन्यम्बेन्डिं के त्यान्यम्बेन्द्रात्रे स्वर्थाः <u>৽ৄব'৴৴'য়ৡ৵'ড়ৢব'৴৴'য়ৢয়'ড়ৢঽ'য়ৢ৾ৼৢ৾৾ঽ'য়ৢ৾য়'য়য়য়য়য়ৢয়'য়'ড়৴ৠয়</u> र्थः या इस्रयायया द्वीः या द्वीः या या केंद्रा केंद्रा या या या विद्या या सुरत्या श्चेत्रानित्रायार्थेन्यायार्थेत्रायार्थेत्राये के प्यतानश्चेत्राया

इस्मिन्याके कुरंभेव पुरके नरमाययायी । कुषाविस्यादक्यान कर गर्डेन्'रावे'सर्ने'यथ। से'न्गे'गडु'न्न्'यून्र्न'रावे'से'नेग् कुन्न्'रायर'ळन् बेर्'यर'र्वे नकुदे'वर'र्'हेवा'वश्वाश्राध्या र्वो ह्वेर खुंव विस्र <u>৴য়য়য়য়ৼয়ৢৼৠ৾ৼৠ৾য়ৣয়য়ড়৾৾য়ৠয়৸ড়য়৸৸৸য়য়৸৸৸য়</u> विया या हे या खें त्रा शुन्त से प्रयो या के या सत्य राय शुन्या साधार हे त ग्रे क्रें दशक्षेत्र पर्केरका के नर्दे । खर क्रिय स्वेर प्रका ग्रम् । ख्राका में र में भें त्वर्यन्त्र विष्या विष्या स्वर्ष्य स्वर्षेत्र स्वरंत्र स्वरंत्य स्वरंत्र स् न्याः भेर्म्भारम्य। । प्ययायित्रः नर्भेन् । भूभा अत्या । विश्वास्त्रं यायकयाः <u> ५८.चश्चच.स.जशक्रीं, स.चार्षेश्व.म.चश्चित्रःश्ची ।श्रृंब.स.मुव.स्.क्रेयः</u> वाश्राद्या केंश्रायानहेवायंत्रेश्वायांत्रेयास्त्रेशान्यो नावहार्श्वायाः व्यन् व्यन् धितः मुख्यः स्ट्रे स्यनः समः सूनः देश

न्रस्तिः द्वान्त्रस्ति स्वर्णाः स्वर्ण

য়৾য়য়৾য়ৢয়য়য়য়ড়ঢ়য়ঢ়ৢ৾য়য়৾য়য়য়৸ঢ়ঢ়য়য়য়য়য়য়য়ঢ়য়৸ न्यवःयःन्येग्यःयःन्रः स्राववःश्चेःनेवःयःन्येग्यःयःयःश्वायःयदेः नश्रम्भारितिर्भर्तर्दे । स्तर्भार्ति । स्तर्भार्थः स्तर्भार्थः स्तर्भार्थः स्तर्भार्थः स्तर्भार्थः स्तर्भार्थः न्तुनामान्द्रम् स्ट्रान्द्रम् वर्षे दर्भन्याः के त्याने 'द्रम् नो 'व्याने 'व्य निव हिंदेन राके है। हैं दिवह या यथा नभ्रयाय हैं दिन नश्याय प्यायाय श्चेत्र-१-१ निवाय अर्केन त्यः स्वाया । येवाय श्चन वानः धेतः ने ग्रातः ग्रम्। विराधियाचीयाविष्यस्थयायम् ग्रेम्। विषय्या विषयस्यः मां अद्धंद्र अप्यन् रें द्वित्ता द्वार दे त्या या त्या के त्या है। या वित्ता के त्या के त्या के त्या के त्या क वनी निःयः द्धंयः विस्रशः र्वेशः प्रशः र्र्भेतः से व्या निरुष्या प्रविस्था र्यो न्वेंद्राचिष्यःश्चेंद्राधाः विश्वे । श्चिद्राध्याधाःश्चेंद्राध्याः भ्रेया विश्वान्ता भ्रेतित्वह्यात्वश्वान्ता यानःवियानेत्वत्वे मुख्यःश्वश्रभः भ्रेवः नन्गाया नियाने प्रतासेस्रास्त्रेन्यमः होन्याने । प्रतासेस्रामस्त्रेनः राष्ट्रः याद्रशः निवेदः निक्षायः प्रमान्त्रः । । निक्षायः प्रमान्त्रः प्रमान्त्रः । । निक्षायः प्रमान्त्रः । । নম'নাধ্যুদমা |বিম'র্মা|

वी त्रश्रात्म वे त्र्यात्म वी त्र्यश्रात्म वि द्रया मुख्या क्ष्या क्ष्या स्था क्षेत्र क्षेत्र के त्रा श्रुव्य व

नहेत्रम्यम्यस्य म्यूयम्य । देःयः श्रें मार्यार्डे दः श्रें मार्या छेत् से मार्या छ । रे रे अप्रह्मुखान्। वर्जेरान हु में रे रे अप्धे प्रमुखप्राप्ता हुरा हु । वहु में रे रेशर्र्रियम्भे नर्शये र्रेश्चाविराम्बर्श्या अपञ्चारियरे त्यश्रात्रे क्रिंट त्ये देश में त्या श्री विश्व स्था से त्या श्री विश्व स्था से त्या से त्या श्री विश्व स्था स यदे प्रत्यका तु दे। प्रतार्थे दका क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्या प्राप्त के विष्टा प्राप्त प्रतार के विष्टा प्राप्त प्रतार के विष्टा प्राप्त प्रतार के विष्टा प्राप्त प्रतार के विष्टा प्राप्त के प्रतार के प्रत वेरिशः क्षेत्रः ग्रीशः सेर्श्यः सः ५८० व्हरः सः सः तशुर्शः सरः दशुरः नः ५८। भूरामायरानान्दायह्यार्चे न्दायत्ते नान्दाधेन्द्राचे सेतान्द्राचे सामा ८८.यावय.ग्रीश्राक्ष्या.भ्रात्या क्याश्रास्ट्रास्यायाश्रास्याकेः नर्दे । नर्ने न भ में दि त्ये तु प्र र अ न कु प्र दे अ में त्य अ ने प्रे में प्य त्य अ नु'गिरुश'गिरुश'गिरुद्रश'हे। गिय'हे'सेर'स्रेसेश'त'प्यट'ळे' बुट'य'त्रट्र'सट' न-दर्भित्रार्श्वे द्रकुरायार्थेद्रार्श्वे द्रावावव द्राद्रार्श्वे द्रावावव द्राद्रार्थे वा वर्षिरक्षे नशुन्रप्रयाधीन नह्न नुक्षे सुन्य खुन्य खुन्य व्यान ह्य न्य क्ष रान्द्रा अस्यायदान्त्रावदान्त्रीयान्द्राचाद्रस्योद्धर्याः विद्राद्धर यन्दर्धिन्न् अर्वेद्रः वर्षे अर्वेद्रः वन्नवर्धेवे क्षेत्रा कुर्वेद्रः वन्द्रः क्षेत्रा भ्रे नडुंद्र-पत्यः क्षेत्र न_्त्र हैं । देश क्षेत्रः प्रेत्र स्त्र हैं नश्रः प्रत्युत्रः नः <u> ५८१ वर्रे ५ स.के विट केंग भे भे शमान्य भे अप्यान्य स्वाम केंग्रा प्रवास स्वाम भे श</u> ळॅंव्यःचःन्दःमाब्रम्यःमार्वेन्यः होन्यवसमाब्रम् हो समार्वेन्यः होन्यसः वर्गुर-न-दिःक्षःन-दर्विदःगर्थे श्रुः उत्-दुर्ग्यन्य-नर्गश्रद्यः श्री । व्रुःसः वेॅिट स इसस से स स्रे स द प्याद र सें वा या है द र से वा स दे 'द वा 'य' द वा य त्या र

नन्गःरेंदिःवन्रमःनुवयःन्ननःगीःवन्रमःनुःने। श्रेंगःनरुन्नःवयःशिः ब्रॅन्'ग्रे'प्रहेगाहेत्'ग्रे'नवदानहुर-५८५अत्र-५८द्वर्यानुःवार्श्रेग्रयायास्त्रुः नन्दा अभीत्रमर्भेत्रपरेशे। वर्ष्यम्यः श्रुरम्यन्द्रम्यः स्थानु *৲ৢ*৴৽য়ৢয়৽য়ৢৼ৽য়৽ৢ৴৽য়য়য়৽য়ৢ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽৸৽ৢ৴ৼ৽য়ৼ৽ केशनान्दावन्त्रभातुःनङ्गस्यशानान्दासेदायरावनुरानान्दा। वेवानायोधाः ग्रे हो। नन्परमाठे प्रत्यस्य इत प्रत्य धूव धूव प्रत्ये माठ र न प्रत्य है र नः अरः नः न्दः दुअः दः नः न्दः दुअः अः अः न्वायः नर्दे। विह्रः न्युः नरे दे। विदः অমান্দার্যা স্ক্রীদারবি অমান্তী মেরবাক্ত মান্দারী বেলু মানাদার রাজ্য कुः सरः से 'नरः ध्वरः पः नरः। धः सवे दी। यः द्वित्र यः प्रवरः प्रवरः प्रवरः प्रवरः प्रवरः । क्ट्रैंट-न्द्र-अर्चे-न्यय-न्द्र-नर्गेन्-नगय-न-न्द्रिग्य-स-न्द्र-विश्वय-स् र्दर्भवि:कुःसर्भेर्द्र्य्य्वर्भर्द्र्य प्राप्त्र्यः द्वाः *न्रःकें रः अ:न्रः र्हें :न्रः वाशेवा:अ:न्रः र्क्कें: अरःव:न्रः क्रुव:४:न्रः अन्रशः* श्रेश्वरामान्द्रावननः कुन्द्रास्त्रेन्ता स्रोद्रामा स्र

सर में न्रायुव मान्रा केंगानगुरा मदे दी

वर्चर्यानुदेखूँ नःविरायावर्च्यानुः से वळण्यायान्दर्नु सासे नायरा षरःवज्ञराजुःवळग्रायःप्रदःत्रार्श्वः से वळग्रायःप्रदःसः श्चेतःयः श्चेतः धरःश्वरः वः न्दः सः स्रो वह्रवः धः न्दः से दः नुः स्रो वावसः धः न्दः ग्रावः न्वादः रः नदसःन्वाराः कृषः वसः हिरःनुः दुस्र सः न्वादः नः से स्मरः नः न्दरः वहेवाराः पदेः कुः सरः से निराध्वारा निर्मा निर्मा से स्था की दी सुदा खु सा के निर्माश सम् उद्देश्ये से दे द्राप्त के वाया द्रा है वाया द्रा विवा से से स्थाद कुराया की द वर्त्ते त्यावसेवान के सेवाम न्या वर्ते न से समारी की प्रसम निया वर्ते न कॅट:सट:व:दट:सेट:वो:दट:स्रवा:व:र्सेवास:स:दट:स्रुव:वार्व:दट:सेवा:स: <u>५८:श्रेवःग्रेःसे स्वरायः ५८:गर्वे ५:श्रेवःगर्गाः ५८:र्केसः मुकःयः श्रेगसः ।</u> वर्षे वे द्वा व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य न'नवा'अर्केवा'तु'वार्डर'न'नर'नरे'नर'श्रूर'न'नर'वात्र्य'नरःश्रुप्त'नर' য়ৣঢ়য়য়৾ঀৼয়ৼ৻ঢ়য়ৣৼ৻ঢ়ঢ়ৄ৾৻

न्गर-रेंदिः यथायव्यथायथयायायात्रेश न्गर-रेंदिः यथान्ता यव्यथानुर्दे । न्दर्भे दे श्री श्री गार्चे न्यान्ता व्यथान्ते । न्यान्ता स्याप्ते या प्राप्ते स्थान्ता स्थाप्ते स्थान्ता स्थाप्ते स्थाप्ता स्थाप्ते स्थाप्ता स्थाप्ते स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थापता स् सबरः श्रुवाः सरः श्रुवः श्रूवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुव

त्र्युनःर्वे | निःक्र्याः प्रस्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

ग्रुसम्प्रभाग्रीम्नातुन्नीःनाम्बद्गन्नम्द्रम्याय। वसेदाहेन्याराणीः न्ही नदे पर्वे प्रमेन प यश्रिक्षे द्रमे न प्रेक्षेत्र या है म्या हो द्राय देश प्रकेष से स्वीत प्रकेष स्वाप से स्वीत स्वीत स्वाप से स्व कें बुद्दान द्वान अदान द्वान द्वान कें मुका है और में निका है दान द्वान वर्त्ते न्दर्धे न्वायायवर न्ययाय है रासुव खुया र्क्षे वायाय परित्र से ने ने नश्चेन्द्रि ।देःक्ष्र्र्यं प्रसेष्ठेन्द्रमे नश्चाय्यप्य स्वायः हेन्या स्वीतः ग्रद्भार्या प्रमास्य स्वाय प्रमास्य स्वाय स् श्ची न्यात्यर्यायाया हैवाया होता श्ची नया हैवाया पात्रात्वी <u> न्वो नदे त्यश्राभ्रीश्वे नने तर्वे न्दान्त्य तर्वे मञ्जी नवसे व सन्दर्धे हथा</u> शुः हैं नार्या सम् हो दायदे त्याया शुः मेना सम् होर्ने । तसे वाम दो नाम नी या ह्या यमःश्चेत्रःयःवयेतःयर्वे । व्येन्यःशुः ह्रेन्ययःयमः ह्येनःयाने वानः यो यः श्चेयःयः व पर्दे द पर द र से पर्दे द पर ही दिया थी। विश्व की । यह द पर या विषय मी था

क्षानाडेना हुन क्षुन् निर्मा अराजें स्वतः क्षृतः निष्णा क्षानाडेना हुन स्वतः क्ष्यः निष्णा क्षानाडेना स्वतः क्ष्यः स्वतः स्वत

श्रुंद्र-त्यस्त्रें स्ट्र-द्रिक्षे हो स्वयात्र न्ययावि स्वया श्रुंद्रः त्यस्त्र स्वयात्र स्वया स्वयात्र स्वयात्र स्वया स्वयात्र स्वया स्वयात्र स्वया स्वयात्र स्वयात्र स्वयात्र स्वया स्वयात्र स्वयात्य स्वयात्य स्वयात्य स्वयात्य स्वयात्र स्वयात्य स्वयात्य

อुर्यापाद्या वर्षस्य पविदासेदायर गुर्यापाद्या इवार्यासेदाया कुरा कवाश्राभ्रम् विश्वास्त्रम् विस्वस्त्वश्रास्त्रम् वहेन्स्याव्यस्य ८८। भ्रे.पर्रेट्रम्बेष्ट्रं श्रम्भारान्ता स्टामबेष्ट्रश्चेश्वर्यः स्वामध्यानः ८८। वर्ग्नेर्नायश्चराययान्दा महेर्न्स्यायययानःह्री ययाद्वयान्द्रः र्रे विदे द्या यस सम्बद्धिया स्टि यस याव्य याद धिव सर्दे । सः वसवासः यदे प्रयाने द्वारा प्रवृत्ते है भूत प्रमूत पा हैत है। विया प्रायुत्या प्रमूत र्रे । वाह्रवायान्वरायान्यस्य वराष्ट्राया विष्य विष्य विष्य विष्य यासानसम्बद्धाः से से सिकामस्यानुसामान्दा से यसान् नुसामान्दा केन्न् अन्य स्वर्भाय द्वार स्वर्भन्त्र मिन्न् स्वर्भन्ति स्वर्भनि स्वरति स्वर्भन्ति स्वर्यम्ति स्वर्भन्ति स्वर्भन्ति स्वर्भन्ति स्वर्यम्यस्वर्भनि स्वर्यम्यस्य नडुग'र'र्ना यद'डेग'र्वि'द'त्रुर्यंभेर'रे'द्रय'ग्रूर'यर्जेर्'र'र्ना हेर्य न्भेग्रारा ग्रे से सरा इगा में राजर्डे सात्र स्ट्रीट जिले से साम मुह्या त्रा स्वितः पुःश्रवःश्रॅनःग्रुशःयः न्दा इयःश्लेवः यात्रभेतः यन् वितानेवः यात्रः वितानेवः वितानेवः वितानेवः वितानेवः वितानेवः च्यामुर्यास्त्रम् स्वर्ष्यस्त्रस्य स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वरं ग्रीश्राश्रामें त्रापर प्राप्त प्रमार्थ । वश्राश्राश्राश्राश्री श्रीमा ळण्यात्रयात्राचे भ्रीत्राधुदानेदाचे द्वारा हे या शुः हे जा के दान् शुंत्रा स्वरा होता यःश्रॅवादेःसःवडदःसर्वे । जुरुःयःवसवारुःसदी सुःस्याविरुःयस्य गर्नेग्रर्भरेर्देर्श्रेग्।नरुट्रसम्बस्यरुर्द्भि।स्यनुरुर्भेट्सानसग्रर्भरहेर गशुसर्भे दे सम्मित्रास्त्रि । सम्बेदायेदादस्य द्यानग्रयास्त्रे नर्भाष्ट ने निवित्र रु के सेवास्य स्रेवास्य स्रुवा धेर् की वासुस्य स्रुवित्र स्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

श्चिरानरारेश्वायायायत्र्य्यातुःश्चिरानवेरत्त्राश्चीःश्चिर्वयानाशुयार्थे। ।दे यासर्वेट कें राया श्रीट न दी। यस देवे त्वस तु कें दे हिट या श्री द पर वश्चरावर्षे । ने प्यरावश्चराने। खुर्यान्दार्वेद्याश्चित्राच्याक्षाना न्याके निवे निया स्थानि । नि निया के निवे निया स्थानि । नि <u> न्यात्यः भ्रेष्ट्रानः व्याः क्रेप्तरे न्यायायाया ने प्रवितात्रः । ने प्रवितात्रः से सराः </u> उदायाम्द्रित्रसेस्रस्वराकेन्त्रता क्षेत्रहे वित्रसद्सेस्रस्वराके नन्ता धरन्त्रीं व सर्वे नान्द्र हु साया से ना साया सहर से समान्य के.च.८८१ टे.८वा.ज.८८.घ.८८.क्रूब.चढ्र.चब्रब.च.च.च्या.८८१ <u>षरःसःसःन्दः सःसःश्रीम्यःसःसदः वर्देग्यःसःसःवःविदः वृदः गुर्यःसःसः</u> वार्त्वे निर्मात्र माने के निर्मा निर्मा के निर्मा वशुरानरः अदे प्रदेशगिवे व्ययाग्रह्म अश्वी । भ्रे याद्या श्री प्रमान नदी कें महिरायायव्ययात् श्रीतानदी । यम् मत्राम्यावम् याश्रीतानमः वशुरान दी के नाशुस्रामा सद कर र र श्चेता सर वशुरान दे। । देनी से प्रमेदि यश्रासरमें कुर्या पेर्या इस्रा की भ्रीत ख्रा की यश्रामर भ्री नारे मिन सर्भेवर्ते। भ्रिः पर सहस्र व तके नदे न्य न न न सर्व न न न र्वेनाः सर्श्वेवः वे । ने प्यरः वर्षः वर्षायः विषयः यः वर्षः के वर्षे । ने प्यरः

वे वगा हु नमस्यायां दी

शे नियो न दुः श्रॅम यो श ग्रम हेत न वम से लिया हे न से न ग्रम स सिव्यान्य निवासिक स्वासिक स्वा कॅर्नावन्द्रियावर् न्द्राच्या हेत्रे न्यूनायर होत्। विदेश्यावाश्या इया श्चैव ग्री प्यंत्र प्रवा इस श्चेव ग्री प्रवास ग्री इस श्चेव ग्री ग्रुटी । प्र में प्र नकुट्रायम् के सुत्रसुम्राकेषामाना दी क्रिं नुगुर्यमेराममा के सेट्रान्यमेर विरायसरमासाक्ष्रमाळे प्युवामेरानु ग्वावमास्य । । विर्मेगासुवासुयास्य मन्त्री पिःर्देग्'द्रद्रचीत्रश्येग्रश्यश्यात्र्यात्र्याश्यात्रवर्षेत्रः क्टान से न स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स शुं अर्के वा श्राप्त दे वा हे वा हे वा स्थान गुर वि दावा वा श्राप्त दे रेवा श्राय वि दे वा इसराशुः भ्रेरायद्। । नगरः ध्रुगाः स्वर्श्यस्त्रे वारायः वे। वेद्रशः श्रें नः केः नन्दरमित्रेद्रायाश्चिम्यासदे इत्देद्देदाके नन्दरमित्रयय के नदे । किया नर्द्वरमंत्री सुर्भरमामिशमाव्वरभे सुन्दे भेर्ननह्वर्र्र्र्र्र् রমঝতেন্ট্রিন্দেন্ট্রেঅকেন্মেন্ট্রেখনের্ম্যর্মান্তর্ব্রেম্বর্মান্ট্রিল सहार्यात्राक्ष्यात्रात्र्या । त्यात्राक्ष्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्य

द्या श्चेत श्चे । वित्त प्राची वित्त प्राची वित्र श्चेत व

न्रास्त्राच्याः व्याच्याः व्य

इस्र श्चेत्र श्चे मुन्यम् न्या न्य में श्वेस्र उत्य से प्रेसे न्ये श्चातकः पद्धः पद्धः प्रमान्त्रभेषः पद्धि । पाववः परः। पश्चितः स्वरः स्वरः सः स्वरः सः स्वरः सः स्वरः सः स्वरः नहरन्ता । दे निवेद श्रें वा वी शासद नह वा शास्त्री । श्रें वा कवा शास्त्री ना यशः व्याप्त्रम् । क्रें सेट न ने प्रवेश महात्रम् । वर्ष प्रवेश न से वर्ष च्रमःभ्रम्भा ।भ्रम्भे देना प्रम्यः । भ्रम्भः । भ्रम्भः । भ्रम्भः । र्शेम्बरम्भ मिल्रे नासे नास नियान स्थान मदी सरसे या स्वासाय स्वास्त्र स्वास् स्वार्देवासेट्रपदेख्य्यात्रादी । भ्रत्यानान नर्धेर्र्य्या हुन्य । हिसा र्शे । पाशुस्रायादी पासुत्रायादें साद्यात्रायात्रायायात्रायायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्राया यन्तरमान्त्राय्यस्य स्रम्भ्यम् स्रम्भ्यस्य । यन्ति यस्ति । वर्षाः वर्षाः वर्षाः र्शेग्रथायार्श्वेदावायादे द्वारश्चेत्रायाद्वार्थे श्वेदायदायद्वार्थे व्यवस्था स्वानस्यानन्द्रितान्द्रम् । १२ वित्राचित्रम् । १२ वित्रानस्य स्व

यदी न्यामी भेर्या न्यानि श्रिम्य विश्वास्त्री श्रिमा स्त्री श्री स यः रदः यः धें वः हवः श्वः कें ग्रायः नश्चानः स्वें वः ययः यदे वर्यः विदः दर्गेवः सर्केग्'ग्राशुस्र'त्र'सर्हिन्'न्र'न्र'स्य'स्ट्'ह्रम्'स्ट'न्ट्'स्यापन् र्स्सेन'न्ट्'स् यायायळॅदायरान्नेदायदे । वर्त्रायात्रेः क्रेयायदेः वित्रावादायाः *५८:तु५:से५:ग्रे:५६ॅंस:सॅ:यःसे:५वाय:वे८:हेस:५सेवास:सु:व्र:५८:तु५:* बेर्गी खुरावर्रिन या इसरावर्त्त या न क्विंग या न स्थित न न स्थित मः इस्र अः वरः वरः वेरः पर्दे । वकुरः यति वाववः क्री अः वाहवः से वुरुषः यः रदानी अ हो दारा द्वार प्रदार द्वार प्रश्री या अ हो दारा दिया । नवदान निर्मान होरान होरान हो । कुं नकु निर्माने कुं निर्मान हार होरान हो । नरःश्चेत्रःम्स्रयःस्याः नुष्यः नुष्यः न्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्यूरः म्य पर'न्या'रा'त्या रट'त्य'हें अ'रा'यिहे अ'दी कु'नक्षुंनअ'रादे'न्यो'न'क्सअ न्नावाक्षेत्रप्रिन्त्रम् क्रिं नार्वे निष्ठा क्षेत्र विष्ठा विष्ठ वशः कुः इस्र सः नश्चनः प्रति । श्वासः इताः पर्दे । वावदः यः वेद्रसः याद्रसः वै। केंग्रसमुन्यस्य प्रवेदः माम्युस्य सर्वेदः न्या मिन्दः प्रयान्य प्राप्तः नकुर्यानाश्चरवा हेयासुर्धान्य न्तर्नान्तर्भात्वयानुराम् क्रेंशक्राक्राक्षे रुषारेटान्द्रान्य स्थाळ द्राया द्राप्त विषय यार्क्षेत्रामान्त्री यदाद्यास्यस्यान्त्रद्यास्यस्यान्त्रेत्राम् विवासाद्या इस्थान्यायाना नक्षेत्राचित्र स्वीत्रान्य न्याया निर्मान्य क्रिया स्वाप्त स्वापत स्वापत

धरा हो दाया दारा हो दारा हो दाया है है है है गिरुरुरि, दर्श्यान्य अर विट न वट न से र न र विट र प्रत्य न र विट र गशुस्रायायसस्यावसायह्याःद्वेताः चुःत्रदेख्याया भ्रेत्रायस्रदायाद्वा विन्यम् न् देवयानियाञ्च माने विन्यम् विन्यम् श्री प्राची प्राच्या स्था प्रमुद्धा । दे त्यया है स्थूर देया बरा वेया । हित सळ्यःह्याः प्रः नद्याः यो शःही । तदिः विदः त्वादः वियाः नससः स्यासा । वेशन्ता न्वो नदे सुँग्राय दे वस्य उत् श्री । इन्य सँय स्मास्य गश्रम्य। निवेष्पर इपा ह्या हुने। इस श्चेर वन्न सन्तर्भ स्था स्था स्था वेशनाशुर्यासः भूमा नगमः वनानी स्ययः न्दः तत्र्यः सुराधमः गुरा वयानेयामार्ययायाक्षेत्रहेषाम्यराधराद्राधरात्र्वेयाम्यराष्ट्रहे। वदेः नीत हु भूग हु शुराध्यादेयाया केया हु दादाग्याय विशेष्ट ही परे प्यार हिरा दे'वहें त कुषार्थे व्यथा ह्यान भूर सर वडश रा वात्र शासुर विदा । रे प्र ग्रॅंटर्,यडशर्यदेश्याबेगाया विष्ययापदेरियस्य हे इस्यायाविद ग्रुट्र ग्रम्। विनिन्ने से निन्न प्राप्ते के मासे मास्या विकामस्य साम् नविवागिवेग्रायाये ग्रायाये दाये क्षेत्राय मान्याये विवास नर्रेश्राभेत्राची रेश्रामासाङ्गेत्रत्रेश्रामात्रायाप्यता कुयानात् चीश्रामदे रेश्रा राश्ची हिन्दी । विक्रियार्श्वेटायाहेरायाहेरायाहेरायाञ्चेटायाञ्चेरावर्यायया

म्थान्यःश्वी क्षेत्रः वित्रः वितः वित्रः वि

देशक्ष्यक्षा विश्वाक्ष्या व्यक्षः क्ष्यात्र व्यक्षः क्षेत्रः व्यक्षः क्ष्यः व्यक्षः व्यवक्षः विष्ठः व्यवक्षः विष्ठः व्यवक्षः विष्ठः व्यवक्षः विष्ठः विष्वः विष्ठः विष्वः विष्ठः विष्

८८. पश्चित्र प्राथित क्षेत्र प्राथित क्षेत्र भीत्र भीत्र प्राथित क्षेत्र भीत्र भ त्राप्ताः त्रुरार्डं त्रासत्रुत्रायाधो सेप्तासत्रुत्रायाया वेष्ट्रतायात्रे स्वाप्तात्र सामे प्रमा र्माक्तिः विमान्तरम् अप्यान्यास्य साम्यान्य विमान्त्रियाः सर्दे विशा विश्वास ने प्रदेर सावश्वास धीता विश्वासा स्वा किंशान्त नश्रुवर्डं वर्रे विरानः क्ष्राकुन क्रुवर वर्षेया तुर्शेटर वर्षा के राया दिराया वर्षा नद्वन्त्री:यरःहेरःरेव्हीरायदेवः कर्येवःहे। क्विरायया हीरायः यार विया सामरा से सरा या । दे वे ही राय विराम हैं द दें। । विराम सुदरा मया समयन्दरक्तियायाने न हो से सामानियाया सुरहे । सि है न प्या भ्रेशस्त्रश्राभित्री द्रिस्याव्या कृताया निष्या प्रस्ता वितानी है। भूत्त्रा वयास्रावयन्दर्वे सामाविदे नर्ष्यर्दे हा । कुःसर्वेदे सःर्देषः द्धःर्रेयावर्ष्यसप्परंतरा । १९२ त्वाविष्ठश्यीःरेवरादेवस्रित्। । ४यः ८८.८स.सपु.क्रूस.ग्रट.ट्र.पश.स्टा विश्वाम्बर्धरश्र.हे। सवास.स्टाइमा. सरमाश्रुद्रशःश्री । क्षिम् शाय उद्दार्य दे दे द्वाद्रा शेश्र शास्त्र । क्षिम् शाय उद्दार दे दे द्वाद्र । श्री शास्त्र । नन्द्रभी अधिर देंद्र अपा विवा या श्रद क्षेंद्र सुवा द्रशास्त्र के श श्री । श्रूर खर मधे लय दश ग्रुर हैं गा लेश म लेगा गी श महग्र श रे लेगा या दुः गुः स्वाया वहरावा क्षेत्रः के या दराहे सेरा ये दावा विषा वेदा पा सुराहे । निःसूर्वस्रस्यस्य वर्षः ग्राटःहेसः श्रुत्वार्यस्य विष्यं वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः ये दुःषश कुषःरें हिंद्वे र्श्वेना गर्हेद्या अहंद्र हेन । क्रें कें गुद्र ष र्श्वेन नेते भी रावस्यान् । इटा बन् वने वरास्रूटा यह वह सात् । से साव के वः अक्षे अअः गर्देरः गर्षे ग्रथः हे से वर्देरः निवेदः र् निष्टेदः र् गे अः पदेः यशः इसराते ग्रानरसे रेग्याया इस श्चेत श्चेरान देखे । पात्र सर्वे नासेरासेर न्वायनने वार्येन्य हें न्यंते वया इसमाने हा नर नेवाय है। हैं सम यथा ब्रिट्से स्वानस्य ग्रीय प्रहिवाय भीटा व्रिट्स स्वानस्य से स्यात् । अर्देव सुरा द्यायाया स्रेवा हिया । स्थिता या उदा ही त्य रासे । व। ।वायाने सेवायदे यमा वस्या ।वेन यम उत्रे हिंन ये मंदी । र्गीया हेश प्यम्य हे चेंश ग्रुया ग्रुया । सूया नस्य प्यस हे सम् से प्रश्नुमा यादार् यात्रकात्रायका ग्रीकाक्षेत्रक्ष्याका सदी । । कार्स्ययाका दे दे विष्ट्रित्रका धेव है। । नर श्रूर या से द कु सर्वें दे वद व से दा । दे चें क्सरा ग्री पासे व हुः ल्याया ग्राम् सेवा वियानमा हियामानेया स्वास्त्रमा जनवाया र्यायवेष्युरियाधेषा । यारावेषायव्यव्यात्युक्याय्युर्याये। । श्रेषा उद यश्रे हें न्यर हेन्। विरन्व हुरायश्राम्य विर्वे र विरा । अके अर्थः

गर्नेट गर्धेग्र र उन्नेव र १ । इस श्चेव से से र न से व र पे। । यस है न्वान्ते सः ग्रुरायेवार्य। विष्टा ग्रुराने स्थान्त्र विष्टा। विषय विष्टा थितः येग्रम्। विन्नाक्षेत्रवि विन्यते विन्यते श्रिम्। मित्रि विन्यते व्ययः श्रिम्। विन्यते व्ययः श्रिम्। मदी विवालकाने पी क्या श्रीव नवा । इ. नविव क्यका शुः श्रीन न न नवा न। वेशन्ता भ्रेमायशय्ययन्तिशयम्त्री । अर्क्षेत्रमवेत्रम्रेन्सरः भ्रे भ्रेत्यात् । भ्रेत्रा प्रदेश्य अरग्रे अरद्भे न न्या । यर् स्य पुरे अर्दे सम् वर्म्या । यादः द्रे द्रया द्रया श्लेव हो । क्षः वः श्रेरे श्रेरः व श्लेव रवः धी । श्लेया प्रदेः यशःग्रीशःवर्ग्गे नःद्वा । सःर्देयः हुः देशेशः सरः वर्गुरा । भ्रुवाशः यशः वाधवः वे वित्रम्या वित्राया ने सार्वे में के मान वित्राया में मान क्या साम का साम का साम का साम का साम का साम का साम रालिया । स्टामी त्यया ग्रीया ह्या तर्मे स्टामी । वियार्थे । सि कुटा नाया विया खराममा नगे नने सामने त्यमायन्य मिन्न ग्राया के नमामुरानायानः *ख़ॖॱज़ज़ॸॖॱय़ॱॸॖॸॱढ़ॺॱय़ॱॸॸॱॾॣॕॺॱॸऀॺॱऄॸॱय़ॸॱॻॖ॓ॸॱॸॗ॓। ज़ऀॱऻॺॕॱॺॱढ़ॺॺॱॶॱ* ब्रुट-५गविवस्थास्रुर्याम्बुट्य-म्यास्य-सु-कुट-च-प्यट-दे-द्वंगायम्याम्यन्यस्य-च न्ता क्रूॅब्रमदेख्यावया हे में माक्षूत्रावया के माक्षे मुत्रहेव प्रवेषाय ने सा यशिरायान्या सुःकुरायदेःविषायया रादेःम्याप्यस्यस्यासुरायापः के·जुरःषरःमुज्ञासःरदःदरःसावरःयदःयःयोःयदःसःमदसःसरःयसःयदेः च्यामयायदेराञ्चेयाच्याम्याम्याम्याम्याम्या

বাইপ্রমা

क्रूनमानविमाश्चरानवेरकुषाने।

ने भूर हेश श्रेन ग्रेश सर्वी शरायायाय वन ग्राम नवा सेन पान हेत ब्रॅम्बायम् वात्राक्षेत्रवारायदे न्वम्यो वात्रेया व्यम्य व्यम्य नवग्राप्तुः से सुरान्य सूर्वार्या सुर्वार्या है । उदा ग्रीरा से स्वार्या स्वार्य गुरुद्यायाः इस्यायायवद्यद्वीयार्थे। ।देः प्यदः सुदः वः सुदः वर्रेयाः सुवः वे। क्रॅंसपानाश्रस्रें र्रेज्यानाश्रद्यापाद्यम् न्त्रापाक्षेत्राचिता मनि स्रिन्यानिकानुः स्रे। केयानिनस्रम्यियरे सर्रायया नुस्याना नुरा <u>ढ़ॖ</u>ज़ॱऄ॓ॺॺॱॸॖय़ढ़ॱऄॺॺॱॸॖय़ढ़ॱक़ॆढ़ॱय़ॕॱक़ॕॺॱॸढ़ॎऀॱॸॖॸॱॺॗढ़ॱढ़ॱॺॗ॓ज़ॱय़ॱॻॖॺॱ क्रिन्यसम्बर्धाः चेत्रः चेत्रः मर्देवः यरः वर्ष्युरः र्हे । प्रवेशम् विदा परिः वृः है। इसम्बर्धन वहीन मंगुन हु हैं निमन्ता महेन में गुन हु हैं निम ८८। हेशसायशर्धेवास८८। हेराग्चीस्वियासी विश्वास्याही ग्रुस निट'नश्रम्थायदे'यशदे श्चिट'देश'धेद'मशदे 'त्रेय'मे शमदेंद'त्रशद' सन्यानात्वरहेर्स्या नेत्यर्स्रेनयन्दर्भेत्री ईवास्यरेन्यन्यस्याने नदेख्यानुयामायादर्मेन्यायम्यादेशेन्यायाम्यादेशेन्यायाम्याद्वेत्रार्थेन्याया ॻॖऀॱय़ॼॺॱज़ॖॱॻऻॺॖॺॱॸऄॗॖॸॖॱॡ॔य़ॱॸऄॣॕॺॱॸॻॕऻॺॱऄ॔ॎऻॴय़ग़ॱढ़ॱय़॓ढ़ॱख़॓ॱ ते^ॱग्रें र दें र 'द्रस' प्रदे 'च नग्रस' स' र र स' सुर से 'से दे र से 'से र स' ग्री ' নপ্রাঝ্যমানার্ট্র মান্ত্রী মান্ত্রির্ট্যা

क्रिन्याम्हियायायानुमायया यर्रेक्षेत्रचार्येत्यानहेन्यादी नेर *ब्रेव* त्यःश्रेवाश्वः प्रदेश्येदेश्चेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः प्राप्तः प्रदेश स्वाप्तः स्वीत्रः स्वीत्रः स्वीत्रः र्शे । श्रृंदः मः हेदः यः श्रें रामा हो। यद्या सेदः हेदः वेदः वेदः या रायः वेदः हेदः यायह्वा केटा वार्दे दाया वर्षा द्वा सम्योदा के या प्रति । वर्मे या सामा वर्षे व मदी धे'नो'नकु'म'र्सेनास'ग्री'ना बुरस'हिन्सर'उद'क्सस्य र्कें ना'नविद' र् क्रेंश्यर्पे । प्राराचनरामेश (व्यायायया श्रीमान्यायायेश सकेरा यदे से खे 'धे या । स न ही सरा न वित न न के म स्व । महारा न्ह्र्यायाळ्याविस्राह्म्यायायाया । न्ह्र्याव्यायाळेवार्यदेश्या ब्रैनारानब्रेन | हेरक्षरानारबाखाकेरबदेर्द्रन् बेराग्रेय। । नार्रस्यावाना नहेन्से नर्वेन पहु न नवेन । दुष्य विस्र हे सदे देन वेन न क्र नहेन ग्रेश । गर्दरमान स्वाप्त प्राप्त विष्य । स्वाप्त विष्य । स्वाप्त विष्य । यासरसे सुरानाधेया । सुनानमा सास्यासेयानर हो नाम विना । के रवशः र्रेट वया वयवाया प्रति र्येवा विश्वया । वश्वया वर्षेट या स्थिया शुर्-रु:श्रेयानराग्नेन्। विशानशुर्श्याश्चित्रायाग्नरान्येयास्य यः अर्बेट न ने श्रेट नु न त्रुयः ना हेट नुदेश । यळं त अ ते श्रे व्ययः त न श्राह्म मःश्चृमान्यः न्दः वि द्दः वि स्यायः से मास्य स्त्रुदः नः न्दः श्चृमासः यः न्दः वे सान्दः ्रवासर्वेदानान्दात्रसास्यावरायावर्ते। नान्दासे। वन्दानान्दासाने। न्दासी। वनार्भे मुन भन्ता नने श्लें र प्राप्त से प्र नित्त्वत्या । प्रित्त्वा वित्त्र प्रस्ति । स्रुत्त्व प्रस्ति । स्रुत्ते प्रस

हूँ नशन्त्रस्य न्त्री से निन्न न्य द्वाप्य न्य म्हूँ स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

श्रुण'नश्रूष'कुर'नर'श्रु'नवे कुर'वश्रुर'नवस्य दत्र'वर्शेर'श्रुर'गुर'रेवे स्वा नस्य से हिंद नवस ५ से दे हे द य सर्वे में द न उस ही स ५ वा द स वर्ते निर्मा दे निष्मित्र मुन्दिर मिन्दिर मिन् हत्यामित्र श्रिट्यो प्राचित्र प्राच्या प्राचित्र हिन्या है। दे प्याप्त हिन्या है। कुर-८८-वादेव-र्रे क्रिंचश-विः हैवाश-शः हैवाश-८८-त्वाश-५वाः शे-५वाः <u> ५८:क्व</u>ुतःदेर:बुर:वःश्रॅग्रथःपदेःश्चें त्रश्रःधेत्रःपश्यायायादेगः हुःदेशःपः येन्नि । यर्ने से न्दर्य या न्या यय इसय नम्भय या नक्कर पद दे।। <u> कु</u>र् से : बार्या वे अ या शुरु अ पार्ति । क्षेत्र अ पार्वि दे : या हे द र से पार्श्व अ पार्थ र पार्थ । यः नर्गे नर्भा क्षेत्रयः निवेदः निवेदः स्थान्त्र न्याः स्थानः क्षु न्याः विदेश देशःग्राम् त्वन्याः धरायाशुम्याः है। वक्कमः स्ट्रिमः त्वोत्यः क्रेवः वया वर्षे स्थ्रमः यार-न्यायाहेब-सॅवि-धुँयाबा-हे-च-द-विच-सदि-क्वेंबा-उब-धीव-स-ने-न्या-वे ॱक्षेत्रशन्दः भवे । यो वे वा वे वा वे वा विकास के विकास व्यारोराग्रीम्पययार्थेन्यारायविवारी । । न्यायवेर्केश्रामीः श्रीयाया नदेःनेवार्यास्यार्ह्मेस्यासेस्यार्ग्रीःसूरानदेःवाद्याद्यस्य स्यास्य सरावरायरः वशुरानाधीन दे।

अर:र्रे दिर:ववाय:वर:वव्यूर:र्रे दिश:धर:र्रेट:वर:वाशुरश्रःध:धर:वर्दे *क्षेत्रः ग्रीश्वाचन्त्रः प्राचेत्रः विश्वाचेत्रः विश्वाचेत्रः विश्वाचेत्रः विश्वाचाः* यानक्षेत्रयासुः वेदःगुरः वर्षयानुः रेया वर्षावः वर्षेदः वया धीदः वर्षः रेयाः यम् जुर्दे विश्वार्थे दिष्ट्रम् प्रम्याया प्रम्यस्य स्था स्था द्रअःश्चेत्रः प्रचेत्रः प्रवेश्त्र अः प्रश्वअः प्रमः चुअः पः द्रअअः वे : क्रेत्रः पाव्तः प्रमः स्र ग्रम्स्र श्रेव प्रविव सम्से प्रश्नम्या ने निविव न् र्ये गास् श्लेषा प्रमान र्विट विश्वाद्यो स्वावेर्वे अप्यायायाया यह वर्षे विश्वाद्यो स्वाया विष्ठा विश्वाद्या विष्ठा विश्वाद्या विश्वाद यथा गरमी के न्वी न पर सुन से वा सन्दर्म के निर्मेश के सथ धरात्यूराधवया भेरियो चाष्परार्श्चेराधर्दरार्श्वयाधारावाः र्शेयाश्वादीयाहेत्रसँशः श्रेंत्रश्रुश्रश्राध्यः सूर्यः स्त्रीत्वादीः मेत्रेत्रः स्वाधाः थॅर्-र्-बेद्यान्। र्गे-न-र्र-शे-र्गे-नदे-श-र्मेद्र-श्रे-त्रान्य-प्रस्थान्य यार प्रश्नाय विया प्रचित्र प्रमास्य के विष्य के विष्य के विषय के र्भाग्यम्याववर्र्युम्य हे स्रम्य सम्यावस्थित हु प्रश्चेवर्यस्थिव है। हे भूर रा रुषायंत्रे के अप्यहें का यर हो राया देवे ही राय रादे अपये हो या या षरःसर्वेरःनवेरक्रेंश्रायार्श्वेरःनरःदशुरःरी विश्वानुःनःना ग्विनःषरः <u> द्यापर्चे रावर्चे प्रवेश्यश्च स्रथाने । । यदेशके अर्वे सर्वे संवेशके प्रवासी । यदेशके स्रावेशके स्रावेशके स</u>्रा *बेश*ॱगुरःद्युरःदें॥

म्वास्यान्ध्यान्ते सुवानस्य द्रस्य स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त स्थान्त्र स्था

र्हेन् सें रूप ग्री सं र्वेन् पहें स्था पित्र पित्र सें सं हें न् ग्राम प्राप्त प्राप्त सें स्था है न् ग्री स्था है न् ग्री स्था से न् प्राप्त स्था से स्था स

देशन्दं ने ने न्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स

वर्चरानु हे नर वेंद्र श्रें द्राया दर्गे द्र या नसूत राधित है। वाद वी য়ৢ৴৻য়য়৻য়৴৻য়ৢয়৻য়য়৻য়য়য়৻য়ৢ৸য়৻য়ৣ৽ঢ়৻য়য়৻য়য়৻য়ৢ৻ सेससामसासदिनमारादर् गुरामादी सेससामदि हिरामरामावद र्वेन यन्थित्यासुः वत्यम् वर्ष्यम् वर्षे वर्षे हे। हे सूम् वर्षे मर्से हे हे त्यान्य अःश्लेखःन्यःन्दःषुःगःन्दःधःगर्वेन्।यःन्दःश्चःन्दःशेन्।यःशेवायःयःयः नश्रुव सः निवेद दें। । याय हे सा श्रु या न्या न्या न्या या से न्या न्या न्या निवेश रोसरायान्त्रः भ्रेरायाधेन प्रतित्रा हेते भ्रेरायरा वर्षाया स्वर् वयायवरायेन्यान्यानुः क्षेत्रायेन्य नेदेः ययान्यायायायायायान्यायाया यानक्केत्रामित्र क्षेत्र स्वत्र स्वेत्र सामार्थे वासामारक्के प्राचित्र की यशः इस्रशः भ्रूषा सासा सुर्या सम् सा वन् मा वे सा धेवा है। न्म ही में से मि नम्मर्भायायरायस्य निव्यत् निर्मे संभी संभी निव्यत्य निर्माय नदे सेदे सेद न ताय सेवास समाग्रद नेवा पास स्थित है। दे सूर द सेवा पा निवाहासाम्याद्यीवायात्राच्यात्राच्यात्राच्याच्याच्यात्राच्या धेवर्देश विश्वर्स्श

यत्वयानी विद्रास्त्रात्वयानी विद्रास्त्याचयानी विद्रास्त्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्

धरावश्रुद्रशाग्रदा कें विदेशात्रशास्त्रमासे द्रात्री न्यूताया व्रे.य.विया.विया.प्र.याद्वेशःश्री.श्रया.यव्य.य.श्र्याश्रीया.यक्षाःश्रवतःत्रश्र मर्श्विम्यम् हिम्मे विद्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य नन्नरायाद्वराये द्वारा स्थान स्यान स्थान स ८८ क्रियः मेरा नर्षेत्रा नर्षेत्रा श्रीटार्म्य श्रीयः मेर्यः श्रीयः मेर्यः भ्रीयः न्यायः नर्षेत्रः ग्रीश्राञ्चवा'सासेन्'यरप्रवा'रा'धेव'न्'कुवा'ग्रम्। न्मर्से'व्रशकेश'राश्रास <u> व्याप्तरा अल्ला साक्ष्राचित्राचा व्याप्तरा से स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप</u>्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था वर्क्ष्यातुष्याग्रम् केन्द्रेन्यासन्दर्भित्रेचनसे सेन्यम्मासुद्रस्य स्थान इस्रायम् तत्रवारा नसूर्या प्रदेशस्त्री याद्या वाद्या वाद्या हे जाया विवा भ्रेवा पदे र्वेवा या सेंदी प्रवार वी या कें या श्रें पा वरी ख़ातु वरी नश्चित्रास्य शुरुत्व नर्डे अष्ट्रवायन्य नेवे के त्वे के त्वे त्वे त्या हे सूर वर नर वर्मम ने भ्रम् केश मार्थे वा पर्मा नर्के अप्युत्त विद्या मेश वह्य प्राया गर्वेद्यः त्र्रः शुर्रः यायः देने अप्राचनायः सुर्यः है। । यह सार्यया वायः हे^ॱवॅॱनत्त्रक्तीःनरःत्ॱहेत्रःग्रेगःकेरःत्राग्रुयःत् हेराःपःयःहेराःपरः नन्वारादादेवे वे वित्रात्त्वा प्राचित्र वर्षे व व वित्र व व नदुर्यानर्वेन'पापर्वेन'परप्रमुरार्दे । विर्यार्थेन'पाप्पार्वे छुरासुर वः धरः नर्ते दः राष्ट्रे नः यः यः नश्चायः न दुः नर्ते वः सरः नशुर्वः वे । देवः वः यास्यापरान्यापरेनेत्वे। वद्ययातुःधेन्त्रं सेन्द्राचावत्रेत्रायास्यया

ने भूम प्रवाद प्रशास्त्री भूग प्राचुरा भूग प्राचित्र भूम प्राचित्र नुराया किंरान्दर्गेयावेदर्केरासे दर्भेना स्थेग परेपायर वर वक्रे नर्भ वहिनार्थ वशुराते। क्रिके व व द द सुन्य विना भारतिवा । नर्भे द वस्त्राचित्रात्तेराक्षेत्रातासाचित्राता । निसासाक्ष्रस्त्राची सुवादाची क्रिया इन्यमा निविष्याणनायके नमायहेग्या सेन्ने। निह्नासे शुर्धिमा यर्सेयावर्री नामिया वियापाशुर्यायते स्याय्यस्य से ग्राम्य से साम्र के त्रमुन् मुर्दे । दे प्यतः नेवाया सदे क्षेत्रा सदः तुः क्षुया ग्रादः नवा से दःसरः वह्रमान देव कुराया के शाहुर दुः यश्रा शे भेशा ग्राट मार भेशाया यदे रा येव भी अपन्यस्ताव देव के से कें स्थाय या नाय है देना अपन स्थाय स्थाय श्रूर्या ग्राम्या विषय से द्वी प्राप्त के प् हेशम्बन्धिः धुम्रायादाद्वा । देर्माद्वे क्षेत्र्याय वेत्राय धित्। नाय हे देनाय नरय कुर हु शु हो द गरा । किया ग्री हे या शु किया या श्री द

यन्ता । वर्तेन कवाया ने स्वरामित स्वरासित होना । ने नियान में से न अलान विना भन्ने अस्ति । निना अस्ति । निना अस्ति । निना अस्ति । वहिनासाक्षात्रमा । नन्नाकिनान्त्रात्र्येष्यसावहेत्रके। ।वन्साह्मनायसा वे सूरळेव नविवा । नगे र्से र नग र्थे न य नगर वे र । । नग से न य य वहिवाराव्या विवास वसरा उदा श्वास निवास विदा विदा विवास निवास वें सम्वित् विश्वारी दिन्द्रम्य नवें संश्चेरसम्बर्ग नाय हे सर्वे देश बर्स्स्य अर्देव नवेद्रा । यद्र नवा क्षुः यः वीं अर्थः यः द्वा रहः अर्देद् । । वादः ववाः व्यान्यम् भून्य व्यान्य स्थान्य स्थान्य । व्यवस्य स्थान्य स्था स्वा विश्वास्य साम्मा हेव हिट प्रत्रेया सम्प्रत्युर न प्राया स्वा हिश्च ८८ क्रे अ.येषु. रूप अस्त्राच्या याचा याची राष्ट्रीय स्त्राची राष्ट्रीय स्त्राची राष्ट्रीय स्त्राची राष्ट्रीय स् मर्था स्र-निविद्यायाः सर्वेद्याय स्त्र न्दा स्थानकुःसन्दा हेन्यश्चाह्दानकुःसन्दा वर्षानःस्टाने।कुंदा म्रोटाइस्थरान्दा वाश्रुटार्यावव्याद्वस्थराग्रहायक्षराद्यारास्वायः इमालाक्क् वर्रेट्य नक्केट्रियर द्यान के मावद्यी देवर् मा बुट्य र होते। गिरुरायान्यस्यायाने भ्रेरायदे स्वत्ते स्रायदे वा हेता वित्राये के स्रायदे वा हेता वित्रायो हैता वित्रायो हैता नर्रेश्या सेत्र मार्थे द्राया वहिना हेत् ही संदे देत्र नहेर केना हेश वज्र ह्रा यदे में न र सर् प्रमुर न दे। में स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध से दे दे दा केर मार्डे र्वेरःश्रॅरःवेरा यहेगाःहेवःयरेःवरः हुरः उसः रःश्रेरःवः स्रुशः यः धेवःया

र्देन् ग्रम्प्त्रम्न स्वर्धित् प्रत्येष्ट्रम् स्वर्धः श्रम् । श्रुम् स्वर्धः श्रम् । श्रम् स्वर्धः श्रम् । श्रम् स्वर्धः श्रम् । श्रम् स्वर्धः श्रम् । श्रम् स्वर्धः । श्रम् स्वर्धः श्रम् । श्रम् स्वर्धः । श्रम्यः । श्रम् स्वर्धः । श्रम् स्वर्यः । श्रम् स्वर्यः । श्रम् स्वर्धः । श्रम् स्वर्यः । श्रम्यः । श्रम् स्वर्यः । श्रम्यः । श्रम्यः । श्रम्यः । श्रम्यः । श्रम्यः । श्रम्यः । श्रम्य

ग्रुअः मः ने 'त्यः वें ग्राः हैं ग्राः नश्यः नहीं ग्रुटः स्वः व्रशः त्वें सः नवेः सुत्रः र्क्षेत्राश्चास्रशः उत्।यः धेत् भ्रेत्रः सुत्रास्यः त्रीत्रः प्रसः त्रास्यः स्थः विषयावि चुर्यायाति विषया । स्थित्रान्द्रात्या श्रीत्रात्या श्रीत्रात्या । स्थित्रान्द्रात्या श्रीत्रात्या । स्थित्रान्द्रात्या । स्थित्या । स्थित्रान्द्रात्या । स्थित्या । स्थित्य । स्या । स्थित्य । स्थि र्क्षेत्ररायित्रायेत्र्याचेत्रायित्रायायेत्रायया देखार्देत्याहेरावश्चेत्रायस भे देवारा र्शे सूराता देव दु वाहेर ग्रुप्य वावरा सूर्वर शु देव दु वाहेर न्वीं अप्यान्दायवर व्यापी र्ने वर्ष या वे राज्य विकास वार्सिम्यारास्त्र सुयार्स्व म्यारास्त्रे में वारान देवा महेराम् अप्यार मार्यः अन्यासुर्देवर् पाहेर्द्रविकाहे। हेवर्देर्स्यायराम् कुर्याययास्य देशखेग्रशः विन्यस्य तुः नः धेत्रः सदेः द्वीरः से । खुशः ५८ व्यदेशः श्वीरः ५८ र वित्रम् सुत्र शुक्ष र्स्टिंग राप्ते सित्र सित्र सित्र मित्र महाराज्य सित्र प्राप्ते स्वर्थ सित्र प्राप्ते स्वर नर्भुश्रासासाधिताते। खुश्रायाश्चित्रासासुत्रासुसार्क्षेत्रायासाम् स्रीतासा वै म्बा ब्रुम्य ग्री सुन्दर्देव विद्यो पर्दे रायन्दर्देव पर्वे राह्य स्था धेव यदे धैरःरी । ने यः नर्गे रश्चान्य सर्वे से दे से दे से ते स्वार्थ से दे से से दे से दे से ते से दे स सुव्रसुस्र केंग्र मार्या निर्वे मार्से सासुव्र सुस्र केंग्र मार्थ सिव्य स्रोति स्रोति स्रोति स्रोति स्रोति स्र विराधराधित प्राचित्र या विराधर्मित स्त्रीय स्त्रा विराधित स्त्रीय विष्टा यर र्से दश दे र वा वी श वा तुवा श श्लु न श्लू न र वा शुर श र वि से र र्से

नर्जेन्यःश्रेषाश्राक्षेश्राध्यः विदःस्यः नुः चुदः नः इस्रशः नुशः सेदः स्रेतः निश्च । देः न्वाः पोः त्व्यः स्राधः यः श्रेषः स्रितः स्रेतः स्रे

सबरः ब्रुगः रेशः येग्रायः त्युनः यति। क्षेतः यह्याः यशा सेः धेः युः यः नहेव वर्षात्री स्वानस्य कुर्ने के त्यर र्स्या विष्ण म्यूर्य सम्भा श्रेश्रासर्क्षेत्र प्रदे प्रदेशे देवे प्रदेश हेत्य प्राचित्र त्र स्थित सर्वे प्रस्ति प्रदेश स्थित स्थान सिव्यत्तित्त्रीं मित्राया ने प्यम् के न् सम्मिन् मित्रा स्था ने क्षुन होन ग्री कु न्याय र्ख्या विस्रय दे त्यस ही उत्तर पित हैं। विने त्येंदि खुर्अःग्राट्रासळंत्रःहेट्रापेट्रअःसुःसःहेषार्यायःपेतःपेत्रःत्रहेषार्यायः देशा वियःतश्रात्रश्रात्रश्चात्रश्चाराश्चाराश्चित्रः हित्त्रश्चार्याश्चित्रः विवादित्रेशः या ने या ते नि कुयाया र्शे वा रायदे निश्चन सदे वा वे प्येन्स शुः स है वा रा धरःवशुरःवश्रः केंग्राधशः द्वो श्लेंदायः श्रेंग्रशः धदेः वश्लवः व्यवि । धेंदशः शः ह्रियाश्वासम् श्रुम्प्रायायम् प्रमिश्चिष्य। विष्याधिस्रशः श्रुम्पा वे नि ने नि ने नि ने नि नि ने नि ने नि ने ने नि ने ने नि ने ने ने नि ने नि ने नि मश्राद्रगादायार्देव कुटाचदे द्रवी क्षेट कें वाका ग्रीका के ग्रावेका बेट वादरा ग्वितः द्र्या । श्रॅं वर् ग्री: द्र्ये श्रं प्राप्त ग्रं श्रं श्रं र प्रे स्थित प्राप्त हैं र प्रे र र्थे हैं ज़्यार्थे दानर र्वे से सुदाबी राम्ने दानी की हैदाया पर रामा निर्मा यायम्बर्गान्यस्त्राहेन्द्रेन्यस्वास्त्राधी न्यायायादेन्स्हर्यदेन्ने सूर गीर्था छे मुः विश्वास्था नसूत्र मित्र मित्र स्थि राष्ट्र राष्ट्र स्था केत्र र्सर्भिश्वासराज्ञश्वास्थितायार्देषाः आहेषाः आहेष्ठाः त्राक्षेत्रः विश्वास्य विश्वास्य

श्चेशन्त्रविद्यान्य श्वर्षेद्य विषय श्चेश्यय श्चेश्यय श्चेत्र श्चित्र या

*ॾॆॱ*ॸढ़ॖ॔ढ़ॱॸॺॱय़ॱॺॖज़ॺॱॾॆॱऴ॓ढ़ॱय़ॕॱॸॸॱॷढ़ॱय़ॱक़ॺॺॱख़ॱग़ॖॺॱय़ॺॱ स्याप्तक्यार्ये । ने सूरप्रके ना हे शासु इत मान्याने विश्वापत्र पर्ये रासूर नदे खुषानश्रश्राने पहेना हेन पर्ने पश्ची सेंगानशा ही सदे नि पर्ने र्देव'गहेर'भ्रेअ'हे। भ्रुनअ'दर्शे श्रुव'र्अट'न'द्र्रा'द्र्या'स्वग'गी'यअ'द्रव्यश देशरावे क्षे क्रा भ्रेना रार्श्वेर प्रनो न न क्षुन रायायन प्रमान ने प्रमेवि में वयर वर्षेत्र सेंद्र ग्राम् वर्षेत्र दे रहे रहे साम्री सार्के गायत्र से वर्षेत्र मी से स नुःकुरःनुःनरः बुद्रःबेरःनदेःनश्रयः यारे क्षेत्रेश्वः यात्रा द्वीरःनरः बुद्रःबेरः नःवर्षेत्रःनः सम्बदः नृषाः वेतः सः वेषाः मधेः नस्राः निष्यः नहेव'व्यान्त्राम् क्रियां के अर्था मुद्रामे अर्था मुद्रामे अर्था के वार्षे राष्ट्रीय नमा भ्रेमानुष्वीरावी नमसामाञ्चरान्वी माने। यदी सूरासु से वि वि प्यरा ब्रियाग्रम् तर्नु ग्रीन् ग्री सूया नस्यायस्य सायन्सामस्य ने त्यासमानिस ग्रीसा निन्नराविक्षामाञ्चित्रं के विवाधिताम्याधारान्याम्य निन्ना से नि

श्चरः परः दवः वर्गेरः रेशः धरः श्वरः पश्चरः दवः धरेः भ्वरः रिष्टेरः वरें अः वर्षाः वाषरः अरः क्षुरः वः वर्षावः वाषरः विषः वः वर्षेः वः वर्षे वः विवः हे। र्रे शुर्शुर्वमा विवमाद्य में एसूना नस्य है। । धुर्दि देट से नवर इययाशुः भूमा वियादमा क्षेत्राया श्रीम्याया श्रीम्याया यामा विवा वर्षिरःचवे वर्षिर वे ह्वा हु वशुराया । वर हु व्याय वया वर्षे या उया यानदेराशेश्रया दिन्देरियामराद्वराधेदारेश्रामुश्रयानु। वर्ते न सहस्र म्हा सहस्र गुर हु रहिस सम् वर्त्वम् । विस प्रस् १देवे श्वेरानदे वर्शे वाषराद्वावर्शे द्रावर्शनर विवाह क्रें वरा ग्राप्ती वा है। नवि'नक्कु'रा'यथ। अप्रथारा'क्स्यथा'या'अर्वे देश'ग्रामा । नुशुयानाम्म अर्द्ध्र अप्यहेषाअप्यञ्चेत्रप्रम्य । इस्रायागुत्राहाते : इस्रअप्या । श्चेत्रापातः वहिमार्याया अभित्र ने में त्रा विश्व निर्मा विष्य निर्मा विश्व निर्मा विष्य निर्मा विष्य निर्मा विष्य निर्मा विष्य निर्मा विष्य निर्मा ग्रम् वर्षिम्यम्कग्राम्ये प्रमान्यम् । विश ८८। श्रॅ्रेनःसःयःश्रुट्सःसःयस्यःग्रहः। हेःसःहेःस्ट्रन्रःवर्गेःनःगुदःयःवरेःवदेः वर्निमा भी भी । निःक्षाने व्यक्ता स्वाना हिःक्षःहेःक्ष्ररःवर्शे नःगुन्यः सूना नस्यायर् भी राष्ट्रेश हिया निःक्षरे क्षरानिः स्या स्वाप्तित प्राप्तित स्वाप्ति । हि स्वाहि स्वाप्ता नि स्वाप्ता नि स्वाहि स्वाप्ता नि स्वाप्ति स्वाप्ता नि हुः इस्रायसेयान। । दे १६४ दे १६६४ वर्षे १७ वर्षे १० वर्षे हिः भुः हे भुरा शे सूया न क्षेत्राया भीता हु । स्वर्ते या स्वर्ते या स्वर्ते । स्वर्ते या स्वर्ते । स्वर्ते या स्

क्रवाश्वाश्वेश्वितः हुं हें वाविवा विद्युम् । विश्व ह्रें वा स्वाश्वेर्यः वश्व श्वेर्यः व्याप्त स्वाश्वेर्यः वश्व श्वेर्यः वश्वेर्यः वश्व श्वेर्यः वश्वेर्यः वश

नेति: श्री मा श्री भा त्या प्रति । त्या प्र

नश्रमाञ्चरनर्देशयान्ध्रेश

यिष्टेश्रामाने प्रभेत्रीत्राचित्रव्याच्या । त्रीमान भूषा प्रभाव स्थापित नःयःवैनःवर्देनः वुदःनः ने क्रेंबाःस्याम्द्र्याःयाया शेष्टेन पेतेः इयासरः सब्दानायारवातमानविवात्। हेरायेवानुःस्टार्विःस्वानस्याहेः नरःवि'नवे'बरःमायार्वेन'वर्देन्'वर्त्तुरान'णरःहेरायेव ग्रीःस्रार्थे सूना नश्र्याची र्राप्तविद उदाची हेश र्रो वाया अर्बेट राया रवा यय राया য়ৢ৴৻৸ড়৻ৡয়৻৴য়য়য়য়৸য়য়য়য়য়য়য়৸ঢ়৻য়৻ড়ঢ়৴৻য়ড়ঢ়য়ৣয়য়য় स्वानस्याने वितायार्वेन पर्देन से नविनक्षायाया वारा यायर्ने रार्श्वे प्यें दाश्री प्राया विश्वायायायायाया । स्टा हिसाया निवा श्चेन्यन्ते। । वर्ने न्याय गुन्यवरा गुन्यन्याय। । वेयायास्य स्यासी स्रीमः र्रे। । देशवः बरः धः देवः पाहेरः वश्चेतः धवेः बनशः यः पाहेश। सूपाः वस्यः ८८.भीय.पर्वेत्राची.स्र्र्य्य प्रभागमा हेय.पर्वेत्याच दे.चीहेश.मी.स्र्र्य वर्षान्यस्थान्त्री । न्दार्भात्यानिका सूनान्त्रेत्रात्रिक्तान्त्रेत्रान्त्रेत्रान्त्रेत्रात्रे नश्रयाप्तरा गुन्दवुराविरानवे वहुना देयानश्रयापि । प्राचित्र

महिश श्वाप्तित्वेष्ठप्ति । श्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप

श्रुयां नित्र परित्र निर्म निरम निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निरम

गुव प्रज्ञूर वे क्रु प्र क्ष्मा परेव वे पे वे प्रवस्त स्व प्र स्व गुव वर्चर मृत्या स्वाप्तरेव वर्षे न प्येत्र वर्षे के वर्षे से स्वर्धिय वर्षे से स्वर्धिय वर्षे से स्वर्धिय वर्षे स र्नेन क्री रेयाय रे र्राया अनुवायमा न्यो ह्या । वरी वे स्या यस्या वसवाशासवे विनेतासवे विनेते गात्र विनायसवाशासवे विनेतासवे वियान्त्रास्त्रभेत् ने ने ने स्त्रम्भ क्षेत्र स्वर्धि । स्त्रम्भ क्षेत्रम्भ क्षेत्रम्भ क्षेत्रम्भ क्षेत्रम्भ क्षेत्रम्भ स्वर्धि । स्त्रम्भ क्षेत्रम्भ क्षेत गशुरुरुप्यायान्ने १५अरुपये व श्री मावर के व से प्येर प्या क्री व से र ही । हे र यर गर ले त परे भूम गर्य ग्रामर हेर य में ग्रामर विमान मान वर्देन भ्रेत के अवेजा या नेजा अभ्रेत्र का का का का ने मार का निवास के विद्या देशन विवास रागर्य चुः सरी गार्य सुर राय वर्षे नय स्था वर्षिर नदे सुन् र्से ग्रास्या नस्या नस्या नदे नर वर्षे न सदे सुन् रे वे जी म्रीयानश्रुयामाया निवे निक्तामायया सूनानस्याकुः सर्वे त्यो सम्या इस्रायागुरानुः पेरासेरासे । श्रिमासेरायेर स्त्रीयानाया डेशनः क्रीः शेष्ट्यम् । विशयाशुर्शामा स्मा यर्ने विष्परः न्याः मरावः यर्ने यः यालेवाची स्वापस्याके विशस्यापस्य ची क्षास्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

क्रें निन्त्रे निन्त्रे साम्यास्यान्य विष्याची निन्द्रे निम्सिन्य मास्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित |दे'दशःरदःश्वा'नश्याचीं'कु'अर्केंदःशूदःव'अर्वेदःदशःदे'यशःवरःवरः वर्देन्'रा'त्र'श्रृषा'नश्र्य'ने 'नर्ज्जेष'न्ये अ'राम्'अर्धेन्'त्य'ने 'ट्यान क्रुं' अ'नर्ज्जेष' वःशेः व्याप्तरंभे यावया नेते कुः हे व्याप्तव विषापी वास्त्रयान् गुवाव चुना पी ननेव'रा'लेब'राम्'होन'राबा'नेवे'र्देषा'नु'गुव'यहुर'षी'ननेव'रा'पाशुरबा' श्री दिवसायिर्न्यत्रेस्वानस्यात्रवानस्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यस्यात्र्यात्यात्र्यात यश्रामार्द्धेत्रस्त्राम् स्त्राम् स्त्राम स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम स्त् ५ ने रायदे गुर वर्ष्ट्र मी निर्देश मं ने राय हु रायदि रायदा नर्ज्ञेना तुरुष्य सम् अर्थेट ना त्रुवा नश्रूवा वर्षा वा वा वा वा वा वि वर्षों वा या अर्दे त्रु तुःनरःधेःन्रअःवळवःनशःनेवेःवेनाः पुःवर्गेनाः पवेःननेवः यः नाशुरशःशे।। र्दे त्र्यूना नित्र नश्रूत पात्र वर्षा पायदे दि पा श्रु निर्मा स्वाप्ति वर्षे हिन् मुल्कीया नित्र हें तरमर निया अर्थे लेखा हैं तर के नित्रे के ह्या नह्या वि'नदे'दर्गेग्'म्थ'र्भेन'न्यूय'म्थे अ'मदे'म्'र्मेन्'म्यूप'र्मे कुं रिश्वास ने व रेटा कुं ने निर्मेण व श्वास स्थान स्थित । <u> नुः नुर्दे स्रुक्षः नुः वरः सः त्याः वर्षः नुः स्रुरः वरः सः । नेः स्रूरः वरः सः ।</u> वर्गेना'स'सर्देन'र्'तुर्दे सूस'र्'वहेंन'स'न'रेर'वर्ते नदे लस'न्र प्येन' स्रुस-५:यस-मी:यदेव-यायायह्वायसायसायदेव-वासर्वास्ट्रा १६ क्षरायर कुर क्षायय। वर वे भे या उत्तर की कु वे श्वर ग्राया। वरे र यावशः व्यान्यः श्रुवः विश्वेषः यम् न्युः नः श्रुम् । श्रुमा नश्यः श्रुः न्दः ने वर्षेषाः

यन्दरने नविव त्यमा विभाग्न श्वरा निमान्य निमान्य । वेशमाशुरशःश्री । १२ १६ र त ने देशन वि दे हो ना पा के कुर गुद हु । यद र्अरगश्रम्भिन्। वर्षिराचरावहुगामान्दाने वर्षामिन इसरानदे नर्ना नेवारायरानस्याय धेरायरास्य इस में वानसून पायर न्वेत्र हु नाय के बिटा १ अस्य त्येत्र श्री त्या ना श्रू साय ट के नस देस सारे क्ष्र-र्-र्र्भ्यायाविद्र-द्र्मेश्वरेष्ट्र क्ष्यायदेव व्यवस्थाय विद्र्भ्य व्यवस्थाय नःयः बेतः वेषा इत्यः अः विषाः सेन्द्रा वर्षः वर्षेनः वर्षेनः वर्षेषः वर्षे नशरिः गुरुः गुरुः द्युरः नुः दर्भे त्या गुरुः द्युरः नश्यश्रश्चारे स्री द्रश्चार्वेरः नदे हमायश्राद्वा हैं दे से द्राया द्राया स्वया विषय स्वया विषय स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया सर्वेद्राचित्रस्य विदेशाया स्थान য়ৄ৾ড়৾৻য়ড়৻য়৻ড়ৢঀ৻য়৻ড়৻ড়ৢঀ৻য়ৼ৻য়ঀ৾ৼ৻ঀয়৻ৼড়৻য়৻ড়ঀয়৻ঀ৾৻ড়ৢঢ়৻য়ৼ৻ वर्गुर नदे भ्रीर प्राप्त श्रम्य श्रम्य गुन्य संवेशन दे हे नर वि नदे वर ययरर्देशक्षेत्रे वेद्रायश्वरायर्देद्रायादेरायर क्वें यायार्द्वयात् वद्रायि हीरा 到

55:31

वर्तिर न श्रुवि श्रुवा नश्र्या नश्रया राजा श्रुया

र्रेया. यर्षेत्र. यश्चर. यथा. र्रेया. यर्षेत्र. र्येया. यर्षेत्र. र्येया. नस्याम्बुसानस्याम्ब्री । न्दार्भित्री मलेशः श्चेत्रायस्य नेसामान्द्रिः नशर्येरशर्दरवक्षे:नर्दा विर्दरम्भेग्रस्यानस्यर्र्या |वर्तुरःग्रवसःवर्षिरःतःवःवेःश्चिःसह्दःवेदः। |वेसःग्रशुरसःपःक्षरःवर्श्वसः नर्दे। नि.ज.पर्वर.च.ज.श्रुं.च.चर्श्वराचान्त्री ने.ज.र्श्वा.चर्श्वराच्यादे.यहीर. न्देशस्य स्वाप्त स्वाप्त वि प्रत्येषाय शे सुया प्रस्य पान वि से प्रमुन में नकुन्भें विने वे नर्डे अः वृत्रविन्य ग्री अः वृत्रा नित्र दे अः विदेत नित्र भून अः शुःसर्रे से पुःसराग्रुर्स श्री विद्ये र पुर्स से प्राप्त में प्राप्त से प्राप क्कॅिट'न'बसर्थ'उट्'य'अट'बुद'र्सेट'न'क्सर्थ'दे'कुट'ट्दे'भ्रूनश'र्शु'न-१ राक्रामा प्रिन्था विष्या शुक्र मित्र प्रिन्था स्थान प्रिन्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स यावे क्वियम् मुर्पेन्दा है सूर वेशाया सूर वश्चराया क्वियम मुर वर्ते वर्षे रात्र अञ्चन अरश्चाना प्रवास विर्मे वर्षे । देशे देश वर्षे । वर्षे वर्षे वर्षे । वर्षे वर्षे वर्षे व १८८, क्षर्यात्रीत्रः क्षेत्रः त्रीयात्रः त्र ग्वित्र प्रते प्रो से प्रो खुर संप्रम्ब ग्राट खदर से नहर नर से सस न्द्रीम्यायायार्मेन्यार्थम्याया । मिष्ठेन्रस्मय्यायान्यात्रायाः यर से निहर निरम्ने अपा केर निषय विर दूर अपा केर दर निषय के

शु'नर्झेस'हैं। र्शेन'वह्या'पशा न्रह्म नहेंन्न्द्रेन'त्राव श्रन सेंगशा | धुर्दि: देर: दुर्य: शु: शु: दुर्य: गुर्दा । श्रेयय: ग्वित: गुर्थ: या थेरय: या थेरय: या थेरय: या थेरय: या थेरय: वै। । ने छेन ने पायस ने वासे न पास है । । विश्वासी न विवास न विश्वासी न विश्वासी न विश्वासी न विश्वासी न विश्व राष्ट्र-रियो क्रिं र व्रथम उर्दे त्येम ये क्रिंट यर यो श्री र मा हो यो हो यो । राकेत्रार्से त्यान्त्रान्य स्वीयायदे यही त्यया ग्राम्य स्वाया स्वीया ग्री स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स वर्देशःग्राद्यत् भूरःग्राद्यः कुराक्षेत्रकार्यातः इत्रक्षाःग्रीः वेषाः पाळे दः सें व्या <u> ५८.स.मुचा.स.कुच.सू.च्यूट.च.चाट.कु.लट.येटा ट्रे.स्थश.कट.सू.स्था.</u> धरः अः वाषोरअः धवेः श्रेअअः ग्रीअः देवः दरः के अः ष्यरः दवाः धरः वश्यअः धः यशः हुरः नरः रेगः परः हुर्दे । वेशः गशुरशः प्रवे हुरः रे । रे वः इसः परः अ'नाधेरअ'रादे से अस'ते 'द्राने 'दादे 'द्रासे नास'रा खर्मान्वर'र् 'से 'नाधेर' नःधेन्या देनद्रक्ष्यनेदेनद्रद्धमाक्षेयप्रम्यास्य र्शे से र हैं वा परे हें सा न हार हिर से समा परि । दे सा दे प्यें द ए द ही हैं सा नश्चनःयः त्रस्रस्य उद्यादे विष्ठस्य देवी सः सर्वस्रदः है। ।देस दः वेवा सः ग्रुंबाची र्पेंद पृत्र न्रुवाया ब्रह्म अरु दिया के अरु प्रो प्रदे प्रदेश वारा पर यशनाव्य र् से नार्थ र न्य र नाय शर्य है ना है ना स वि नाय शर्दे स अश ने निर्देशस्य स्थान स्वाप्ति । निर्वापित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स मदे है भू न न्द्र है भू न म वहे न मदे भू न सर्वे ह न में अर्थ ने न्द्र है अ शुःस बुद्र भः विवा स्रे वाहेश द्वीं शः धरः वाशुर्श स्वा । दे स्रूरः धरः दसवाशः

त्रेया हेत्र सद्या ग्रीद्या ने त्रिया ने या श्री । विश्वा स्या श्री । विश्व विष्य विश्व व

ने भूर स्वापस्य नक्ष्र प्रस्ति । स्वाप्ति स्वापस्य नस्य उत्रन्ध्यान्यम् स्रमान्त्र स्रमान्य स्रमान्य विष्णान्य स्रमान्य स्रमान्य स्रमान्य स्रमान्य स्रमान्य स्रमान्य स क्रम्भान्ता स्थान्यात्रमा क्षेत्रान्ता क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राचि । न्नाने क्षे नन् क्या नर्य की क्षेत्र न न्या के स्वाप्त नर्दे। भ्रिःनःगवस्यःदेवःयेवःन्दःध्वःससःस्याःनस्यःनदी। विसर्यःगश्यः ग्री वर् ग्रेन वस्र उर् ने कें देश स्थाय देश में नाम प्राप्त में निक्र में निक्र में निक्र में निक्र में निक्र ८वःषेवः८८:धृवःधशःथशःशुःशेः३८:वः८८:५८८:वश्चुरःवःशःधेवःथ। पिस्रशाम्बुसान्ती सेस्राउदानी पर्ने नेन सर्वे नारावन्तान पर्वे नाराविता है व ब्रॅंट्य.संदे र्स्ट्रियाय.रेट्ट.संस्त्रेय.योष्ट्रय.ट्रेय.संदे या.सं. तस्त्रेय.य. है। यर्देरावर्षेवर्सेट्याङ्गेरवाद्यावयायाद्याययेषावदेरयार्वेवरहेयासुर वर्रेषानमान्वी नायानमें वान्र्रेन्यने प्रमान्य मान्य वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र शुःशुराप्रशस्याप्रस्याप्रस्याप्रदेश विस्रसायाशुस्रात्रः हो वा

यहेत्रविश्वात्त्रविद्यात्त्रविद्याः विद्याः व

ने स्वराद्या स्वराद्य स्वराद्

यावर्गा नेव : हं दे : दे दे दे : या दे राष्ट्र नु:स्ना-नु:अ:न्दःस्व:म। गुठेव:न्दःग्लन्:म्-ग्ले: क्रियाया ग्री: धूर धूर उर्द द्वार्य निर्देश । विष्ट गाये सेट स्वाय देश स्वय क्षेत्र य यानसूर्या कुनाने स्ट्रिंगिरे प्रमायायायायाम्ह्रमाने। क्वाना से रोगिति क्वा सळ्द्रप्रत्यूट्यम् वे पह्या संधियात्रकारी:द्वरायार्वेदे द्वेट्यायादेवारीया विनःसॅर्न्युर्यःविरःसेन्यरसेन्यत्या देवान्यापदे सदेन्ते सन्ताप क्रियान स्रिटान्य स्रोत्त स्रियान स्रोत्त स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्रोत्त स्राम्य स्रोत्त स्राम्य स्रोत्त स्रोत ग्री में वित्वया है। यदे तु वा व्या वहुवा प्रया वे प्रश्लेत हैं । वृम् वृम् ये र्रे त्रेर र्धेरश्र शुरव्युर तर व्युर विटा विवास प्राप्त स्वास र मन्त्रे भारते क्रिंद्र ग्रीका सूनका भ्रीका निवादी का निवादी करा है। चबर्यास्थ्रवान्त्रवारवोराचर्ते प्यवास्यवास्य विष्या वर्षात्रीर्स्याप्याप्य <u> न:८८:ङ्कराय:८८:व्यव:कृ:८८:क्वं:न:८८:नभ्रःन:श्रे:श्रृवा:क्ष्टु:तु:८वा:वीशः</u> वे रेग । श्रेव श्रेव संज्ञान निव से मार्ड र निवे हि न या है मार्ड र न भेग्नह्म अवेख्रा भीज्य भी से अभे ने ग्राय या मार्ट ग्राय है ग्राय है स्था <u> श्रु.चार्</u>ट्रा क्.र्याय.धे.क्.लूट्या.श्री.क्। यञ्चया.यीय.धे.यञ्चया.लूट्या.श्री. नश्चेना हैर सूना नस्य ग्री कें र न के द में र्ना म हुन म शे न बर्म पेर

यार्था नाम्यार्थन मिन्न स्वार्थन मान्यान स्वार्थन स्वार्य स्वार्थन स्वार्य स्वार्य

सद्याद्यान्यवित्वित्वित्विः के द्वा है स्वा हु भ्रे सावित्वे के दे स्वा न्यूया या स्वा वित्रा वित्र वित्र वित्य वित्र व

क्षूर्यात्रवोरात्राक्षे नवर्याद्वीरात्राक्षेत्राच्यात्रवात्रवितात्रा ८८। विया ५८१ के २ उत्रह्मा हु वह्या पदे सदे स्ट्रिंग क्रिं व श्री व्या श्री स्ट्रा धरःश्चेवःधःष्यशःश्चेशःधवेःतुरःषीशःमरःधःवेःग्चेवःतुःवश्व। धर्मेःर्वे वे ब्रम्प्रान्त्रम् यापायापियान्स्यास्य स्वाप्त्रम् स्वाप्तियान्त्रम् स्वाप्तियान्त्रम् स्वाप्तिया ग्रीभागविम्। गुन्, पुःगविमः विम्भाविमः विम्। सूगानस्याग्रीः विमः नःकेत्रःस्रान्यः हुनःयः क्षेःन बदःयः धेदः दुः क्षेःदिदः नः द्याः वीशः खुशः ग्रीः ग्री:८्यट:में वस्य राउट दे क्या अटल ग्री:दे संभिद हु नर्डे वा प्रयादे खुरा नार्धेनामा क्रेंस्यायमास्र सकुर्दरसमीत पर्दर श्रेर दे नक्षसमाही देना प ८८११८८८ संस्थान स्थान स् यश्राभी द्वाराम द्वीत रायश हो अरादी हुट मे अरादाय तर द्वारामाय क्षराहे विगाक्षराहे प्रजुरारी । दे जुरासाध्या हा ही रेपा ही सुरासाया है इनारिंदे रेना य उद सु नुत्रा यन यत्य में या ग्रीय रेना द र्य भीय नउन्दानिव न् व्यानिष्य की कें मान केव के विष्य मान केव के विष्य के विषय के विष मधीन्नु अर्वेद्या शुद्रियम् वशुद्र में विश्वा मशुद्रमः विदा नायदः নবাম্যমানপ্রামান্য র্ম্রীবাক্তবামাবাব্র গ্রীমার্মমান্দ্র মান্দ্র ॶॳॱऄॕॳॱय़ॱॷॻॱॸ<u>ॏ</u>ॳॱॼॖॸॳॱय़ॱढ़ॱॷॻॱॸॷॺॱॼॻॱय़ॕॱऄॖ॔॔॔॔ॸॱॸॱॸॿॆढ़ॱॸॖऻ म् नदे सूना नस्य नस्य प्राय थ्या न त्रुन्य न त्र स्य प्राय शुःष्ठस्य राजे। मेट्र राजालु स्ट्रू र र त्या पाट्ट सर्वे शुः विरोधे हें पास्ट्र न्गर्नार्नात्रात्रात्रात्रात्र्यान्त्रात्र्रात्राहेर्याय्यात्रेयायाः श्रीवायाः ग्रीया यर क्रें १९ समा न्या से पा प्रमा प्रमा निष्ठ में प्रमा से १९ समा मदी पर्यादर्शकुं वयामळ्ट्रमप्ट्यन्यद्रम्यद्रभद्रक्रिस्स्याद्रम र्'यर्देव'स'यर्'नर्'ह्य'व'क्षेन'हेर'यर्त्ते'व'य्युन'स'र्सेन्थानेर्'यर्दे । यावार्ययान्यस्थि। सर्वेदानान्दान्यहेत्राद्याः के नायाः स्वायाः स्वायाः र्शेन्यश्वादेश्यत्रुः वे । ध्ययायार्येद्यार्श्वे द्रायार्थेद्याश्वाद्यायार्थे । नवयः न हुरः यः श्रें न श्रायः वहुः न गयः विरामा वदः यरः यरे न र विः ये वा स्वरः प्रवरः य इसरायार्येट्रा शुन्यरसे वुरायर्वे । क्रें पेंट्र श्रु हसरायं रेष्ट्र नश्यादी के प्रयाकेर वर्षिया शुरार् पके नाया है नाया से दे दिस्यया लट्टिलट्टे श्रेश्वरायम् विक्टिट्ट्रिलासालयाग्रहा स्वरास्त्रिया वर्कें प्राचित्र शुर्म । क्षें प्राचे या विष्य श्री या श्री या विष्य । विष्य । विष्य । विष्य । विष्य । विष्य । নম'ব্রিনাম'র'বেইনাম'নডম'নিহ'রুঅ'বর্ । ক্র'অম'বরুহ'ন' প্রন'ম'

शुन्दर्गेर्भिन्। ने निविद्यन् सेर्भानश्चेषा मन्द्रस्य सेंद्र श्रीराद्रम्य स्थ र्शेग्राश मुन्दुन द्वारी इस्र राज्ये द्वार्य । श्रेंग्राणे निन्दर से निर रास्ने ने इसराय विन हु से सरायी । कु केर रेवाय यस गुरा वर नकुः अरः द्राद्या विषयः भूगा नश्यः क्रीश विर्मे प्राप्ति अपि अपि । न्याशनविवा । मन्दर्व प्रश्निशनवेद्यास्तरे पर्यो हिया पर्या पर्या । वे प्रवृत्य सुर्भेत् केषा । त्रे र व त्राव सूत्र सूत्र हुत्य हि । हु निरानोवाराज्यामाञ्चरास्त्रम्याग्याद्राय । दे सूर्यन्तिमावर्गे निर्देश सन्दर्भ पर्से वा केटा । न्वर में वा बुवार्य न्दर हैं नर्य है किस स्वर हो न र्वेरप्रजुर्वेरक्वेव मः सर्वर्षर वर्ष । वर्षे ह्या हुर्वे पानक्षापर वेता । गर्नेर मं वेर हैर स्वाप्य स्र न्य वेता । पेर स सु गर्र वेर समितः प्रश्नः सः निवा विशागशुरु सः श्री

यश्री विश्व स्थानिय स

स्वान्त्रान्त्र्वान्त्र्वान्त्र्यान्यस्यान्यस्यान्त्र्याः स्वान्त्र्यं न्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स

मन्द्रम्यान्द्रम् । वर्देद्रम्यन्द्रम् । वर्देद्रम्यन्द्रम् । वर्देद्रम्यन्द्रम् । वर्देद्रम्यन्द्रम् । वर्देद्रम्यन्द्रम् । वर्षे क्रेंत्रचेंग्रायायुनायाद्या व्हेंदाग्रुयायायाचेत्रायायाचे ग्रान्याने प्रान्ति व्यान्य व्याप्य व्याप्य संदेत्य व्याप्य स्वर्थः विष्य स्वर्थः विष्य स्वर्थः विषयः स्वर्थः विषयः स्वर्थः स्वरं स्वरं स्वरं स्वर्यः स्वरं स्वर व्या । अर्देर-व हे नर लेव पंदे सुर में पृष्ठ मुन नर्थ लेव गार्श्वर मंदे र्नेत्रत्रम्भागाणराष्ट्रभे मर्नेत्रप्रायम्यम्यते स्वापस्य मे सेत्रप्रा सर्वित्यम् गुन्यायायायहेव्यये सून्यानस्य ग्री र्सून न्या सूनानस्य ग्री स्वानस्य ग्रे सूर्रात्रा वशुर वंदे स्वानस्य ग्रे सूर्रात्रा वर् ग्रेर् मृगानमृषानी राष्ट्रा वितान सुर्वे ने प्राप्त प्राप्त से स्थानि |ने'य'न्नर्सें'वे। हेर'येव'ग्रे'स्न्रें'य्ने न्नर्सं'य'यहेव'वसाङ्गे'न'ग्रे' वेव'रा'त्य'नहेव'रावे'व'क्'त्य'र्शेग्रथ'रावे'हेव'र्'ग्युर'रावें। ।गशुअ'रा'र्' नवि'म'ते। सूग्रानसूयागिहेस'सँ दिवेगात्रसाद्वायेत'हेस'सु'वहोयानस' ने'मिर्देश'नश्चेन'मर्दे। । भू'म'दी हेम'येद'ग्चे'सुम'र्से' ग्वान'र्दंश'ग्चेश'यर्नु विन्शी सूना नस्य वी रनः नविन नुः ही स्राप्त रहेन से राज्य स्यापास्य स्रोते ग्वर ग्री न्नर र ग्रुर प्रेर पर्र ग्री न श्रम र उर् पर्र ग्री र श्रम न श्रम लिव्यत्रे भ्रिम्मे । विदे विच हुम्वा नस्य नश्रुस मी भ्रम्भ स्य स्वा प्रमा 241

हेर ये दारी सुद से दे राम विद ती परियम राम अही ना इया अ विवा

अःश्लेशवःवरःपःर्देवःपादेरःग्रीःर्ह्वःक्षःत्रःअःश्लेःशःसेट्ःवेटः। सेसराःउतः वर्षिरः नरः विद्यक्षायाया श्रेटः हे के दार्ये प्यटः श्लेष्ट वर्षा के दाया विवासः के कुरमार र्वत्वाग्यर वस्रमायर वित्र के माया के दें। । रे भ्रेष्ट्र व्याप त्रे-स्राक्षेत्र-प्रवे-वाशुद-र्स्न प्रतिद्यान्योत्य-स्त्र-प्युत्-स्त्र-श्वे-हे स्राशु-वज्ञदस्य-ग्रीशः र्सेदि वयुर्गः न द्वार्थे वर्दे द द्वी शर्मश्रा न देश खूद वर्ष ग्रीशः सूवाः नदेव विस् नदे है या दक्षे नाया भे या या सूना नस्या न कु दान सुद्या यदे द्वीरमायस्यामायः भेष्ट्रीमायः भेष्ट्रीमायः भेष्ट्राम्यः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप क्षरामन्द्राया । विक्तिम् निष्या वर्षा देवा वा प्राप्त हिंदी विकास वर्षा देवा वा प्राप्त है । ळ८.४.७.२८.५९९.४.४.४.४.४५८.ईच.५ईच.५५८६८.५५.५.५५ नःलेवा वक्षः कुः विवायक्रेः नःलेवः श्री देःवाक्षेः विवार्श्वः तुरः नुः श्रुरः न भेत प्रविस्ति सक्त भेत न्या स्टान वित प्रविस्ति स्विस निर्मा निर्मा स्वाप स् याने यश्यायत्या रूटाउवाने याधीन वश्चरात्र क्षेत्र वर्षे रान्में या ने या मुःश्वेर-८ग्रेश-वाश्रर-वाक्षर-स्र-राव-प्रितिक्षे मात्र-विकेश्रीवाश-ग्री-स्रवा नर्थयावतूराना इसमाया ने खूरानु नमसार्थे॥

महिरामधुनानस्य नुनानस्य मही निष्य स्वाप्त निर्मित्र मित्र म

न्याः इस्रशः माहेतः नुः त्युरः नः नुः निष्वेतः नुः सः सुरः त्युरः विदः नुः सरः वर्गुर-न-न्दः अरुदः अर्व्युर्वेर विदः कुदः अः अर्व्युर्वेर नः श्रेविशः शुःरे अः यानविवादसँ यावयादर्शे नार्वि वाधीवाययाधीनानहवारुनानाधीयोनाया है। यनेशः ह्वेरशःयशा यदिः तुःहेर्यायदे कुर्याहेर्। ह्वे वे र्यार सुरायः अट्या के अप्ते द्वारा के वार्ष के प्राप्त के प्राप् य. इ.स.स. त्यायः अ. अ.क. १ वि.स. या श्री । के. यह के द. या प्याप्त ह्या गहेत्रस्य द्धंतर् प्रमुस्य स्थापर्मे हे। न्युर् प्रमान में स्वाप्य स्थाप्य से प्रमान स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स विगारिगात्र न्या पर अहं य वें र वियु र । अहं य वें प्यार वे रे पवित न्यार षरःवशुरा । दे विवायः हेवा ग्रम् दे वस्य स्वयुरा । वर्षः से हिन ग्रमः वे न्यार्ने र व्यार्म । दे निवेद सहय निवास के सावयुर नर रेपा दशकी । हैं मुँ अ.र्जेच.राज्ञ.वेज.तार.क्याज्ञ.श्र.शि विष्टेच.ता.रेयोच.यपु.श्रेश्रज्ञ.श्री.स्था. हैंग'र्म । नर्हेंग'रुरु'र्मो'त्य'र्छ'रार्नेर'म्बम्'र्म्स्य । विरुप्मस्रस्य <u> सूर नर्से समानमा न्यापिहेन यारे मासु नर्द समान्य समान्य स्ट्राय</u> श्चे प्राचनाना श्वे पर्वि र प्रवे रहें अप्य हैं नातृ द अन्तर प्राच र प्रदेश र प्राचित्र स्था प्राचीत स्थान यःर्श्वेष्ट्रायम्य

र्ट्स्मा स्थानिक स्था

यासानसूनसान्दे उसावमुदानमावणुमानासेससामि । वदी दी सर्वेद नार्थाक्षेत्रित्रिं निवित्त्वेत्त्रित्ति विवासित्ति स्वासित्ति स्वासित्ति स्वासित्ति स्वासित्ति स्वासित्ति स्व मदेः खुषान्यस्य स्याधेन क्षुः न्यान्ति साने। नने नाया वेद्या क्षुन्य वे भेन के सम्मे भेन भेन में निक्ष मे क्षेत्रायासेन्यमाधीः धीरासेन्यायसेव्यानरावश्चरावेन्। नेत्राग्यानावित्रा नर-देर-५.विष्ठभगःहै। नरे-न-दे-न्याःमीशःकःरुभः५.परःशःसॅ५-पदेः वर्गुरर्ने । प्रमेशर्श्वेरशयशा हे सूर्यसह उत्रश्चेत्र पुराहेत पादी। नदे नदे दें दुः से त्यागु दान से दा ग्राह्य । वि नर से त्यु र दे हि दा नर वै। । वर्देर् पाक्स्य अप्याक्षण कवा या प्रवटा या हो वा पर स्था हो । विकादा । विकादा । ध्रेत्रत्रश्रूश्रायश्राग्यम्। वर्देन्याने प्राचित्रायान्य। व्रित्याचित्रायानेत्र नु नक्षेत्र मन्द्रा । अद्दर्भन्यम् अस्य अस्य अस्य अस्य । दि व्यय वद्दर के मह विगार्थेन्। विशान्ना श्लेनःश्लेन्याययाः ग्रामा वर्षे नमः यव नकुमः यार्थेवः वर्त्ते ने नार विवा प्येन । र्से व कर प्यव सर स से हिर वरे न ने नार विवा । ह द्य. ग्राट. पर्ट्रेट. क्या श. पसे या । क्र्रेंच. कट. प्यच. अट. स. श्रींट. क्र्या. पर्वे प. ट्रें थॅर्भेत्र विर्मेन्तरम्मरमेशक्ष्यावसूरवर्देर्भरेर्नासेन् विरम् ळग्राज्यायेत्। वियाग्रुत्यामः सूरावययार्थे।

ग्वितः प्यतः शुः द्वः प्रथाः प्रथाः प्रथाः प्रश्नाः प्रथाः प्रभः प्रथाः प्रथाः प्रथाः प्रथाः प्रथाः प्रथाः प्र हुः श्चेरित्र विद्युर हे । अर प्रत्य अर प्रत्य अर प्रत्य । व्या विद्य प्रदेशिय व यारायब्रह्माया । क्रुःसर्वेदेश्वरायी खुःयाप्परा । हे प्ये क्वर् उसार्येदासा लेवा छि:न्रस्मारु:कुर्स्स्या अि:म्रह्म्यंदे म्यर्जे मार्स्स्या वि:से:कुर्यः र्रे ख़ूररें थे। किंद्र यश विर पुष्पा यर प्रमुद्धा । अहं य न वेश र न पुर चयानधिया विर्मित्रनदेग्वान्यासुगाराद्याया विवानी सके सदे विवास राधी श्विन्त्रकुः सर्वे सुन्य धीता । यतः द्वंतन्ताः पुः हेन् प्रवे श्वेन । यर्गे में नडन मान धेन मा अस्य न ने सूर यर्गे न ने विद्यासी वहिम्हेर्यायमा अभिन्तुरामुरा हैरार्या वर्षे । सास्र र्हेश्यानामान्येवामा । दिखेराकुः अर्केट के वटातु। । ने प्येश्यानगटाव पीवातुः विभागश्रम्भाभ्या विभागश्रम्भामा विनास्मान विनास्मान विनास्मान ग्रीअप्टेर्न् कुर्अर्न्द्राचेन्छन् यात्रव्या । खुर्अग्रीः क्र्वि सम्मान्य ग्रमाने। । ने मेर ग्रम क्रम विषय के व्याप्त स्था विषय प्रमानिया नह्य विषय भेराने पर्दे न पर्छम । विन् भेरा के पर्दे न कुरा दे न कुरा के न বাৰব্দেদ্র। ব্রিশাগ্রী শ্রুবাগ্রী অধনবাদ হব গ্রশাদ্রী বার্নুদ্র গ্রী শ্রুবা অন্ত सरसा ग्रुमः भेरा । तर्रे तर्दरे मार्स्य मारा सरमा मुमायसा से मा । वेसा हुः सेन् पाळुन वें सामाद्य प्राप्त कार्या क

निद्रा श्रुभावश्वायात्र श्रुद्धात्र प्रश्चित्र प्रश्चित्र श्रुव्य श्रुव

खुराधर प्रत्यापर प्रतिस्वित हैरा मानी से से देश प्रत्या है प्रत्या मदे:स्र में दी । क्षुत में सहस्र मा स्रे न हे गा यन सा शुर हो । विसा गार्स सा हे। शेस्रश्रुवः सेरेरेरेखुशः ह्यूरश्रुवश्रुवः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः र्रे प्रमागुरम्बर्गनि । प्यरम्बर्धरम् हेरम्बद्धम्य क्षेत्रम्य हेर श्रादश्मा विश्वास्त्री विदेष्ट्रास्त्रस्थरास्रेस्रश्चार्यादेवाचीरासा ग्रुसः यदे म्हारमाया श्रु राम ने देवा से ना है। यह वे यह वा या सराम से दिन साम या न्नोः र्ह्येन्द्रन्त्र । द्रमेन्द्रः सुरुष्यायः विनानी सः सः केवः र्वे व्यवस्ति। व्यवस्तुः न्याची क्रिया या रहे अभी भेर खार्चे या रहे । यह के स्वर्या यी अर्थे । यह के नन्गामी साने दे प्यम् सर्दे ले रायर्ने मानमा हो ना हो हो माने हिम्म । रा के न म'ते'ने'श्रु'स'धेत'र्दे॥

वेशन्दर्यो संवयनियायार्श्यायार्श्यायार्थयार्थायार्थयार्थयार्थयान्ववर्त्त्रम्

या श्रूष्ट्र स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त

त्याद्मन्यश्चर्यक्ष्यात्म्यत्वीत् । नियाग्रीश्वर्यन्यस्यस्थित् । स्वाद्मन्यस्यस्य विद्यास्य स्वाद्मन्यस्य स्वाद्मन्य स्व

|गर्नेरःसहेशःगरोरुराद्वःथ्वःव्यायःवय। ।क्षरःपरःद्ययःगरेःकः र्ने र्रा । वि में राप्ते प्राप्ते प्राप्ति । वि प्राप्ति । वि प्राप्ति । वि प्राप्ति । वि प्राप्ति । हेव सबय नग श्रूट गुरु हो। श्रूर भट खुव गवग श्रूग हु व शुर वया। रटानी लगा राजमुहरा रायटा से सर्वेट त्युम् विरागशुहरा सिवा वैगानगान्दार्कानागुरुयन्धिन्दी। अर्वेन्स्यानुःस्यादर्वेद्यापाने खूदेः नुःसँभानक्षेत्राचर्षि । भ्राणुयायर्देन् निर्मान ने सुसार् इस्मार्स साथ ळ८.जी.पर्ट्र खेर.जू १६.स.८८ श्च.यह.प्र्यं हे ५.४८८ यहे ४.स.स.सी.यर. वहिना हेत त मन्यायायाया सुरान अता स्था हो त ते नाहे या हो नावया से त पिट मी दिंद दें। विदे द्या मी श अर्कें द द श अर्चे श द श द अद श र वर्चे नदे खुंव वस्र रहन नमस्य नम् सेन्य से क्रियामात्रमम् । वि.लाट.पर्यंतामात्रम् । वि.लाट.पर्यंता नःस्टारायमा नमग्रमारागुन्तीःसवदादह्रन्देन। । सर्वेदार्ये हसमाग्रीः सवयः स्ट्रिटः वर्गुर्म । स्रदः सवे सवयः ते व्यवायः नः स्रे । वार्शे तः सवे सवयः ते । वक्रे न धेना विश्वास्त्र स्थान

म्यायात्राच्यात्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य

वस्र भी। विस्राम् शुस्र स्रम् से दे स्रम् मान मान मान मान से से स्रम् न्नुन्नराभे निहे निवे । सुन्नान्ना सम्याध्या सन्दर्भ निह्ना प्रकंपार्थे। । वेशमाशुरश्रमर्थे विरश्मरम्यमुर्ग्नायळ्याम्भेग्नेरन्नुन्यम् ढ़ॖॸॱढ़क़ऀॱॸॖऻॕॴय़ॱॴढ़ॖॏढ़ॱय़ॸॱॴॾॕॸॱॴ॒<u>ॸऄॕॸॱढ़</u>ॺॴॱॻॖऀॱॷॸॱॻॱॸढ़ॏॴ निवा डेश पर्दे । नर्से ५ त्रस्य वासुस ने हैं वासुस ही ५ वो नदस है द प यशः चुरः नः श्रेषाश्राचावि वाशुश्राश्रेषा । शुरु वार्षा अववः प्रश्राः ने सः रेषाः मठेगासु हुर न परा अव के मा भे अपने भारत भारत विमा है के के स वर्गेशवर्ग्यूरवा । यहंवयाविवाक्षें हे विवार्श्वया । भ्रेष्वाविवार्श्वभे वर्गुर-विटा विके वयर-रे हेर महिमायके से सिमायस्य स्राथा माववर से येवावा विवाया होता सहया वया है विवाहा विवया वासुर साम स्मार्सी। ने भूर दुवा वे वाशुसर पर्र स्रे। विक्राच वा धीर वह्व द्या सामेर पर् नेवे नने न ता वित्र सुन् गुर में सम्बन्धित सम्बन्धेन सम्बन्धित रुरम्बन्धे यरन्रस्यरम् सुरुष्टिरम्बर्षे । यदम्बर्धिरम्बेर्यायस्य नहरासी सुराना देश रामा सेरामार्थे । सुदार्से ग्रामार्थ मिरामाया धीरा नहता भे रुट्य दी अर्थे द्यात रुप्य र पर्यो । वर्शे ग्राय प्य पीट्य महत्य भे रुट्य नदी मैंग्रायास्यम् नर्मे नर्दे। ।ग्रायुयामदी यरायर हैरायळंयया र्श्वे राम्ये भ्रे नाम्यूनायि अववय्री अर्दिनायि । ने स्मानस्यान्या

নমম'মম'নুর্বা

याशुस्रान्यस्यायस्यायश्रिस्यक्षेत्रायक्षेत्रायकी द्वेर्यास्यायास वर्ष्य भीव र तुरळ न ने राय कु न भीवा न न न न न न न न न न सूर न वर्षिरावायाम्स्रस्याग्री स्वित्राचित्राची वर्षे विष्यानिवायाम्य प्यास्त्रवा नम्यानभ्रेत्रानम्यावस्य निष्यानम्याक्ष्यान्। निष्यत्स्र नानेनिष्यः धिव भी। ने निर्मासकुं म्यानिम स्थित मिले से स्थानिम स्थित स्थानिम स्था ८८। यार.ज.रश्चियाश.यश.श्चे.यदु.लीज.चया.यश्च.संश्चा.यर्थ. वेंद्रा भी रेगा पर्दा सदा पादा के राष्ट्रया प्रस्था प्राप्त विद्रात् केंद्र पार्थ्या नर्यभिषान्त्रास्त्री व्यास्त्रीयान्यस्य व्यास्य स्थान्यस्य स्थान्त्रा ग्रेन्स्रे भ्रम्यान्य्याग्रीःस्यानस्यान्। सावयास्रे भ्रम्यान्ने स्वितः वैं। । ने प्यम् वें माना वेया शुः श्रेव या वे श्रम्य स्मरमें। । नेया या ने या हे श्राया न्दायाद्यन्यते न्या शेष्ट्रव्ययाक्षाया स्थान्त्र विष्या । व्याप्यान्दाय व्याप्या विष्या । व्याप्या विष्या । व्य नन्द्रम्भूष्रमाने। न्यान्यान्द्रम्भ्याः स्वान्यान्द्रम्भूष्रमा नर्थाक्ष विदेश्यरः विद्रायां विषा स्याया विष्या स्वाया विद्राया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाय यशन्दर्हेन्स्स्रित्राम्भ्यदेगावन्दन्दर्गुम्हेद। सूगानस्यन्दर क्रॅंबरॲटशप्राष्ट्रीः साइसशाङ्गीः नदिः सार्चेदरहे सासुः दर्शेषानसादः गुवः हुः वर्त्ती निर्देश्यात्र सारत वित्त निरम्भित वित्त वित्त निरम्भित वित्त वित ळग्रायामुर्याप्त्रा सूग्रायस्यास्रुरायाम् वित्वित्रसेयाप्तर्ता वरेः स्वा वार पर सेव रावे वाव रात्व येव र वार्ते वारा रावे खुरा या से ह्वा रा लाह्नामार्श्वेम्रास्यस्य विदेशम्य माने स्यान् स्थान स्थानम् । प्रान्ति । ळग्राणीरादी द्वी सर वर्ची नाष्ट्र ह्यी नाया स्वीत्र स्वा नास्वा नास्त्र ह्या नस्वा नास्त्र ह या वे सूर वी अ वे प्यते र शु र व र शें वा अ र र र शें अ र र व र व शें वे सू वा न सू य नश्चेत्रहित्। यहि स्वापिका विश्वेष विष विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष यिवेशमां भेरविहरं यदे ही र विवास पर्दे । दिस द रहें र य यहे य र स्वा नर्थान् नर्भाता । क्रिंस्न नर्भाता । क्रिंस्न नर्भान्य स्वास्त्र स वर्रे सूना नस्य ग्री कुते केंन्य राय भेता स्थारे त्यस वुना हु सूर ग्रूट नर नश्रश्राया विस्टर्मिया विस्टर् माशुस्र नुमामाशुस्र श्री सुर से मार्ने द नवे । दे दमा वे स्वावर्शे र श्री द प्रवे शः प्रः इसः सरः वाह्रवः यः प्रवासः वर्षः प्रवेः प्रवेष्टिशः सः प्रवेषः प्रः प्रविवः प्रः प्रविवः मर्दे। । निर्मरम् सिरके वर्षे हिरम् वे सिरमे हे स्थायस्य रिष्मा परि डं अर् र्निया अर् रामित्र मित्र के त्रा हे निराये का मित्र म न बुद्द्र निष्या में श्रीद्द्र स्वाप्त नश्यान्दिक्ते सेंद्रभागी पात्रभाद्य यो वा नहत्र कवा भाग्य पेंद्र प्रभावन् वेद्राण्चीः सूना नस्यादे । वेद्या केद्या नस्यादा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स रे नुरायर ने साम्यापर हैं क्षे कें या राष्ट्र स्वाप्य व। ५५.ग्रेन्थे,क्यानक्ष्यं वे क्यानक्ष्यं वस्य वस्य वर्षः वर्षः वियः पान्तः क्या

नश्यान्वतानिकामी सन्तानिकामी सन्तानिकामी नश्यानिकामी ग्वित 'पट क्रम्थ 'रा क्रुश राम 'द्युम 'रादे 'न 'क्षेदे क्रिंम 'रा रामे 'रा दे ' ययः र्रें के सूर्या नस्या द्वीर नर्रे रायाया नरे निर्देश ही राया धिव ही। सूर्या नस्यानस्यानायासानिहेंसामदेन्ति हैन्छेराचेराने नहेंसे हो नहेर त्रःवर्त्ते : इग्रयाययः सृग्। नस्यः नः तः नस्र : प्रशः नरे : नते : र्त्ते : स्वाः नरे : स्वः स्वाः नरे : स्वः स यदःस्वानस्य के र्रेया द्यावायायाय सदे के। वरे वर्षेया ग्रीय स्रीय सर ब्रूट न पेत्र ही। दे ने हिट ही अपने न ने से त है। क्षूर पट न ब्रूट इन अप वःश्राक्षरःश्रृवाःवश्र्वाःवश्रुदःप्रवेःध्रिरःर्रे । दिःर्वेःक्षेदःश्रीशावदेःववेःकुः लिव,व,र्वेच,चूर्व,चूर्व,चूर्व,हुर,चर्ड्रेच,त.व्याचीश,र्वेच,चर्वत,हुरव्युच, रुष्क्रीं न न ने निष्ठिष्ठिष्ठ निष्ठिष्ठ न निष्ठिष्ठ न निष्ठिष्ठ न निष्ठिष्ठ निष्ठ निष्ठिष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठिष्ठ निष्ठ निष म्निन'स'नक्षेत्र'म'र्सेन्।र'ग्रूट'हे'र्डस'र्नेट'र्नक्षेत्र'म'रे'र्डस'र्-नरे'न'हे' वसेयानु वर्षे प्रति वर्षे अपाया देटान्य अपाय स्वाप्ति वर्षे धरःश्रूदःववे धेरःर्रे । दे क्षूरः ष्यदः अदयः दुः वहुवा धः यश्रा द्वादः वे वळवा'रा'न्रा'यन्वा'रा'न्रा'यमेर'यन्त्रियानवे क्षेत्रा'यारा वा'ग्रामा के रि र्शे र्शेर-स्वानस्यानर-रेवानर-तुःस्री नश्रमान्त्रन्थः सुँ रायसारे वेर् डेर वर्वेर वर्षे वेर वर्षा प्रमासे वेर् कृषा वर से वेर व्या वळवा भने त्या सूचा नस्या वि दार्श से मार्श्विट चमाव सुमा वि ट इवा भन्ने दा

*ॸॸॹॖॸॱॸऄॸॱॸॸॱऄॱॸॿॸॱय़ॱऄॸॱॸॸॱऄॸॱऄॱऄॕॸॱऄॕॸॱऄॕॸ*ॱऄॕ*ॸ*ॱऄॕॗॸॱ

महिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

पहिकान।

प्रमान्त्राम्य प्रमान्त्र प्रमान्त्य प्रमान्त्र प्

श्राध्यानम्यानस्याम्या

स्याया स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्

नशामित्र हेते वहेगा हेता । वर्ते थी र्त्त वर्मेते सूमा नस्य परा । सर् थ्व र्श्वेन श्राम्य श्रास्त्र स्वा । इस सम्मार्वे व विदायके न द्वा । कुर्ने क्षेत्र केट प्रेम हो । । विष्ठेम ट्रिया प्राया व्याप्य स्था सुरू प्राया । वालम प्रमा के वा से । नेश्वराय्या विष्यार्क्षेत्रास्या प्रम्या प्रम्या । व्ययश्वर वमुः विदः वार्केदः या भेता । विरुष्टा नविः नक्कः या स्था सर्वे वाः या भेदः ग्री:सूना नस्य है। विस्थय इस्थर या सुर्थ हैं अर्से विना नस्य नहिस ग्रीर्यायदेवा हेव पदी । विवासे विवासे पदें स्थाय सम्बेदा । वियावा शुर्या राःक्षेत्रःभेत्राःसत्रः चुर्वे । क्षुःसाधित् चीःसूनाःनस्यावे। नभेत्रःश्चेत्राःयत्रा ख्रु: क्षेत्र-द्यान्वयदः स्दः चित्रः श्री शाक्षुः थे। । द्रम्यः यः स्वदः श्री सः धीदः श्रीः स्वताः नर्यः के। १२ द्रा में द्रा स्वावत्र विदायमा । भी विष्या मार्थे विद्या सर्वेदः नः यः यक्के यः श्री वियाना शुर्या पासूरः भितः है। दे । भरः भ्रः इसयः ग्रीः द्रायः वर्चे र भे वर्चे द प्रवे स्वार्दे वा वी श्राधे द वा द र वा दे त्या वहेव व श्राप्त द तव्यायात्रात्रुरायवद्याप्याद्यायात्रार्थेष्य्र्यायात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य नन्ता दे क्रियंश्लेशस्तर्दर्ध्वरण्यस्क्रा श्चेत्र श्चेत्र श्चेत्र स्वरंधितः मशहेतरो त्याननेतरा सर्वेटर दुर्भ सुटर्टे । विदे द्वरा हेर वाववा यश 5्रावर्शेराम्बुर्याय। इयावर्शेरार्श्वेरायरे याययास्त्रेते वर्शे नराम्बर 到

यशिष्ठाक्षेत्र पकुत्वस्य प्रमान्य यहिष्ठा प्रमान्य पर्दे द्राष्ट्र प्रमान्य प्रमान्

नर्थान्ता नर्नाम्प्रान्यक्षान्त्राच्यान्त्र्याक्षित्राच्या व्या । न्राम्यानिकालका वक्षात्राचित्रम्यान्यक्षात्रः सर्वाम्यान नरे के तरे द्या में विके विदेश सूचा नस्य के दिने देश के विश्व नमसम्बन्धानम्बन्धान्यः स्वयं श्री । वित्तिस्य स्वर्ति स्वर्ति । वित्तिस्य स्वर्ति । वित्तिस्य स्वर्ति । भ्र.चम्री विश्वान्यर्थरश्चर क्रम् क्रमःस्वेत्रःवर्द्धनःस्वान्यर्थः तुर्नित्रे ने ने ने त्राय्य प्रति देश नित्रे के ने विक्रे प्रश्ने प्रति ने नित्रे प्रति । व्हार्यदेश्वार्यश्वारकेषाकेषाकेषाकेषात्र्यात्व्हार्ट्या विकेश्वराष्ट्रियात्व्या सुर्या भी । विर्मे वा से वा विश्व र वा दिया । क्षेत्र वा से दिवा से दिया से दिया हो दि हो दिया । <u> ५८१ । में राज्य दे साळग्या ५८८ सुराज्य दे । क्रिंव कर से ५५६८ हुया दर्गुर</u> वेशन्तरी । अर्धिनेशन्के पर्से र्श्वेत् रीट पर्क स्थाय । यु पुरापाय वर्ष रादुःस्वाह्मरायायवुरःस्वे । यास्वेरःश्वे ह्मरायकः वर्षः वरायवुरः वराप्वाह्मर्यः धर हो ८ रावे वक्के सुरा इसरा ५८ वहा । विरागशुर राजे । वावरा देवा सर्भिर्युर्भगायर्था द्वापी स्थापी हित्री हेर्या मेर्या स्थापी विष् ८८। ।८श्चरायम्यावसायाराष्यरास्टरायसायग्री ।वेसायास्टराया क्षरःरी । श्वर्गेरः नरे नर्शेर वस्र राग्ने स्ट्रा से साम् के व से प्राप्त स्वर रादे खु इसराय पर्दे द रादे पें व रहव के रासुय द चु द राव क्षेंदे.चु.चर्शेन्'व्यथाकुर'च'इथथाग्रीयासईर'च'व'झ'ग्रेंर'चर'वशूर' बिटा गविन्दे त्यश्रस्या नस्या दराधे दासे नदे के दारी हिंदा नदी । नडद तःवः नर्था ह्या ह्या अर्थे नडन्द्रित है प्रकेष्ण प्रमास्या अपाय नडन् हेट्र्य नः इस्रशः ध्रेरः भ्रेः विदः पर्देद्। । श्रुण्यायः वे। क्षः क्रेशः श्रृं नयः दृः प्यायः इससायवियासाय से देते प्राक्ते साम है किटा पा इससा र टा वी पा दसा है है धर हो न प्राविद प्यार किंवा राष्ट्री या निव्य प्राविद । या निव्य प्राविद । या निव्य प्राविद । या निव्य प्राविद या निव्य प्राविद । या निव्य प्राविद धेव न। १ ने त्यवद नि नवि शेस्र से द दे। १ वर्दे द पवे वर्दे द कवा र देस नहनःसदी विद्याने से स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान शुरुः राप्ता । दे व्यानदे नामा व्यापिता । मापेता से दासे समा व्यापिता से समा ग्रम्। । न्यम् ग्रेन्यं वे स्थापेव स्था। । इस्य पाये मन्युवार्य स्वे यन्या हेन उदा विसायरावी नरासी प्रशुराते। हिरानडसायनरानसाहिनासाधी। से वे भेरादरावरुषादरायद्धरमा । वेषादरा वदायार्थेषाध्वरदेरायार्थेवः यदी विद्रान्य से प्रमुद्धि में सार्वा स्था विद्यान सुद्या विद्यान र्वोद्रायान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यात्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त या द्य. ग्रम्ध्य स्थान्य स्थान ५८ वार्यस्य स्टर्स्य स्टर्स्य दे प्रवाश्चर वार्यस्य से स्टर्से क्रमाञ्चमाराभेर्प्तदी । सूना नस्य सूना नस्य प्रभावर्ग भेरा । हिर विश्वास्त्री किंगायक्तार्याम् श्राकृत्यस्यात्रेश विश्वास्त्रीत् । विश्वास्य विश्वास्त्रीत् । विश्वास्य वि

ने भूर रेवा श्राष्ट्रवा विष्ट्र विष्ट

বাইপ্রমা

गुर्दिन्दीर में क्रिंद्र रायित्र प्रति रायित्व मारी साम्याम् सुस्

ह्रेंब्र्स्स्य स्वेर् हुया देशायशयार्श्या एक पर्से ना न्राहितः अक्स्म ह्रें माने हुया देशायशयार्श्या एक पर्से ना न्राहितः

55:31

हेंव सें रश्यायि ही खेल दी

वित्रः तः वर्ग्युतः पवि कुः वः व्यक्षः त्रः हेत् स्थः सः विष्ठः त्रिकः ग्रीः व्यकः हेत् स्थः सः विष्ठः त्रे व्यकः वित्रः सः विष्ठः विष

नवार त्यश्च तर्या हिंदि क्षेत्र त्या हिंदि हिंदि क्षेत्र हिंदि हिंदि

देवःश्वी-रहेवः श्वाद्यान्यक्षेत्रः स्वाद्यान्यक्षेत्रः स्वाद्यान्यक्षेत्यः स्वाद्यान्यक्षेत्रः स्वाद्यान्यक्यान्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्यः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्षेत्रः स्वाद्यक्यः स्वाद्यक्यः स्वाद्यक्यः स्वाद्यक्यः स्वाद्यक्षेत्यः स्वाद्यक्यः स्वाद्यक्यः स्वाद्यक्यः

रायाबेदारेटासकेटारादे द्येग्यायारादे द्रात्र्यायाद्यायाद्या विद्रार्हि नदी श्रेश्रश्च स्थरान्त्रभूगानश्यान्त्रसर्वेत्रन्तः स्थार्श्याशः स्वा नस्य मी वार्या इस्र राय प्रेसियाय द्या गुरु द्या सदर से स्य राय सेससः हुनः सें पुषः ने क्सस्याया वित्या गुन्न सेसस्य परिष् । प्रकृषः दी वर्षारोस्यापित्यापास्री सर्वे निते ह्यापाउदान् पर्वे । सारेपापा वे। यनेव यवे प्राथम प्रवास प्राप्त में व सके वा वी प्राप्त विव पा क्रिं से ग्रययात्रयां भी यायदे कें ता से त्या उत्ते । वि कें सादी वित्या से ग्री ग्री गशुस्रायान्सेग्रास्यापेन्। प्रदेगाः र्क्षेत्ररायाञ्चानात्री हे तरायेत्रामदे सुरार्धे त्यान्धेत्र राज्यान्द्रीत्या वेशनन्वान्दरन्वन्वानीरःष्ट्रन्वदेश्वेशस्वादेत्रंद्रस्य उदार्दे। ।देखः वहिनामाने से हनामान्दार्केनामामाने त्याया से प्रायमान स्थाय नदे निवे है से ह्या य न्ट्र सदे के राज्य थे दारी हिया य न्या य न्या य न्या स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स स्देग्नार बना वे से दर्शे । विकायस्व सदे स्वेर दुर्ग स्वेन स्वा स्वा स्वा स्व वेशक्षेर्न्त्रम्थार्शे । अवरायहेत्रस्ये स्थानते। यहेना स्थानार्म्य सुरा नदे नन्नाने त्यान्सेनासान्सान्ना सामेर बुना सदसादने न्या ही सर हिरा सळसमार्श्वे रानासे८'यदे कट्रायराक्षुप्ते ते भारतार्हेत् सेट्रमाउत्रेत्री १२, नः सर्केना हु त्रहेन राजे। त्रहेना २, नरास्त्र मा १, नरास्त्र ना १, नरास्त्र ना १, नरास्त्र ना १, नरास्त्र इन्द्रिन्द्रम्याम् वारायानहेत्रत्रस्य वर्ष्युन्द्रविष्ट्रान्य विष्ट्रन्य विष्ट्रान्य विष्ट्रान्य विष्ट्रान्य व

वश्यक्रियाः स्वार्धिः स्वार्धे स्वार्ये स्वार्वे स्वार्धे स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्य

यहिश्यस्ति स्वरः श्चे प्राये त्रिया स्वर्णा स

व्यात्र क्षेत्र प्राप्त विकासी विकासी श्री स्था प्राप्त क्षेत्र स्था विकासी विकासी श्री स्था प्राप्त क्षेत्र स्था विकासी विकास क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था विकासी विकास विकासी वित

मशुस्रायां केंद्र सेंद्र स्थान सेंद्र निष्ठ निष

वळन्यम् होन्यन्य म्यन्यव्यव्यन्यक्ष्यम् व्यव्यक्ष्यम् वर्दे दर् है अद्भार्ता विश्वापाय वा विश्वापाय विश्वाप विश्वापाय विश्वापाय विश्वापाय विश्वापाय विश्वापाय विश्वापाय वि ल्येर.श्र.यट्र.य.श्रूट.य.रटा श्रु.य.ज.श्र्याश्रायद्व.स्यायय्यायय्यायर. मन्द्रा वेद्रमःश्रुद्धान्यमःद्रममान्द्रा वर्षेत्रःश्रीःवदःतुःश्रेदःनःवःधेदः विषायान्या न्यायान्यान्याके विष्यायाची न्यायाची विष्यायाची विष्यायाची विष्यायाची विष्यायाची विष्यायाची विष्यायाची विषयाची विषय गुन हु से सून पायमेया न दा क्रिंच पा न सुन साम स्मिन मन्द्रा वर्क्केन्प्रविवर्त्यकेष्यभीवयाग्यान्द्रवर्धेन्स्रेवेन्द्रम्यो देवः शेष्ट्रियः पर्दा । सर्दे सेदे कुव प्यया ग्रम्। देव से स्य इसय ग्रीय प्रम्य वह्स्य अस्य अस्य वहस्य अस्ति द्वारा विस्रय वहस्य । । १३ स्था निस्य । क्रेन्यमान्यम् वित्युत्त्रित्ते पविम्भून्यम् । क्रिन्यामान्यस् वे नावव र से वियानवया सु क्षेत्र वियान र सामित्र स्थान स र्मनानम्य केत से तर्मना विभागश्चरमा श्री श्रिन्दिना यस ग्रामा वे र्ष्ट्र श्रेट्र श्रेवाश न्वा इसश्ची । महायवा या श्रेवाश प्रेट्र सेदाया । प्रवर यहर्या भेर प्राप्त । दे प्राप्त या मार प्राप्त विदास्य । नन्याची सेस्र स्थायात्र स्थाय वित्र न्। । न्याय स्या र नन्या स्थाय वित्र होन या हिःषः भे द्विं नर्वे द्वार्यक्षे । यावशः भेवः नर्वे दः स्थ्रदः स्वे यावशः । यावः हे.सं.रट.सं.शुर्थ. विश्वश्राह्म.यर्था.ल.रचर.जट्या.ल.रचर्या.

ब्रॅट्शःक्ट्रॅंचर्यः उत्रायदेशःदी । यारः दरः खरः दः रे रचः ग्रारः। । वयः चः षरके भे खुराया । नेरायन्या भून हेया यहिया वा वर्षा । यन्या यी केंबर ब्रॅट्शन्त्रान्त्रं वादा । द्रशन्देदार्ष्ट्रवा अवतः ब्रेट्राना वृत्राचाववः ग्वा ग्राम् निष्युत्र । प्रियम् मेरा स्रामा स्थाने विषये । स्थित स्थाने विषये । ह्यभाव। विस्रकाउदायवाद्याचे होदाव। विवासी माम्यकारी प्रमेव च्याय। विराविरास्यापस्यायर्तिरासः चेता विरायास्यायदे हेया न्येग्रथास्ययान्वेयायम् जुर्वे । न्वेवियायये वियायया हैवार्येन्यार्थेन नःयःहेंत्रःबेंद्रश्रम्वे हेशःद्रीष्यश्राद्रः अळ्तःहेट्रद्रः पहितःवेंद्रः द्रः हुः न्यर्न्य बुद्रा हेरान्येग्यायायेयाय न्यून्य स्थिति सुद्र ५८। श्रुट्रियावयायास्य साध्य से स्थानाध्य प्राचित्र प्रा बॅर्म्साग्री अळव हेर्ने भारा या पर के मा अर्देन मा अहना या अन्य दर्द सर्चित्राय्यायात्रायात्रायात्रायात्राचीत्राच्या स्ति ने 'धेव' अट' वि' जुट'रें 'श्रुअ' नु 'रें अ' न जुट' वीव' हें व' सें ट अ' नट' प्रवन' स' धेव' र्वे नशुर्न्न क्ष्र्र में न्वें रायधिव दें।

न्राध्याम्या स्थान्य । स्यान्य । स्थान्य । स्थाय । स्थान्य । स्थाय

नमनाम्यरम् ज्ञानदे त्यम् देशन ज्ञुरम्य द्रान्य दे हे सूरम्य स्वाप्ति । कुषार्थे। । ५८ में दी पिहेश है। शेस्र सदि एस ५८८। नस्सर पदे पर र्शे । १८८ में दी गुरायया न्यायया येयया मारावे दा येयया यर्देन यर'दर्'हेर'य'धेर'ग्रे'यशहो र्वो'य'र्र'श्चे'र्वो'य'र्र'युर'र्'श्चरश्चर' राम्स्रसायासेस्रसायम् वीत्रायस्य स्वरं विसायस्य स्वरं यूम् म्हान्द्रायळुंद्रयायमायून्यते से स्वयाध्यायायाया विदासूत्रया नरः होत्रप्रदेश्येयया हुत्रधित्र ही त्यया स्त्री । विदेशपा है। येयया प्रदेश गुवन्वरानक्ष्रम्यामिः ख्यामानी खयाने। यहँ मालया वयाने सेयया यन्दरनेशः तुर्या । श्रेस्रसः यथिदः ग्रीः यसः यिदः हे। । देसः वङ्गेदः खुरु न्दरः म्यानी त्यमा विमाना सुम्मानि स्थान स्थानी त्यमाना स्थान <u> चे८.८८.५वा.घे८.स.लुच.स.चाहेशःश्रःघशःवशःवाचिवशःवस्त्रांत्र्यःचेः</u> व्याः हुः श्वाः वर्दे दः प्राया श्वें वः द्वेवः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः न्यायी देया हो न न्या अध्यात् प्रह्या प्रदेश से स्थाय प्राप्त विन प्रसाय स मह्यसप्पेर्नग्रम्। वर्नेस्त्रेन्द्रस्यिक्षरश्चि ।द्रमोन्वदेखस्यस्यप्यस्यम्। नरुरान्नम् सेन्यिष्ठेरायस्य दिन्य नरुरान्य स्तर्मार्यः सर्वे । ने प्य से न्वो नि प्य स ने नर्वे न स्व न्य स स प्य स प्य स प्य स प्य าสัราสุมมาข้าผมาสิาครัรายาคมมาข้มาปลุมานลารทำปลาผมา र्शे । भ्रे.चार्ल्.चदु.तम्भ.प्रे.चा बिचाम्य.ट्ट.चा बिचाम्य.मुट.की.मम्बर्धः <u> न्वोःनःबवाःमःन्दःनठशःमदेःषशःश्री ।नेःसूरःषदःसर्हेन्ःषशा नश्रेनः</u> वस्रभारमें निमस्रभानमें निष्या । से निष्यं में निस्यायस से सामित्र गशुरमःस्री । हेदे: मुरुसे मार्थे निदेश्यमः वेया मुः क्षरः वर्दे दारा विश्वश्रात्रः स्ट्रेतः हेत्रः यः श्चेतः स्ट्रितः यश्रावः हवाः श्चेः नृतः दर्शेः नृतः यश्चेः नृतः यश्चेः য়ৢ৽৾ঢ়ৢ৾৾য়৽য়৽ৠৢয়৽য়৽য়৾৽য়য়য়৽য়ৢ৽য়৽ড়৾৽য়৽ড়৾য়৽য়৾ৼ৽য়য়৽ र्यापावित् र भ्रेत कुति त्यया याने त्ययापावित् र भ्रेत स्था याणे पा वेश ग्रुः है। सर्दि प्यमा गर भ्रिम्स दे ने न्या हा विस् इसमा ही त्र भे नार्धि है स् । विभागश्रम्भ स्वे है सः स्वा

महिश्रासाने महिना स्वित् स्वित् महिना स्वित् स्वत् स्

बेत्। विवानाबुदवायवे धेरार्दे। विवादाही खेत्र त्राराहिताया नन्गानुःवहेत्रायवेःन्नरानुःवर्त्तेःनानेःश्चेन्न्द्रःवयेत्रःग्चेन्ग्गःवयायायाया वा नन्गासेन् प्रवेते वित्व हेन् सर्वेत सुसान् हें ग्रासान्य के विषय हें त शुः द्वर वी अप्यूर्वेर वर क्रुं वार्षे द् शुर यसे वा श्रेट शुः यस वासर द् से यार्श्रेयाः भ्रे। भ्रे. भ्रें यथाः भ्रें यश्चे यथाः कुरातुः यहाः प्रम्य कुरातुः वाशः <u> ५८: ध्रेर वेंद्र में अ ग्राट नद्या वहें व ५८५५ से वेंद्र वेंद्</u> वर्चे रार्धे दारावे अप्याया सुद्राया वे सार्वे प्राची । दे अप्ताय विकास विवेद धरः हो दः धदेः धर्या श्रीयाः धः भेरी हो यो के दः ही : श्री रः धर्या के शः अर्के याः केव में या पावरा पायर केंद्र भी से से से में में बससा उद दें। वि सूर हेंद ब्रॅट्श.६व.म्री.स.र्चग.स.र्ट्यहेगा.क्षेत्र.यावव.र्चट.र्चे.स.र्चे. मह्यसःसँ सःश्रेमाम्बर्धेन् सँमासः से न्मो नः सर्देन् सरः वर् होन् नः नर्सेनः वस्रसार्धिव संदेख्या वर्षे वात्या वर्षे द्रावस्र संग्री द्रवी वार्से वारा वार्षे द नन्दरद्धयाविस्रसानसुदानासँग्रसान्द्र् होदादानसँद्वस्रसान्तीयसान्द्रा नश्रमान्त्र-१८-माञ्चम्रास्रोत्-भिष्टे-श्रस्य-मस्याप्ते-वि-मान्स-सँग्रसः नर्झें अन्तरे वार्षे निर्देश्य अन्तर्भे वा संधित दें।

क्रम्भायित्राचित्रः चित्रः गुरायमुद्राधेरावया भेरावित्रा भेराके ग्रामाया <u>५८:श्रृॅ र वस प्रायम्बर्ध र हो ५ श्री वस र ८८५ वाद व व स्वाय प्रायम्</u>य नश्रयानि भू तुश् गुत्र नुश् नुश्च नुश्च नुश्च न्य स्थानि स नेयार्याद्रायकुर्याष्ट्रवाष्ट्रीत्वो विषयमाम्यया विष्ट्रीत्याष्ट्री श्रेन् प्रदेश्वादेव सेवि श्रिया श्राधेव सेन्। विवस्त प्रदेश स्व प्राप्त प्रदेश स्व न्भेग्रास्यात्र्यात्रात्रात्रम्यात्रस्यात्र्यस्य । चेत्रम्यात्रस्य । रदाद्यायानादिर्देशासाधीनाग्रदा धदास्त्रीदास्त्रीतानस्त्रीदारादेशान् स्त्रीदा न्देशन्दरहेशःशुःअश्रुव्यश्यात्रात्रात्वाद्युद्दःयीयःनस्यायद्याःम् ।देः क्षराधरामित्रायान्वरायान्यस्या यहेग्रेहेरायवे स्टिम् । यद्यत्यत्रे श्रेद्राचा श्रुवा वैद्येव विद्यो । या श्रे श्रिवा श्राच्या विद्या हेवा यशयन्त्रासदेःयश्चेत्रस्तेन्। स्वीत्रस्ते । द्वा केदे स्वीतः गुत्रः द्वा । स्वीतः स्वीतः स्वीतः स्वीतः स्वीतः स ननेव प्रश्नाम् श्रामा भीवा वे जा ने प्रमानि में मिनि से स्थान स्थानि स्थ श्रेन्यायाश्चे श्रिम्यायापीयाश्चेन्त्री देवाग्रम्परायग्नुमानदेख्यान्म दवा:न्द्रःधेन् ग्रीशःयेवाशःसरःश्चनःसःन्दरःहेशःशुःशश्चनःसःधेनःसशःनेतेः ध्रैरःगुव्रव्युद्रःचवेःचदेवःम्यान्ध्रयःमध्येवःमरःदेवाःमरः चुर्वे । विशः महारमःस्। पिर्वरःयदःहेमःरसेमनःयम्भःसरःयसम्भनम। देः यश्रात्रीट्राचित्रम्थात्रम्थात्रम्थात्रम्थात्रम्थात्रम् वहेगा हेव व्यय विषय प्रेते व्यय हो दाय हो दाय हम या गुव विद्वार हेया सबुद्रायरागुशुरुषायस्य नस्रमायदी द्रायद्या सेट्रायदे भेसार्यः

यश्यार्श्वायाराने प्यारामाहेशाने। र्कें राजायने प्रति र्ने तार्शिमा यन्ता क्रिंन्यानहरार्श्वेष्ठ्रवार्धेन्यार्थेन्यार्थेन् । न्तर्धायान्त्रेवा है। वाञ्चवाराञ्चातार्श्ववारायदेग्वर्देन्यवेग्वेन्यदेग्वर्षेन्यत्रञ्चन्याव्याञ्चरावदेग नदे'न'द्रा विश्वेर्न्नकृते'नदे'न'दे'त्यः कवार्यायार्थेवा'न्याहेरादे वहेन यश्रभुश्वायदे रहें रावदे वदे वदे देव द्वायश्वाय व्यवायदे । दि या दूर से यानिकायमा निर्देश्चिरास्ति उसास्त्र तर्हित् ग्री से प्रदेश नि निर्देश स्त्र सि स नुन्द्रभेग्रास्त्रं निर्मेन्द्रस्य साधित सदि त्यसाग्रीं गाया वहिगाहेत् हीः सदै'वर्देन्'सदै'वर्ने'वायावर्षि'र्वेर्द्र्यवासात्र्वे वर्सेन्'त्रस्या ग्री'यस वार्शवार्वे । हिरारे प्रदेश प्रश्नेश प्रति रहें रावदे वरे वरे वार्ष वार्षे केंद्र न्भेग्रभावादी न्यसामान्यमासुसामास्य स्वत्स्व स्वत्रम् न्यस्त्रा हो नदे से नार्थे नदे त्यम नार्भे ना त्या दर्दे द राया प्यदास्त्र नार्थे ना से दासे रा ব'বদ্বী'বশ'শ্রদ'শীদ্'শ্রুর'রশার্কীম'বাদ্দদার্শ্বীমশ'দারী'দীর'দ্ব্'শ্রমা'দ্র্

चित्रवित्वस्य वात्रवित्वस्य वित्रस्य स्थित् । चित्रः स्थान्य वित्रस्य स्थान्य वित्रस्य स्थान्य वित्रस्य स्थान्य वित्रस्य स्थान्य वित्रस्य स्थान्य स्याप्य स्थान्य स्याप्य स्थान्य स्याप्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्याप्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्याप्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य

पक्षःत्रम् न्द्रम् न्द्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम्

वक्रे नवे क्रेन वक्रे नवे से सम् इंन्या न स्वर्थ स्वर्थ क्रिन्य क्रिक्य क्र

महिरामायके नदे से सरादे मासुसायस्य निर्मानदे से सराम्मायून धरावके न दे। ररमी शाइवाधवया नाववा ग्री शाइवाद्वा प्राधारा स्टर क्षे। ५८.स.स.स्यास्य मारादे.रेयो.यदाःक्ष्यायरं स्वीस.स्यास.स.यद्युर.यदेः नर-तु-सेससायागुन-तुःश्चित्रपर्दि। ।त्रो नात्र-ति से नात्रे नात्रि नात्र से वग'एके'न'दे। रूट'मेश'५व'धएय'ग्वव,ग्रेश'५व'धर'ग्रेट'ग्रट'र्ट् है। हैं त'ग्राट प्यत अट र् र्गे सरा सर हुरा स'दे र के रा हैं नरा दट पूर्व सर वशुराने। देशाशेश्रश्री वार्षिया वर्षे वश्री प्राचित्र विष्या वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व वशुरार्से । पाहेशागाया अद्धरशायरार्गे अश्वात है प्रराधिरा पारा इताया है। यशर्थेवायरकेष्वार्रहेर्भेस्याव्दर्श्येष्ट्वार्वे । द्वीयः हेर्यः वै। सुवार्विन्वयाञ्चरानरावर्वे नान्दावराया वक्रे नवे न्या वार्के यस्यास्यतित्वा त्र्वारास्य स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्व नन्। नने नम् वर्षे नम् वर्षे मम् वर्षे प्रमाने वर्षे । ग्रीःक्टॅर्रायाद्याःस्रीत्रीत्वत्त्राद्या । व्ययायेयायायराग्रीत्ते । ग्रवन्यार्वेनःभेवः तुःळन्यः कुनः यः धेवः दे॥

भ्रान्त्रो निर्देश्ये अर्थान्त्र स्वर्धित निर्देश स्वर्ध निर्देश स्वर्ध निर्देश स्वर्ध स्वर्ध निर्देश स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर

इसरायदेराश्चिराक्षे। भ्रेष्यसायविवाद्या स्वासाय स्वाप्याद्या स्वाप्यादेश स्वाप्याद्या स्वाप्यादेश स्वा नरःवशुरःहे। श्रूरःनःवशःस्रुवःवितःतुःवर्धेःनःतरःवर्दे। ।सेःत्वोःनःकेवः नश्यायवृत्तः वित्रश्चा विष्या वेत्रायं न्ता मत्यमा मध्या मध्या । याद्रिः दर्शुरः वः नृरः वृक्षः क्षावदः वः रेह्नुं वः यः नृरः क्षेत्राः वृष्ट्यः वः प्रदेशः नृतः वः वर्जुर-न-न्दरने वर्जन इस्रमाय जुर-रिं। । वायाने से नवो नावर्जेर हो नाया धेव'व'ने'न्वा'यशान'हेवा'यहूर'यः वि'हेवा'शे'यहूर'नशः<u>र्हे</u>वाश'सर्शः वर्जुरर्ने। विश्वरहेशया होत्या इस्याया वावत्या हेत् स्वेत्र पुरक्ष वश्व हेत्। ग्रवन्यार्केन्द्रेन्थ्रान्न्यम्ब्रायान्यायार्केष्य्रायात्रेन्ध्रीःयाव्याव्याय्याया धॅर्न्स् । व्रममारुर्ग्यारायके नदे के न्या स्वाप्ता मान्यायायायाया स्वीता मदे नर्न् पुरिन्देर से त्राची स्राया के निष्ण स्वाया स्वाया प्रायन्त्र स्वी देवे देवा पुः नद्या त्य कवा रायवे द्वर वी रायद्या वे से दायर व्यू र रें कुत्रव्ययारान्द्रधेरवेंद्रायापदान्यायाळयायायात्वुद्रासेंद्रशी वेया र्या ग्री अप्यह्मा अप्यक्ष श्विंद्र मी प्रत्य हुं । प्रये र स्व अश्वें व अश्वें व अश्वें व अश्वें व अश्वें व अ षःळग्रभःमःनेःश्चेष्यत्तृहःहें॥

युर्यः यश्रुव्यः श्रीः श्रेस्यः प्रदायः प्रकेषः प्रदेशः प्रवेशः प्

नवि'राक्षे'त्रशानरार्दे'त्युन'स्याश्वाशात्री सूर'नक्ष्र'स्थाक्षेश

ग्राम्य अप्तर्थे अप्तरे र्से ग्राय में त्रयान्य स्थान र्चेत्र क्वें अप्यायान्यायययार्थेत्या सुप्त क्वें अप्यान्ता नयो से नयो यात्र न्ता वी प्यरा हे वाहे रासे दे प्यायहे दादरा र्शे । । वस में दे प्यर सेवा पार्सेवारा यदे न्वर में इस्र राखंद वा वर्ते व वाद नुः भ्रे वर व्युक्त व देवे खुरा ही । क्रायाच्या क्रेरियासाञ्चरमाग्रीयरात्रीयाचे स्वेदे सेवास्त्रर्मेवासायसेता केटा खुरुग्याराङ्गावसुत्यान्दाः धूरुग्यानविदानुः विवादाः सम्प्रेना स्थितः । स्थितः यशःग्रम्। र्वेत्रन्त्राश्चेन्यग्रम्भिक्ष्यात्रास्त्रम्। निन्नेयकेयिः र्वेत्रर्भेतः है। भ्रि:नदे:भ्रून:हेना:यद:कन:र्ने। दिश्य:स्रुद:क्ष्रंसेना:नना:स्थासर्वेनः।। यशःग्रीः हः तसुयः भुग्रायः द्वा । नगरः संग्रायः करः र्वेग्रायो ने स्था । वि ढ़ॕ॒ॻॱॸ॓ॱढ़॓ॱड़॓ॱॿॱॸॕऻॿॎ॓ॺॱॸॸॱॸॕॱॸ॓ॺॱॺॿॖढ़ॱॸॸॱॻॾॕॖॺॺॱय़ॱॺॺॱॻॗड़ॱॸढ़॓ॱ ने नश्रुं न मान्व रुप्त क्रिया हु से दायर मार्य द्राय से दा ग्राव प्यया न हुया शुःर्देनामण्यम्यन्ति। देवर्त्या ग्रेन्या श्रेन्या श्रेन्या विस्री निवयः श्चे न स स्वर्थ न र वे न र श्वे र र र श्वे र न स्वर्थ स्वर्ध स्वर् र स्वर्ध स्वर् श्चे श्चे ८ ८८ । देवे भू ८ हेवा सम्बद्धिया सम्बद्धा स्थित भू ८ हेवा सम्बद्धाः र्थेवःरियावे र्थेवर्त्याग्री श्रेन्यान्या वक्षे नवे स्नून्रेना मायावे वक्षेत्र नुःसर्हेन्'यसम्बद्धारसम्। न्यार्हेन् स्रुप्तः स्ट्रान्यः प्रदेन् स्रुप्तः स्रुप्तः

मुन्न अवत्त्र वित्र वित

भ्रेन्नो न होन् पदे नर श्रेन्द्री धुर न द्वार्य द्या अळव से सुद वगाः तुः श्रूरः नः क्षुः नुर्वे। । नगोः नः न्ते नः स्वेरः नरः श्रेनः ने। श्रूयः नुः नगरः से वयः त्तुः निर्देश्य । स्टाप्त अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे । स्टाप्त स्वार्थे । सम्रुवः श्रीः नरः रें : न्दाः न्दाः न्दाः न्दाः भीः भीः वावशः श्रीः । वाद्यः र्वत्त्रमायायम् न्रायायवेत्रमार्ने ने से त्राकेमायायाय र्वा वर्वेदिःनर-रेंदिःनुःनःकृतुःन्ना धेःन्ग्राश्चःनर-रेंदिः कुःकृतुःन्ना नर-दें ने नगर-धेर-वाशुर्थ हे ।व देवा वी । हिन् धर-दें वि विश्ववाश सेन वर्षाप्रक्षराद्वायापिष्ठार्भेष्ठ्रार्भेष्ठेष्ठ्राच्या देविष्ठेषावर्षात्र्वा बेदर्रक्षेर्वयादर्रिक्षेतरदेरमा बुग्रस्थेद्र ग्रेस्ट्यूवर्ग्येयर्दे बेर्'र्री । ग्राल्राहरूरु साम्राम्य स्वयान्य स्वराहरी सेर्'राहेर् से म्याया स्वराहरी यश्रामन्त्रम् यर्द्राम्य अस्तर्भा अस्तर्भा स्त्रम् वर्रेन्यायम्भेरियायार्थे। व्यूवेयम्रेन्वे क्येवर्ते। विवेयम्रेनेविष्य

ग्र-पर्वेदि ।हेशप्रे प्रश्नाविष्य राष्ट्रेन्य इस्य स्थित हो निर्मेश स्थान हे श्चे तु द्धंग्राश्चर्यो नरम्यश्चर्या है। द्व सेंद्रम्यश्चरम्य व्याप्त विद्याप वर्द्या । अर्हें न वर्षे वायमा के निर्माण निर्माण के नि हे पर्यान ने निवेद र् पर्यो नर निविद्यों । के कर दे हो में निवेस हे र वा रे ख्रूर विवाय वदर विवाय प्रतुव पुरावय स्था । क्रिव क्रेट व वे रे या प भेन्ने । अक्षेत्रन्थपराख्यानहेयात्र्यात्वमानत्त्रःख्यानत्त्रःख्याळनः र्जावर्गाणी रे.कुंव.कर्र्नेन्रेश.सर्भेन्त्रेन्रेन्रेन्रेन्र्नेन्यम्.ने.सर्कर्भेः म्बर्भःश्री मित्रास्यस्यामाराद्यामारादेशस्यास्रीतास्यस्य ने प्रमाने मान्यान मान्य प्रमान प्रमान के भी निष्ठ के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान वनानत्वर्गीरान्वेरवस्यावयाञ्चेत्राचराद्वरित्या यटावर्धात्यार्भेनाया यदे नर्ने त्र्युन हे। यश निव्व ग्री ग्रुन त्र्युर नश नर्ने देश शर्ने व वश्चरावराग्चेरायदे भ्रीरार्से । याववराया प्यरादे स्वरार्से ।

वर्रेन्ने। विस्क्षेष्ठित्वे क्षेत्राचान्यायम् वर्षेत्रकेत्राचान्याका वर्षान्त्रयान्तरावर्देनार्दे । निष्ट्रराङ्गयावर्द्धेराधेराधेरारादेशयान्देशः सर्वेट्-च-स्रेत्-चर्-विग्-तान्वित्व-व्यान्य-देश-देश-दे-चर्-सर्वेट्-चर्-चन्-र्ने । ने :क्ष्रः तुवे :वर्ने न :सं क्षेत्र अस् :हे :क्ष्र मे :क्ष्र मे :वर हिं मारा माने :क्ष्र मे : सूरः क्रेरेशः सः न्दः तुनः सेनः नेतिः ध्यतः त्यनाः नावतः नादः धरः से ः सूरः नरः देः र्बेदि'सर्ह्य सामित्र मार्थ सामिता सर्वेदार्दे। ।दे साविका स्कार स्कार से दि से वक्के वर्षे विरासेर्दे । ने प्यरायाया के या कवा या सराम्या राहेर के वर्षे राक्षा या इमार्सेदे:भ्रम्भावरासु, यमानासाम् सहुमार्मि म्यान्य सुनाय होते। <u>हे अप्यापित्रे अप्याप्य अपित्राचित्राची वित्रा अप्यापित्र अप्यापित्र अप्याप्त</u> ह्री दे.यहिश्रासदे ह्री यावश्रासदेश वश्रा दिने र दे दे साव ह्रीया व यादश यदे श्वेश्वायाविव रा ळण्या यम् श्वम्य प्रेन प्रमा श्वेष रा श्विव रहेण प्रायम श्वेन प्रेन वयायाः सरः वर्श्वरः व्या देः वयाया अः सः दरः त् अः या हे याः तुः ग्रावः या विवे : इसः धरःनेश्रासदेख्युशाने यशाम्बदासदे न्वरास्ति यहुरावा केदारी कास्रा न-८८८देश-स-८-८८ श्रुव-सदे-श्रि-शिषा-५८ ्र-स-८ र्य-५-५८ रूप-ग्वित प्रतृत्से। देवे द्रारा सुरह्मा वे साव्याय प्राप्त है दि सार्व स्था रे दि राग वेश होर्ने । गुरमवि विश्व से से दार इसस धेर हो इस वेश हो र য়ড়য়য়৽য়ৣ৾ৼ৽য়ৼ৽ঀৼৼৼ

ने'त्य'नर्सेन्'त्रस्य स्कुट्र-तुं विषा'धेत्र'त्र'ते 'रेषाय'न्सद'नर्से हो। दर्से न'न्द्रत्य स्वे'के'गुं रेंदे सुन्द्रत्य सुन्द्रत्य स्वेनस'रें त्य र्शेन्यश्चित्रः वर्षः प्रते स्वर्षः प्रते स्वर्षः प्रते स्वर्षः प्रते स्वर्षः स्वरं स्वर्षः स्वर्षः स्वरं स्वरं स्वर्षः स्वरं स्वरं

सरयात्राम्बर्यारे प्यराविमानत्वास्यार्थे नकुत्रीयास्यात् यथायन्यात्रःवित्रः हिंग्यायायम्। त्यूमः दे । त्रुपायाः वित्रः वित्रः वित्रः हे प्यत्रायम् सार्क्षरान्य प्यत्रायम् स्त्री विश्वाम् शुरुश्वास्य साम्रानुदे । यदे प्रमा मुर्यासर्यादर्वात्यरानेयासर्वयासर्वि । भ्रुःवाद्यास्याद्याः वर्दे न् सेनः **ढ़ॱऄॱढ़क़ॕॖॱख़ॱॺॱऄॕॸॱढ़ॱॸ॓ॸॱऄॱऄॗॖॱॸॺॱॸॗॺॖख़ॱॸॸॱऄॗॖॱॸढ़ॆॱख़ॺॱॻॖॺॱऄऀॸॱ** नयम्बाराम्। स्यामार्थेन् सदयान्त्रास्यासम्। दक्षेत्रायास्याम्या য়৾ঀ৽ঽঀ৽য়য়য়৽য়ৢ৽ঀৼ৽য়ৢ৾৽ঀঀয়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽ঢ়৽ঢ়য়৽ यस्य निवर्त् सर्वेद्र वर्षा क्षेत्र में स्थानिय दियाय निवर्ष में स्थानिय वर्ष में स्थानिय वर्ष में स्थानिय वर्ष भ्रे मार्या की मार्च मारा है । त्या विष्य प्रयान र श्रेन प्रमान के न भ्रे श्रेन हो। ने निवेद न् नुष्यान निर्देश निर्देश में निष्य निर्देश में निष्य निर्देश निष्य षरने न्दरवर्षे । ५५ वर्षे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे न्दर्धे <u> ५८:पाञ्चण्यात्रःश्चेर्,रायदेःख्वेरःरेयाह्मययाशुःक्षेत्रं विष्ये क्षेत्रं पाद्याय्या</u>

नेत्रयोयान्युपित्रणी हेत्रयो हेर्या हार्या हेर्या हेर्या

सहयानान्द्रात्त्व स्वाति सहयान्य स्वाति स यशमाव्यस्य राज्यस्य भे में द्राया अहत्य न दर्भन में विषय स्थान गुर्रासदे से सबुद र्से नायाय हो दाया सूर्य सारे नाया पर नाहे दार्य रागुरा यदे देवा या नावा उस ५८ दे त्यस वावव या उस त्या से हो द हो। देवा यदे वयाया ह्यू र स्वरे से सम्बद्ध मुन्य स्वर्ध । दे त्या वर्ष र या हे वर्षे दे या सन्वर त्तुःवे मारः वया यो प्रद्या पुरविष्टे व स्वे प्रदेश विष्यः श्लेष । विष्यः श्लेष । विष्यः श्लेष । विष्यः श्लेष र्रे के अभी माना अपना के निष्या के न <u> न्यायदेन्द्र्या श्रीक्र के खेँया हु वहें का यान्य प्याप्त प्राप्त हें का खा है न्या</u> मर्स्याम्हिरात्यराष्ट्रीः सम्पत्निन्ते। सर्मम्य मिन्निम्यम् हिनामन्दरसः हैंग्रस्ति हैं गहेशयश्यास हैंग्रस्ति हिंदी दिन ग्राम देने हैंग्रस्ति गर्स ग्री महित रिदे मिर्ड रे दे निम्मा से दाय हिंग सामि के साम माने प्राप्त के दाय है। वर्द्या हिन्यामाने वा स्वायन्त्रया वा स्वायन्त्रया हिन्दि वा स्वायन्त्रया हिन्दि वा स्वायन्त्रया हिन्दि वा स्व र्देवाया सेंद्रश्रामा प्रेशायेंदादे। द्रामें श्राचे प्रवासी प्राची प्रविष्ट्रा हो द वार्शवाःवा वाहेशःस्रादे विदेश्यात्रे प्रवित्वात्त्रे विद्यात्रे वार्षावाः विद्यात्रे वार्षावाः वाहेशः विदेशात्र অঝ'নচ্ঝ'ঝ্'নাঝ্রমে'র্মা

तर्ने विश्व क्षा क्षेत्र क्षे

में दिस्तर निर्मे विसेत्र मिले से मिले निर्मेश में । इस मर निर्मास दी गिवि'पिर्यायेत'म्'इस्ययाक्ष्रम्'त्र'ग्वानावि'धित'या पिर्यासी'येत'म्'इस्ययः ढ़ॗॸॱढ़ॱऄऀॱॱॻॖऀॱढ़ॺॱढ़ॊ॔ॺॱऒ॔ॗऻॗॎॸ॓ॱज़ॸॱॺॺॱऄॱॸॻ॓ॱज़ॺॱढ़ॼॺॱॶॱॺॗॻॱ नर्यानी स्वानस्यावनुदानाया स्टिशास्याने। से द्वी नदे यया सर्देन धरःदर् होर हेर वार्रेवाया यशरेदे नवा स्वारा नर्से शरादे से वरेदे इस्रायर नेसाय है कुते रुसा ग्री इस्र नेसा धेत विद्या है त्या महेत दस्यास वर्ष्यश्चित्र्याग्रीः इस्रायम् भेषायम् । दे निष्वितः न्याया सेनायि । विष् व केराया सेर्मा प्रति प्रवर्षी मा वरे वर्षे सम्मा ग्राम्य प्राप्त प्रवास्य स्वा नश्यानायाने सूरायाने यानरानने नरान बुदानयान सेंदान्यया प्राची मिल्राम्य निष्याम्य मिल्राम्य निष्यामित्र स्थानित्र स्था वयायर्देन्यान्दावस्यार्वेद्यस्ये यदे यर्वे रहेद्यस्यस्य सुरायदे द्रसः नेशक्षेत्रव्यसन्सामुद्री । भेर-दरमा बुम्यसम्य भेर के के राजनर पर् नेशन्दर्द्वन्दर्द्वर्द्वस्यस्य नेश्वर्षः स्र-र्से निवेदा । पार्वपार्या दे पार्वपार्या से निर्देश पार्वपार्या से स्व र्यसप्पॅर्गी ना तुर्गारा सेराया हे यस नावत मंद्री स्नानस सुरी सेरासेर र्रे त्यःश्रेष्यश्चर्यः पाञ्चष्यश्चरः देष्यश्चरः स्थूरः स्थि । श्लेष्टे सके ८ दुष्यः वै। अरयायशञ्चीवा ८८.मूर. इस. नेश वियाश राष्ट्र वियायी सेर. सेर.

म्हित्यहे स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

ळॅर्स्याचे रेणास्याध्याम्युयान्यस्याद्दास्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य

धॅर्न्स् । विव्ययन्त्रे। ध्ययम् अयान्त्रविष्यत्त्र्त्वत्विरः क्रम्यान्यविः हे।

यदे स्मान्त्रम् स्मान्त्यस्मान्त्रम् स्मान्त्रम् स्मान्त्रम् स्मान्त्रम् स्मान्त्रम् स्मा

श्रीन्यंत्री इन्यंत्री श्रीयंत्रं होन्योश्राह्म स्थानेश्वास्य स्थानेश्वास्य स्थाने स्याने स्थाने स्

महिश्रासायदायमासर्दिरानश्चातादे । गुद्दायशायद्वातास्य प्रमासर्दे रामश्चात्तास्य प्रमासर्दे रामश्चात्ता । यसेदार्य रामराचेदारायदा प्रमासर्वे प्रमासर्वे प्रमासर्वे प्रमासर्वे प्रमासर्वे प्रमास्य प्रम्य प्रमास्य प्रमास्य

युनःसदेः प्यतः यगः ग्रानः वे त्र भ्रेः नः निर्मः विदेशः ग्रास्ट्रसः सः स्ट्रसः र्भे । वि.य. तस्रेय. तर्र त्याया राष्ट्र क्रि. त्याया व्यवस्था विषय क्षेत्र स्था विषय हो स्था विषय हो स्था विषय ठव'गठिग'गेरा'श्चे'न'येव'मदे'कु'यत्रर्थंक्र'गठिग'र्श्वेव'वयार्ळन्याहिर्थं र्हेन। न्दार्भिः सूरान। वन्नर्भः नुर्भाशीः इस्रिश्नेशः न्यारे स्वर्धः स्वर्धः न्यारे विष् हेशः शुः श्रेन् पार्शेन्य शुक्ते । चार्वे श्रापा स्था विश्वापा स्था । विश्वापा स्थापा । कु.जर्चशःभूरःब्रे.स.ज.स.म्या.स.र्टर.ज्रेट्र.च्रेट्र.च्रेट्र.क्रु.ट्रसःक्रीसः बेर्परत्युराय। कुःवन्नशः क्रेंराष्ट्रायाया बेराये वर्षराया बेराया केराया वशुरर्रे लेव। श्रुविसे नि वसेव होन् श्रे श्रुवस्य मान्य स्थाने हिन म्ले.प्र्याग्रह्मं १५.४ में प्राचित्रक्षं रामिष्ठ मानिष्ठ वि बे'क्। यसेक्'त्रेन्'ग्री'यन्भ्यान्देव'स्या'ननेक'न्न'यग्नन्तेन'ग्री'यन्भ'त्दे श्रूपा परेव श्री अळव हेर शर्र पर पर प्रस्व परे श्री रहे। श्रू अ वे प्रम्य यदे रुषा व रुपा वे व रुपा व रु स्वानस्यानरावश्वराया धिःसाते स्वानस्यारे श्वानस्य स्वानस्य स्वानस् नशकः वर्दे । वः सूना नस्वा नर्दे।

म्बद्धार्यं स्वाधः स्वधः स्वाधः स्वा

मदे अळव हे न प्येव व हे दे हि म इस मामि के मार्थ के व हिमान हिया नित्रे निर्मेश सित्रे अळव के निष्ठा निष्ठा निष्ठे निष्ठा निष्ठे निष्ठा निष्ठे निष्ठा निष्ठे निष्ठा निष्ठे निष्ठ सर्विन्यर प्रयापार्य राष्ट्र राष्ट् ८८। त्रियाः अथाः अथाः अथाः १ वियाः भ्रयाः यस्याः श्रीः यदेवः यथाः यस्याः य कें तर्देते सूना नस्य र त्युर लेवा गुरु माते में नार्ट माने विं । र वे स्वानस्यं मु नदेव प्रश्नम् स्थाप है । स्वानस्य र्वित्ररत्युरवेतः इस्राधरक्ष्राधत्रश्रहिराचायाषुणार्धासार्वेद्रर् गुर्राम्स्ययार्थे वियागशुर्यायये भ्रिर्मे दियादावनुन ग्रीर श्रेन्यानश्चेन्यवे र्द्धेन्यान्ते हेन्यवेषाक्रम्यावन विगामी वर्ष्य राज्ये अन्याधित्रत्री विसेत्रहेर्र्रित्रत्यस्यायात्रे निव्याधियात्रा हास्री गर वसरमात्रा वर्षमानुमाग्री ह्रमानेमान्य सर्केरानदेशनरायन स्वीतारी तर् ख्रेरी | वार वी अप्ययम् अप्री अप्रेवा यायाया नहेन प्रवे पर्नु हो न हो । हि क्षेत्रायसम्बा कु:रुबाग्री:इबालेबायायशग्री:ववाकावर्द्धवायदे द्धवाश्चीशःश्वी विसरमायदेःदेवादी स्रेनासःश्वीमाश्चीवश्चीनास्त्रीन्त्या वर्चश्रानु ने न्या वर्चन स्टान् स्वर्थ । वर्चन हो न न्यान स्वर्थ या श्रुश ग्रीमानेमानम् वास्त्री यादावीमानम् ग्रीदानम् विदानम् विदानम् येव प्रश्राश्ची । वाद व्याव प्रमः हो द वि श्लेष्ट । वि श्लेष्ट व्याव । धर हो ८ व १ वर् हो ८ शो अ इस ने अ व । व के अ । धरे व य अ शो । व व । क व अ । दे । तुश्यासम्बद्धाः स्वर्त्तः स्वर्तः स्वर न महिन्द्रस्या स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्ते स्वर्ते

ने भूर द यथ प्रत्य अ त्य अ त्य के त्य प्रति अ से वा प्रथा गुद द य प्रस्ट य मदे से 'न्ने 'नदे 'दर् 'हे न 'ग्रैस' इस म्नेस' खाया साम दा मदे 'नना कनास' नव्यान्या न्वःसॅटःयासुस्रःश्चीःवज्ञसःनुसःश्चेरःवसःसॅटःनदेः नरत्युन:रुट्:रुअ:य:री श्रेट:लेव:गहेश:ग्रेश:यट:यटार्शेश: বদ্বান্থ্যান্থ্যান্ত্র্যাক্ষামাধ্রতের দ্বান্ত্র্যান্ত্ म्-श्रुवाश्वादवीयःक्षा लटःयरवाःस्र्रेरंत्रःद्वःस्र्रेरश्वःस्वाःस्यः गुव वयानञ्चरयापरे पर्दे दावस्य ग्रीयानस्य परि खुवा विस्रयार्थे ग्रय नर्भेन्'त्रस्याग्री'तर्'त्रीन्'न्। निस्यामीन्'स्यानस्यानस्य नर्झें अर्थः र्शेम् अरक्षे मार्थे निर्दे त्त्र् हो न् ग्री अर्क्ष स्वे अर्थे त्य अन्त वर्द्ध र नवाःकवाशःनववाःनशा वर्देनःसवेःचनेःवर्तेःनम्।वस्रशःवेन्सवेःस्वेरः वर्चर्यात्र्यामी इसामेश्वर्या स्वर्या स्वया स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वया स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वयं स्वर्या स्वर्या स्वर्य ঐর-গ্রীঝভ্যেন্ডেন্ড্রের্মিঝভার্যভারত্র প্রতির্বাধ্য প্রস্থার বিশ্বর্বাধ্য বিশ্বর্বাধ্ धुःसरःयरे वर्षे रे प्राः हुः क्षे प्राः स्युयः वर्षे । दे सूर्यं दे प्यवः ययाः नदुःगहेशःसँ ने । पदःहें दःसँ दशः यः नदः यशः नदः सूगः नस्यः ग्रीः यसः गश्यान् १९५५ है। क्षेत्रान्धेत्या ह्या हैन होता हैन ब्रॅंट्या विष्ठेयन्त्रच्छन्यय्य धेंत्रित्रे विष्ठ्रवायम्य

चित्रा विश्वान्य स्थानित्र वित्र वि । श्रु. श्रु. श्रू म्या स्थित । विश्वा । विश्वा । श्रू म्या स्थानित्र वि । श्रू श्रू म्या स्थित । श्रू म्या स्थित । श्रू म्या स्थानित्र स्था स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्

यगानी नर्र, नभ्रयाय नगर यथ तर्या स्था केंद्र सार्थे द्रायदर श्रेद या कें नाव्र ग्री अप्तर अकेंद्र नर क्री न नाहे अप ए वा न न न न न र्दे। विद्युनः होन् ग्री प्यवायना प्रमाप्त ग्युनः सदे प्यवायनिष्ठे राष्ट्रे प्यवः स्था स्वरः र्'द्राच्याक्षेत्रक्ष्याद्धेशका ह्याकारा विवाद्रिक्षे रहेर के वहेर वर्रान'विवा'वा'ब्रूम'श्रेभात्रभार्श्चेम्पनम्'व्यूम्पनिवे'व्यथावायम्'र्वायथा वा नेवे के सम्मान प्राप्त निवास निवा बेर्प्तरम्बर्स्स्य स्वर्ष्य कर्त्र केर्यं केर्य क्रे[।] नःष्ठेःसःयःवसदसःमवेःषदःयन्। स्रेनःन्दःस्ःन्दःस्वनःमवेःषदःयनः गिहेशः हैं गिरु पिते ही मार्चे । पितः मेरान प्याराक्षे गिर्मुरायका से प्रमुदासे। वर्यमान्त्रेन्द्रम्यान्यमान्त्रेश्यान्द्रम्यम् नेत्रम्यान्त्रम्यान्यम् वसरकारावे प्यताया इसका युवारावे प्यताया पुःवत्कारावे श्री रादरा वसेव हो न न न हो न हो न हो न स्तु व हो न स्तु व हो न स्तु व हो न स्तु व ग्री के प्येत ग्री हेत प्रज्ञेय देवे के खेत प्रवेशी र में । प्रदेश पाय प्रवास देवे कें तुरर्र्यानहेशर्शे॥

दे भूरत्व्य न्तु दे प्यव त्यमा दे क्ष्य श्वा न पदे छे व प्यद त्य य वार्श्रवाःसःसःन्दःत्व्रशःतुःश्चिदःनःसैवैःवादः ववाःवीः वदवाःसेदःश्ची सूरः नन्द्राक्ष्र्रक्ष्राद्ध्याची कुदे प्यद्याया यथा क्ष्याद्या ची प्रव्याची प्रव षव यग ने इससा प्रमुद्द विदायिंद्र निरे खुयास ने सामरे या है दसा त्रश्यन्त्राः तुराविताः यन्त्राः यन्त्रः यन्त्रः वर्षः नेत्रः श्रीतः श्रीतः श्रीतः श्रीतः श्रीतः श्रीतः श्रीतः गशुस्र न्वो न न र से न्वो न य सर्दे न सर वर् नुस्र स्था सूर पर विर नशन् हेंत्रस्य मान्यस्य वर्षाय वर्षाय वर्षे स्वर्ट्ट ने वर्षास्य वर्षे नर्वायग्रुराविरा नर्वार्यायमाग्रह्मार्वेदार्येरमान्दारे वर्षा क्ष्र-तिर्दर्भन्तराश्चिन्यवित्वित्त्वि क्ष्रुवः क्ष्रन्य स्वित्तः वित्ति हिन र्नेत्रसुन्त्रीक्षा गर्स्यार्भेर्नात्रकामहेरात्रसुर्ही । गहेरात्रका नर्वःववुरःनर्वःषश्यायाः। ।गश्यःववुरःश्चेरःघवेःविष्रःवेःने। ।हेरः वे प्यर प्रदाय प्रत्येम् । विश्वाम्य स्था । दे प्रमुद्ध स्था में श्राप्तिमः नरतिष्ठभग्राच्यभग्रय्थे हैं, यदुः व्ययश्यक्र्याः प्रतिरायः नश्चयः सन्द्रम्याः हुः क्षेत्रः सञ्च कार्त्वो : क्षेत्रः त्रोते : व्यक्षः त्रक्षात्रः स्वरेतः होत् : श्रीः यश्चराञ्चेत्रसाद्ध्रात्वित्याहेत्रस्यायात्रहेसाराच्ययाग्रात्। नःहेते श्चेतः येव मुक्ति या विवाद विवाद निष्ठ निष् मन्दा न्यानर्रेमामास्वार्थेन्स्रीतेन्स्रान्यम्यम्यदेवसेन्त्रीन्सीः यशनग्रद्यशयद्वर्षायाधेद्रग्रद्या हेत्रसेद्रशसेद्रप्रश्विद्रनायसः मुँवायदी:क्ष्यायादेशायायह्रदारी हेर् दार्हेदार्से दशायाद्याराव बुदादशा

यर्वानान्यात्र हें न्या हें न

निवानि देवानि देवानि विवानि व

ने सूर में अअ भार्मअअ भारत्या अ भिते में त्या र वि न में त्या का अ बुर्यानि कुन्यमा गिने सुगाय है हेव यहेया यस की रासी विसान्ता राखुः बूटायायय। हेत्र वहीयायेग्याय स्थाईटात्र क्रेंत्र न्टा ही अदे अवतः ८८.८.केर.य.ज.८शुवायासदुःके.य.८४.त.च्यया.२८.५ श्रुंचा.तर्वाशेटया. मन्दा क्रिनन्द्रित्सुःक्षुनःग्रीश हेत्रकेटःवर्त्रोवःनरःवर्गुदःवदेःकुवःनः थै। विश्वरावी सहित्यी विश्वराव विश्वराव विश्वराव विश्वराव स्त्राव स्त् र्रे ल'ने न्या यो स्या यस्य इस्य वहूं न प्रमः सह न ने । या न त्य वि स्व डेगा'ग्रावर्ष्य'र्य'र्द्रे'ग्राव्य्य'र्द्धर्य'र्श्केर् प्रायाय'र्य'र्देश'र्द्वर ने अर्केना बुर निर्वादिस्य अर्थ पर्केल नर हो न हे निर्वादेश ग्राट ने न्वायायर्नेस्रस्स् । वान्स्रस्य संस्रास्त्रं न्यान्वायः वेट वेट न्यान्य धरायराहेंग्रथायराहेराहें। ।देःक्ष्र्रियाययाहेग्रथाय्याहेरायायाहेरा यः देशायशः कुः अळवः इस्रशः वाश्यायः प्राः वस्रशः उपः पुः अळेवाः बुरः याडियाः भृःतुः न्याः श्रेः त्र्युरः नशः श्लें । वर्षरः न्येरे त्रिरः वर्षे रः वर्षे रः वर्षे रः वर्षे रः वर्षे रः ध्या हु हे द त्र वे त्य व दु वा हे य ख्या य त्यु ह ह ह त्य य य हिं वा ग्यह वे य निवागशुरुषाव्या देव्याश्चेन्यवेत्विं नियाची श्वापान्ता कुवारी खुः इ यात्रायात्रीत्राञ्चात्रम् प्राप्ता विष्याः प्राप्तेत्रायः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्

गिरेशमानस्यामाने से सम्मानस्यामाने से सम्मानस्यामान वर्द्यूट मिहेश दर्र हेत वर्त्रेय प्यत यमा न दुः मिहेश ग्री क्रें त्रा विर्मर निरे अळवःहेनःविनःहःवेशःधरः ग्रुशःधःव। नेःन्याःवर्देनःवरःवर्देनःधःनरः ने क्रम्याके नर्वे नाया विनायर्देन तुरान रमा क्रमारे सामग्री रामिस माउँ साधित सेँ न् ग्रामाने । उसा श्री साधी स्वासा स्वासा स्वास स्वासा स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास वर्त्रोवाराव्यक्ष अवाशुक्षाक्षेत्रमाराहित्रग्रीक्षेत्रन्त्राह्माराह वै। ष्रिमास्यापुरवनसायवेष्ट्रस्य कुनामायविद्यान्तेषामसानेष्यभावन्यः नरपर्देर्डिया वेशम्बर्धरश्याप्तरा है क्षेत्रमई वार्वे नर्देवरायशा। वेशःश्रीवाशःश्रूमः इत्रायः स्रूमः यो त्वमः ववे वियान् कुन्यन्ता वर्षेतः ररः कुरः भवे वर्षे व यावशारे प्रयाखा थे वर्षे र केरा रे प्रयावशा वरावरः वर्देन् पवे र्ह्ने हे उस हु न ने क्षुन् दे हैं दे हैं न उस नु न हु न पर हा नि न ने त्रश्राग्रह दे त्रे वात्र नित्र नित्र हो । निरुष्ठा सामि क्षिय नि सून् शेरःश्चर्यायह्यायदेः से प्रविद्यायद्यस्य स्थाने विद्यायश्चरे वर्गाना वर्षेत्रः नवे कुंगान वर्षेत्रः वर्षे गान वर्षेत्रः वर्षे गानि वर्षेत्रः वर्षे वर्षेत्रः वर्षे गानि वर्षेत्रः वर्षे गानि वर्षेत्रः वर्षे गानि वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षे वर्षेत्रः वर्ते वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः यश्रासे विदा ने स्माना मुना गात प्रवामा श्रास विषय मिना प्राम स्माने ति तु

गशुस्रामाने त्यार्वे वा हैवा नस्याना दी। वाया हे त्यविमानसाधी मंत्री वा तुःवज्ञूरःविरः र्भ्रुः नः नर्भ्रे अरु। विदः विराध्ररः विदः नरः विवायः पः या थेः न्वायःचयः श्रीरः विःचयेः सबरः सूरः चर्या अर्भुः चः चर्से सः यः वेः वेवाः नस्रवः यः सहसारी विटाकुनान्यवायाने ने निर्देशसारी मेनासाने। नासदानाससा ग्रेशक्षे वियासदे सर्हे त्यम् विटाकुन सेसमा न्या स्थान स्थान है सेसमा उत् धेंद्रशःशुःश्चेत्रः १९८१ १ नरः न बुदः द्रशा विवस्ति नः वाया यदः धेंद्रः दुः वादे ढ़ॗॸॱढ़ॆॱऄ॔ॸॺॱॺॖॱढ़ॸॺॱय़ॱऴ॓ढ़ॱय़ॕॱख़ॱख़ॱॺॴॺॱऄ॔ऻॎॿ॓ॺॱॸ॔ॸॱऻॴख़ॱढ़॓ॱॿॖॸॱ कुनः से ससाद्यादार्विरः नवे : श्रुद्धाताया सूना त ते : श्रुद्धाताया सामासा नम्भूरमें। विश्वान्या वर्षेष्राध्वायन्या क्रवार्षेषाः इस्राक्षाः विविद्यान्यते। ब्रिट्राध्यायाञ्चर्यायस्य स्वायायाची व्यट्टा ख्रेना सेससा स्वयः समस ते⁻श्चरःवर्षिरःवःद्यम्। हुः सेदःयः धॅरसः सुःवहेतःयरः होदःयरः वज्ञूरः यग्रायार्थे । वियाग्रस्यायि धीरार्रे विया

यदे के सद्दे देव ही वर्ष मा तुरव हुट वर्ष के स्वार के वर्ष हो। यदे व क्ष्र-तिर्दर्भन्यः क्ष्रुं नर्भे ह्या वेशम्बर्धर्भः मदे देव दी यशद्र हेव ब्रॅट्य.सदु.ट्यट.ग्रीय.ब्रुट्र.सर.यिष्यय.सदु.क्षे.स्य.दकु.ब्रूयाय.ग्री.क्रिया. नर्यायाधीनावर्द्धाः श्री स्वाप्तरास्त्रितायास्त्रीत् स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व वर्ते निते देव देव विस्वति सम्बन्ध निर्देश मान्य में नित्र नित्र मान्य में नि डेनारेरेरेखासुसादरासेससायाननं ग्राम्। देर्नामीसाधिदार्श्वे विटा<u>ने</u>ना मासेन्यमार्श्वेन्याक्रन्याकेन्यां क्रम्यायार्श्वे निवे निर्मेन्याया यायिरायायात्रीः क्रीं नराम्ब्रिस्यायि भिरासे । दे स्माया स्माया क्रीं न द्वीं स य ज्ञानाया यर्चे निर्देश्या नर्षेया या स्थान स्य र् अर् छेग् र्र अर् छेग् या इस रा ग्वित्र् एस् सर् र से सराया विद् ড়ৢয়য়৻য়৻৴য়৻য়ৢয়৻ড়ড়ৼ৻য়ড়৻য়ৼ৻ঀ৾ৼৣয়৻য়ৼ৻য়য়৻য়ড়৻য়য়ৣয়৻য়ৣ৽ भूत्रचेनारेरेरेदेखेँ<त्यां नास्रवादात्नानी द्वारा प्रस्थाय वस्र स्वाहित पाहित्र । र्देर-ग्री-क्रियायायवरप्ययायाक्षीप्रतेर क्रुर-रेग्।यर ग्रुयायया क्षरप्य श्चेर्यान् स्वास्त्रर्यर्भेष्या स्वरंप्यर्भेष्येष्ट्रेत्र्यं स्वरंप्यं इरश्रामदे भ्रेरमें ।श्रेरमायायम् पॅन्युम्यदे कुष्म महे ने हेन प्रमा ग्रम्से समासे समा उत्ती ने ताया के ताया के ताया के ताया है। क्षरावर्डेव याने क्षरा बुवाया वने वरावकुरावरावा शुर्यायया अनिया स्थाः श्री स्वरे द्वा त्विर्ययर श्री स्थाः विष्य स्थाः श्री स्थाः स्थाः श्री स्थाः श्री स्थाः श्री स्थाः श्री स्थाः श्री स्थाः स्थाः स्थाः श्री स्थाः स

देव: श्रेन् स्थेन स्वे क्रिन्स्य क्

इन्दुःक्षुनुदेःसूनानस्यासवदाधरान्यस्टिन्तरा वुन्यरायासे नर्वेत् यः भुग्रयः इग्राः वा कुर् सेटः यः वर्श्वेदः दर्गे यः यः दर्गः वर्षे सः यः वरः वरः ग्रम् से भ्रिं विश्वास दे केश विषय वाया न स्थेत दें। विषय मान स्थेत से वाया सम वर्द्धरावराद्धराहे। देवरारोसराउदादे क्रस्यरार्ट्यो पहिदार् सर्वेटा वर्षाने निया यो निवाद श्रीन सर्वे स्वाह्या स्वी त्याय श्री से स्वाह्य स्वाह्य शेशश्रान्यते द्वाप्तर्रे मार्शे नामानि मक्कार्यते प्यमानि स्थापा प्रेता विमा श्चॅन-८र्मेन-क्रेन-स्-श्चानायायायायान्द्र-देवे-व्योवायम्-ग्वायवायम्-मुँवानरावर्देनायाम्बर्धाचेषायाळे दार्यावारेषायराञ्चरानराज्ञानवेर्देदा त्। नर्डे अप्युन प्रत्या ग्री अप्त्यो र्श्वे स्प्त्या प्युन स्मिर स्प्रे स्प्ते स्प्ते स्प्ते स्प नः इस्रयाया नारः वायवसः सदसः सुत्रः तुरसः तुर्वे द्रवसः सूना नी नाहेतः सळ्सरायाटाप्यटारुटानवे यात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्मात्राह्म रेशन सेस्र रहत प्रायप्य प्य प्रिंग सामित है। विस्र मुस्य सामित्र ही। वशादिरित्राच कुर्पार विवास सेराया वशाया दिएसा वा सेवास संदे हा यग्रापुर्युर्यये पर्यो नागुः विदासमें दासे दासास समानिया से मारा के दारे दि द्ध्याची पा वेरमा ग्रीमा न सुयान मा निया है मा सकें नाम निवास के ति । वेशम्बर्धरश्रम्वे धुर्र्भ । द्वयादे दे म्यायर स्माया द्वारा से प्राया पर नर्गे अप्ते। श्रेन्यानस्यायिः श्रेवाये भ्रेवाया नेयायत्या श्रेवात् श्रेवा

सः अद्रायतः श्रुंद्रायाय यह वाय स्वाय्य विष्ठा विष्ठा व्यव्य विष्ठा विष

বৰ্ণিশ্য

बर्यस्य वर्षेत्रयं विषया श्री स्टर्य विषया विषया

वनरःनरःअर्वेदःनशःव। क्रियःर्वे निष्यः वन्त्राः वन्त्राः वन्त्राः वन्त्राः वन्त्राः वन्त्राः वन्त्राः वन्त्राः व न्वायर्त्रः विन्त्रवार्त्यक्षे । विश्वावाश्यस्याः भूत्रः भूत्वर्तः क्षेत्रः विन्तः नः कुरःग्रेशः नर्क्केत्रः प्रदेश्कुः क्षुः स्थ्ररः स्थ्रतः स्वेतः स्थरः स्थितः स्थरः स्थरः स्थरः स्थरः स्थरः स ह्मारान्ता वर्नेन्सवेर्धेवन्त्रवे सर्वेषाकृत्याकेवके व श्रुवामन् सदिःसुर्याश्ची न्यान्यान्यान्या वर्त्ते नायः स्वान्यान्या ग्रुसभ्ग्रे से स्व हु व्यवस्य संगुद हु ज्तु हु सार्य स्वर्ष हि स्वर्थ है दिया यः वेदःयः गिर्दे द्वरार्थे गाःयः ग्रदः यदेः ग्रीरायदेः क्वें स्वः स्वः तुः वेगः क्वेरादा देशःधरःवज्ञुरःवः बरःधःवः अर्देवः धरः द्वावः ववेः वेवः वर्देदः वज्ञुरः दे। । विगानग्रेशित स्याया अप्तिन्त्रभा याया त्रया स्याया स्याया स्याया बेर्प्यश्हरम्भेरविषा हो व्ययश्रित्य हे से देर्प्य हे त्या हुर स सूरा र्रे विग होत प्रशासी पर्दे द वेस दे त्रशासुर सार्थे पि विग होत सामा प्राप्त र भेप्टेन्चेम् नेप्रमाष्ट्रम्यानर्षे साय्येम्सार्चेन् चित्रम्याने प्यम्माने वर्देन बेर विर विर अश्वा वर्ष दे प्य हुर स प्य व बेर वे । दे न विव न र र उना ग्राट प्रदेना हेत् भी नदे ना नाट अर्बेट न नट के अप नट न्द्र सा बस्या उदायादे। पदायहेवा हेव पीवा दे। पदायहेवा हेव पीवा दे। पें सूवा वस्या धेवा डेशःग्रम् ग्रेम् श्रुयात्रा श्रुया हिम् हिम् या न्वी राम्युम् या श्रुमः र्भे । ने सूर सूर र्वेन संसे न स्वर्भ वर्षेर नर विस्था संस्था

य्रम्याविष्यान्तर्विष्ठाः विष्ठाः विष

दे प्रहें सम्भाष्य प्रस्था सर्वे र विट रहें र न न में सम्भाष्य र न प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्

हेन हे सुर्ज्ञ रायवित्र ना ने हैं या राप्ता

त्रियः विश्वानिक्ष्यः विश्वानिक्ष्यः विश्वानिक्षः विष्वः विश्वानिक्षः विष्वः विश्वानिक्षः विश्व

वै। भ्रि.च.चर्र्म्यान्यदेःश्वर्र्त्र्यर्यस्य अह्री विश्वाम्यस्य भ्रम् दयावर्द्धेरार्वेर् प्रतिस्वित्रावर्द्धेयाद्वेरावर्द्धेयाद्वेरावर्द्धेया यदे भ्रम्य राष्ट्रे स्वेर से स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स् वयावया रारेयासुम्रायायासी: ज्ञापतितेरायेर त्याधितारी सी र्हे निवे वियान्य शामा स्राप्ते । स्राप्ते अपने विवासित्य स्याप्त स्थानित्य विवासित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानि उ'ता ५'णर'रर वेंगि'से'देर'नस'न हैंग'न वेंग न हैंग'र दे र्सण्टर रेशन्यावर्द्धेरार्वेनामवेन्स्यावर्देराधेवाम्युरार्दे। ।देख्याम्यानाद्वियादः ग्रवसारा वे के साम्रुवा संदे प्रमास्त्र स्या विदाने सामानु संदे क्रिंव स्वाया या रगः तृ हुरः ग हैं 'दे 'यश र्थें वा पश्च तर्वे राग वर्ते वा प्रदे हे द है र र ग ब्रूट:सर्क्रेना मृत्यूट प्रथा यावया प्रथा र न मृत्युट न न स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्वादा स्व नरः हुर्दे । हिं अर्भदे र्भ्भेन प्रम्य प्रमुद्द प्रदे र्थेन प्रमुख्य प्रमुख्य । रावे। सूरार्तापुराताक्ष्रायाधीके त्रायायात्रक्तापरावसूराया रता *ज़ॖ*ॴॹॖॖॖॖॖॖॖॖड़ज़ॠॺॺॱॻॖऀॱढ़॓ॱॸॿॸॱय़ॕढ़ऀॱॸॺॱक़ॹॺॱढ़ॾॣॕॺऻॱढ़ऀॸॱॺॸ॔ॱय़ॸ॔ॱढ़ॼॗॸॱ नशनेदे द्धया दुर वर् नहें र पर होते।

देःयः विभागवायः पर्वे स्वादे निष्ठाः प्रति । विभावः प्रविश्वः विश्वः वि

के। । गारेगाने नशुरानशाहें दार्शे र शाया । गाहेशाय विकास विश्वरा द्री विवायाम्यत्राप्तर्भन्त्रवायाम्या विद्यान्यस्य विद्या न्वायः नः से न्यायः ने । श्विनाः प्रवेष्य अप्तः श्वेन । प्रवेशः नाश्चर्यः श्वेष देवे[.] श्चेर प्रें ग्चर अर में प्रदेव मान्य के वा के के अप मर कें वा न के स्वा हु वुर्नित्रे वुर्निसाधिताते। नावत्र रु.त्रिष्ठासाद्र विद्रसे द्या स्वाप्त प्रमान र्शें । भावत पर विभाव गावरा पर वे के राप्त प्रायाय पर रे र के राप्त सुन धर्द्रम्यायक्षे ने केन्या हिसा ही से स्वराह्य स्वरी विह्न तुर्धे ह्यूर भे दुर विरा । यर्से य हे या यो दिव पुर भे ग्री हुर भे दुर है। नायाने के अर्थे द्वीया भी से त्रायके मा विसाया से नाम स्वारामा यात्य्या विष्याग्री त्यमाने स्वापुर्वा विषय्त्री दिवा में दिवा स्वाप्तुया उदान्त्रीयात्रम् । दे नया के या द्वाया नदे हुँ दार्थे दान्नी । नद्वा यायवायर्ने ना शुः विवा शियावायव्या वियानमा हेवायानमा स्थापित स्याः स्वयः श्रीः स्टा । रगः हः विः नः नवायः नवेः ननेः यहे वाः न। । स्वाः नस्यः भ्रे.चबर.भर.मूपु.चोष्का विराटेर.चर.श्र.खेचा.चोष्का.सर. <u> चे</u>त्र । वेशःगश्रुरशःश्री । देःष्ट्रःतुःयःश्रेगशःमःचिश्रःतःग्वरुशःमदेःश्लेतः षरःषरःवस्रस्या स्वातुः चुरावायः र्स्तेवायरः चुर्वे । देष्परः र्केसः विसा *ॸॸॱॷॸॱॸॿ॓ॸॱॸढ़ॱॸॕढ़ॱॸॸॱॸऄ॔ॸॱॺॢॕॺॺॱॻॖऀॺॱक़ॕॻॱऄॺॱऄॸॱॸॖॺ॓ढ़ॱॸॸ* रदानी हैं तर सेंद्र साम भुद्र सात्र सा वालत मी प्येत वात्र सा में द्राप्त सें स्वाप्त वै। गर्वेद्राव्यायत्वाधीःहेरायायहेरायया सुद्रययाचेरायायराध्या

वर्षात्री । श्रुमान्नः विन् श्रीकाष्ट्रकरः विन्। । नर्गेवः सः धुषान् प्रदेनः सरः वै। विस्र विमाने सूर प्रमुर विमाग्। मिष्ठ स्वीर मार उस हस प्रस् राणी भूर नवेर या विषय वर्षा विश्व सेर विश्व वर्ष विश्व द्वी विश विवार्श्वेद्रश्चेर्श्वेद्रुप्तरावश्चरा हित्रप्तावगुराष्ट्रीः कवाराधेत्रवेदा विवा ब्रॅटशक्ट्रांस्थित्वर्थाह्यात्व ।श्रुट्यायर होत्रहेट होट होर हो। ।श्रुवः रादे नात्र शर्श त्र शर्विना त्र सून् । विश्व नाशुरश्र शर्भ सून रहें । स्राय सून रहें यशः तुरुषः यायः त्रुषान् भेदः यमः कृषः नश् वे विश्वः नः वे विश्वः नः विश्वः नः विश्वः नित्राद्यादेवाची अरक्षेत्रा भी अर्थान्य । वाव अरथा भी राष्ट्र राष्ट्र हु । वह अरथे । यः के अःग्रीः न्वायः निर्वे अः पर्के विरः कृषः नः यः श्रें तः परि हुः धेः के वारायशः यरशक्रादेश । नार्श्वराष्ट्री निर्देश में शाद्या निर्देश हो । ग्रीश्वी विष्यविषाख्यायाळग्रास्येन्। विराद्याने विष्य नदी । त्रावह्यारेदियेषा ४ उदात्। । यहेरा है या नदे नदे नवा से द ५८। विश्वालीमाननमानिःहयानरावशुर्व विश्वामाशुर्वासाधुरारी। र्रे के नाम में ना कि नाम निष्य क्रिया के नाम के ना हैंग्रथःनहेंद्रस्थानन्द्रभाद्रायद्रायःविषाः ह्याय्यायायः विषाः ह्या ने भुःतुःविगाः १ अरु। सुनः वर्ने नः या अवः या ग्ववः से नः गासुनः ने ॥

 निमान्तराष्ट्रिमायमें पारिता श्रीन्यित्र पायाने त्या लेवाया स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स् र्बेन्-न इन्-ग्री-विदेशाहेत्राह्मस्य सञ्चार्या स्वारान्न-विद्वान्य-प्राप्त-प्राप्त-प्राप्त-प्राप्त-प्राप्त-प्रा शेसरायार्श्वेत्यादी दसाविगाकुर्मग्राश्वरार्श्वेत्रासा । ग्वर्याद्याकुः स्वराद्युर वहेषा ५८१ | वर्ळे वहेष वहेषा हेत्र वात्र रावदा वस । यह ५८१ लट.री.यक्षे.यर.परीरी क्षि.य.भीर्याग्री.श्रर.शीर.सप्री पिह्या.क्ष्याश्राक्षे.य. वर्चेत्रः सन्दर्भ । श्रेनः सदेः व्यव्याः श्रेन् । श्रेनः स्वरं । यन् वाः ते व्याः विवाः वर्चेर.बुचाची झि.लश्रुचाक् क्रैं.श.श्रुची हि.चहु.बूट.बिर.सब्देटश. यरती क्रि. दर से के दे पहें में हें दे प्या विया है या स्था होता स्था होता है या स्था है धरादशुर्मा वेशाम्बुर्याही दे वस्य राउदा ग्रामहेत रा तु ग्रुरा ग्रुरा वर्षानु न ने द्वा ने द्वा स्था के द्वा स्था ने द्वा स्था ने स्था ने स्था निष्य क्या निष् न्गाय श्रुन ग्री में शुव्य नु इंदर श्रेंद भी श्रेंद ख्वा ग्री शामावश्व भागा विमा ग्रुद वा नःवार्रेनःस्थानुःवार्थेयानुःनःधेनःवासुनःनःनः। नःसःवदेःवयान्यः ग्रम् विस्रायायसाग्रसाद्रोयानवे त्रासुर्गे सानवमानवमानु त्रा सर्केटर्टर्स्ना हुनुहर्ना अस्रे भ्रीट्र स्रुसात्रमा सर्वेट्र साम्यान्य स्वानुहर मी नमा कमारा पहिंचा मारा हों। । इमा शुवा उत्र मी राष्ट्र राष्ट नन्गाः ग्रम्भूगाः नस्याः ग्रीः ग्रम्भा श्रीः ग्रम्भा न्याः स्याः स्वारम् ग्रम् वयःविवादःवर्देःक्षःतःश्चेरःपरःवश्चरा वदवाःग्रदःवयःविवादःदवोःवर्वः ग्री विश्व अन्तरम् विश्व दिन्दी विश्व अन्तरम् विषय । ने या ग्रावर्षा पर प्रमुस स्रुवाद्या ने या पर्ने स्रूर रम्य हु सुर प्रवेश ये या व

पश्चित्रमा विकासित्रम् विकासित्रम्

यय है सुन् तु विगा नर्से समा मार्ग नर्से गाय दी

र्सेन-दर्गेश्वर्शे दिःयःनस्त्रन-यःगश्रुयःग्रीःग्रद्यःयश्रियःयश्र <u> ५८.स्.भ्रेमश्चर्वात्रयायपुर्धात्रात्राक्ष्र्यायपुर्वात्याद्वात्याद्वा</u> यरःग्राधेरश्रःयापोरःयाभेरःयर्भेरःयरः होरःयादे रहुषः विस्रशः ही रास्त्रयःयः ८८। श्रेस्रश्रास्त्रस्याम्बन्यास्य स्वत्रस्य स्वर्मेनास्य सिर्धेन त्रअभेस्रशः ग्रीः नक्षुनः सन्दा सेस्रशः संविधः नः वेषः नरः होनः सः विका र्ना ग्री नक्ष्मा रे मुश्रुस ग्री सत्य दर्जे र पा हससा ग्री ग्रामा समस कराङ्ग्याश्वासरावशुर्रात्रविरान्त्री विद्यशानुःवाद्श्वास्यादेशः वा क्रममामदे वर्षमानु ने प्रमानि । मेममा ग्री निश्चन परि वर्षमानु ने पिस्रकार्योद्दास्यदे विर्मे विष्ठे कार्स्य विष्ठ स्वर्गा विष्ठ स्वर्गा विष्ठ स्वर्गा विष्ठ स्वर्गा विष्ठ स्वर् वे वर्षा के अर्देर व व्यून गुः अर्देव अर्थे प्रायेग्य गिर्य पिर्य श्रायाप्तस्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्रे प्रत्यान्त्रे प्रत्यान्त्रे स्रायान्त्र्यान्त्रे स्रायान्त्रस्य स्रायान्त्र माशुस्राओं । दे महिश्रादे शहरदेशमाविसमाशुद्रश्राओं । विद्रासम्बर्धा वे श्रम् च कें व से म्याय कें अवश्राम्य स्थान निष्य कें व से म्याय स्थान निष्य के कें व से म्याय स्थान स्थान स **ॶ**ॖॖॖॖॖॖढ़ॱय़ॱॸॖॸॱॺॸॕढ़ॱॹॗॖॸॱढ़ॺॊ॔ॱॻऻढ़ॕढ़ॱय़ॱॸॖॸॱऒॱक़ॕढ़ॱॹॸॱऄॗ॔ॸॱक़ॱ নমুন'ন'নাধ্যুম'র্মী|

र्याश्वर्षित्रः हो व्यवस्थात्रः विश्वर्षः स्थित्रः स्थात्रः विश्वर्षः स्थात्रः स्थात्यः स्थात्रः स्थात्र

विरःश्चेगाः सद्धः श्वः न्द्रः न्वयः नः विष्यः विषयः विषयः विष्यः विषयः विषयः

नक्ष्मन'रा'नाशुस्र'ग्री' स्ट्रा'नेश व्यद्भ'रास्य (नुस्र'रा'यस्य प्यतः यगः जुगः नदः धूवः यः नदा । यावशः नवे : नदे : नदः धूवः यः नदः। । नवे : वे : थे : वे क्यायानवी क्रिया हु प्ये भी या द्यापाया पी वा विया या सुद्या या सुद्रा है। याळ्याविस्रमाग्री नसूनाया ने प्यनायना नुना न्दायस्त्री ळ्याविस्रमा धरादेशाधरावधिवाधिवेशाधिस्रात्वाधावस्रवाही । किंगादरार्श्वेत <u> श्रुवान्दर्भ्वायाष्ट्रेयाची याचे याच्चेत्राचे स्वयाचिययाद्वायाच्य</u> पि'त्र'स'र्चे'न'स्न'स्न'प्य'प्यर'व्हेग्रस्य स्ट्रान्स'त्रे'स्त्रेस्य स्ट्रेस्य विस्रश्नामान्यस्रुत्रि । निस्नुनामदेगाविः इस्रश्राधनः नुगामनः सुन्रानेः श्चित्रप्रभावे द्वित्र हे सार्वे वा प्रवेर द्ध्याविस्र साम्प्राम्य महत्र हिं । स्रेस्र साम्री ग्रम्भागवि दे न्यस्याग्रम् नवि धिव या ने हेन के वर्ते पानने नमाग्रम् मश्यन्तर्ने निर्मा ह्रे से स्थार है निर्मा निर्मे स्थार है । निवे धित या ने वे इस पानिवे ते सूगा निस्याया से हिना पानि सूगा निस्या न-दरःश्रृदः न-दर्गाः सेदःद्वा । गुन्नः वर्षुदः वर्षः कुःदरः गुनः वर्षुदः दरः दनः भ्रीत्रः क्रीत्रं क्षे विष्णा प्रतित्व विष्णा प्रतित्व विष्णा प्रति विष्णा प्रति विष्णा प्रति विष्णा प्रति विषणा विषणा प्रति विषणा विषणा

नेशव्यक्ष्याविष्रश्रायानश्चराक्ष्यासर्म्रात्रश्याभीगानहेन्। प्रमः ह्यों। ने य विवासर दे। द्वार विस्र र की स्वर विस्र र की स्वर क त्राक्षेराव्यापात्राक्षे भूग्राययेषात्रम् चुःहे। सुःद्राययाद्रया राक्रेत्रास्यम् द्धयाविस्रम्ये प्रोप्तिस्य स्थाप्ति स्थाप्ति स्थाप्ति स्थाप्ति स्थाप्ति स्थाप्ति स्थाप्ति स्थापति स्था श्री भिरायाश्रीवाशायवे सावाशायी वासाय स्वारी विसार्ये विस्तारी रावस्थाउन् ग्री विवासम् दर्शे ना सूम न्वो निवे के शावस्था उन् ग्री विवा सरत्त्रें नर्ते । नकुः होत् छीः कुषायळंत्र नक्केराना सूरळे साम्राह्यः। ग्रे मुख्य अळव दे । भ्रेना य त्र अर उद दिर दि से रामे प्र या प्र या हिंदा नर्से । भ्रेमा मदे न्दर वस्य उर्ग में नया भ्रव मी भ्रेर में न्युर्ग । श्रेर मदे प्रसादित्र प्रसाद प्रसाद के विश्व के स्वाद के स्वत के स्वाद के र्शे । श्रेमामदे कु प्रश्नेष्य नदे असम्बि । विश्वासन्म अर्गे न से सु अस

ग्रीश्राग्रम्। विस्रश्रादी कुप्तमंत्री कुप्तेश्राप्तविद्या । विद्याप्त्र गुदाग्री पविः हेव'यग्रथ'यर'ग्रुट्या वियाप'द्रा द्युर'वबर'ग्रेय'व्यापंदे'कुर' यश्यामा है सूरलें र्हेना वस्र उद्दर्श यात्री । यहेत दर्श र्ह्सेन से दर्श वे भ्रे न स्मा १२ नविव रहं य विस्य नहेव वस हे स नगर सहे न । श्रेर <u> हे</u>दे कुरानक्ष्य प्राचे क्यापर क्षेत्री विशामशुर्याय क्षेत्र नथया से । पिर्याञ्चरयात्रयायञ्चरयात्राहेरान्द्रीयायानीत्राहेराळे हे। नगे र्ह्वेराया र्ना हु या हे राय दे स्वर्दे त्य राय वाय दे स्वर्ध वा विस्र राय है। । या यदे स्वर्ध या विस्थास्याप्रस्याप्रस्यापित्। विद्याविस्थाप्रस्य स्वाप्तिस्था तकतान्यस्यानस्यान् विशानस्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्य हेशन्द्रीम्बरमहेशमदेश्चिम्बरशुपर्से नरम्बर्द्धर्या । नेदेश्चीरहेश <u> ५ भेग्रास्स्रराग्रहायेग्रास्य प्रस्थायस्य स्वास्य स्वाप्त्रास्य स्वाप्त</u>्रास्य स्वाप्त्रास्य स्वाप्त्रास्य स्व गुर्दे॥

नवाःविद्युस्रसःसःस्वीर्यायःवस्त्रनःस्व । सःत्युसःसदेःवादेवःस्रेनःस्व। क्रेंद्रःसः <u> ५८.५े८.२२४.२.२८.६८४.२.अक्ट्रेर्थ.२२.ब्रे</u>ट्र.२.४४४.७.५७४. गुर्दे। वित्रस्थास्य मित्रेव मित्रस्य क्ष्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्या स यारःविश्वाक्षेत्रःयाप्तेत्रः वित्वन्यम् वश्चेत्रः विष्ट्रमः भ्रेष्ट्रमः भ्रेष् द्यात्रयात्रात्यातातात्रः भूति कुटार्टे सूस्रात् न्यस्यस्य न्यस्य न्यस्यस्य यानवाष्परमासुरद्वापादे सूवानस्यादनदिवापर्देन सूरा सुराह्मस वर्चेन्यमा नारविनाः स्र्रेन्यः युनामः हेते नस्र्रयः या । पपरः नरः सेसमः न्विटः इटः वट्यत्वेट्या । देवे देख्या सूगा वस्या ग्वितः द्वा श्चेता.क्ताचेत्राम्याम्यामास्यते क्ता द्वा । विदे दायायया स्या र्रितः क्षेत्रा केत्र प्याप्त प्रमाय स्वापः कर्माय विष्या । स्वापः यदे नगद सुर सुंय से द स्व साम्या । त्रा पर्मे पर्मे प्रमुं प्रमुं र से पर्मे प्रमुं र से प वन्नासुनिवा विशामशुर्यायवे ध्रिम्मे । ने नया व हे या सुरामी या अर्वीश्रायायायन्दित्। नकुःयावीश्रादायदिः स्रेश्वरायम् से प्रहेवाः नरःक्षरःनःदरःश्रेषाःमधेःश्रेरःवर्षेषःषःहेःक्षरःषाश्रुरश्रःमःक्षरःयनरः यर हुर्दे । क्रम्य प्रशाल्या यसूय प्राचे पहेता पर हु। । दे यःश्वेदावर्गाववान्त्रा । श्वेदावेश्वदान्यः श्वेरावेदा । श्वेषाः वी श्वेदायदा निवासी हा हिना हुन्दर हिन नाद्या । वर्षान व्यक्ति वहुना धर ह्या विराद्या द्वारा विराय प्रायय प्रायय विराय के विराय क <u> न्याःश्रॅमान्न्ययावेन्ने न्यंत्रे सुप्ये। द्धयाविस्यादस्य प्रेम्यावेनायादेः</u> होर्स्या त्रिक्त विश्व विश्व

तर्भः नुभः विस्तानिस्यायस्य विद्यस्य स्वानिस्य स्वानिस्

मापके नाम्यायी संभिन हायहें समा विसाया सुरसारी । नेसान सर्ने ने यम विस्तरम् भुः रेदिः में मः मुँदःय। । दसः देः नसूनः यादः न १८ मा । देः कें द्वो र्श्वेट दे द्वा या विश्ववाय दे प्यट से द्वार विश्ववास्ट्र राष्ट्रम्। द्रयो नश्चेत्राया शुर्या रादे नश्चनायदे यावे खार्थे रस्या शुः हे याया धरःवश्रुरःवःद्वोःश्लॅरःषःषदःभेदःधरःवाश्रुदशःधवेःद्वशःवदेरःवश्लवःधः यान्डिन्यानी स्वाप्तरायरायन्यात्राके नयात्वरापरानु स्री यर्रिने हिन्यमा नभूवामान्त्रीयान्याद्वीत्रीस्त्रेन्त्र। ।न्नानदेश्रेसमान्त्रीयानमा कुरु: त्रे:न विया विया रेस त्रें तुरु। यार यो रूप स्य के रूप रत हु या रा ८८। । यट्रेराम्भेग्रायश्रवायायायायरावश्रुरावदेः हो । हेवायह्य ५.५ वे नक्ष्रन मं निर्देश । निर्देश विषय स्ति वे ने निर्देश ने निर्देश निर विशाम्बर्धरशासंदे भ्रिम्भे । पाव्याधर सुराय गुराधर यन्याय स्था कैंगा सूर्य त्रा धुन कर से छेर पदे सूर्य से स्रा से र पर पह गा पर दे। मुर्यायम् सार्व्याचेरावयात्वाचायात्राच्याकृत व्ययायासेराचे मुदेखें सर्वेष्य व्यवस्य द्वीसदेखें द्वीसदेन् मायान ह्या स्वायान क्रुनः श्रेश्रश्चाद्मवाद्विस्य द्यात्रश्चाद्मवा स्वाकुत्वुद्दानामा हेना दे । द्या वर्तः सूर् छेया भ्रेना प्रवे व्यक्ष है है का या न नेन का साम स्वास्त्र स्व धरावशुरारें विश्वाचेर विदा दे द्वा श्रेवा धारा अर्दे द धरावतु ग्राम अर्दे द सर्पत्राच्यात्रमायराच्यायायराच्या विश्वास्त्राच्यायरप्रचेत

धराबेदार्डरा ध्रेश्रार्थेयायायहेवायरावे थे बेदायादवायबुरावरायग्रूरा है। ने नग ने पके निरंप्या उत्येषित में लिया मही है। पके न पर मान ले वः वर्रे ःक्षःक्षे रमेरः वर्त्याः वर्षः से रे र्राट्याः वर्षः वर्षः त्राध्याः दशःलेंगाः धरः क्षुरः चः इस्रशः सुः वर्षे । वर्षे वर्षे । विशः परः । ह्यस्याया वसवास्याये के सावर्षायावर्षे व्यान्ता हेसा हा नारे है। वर्षे स्था है। नक्षन मदेना विद्धार न उरु मार्ग प्रमाय स्प्राय स्प्राय स् हिन् उमामी अन्ते न्यान बदान स्था हुदी । विश्वासा सुरश्य सदी हिस्सी । ने ড়ৢয়ৢ৾ঀ৾৽ড়ৢ৾য়৽য়ৢয়৽য়য়ৢৼ৽য়৾ৡ৾য়৽য়য়ৼয়ৣ৽য়ৄয়৽য়য়ৼড়য়য়৽য়৽ लट.वर्च.य.लुब.धे। दर्यट.च बट.यी ४.विश.सप्ट.किंट.जशा केज.य.टश. गशुर्याः र्वे र्वे र वर प्राप्ती । व्हं य विस्रयः इस द्या पर्वा पर्वा या स्था प्राप्त र्यायायाष्ट्रियाययाह्रवायाद्वराळें वाश्वरा । व्यवायाद्वययादी व्यवस्थाया न्नर्यराष्ट्रा विश्वर्ष्याश्वराष्ट्रियर्यश्चर्यर्यः मुद्दर्यो ह्याश्वर्धे क्रिंर्यर यशः ग्रेः कें मान्दर्भ अस्य क्रुट्र सदे कः द्यादः विमासः महिनासः सन्द्रः नन्यायत्तुरानन्त्रेत्रानुर्वेषायराम्यासुरसान्। सून्यायायरान्त्रानुराया र्श्वेरा हे 'द्रों रापिय हो र दें।

स्वासायग्रानासदेश्चानापटाळ्याविस्रसाधित्रकाने नग्नाना विस्ताना । विस्ताना विस्ताना विस्ताना । विस्ताना विस्तान विस्ता

यगायदी मत्त्र मत्त्र । विष्य मत्त्र श्रुत्र में या मायद्वा मत्त्र । विष्य मत्त्र वह्रमान्ययाः क्रिन्ययाः म्यान्य क्रियाः विष्ययाः क्रिया। विषयाः युन'स'सर्केन्।सेन्'हेर"। युन'स'दर्वर'धर'धेन्'सेन्'रे। युन'स'ब'सदर' ल्रिन्य प्रेया विष्य विस्था प्रस्य प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त प्रम्य विस्ताय प्रम्य स्वाप्त प्रम्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप वे अयाशुर्याते । श्रुप्त्र प्रम्य में प्रयोग्य प्राप्त । प्रियप्तर से वार्या स्था धिवर्ते। विश्वासादवासायदी यात्री। श्रिमाशायवीयासावी मात्याधित। श्लिने कुषाविस्ररायकवादरेषा ।रेषानरेष्में नावार्षेत्। ।सर्वेरेर्श्यास्य भ्रीतिक्षेत्रावित्। विदेश्वासर्केषा प्रदास्त्री विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य वि र्यायः इस्ययः द्वी । वर्यायः यरः वर्यारः यः श्रीयः हे द्वीय। वियः वाशुर्यः यदेः म्रेर्-र्स् । प्रमासुर-मदे वियावमा ग्रामा सुमो ग्रुर्-र व मममा उद्दावमा ग्री क्रेट्रिंद्रा देविद्रुव्यस्थाउद्रुव्यिस्थार्श्वेर्र् नशायदी या तत्त्र द्वार भीवा । व्हुं या विस्त्र भाषा प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व रात्याक्षे दिरावसारे साता पर्दे से ससारा सदार वा प्येता वासुरावा रा रानदेख्यात्रभाग्रा श्रेरायेग्रभाहेशहेशहेश्वराधराहें भाषानहेत्या देवे^ॱवरावरायरायर्वायावकाहें भूरावतुरावायावहेवावावथ्वायुराकेः द्वीं राया वे वार्ष दाय ह्वा श्रुवाय कुराय वाय वाय वाय वाय वाय वि गश्ररम्प्रम् द्रमे निर्मेशक्षेत्रमेर विषय्त्र अग्रम् क्रम् विमामी अप्रद्र्यः नःयःनहेत्रत्रशःस्यायःउपवीत्। स्यायःयःनहेत्रत्यःयःदत्यःनःउपवीतः

दे। दर्वानःश्वानाशीःभैवाना स्वानादर्वानदेःभैवानासुःसराददेः व्यायदेश्यमाद्रम् क्रिन् स्रोद्रामाश्चरः माश्चरः माश्चरः माश्चरः मित्रे देश्य विष्य द्रश्रामा देन कु जार द में जाय के द में दस ग्रुप्त हों ग्रुर न ग्रुप्त हो हो हैं न प्रे देन पर इसराय्ट्रियाराद्या हे हें नियासुस्य स्थानग्यायासा हे हें नियासुस न्द्रभाष्यायायमा वेशमान्द्रायायम्बर्भनेतिः स्ट्रेट्रप्टेमायाधेद्या देनः गमा ने न्दरभे त्यायायमा ज्ञान विवार्षे नाया वर्तन सदे विवसावर्या नःवहेत्रःस्रावह्याःसःधेत्रःयाशुरःदेः। । नेःक्ष्र्रःद्धवःविस्रान्याःसरः होनः रायाधरा ब्रेतु बुरामदे वयात्रमा नाम्नातर केंत्र केंद्र सामानरायवर रायदे मिंत्रावाया के स्री हें दार्शे र साम्यायम्य साम्यायम्य स्वापि स्वाप्ताया भे दिन्। ने उन्तर्भेन सेन्या अर्थे मोर्नेन मन्तर इन्त्र अर्थेन मने नि वहें बर्दर वे अर्द्य ग्री नक्क्ष्य प्राक्षे केंद्र न्य अविद्राच्य ग्री हु र प्रविक्ष न्वे राज्यस्य स्रम् सर-तुरुष्यः दे 'द्रवा'वी 'हेरु' द्रश्चेवारु 'द्रदः दे 'द्रवा'द्रदः त्रव्य' वदे 'यद 'र्थेदः न्यस्य न्यान्त्र प्रान्ति भेषानित्र ही स्रान्त्र न्याया है। देव से न्याया न अर्वे त्रतुरत्रत्ररायापर दरापर र् अर्र त्रत्र वर्षे वर्षा दे प्यर क्रॅंबरबॅट्बर्स्यायादाध्यदानुदानास्टरमी क्रुट्राया क्षुमा मी व्यानुदासा मना केट्राट्रा ने यान्यम् नाम्रुरात्र्यात्र्यान्यान्योत्या ने स्ट्रम् स्रीत्र सम्पन्न स्रीमः सुन्दर्यं त ८८.२.जुर्ने क्ष्यः भ्रमः स्त्रीत् स्त्रीत्रः स्त्रीत्र स्त्राच्यतः स्त्रः

बेर्प्सरमिं प्रवयः विवा हु पर्वे वाशुर दें।।

ने क्ष्र-त्वन् प्रशास क्षेत्रा व प्यन् क्ष्र व स्वन् प्रमा क्षेत्र प्राप्त क्ष्र व प्रमा क्ष्र व प्रमा क्ष्र व कु'यारी'र्से त्रेरापाकृतु'विवादवेषियाची र्रेष्यारी'र्से त्रेर्यात्रेर्यात्रेर्यात्रेर्यात्रे निनेश क्षेत्रायमा सेसम हे कुत्र सम्ह निया । दे से है सम्ह वर्रम्भेगायम् नश्ची। निवर्षेत् सेंम्साउत्यापन्यमें है। सिर्केगा से र्केस वर्देन इस्रयायात्रायाया वियापासुन्यायासून है। केंया ग्री सुंपायाया वे ने यश क्रेंग पर जुर्वे । क्रेंन यह वा यश ग्रम वने या नम्या वी श विवः ठा:विरा । विव:र्:पञ्राच अराम्याया श्वर:रो । इस्राय:रे:पर्दे केंद्र सेंद्र मा हिंदासें रस्य प्रहें समा हो दास महिंग्य स्था । यद्या है 'यसे ग्रम हे 'यस द शुरान्य। विद्यामी अर्वे ने विद्यारा शु । इसाय गुवान हें विस्थाय है। |न्जायायर्र्प्यरक्षेर्जार्वे ।वेशमश्रुर्शर्वे ।न्गेरन्वेशसुःह्यरावदेः वियावयाग्रामा महीरहेवासम्याग्रीयाध्येमाग्रीयासववापमायाम्यमार्द्रमाः त्रअः शें क्षेत्रायः हो न्या शुन्य न से हिं न श्री न से स्वार्थेन यः व्यापाश्य स्त्रा । वास्ययः सदे न् वास्य स्वर हेवा महेत् स्य स्थाय वालतः न बुद दर्भ क्षेत्र राक्षेत्र पात्र क्षर के वार्त देव प्रतान है का विकासी । र्हेन सेंह्या पार्विसायाया वर्हेन या सेनायसायन है। ह्येन यह पायसा व ययन्त्रात्रे धुयात्रयाद्युराषरात्रे। ।धुयात्राव्य न्त्रानुत्रात्रयात्र्या

न बुर द्या । त्यारा नह्या द्यारे द्या धेर देवा वी । देव सेर या न्या कुंवाने निरादन साधिता वितासें निरासें | नद्या: भेदः यश्रः नश्रः यादः दुः वर्षे : नद्याद्रः । वादः दुः यादशः दशः नन्गामर्वेन् ग्रुष्ट्रीर वेद्रा । क्विं विदानन्याया नर्षेद्राया सेन्यर बन्। । हेसा मश्रम्यास्य । नश्रुमानुयामियान्य । हेन्स्सम्यासः हुमामीया हुमार्थः द'ये'वें'से'नु'नर'सेंद्'य'गहेद'रें रानर्ह्मेग ।नर्ह्मेग्'स'त्राय'त्राय' सह्यन्दरसर्केन्यन्वम द्वासन्दर्धन्यायास्यायास्यानम् दे·षःदक्षेग्रथःदशःविःर्वदेःचङ्गर्थःग्रुशःग्रुशःग्रुशःवोः ८८। सर्भित्रदार्थः वयावयाया । ५५गायाश्चयायाद्वा दुः दुः दुः स्या इस.ग्रीश.ग्रट.४त.ग्रीश.पग्री.पशिट.क्षी प्रिट.स्ट.११४.श्रूटश.टेट.पन्नयश. सरः श्रूरः गशुरः है। । देः प्यरः दर्शे दः रायदेः विषादशा हे दासळ दः द्ः ररः गीः सेससायानुः सन्तानायसाम्बदान्ते धिन्यासुरानासूराने नायाविनायादेरा र्कें ५ ५ ज्ञान्य हैं 'र्के के दर्भे 'या धर है । या जिया या या दर्भ है वि रेटायाओससामबटार्से हुटाटसाम्सुटसादसादि भ्रूत्।

र्हेन्स्स्याने न्याने स्थाने स्थाने

न्नो इन्ययन्य प्राप्त इस्य प्रविद्यया प्रति न्या है । बे स्ट प्रति है। बे नि प्रति प्रति । यथा वे.र्घट.क्षे.ये.वु.र्जुयायायेटी विश्वायाश्चरमायाः क्षेत्राची विवे.ह्ये.राहे. याम्यायात्रययाच्यात्रात्र्भवयायीत्रीत्राच्यात्रवर्त्ते । विदेशा ह्यूट करें वर्दे हिट वा पट के अ विक हु नदे है। यह विवा न ही स्था है हिं वह्स्यान्। निन्दे वर्त न्द्राम्बद्ध न्त्री विषा श्रेष्ट्रिया वर्षा याश्या राः क्षरः र्रे । द्रवोः श्रेः द्रवोदेः यश्रः श्रूरः तश्रवाशः त्रस्य स्थारः उदः वर्षे रः वः द्युवः सः यासत्रु उदान् होन हेन द्यारा हे क्या शुर्गा हेन ता दे पर्देन क्या शहेन रासिताया ने प्यारायमें नामस्यामा इससाया है। सुयाया वे रसार्शे नामित रेग्'यदे:मुेद'रुद'ग्री:र्क्टॅर'यदे:र्रे:श्वट्य'य'यय'यग्नुट'यय। धु'ट्रट'द्रट' मी से स्माप्तर पर्दे र पेंद्र पा कवा या परि हे या र से वा या यह र र से स्था यान हैं नासर गुः है। क्षेत्र र्वेद केद में निर्माण हेद ग्री का में न्या का सार र्रे सु अप्येन न्दरम् । श्वर अप् रें प्राधिय न के अप में अप विश्व में अप वह्स्य अन्तर्भाद्य विवा भ्राप्त स्वर्भाते। हिना हुन से देश से से स्वर्भ से स वशुम्। विश्वाम्युरश्रार्शे।

मालक् प्यत्ति त्वीत्र त्वीत्र त्वीत्र विषय्य क्षेत्र त्वा क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य त्या क्षेत्र त्या क्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्

हेश्वान्त्रेयाश्वे चलेश्चीत्र्यायश्वा क्रिन्त्वर्णेन्त्र्वा वात्त्वियाः

या विश्वान्त्रेयायः विश्वान्त्रेयाः विश्वान्त्रेयः व्यक्तिः व्यक्तिः विश्वान्त्रेयः विश्वान्त

सुग्रभः न्दः गृहेन् त्यः न्यायः वर्षु रः या । ने वे से स्थः वेदः से सायः वर्त्रः या क्रमा विभागार्ये तात्र गुरायमार्ये त्या सुरक्षमा विभागार में क्रममा निरासुत्रास्य पर्वे न्यरावर्ष्ण्य । विशाहेशन्य मात्रास्य स्थान ८८। रव.स.धेर.यावया.जन्मा ध्रेय.ब्राट्स.इसम्.ग्री.यावी.याड्या.डी । जी.ज्री. धेव हे निराय स्ति। निराय ये वे निर्धित स्वा दि त्य के राग्व से दारा धेवा विश्वन्ता क्षिय्यायया नगासेन्यायार्श्वे राह्येन्या भ्रिःनें हिश यान्यसानक्ष्माधित्। क्विंदाद्वें त्र्वें त्रम्सस्य नस्य । सामसामस्य नग्-न्द्रश्व-सर्-न्त्र विशन्द्र क्रेश-रनश्वश क्ष्-न्नद्रिर-प्य रें कं नें र दशदी । धेर य कें अर्द यायाया ने ने र याया । में सें दे र र विवास वीस प्रत्य केंद्र प्रस्ते । । न्या विदेश हिस न्य विद्रास सविदायदा ह्या वेशन्ता नर्वेशःश्वेरशायशा न्नरःश्वृताःख्शात्रार्नेताशःइदःयःननेरः यानेवार्याण्ये। विर्मेद्धायां विवासियायाः पुरिने विर्मेश्वरा वयासर्वित्यम् वर्षुम् वर्षुम् । इव्यान्त्रस्य स्थाः स्था वशुमा विश्वना श्रिन्वह्यायशा र्वेश्वन्त्रन्य उत्तर्दी। वर्डेवः राञ्चरायेवर्रासण्या भिरानविवरसेर्यरे र्र्सेवरळग्रामस्। । १६८८ नदेः क्रूँगान्दरावरुरायमात्रयुम्। वियागशुर्यायास्मरम्। निःस्मरःक्रॅवःस्मर मन्दरहे नदे हें द से दस्य महस्य निवास मान स्थान स्थान हें द से दस्य है। पि: श्रे क्रिया अ: श्रे प्रदेश प्रमान विष्य प्राप्त क्षेत्र क्षेत् गहेत्रसेंदे सेंग्राय त्रा व्या हेत्र सेंद्र स्था सुत वर्त्तीत पाय वर्त्त वर्षा स्ट

मीर्यान्यात्र्यात्र्वर्यात्रेत्रं व्याविस्रयाः विस्त्रास्य सुर्वा विस्त्रास्य सुर्वा

हें में के तर्भित क्रिया साम्याय युवामी तर्भाय देश विषा वर्षा ग्रामा क्रेतु बुर्याया थे प्रवस् अराम्बर्या उत्ति होत् ग्री प्रमे प्रवेश पार्ते गुव सवःरगःमीःसवियःगरायः ग्रेरःवेरःवयः यद्देःव। सर्देवः सरःभेरायः धे'न्यामुं'ख्र'व्यायर्षेट्'न'यामुन्'मुर्यायर'देट'टे'। ।ययामुःदन्ययायः हे देश हे देश श्रॅट क्या हे क्षूर प्रया ज्ञुट या परि क्षेत्रा पा राजा पर ना युटा न'विग'य' हो न' हे र'न' धे द'र्दे 'ग्रास्ना ने स'द' न ह्वें सस' परे 'न्रें स' ग्रुन' ग्रम्स सेवा सप्त सेवास सदि हें द सेम्स हे स्हम नु सेम्स नाया ग्रुपा सुमन क्षराम् रम्भा । के वर्षे ही महिषामार सेमा र स्मा नस्य वर्षे वा नश्चेत्रपित्रम्बद्गान्द्रप्तिमान्यायाया देवेर्द्रत्मे सूमानस्यायस्य उट्रार्श्चिमान्द्रान्यस्थान् स्थान्यस्थान्यस्य स्थान्यस्थान्यस्य स्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थ रायर वर्दे देवे के जुर न थेव बेर वर्ष देश मर हे द वा केंद्र से र वर्षियायायावर्रेष्वायये तुषाशुन्वायाश्चर्तावर्षेत्रायाचे भीवातुः ष्यदानेवाषा है। श्रुट्रव्यायमा देवसेट्रव्याधेमास्य्रियावहेट्रयायदा विमाया मुन्दरन्दरन्दर्भवर्भेषरभेद्रन्त्र। दिन्देन्नेन्द्रभ्वर्भेन्भेन्द्रभ्वर्भेन्द्रभ्वर्भेन्द्रभ्वर्भेन्द्रभ्वर्भे मा । नन्नायः सूना नस्य के सिन्यार्वे न से ने प्योत्य । विश्वास्य स्था । नेॱधूरॱहेंत्ॱऄ॔८**र्शःपंदे**ॱ८्यःषःदवनशःत्रःकुषःचःषः८्पदःर्वे । तेशः चुः थे। न्यायाव्यायव्ययम् से सामस्य ग्यान्य नियायसः र्रे लाम्बर्गन्दरत्र है। हें निष्मालका स्वानस्य सम्भाउन्। हिन यश्चर्यश्ची विःश्वर्णः श्वा विश्वर्णः विश्वरं विश्वर्णः विश्वरं विश्वरं

श्चेशन्तु केत्र रेदि यय श्चे रेस या

हे नइंतर्न्याम हुन्य हे के त्रें न्द्र ह्व न्याम ह्या व्याप्य है न्या हुन्य न्याम हुन्य हे के त्रें न्द्र हे न्याम हुन्य हे न्याम हिन्य हे न्याम हिन्य हिन्

नश्रुवान्य वेषा केत्र नुष्ट्या नर्गे या यथा त्र क्रिन्ट व्यव मान्यया है वै विष्यास्य स्थाने वा स्थाने यश वहिना हेत दें त श्रुव खंयाया सशु से दायी । वेवा या निव श्री विव विव स्था र् श्रम्युर्या श्रिन कुषा हेना संदेश हे या स्कृत या या । या विदास व र्रे मिडेगार्स्स्य बिवादे द्याप्यह्या । डेश्याद्या । यदे द्रार्था यदे द्रार्था यदे द्री यथा वर्रः वर्षारमः भेटा । याहे स्वाः श्रुवः श्रेमः राष्ट्रः वर्षः वर्षे सर्वे सर्वे । वर्षः ग्री न्याया पावत देव न्याय वें संविद्या । स्टा मी देव त्या ने गि के हो न हें वा वियाम्बर्म्यायाष्ट्रमार्से निष्ट्रमारमाष्ट्रीनाये सर्वे मासूराया प्रमान नर'वर्गे'न'क्स्रश्रागुर'क्षर'र्नेर'वर्गेर्'पदे लेश'रन'ग्रे'सेग्'बुस'स्रा क्रअःदःचःद्दःज्ञवःचवेःस्रिम्रवःशुःचर्मेद्रःश्चेःत्र्यःयरःमेव्यःवर्मेश्वःवर्ह्येरःचः सर्वेट्स कुषानदे रेग्रास्ट्रिय पाइससाम्बर्धान हे न सेट्स् ने न्यामी में बर् से मर्हें बर्म है। से में मार्थ है। ने हिन खर्मा के सम्मासी मार बुयायर्ग्य्यायित्राचीत्राया । यहेवाहेवाहेवाहेवानुवान्या वा भिराहे से नभेराभे याताना विवापिता हि र्वासेरसा नस्यानहितः वर्गुरुरश्चिम् विरुर्शि । विरुर्शि । विदेश्वरश्चेरुरानु स्वरुर्शि । विदेश्वरश्चेरुरानु स्वरूप नग'न्राक्षेर्राचित्रस्याने मान्नाचित्रची नेनान्त्रम् न्याचेरानात्राचा चार्यान्यस्य है। रम्भी दिव उसाय दसेवासाय वे रूप वर्षे इससाय राष्ट्र मुक्सें राज धेव परि धेर में । देवे धेर केव में इसस ग्री पर खुल वे पावव शी पव नदे त्यः अवतः ग्रेगः हुः ग्रिवं तः न्यं दे हो। क्षेत्रः अः तः श्रेह्यः यः त्या विदः

हुः हुन् श्रुदेः हुः वियायवादः क्षुः द्वायायाः स्टारहेनः वा विवाहः श्रुवायायाः यार्ट्र अंतर्र कु 'वेया' हेर् दार्याद अगुर दश्री । दर्र दा हो अर्ग यावद र्देन हो दःयर पर्रें वःयः गदः धेवःय। ।देः यदे वेः यहे दः यगः धेवः हेः देः यदेः श्चेशःत्रिः हतः ने तयम्। िष्ठः सः क्रम्यः केतः हर्वितः कुः नः श्वनः होनः मनः धेव ५८ । । विराया के मार्थ का यहिया हेव परेया का या पाराधेव हो । र्ट्रिव त्याय सेट केव से इसस्य श्री र्ट्य विव टे व्य है। । टे ट्या वहेया हेव सव निर्मित्रे रें त्या विवा किया विवा निर्मेश निर्मेर दर्शे व सूगानसूथानी अग्गुत हुगारु दश्यास्य अर्बेट त्र अने दगानी देव दुने लेखान या श्रे अातु विका द्वारा सामका मा विका ग्रामा ने ता द्वारा हो। दे हिन त्यका वह मा हेव'स'रेग'र्5' ह्वेव'द्विग्रस्य दर्शे च'द्विग्रस शुरुप। स्वा'नस्य बे रन पनम निर्देश्वर र र निर्देश स्थित अर्थे । विष्य के अरे अरे र वनरानाक्षानुराधेनान्नेवानर्हेनामाना ।वनेनिनिन्नाक्षेत्रानुधिनाने सम्सारवराने न्या धेता विसार्सी निवे श्री रास्टायावर श्री येयासारा ষমমাত্র শ্রী দেরু নার্মা ক্র্ণি ঘাষমমাত্র মৌ মানমা यन्दरमेग्राम्बर्ग्याद्रवर्धे न्यात्र्वे म्यात्रे बर्ग्या म्यावन श्री देव र्विष्यश्रास्थार्याः मेरिकास्याः स्टानाः सेरायाः विष्याः विष्याः स्टी विषयः सिक्रासक्रित्रे प्रत्यक्षित्रस्य हेना सक्रित्र स्याप्त निष्प्र प्राप्त हो अर्दे निन्ना नी अरहे न पर के ना अरमर हे न ने सुका नु न सक्ष अरा हो के अर्दे । ने भूरत्भे अन्तु के दारिया या की देया या या की कुरा नाया ना शुर्या

वेगा के व र शे प्रह्मा क्षें से सम्भाग के प्राप्त में प्रमाण के व र प्रम

श्रेश्वर्ष्ट्रस्य स्त्रीत्र स्वर्ध्य स्त्राह्ण स्वर्ध्य स्वर्ध स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्

नरः त्रेना मः केतः र्रो मित्रः नित्रः नित्रः मित्रः वश्चनःमःधेवःर्वे। १नेश्वःनःमःस्माः हेनाः हेनःसमः हुनःमः ष्यमः। शेश्रशःनेः नभ्रेत्रपार्द्याग्रीयायहिंगाया श्रेयाचेनाकेन्यतेन्त्रपार्द्यन्यत्रप्ते ८८.यक्त.य.य.व.क्ष.यीयावहूर्या.तथ्य.य.व.य्या.कुष्ट्रा.य.व.य.व.य्या.य.व.य्या.य.व.य्या.य.व.य्या.य.व.य्या.य.व.य्या. हेशर्युपर्मे हिंग् होर्दे । देख्र प्यर हें द्वायया हर कुर सेसस भ्रेशः शुर्रः तः भ्रदः हेवाः वीशा विदिरः नवेः नहें तः ररः नश्यस्य रायदेः हसः ववाः इसमा । परेरामिनास इसमा ग्रीस्मा विसापहिंदा । विसापरा <u>दे:देर:यहयाक्त्रय:देवायासु:क्ष्रेया |यहयाक्त्रय:स्यय:सु:द:सुर:हें| |वेय:</u> श्रेश्वरानश्चेत्राश्चर्याः हुत्याश्वर्याः स्वर्याश्चरः वाश्चर्याः व्ययाशः सः नुस्रश्नायते द्वाराय प्रायाय या स्वार्थ की नुः विद्वारा निया विद्वारा स्वार्थ की नुस्र विद्वारा स्वार्थ की निया स्वार् र्हे हे रेव में के वे कवा ग्रम्या शेर ग्री कुव छिन सर न् त्यवाश सम्बस्स उद्विषाश्चित्राम्बिदाबिदार्हे हे देवारी केवे सेदायदा से पर्दे दायाद्वाया न यद्येत्र'यर'शेयय'नश्चेत्र'र्दे?हें देत्र'र्दे के त्रत्र'त्रत्र'त्राय'यर'द्रतः র্ষমণ্দেশের মান্তুর গ্রীপৌর দের ক্রীপোরী মান্তী ক্রুর প্রমমণ্ডর বিশ ग्रीशम्त्रेत्वित्। ग्रत्कुत्रश्रेष्ठश्रित्वेत्रश्रित्यत्थे वर्देत्वाय्येत्रस्य न्तुवानावस्याउन्यानस्य क्षिण्या विषार्श्वेन्यावस्य स्त्रम्य ग्रम् शेस्र अपे पे पे प्रमुद्द स्तुन से स्र अप्यम् वासुन्य प्र प्रमुद्द स्तुन स्त्री स मु:ब्रुन:ग्रेश:ग्रम। नन्ना:केन:न्नःने:व्हेन:हेन:व्हेश। व्रि:बेन:कुन:

र्वेन पर्देन द्या । दे पी सन्य ग्रह्म कुन से समा । दे न्वर कुय में सूर यह्न ५८। विश्वत्रा विष्युत्रहें हे ५०८ वसूर विष्युत्वा वुर द्वा ऄ॓ॺॺॱॸॺढ़ॱक़॓॓ढ़ॱय़ॕॱॻऻॿॖॸॺॱॺ॒ॻऻॺॱक़॓ढ़ॱय़ॕढ़ऀॱॸॗॻॖऀख़ॱढ़ऻॕॎॸॱऄढ़ॱॸॖॱक़ॗॱ के न वर्दे न क्षेत्र कु बन म वर्दे न म व कि म न म व न न म व कि म न म नर्याग्राट केराम्याट नारोस्या उत्र स्थेमा उत्र इस्याया नसूत्र र्से सुट ना यदे वे त्यमा व हैं है हिंद शेष भेव फ़र्नों व भ वेषा क्षुरा है। यदे वे र्श्व सा ब्रिंशान्तात्री सेस्राया हमाही हो त्यापा है हि साक्ष्र सामान है हि साक्ष्र सामान है हि साक्ष्र सामान है है सामान है सामान है सामान है है सामान है सामान है सामान है सामान है सामान है है सामान है है सामान है सा मा वहसन्ध्या ग्रान्या ग्रान्या ग्रान्य क्रिया ग्री से सस्य वर्षे स्राप्य विग्रास्य प्राप्य प्राप्य प्राप्य प्र यार वी के 'हे 'हवा वी 'ग्रह, कुव 'ग्री 'श्रेश्रश ग्रुव 'श्रह, यह श' न्यया व्राक्तिसेस्य न्यते सुन्यम्य स्वाय के सिन्दिन्य विरा कुनः शेस्रशः न्यवः ने 'न्या' धे भेश केतः सँ र 'न्यनः मञ्जूर 'यदे 'या बुन्स' सेससाईनासायरासासूरायादे प्रातिनासरासी सुन्हे। दे प्राति <u>न् ग्रेयः युर्वेरः धरः नक्षुरः भ्रेः माल्नाम् । ने न्यायः ने स्याः मुः न्रः या यहः </u> र्यायाग्राम्यस्वापम्से नुर्वे वियागस्य या भी वियान स्वाप्य केत्रस्विः के अप्धेत्रस्य अभे के वायी । यादः वया दे वेया सकेत्रस्य स्कुदः मःवियाःयायः केर्देश

व्रा सेस्राने में नार्यस्य स्थान स्था केत्र स्थान सेस्रान्त स्था सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान्त सेस्रान सेस्रान सेस्रान सेस्रान सेस्रान सेस्रान सेस्रान सेस्रान सेस्रान स

ने अळव हे न ळ न न विया थें न व त्रेया के व सदम इस सम्मान या विया दें न नशयदी यायन पर नुर्देश विदी या श्रेट से नर्गेट सायश देवा शरी नु विश्वाश्रुद्रश्रायायादेश्वासङ्गेदाद्रविश्वास्त्रादे प्रमुद्राय ।दे त्या <u>য়ৢ৽৴ৼয়ৢ৴৽৴ৼৢ৴৽৴ৼয়৽য়৽য়য়৸য়৽য়৽য়ৢ৽য়৽য়ৢ৽য়৽য়ৢয়৽য়ৢয়</u> वःवज्ञराग्रीःश्रुःगुवेःश्रुःग्रेन्या मॅंन्टाश्रवःस्यायःश्रेग्ररायवेःस्यानेत्रः र्ळेग्रायदराने न्यायी श्रुप्ति कु होन प्रश्ने न्या वे कु श्रव सेंट न धेव दें। विश्व भ्री शर्मेव वे मेव शुन्द स्विष्य श्राप्त विश्व श्री विश्व स्विष् शुःगुदेःकुरःशेः ५८ नमा वयः ग्रेःशुःगुदेःकुः श्वतः स्टायाधेवः स्थितः वा नेश वेद प्रते कु सुन ता र्री वार्य प्रदान द्रा शी शु वादि कु र वशुर व ने निव्दर्भ व्यवस्थित विद्युद्ध क्ष्य भी से सम्बन्ध क्ष्य भी सुर्ग मुद्रि कुंदे वद व राया में व सुन्तु सुव सेंद साधेव सदे कुंधेव या केंद्र हेद हैंग्रथःसंदेश्वेशःस्याद्वेःकुःखुन्त्यःश्रेंग्रथःसन्दरःदरःवसःग्रहःकुनःग्रशुशः गिवे कुं श्रुव र्केट न प्येव दें। | देवे श्रेट कुंट क्रुव स्थाय राग्य हो ने वा सर्के ग यार्सेश्वार्यार्मेन्वेशास्त्राची । यहसामुशार्केशानभुन्याद्वा विश्वान्त <u> कुनः ग्रे : से सस्य स्वरं स्वरं</u> क्षुन्त्ररम्बुर्याते। नियरम् यार्चेन्याते नुकुन्तर्देरायार्थेम्याया भ्रे भे भे द्वाराया व ति देव के ति का देव का स्थापित का स्थापित का से दिला का नुःश्वःर्क्षेण्यायःश्चे नयः श्वरःश्रॅटःगे क्रूरःवश्चरःनः नवेदःदे । अर्गेदःर्यः ग्नु'क्रुन'ग्रेश'ग्रद्दा यदय'क्रुश'द्रदश'क्रुश'द्र्यश'द्रद्दा १९४'व्रेश' इस्र राष्ट्रेश निष्ठेत प्रदी । वर्ष प्रस्ते प् न्यासेन्छेराग्रानर्देया विराजेर्धितायानर्देन्यराष्ट्रवार्द्रस्य ग्रह्में त्यानहेत् त्या देशक्षेत्र भ्रेत्र त्याधुस्र तेश ग्रह्म व्यास्य विषा राक्ते.कुरामहेशामदे.श्रशामी:ध्रशाधेतास्य श्रेंदाहेर्हिम्यासदिःवेशः र्ना ग्रेश नेना पाळे खुर प्रतेत पा सेन ग्री व्या खुन खुन ग्री सेसस प्रा हे त यः क्रुन्यक्षेत्रः क्रुय्या ग्रीयः द्वीतः प्राधिवः है। देवः क्रेवः ब्रेटः नः यथा व्रवः र्वेर्याचेगामने त्यरादी। विटाक्ष्यासेसराद्यदे र्श्वेरायसद्या। श्विटास लूरश्चर्म् अ.च.चर.ट्रेश विर.क्व्य.श्रुश्चर्यर्यात्य.व्यव्या विश क्षान्याया हो विदार्शे दाय्या हो प्रमाण हो । दे क्ष्मा हे दि कि दि हिन हिन का यदेःवेशन्ताः गुरावेगाया केतारेदिः यसा त्रुतार्से रासाधेतायमा से विग्नुसत्। ने प्रभागवित्र प्रदे प्रसाहस्य अप्तर हैं अप्याद के प्रवित्र हिन हिन हिन हिन हिन क्षेत्रार्ड्यावित्राद्यस्य त्यस्य स्थायसः श्रीःकः प्रशासः से स्याप्यस्तरः त्र स्रात्यर्भाते के स्राक्ति स्र यायायात्रेशकराद्वीयायायुरा ययाकाकदायायाव्ययाद्वारीयार्या ॻॖऀॱॺॖॖॕज़ॺॱख़॔ॸॱॸॱॸॖ॔ॺॕॺॱऄॸॱढ़ॖॸॱय़ॸॱॸॖॱॿॸॺॱॻॖऀॱज़ऺड़ॕॱॸॕॱॼॖॸॱख़ॖॸॱॻॖऀॱ सेससर्दा नेसर्त्रा ग्रीमिर्ड में स्ट्रिंट्स हेट् ग्री हेवास पर्वे साया वाया हे ने ने न प्रमासी निर्मेस मानि न प्रमास के ने न न न निर्मेस न निर्मेस न निर्मेस न निर्मेस न निर्मेस न निर्मेस विः निवस्तान् स्वाः स्वर्ताः स्वरः स्वाः स्वरः स्वरः

धुर्-त्राधेत्। विश्वान्यस्य ग्रीश्वर् दे स्थित्य वे विश्वान्य स्थित्य तुःगाशुरशःमदेःश्चिरःर्से । देशःवःदमयःथ्वतःषःतेःभःतःदश्चःयःवहेवः केराम्बेराम्बेरायाक्षेत्रकाउँ या इया निवानी भूगाय देवाया धिवाग्रारा ग्रारा कुनःग्रीःशेस्रशःविंदायानहेत्वर्गाहेत्। स्वाम्या स्वाम्यान्ये। भूदिन्छे। र्वेशःशुःवहें वःयवे क्रायं राष्ट्रम्य याया या शुरः रवा ग्री पावर के शाया विवाः मीर्भानक्ष्रभात्रात्मभाक्कीःमात्रदालामीं क्कुं क्षेत्रार्भे प्रिंदिने । विदेश्यावनदात्रभा डेगा होत्र सदर हार शेस्र शा हो श्रुं र संवेश हा नदे वार शा शु पर्वे प्यो हे बेद्दा क्रिंद्र पाशुक्र देव से के या नगद क्रे हो व ग्राट हाद क्र व से सका द्वार है र्श्वेर्परस्थे कुरारी । देपविवर्ष्य ख्रियश्वेययवयानेयास्य श्रीपरम्पर् नर्झें अ: ५: ५८ : इ.स. देवा : के र्यो अ: नर्झें अ: ५०८ : गुर : कुन : के अ अ: ५५८ : श्चित्रायम् भे ख्रान्ति । यहिषा हेत्र त्र द्वार नाम्य नाम्य नामिष्य । न्रह्मा देवार्रे केदे सेस्रायदी न्यावन नुस्या स्वाप्त हो उस न्ने क्वें र व वन्ते ज्ञ अ ग्यट कें र न क्वें त हु हुव न अ क्वा हु स न न ट वह र है। अन्वरुद्धारिया अस्य दिन्या मुन्दि वात्र दिन्य स्त्रिया অয়৾৽ৼ৽য়ৼ৽য়৾ৼ৽য়৽য়ৼৼ৽য়য়৽য়৾য়৽য়৾ৼ৽য়ৢয়৽ঢ়৾৽ঢ়৾৽য়য়৽য়ৼয়৽য়য়৽ড়ৢৼ৽ बर्'र्डस'ययर'सर'र्'वहर्स'बेर'स'र्र'यर्स्ट्रो सूर्'रेग'रे'रे'य्'र्सेन'स' श्चें र न दर कें ग्रास्ट्र प्राचे स्वा हु तुराके रा द्यो न स्वा स्वर न दर न र भूतराशुःवहंदःपःइसरागुरःकुःकेःवःदरःसेःबदःधरःतेदःधेरःहे।

र्श्वेर्प्तह्यायमा भ्रेयायाभ्रेयमाळेवानेवाहामा ।देवे हेयामा यदे ग्रुट कुन सेस्र सेद या । द्रमे माल्य मार मेश ने या ग्रीस मार्दे द यर वशुम्। विश्वप्रमा नेशके न्या अविष्ये भेषा के वा अप ठेवायाठेवायी अप्रेस्य स्थ्रेवायम् श्रेत्र । विस्य म्या सेस्र रहतः इस्र ग्री सुन्दर्द्धा निर्वाच स्त्रुवार्त्र स्त्रुवार्त्र निर्वाचर्त्ति वार्वाचर्ति वार्वाचर्याचर्ति वार्वाचर्ति वार्वाचर्ति वार्वाचर्ति वार्वाचर्ति वार्वाचर्ति वार्वा नर्यस्यान्दरः स्वरः है। निर्वेदः त्रस्यान्त्रेनः स्वरः सुरः त्रा । सेस्यः उतः रे रेवे के निर्मा । दमम कु के दम निर्मा के सेवर वित्र के दम । के रेवर वित्र के न्यगासेन्न्। ।नसूनःयरः वर्नेन्यः र्स्स्यः केन्त्रीया ।वेयः न्नाः न्योः नः गवितःग्वातः रू:विरानं वितः रु:वे। । यहारा राज्ञी र वर्षा वर्षा वर्षा प्राप्त स्वाप्त र व हेन्। _{चिर}ः कुनः श्रेस्रशः ग्रेः र्बेृदः नेरः ह्वाः परः परः। विद्यसः तुः विद्येदः पर्सः श्रे बद्दावसेषाचरत्त्रम् । विश्वर्शे॥ বাইশ:বা

शेसराने हे क्षूर नश्चे र प्रवे कुषाया नि

मुंगिरायानहेत्रत्याहे सूराभ्रेग्ना मुंगिरायान सुराया मुंगिरायान सुरायान सुराया सुरायान सुराया सुरायान सुरायान सुरायान सुरायान सुरायान सुरायान सुरायान सुराया सुरायान सुराया सुरायान सुराया सुरायान सुराया सुर

८८:स्र्

कुंगिरायानहेत्वसाद्देश्वराष्ट्री नायाग्रुसायस्

मेंत्र नि वि त्यरा भ्रें दुं वा दी अहरा मुरा समा मुहा से सरा ग्री सह নমমান্ত্রীমামী ভ্রিনামান্দ্রে বীমামর্সিদানমান্ত্রীমানামার नहेव'वर्षा ग्रान्य'ग्रव्यान्य'रान्द्र'त्र्य्याय'रादे'त्रुद्र'क्रुत'रे'वे'स्रव्या त्रअः शेस्रशः नश्चेतः प्राप्तः । तेः कृत्वेतः सर्वेतः र्वेतः स्रोतः स्राप्तः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः वार्सेराद्यारोस्यानश्चेत्राप्ता केंग्रास वियाग्रात्त्र सेस्या ग्रीत्या केंश त्रा रू हे न अर्बेट न द्या केंश ने सूर्य मात्र शरा है से स्था उद द्या हुः क्षेत्र प्रविः सूत्रा नसूत्रा केत्रा नम् नेत्र निष्ठित क्षेत्र का निष्ठित क्षेत्र का निष्ठित का निष्ठित का *ॸॸॱॸॕॱख़॔ॱॸॸॱॿॖ॓ॺॱऄॸॱॸॸॱॿॖॺॱॸॕॺॱॸॸऄॸॱॿॗॱऄ॔ॺऻॺॱॺॺॱख़॓ॱॸ॔ढ़ॱॸ॔ॺॱ* वर्ने र वे १६व र र मी छ र छ व र हु से सस व हु र पवर हे र पवर र गाय वा हा बेन्'तुर'कुन'त्रंबेसक'नक्रेन्'य'क्ष'हे क्केंबा रे'वेना'नन्ना'नेक'बेसक' नश्चेत्रान्यावन पराने सूरावश्चरारे सूत्रान्या से स्थानश्चेत्रायात्रायः नरःसर्वेटःदशःशेसशःनश्चेट्राः श्चेःनविदे।

शेशशःश्चे नितः द्धंतात्री ज्ञानः द्धनः द्धेतः द्धेतः से स्थाः श्चेतः प्रमः ज्ञेतः

डेशमाशुर्याप्यान्य सुरास्त्र स्वाया में नामान्य स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया राया नरमें दे। कें तस्यारें सकं राम समय सर्वे राम सम्माय सळंत्रः श्रे अ:हे। दे 'ख्रः तुवे : तुदः कुनः दे : नद्या : वी अ:र्षेन : परः तुवे : श्रु अ:त् अ: लेव.जा चिष्ठेश.स.ची क्रूश.स.चमश.सटश.मेश.गी.लूय.धय.सश. ८८:सॅर-८८:संक्रेश देवरादे-८वाकः विचावर्दे दक्केरायदे । वार्यस्य वे। वेगाकेवामुनामानुनाममानमुमानार्वे मानेवामान्याम् वे ग्री भे ने राय हैं न पर्दे न से राय है। पर्दे पान सून पर्य स्वान र रोसरा उद्या भूग नर्था नर्भेया नर्भेया नर्भेया सम्प्राचित्र सम्प्र सम्प्राचित्र सम्प्राचित्र सम्प्राच सम्प्राचित्र सम्प्राचित्र सम्प्र सम्प्राचित्र सम्प्राच सम्प्र सम्प्राचित्र सम्प्र सम्प्र सम् धेर-५-५ सेम्बर-१४५-१४५ ग्रह्म सेस्वर मुद्देन से मुद्देन से मुद्देन से स्वर्थन से स्वर्य से स्वर्थन से स्वर्थन से स्वर्थन से स्वर्य स नश्रुव मं वुनम् वायायाया वर्षेत्रमा भीव हो। दे ख्राया भीव वर्षेत्रमा हु श्री महिला नहेन न्या क्षे नर नन् निर्मा निर्मा विष्य के निर्मा निर्मा निर्मा के निर्मा के स्था दे 'दर्गेव'यर'अर्वेद'व्यागर्वे' र्वेर'देय'वश्चर्य'व्याय्यार्वेव' वर्देन् भेरामधे। सेस्रामभेरामप्ते चुर् कुनाम वेन वर्देन् भेरामदे क्कें दर्भायविषा भी केट्र ट्रं चु प्रदेश क्कें दर्भा स्थायविष्य स्थायविष्य स्थाय विषय स्थाय য়ৢয়৾৽য়৾ৢ৽ড়৾৾য়৽ঢ়য়৽য়৽৴৴৽য়য়ৢঢ়য়৽য়ঢ়৾য়৽য়ঢ়য়৽য়ৼ৾ঢ়৽ बेन्त्र रन्नेन्द्रिययुन्यायायावीयामुन्यसार्केषायरायहेदायवे र्ह्विसे व्यास्त्री व्ययमान्दास्त्रेटा हे सुद्या प्रति स्वाप्तावित देवाया द्वीया यम् अर्वेट व्या अट्या कुर्या वितासमा वर्षेट्र प्रया वे। याव्य देव प्रया व रात्यावे न मुद्दाराया केंगा प्रमायदे व राष्ट्रिया वुया ग्री केंगा पदे व सूर्या

नर्ज्ञिनाः भेः त्र्राः भिराप्ताः ने प्रमेनि । चेत्रानिन । चेत्रानि र्रे। । रर:र्नेत्रःवशुनःयःत्यःवे नः कुरःयश्चः केंगःयरःवहें तःयवे क्वेंग्वेंगः शेः न्वीं अरमवर से तरिं। विवेर नाय अर्जे वार्ज सामी से वार्ज स्वर वार्ज स्वर वार्ज स्वर वार्ज स्वर वार्ज स्वर वार्ज यन्दरहेंग्रयः यः श्रिम्यारे नायया येदायया स्टार्देव सुव सुया स्टीम्याया । बेर्प्यते धेर्प्या रेप्या शेर्प्यते स्त्राया स्थान्य स्थान्ते स्त्रे स्त्राय यश्राः में या निर्देश में मार्ग मार्ग मार्ग में स्वार्थ में स्वार्थ में स्वार्थ में स्वार्थ में स्वार्थ में स्व ग्रैं के अ'ग्रे अन्य म्यूर्य सदे श्रिन्दी | देयाद यह या क्रुया ग्रे प्रिंद प्रदेश स ८८.स.झ८४.येथ.योवय.ट्रेय.के.ब्रु.व्या १८८.यो.ट्रेय.पयीय.स.करर. कुर्अः र्वेन प्रायेन स्वे सुर र् प्रायेन स्व र ते से ना न सव र त् से प्रेंना प्रवे के त ळेव'र्यर'त्यूर'र्रे । सूर'न-१८'रादे'सेसस'न सुेट'रा'त्र'रें जाहेस'यांदे ग्वर प्रश्राग्य अर्था क्रुश ग्री ग्रा बुग्य ग्री श्रु ५८ के श्री श्रु दे प्रें ५७ त नन्द्रायास्य मुद्राचाद्रा सेस्राउदावस्य उदास्य मुरायादर्गेदा धराधी द्यानरुषा प्रदर्श यथा न भी द्रा प्रदेश प्राची स्थान रे.रे.लट.स्रेसस्य.पश्चेट्र.स.द्यामी.मट्स.स्य.याट.ट्मेंस.त्या सद्यद्येट्र. धिर्यासुः हैवायापदे येयया न्युट्रिया दे वाव्य देवाया द्वीया प्रस्था स्थित নর্মানীপ্রধেষ্ট্রপ্রধার্মীপ্রমূর্মার্র্র্রমান্ত্রপ্রমান্ত্র্যান্ত্রমান্ত্র <u> २८.५ूप.जवट.शटश.भेश.भे८.२.भु. १२८.वर.शबूट.चढु.बूच.वरूट.८८.</u>

विष्यः मान्वनः श्री देन प्ययः न्यः न्यावन् श्री श्री क्ष्यः न्यावनः श्री क्ष्यः न्यावनः श्री क्ष्यः न्यावनः विष्यः विषयः विष्यः विषयः व

क्रॅनर्भानवि'य्यराक्षेर्याने र्दानी'सत्त्र्याक्ष्याक्ष्यान्तित्याम् गे द्वेनर्यन्ता वावव ग्रे सब्दा है वार्य ग्रन्ति प्रावव ग्रे द्वेनर्य <u>र्</u>दा र्थेव नेवा केव त्य वीं समार्थ भूम सम्बाध मार्थ है समार्थ ह **केट**ॱकेंशक्ष्य या श्रेस्रयाया श्रेष्यया ग्री:द्यो प्याया सेटा दुः में स्रयाया श्रेट्रिस्य है. र्हेनरानिकानहेन न्या होती । ने प्या कु के न कु न से रिका न त्या क्रियायायायात्रहेवावयार्रात्राकुते हेर्वयायया हु । क्रेवरेर्नायायावहेवव्यावववर्र्द्रिक्षेत्रयाययाञ्चेयावर्षे नहरामराग्रहारायायायायात्राह्याया । निःस्ट्रमानस्रदामाञ्चीः नहरानेवाःमाळेदः यदे र् अपदे र खेवा अपर वे विश्व श्वेर विवास विश्व अध्या विश्व र हुन्गेविःसरःरेषाःसरः ग्रुर्याःयः न्याः सदेः निष्याः यहेवः है। वेषाः सळेवः द्वः श्रे श्रें द्वः हित्र प्राप्तः से स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्

गुरः कुनःग्रीः शेस्रशःश्रुदः नदेः देसः मःदी

र्हे 'र्वे 'के द्वार देव के प्रत्ये के दिन के दि

सर्दियाः श्रुप्तर्यसः नर्त्रः सः नर्दा

र्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः । र्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः ।

८८:स्र्

वेगा केत मी त्या मी इत्त क्षेत्र हे त तक्ष्व त त या गुरुष तथा

विंगासरमायके नदी क्षेरहे केत से साधिर नक्षेरिया सेसस उत्र बस्रश्राउद्दादिंद्राचायायादिंद्राचिते भ्रीत्रादेशायराद्यादकवावरावसुरा या श्वेटाहे न्यवादाने सूरा हो नाम शेर्येटा वया वर्षे वासा सुरुपा वरे हिराविरानने ने प्यारमा यश्यापि श्रीरान्दा हिराने से प्रहें दादा हेगा केत्र'यर'भे कुन्'यये भ्रेर'हे ते 'र्वेजा'यर'जाय के ज'धेत 'र्वे । ने 'क्षर' यर हैं में रासे बर्प रायस्व प्रायस्व पर्देव पा भू र दे है दे । पावव <u>षर तुर कुन भेस्र प्रमय इस्र राजी भ्रेर हे के दारी भे नर्री । दे के दे</u> धिरावेखा र्वेदर्पात्र्येप्वरेष्ट्रीरार्देश । नहंदर्पा पुराद्वरेष्ट्रा प्रदेख्ये नियम् न्युम् अधि वर्त्तु कुर्म वे अदि श्रेम मे नियम सिर्ध क्रिन् पर्मे नःधेवःर्ते । १२ निवेवः ५ ग्रुटः कुनः शेयशः ५ मदेः श्वेटः हे केवः से दि श्वेषः स ळेव'र्स'णर'न्या'यर'वर्युव'यदे श्रृंव'र्'दर्शे'च'णेव'र्हे। विश'र्रा यू'ण' वैरित्रे प्रश्राग्रम् प्रह्राप्या ग्रम् कुन क्षेत्र क्षा मान्य स्वर्थ ग्री क्षेत्र प्रदेश क्रिंयारा दे है। वादया दे वादा वह्याद्याया ग्रीया श्रूयाया भ्रेदे गु गुरा कुन सेसस न्यद इसस ग्रे हुँ न प्रदे हैं सप्त दे स्ट्रेट हे के द रेदे। प्रवस कुः केवः सें त्यायह्या प्रश्ना । दे त्यू नः प्रश्ना न्यायह्या प्रति । विश्वा श्री । दे त्यू नः प्रश्ना न्यायह्या प्रति । विश्वा श्री । द्यू नः प्रश्ना न्यायह्या प्रति । विश्वा श्री । द्यू नः प्रश्ना न्यायह्या । विश्वा श्री नः प्रश्ना न्यायह्या । विश्वा श्री नः प्रश्ना । विश्वा श्री । विश्वा श्री नः प्रश्ना । विश्वा श्री नः प्रश्ना । विश्वा श्री । विश्व । विश्वा श्री । विश्व ।

नर-रु.पायः के न दे। दे न स्वर के पा से समारे भू नु के समार व्यायाग्यरायेयया उदाग्रद्याया यहा विदाने दार्या प्रदान स्वाप्य प्रदान नदरःवेत्रः तुः तुः नगदः वेदः अवदः अअः यः नदः नु अः ग्रुदः नयगः तुः अेनः यः न्वीयायम् अर्वेदायात् ल्यात्याचेषायान्यत्यत् यम् सूरायाया स्वेदाहे केता र्रे प्यत्र हेग्। नश्चे ८ प्यार्थं अश्वेत प्यम् हे प्ययेषा ५ ग्रें अया यम ग्रुयायया महा मी नि ने स्वाप्य से द्वा विद्याविद मी देव त्या से क्रिंग्न सार्स विद्याविद मी नि निन्त्रमा तुः हैं मार्या पर हो दारे। क्षेत्रा देश दर में व्यया दे व्यर श्वेद हे के त रॅं अ'नर्र्रेट्ट,'पञ'तुट'ळुन'ऄ॓अअ'न्धव:_{क्}अअ'नन्ग'हेन्'व'से'क्षु'नर' गावरायाक्षेत्रात्रायदायार्देदार् याहेरायदे धेराळे गायायायायायाक्षेत्रातुः तुःदगायःवेदःध्रवःदेदःयःत्वःसरःवश्चरःवःयःवह्वाःमे ।वस्रवाशःसःददः यदे र्श्वेनरा नश्चेन या वा वा ता ता ता ता वा वा वा वा वा वा वा য়৾য়য়৽ঽয়য়য়৽ঽৢঢ়ড়৾ঢ়য়৽য়ৣয়ৢয়৽য়য়৽য়ৢ৽য়৾য়য়ঢ়য়য়ৢয়ৢ৽ नः भेष्येत्रः मः केष्णरः भेरः दें। । देशः नरे निष्केष्णरः भेरः र्रे विदेश । ने सूर विव हु ग्रुन्गव राय व्वाय वर्षे र से र से से बीय पर ळॅग्राथ पॅर्या शुः हेर्ग्याय श्री । गर्ने दायी जाने नाम प्रायम प्रायम स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप বন্ধদ্পর্ভিন্দ্রম্ন ই।

में न्या व्या के अपन्या के अपन्य के अपन्या के अपन्य के अपन्या के अपन्य के अपन्या के अपन्य के

यः सर्गायः के नावी अद्यास्य स्वयः द्वा निर्म्य स्वयः द्वा निर्म्य स्वयः विवायः स्वयः स्वय

ध्रुत्द्रम्। ह्या ह्या सेस्रान्यस्य हैया विवास्य हुन स्वाप्त हैंग्रायास्य वर्षेयात्। यदयाक्त्र्याणे केंत्राचयया उदादेवे यापा यवेयातः सकेश'रा'यम्बर'र्शे । कें श'मडिम'र्रा'म्'ते त्वा परी'स्'र्हे। श्वेर'हे केव' र्रोत्। । नर्डे अप्युत्पत्या भ्रेट हे के दर्भ अदे । अट अ कु अप्यो के अप्याय अ उट्-च्रट-कुन-सेसस-द्वार-इसस-ग्री-त्या-सहैत्य-ट्र-सक्रस-मान्यास-स्। नर्डे अप्युत्तरम् न्ये रावकी त्राविक्रात्रे अप्युष्ट्र राविक्रात्रे विक्रा वें देव में के दे वार र् अकेश भरे र र सुर वी कें वाश वस्र ४ ठ र सके दें। नर्डें अप्युन प्रनुषा ने निवित न् जुर कुन से स्थान परि स्थे र हे के तर्भे जार र्'अकुश्रान्रेर्अरश्राक्षित्राजीःकुश्राचित्रश्राच्या विदूधानियः वन्या न्येर्विः वर्श्वाः वीः न्वरः वें सक्षेयः वर्त्वरः वें वाववः इस्यः ग्राम्यकेशासमायगुमार्मे । नर्डे साध्यायन्या ने निविदान् स्वेमाहे के दार्ग सक्षेत्रात्र न्त्रारक्षेत्र स्रोस्त्रात्र रहेरा क्षेत्र मात्र मुस्त्र स्वर्ग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वर्ग स्वरंग स्वर्ग स्वर्ग स्वरंग स् र्रे वियागसुरयार्थे।

र्क्ष्यःश्चीः वाव्यप्ति विश्वाश्चित्रः विश्वाश्चित्यः विश्वाश्चित्रः विश्वाश्वश्चित्रः विश्वाश्चित्रः विश्वाश्चित्रः विश्वाश्चित्रः विश्वाश्चित्रः विश्वाश्

यिष्टेश्रास्य वित्र स्वर्थाने वित्र क्षेत्र स्वर्थाने वित्र क्षेत्र स्वर्थान्य

सरमेशन्त्रानुस्याप्ते प्रतरम् मुर्द्वारक्षियाते।

ययर भे नर्जे नर्जे नर भे नर भेर न्या कर में निया कर में निया कर कर में निया कर में में निया कर में निय तःवज्ञवःवर्देनःश्चेःश्चेःनरःशः बनःनःनुरःनेःवशः केःनःनरःनेःनरःशः ज्ञवःतः सूसाराक्ने, नाने पीटार् से पिटान सामनाया दे प्यटापीटार् से पिटान भूसा के कुर में अर्थना नर्थ या तुर न या द्वाय प्राय अरके कुर दु र व्यू र र्से । द्वा याहेत्रानरासदैःस्वानस्यायासे नर्तेन्यदरासेनायान्यदरासेनाया वे पीट र दें दें से पेंदर पाट प्याट से द र स्था प्याय है। । दे प्रमः शुका य से सका उदामहेदार् नर्झे सामादे पीरादेरान क्रेरामदे केरापी महेदारी सन्नरः त्रुपादि सः धोदः प्रशासरः नङ्ग्रीसः यः प्रतः देवे देवे द्वेदः प्रतः दिनः देवः । गर्ने न गर्भ अपने प्या न में मारे अपने मुन हो न प्या अस्य उत्र यातुःम्डिम् सुराक्ष्र क्षेत्र तुस्मायर यहित संदे तुस्याय संदे ते म्यूर्य स्थि। वर्ष्यश्चराधेवाहे। नेबाब्रेटाहें क्रेनायरा होनार्ने। विनेवानटा खनावर्नेना ही। ब्रस्थायन्द्रास्त्रेटाहे या कु त्व्रका ग्री देवाया के सूटाहें। दिवाय सरावेवा स्वा नस्य न्द्र न्य पर्दे न्यो स्वेद हे वाहे स्यादे वाहे र सूद नस पर्दे था वन्द्रन्त्रीयार्थे। विस्रयानक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष्ययान्त्रेत्रत् नर्झें अर्य विदेशे र्सें नर्ये व सुन नर्ये व स्वाप्त व स <u> न्सॅर्स्गासायानी त्याइससारीसानन्दित्ती</u>

ध्रूण'नश्रस'न्द्रशेसर्भ'न्द्रभेन'त्र्य्य स'त्र्र'त्युर'ळ्याते।

नेरःभ्रूमानस्यान दुमानस्य दे नुःस्रूयान्। सेयस उत् नने न न स्यून्य *ॸॸॱॺॖज़ॱॸॺ॒ख़ॸॸॱॼख़ॱढ़ॱॺॢॺॱय़ढ़॓ॱॻॖॺॺॱय़ॱॸॸॱॺॢऀॸॱॾॖ॓ॱख़॔ॸॱऄॸॱय़ॱढ़॓ॱ* वित्र में या प्रतास्य मुयायदा पेंद्र ग्राम् ये यया उदा मयया उदाया केत्रपः क्षेत्रप्राया क्षेत्रप्राया क्षेत्रक्षेत्रका ग्रीप्रव्यवस्था । स्वर्षा प्रवेश्वया प्रवेश्वया प्रवेश्वया नश्चेत्रप्ते अःश्वे । देशवासे सम्भाष्ठित वस्त्र विश्वेष्ठ । रान्दर्भुगानसूयान्दर्ज्ञयान् । स्टानी साने प्रान्ति । नश्चनःमदेः विरःश्वेरः वयाः यत्र याः वितः नर्वो यः ययः वितः यरः इययः वितः यर गुः भ्रे क्विंया कुः यर्द्धया बुयाया यया क्विं क्विंया कुः यर्द्ध। द्येर द क्रॅंट-८र्सेन्न्न्याष्ट्रियान्याचेनात्यानुः नहेनात्यान्यान्यान्यान्या मःधिनःनुःर्देनःनः अर्वेन्द्रसे अष्ठुनःमः सेनःमः विषाःधेनःषा हितःने । धनः ने क्र मा हित्र ने दे सा न मा के का ही का हित्र ने से मार्ड मा वि में मार्ट मा के नि ने अर्बेट या अर्बेट त्र शाम् रहें हे के तर्मे अपने न अर्थेट हु हु तथ ह्ये स्वाय पर्देव है। ये वार्ड र विदे दें र दे र व्याय वय हि द रे पर्देव पर वे से हो ने दे वर्ष हो द ने दे स हैं न व ने र केंद्र हो। ने व र न हो न है न

ने से पाउँ दः नवे दें दः ने रः भूदः नरः सर्वेदः दें। । सर्वेदः त्र सः ग्रदः देदसः सरः रेटशासरामहनशासदे छ्या श्रीशानु गाठिगा सु ने पर्देन सदे हैं शा श्रेन धरः तुर्भः हे : श्रुवा द्वें नः से दः धरः से या उदः निर्दे दें दः ने रः निर्वा श्रुवा है वा सु: सुर: नर: शुर: है। विशावस्य मासुस: सें से से मार्डर: नदे हैं र र र । तु: ग्रिम्'सु'ते'शेस्रश्राउत्रह्मस्रश्राद्या साद्यानेत्रेत्र'ते सेस्रश्राउत्राद्यियः नरःभूरःनःअर्भेरःवयाशुःरवःदरःश्चेःभूगयायदेवःश्चे। गर्देवःयरःवुयःयः बेन्यक्रम्स्र रूप्ता र्केन्य में मान्य हिसानन्य विश्व स्थान्य ८८.८म. १५८.१ में ४.४ था शेरका है। या विवासी वा विकास की वा वहर नदेःर्नेट्नुस्नानायानेदेश्याक्षेट्राहेःक्षेत्रावद्यानिनाक्ष्यास्टर्याधेन्यसः गश्रम्यार्थे। ।देयावास्त्रेमाहे त्यावहेवावयावर्षे वार्सेयावदे हिमावहिमा नदेः भ्रूपा नगमः नभ्रुद्धा । देः भ्रूरः मेमगः उत्रे र्स्तुवः नदेः र्से भ्रुरः । <u> तःर्राची वात्राञ्जनशायदे स्वात्राज्ञे अध्या उत्वावेवा वी देतः हे वायाः</u> मदर ग्रुम्बर के त्राया देर या बद द्या वर्डे या या है या ग्री वे दियद है वा ग्रम्भेस्र अरु द्वर् वर् दे प्रम्पे दे दे दे दे दे वर्ष प्रम्य स्था दे स्था वर्षे वर्ष वर्षे वर्ष वर्षे वर्ष व म्या वर्षा वर्षा वर्षेत्र प्राप्त नित्र के त्राप्त वर्षा शुःविवाःवीशःतुशःश्रुशःतुःवश्रश्रशःताःव। सदशःक्तुशःश्रवाःविवाःयःतुशः यने प्यूर्य सम्भेषाय वा श्री वा वा वित्त हैं । सुर्वा की वा वा वा वा वित्त हैं । यनश्चेत्रित्री।

याहेश्यान्त्रेश्व स्व प्रमुद्ध प्राप्त स्व प्रमुद्ध प्राप्त स्व प्रमुद्ध प

प्रावितः र्रेवः र्रेवः र्याकेरः प्रवेश क्रें श्रुटः याया याके या

र्क्के निक्के नि र्रे प्यापित्रम् सेस्र उदाया सेस्र अस्त्रिस्य प्राप्त स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् उदाधिदार्वेदानी द्वारा उदादु निश्चना पर्देश । द्वारा स्वारा स्वार वर्त्तरानी भ्रम्यश्रस्य विद्रायम् विद्रायम् । विद्रायम् । विद्रायम् । विद्रायम् । वर्नरायराञ्चरमायानभुदानराजुदी ।देखार्चनासरामेसमाउदानाउना यःळग्रःभेटावःडेगःयःभूटःचवेःधुग्रःरेशःशुःग्रेट्ःयःनग्राग्रद्धः सेसरार्स्रेसरायास्त्रम्बर्यात् व्ययस्य मान्द्रस्रेदाहे ग्राटार्से नारे हिंगारा रैशरुवर्नुःक्रेरिषे द्विन्यरियासे असेन्यायान्सेन्यस्य स्थाने क्रेरिन्यानिय र्श्वेस्रयानश्चेस्यास्य विदेषि । वितृद्धेस्ययायात्तर् वेदाविदास्य स्थापाद्य ळॅं र न न न हर क्षेत्र अभ न हर र के ह न न हर क्षेत्र अभ न शुअ व्यव विहास है र ब्रासाधिताया देग्यवदास्रोससाउत्रह्मसरायाः कवासासूदायाः सैवासायदेः र्हेन् सेंट्र सेंट्र में नियान स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप

यःक्रम्यः सूरः द्रायः द्रयः से स्रयः सूँ स्रयः या वे सः मासुरयः यः ययः वर्नराष्ठी अर्दे । वर्ने नर्झे अपवेर्ते में रे अती भ्रे क्षान्य में मा अरायन पर अ'नन्ग्रायार्वे न'सद्राया तुर्यासदे नम्'या विगाया न्येग्राया हेत्। तुर्या त्राहेशासुःळवाराःप्टाविटाविष्यान्याने सेस्रासूस्रायाःनसूनः धर हुर्दे । दे त्य से सम स्रूर्य साम हुन द दे द सा सह द न के साथ से सम र्श्वेषरायान्युतार्भे देग्यारोसरास्त्र्यरायाद्वे स्वत्यारास्त्राचीरादेशासु वर्डिन्'रावस'कवास'रा'के'कुन्'वीस'स'र्स्नुसस'रादी |ने'व्य'र्स्नेसस'र्द्या' या शेसरा श्रूँ सरा पानश्चिमा श्री दे त्या सार्श्वे सरा पाने वा पिता है वा पिता से स्थान के वा पिता से स्थान के समुद्रासरानक्ष्राद्रशावे श्रूटानर्दि । दे ता श्रूष्रश्राश्राद्रशास्त्रशास्त्रशास्त्रशास्त्रशास्त्रशास्त्रशास्त्र उट्-यासेससार्स्रेससारानर्स्रेसार्से । दिन्दाने न्वाया हे विवानर्स्रेससारसा ळण्यास्ट र्श्वेट वे त पहिराहे। ये सम उत् श्री देश त्राहे प्रसम उत् यरे.य.पर्ट्रे.स.रेट.र्ज्या.यर्ज्य.श्रु.पर्ट्रे.सर.अर्थ्धरश्र.सश्ची वि.कुर्या. याकें नरान बुरावसाय वर्षे ग्रास्थित। विष्ठे गाया सेरानरान बुरावसा वर्वेद्रायाचेद्राययस्य यास्री चेद्रायास्री देवासास्री सूत्रायाद्रा स्टावी नन्गामी महेन्द्र समुर्भ में नार प्यत्से न्या मार प्यति क्या सम् ठुःयःग्राटःयः वे :श्रूटः नरः ठुःश्रूयः तुः श्रेययः पर्वे । वियः श्र्वेयः रेयः नरः पः यशन्त्रस्थार्भे । प्यम्मिहेदायाळन्यश्वायात्री तुःभ्राह्मिनासर्केनामिश व्यायायया नन्यायीयार्थेवाळन्। हिन्द्रस्ययात्रस्य उन्नयन्। नन्याः

यहित्रक्षेत्रास्थित् ह्या । वित्रक्षित्रक्षेत्र स्वर्ष्ण वित्र स्वर्ष्ण वित्र स्वर्ष्ण वित्र स्वर्ष्ण वित्र स्वर्ष्ण वित्र स्वर्ष वित्र स्वर्ष वित्र स्वर्ष स्वर्ण स्वर्ष स्वर्य स्वर्ष स्वर्य स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्य स्वर्य स्वर्ष स्वर्य स्वर्य

यथा यर पर्सूय पर्ती पर्तर प्राया में नाया से न्या स्वार स्व

र्वेग्'अ'सेन्'मस'द्रास्त्रे'न'न्र्येग्नामसून्'सरात्र्याते। वर्वेर्नानाद्रास्य वर्ते साञ्चरमा ज्ञान प्रत्रे वा मायरे माया क्षेत्र साञ्चर के साचा विषय के साचा विषय के साचा विषय के साचा विषय के साचा र्शेग्राराये गहेत्र त्वराया गुराया से दारी स्वीति स्वीता विस्तरमा यमा र्वेत पुत्र मेर में प्रत्माय क्या मार दुः हिता सा से सामा मार सा र्वेर नन्दर्भिने नदे अस्ति मार्चे ने निष्य अर्थे निष्य निष्य में निष्य स्थान वन्यामान्याये स्था उन्यामान्निन्ती । सदसासवसासु न्वयस्थिन स्थान য়ৣ৾য়৽ৢঢ়য়য়৻য়ঢ়য়৽য়৾ঢ়য়৽য়ৢ৽য়ঢ়য়য়য়৽য়ঢ়৽য়ঢ়য়৽য়ৢ৽য়ৢয়৽য়৽ঢ়ৢ৾য়৽য়৽ঢ়ৢ৾৽ वै प्रशास्त्री विशामश्रुर्याश्री विशासरा अ:बन्:अ:देन्श्र:प्रत्यः विन्:प्रनःप्रश्नुन:पवन:अववःपशःपशःने:क्षेत्रः नसससायार्ग्या साम्राम्यारे सामानह्नार्या नर्या नरामुहो यदीः श्चेरातरो तया देवे देव दवराय सँग्या श्चेरायर श्चाया साञ्चेराव देव दवराया र्शेम्बराग्चीःमानिःसेन्सिःसेन्स्री

देव द्व मानक्षियाम देव अध्यय व्यव व्यव स्व मान क्षिय स्व मिन स्व मिन

नठम्। शॅम्:शॅमड्देश्वायाणेम्श्रा तुःर्वे मश्रुत्। र्वेश्वायाम्श्रित्। য়ৢয়য়৽ঀৢঢ়৽ঢ়য়৽ঀৢয়ৄয়৾য়৸ৼয়ৼঢ়য়য়৽য়য়য়য়ৢয়য়য়৽ ग्रीशर्भें द्यासे द्यारा विषय दे प्यारा विषय भी सामी द्यारा विषय विषय ८८। वर्षम् अस्ति दुर्अः शुःर्मे अः ८८। दिर्अः सदेः दुर्अः शुःर्देरः स्टःमी अः शुन्भे न्न न इस्य भी वा वित्ति न स्यय ग्राम्य न न स्यय श्रीत मी भैगान्त्रभूगान्द्रगान्द्रगान्द्रगान्द्रगान्द्रगान्द्रभाम् वर्षाचेवायाधेव। वायावाळायाश्रीवार्षायादे सूर्वातस्याच्चात्वा वायळे स्वायायायायस्य स्वायायस्य स्वरायम् स्वरायस्य स वन्या हो द्राया थे वा व्यक्ति स्वास्त्र में अभी अप्तर द्राया स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र क्रयश्या हे पार्वे पार् श्रेयश्यार्थे । ने क्ष्र प्रश्लेयश्य प्रश्ले द्वार्थि हैं क्षेत्रार्थं अभिन्या क्षेत्रार्थं वित्रार्भे अभ्यान्य देश्यान्य वित्रार्थं वि ग्वित प्रदर्भ सम्भेरा मारा हुरा प्राप्त है सुरा न है स्र राज्य साम स्र राज्य साम स्र राज्य साम स्र राज्य साम स ग्रम्स्यम् भेरायम् ग्रुराया नर्सुया ने या सहयान भेरायम् नर्ये सुर्भे राया वर्वाक्रम्भाग्याद्रस्थरानेभागरानुभाषानिक्षम् देखासाद्रावदानिक्षे श्चेश्रामित्रे हें मुयाया दुवे से स्राया द्वा प्रस्था हता प्राया स्राया नित्रायारीयाम्यान्याने क्षेत्राचित्रायाने क्षेत्राचित्र

त्रेत्र'म्बर्ग्नियम्बर्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्ग्नियम्बर्वयम्बर्ग्नियम्बर्वयम्बर्वयम्बर्ग्नियम्बर्वयम्बर्ग्नियम्बर्वयम्बर्वयम्बर्वयम्बर्वयम्बर्वयम्बर्यम्बर्यम्बर्वयम्बर्वयम्बर्यम्बर्वयम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्वयम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्यम्बर्यम्यम्बर्यम्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्बर्यम्वयम्बर्यम्यम्बर्यम्यम्बर्यम्य

नेशन्ते भूरत्वे देन उत्रादि राजा देश स्वराह्म स्वराधित है। रेगार्थान्य निर्मा के व्यान्ता वा व्यास्त्र सुर्मान् । नर्मा स्वरादेन त्यन नर्भूर्यनिष्ठरम् बुरक्षे देकेर्यया विकासम्बन्धरावर्षानिकास व्यासया । वारावी व्यव्यास्य स्था प्रमायायाय । दयः नः अदः नश्चेतः ग्रुअयः यः नहेतः यः देः द्वाः यदेन्। वितः हुः सः स्नयः विवाः वयरःश्चेंदःवरःशुःविवाःश्चें।।वादःवीःविंदःवःयदेःश्मवशःह्नेदःवशःवावशःग्वशः निटा । गाट मी अप्र हे प्रदेश अअअ ग्री अ विंद प्र प्र प्र हिंद र्शेरशरेर्नासूनारम्यासूनशसेन्यदेर्नेर्नेर्नेर्न्स्य। विर्मेर्न्यस्य मःनियावियात्रवराशुःवियाश्ची विशान्ता धेरान्त्रसमयः धरापरायश्चितः रायमाग्रम् मेसमाउदानामान्यासमिन्हित्याममानससारास्त्र धश्रास्त्र यहवाश्रास्य । दे द्या यहर द्रश्राम् हेया सु वर वर हे द स यद्या

यी रहें व्या अव विष्ण । ने अन् र्श्विन रश्चिम रश्चि

दें व सव त्यव हो द रा दे हैं है सु र विवा हा सूस वा सर द वी या हार वर्षिर नवे नदे वर्रे र हे र अविष में न है रे र ष मा मा मा मा मा मा नक्षुश्रासंभेत्। देशवानितानीशः श्रृंत् कतः र्हेत् सेंत्रासंदेगिर्द्व सीशा नक्ष्रअः पदे द्वर वी शः स्रश्रात्र शः स्वार्थः चुर वे तः या व व र्षः यः र्शेग्रथायित्वयुर्त्राचेत्रवरेत्रथायात्राच्या स्टानिवाचीयासूगा नष्यानरः शुरारा इस्राया सुराया सुगानष्या सुर्वे वार्या सुर्वे न्या ८८। व्ययःसयःसरः यहवायः सः देः इययः देः वरः सः सः सः सः सः सः सः यदे यदे य ताया दर्वे दाय र वृद्धि स्रुसार् स्वरायव वादि विस्तरे । द्वासदे स्रुद र्रायम् ग्वितः धरः श्रृंवः करः हेवः स्रेट्यः यदी । ग्वर्नेवः ग्रीयः वक्षय्यः यः नन्नामिश्वी । अश्वायम् राष्ट्री न्यते नश्वायनित्र । स्वायस्य नन्यः यार स्या त्रुया भ्रि.य याववर र यार र या यी या । व्रिस्य र र य स्रेव या र सव.स.चेश । ट्रे.स.सव.२.सव.मोरमाश्र.स। । श्र.टव.सरश्र.सश्माववर.ट्रे. थॅर्ग विश्वर्शे । क्रु. अर्कें से स्वाप्ट प्वरुष प्रते विस्त्यश ग्रुश्य प्रते वि गश्रम्याने। युदेःकुयार्थे सञ्जूदेःक्षेण्यान्य उत्त्यम्। कुःसर्के प्राप्ते प्रे रवर्दा । श्राइस्रश्राचिताची वित्रःस्रेद्राची । चुरुषासास्री वार्वे वादाधेदास्। निन्दे नन्याची सिन्छव त्रीवा । श्री यान श्रेश्य विश्व मिन्छिन। । श्रिश्य

यार्चिन्द्राज्ञश्रा विश्वास्य क्ष्यां विश्वास्य क्ष्यां विश्वास्य विश्वास्य

सर्रेर्न्यश्रुवःस्टामीः सःइवःमः इत्यः तुः से गावसः सरः ह्ये विटः सेगः व्यूट्रियः क्रुट्रियः क्षेत्रः याः विवार्गिषाः याः से से त्र याः यहेवाः वळवः विदः वाष्पदः विः वहिनायासुरम्दरायायास्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स रे'त'शु'य'रे। तु'रे'ययर'स'रे'यहेग्रस'रे'यस'र्सेय'य'से'यनन'त्रशु' यायननामराने यस हैं यान्में स्वा ने निवितन् सम्बूराये से सरास्य इस्रथाग्रदार्देवासेंद्रसामदेगार्देवाग्रीयायेस्याद्वाग्वयाम्या नश्रेनेश्रामायाम्मान्यास्याक्षेत्रा स्वास्याक्षेत्र स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व ग्री तित्रा क्षेत्र प्रमान्दर सुन्या तित्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व भेता भूत्रचेषारे रे निवेद है या श्रेत्र ग्रेस निवेद नि वळवा श्रेम्प्रिं स्वाद्या स्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या वा याने प्यम् तुःयाने मुर्गियाया तुःययम् याने पर्देव यायन न यथाने सूनः नश्रश्रात्र वित्राचा विश्वास्य वित्र व नित्रायम् द्वार्यस्या केत्राच्चार्यस्य विष्ट्रा विषट्या विषट्या मिवी विर्मे निर्मे निर् गाव्राया श्रुवान राज्या नराजी से गाया भीराधें वा प्रवास से सार्चे राव में सार्वे राव से सार्वे राव से सार्वे रा नरःच बुदः ले अः गुरुद्र अर्थेद् गुदः वदेरः षदः ४ अः व्रगः प्रवे र दुवः श्रुरः रू

रुट्रनःधेवःद्या

गंदेशमार्से दे न से देश प्राची स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप याया व्यायानिर्देशन्यायायाती नदेःनःदर्याः भ्रवःयदेः येयया उतः र्वे। । इस्रामनी नरे नार्रास्य स्वरं के सार्य र स्वरं मार्य स्वरं धराशुरावेषाश्वराधान्दाने नान्दास्य धरास्य सुराधाने । धराधेरा वै। हैटर्टर्ट्रिन्कुयर्थेय्यम्। होन्यावमाविमान्ग्रीम्यर्धरेवेटर्नमः वा विकेट्रियः इस्रास्टर्या सेट्रियेट्रियेट्रिया सिर्मेश्रासकेयाः इस्रायः परे धेशम्वासर्वेद्रम्भ। विस्रामित्रस्य स्थानित्रम्भ विद्यानित्रम्भ डेश'८र्देश'र्रे 'वेद'तु:कु:के'तश'ध्यायवर' बुवा'यदे 'वेट'य' त्राह्वा'तुः सर्हेर्पानुर्पायमानर्भेर्प्तसमान्नेमान्नेमान्ना वह्सा ननरः ध्रुमा के व रेवि कुल रेवि प्रदेश हो निस्र व क्रिंट में व नक्रुव प वेशः हुः नः ने 'त' न्यो 'श्वेरः पर्यो या साया व्याया स्वरं नने 'नः नवेतः न् 'से सरा उदाद्वस्थाण्यान्यने नान्याध्वादी । नेरावि हो नानकु क्रेंटान् क्ष्रास् शुन्यराते विद्यदेन श्वात रो मिया पहिंग्या परि । धुत उं या नु रो यया उत् वस्रकारुन्यानुस्रकारादे सेस्रकान्स्रेन्द्रस्यायसानस्निन्दस्रकारहेसा यर-रु-पश्चेर-विश्वायळव-रु-पावयायाः हा हे र्श्वेया वियान-१८-१ रेव केव द्वेर न यथ गर्म हे द कें या शुयान कु दे । या वया राम विवास र्भगाशुस्र श्रुवास्य ग्रम्। । ग्रुस्य माध्याप्य सम्मित्र । नर्सेन

वस्रश्नितात्वःकरःस्रे दिन्। व्रिःस्रे गुस्रस्य वर्ष्यस्य वर्ष्यस्य वर्षः गर्वेन सेन न्या । यन न संसेन सम्मेन स्मेन स्मेन में प्राप्त स्मेन स्मेन स्मेन स्मेन स्मेन स्मेन स्मेन स्मेन स हेत्रश्चे त्यू रहे। । नाय हे र्से य नर स यु र यु र यु र । । चुस्र स र्से द हत्र नकुन्दर्वनःम्। विभागशुरमाने। गुस्यानाःधन्त्रः भ्राधाःगुस्यानेरादरः धरःसहर्भाष्यावसुरःवदेश्यर्केष्णाः तृत्वतुरःवः सेष्ण्याः स्री । देशः दः स्री वरः न्गवः षटः वन्दर् निष्ठाने। नक्ष्मनः निष्ठाः वार्थेरः वेदः द्रायः वार्थेरः वर्चरावदुःचित्रयान्दर्श्वराह्यःचश्चराह्यःच्यान्द्रम्यया यासेस्राच्यस्य उत् ग्रीसानस्य स्वाने चात्र केंगा तुः प्यतः नित्र त्रानर्झसः धराम्बर्धरश्रा विद्याने दी मशेर दिन न्या धरे हा के त श्राधिश दी । श्रूट्र माश्रुय त्रहेना हेन तहेना हेन माश्रुय त्री । प्र र्येट सूना नस्य ग्नित्रहेते सूग्रानस्य प्राप्त । । न्युय प्रते सूग्रानस्य सूग्रानस्य वितर निया विश्वर्शयात्राश्ची विश्वरायात्रश्चित्रायाते। व्याप्यरायहतः निवेशवान्स्रीय। देवसानर्सार्ट्रिन्स्यार्ग्यान्स्रीयासर्ग्रिवर ने त्र राशे स्र राज्य वस्त्र राज्य के साम विष्ठ के निर्देश करें। । निर्देश राजि । कुंवादी है क्षेत्र श्रेमशास्त्र सूना नस्या नशास्त्र निर्मा नस्या निर्मा प्रमा । यर नश्रम्भ स्ट्रेर हे हु निष्म सेस्र उद या वर्ग नडरा न्या ग बेर्'यदे'वरे'वरोद'ठेर'वरे'वर्'य्यास्ट्रायुग्रास्ट्रस्यस्थर्'यर्'वस्य यम् मुन्नि ने में स्थान न्यान ने प्यान स्थान स्

ग्रीश के मेगा भारत सूर्या नस्या नदे से समा उत्ते । विसार दी। सूर्या नश्याने नवान्द्राञ्चला वाश्वराश्वरा नद्राञ्चला नद्राञ्चला न्या । नरः हुरें सूर्यः पर्दे । नर्से संपरे में रेस है। वैवा सर सह यन ने सर् ने त्र या नराया नराने त्र या न्या त्या वर्षे या है। यह वा न ने या नरा वरा नरा न्नाययर सेसस स्रूसस पर पह्नापित हो। रेस ग्रीस स्रूपिय पर स्रेरे सेसराउदावस्याउदायदान्यस्यात्री ।दे.क्ष्र्राचन्राःस्रीसराद्या राद्र भ्रेट हे या धुया शें शें राष्ट्रे त्र शारे अप्त त्र द्वा त्र स्वा के शा सर्दिरप्रदेशस्त्रिःहेशःशुःवज्ञदशःद्वशःश्चितःद्वितःगाःसःवः वीःवशःसह्दः मधीवाया ने वे पावन भीवा हु के है। के के मान्य हो प्रमान में विकासी या न्भेग्रयास्य शुरुरायायाः भ्रेष्ट्रे प्रस्य स्थरायाः। नेरे ने स्थानस्यस्य स्वापारः ययर भ्रे भ्रे नर भ्रूर या रे रे न स थि र यगुर न वे र भ्रूर न वि र य ॡॸॱॸऻॖॕढ़ॱढ़ॺॱ<u>हे</u>ॱॺॸॱॸॖॱॸॸॸॱऄॗॱॺॿॸॱऄॗॱॺॱॸऄॻॺॱढ़ॺॱॸॷॖॸॺॱढ़ॱ ळॅग्रयायाप्तराक्षेत्र्याचायाप्रयाप्त्रीयायायाप्त्रस्याप्त्रास्त्रीप्त्रेत्रेत्रास्त्री नर्झे अर्पते रहे व सर्गुर्पते से सराउत्ति स्वरापति स्वराप वशःश्चे प्राच्या वर्षा है स्रम् क्रिया शुर्धे राव इस्र केस्र या

है। सूनानस्याह्मस्याहे स्र नन् विताहे । दि पर स्र है सातु प्रीता वी'यय'श्रुह्य'यय'श्रुरा'यंपेद'द्य मह'वी'द्रयय'य'द्यवाय'हे'वर्श्वेयय' पश्चें भ्रुं न्यात्र्युर्दे । प्रदानी भ्रेट रु रे र्ना नशस्य वर्देश वर्तुर ग्री नश्रम माने निष्य में निष्य भ्रे निर्देश मुन्दि । दिव ग्राम्य भ्रेम्प ने भे समार्थे व निर्देश ग्राम्य स्थान गवर्र्रादर्शे न से से हिं । दे र्या दे सर्वेद राउस से क्रियायर से राहे दे न्भेग्रायदेःस्याःनस्यःनकुःहःनदुःग्रनःयास्नरःयास्रायःस्विःसशुः लूर्यास्थ्रभाग्रीभागश्चेत्रासम् ग्रिष्टा । र्राष्ट्राध्य श्वर्णाम् वार्ष्या ग्री नित्रायासितायरहिनायायाद्वायाया सुनाया हुन्। या से स्वाया स्वया स्वाया स् नर्यासर्हेट्यायम् न्या न्या न्यास्य स्वाप्तिस्त्रीयः हे नर्से साम्यास्याः नर्यः सेस्रानः सरावरः वासुरसः स्वा । नरे नः सेर्पः पर्रान्यः सूवा नर्यः चदेःद्धंयःश्चें सबदःलश्चारावशानश्चर्यात्रश्चरा चुस्रशान्द्रःश्चेरः हे प्यदःविदः हुःसरार्धे क्रे त्या क्रुवारेरावरावससस्य वृज्यस्य वात्यावह्वाया क्रे वस् ग्निस्रराट्याः दुरः बदः रेशः क्षेत्राद्याः गृत्रः के नाद्यान्यन्तः स्रस्रायः नर्क्षेत्रायार्देर्त्र्वरक्षेत्रश्रानेत्रातुरहर्दे॥

ने प्यत्र श्रूम्य त्यत्र श्रूम्य विष्य श्री विषय श्री विषय श्रूम्य विषय श्री विषय श्रूम्य विषय श्री विषय

ह्येव है। व्यय येव ही भ्रायय पावव दुवर हे यह से या पर हार्ये। विषय श्वेर हे भ्रेम राये कर दी श्वें या रेया रहा रें या या वार वी के पीर र्रे रें र नदे-तु-भे-नदे-न-निव्द-तु-भेस्य-उद-वस्य-उत्-स्वा-नस्य-गिन्द-त्रशन्तरः वर्देन : प्रदे : इस्रायदे : श्रेट : हे : यट की : दट की संवह का सामन्त्राः ৡ৾৾<u>৴</u>৽য়ৢ৾৵৽য়ড়ৢ৾৾৾ৼয়৽য়৾৾ৼ৽ঢ়ৼৢয়ৢ৾৽য়ৼ৽ঢ়য়ৣ৾ৼ৽য়ৼ৾ঢ়৾ঀৢয়৽য়৽ড়৾য়৽য়য়৽ श्वेराहे के दारि के दार्वे ना स्त्री वे या तु क्रा तु खेरा तु के या सूत्रा या सूत्रा नश्यानम्शूमायायामे श्रेटाहे हे उसाश्चे नाने उसामिते र्से वैरहें न रोसरा उत्राचसरा उत्राया श्वेता हे स्तायी प्रतायी राष्ट्री या श्वेता स्वेता है । सक्रवः१८८क्ट.यरःयोश्टर्यःश्री ।यद्या श्रीस्थाः स्थानः स्थितः स्थितः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स ग्राम्भेषात्रम् गुर्दे। । यम् ख्रम्भेषे देवे वर्षे वर्षे वर्षे न वर्षे ने ख्रम्भेष्ट हे के वर्षे র্বীমম'নন্ত:শ্লুনম'শ্রীম'শ্রমম'ডব'ম'শ্রম'ন'ন্ন'ন্রম'নতম'ব্ম' <u>त्</u>चार्या अत्राचार्या स्थार क्षेत्र वित्र स्थान स्था त्रुट्र-कुनःग्री:शेस्रशःनश्चेस्राक्षे:दर्गे शःसरःश्चे:श्चे। वेशःश्चेंद्रःशेस्रशःश्चे:वदेः क्रुरःस्ररःन्वरःपदेःश्वेरःहे क्वेवःरादेःन्वियःयरःगश्रर्याते। वर्षयातेः

 वै। । ह्या कुन से सस न्यय वार स से न पासुस। । गुन फु हैं स पर सहन । राधित्। विश्वान्यस्याया न्याया न्यायान्यस्य न्यायान्यस्य ढ़ॖॻॱऄ॓ॺॺॱॸ॒य़ढ़ॱख़ढ़ॸॱऄॺॺॱॸ॓ॱॿॢॱतुॱॿऀॻॱॾॗ<u>ॏ</u>ॱॸॖॺॕऻ॔ॺॱय़ॱख़ऀढ़ॱढ़ॕऻ॔ऻड़ॺॱ व'वर्रे'न्या'यी'र्सुयाश्रान्द्राध्यार्यं अ'वदर'सेन्'सर्रोस्रश्रास्त्र वस्राराहरः ग्री-र्नेत-तु-अर्थ-क्रुश-र्वेन-धर-ग्रा देवे-र्नेत-तु-वन्ग-वीथ-द्वी-च-वदी-तुर्दे श्रुयात् 'नश्यापानभेतापार्द्धयायाकेशकेराविष्यात्रशास्त्रीतापरा र्वेन में सूस्रायि सर्वे स्वेर प्रेर प्रमुख नह्न प्रम् गुर्स है। ग्रुट कुन ग्री सेस्र गन्सर्भारमा मी सम्रेषान् न ज्ञान स्था श्रेष्ट्री मान्य मान्य प्रतिमान्य स्था पर्वे व्या विरायनरामश्रास्रासरासे विनामस्रायम् पर्मेरामानि स्थूरानाया वेनामा केत्रसिरेगात्र ने अरम् अरम् अरम् अत्वित्र मान् ग्री मान् अर्थु सूर है। कुया য়য়৻৴য়৻য়৻য়য়য়৻য়ৢয়৻৸য়ৢয়৻য়৻ৢয়য়ৼ৻য়ৢয়য়৻৴য়৻য়ৢ৻য়য়য়৻ৢ৻৸য়ৢৼ त्रअः र्श्वे रः नरः गृत्रः प्राययाय युरः तः गैं नः उसः यया से दे । पा ह्रस्य ग्रीशक्षां के श्रें शासदे श्री में प्राप्त प्रथा प्रविद्या में स्थान स्य भेवामी निराक्ष्यामी सेस्रार्श्वीरायदे भ्रीतायदा निरम्भारादे सम्मार्थ न बुद्दवर्ग न सुद्दर्ग राज्य विका बेदान प्येत हैं। । शुरुष्ट्र प्रमान निवास तुदे हुँ र न स क्रे अ ग्राट वेगा य के द येंदे नक्ष्य यर ग्रुन क्षय के य के र वेजाः केत्रायाः वेश्वायाः नित्रायाः श्रेष्ठायाः श्रेष्ठायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः व न बुद्दान अपने विश्व खुद्दा की से स्था श्री द्वा प्रति । श्री द्वा प्रति । से द्वा प्रति । **ऄॕ॒**ज़ॱऄॕॖॺॱय़ॱॸ॔ॸॱऄॺॺॱॻॿॖॸॱढ़ॺॱॸ॓ढ़ॆॱॻॺॣॸॱॻॖॱॺॖ॓ढ़ॱड़ॗज़ॱॻऀॱॻॺॺॱ

য়ঢ়য়৾য়ৢয়য়য়৻য়ৢ৻য়ৢঢ়৻ড়য়৾য়ৢ৾৻য়য়য়৻ৠৄ৾ঢ়৻ঀৢয়য়৻য়য়য়৻য়ৢয়৻য়ৼ৻ गश्रम्भामान्ने वित्राग्यमाने में में मान्यमाने में निर्मान में में मान्यमाने में निर्मान में मान्यमाने में निर्मान में मान्यमाने मान र् क्लिंग्सूर्रे विवासूर्रिया सूर्ये श्री यत पेत्रिसेस्य मा नर्वापान्तासुन्यादर्वेयासून्रिंदान्तान्तान्त्रस्ययानेयापर त्रुशःत्रशःतशुदःवर्देद्रःतश्चेदःचर्वे ।देशःतःषयःवर्वेदःचःवःश्वेदःचःहेदः थर। ने:न्रःवर्वराग्रःक्वाग्रे:श्रेश्वराग्रःवेष्वरायरावश्चर्यात्रः। वैंदिः दशःवेंदिः दुः विदः (ब्वायाः धरः श्रेंदः दयाः ययः वर्षेदः दवें याः याः याः श्रेदः र्यसप्पर्स स्रूरम् । पर्दे ने कुषान ग्राव की नर्वे दारा विवास देखा यर्रेयः तुः द्वेतः प्रदेः स्रदः रमा मै निष्ट्रदः नर्देशः दशः शेस्रशः नश्चेतः प्रदेशः गिरुशागशुर्यायायायेटाहाळेवारी ह्याया ग्रीशादे प्रवामीयायया नर्गेटा कुंवानन्दायायमानेमायम् हुर्वे॥

मशुस्रान्यस्य नर्से स्वानि ने स्वान्त्रस्य स्वानि स्वान्त्रस्य स्वानि स्वान्त्रस्य स्वानि स्वान्त्रस्य स्वानि स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्

मूर्यापदे नुस्रास्ट्रे रहे या से किया वि । यो स्रोस्या यह वा वि या नश्चन र्ने श्रुष्ठा पदे नश्चराय पदे व व शाय दे न तुष्ठा पदे न तुष्ठा न तुष्ठा पदे न तुष्ठा पदे न तुष्ठा न तुष्रा न तुष्ठा न्वीराधरानसूराधिः धेरारी । ने न्वाग्राम सुराग्री रे विषया से दारी। बुदःहेशयःश्रेष्यश्रादेःश्रेंद्रायस्यस्य उद्दःदुः इदः सर् गुरुष्य सुद थ्व-५-नश्चम्याव-र्तेष्ययाके नःधेव-ने। श्वें यानेयानमःयायया श्वेदःहेने हिरारे विदेव पायर्गा ग्रार रुर हुँ रायस बसस उर रुदर रुर है रुस वस्रयाउट्-र्-रोस्रयाउद्-वस्याउट्-त्यानर्स्र्यास्-र्-त्र-हे। वेशान्यर्द्र्या या श्वेट हे ते अर्कें तरा उं अ श्वे निये ना या मार श्वें ट वय या उट्टाय वहाँ व । श्रेनिन्देनिकेन से उड्डार्ने से या ग्रामा से सया ग्रीस्निन ने मिना सासे न न्या उवा वित्रसें रसामानवे वि. प्रस्तर महिन महिन महिन महिन हैं से से स्पर्ध स्वर्ध से स्वर्ध से स्वर्ध से स्वर्ध से स नर्से वुरुष्य । विवाहन कुषे विवास्य रहे रुष्यूर् । विरुर्से विवाहः पि'नदे'नेन'नदे'र्सेट'र्से केत्र'र्से सु'तु'वेना'य'तुराति सु'तुदे नेन्यायारो रेरे उं अ ह्युमार्थ प्रस्य अदर में र मु अ तु श्र र १ कें तु से दि से र वि र से र मि न श व्याः साम्रान्यः वर्षः वर्षे साम्रान्ये स्थान्यः क्ष्रीतः है त्यः र्शेग्राराये भेत्र प्रत्नाम्ब्रीय पा शुन् मुद्र मुद्र से रा के र श्वर से प्रत्युर पर याश्रीरश्रासाक्षेत्राचीत्रास्याक्षेत्राक्षेत्रात्रीत्रास्या

বাইপ্রমা

শৃধ্যমা শুদ্রমান্ত দের্মান্ত শ্রীম্যানশ্ভীদ্যান্ত শিশ্ব

श्चितः सक्त किन् ते स्मार्य स्मार्थः स्मार्यः स्मार्यः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स्मार्थः स

त्तर्ने त्यानम्बर्गालय सर्त्र क्षेत्र त्या क्षेत्र स्था विकामश्चर स्था क्षेत्र स्था स्था त्या क्षेत्र स्था क

वि'न'सेत्र'गविट'ल'नहेव'वयाश्चर'याश्चरायया

नन्गान्वत्नन्द्रे नदे सद्धे स्वर्धे द्वान्य स्वर्धे द्वान्य नद्वे अभिन्ने अभिन्ने स्वर्धे द्वान्य स्वर्धे द्वान

श्चित्र त्रह्मा त्रा विष्य प्रत्य प्रत्य विषय हो । श्चित्र प्रत्य विषय हो । श्चित्र प्रत्य विषय हो । विषय विषय ह

न्यविष्ठः निर्मेत्रः व्यक्षेत्रः स्त्रात्त्रः स्त्रात्त्रः स्त्रेत्रः व्यव्यात्ते व्यक्षः स्त्रेत्रः व्यक्षः स्त्रेत् व्यव्यक्षः स्त्रेत् व्यक्षः स्त्रेत् व्यक्षः स्त्रेत् व्यक्षः स्त्रेत् व्यक्षः स्त्रेत् स्त्

नन्गामान्वन्नहे नदे नश्यामार्गे स्थान् न क्रीन्यमान् स्थान

स्रास्त्र में त्या हो त्या से त्ये त्या स्रास्त्र में स्राप्त स्राप्त

ग्वित मु: खुर्य मु: क स्वर्य त्याय या मुन्य प्याप्त मुन्य मुन्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर मैशारमायहें तारा हुं। या व्यवसाय वाय विकास विकास के वितास के विकास न्वाची । वि.च विवाची वेवायायाया । विन् ग्रीय प्रमादि व ग्रीय या भ्रम । ने नविव गविव य में सम मर में भा विभ में । दे सूर सव पेंव ५८ हे भ न्द्रीवार्यायोगार्यास्य वर्षायायायाः त्री स्वीतः वर्षाः वर्षाः निर्देशे सामायाः र्श्वे प्राया भी व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वा नन्गामान्वर नहें निर्देखंया नहीं सामित्रे स्थापती नन्गामान्वर नहें ने सा यन्ता नन्नामान्द्रन् । वीत्रमान्द्रन्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्र म्बर्यायम्बर्यान्त्रम् स्रुस्य न् न् न् न् ने देशे वा त्या स्याया स्वर्धाने स्रुस्य स्वर्धे स्वर्धे न नः भेतः भी। रदः या गरे सामायहै तामा द्वारा प्रावितः प्राया प्राया स्वीतः प्राया विताय प्राया स्वीतः प्राया स्व र्ह्में पिरुशर्में अपि हे अपि पावन प्यास्ट प्रस्ता के अप्रस्तर हिन केट स्ट प्या ग्वितः भूरः प्रायः वरः वर्षेरः वर्षे । न-८-वाब्रक्तिः स्वा-नस्व-नहे-नर-वाश्रम्भ-भव्य-निवानिहेशःवहेतः व्यन्त्रम् निष्क्ष्रम् वर्षा यद्या यी यदे । या यहे व्या के व्या के दा हो दा पर वर्षे वा छिटा माव्यामारे अप्यहें या प्राप्त मुन्दानु प्राप्त अपनाव्य में भूमा प्रमूषा प्राप्त नर पर्देर न न माना न र दे र से पाना पा के रा के र हो दारा है। सर्देर न र र र মইয়

र्ह्में देश के स्वाया के स्वया के स्वया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्व हेव निर्माद्र मावव महिका हैं के राष्ट्र से से सिर हैं निर्देश हैं निर्मा गुनासमायद्देवाचेमा नेव्यानेत्यानहेवासवेत्वनेत्युगायवमायदेवे नेत्रा लेव.सम्य मंभूय.सदम्य प्रमाय प्रमाय प्रमाय विष्य विष्य मिन्न सम्भ भूमा वर्षापयानरं वर्देरावर्षा देवे गहेव सेंरावे निवान्ता ग्वा विवारे केंद्र ग्रीभार्भे स्मिन्स्य गवर ग्रे कें भ्रे ज्यामवर ययर मन्मामे कें भ्रे नवे भ्रे रहे। य से खं से निवन्ते। । निरोत्त्वासारी त्यायदी दियावयासारी है के स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन द्धं नेते हें हुं ना नविव हैं। । ने या व हें व में । पारें या शुराय हैं या ग्राट हें व में । हेर्न् में क्वें भ्रें पी पर्नेग्याववर्ग्य क्वें क्वें भ्रें प्रम्य प्रमान नक्ष्रनान हुरु त्यया नन्ना निव्यायहरू सहस्र हिन में स्था नुस्य स्था निम् स्था श्रेश्रश्च नह्रव सम्द्रम् । नन्नान्न न्नाव्व हेन् हेंश्रा संह्रे। । सर्मेया कुं र्रेया है निवेद नह्ना दिवाय है ररा वीयाय रेया सेवा वाराय हैं या वःद्धःर्रेयःवर्गुरा । वर्षाःकेरःररःगीयःयःगुवःव। । वारःयःद्वेयःहेःवाववः र्पत्यम् । विश्वानव्रेश्वायायार्थेश्वाययायव्यापार्ययाधिवायी। स्टायी दि র্বমান্ত্রবাদ্যমিদ্যমান্ত্রদমার্ক্রা

यदः माल्वन् मी सूना नस्य मी सः नद्या यः से मार्ने दः प्रसः दे र से या नितः से यो नितः स

म्बर्सिस्यानस्याग्रीयाविवासायासीयाविद्रास्यासीया र् मिट्राये स्वाप्तस्य पट्याप्य स्था से से या नर वर्षे र है। वावव पीव र्यंते भ्रिम्में विश्वामाश्यम् अस्त्रा मित्रामार्वेत प्रम्भे प्राम्भः भ्री सर्वेत प्रा उयाधिवाग्री हे या स्हिरारया स्टें प्राप्त हैं रें रें ग्रायाय वरा सुरारें। ग्राया <u> हे :म्बर्'नार्बेद्, क्रुट्</u>'नाडेना'धेद'य'म्बट'यनार्खेन|अ'स'नाडेना'धेद'स्य' र्राविव गिरेशन्र से प्रति सुरावा कुन न्र केंग्र प्राचे सूर् अट-र्से 'दट-र्स्के ग्रथारा 'ठव् 'अट-र्से 'त्या यह ग्रुश्य अप्ता धेव 'क्री 'दट क्रु 'यदे 'हें 'वे बेर्'या रूर'में नर्ग'र्र्यावव्यमें नर्ग'ग्रूर केंग्राम कुर'रे 'य'यहेंग' न्वीं अ'स्थ'नन्व'न्द्र'वावव देवें अ'व्यानववा'स'र्य अ'सेव'सदे'स्ट'वी'र्दे' र्वेश मुन पा के न देवा मुन्देवा मा के न पा के सा प्रदेश में स्था म मदेन्तरमिश्रास्ति। सूना नस्या तुराना था से नर्जे ना भी स्थाना व्य ययदः वाडेशःवहें त्रवें संश्वाने देरे सूवा नस्य ययदः से नर्हे द्रा सुं न धेवर्दे॥

ने भूम। नम्माम्बद्धान्य स्थान स्थान

दर्भाक्षे वन्यायाः क्ष्याश्चान्यः विष्याचे न्यायः विष्याचे स्वर्थः व स्वर्यः व स्वर्थः व स्वर्यः व स्वर्यः व स्वर्यः व स्वर्यः व स्वर्यः व स्वर्थः व स्वर्यः व स्वयः स्वर्यः व स्वयः स्वर्यः व स्वयः स्वर्यः व स्वर्यः व स्वर्यः

रार्शेराधरास्टान्दाम्बदाशिनेदामाराधरायाम् यामुनाराउँयानुःया बर्क्षान्यस्यात्रवदावीयाः वीशास्त्रवरः चरः शुर्मा रहः देवः श्रीः चर्यस्याः ने पार्वत त्यः श्रें अवशालु पाया व रहे अप्वेत पुः श्रे प्रमः अम्या क्रु या द्र या मा ग्वित ग्री देव वस्र राज्य स्वतः सुका स्वा राज्य स्वर्ण स्वर प्रा मित्र से । वाज वा ने भूर सा गुरु राया न गाय वा ने ते से न स्थान सा गाय के ने प्रायन सा से । । न ने ने प क्षरक्षेत्राधर ग्रुत्रात्य प्रमुद्धे सर्केषा यहमा माडे त्राधर वहीं दाय वहीं ह्या य:८८:भेश:प्रविद:प्रश्नेद:दश:दग्दा:५:अश:अ:श्लेश:प्रो:श्ले:प्राद्य:प्रे श्चेयाया कुताद श्वरार् अंगालुया वी सूत्राय दे रे याया यहता यर गुरात्राय यवर्त्र्अर्प्वोग्पर्रेत्र्ये हिन्द्र्यायम् वर्त्रेष्यायम् वस्र १८८१ । विवित्त वर वर्षा व्यापार्वे र प्राचुर्या । विर्वे हिर सर देव वेद्रावर्द्द्रायम् । नभ्रवायाम् अत्याद्यायेद्रावद्यायुर्द्रायादा । दवावाळेदार्दे ने भुःतुमा विन् ग्रीम सूना नस्य प्रनद विना नसूनमा विम प्रा हे हिंद ग्रेश रू द्रशस्त विशादि ग्रिश पर सुर है। विरय कुर सुर शुयानने सेव या । मन्या स्मनयानने तर्र तर्मु मसे श्री । वियारी । वि *ढ़ॖॸ*ॱॸ॔ॸॱॺॊॱॺॎॱऄॱॺॾऀॱॺॱऄॖॕॖॻॴॱऄॱऄॕॗॸॱॻॸॱॸ॔ॸॱॺॊॱॶॴॸ॔ॸॱख़ॕॸॴऄॗॕॸॱ न्नो इन्स्यय देश्यापा येन पर्य से यया उत्तापा निर्मा निर्मा पर प्या सुर नन्द्राचारायानहरानादेवे देन्द्रम् नुप्ति भ्लेट्य देखावेषाय सम्बद्धनाया भे देवायायया शुयाया सेवायाया दे द्वार्या स्टावी देव द्वाद्याया स्टि

र्ह्में द्याया सर शुः है। यदया वे यावव श्री द्यार शुर हे या । धे द हिंद रे या धरानेशाम्रीशाया । श्रेस्रशाउदाग्रादादेवासामहिषासामा । १ दि हिंदा ग्रीरानाव्य से न्या । नाव्य न्या से नाया से नाया से नाया निर्मेष धरं ग्रुः भ्रे देवाया वियाया वियाया यात्राया वावत देव द्राद्य भ्रेषाया राःविरःहेःररःवीःर्देवःवःदक्षेवायःसवयःस्यारायाःदरःधेरःग्रीयःवाववःवः गर्वेर्-भदे मुन्ने होर्-भर्भून वा वर्षे अः सूर-धर समय सेर्-भदे वार्वेरः रायाञ्चरा न्त्राण्यायद्वाराष्ट्ररावर्षेत्रावर्षायावविवाद्यात्र्यादेवेत्वरात् श्रॅट'र सूना'नस्य'नेत'रु'शे'नबर्'रा'नश्चेर'र्ने सूर्यात्र्य'र्नाना'रार हा म्रे। हिंद्रा श्रेमार्स में नामान क्रमाय है। भ्रिवा श्री द्वा स्था ने माववा धेवा है। । हमा अर्बरहिंद्र-द्राचर्द्र-त्र्वी हिंद्र-क्षेत्रे वेगश्राधागुन्न वार्वेश्वा । द्राद्र-वद्या यः स्टामी दिवा । पेरि सूस्रासेस्रास दे दिस् विमा । यदमा मीरामावदः यः हिन्यर्देन्यक्ष्या भ्रिन्य अध्ययन्त्रिया विषक्षित्रका भ्रिन्य वयाहिंद्रा । सेस्रयाउदाइस्ययायाया हीदाद्या । हिंदा हीया विंदा हीया विंदा हीया वा थे। श्रुरःस्राइस्रयायादीत्राद्वीय। दिःस्राहित्तिरातीयारे स्राहिता ब्रिन'सम्भाष्युन'सेर'सूग् । प्रिने'र्सिन'स्मम्भाष्ठन् ब्रुम्भाने। । ब्रिन्'ग्रीम्भार्यः रेन सेससम्मानिस्। विस्रसी । ने निवित्रम्मावद्यामिस्यम् सम्मानि यत प्रित प्यट प्यट यथक्ष य य श्रीट विवा यदे हैं जिया य से हैं ट्रेन विवर षयानरावर्देरानवे क्वें साक्षेकाया के नक्षेत्राया के कार्या कुताव श्रुतात श्रुताव

श्री विष्याः स्ट्री याव्याः स्ट्री याव्याः स्ट्री विष्यः स्ट्री स्ट्री विष्यः स्ट्री विषयः स्ट्री विष्यः स्ट्री स

ने भूमा से स्वराज्य विश्व स्वराज्य स्व

ने 'प्यत् शेश्रशं उत् श्री श्री पात्र प्रत्य प्रत्य श्री प्रत्य श्री प्रत्य प्

यश्मिट्य अध्यक्ष उत्यानहेत् त्र शश्चेत्र प्रश्चित्र श्चित्र श् धरःश्रेश्रश्नाः वर्षाः वरः चुः वदेः क्षेत्राश्चः वरुषः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व क्षरावर्ष्यायराज्ञि । ज्ञारकुवार्यस्यायज्ञीयाययाण्या वहेवा हेवावने वर्ते न्यात्रे भी वर्ते न्या के प्रत्ये न्या का मुल्या वर्ते न्या के प्रयान के प्रत्ये के प्रयान के प्रत्ये के प्रयान के प्रत्ये के प्रयान के प्रत्ये के प यव'रा'त्र'। । गर्वे त'रा'यथ'वे 'यगुर'नर'यगुर। । थेयथ'उव'नहेव'वथ' यर्याम्याम्याम् । विष्यरास्ये से दारे देव प्रमान्य । विष्य प्राप्ते विषय । यारा । व्हर्भ: ५८: ५वट: सें ५वा: सें ५८। विदेश: हेत: क्रेंट : वश्व से हेत: दे न्या शिष्रकारवरायर पार्वका विया यी या । या इनका या वे पर्वे प्या शुरा पर्ने मा विराय प्राया । विषय । विषय श्री सियानस्याद्यान्यत्रेयान्त्रस्यान्त्रस्य । स्रोधस्य उदाद्वस्य राग्ने सार्श्वेदानः यारा । ने वे से संस्था उत्पार्वे न त्यस गुरा । न ग्रेस क्रेंस संस्कुत न हेया यन्ता वित्रम्याप्तर्थान्तर्थान्तर्थान्तर्थान्तर्थान्तर्थनः दे। । शेस्र शंक्त पार्दे द प्रदेश द स्था । विश्व पार्श द शही । विश्व प्रदेश । इसराय्त्रयातुः न्यदः यादीः सेसरा उदः श्रीः नैदः केनः केनः सा श्रुसः यायरा धेत्या अट्याक्त्यात्र्ययात्र्ययात्र्ययर व्यापारा वहेयारा देशेयया मी देवाया भ्रम् किया ग्राम् कवार्या सम् स्था श्राम्य मासुम् स्था है। दे हिन व्यया शेशश्राह्म इस्राया कवाश्वायाचा । द्वाप्ति विदायन प्रशास्त्र विदायन स्था क्र में शक्त मार्थ क्षेत्र मार्थ विष्ट क्षेत्र मार्थ मार्य मार्थ म

शेस्रशास्त्र व्यास्त्र स्वास्त्र । द्वित्र स्वास्य स्वास्य स्वास्त्र स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स ब्रिया । ने स्थर स्वर न्दर क्षे सव संदी । यहा व्या सह स्वर न स्वर स्वर । ने र न्याः भ्रमः हियाः याहियाः स्याः हो। । समः मैं बार्षा अन्ति । स्थाः भ्रमः स्थाः स्थाः । विशः त्रुट्र कुन ग्रे अंअअ ग्रे क्रु ग्रु प्यायाय वृद्य न स्वे अ श्वेट्र देवे स्वाय के श्वेट हेर्याविष्यश्चराक्त्रास्य स्वयादे पश्चियाय स्वयापि स्वया मश्रादे 'द्रमा'नह्र सर्यासुर्यात 'वेद 'तृ द्व 'द्रम्य प्रते हुन्य 'केद 'स्दि' र्श्वेर्प्यायास्य निष्या से स्वर्धित स्वर्य स यदे इत्य उदा विद्र भेस्र स्थान्य स्थान्य विद्र विद्या हेया प्रविद्य <u> चटःक्ष्यःद्ये। क्रियःयदःश्रशःस्रशःश्रेंशःयरःचेत्। विटःवेवाःम्रशःशशः</u> नह्रवःयःवै। । नाव्यवःश्चिः सूनाः नस्यःश्चेशः वेदः स्यम। । नस्यमः नात्रवः नदेः नर्नेरक्षाग्रम्। अवर्षेन्यर्षम्यम्यम्यम् वीत्। विनेविनेस्यक्र वर्ते नश्चार देश विदे ते द्राप्त देख वा ख्रारा वा विद्या श्वी

न्दे छ्याने न्यायान्याय इयय श्री या या ह्या श्री या श्री न्या है । दे दि छ्या ने प्राया है । दे दे छ्या ने प्राया है । दे प्राया है । दे प्राया है । व्याप के । व्य

वयारी होतायेययारव हो देवाता स्वाप्त हाराया है। हारायाया स्वाप्त हारायाया याक्केशनासीक्षेत्रेकेशनासीम्बर्धनिरादमेयान् सीक्षेत्रानन्त्रामिरेया वहें त'पेत' प्रमादि'या तुर्पाम्रम् तमार्थे पार्वे द्रात्र हें पार्वे द्रात्र हें द्रा से समाउत्या सवियानसूत्रत्र राष्ट्रे स्वर्त् र्श्वे दानाधिताम् स्वी प्रति राष्ट्रे वास्या *इयादित्रें रामके वार्ये आर्थि वे त्या कुरा सहसादह्या त्या से या सामिति हिरारे* । वहें ब वरे दिर वरे 'पेंद हुर पर्या हिंद 'व ह स्र हें के व हुर य गुर *য়े.*ॳऀॻऻॺॱय़ढ़ॖॱॺॣॕॺॱॡ॔ॖऺॻऀॸॱॻऀॺॺॱय़ॱॸऺॸॱॳॢऀॸॱॾॖ॓ॱॻऀॸॱख़ऀॻॱॻॖऀॱॶॺॺॱ बेन्दिक्षेत्रः सर्वतः न्द्रः निष्वायः यः ज्ञः निष्यः यदिः यन् भ्रुः नः धेतः र्वे ग्वासुनः हे। ग्रा व्याया से दारी से से से हो दें त्या से ग्राया से विस्ताय दे ग्राय से यदः क्रुर्यत्वे अः धेर्यः याप्ते रिकासर क्षरः है। । विकासर प्रेरः प्रेरः विवासका रदःउगागी अर्हे 'र्ने 'श्रेश्रश्रायदा'या 'ये 'र्से दुर'दे 'तुश्रायश्राश्रेश्रश्रायदा' ग्रीभाग्यरादे रुवात्यादे रक्षरादेरावाशुरादेश । विवास के दावि साव खुवा भा *बे 'ॡ्या ब'न्द्र' वेया 'केव' पदे 'या बेव' फ्निक्ट बा खेव' पदे खेन' खेन'* वस्रकारुन्दिःवात्रुवादन्वानस्य न्रावस्यकारुन्न्द्राविषात्रें क्रेन्रेन्रे हुर नद्गराय भ्रेराव वे येग्या य भ्रेरावयर ने द्वर से नस्र पर ने द्वर नुः क्रेंब्रः सदेः न्वो : ने अ व्या ह्वा : हुः ने हेवा ने : क्षेत्रः क्रें क्रें हुं नः नदेः क्रेंवा अ न नः ह्वा हु दर्शे वा भी ने दे दे हुन संदे वा शुर र न र र र ने विरु स दर्श या स्वा देवे क्रूरळें वार्यावार्येव |देवे वोवार्या ग्रेडिया स्टायर दे १ हुर रु र्त्ते[.]श्रुट्रअ'त्'श'र्नेत्'र्ळट्टप्रट्रेयश'देश'प्रश'यश'र्द्रेत'शे'कुट'विट'ट्याद'

यमःमेग्राशहे। हैं में कित्राध्या वेगाकेत केंश्री प्रवासित प्रम्या । विश्वासित प्रमासित प्रमा

বন্ধি'মা

55:31

क्रें म्यायान्त्र स्थान

हैं तें के व्ययः नियमें ने निर्मेन में हैं त्या के या विष्य के के या विषय के या विष्य के या विष्य के या विष्य के या विषय के या विष्य के या विषय के या विष्य के या विषय के

यादा । यह स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

र्स्नेन'न्स्ना वेश'रा'यश'हें नेश'न्यथानिस'सहन्था में र'स इसस र्श्वेत्रसेस्रराद्मराष्ट्रेत्रविरादेवे नसूना गुःषा ग्राह्मरास्रास्र से स्टेंगा गी वहुगा र्बेसन्दर्ध्वयान्वेसायम्यविदाने। न्यायसाम्याम्याम्या नदे निक्रमित्रे निहार कुन से सरा न्यदे क्रिंस मन्दर स्वर मदे निहार क्रिंस वया वेयाग्रुरयापाद्राम्यम्यम्भूरारी व्रियानम्यावदः ग्रीशल्हें तर्ाव ह्या त्रा से स्राध्य म्रीताय क्रा है साम निर्मा नभ्रुयःविरःभ्रुःनरःग्रुयःवय्यादद्देवःत्ःनद्वनःयःयःनशुरयःययःनेयःकेः गानुरुप्रस्थित्वरादे। विवासविन्हेवादी क्षेत्राहेन्त्रस्था देवासाग्रीः नुद्रअःरेग्रार्थःग्रे:नुःर्शे:हेर्द्रान्द्रम्यस्य सुर्रासुर्वःसुर्रास्य स्वर्थः। वेशमाशुर्श्वराष्ट्रम् धुन्दरम्भुष्यः श्रेम्राच्यः श्रेम्राच्यः श्रेम्राच्यः र्श्वेत्ररोस्रा भेरानुराना वस्य राज्य वितेत्र हेत् प्राप्ता वर्षेत्र देश प्रसा क्र्रेव त्र्रोय रायमा वर्षेर नमाधेर वर्ष रायक रायक रायम विमारम श्वेराहे के न वेशवर्द्धाता सूर्य स्राचनित्रा स्राची वेशवराया *ਜ਼ੵੑ੶*ਖ਼ੵੑੑੑਫ਼ਸ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਜ਼ੵੑਫ਼੶ਲ਼ੑਜ਼੶ਗ਼ੵ੶ਸ਼ਸ਼ਸ਼੶ਖ਼ਫ਼ੑਫ਼ਜ਼ਜ਼੶ क्रेन्यः विषात्यः होन्यः धेवः दे॥

र्शेट-वरि-वर्स्नव-ग्रु-वर्हेट्-पर्दे। । न्ट-र्शिन्ते। भ्रेषा-घ-उन्-ग्री-भ्रे-र्वेश-दिन् सदे अः सुँग्रायायुः यावि योग्रायः स्ट्रायः विद्यायं दः यादे दा याद्वादः यथः नश्चुटःत्याद्रदः व्यापाव्यायार्यं त्राद्यार्थे व्यापादे देवे कुःस्याद् व्यूटा नशःग्रम् भूना केम दे लेखा से दिर से में ना से या साम में मा न में ना सके ना ঀৠয়য়ৣ৽ঀ৾৾য়ঀয়৽ঀৼঀ৾ঀয়য়৽য়৽য়য়য়য়য়৻য়ৼ৻৴ৼঢ়ৣ৻৸য়য়৸য়৽ ८८. घट. क्य. श्रेमश्र. राष्ट्र. श्रु. या ब्याश इसश विदय विदय श्रेमश राष्ट्र. नवर में ज्यान त्वारा सुरावत्व । त्वारे ज्यार्थे वार्या प्राप्त प्रसेवार्य मित्रे सिक्षेत्र मित्रे प्रेत्त है । सूत्र पर्सेत्र मित्र मित्र सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष सिक्ष क्वरायार्श्वेषाश्वास्त्रस्रशास्त्रम् वीवाज्ञा निवास्त्रियाने विश्वास्त्रास्त्रा गन्न विः भे 'हें ग' गो अ' न क्कु न पवर ' न न भा से । विष्ट सा स्र स्थ अ' ने ' कें न र् <u> नवी प्रतुत्र भ्री नव्येत्र नगुर-नद्युद-र्थिय गोर्नेर-अप्तर्हर विश्वे स्त्रा</u> ख्नर:रशःग्री:पि:ळॅर:सुव्य:व:श्रेवाशःग्रीशःग्राट:वर्ग्यवःवा व्यॅट:व:वाव्ये:शेट: धरःववः प्रवः क्रेवः र्धे अः वर्षः य वश्चीष्य अः र्धिः क्वेरः क्षेः विरः वः द्याः वश्यः न्वीं राते। हैं में या में न्यून इसरा ग्री सामा प्यापा न्या स्यापा स्था येययान्येन्तित्यान्याय्यायकेन्यान्यायायायायायायायायायायायायाया नसूत्र परि पार्टें 'र्वि भू र्ना पात्र अ उत् 'विषा' से न्। सन् अ से न् भू पार्थ प्रस् षरःसूर्यःषवःकर्भेरःधेवःषःग्रुगश्रुरःहैं। ।रेवशःव्यावःविः रेसारायमानन्दाराष्ट्ररादयन्यामारादे केंन्यामासुन्दरमानेदासकेंद्र

यदे श्वेत की मा बुद्या कर मा शुया मार्देत विदान श्वेत पा कुर्दा । दे त्या श्वेत ग्री:विट:इस्रश्राग्री:पेवि:हव:व्याक्षेट:वना:यावस्पाद्यान्यावस्त्रीट्र:व्याक्ष्मे सदसः क्रुसः दृदः कुनः सेससः दृषयः देः देवे :सत्तु तः दरः हेदः यत्ताः धरःवस्रस्य स्यान्यानुसाध्यन्य वा वत्त्राया हो न ते । दे । वा स्या यास्यार्से के सु सुन ५८ वि न सु दया मु ५ राषा प्यता य ५६ राषा ५८ राषा ५८ राषा ५८ राषा ५८ राषा ५८ राषा ५८ राषा ह्यो । दे : पदः भ्रेमा रा न नम् रा रा हो द : द र हो द : द रो रा रा रा पे द : शे : द म द या ग्रम् कुना ग्री से ससाधी नान ना ना ह्या निष्ठा माना से निष्ठा स्था हो सा स्था हो सा स्था हो सा स्था हो सा स नर्ने अधीव है। हैं ने केव रें अ शेसशन भ्रेन् न्दर हैं अ पिट कें न्या सुना वळवानन्दासळेद्राचेरेळेचात्यास्यास्यास्यान्स्यास्या म्नुःसदेः गुःनदेः देसः यः यसः यसः यम् वा नित्तः गाः से ससः नि हुनः पदेः हूँ दः नुः गुःनरःग्रायायाःसँरःग्रास्ट्रार्थःसदेःश्चेरःद्रः। क्रुःसळ्दःदेःक्षरःधेदःदेःसुः श्चित्र-द्रात्ते ना सेते त्या या त्या से से निया सिर्या सिर्या से प्रात्या से से प्रात्या से से प्रात्

निष्ठ्रभावि नेत्रभाक्षायाः श्रृंद्रभिष्ठान्त्रभावि । विष्ठ्रभावि । विष्

इसराप्टा नुदाकुनारोसराप्टा केतारी राजेतारी त्यान वृत्रारा समस्य ग्रीअर्दर्भेर्स्नु त्र सेद्रायाधर्द्या धर्मे गुर्या धरे ग्रुट्स् क्रा पुर श्रुवाया नश्चेत्रप्रेन्यने निवादी निवासी स्वत्येत्रप्रेन्य निवासी स्वत्य स त्रुवारोदायायाराङ्ग्वाराराङ्ग्वारारादे नुदाकुन कुन कुरे स्राया से कुर् वेशयवार्यस्य मुराम् । विश्वस्य मुन्य वर्षे विद्या स्व त्रः भ्रे। वर्ने : श्वरः धुवः अरयः क्रुयः वर्षेयः श्वरः वर्षः प्रदेशः वेवाः केवः क्रीः वर्षेषायायार्वे ने राज्यायये व्ययाची नित्र यान्यान के विष्या यदे ग्रुट से समायया माया त्रा त्रा त्रा त्रा ग्रुट से से हिट से ग्रुट स्त्रा स র্ষিন**্টো**-নম্-নৃ-ক্রিন্-নৃ-নু-ন-মীর্মমান্তর্-রম্মমান্তন্-নম্মুন-মন্টি-শ্রীম্-মান্মা-য়ৢয়৻য়৻য়ৣয়য়৻য়ৢ৾য়৻য়৻ৼৼ৻য়য়৻য়৻য়ৣয়য়৻ৼৼয়৻ৼৼ৻ৼঢ়৾ঀ৻য়৻য়ৣয়য়৻ भें दिंगायाधी सेससाद्यायीया विसायासुदसायया दे द्वादी प्रसंसाया यशन्त्राचस्राउन्न् अव्याप्तरः चुर्ते स्रुस्रायदे वन्त्राया चार्ये चुराया र्श्वे द्रायम्भ स्र राज्य प्राप्त राज्य राज्य स्राप्त स्र राज्य स् नर्गेत्रासुःग्रेल। नन्गःसेन्द्रिःवेर्यानश्चिःनन्त्रादिःवर्यानश्चन्त्रा हे श्रेन ग्रुन कुन श्रेन में प्यायके या ग्री नम न्या के या स्यय ग्री यर्के गा यरयामुयावर्षेयायुरावर्याम्ययायाभुवयासुः यक्षेत्रे । श्लेवार्वेद न्वीरश्राम्बा नन्याक्षरादन्तिशनक्षीः नन्याक्षरादन्त्र हे श्रेन्' जुन कुन ग्रे श्रेन्' में प्यायके या ग्रे नन्न, केंया ह्याया ग्रे या केंगा विनायर्दिन् क्रम्यान्य प्रति क्रिंग् म्यान्य प्रति क्रिंग म्यान्य प्रति प्रति

श्चित्रशासुर्येदानक्षेत्रान्त्री सूर्रभ्रेत्रानुःहुदानुदेशभ्रत्यासुः नन्द्रमदेग्न्स्रनः ग्रुः इस्रयः एदेरः अदः र्सेनः द्वेतः ग्रीयः नहेदः परः ग्रुदे किंवारान्यवायदी सेस्यानभ्रेत्राचे केंच्या भ्रम्ययादि राधराध्या <u> ५८:अर्केन्यःश्रेम्थः चेन्यम्यन्द्रियः वर्षेयःयःयश्रा यद्ययाः</u> ব5ৢব'ৼ'ৢৢৢৢৢঢ়ৼয়ৼয়৾৾য়ৢয়৻ৢৢঢ়ৼয়ৣঢ়ৼড়ৢয়৾য়য়য়৻ৢঢ়য়ড়ঢ়ঢ়ৼ৾য়ৢয়৻ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়ড়য়৻ ग्री'निनेश'गहेत'इसस्य पेट्रिय'इत'यर'ग्रस'त्र स्र हिट्र'यर'निन्द्र स् त्रःक्षे। त्रःसः इसरायः सर्केट्रायः दे सर्केट्रायः स्थाये : न्यः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्व त्रुवे । प्यवःष्यवाः वर्तवः यः वे। वर्त्वाः वे द्वाः वे व्यव्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्या रुम्मीयानुर्दे । येययाञ्चम्याने ययाञ्चित्रवयानुययापदे येयया र्श्वर पुरा निष्ठ र विषय र धरावाशुरशाधशास्राजनितायास्राज्यस्य विस्थान्यस्य । বাশঅ'বাদ্ব'র্নী।

नर्स्यानविदे के नाने। क्रेंनन्स्व में अत्व तु स्याने नायया प्रे <u>ড়</u>ॱ८ॱअॱॺॱॸढ़ॖ॔ॻऻॴय़य़ऒऄॕॻऻॱय़ॖढ़८ॱॸॖॖढ़ॱॸॴॱढ़ॸॖॖॻऻॱॺॱॿॺॱऄ॔ॱॷॗ*ॸ*ॱढ़ॴ श्रेश्रश्नित्रप्रः चुर्ते । देः प्यरः यसः श्चेत्रः यशा द्वेताः पः सेदः प्रसः द्वाः वकत्रवदी विटःक्वासेस्रादे वस्तुन्यरः वा विरायन्य केंगायसः ग्रम्। ग्रम्कुनःश्वेदःरेदिःनमःत्। वेशःमाश्रम्भःमश। माववःर्मेवःतुःशम्भः कुर्रार्वेन:यम: हुर्दे सूर्य: ५: सेसर्य: नर्से ५: यं संस्थान हुए। सेस्य: ५: नर्से ५: য়৽য়৽ৢঢ়য়৾ঀৢয়৽ৢয়য়৽য়ৢঢ়৽ড়ৢয়৽য়৽য়য়৸য়ৢ৽য়ৼ৽ঢ়ৢ৽য়৽য়ঢ়ঢ়ৼৼ৽য়ৢয়৽ঢ়ৢ৽ঢ়য়৽ वळवन्यधेवन्ययानेवेन्यययायाळें यात्यायहेव्यययान्भेन्यम् हुर्वे । ने ढ़ॱॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖढ़ॱॾॣॖॆ॔ढ़ॱऄ॓ॺॺॱॻॖऀॱॻॾॣॖॸॱॻॖॱॺॱॾॣऀॸॱय़ॸॱऄॱढ़ॖॺॱढ़ॱऄॱॻॖॱॴ<u>ॗ</u>ऄॺॺॱ उं अर्के ग्रामान्से न देशे असमानसे न शे न स्रमानु त्या स्रिन पर तुमासे त्रावययाउन्यान्यायार्थार्वेगार्वे । श्चित्रयेययायाने सूरामहेयानु ঀ৾৽ঀয়ৢঀ৽য়য়য়৽৾৾য়য়৽ড়৾য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়ৢ৽য়৽ড়৽য়৾৽য়ৢ৾য়৽য়৽য়৽য়য়৽য়৽ वस्रकार्विर्धाः विराधे स्वाधित्र विराधित्र विराधित्र विराधित्र विराधित्र विराधित्र विराधित्र विराधित्र विराधित वे अपी न केव रेवि । मावव पर पर विश्व मानी अप्य अप न र से रवे के अर्थे न र्'यहेबार्क्र्रियायह्रेब्र.सद्येरक्र्.योब्य.लट.लट.यह्रेब्र.सर.चन्वर्'व्यायश्चर व्यक्षे न्राविन्यर्न् स्ट्रिं से से से से साम से से से साव प्रिंग विन्यर्थ नश्र्वरमंत्रेन्द्रेवरमणेवरमंक्रेवरमें त्याश्चेर् राचणेवर्ते। । वार्ययाक्तृयाया

चान्यस्यायास्य प्रमान्त्र स्त्र स्त

कुनःश्वेदःसंखासकेशाग्रीःनरःतुः त्वातासेदायायदः द्वारायदः हिंग्यायदे इसरानश्चरानरानग्नेत्। । सार्ग्यानाइसरार्ग्यानरानग्नेत्। । प्रान्यारा वर्षाराः इस्रास्य सुःद्वायस्य वर्षा विष्याः से त्यत्रा न्यास्य स न्रह्में निर्मान्य । अन्य अपने विष्य विषय । यह निर्माण विषय । यह न शुःनत्त्रुशःनर्गेशःमदेःगश्रयः। वास्यः तुरः यरः नर्गेशः सः धेवः वे । ने : नगः वेः क्षेत्रन्देव वेन्यते खुनारा धेव वा क्षेत्रन्देव या क्रेन्य हेन्य है सुर हुन ही रोसरान्ध्रेन्यि कें नाहें ने रासहन्यायया ने सूर हैं न न्यें से सेन ग्रम्यन्याकिन् ग्रम् रहेन रहेन रहे से सस्य मुद्देन रहे हैं या दी ने प्रविद्या ने या स यः भूगुः बुनः यः न्दः श्रिं मार्यः न दुवे ने । निवेदः मार्भे मार्थः वस्य यः उतः धेदः यान्यस्थराने सुमाप्रस्यानान्दासर्केन्यदे स्टे स्टे स्टे स्ट्रीयायास्यानुसान्या गर्भेषः नःगन्नः सः न्दः र्र्भेनः न्देवः वेशः ग्रुः नदेः क्षेत्रः स्वः सुन्यः शुःदर्शे नायाश्रेषायापदे में देयामें रायानिव न् नुस्य वियापाश्रद्याया क्ष्र-जुर्ने । यह्मामी कें माने। क्षें न न्में माने स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वा इस्र हैं न स्थाय नहें न स्म नु नहें।

বাইস:বা

র্প্রসাম্য প্রম্যান্য প্রমান্য প্রমান্য

नक्ष्मनः गुःले अः सर्गः गुर्ने अः स्याने स्यान् । यन् । यने । यने । या विश्वा कें प्देर्रे र शेस्र र त्र हो दुस्य र पदे हु प्य त्र स्वर र पद्मा से हु र वा व्य नुवराने न्दारी वर्षाया वर्षे कुष्या नुस्ति । नुद्रासी वर्षे सेसस नश्चेत्रायाञ्चेर्भुग्रायाययेषानदेरश्चेत्रात्राय्यत्रम् । सेससानक्रेन्दिसावसेयानदे स्रिन्द्रायदानुगानुनस्रेन्दायानक्ष्रना यन्ता मन्नोन्द्रिन् र्शेस्यान् भेत्राये सेस्या उत्ते स्था स्थानाया नक्ष्रन'म'न्म। नर्शेन'त्रसम'न्म'भेश'मेश क्रीं में मार्थानस्मामा नर्शन नर्दे। । न्दर्भे है। सर्दे है। नक्षानिया हु। सामा सामा सम्मानिया है। स्वीता है। से समा ग्री सव प्रव द्वारा से सका मारी हैं दिन में दारा प्रका की साम योशित स स्थानेरावक्षान्त्रीयःविदा ने त्ययाग्रहासूरान्त्रहायादे यह या क्रुयाग्री । ૹ૾ૼૼ૱૱ૹ૱૱૽૾ૢ૽ૺ૱૽૽ૼૼૢૼૡૢ૾૽૽૽ૢૻૣ૽૱૱ૹૢ૽ઽ૱૱૱૱૱ न्यते श्रुं न्यान्य श्रुं त्याया वस्या उत् न्यू या यदे श्रुं न्यान्य स्वापा स्थ नुर्दे । विश्वाप्यम् मुश्रासराम् भन्याया सम्राध्याया सम् सर्देर्प्तसूत्र-तृ वस्र अरु प्रतृ अर्ध्य सर्देर्प्तसूत्र-ते हे दे सूँ संधित प्र क्ष्र-चिर-भ्रम्भः भ्रमः भ्रम्भः वस्य १३८५ मित्र-भ्रमः भ्रमः

निहेश्यान्ते। वित्रस्य श्राम्य निहेश्य निहेश्

वहेग्रअः सरः वशुरः नः ५८ः सुः मो ५८८ से सः धेवः श्रीः मर्हे ५ सः सः श्रूरः नः म्रामासी प्रमुद्दा विदानुद्दाना म्रामासी प्रमासी । के प्रमुमासी रिवा *ज़*ॱ୴ॸॱॺऻढ़ॕॸॱय़ॱख़ॖॸॱॿ॓ॸॱॸॸॱॸॿ॓ढ़ॱॻॖऀॴॱढ़ॸॱऄॸॱय़ॱॸॸॱॺऻढ़ॕॸॱय़ॱॼॗॸॱ वयराधुवारेरार्धे प्राप्तार्थे या से या देवया या प्राप्ता से या से वा या स सेससाउदानी देवायावहुना पादासुसासी प्राप्ति विदानहेदारसायाद्या शेसराष्ट्रस्य सम्भारति । ज्ञान्य सम्भारति । स्यान्य सम्भारति । नविव मुक्ता मान्यान्य राष्ट्र सेव सुन ना भेराया से स्थान से सुन के सुरा ८८:श्रेश्रश्चात्रीयावश्चात्रात्रेवःश्वेतःतुत्रःह्यात्रस्यूरःही । पर्वेदःसः८८: देश'य'दद'ख़्द'यश'&<u>ं</u>द'गार्देद'य'त्रुश'य'वर्डेद'छद'यर'गार्देद'य'शे' होत्रायान्वराष्ट्रीयान्वरायान्वर्त्तराहोत्रायार्वेत्रायान्वर्त्तर्वर्दान्वराष्ट्रियान्य नन्ता वित्रिंगन्त्रध्यान्यान्तार्थान्त्रवार्थान्त्रध्यायाः वित्रध्या ग्रट ने अप्याय राज्य अप्राथ अप्रो क्षेत्र के अप्याय प्राया अप्राथ के प्राया के प्राया के प्राया के प्राया के प भ्रे मात्रभासम्भूमात्रायायमात्रयम् द्रिमाने । । द्रार्भे प्रत्यम्भे प्रमायावीया भ्रेशः वतरः धुरः त् : वरः नः दरः देरः ष्यरः सूना नस्यः छुरः नः दरः देशः भ्रेवः <u> चुर्याद्यापित्राचायापीदापुः भ्र</u>ुत्याद्यार्थेस्या उदादे द्यायदाः भ्रुदा हेः यविराधराधीःविरावाद्या यदयाक्त्रयाबराबेदावीयायळेदाययाळाड्या र्यरक्षे केंग्रामदी रमय हो सही अख्यामयय। हार कुरा सेसया ही नर्शेन् वस्य यान्। । ने या याय हे या त्रुवारा सक्रेश वा । वस समिते । वस्य ।

विश्वामा । ने त्यास्त्र विश्वास्त्र क्षेत्र क

र् देवार्यास्त्रे चिरः क्वायर्वे वास्त्रुयः र् प्वीर्यायात्वा सुपा व्यार्थः क्रा नः इस्रश्नावेद्रशः द्रशः के नः इस्रशः वः सुरः नुः वर्कः मुः नरः वर्दे नः प्रशः ग्राम्यानक्ष्रनाम्यानुः विषाद्रियाम्य नुमाकुनाग्रीः येययायानक्ष्रनाम्या ह्यों विश्वासान्या वातः क्रें व्यवे क्रें माने व्यास्त्राया स्त्रास्त्रा स्त्रास्त्रा स्त्रास्त्रा स्त्रास्त्र विगायःगर्विद्रायःविगानीशःदेशःयःयदरःयदःश्रूरःयहरःयह्रायायदः नश्चिरःकुनःग्रीःशेस्रशायः विवाशःहेशःके नरःश्रेंदः भ्रान् ने व्ह्रेरः देवाः मःकेत्रदेविःसत्रद्वाः बस्याः उत् ग्रीः वात्रत्र्यः प्रदेशः प्राच्याः वस्याः उत् ग्री मित्र के दारी विमान्सद त्यस त्र होन प्रते विमा के दार्गी हिन के सामुल सेससासुनेसामराग्वसायादेग्वर्ससायार्सुन्त्वसाहेग्वसेयात्गत्र वरार्भ्रेसम्बर्धित्वान्यार्वेसम्बर्धः नभ्रतास्त्राच्याः वर्भवानः नुस्ति र्'वुर'नदे'सवित'रन'ग्रैस'ळेस'झ'नर'वुस'हे'यस'इसस'य'र्घुर्'स'द' वर्रे हिन्।वर्ळम् कु।ववे।ब्रवसान्साम्यम् कुवानःस्रसावरुषाग्रीसावविषयः

सहर्भाषी वित्रम्पराश्चित्रायम् वित्रायम् वित्रायम्यम् वित्रायम् व

शेसरानभ्रेत्रपादर्रेशप्रयेषानदे ध्रित्रत्यात्रम् ज्ञात्रशेसरानभ्रेत् यायानस्रवायायानिया र्ह्मेरायेसयानस्रेतायानितायान्या स्रेयावा यानसूनामर्ते । न्रासेनी नेप्तूनास्याम् सान्याम् सान्याम् गहेत-५म८-५, गुराने मेरे देश शुरास्य असा उत्यान मया न समया नश्चरानःश्रेषायाग्रीःन्यानरदानुयान्या येययारम् म्यान्यायरानेरा होत्राद्याययान्स्रायान्यात्रायान्यात्रात्रीयायवेत्यात्रात्रीयाया गहेशःसवदःपरानेटः गुःनगदः न इसरायः श्वेनः नर्गेराः सर्माटः सर्वेटः नराः व्यायदे में व राज्यावया से स्याप्त रायमाग्रहिषाके है। सूर्यायमा गयाहे नम्रायाची नर्दे यशयशयञ्च । श्चेन्यार स्टाम्य प्रमाय वेश हिन्य पर्नेन्य श्चेन्य । ने कें कुल विस्र क्रिन् चुन कुल विस्र १ क्रिस्य मार्थित। । सेस्र या से क्रिन ने दे समायमायमा ग्राम् भीता हु। विमा ग्राम् मे समाने दे स्वाधिसमा वळवानराम्बर्धरयाते। क्रास्टामीधिट्राचेट्रार्झ्यायाते च्राटायेययाचीः द्ध्याविस्रशासकें पाणी दाराशाने किस्रान द्ध्याविस्रशास्या पाणी दे यर्नेरविष्यंत्रायदेशयेत्र्यंत्र्यंत्रायदेशयेत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र याधिवारावे क्रिया के समामा माना वारा वितास के स्वीता के समामा वारा

ने निर्मा विष्या भी। भी निर्मा क्ष्या क्ष्य

देन् क्ष्यः व्यक्तः स्वाद्यः स्वादः स्वादः

हे यद दुवा वा बुद वर हार्वे । देवे के वा दे। अदश कुश के शदद कें वाश ग्रे'सर्केन्। इस्थरात्य । विद्राकुनःनरः रु:नद्याः वे:भ्रुन्यः शुःसके। । नद्याः मैर्अञ्चेत्रःश्रम्यायम् अप्यायदे द्याःमैश्रा । वर्षे व्यायतः श्रेत्रः यद्याः सुर्यः वर्यायःसमः भूषा । द्रश्रामः क्षेरत्ययः वाश्रिष्ठाः वाश्रिष्ठाः व्यायः सम्बद्धाः । श्रिष्ठाश्राः विश्वा श्रूट्राचायात्रश्रूवाचात्री यसार्श्वेत्राद्रात्रोस्राचात्रीत्रात्रीत्रात्रात्रीत्रात्रात्रीत्रात्रात्रात्रात्र हिते भ्रम्मन्या सुराया हुरायरा वया ह्वें दार्रोयायायया हे सूराये स्थाउदा हेशरशुःग्र्राःग्र्रःग्रःविरःभ्रेःग्र्रःग्रःग्रःश्रेय्यःग्रेःभ्रेययःग्रेःद्र्येग्यः श्रे नहेर् प्रम् नु नवे से म्यूर्य विष्य प्रदे भूवश्र शु न न्य शु न या इन्तरेन्त्रीरमान्द्रायदायायान्यस्यूदानमाने वाद्रानसून र्ने । र्ह्मिशःश्वरुषः सदेः स्वरुष्टि । से त्वरुष्यः सुष्यः स्वरुषः स्वरुषः स्वरुष्टितः वनावःविनाःषःनहेवःवरुःन्वेःन्रुः वयःन्वयःन्वन्वेदेःनेवः से नुर्देःस्रुसः । भ्रेमायद्वा विद्वायायद्वियानयमायायायस्य नश्चनायाद्वी श्वेदायेयया स्वाया न बुद्दान द्रमा विषा में में नविष्ठ ग्रुद्दा कुन ग्री से समा प्रमेण नवे कुम द्री व अर्केना'अर्केन्'रा'ल'र्शेनार्थ'रादे'र्केनार्थ'नार्श्यन्यन्'रादे । तर्ने'र्नेन् अ: इसर्यः पाशुटः नः अः पार्हे पार्यः प्राप्तुर्यः न्वाः से 'ते : अः अर्वेदः से न्वाः देतः ग्राटः यत्रके नरः सूरः दें।

महिरामा महिरामा विद्यान महिरामा महिरा

होर्'य'र्गर'र्यदे'र्केश'निव सुर'न'य'नक्षुन'यर्दे। । १८:र्ये'दे। ५र्गेद् सर्हेग्।नहेग्रस्तेरेदिन्सुरस्याग्री खेतुःसम् क्रींनग्वित्रःन्सेससः नश्चेत्रानहेत्राययायर्देत्रात् स्वीत्रायाः स्वाप्तायाः स्वापतायाः स्वापत्यायः स्वापत्याय ৾য়য়য়ৢ৽য়ৼ৽৻ৢ৽য়ৼ৽য়৽ৼৄৼ৽য়ৢৼ৽য়ৢ৽য়য়য়য়য়৽য়৽য়ৼৢঢ়৽য়য়য়ৼয়ৼৢঢ়৽ गुर्रायायार्केशानवि द्राय्युत्रायात्रुद्रशायादे द्वेत्रित्रशेश्रशायी नश्चना गुरा सहर्भित्र । ने या द्या सेंदि कें राम वी यथा सम्बर से निर्देशन ने सेंदर न त्रासन्दर्भेत्राम्बर्धायात्रसुन्वते महिर्धाणे संवेशस्त्र ग्रासे ध्रायात्री अमिर्वाश्वाराधित प्रतिन्द्र प्रति । विश्वार्दि । श्वेर्या स्वीत्र स्वीत्य स्व यशन्त्रम् । ध्याने या ग्रामा के विषा ग्रुश्य त्वा में दि के शासी प्रमा वा धुयाने न्या या र स्र र या सर यो या नेया य विव र प्र य सुया व या सिर क्रॅंशर्अं । निश्चुःख्रम्याने देःख्याने निमानी यास्त्रेन महे नियासे निमाने मन्त्रनह्न न्त्री कें ना नी या अर्गे हिंदया मन्त्र हो दाया वही वा प्रयान विद्राया म्रायाम्ययादे निर्मुप्तदे सेययाग्रीयात्त्रा नर्मेन्यययाग्रयायययाउत् यासहर्त्ते। दिवाग्यहानह्न सेवानियाणे क्षुति देना पुः क्षेवान यासहन त्रभाद्यान्त्रभूरानां विवादवेषियाते। नश्चनानत्रभाश्चानवारेषिः वेषा <u> न्यारः के अः निवेदे 'न्रः में 'धेद' सदे 'ग्रेरः में । ने 'धर मुः अः यः में अः नावदः ।</u> विगाला भ्रेमारु:मॅंशगावदःविगान्यश्वरादशःदगेःचलेशःग्रेशःग्राथदःद्रःदेरः दें निर्मे श्री स्वाया स्वीत् स्वाया स्वाया स्वीत् स्वाया स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वाया स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वाया स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वाया स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वाय स्वीत् स्वाय स

व्यासक्ति सं त्योयः स्त्रित्य स्तर्भे स्त्रित्य स्तर्भ स्तर्भ स्त्रित्य स्त्र स्त्रित्य स्त्रित्य स्त्रित्य स्त्र स्त्रित्य स्त्र स्त्र स्त्र स्त्रित्य स्त्र स्त्य स्त्र स्त

यानुरासेस्रायार्केसार्देवातुंगाहेराना इस्रायाचेना केवायार्के साम्या नश्चनःसरःवर्देनःसःनर्भेगःसवेःधिरःनुःनेःनगःवःभ्रुगःसःवःवर्गवःसर्गः नन्द्रग्रह्तेव में निवामी शकें वा प्रतिहिं। । दे व्यानश्राम्य प्रति यदे श्वादी रद्धाराद्या रव विश्वाचा या से प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प नरनिह्न पर्दे । भ्रे सून परे सुने भे कंटरा पर सुन हैं विराध सुन न्रेग्रयाया के अप्ते क्रिया वर्षे विद्यान क्रियाया है। इसाया परि ८८.क्ट्रियाश.यब्ट.स.लुच.स.कॅ.स.याश्वा.स.ची.सबर.क्री.८.धे.तच्या.स.तका. नन्दर्भ । वदी रदारवा वा वर्षे द्वा है अद्येषा अप्राह्मे विष्ठ है । है। स्रायदिरानस्यानहिंदानेवाणा माववाणरा ग्राहर सेस्रायानह्या नरःग्रवशन्वीवारान्ता वृहः कुनः वेषवारायः भूरः राजन्नायः यः यर्दियायायराययायाववरयादायीयाग्यदानुदान्तुतायेययाद्यादान्त्रीरा सूर्भे त्रापर राम् दिले ना इसामर देश मंदे के त्रध्य की सर् गश्रम्याय। सून्याययाग्रम्। सुन्यसून्यार्वेन गुन्रक्र्नासेसयान्य यार विया यो शा शिर यसून वियाय से सस विस हिंग हिंग हिंग हो । वा या क्रिन्थ्र सेस्रा भी अर के ना है से रामा । दे से रामा स्याप सर ना ने स्राप्त स्था ने स्था ने स्राप्त स्था ने स्राप्त स्था ने स्राप्त स्था ने स्था ने स्राप्त स्था ने स् ळ नर्गे नर्गे अ र्शे । विशने भ्रम् नुदे मिन विदे नश्र सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध स उं अ श्री निश्रावार पावि दशायअ नर्शे द द्वी अ धर पाश्रु र अ हे श्रु र स्वा

यशक्षित हु मेरानम वर्षुमानर्थे । देवे भ्रमानि हि स्थाय वस्र र प्र न्वावा सन्दर् हुर दरदर दे साम्रवा चन्वा सामा प्राप्त दर्भ सामा सम्दर्भ सामा है। ने हैन प्रमा सेसम प्रने नवर न से मसूस इत प्रासे न हो न है रा र्शेर-पळम्यायरा हो दा हे दा ही या ग्राटा के या हिनाय पर से हो दा है । वे.यट्याम्याळ्याद्रेराश्चेत्। वियार्था वित्यूटायाभ्रवयासे.व.च्यया मन्दर्भेटाहे सूर्पेद्रस्त्रु छुट्द्रिष्ट्रिक्ट्रे विट्टेट्ट्र्भुट्या ग्राट्स्र सेट् ঀৢয়ৼ৻ৼৢ৻ঀয়ৣৼ৻ৼঀৢঢ়৻য়ৼ৻ঽয়ৣ৾৻ঀয়৻য়ৢৼ৻ড়ৢঀ৻য়৾য়য়৻য়ৣ৾৻ৼৢ৻ঀ৻ড়ড়ৼ৻ড়৻ वयात्य मुद्र ले सूर नगाया दश सूर न निर्धित सुर सुर शहर से नशहे छिर वसेवान्यास्यास्य से स्थान्योवायाया से समुन्धियायायी गर्वेर सेर वा सिस्र वारे निमा हिर र विद्या विकार वार हिर रेग्रायास्त्रुत्रः स्थापे। । यार्वेदाययाद्वे प्रयोगायाः उद्या । यञ्चे प्रायाः सेंग्रयः र्ह्से दे द्या विषय प्रम्य शुर्व याद व यावया विषय या शुर्व असी श्चु-८-पार्धेश-पावव-त्य-हे-पर-श्चेर-श्चेप-प्रदे-प्रश्चायायश्चराया ध्ययः दे। सेसस उद ग्विव ग्वार प्यर दुर नर्दे। विश्व हे विवा हुस स दे गर्थे क्षुरार्श्वे द्राये । क्ष्मा नमसादी नमसारा स्टानिद राषा वर्षे वारामा नन्द्री । पार्षे श्रु ने ने श्रू राय श्रु ने द्रा राय श्रु ने द्रा राय श्रु ने द्रा राय श्रु ने राय श्री ने राय श् ঀৗঌ৽ৼঀ৽য়ৼ৽ঀঢ়ৼ৽ঀ৽য়৽য়ৄ৾৾য়৽য়৽য়ৢৼ৽৻য়ৼঌ৽য়ৢ৽ঀঢ়ৼ৽ঢ়ৢঌ৽য়ঌ৽ৠঌ৽ रवाः अंके निर्मान्यः व्यान्यः स्थान् । यात्रः व्यान्यः व्यान्यः । यात्रः व्यान्यः व्यान्यः । यात्रः व्यान्यः व यश्रिव महिरामाक्तिन्यम् स्थाळवारायदेन्तरावीरा हुरावान्यवित्

ळणशन्दरणि अणाण्य रहाणे करणि जिस्स्य स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य

न्गर-सॅदि-क्रॅश-चित्रा न्गर-क्रॅश-द्र-सॅदि-ध्रय-दे। शेसश उदाधिदार्दे रेंगामें । हानादी दे त्यार्श्वमामाश्रामादानादाना ही ही रा लर्भिश्वित्राचित्रः वह्निक्षुः ने स्वर्धः ने स्वर्धः ने स्वर्धः ने स्वर्धः ने स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः र्स्नेनर्सेन्य सुवाहिन्यम् उदायानह्त्वा श्रीसामिन स्त्रीमान से प्रतृता में। । नगर के रागहेरा परिष्णुयादी सेसरा उदावस्य उदादी । इ.न.दी दे यान्धिः श्रु : सेन् : सम् : सूना : पदे : न सस : स्र : न स स : स्र : न स स : स्र : न स स : स्र : स्र : स्र : स यावरायमें । यदी वे वया के रायवे या हेव से में । द्यार के राया शुरा मदे खुल दी ह्या से समा वसमा उदादी हिन की में दारा दार दिन पर नेशनक्रेन्छिर्देन्त्रामीर्देव्यावश्यीः नश्याश्याश्याश्याश्याविर्व्याश्या नर्दे। विःभ्रेषान्नो नायन् नान्न नुन् नुन् ने नामायन् वारायने या ह्या था बेर्'सर'बर्'ह्रग्रथ'सर'च'र्रे'तुर'शेसर्थ'द्रर'र्त्रेग्रथ'ख'ले'सूर'द्रर'चहुर्थ' मज्ञानिरास्युद्रान्यान्। देयात्रायदे प्रानुद्रासेययायास्य देवेतः यःश्चेंदःचःगहेशःश्चनःवःवश्चनःचहुशःवशःगदःशगःवःवहेवःयदेःगर्वेदः वर्गुर-वाशुर्यायात्रस्य याउदाकी विदायोग्य विदायोग्य विदायोग्य विदायोग्य विदायोग्य विदायोग्य विदायोग्य विदायोग्य भेभेगमम। देनसुरमाग्रीमात्मामान्द्रमानेमान्द्रमानामान्द्रमाने

वर्षेयानभ्रेत्वयान्याः भूतः श्रेतिः नवतः नवतः नवतः नवतः वर्षेवः वर्षेवः । वर्षेवः हर्नान्हेर्नायदाहर्नायाची स्नान्यायाच्याच्याची स्नान्याची स्वान्याची स्वान्या त्रथः या हें द्रान्त हे या या दा प्रमान के या की स्वाप्त के या श्री या विकास की स्वाप्त की या की स्वाप्त की स यदे महेतर्वे । नगर के अनि विस्वे धुव दी स्ट मे अ क्षेत्र यस होत यदे सेसस उत्ते | दे त्या चु न दी है के नदे हे मारा से वर्दे द पर हैं मारा यदे ह्या क्रिया वहीं व र् पहुंचा यदें। । दे प्यर स्ट वी दें व्यव व वार्ष हु हे यःश्वरःतःन्वे राष्ट्री गर्यः ग्रुने यः नर्यस्य परि सःश्वे रादः हेरा पर वर्षे नःसःधेत्रिं। नश्चनःसरःसेःतुसःसदेःश्चेरःर्रे। । प्दीसःत्वाः र्हेसःवाहिसः रार्झेटार्स्ट्री वाववानदेग्वामस्याउदाग्रीसम्बन्धवानायार्स्ट्र वर्हेगायरें न खेन स्वा मान्य व्याधिन से मने मित्र वर्गे न संस् रोटानोर्यालुर्याययायाटा। क्रेंग्नागुर्नानुराकुनारोर्यया । क्रिययादा यर सेस्र पदि दी विदेर से विष्ट्र स्व संक्रिय है। क्षिर के विस्व या नर यार.ग्रीश.प्रग्नेम् । यगाय.श्रुषाया ग्रॅट.टश.ग्रॅट.ग्रिम.श्रुषश्यश्या । यार. र्वावर्गमंद्रिः सुवार्म्यरास्य । विटाक्ष्यावार्षे । पटार्मावहिं । । रेगम सेसरायर्देरसे प्रमूरमें वियागशुर्यार्थे । ग्वितप्परारमुयावर्डसा यन्दरम्यान्द्रियान्दरभेरस्थास्त्रस्थान्दरम्यावत्रम्भः वर्षेत्रस्य सर्वेदर्यः स्थितः न्वायन्यनिन्द्रभ्वत्रञ्जून्यम्भः स्वर्त्त्रम्यस्य विद्रम्य यशम्बुद्रश्राद्या दर्गेव्यस्त्रेवाश्चित्रयश् श्चेत्रयश्राव्यश्राह्य

त् ज्ञतः क्ष्रतः श्रीः श्रेश्वरः श्रीः त्रान्त्रत्यो । विश्वरः श्रीः श्रेष्ट्रतः श्रीः त्र्वरः श्रीः त्र्वरः श्रीः त्रायः विश्वरः श्रीः त्रिः श्रीः श्रीः त्रिः श्रीः श्रीः त्रिः श्रीः श्रीः त्रिः श्रीः श

বার্ম'বা

व्रममान् भ्रीमान्स्र मान्य कुषाया

कुशन्त्रभून पर्भे तुश्रस्र्यात्र श्रेस्य प्रस्त्री न देन दिन प्रम् र्कें ५ वर्ष अ.स.स. हो १ वर्षे ५ के स्थान हो १ वर्षे ५ वःक्षर्यास्त्रेत्ते स्वयुर्वे विदा यवः द्वाः येवः सः दद्वीराः विद्याः रोसरायेद'रादे कें ना क्रेंन्या १ सरा कु र साय दे कें ना नक्षु र से र ने र नन्त्रायायाळेतात्री वियायर से दे सूर्त् सुदे । दे त्यारया यह या नश्चनःयरः भ्रे नु शः श्रु अ न् अ श्रे अ अ श न श्चे न । न व न । न र ने । व र ने । य र ने । य र न । त्रागिर्दिन्ती वुतः र्केंद्राया नर्देशा गाहतः त्राधी दर्गे शास्त्रा व्यापा वयसः उद्दर्भे प्रवद्देश विषा रेवि के अपनि के के प्रदेश अअअप अक्षेत्र पार्टिस नदे कुं से द की भें न न विद र से सरा न भें र सर्दे र र से प्रकृर न दे कुं धेव मशके विने मार्योगामाधेव हो। यस श्रुव यस। विने वि श्रु नामाववः

र्तरः इवः र्रेवः र्वा । हेः भ्रूरः चश्रदः चश्रवः यः व्यव्यः श्रुः चश्रुरः। । वेशः गर्रास्याने। है:भ्रून्यन्त्राचे रहेन् सुर्या ग्रीयात्या प्रायाया है:भ्रून् नन्द्रम्भि । अर्दे हिन् ग्री देव प्यम् ने प्येव हो। वेद श्रुम्य ग्रुम् कुन से सयः <u> ५५५:कॅर्अ:नवि:५८:ध्रुत:५:श्रु:५:घ्रुर्अ:४:४५:५;श्रुर्अ:४:४५:५;गुर:ढुन:</u> ग्री सेस्र अस्त र् प्रमुर हे ग्रूर क्वर ग्री क्षेर में प्रायर् वा वी प्रर र् प्रायर अर्देर्न्यहेर्न्यरक्षेत्वयुर्न्स् । विश्वान्यरक्षेश्वविदेश्ववश्रुवाश्वः नरःवाशुर्यास्य। ववाःक्रियानविदेःभ्रम्यशःश्चःवदेःश्चिदेःवायवः।वःसेदः ग्रम्भी अदे न्नम्न् ग्रुम्स्य स्वेश्य मित्र ग्रम्से । दित्र ग्रम्से पदीम प्यम्से मार्से इससानक्षेत्रत्रसेससानक्षेत्रस्य हुन्स्य हुन्स्य हुन्स्य । दे द्वारा श्रुरामान्द्रा सेसराउदायायाँ श्रुष्ठा उदावन्तरीयान्द्रा वदासेसरा याने स्टामी सादवाश्चरा द्वारा वर्षेत्राचरा वर्षेत्राचरा वालवा द्वी दिनो साद्वराचा व्यत्त्रें न्या द्वा वर्षे न्य रोसराग्रीः श्रेंसारा महिंदानर त्युराहे। दे द्वापी राश्चेंदारोसरा महिंदाया गान्याम्ब्रुम्यामवे धेरार्ने । ने क्षरावर्ने न व वे ने न व व व स्थान नवग्रन्भे रात्रने त्र्रान्ते ग्रान्त्र राग्राम्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य र्रा ।गावराधराष्ट्रमः र्वेन र्वेन प्रमान के प्रमान स्वाप्त निया । गावराधि राम्य प्रमान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त धरःश्रूरःवः। देःवेः अर्देवेः र्देवः गान्नः अःधेवः धरः खुः वः विस्रशः ये दुवेः इसः

ने स्वर से सका न से न श्री न

नरः हुदे लेश नर्गे द्वश क्षेत्र द्वर दे द्वा मी खुव्यश दे अदे द्वश ग्रह गुरुद्यःध्यःस्टःस्टःचीः व्लुःस्यानःग्वदः वदेःखुग्रयः गृत्रुदः वसः हुदेः वेशनन्गामी सुः अन्तर्भुरः रें वेशनकन् डेर्ग ने वस्र अन्तर्भारः अर्दे दे र्देव धिव सम पर्दे द सम श्रूद दि। श्रि म प्रमे प्रायमे प्रायमे प्रमे प्रायमे सम्बर्ध व स वयानकुर्यंत्रेनिक्यानिहेव केव से इस्य से हैं में दि त्रोया पर से सहर यः वर्गार्के वर्गान् मुन्यम् इसमाहे निमासहन्यम् वर्गार्के दे शुःद्योषः राम्युर्याया विवासहित। दे व्ययः यस्य स्थास्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य यार्वे द्वान्यार्थे वात्रात्या के या श्री निष्टा ने ना विद्या प्रात्ति वात्रा विद्या त्योयायात्रस्थायां वाश्रुदार्भेशायावे सुद्धायाये नन्द्राया में स्राप्त क्षेत्र प्रवेश्य वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वयायः बुदः श्रूदः विदः या बुदः यो 'देवः यो या शः सें दः विदः सवदः सदः सें श्रूदः वशा नन्गानीयाग्रम्सार्वे सानाम्स्रयाः भूनयान्त्वान्दरात्यसार्वे सानु इत्यान्याः नन्द्री विदेवे नक्ष्रन गुः स्रम्यन्द्रास्य स्य स्य स्य वे विदानह्रम् से स्थर *ৡ*ॱऄॺॺॱॸऄॗॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॗॖॸॖॱढ़ऻ॓ॺॱय़ॱढ़हुॻॱऄॺॺॱॻॖऀॱॸॺॣॸॱॻॖॱॺॱॻॖ॓ॸॖॱढ़ॱढ़ॆॱॷॗॸॺॱ वर्वेदिःनक्ष्मनः इति स्ट्रेटः र् नगरः दगाः में रहेषः वक्कुरः यः वहु गः स्वि गः हेरः यः द्याग्रीशक्र्याताश्चार्श्वरायश्चात्र्यत्या श्चित्रश्चेत्रश्चरायाग्चेत्रत् वे ने दे ते सुन ग्रुप्य अर्दे प्यश्चा शुर्श्य पा श्रम्थ र प्रम् प्रम्य स्वर्थ र प्रमान मास्य कर् ग्री नक्ष्र न् ज्ञाता क्षेत्र न् मास्य क्षेत्र मास्य मास्य क्षेत्र मास्य म

चश्चनः चुन्दः सेन्यनः त्युनः निर्देशेनः में । सूनः निष्दः निश्चनः चुः निर्देशः स्वानितः स्वानित

ने ख्रम्यं म्हा वित्र ग्राम्यं वित्र वित्र ग्राम्यं वित्र वित्र ग्राम्यं वित्र वित्र ग्राम्यं वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र ग्राम्यं वित्र व

শ্রমণ মিমমণম্বীদ্রমার্শ্বীদ্রমণ্ডেরিনার্ভুমণ্যানার্ড্য

शेशश्चान्त्रेत्वश्चात्र्यात्रात्यात्रेत्वात्त्र्वा वनशः

55:31

शेसश्चित्र्वश्चर्यात्रभून'राषाःश्चित्र्व्यात्र्वे स्वात्र्वे स्वात्रे स्वात्र्वे स्वात्र्वे स्वात्रे स्वात्ये स्वात्रे स्व

ने भूर श्रेंव परि से सस न श्रेन क्या श्रेंव राय श्रेंव सप्ति न श्रून धर: तु: व: व: क्षे: क्रें व: घ: दे: ष्यद: तु अ अ: घंदे: क्र अ: घर: घर: घदे: खुद: शूर: इरशमा भूरम्य पित्र के सें र् ग्रम्। वृह्य कुर्रा से सस्य द्वारे रास्त्र राया गुःक्षे गुःषःकैंदिःषय। गुदःकुनःवेःश्वनःषःक्षेदःसँदःग्रेदःपवेःग्रुदःकुनः शेशश्राद्यतः केत्र में इस्रश्राण्येश धित्र हीं। वेवा प्रमःश्रुप्र प्रेष्ट्र में मः होदः मः इस्र राष्ट्री स्वेर माने स्वाप्त के स्वाप नश्रम्भूनःसंभ्रह्मेरःस्र्रम् वित्रं वित्रेत्रिः श्रीमः लेखा वार्वेदः व्या श्रीमः र्थेर-होट्-स-य-त्नु-त-सेट्-स-प्यट-ह्ना-सर-ह्नेन्।स्य-हेट्-स्व-हेट्-द्गाय-नःसधीत्रःमदेः ध्रीरःर्रे । विश्वाम्याद्यात्रः हो। श्रुनःमदेः सद्यः सुर्यः नश्रुनः यदे^ॱवनर्यः गुरः सेस्रयः ग्रीः नक्षुनः यः त्यः क्षुनः यः प्येतः यदेः ग्रीनः क्ष्रियः देसः <u> ५८.स्.जश्राचित्र ५.क्षेत्रःश्रुष्ठश्राच्याः विदःविदःक्ष्यःश्रुष्ठश्राच्याः विदःवर्याः</u> अ:रुवःनरःग्वदःभे:वरुवःनरःवेशःदशःगर्गःहेरःश्चेदःयःयःशेंग्रशः मन्त्रुत्रमायायायात्रहिं स्ट्री । श्रुत्रमासेत्यम् तुरास्कृतसे वर्षेत्रमें

क्षेट्र्स्ट्रेश्चर्यात्वेत्वय्यात्वय्यात्व्यात्वयः क्षेट्र्यं स्वाप्त्यक्षेत्रयः विश्वयः विश्

বাইশ্যা

য়য়য়৽ঀয়ৼ৾ৼ৾য়ৢয়য়য়য়য়য়ৢয়য়য়য়ৢয়

दे त्यून स्वर्थ मु अ र्चे व स्वर् प्रस्ति स्वर्थ के कि ना स्वर् मु अ स्वर् मु अ स्वर् मु अ स्वर् मु अ स्वर् स्वर्

व्यवत्रत्रत्र्युअवः शुत्रः भेतः हुः सेटः र्वे विषाः षी अः ग्राटः वर्दे दः प्रवे व्यवसः तुः वर्षेत्रमासेन्ने। न्येमन्नम्यसार्देस्यनिविन्ने। क्रुःसबदन्त्रासः शुन्राययाग्राम्यव्ययातुःवत्तृत्वायायेन्ते। यात्रेवायायेन्यायाम्या १दे १८ तमान १ तम्म १८ दे १ तमान १८ तमान १ तम न्यात्यानहेन्यम् नुर्दे विश्वार्शे वित्वार्से मेन्यान्य स्त्राम्यान्ये व। इस्रास्ट्रास्त्रम् न्या ग्राया ग्राया न्याया न्याया व्याया व्याया व्याया व्याया व्याया व्याया व्याया व्याया मदे भे अने हे है है दे हान स्था हुत न भी हुत कुन ही से स्था ही क़ॖॱय़ॺॱॻॖॣॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖय़ॱॻॱऄॺऻॱॿॸॺॱॻॖऀॺॱॺॿॸॱय़ॖऀढ़ॱय़ॱऄढ़ॱक़ॕऻढ़ॎ॓ॺॱऒ<u>॔</u>ऻॸ॓ॱय़ॱ श्वेरः हे ते न न न ने न जिर्देश । जिर्देश र जै अस ने ग्रावर हे न न र ने वर्ष मदे नुर कुन ग्रे से सरा गहेरा ५८ मन सारी ही तारा या से ग्रास पेरसा शः हैवायायायायेटाहाळेवारीं गायायायीययायवटारी।

नशुट्य र्शेन्य भेते हे १६१ तुवे देश देव नर्झे सामर से त्यापवे हुं के तुवा र्रेदि-र्नेत-तु-पाशुम्यान्योवन्यया देय-र्नेत-ते-ह्रेत-त्य-ह्रेतिन-ते-तिपालः वह्रमाना है किया सूर्या भारता की भारता भीर सूर्य सूर सूर्य सूर सूर्य सूर सूर्य सूर सूर्य सूर सूर्य सूर सूर सूर सूर्य सूर्य सूर्य सूर सूर सूर सूर सूर सूर सूर सूर सूर स हेशळेंवानन्दानम्झुर्वे ।देवानुन्वराचीशन्ते हेमायर से हेंवान यानसून्य अप्तासहन् प्रदेशसदिहे सिट्यानकुन् दुः इट्यान्यानसूनयाः स्री। वर्देशके वर्षा ग्री का वस्र राज्य स्वास्य के सामित्र के गुवःह्नियः श्रभूरः यं केवः से यह वा केवा विष्या विषय विश्व वा विषय विषय विश्व वा विषय विषय विषय विषय विषय विषय बेद्रपदेदेवित्रकेद्रप्यकेर्वे र्रेट्या वित्रप्रे स्ट्रिया प्रवेद्ये वार्य के विकास वार्य विवास विवास विवास विवास नशर्देवन्यानदेखंयाकुरानेटान् श्वरकाने। हे सुराह्यन् वृत्रकाराह्य निवशः ग्रीः स्त्रीनिवार्यसः नुप्तसूरः नुप्तिते स्रोस्याः स्वाप्तिना स्वाप्ति । ग्री:न्य:यर:न्त्रुट:नदे:लॅग्ने:क्र:इयथ:ग्री:ब:क्ट्न:देने:वे:ग्रुट:क्रुट:सेयथः <u> न्द्रायः केत्रः संगाः अप्याः भी प्रायाः स्वाराः मेत्रायाः मेत्रः संग्रायाः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स</u>्वाराः ग्रीश्रायेग्राश्चर्यम् नग्नाग् द्रश्राक्तृत्याच र्चुश्रायदे त्यस्र नवर से क्रुश्रायद सहर्भेता देव ग्राट नम्भव पा वृत्र पा त्रे न्य स्थेत पा प्राट प्रसामी पावर ॲंट्र शुः हॅ न्या या रे या परे रे वि श्री खुट प्टर है । या ये ट्र परे रे न्या या या या समयः केंद्र प्रमः देशः प्रते प्रस्य सः इस्य सः चतुः प्राप्तः । से सम्य उद्य प्रसे द वस्रअःभेवः तुः नस्रवः विदः के सायः न्नः यः इदः वनः विदः युदः भेराः स्वः यीः क्रेंनर्यानेत्र हु: कुटान अदयायय। ५:5ूट (यटा वि उच्चे न सुटा क्रेंस या श्रीम्यायात्रःश्रीत्रश्रीम्याम्ययाष्ट्रत्रः न्ययत्रम्ययानश्रीयायवे के दे न्वायर्ने स्वायः श्रें वाश्वारं प्रश्नित्तः है। स्वायं वित्र हो न्ये वाश्वारं प्रश्नित्तः स्वायः स्वयः स

ने न्या मी त्यस ने ने क्रिंद मा हिन नक्षेस मंदे ही मार्स न्य पुरा स्वर ग्री-र्नेव-द्यीव-रेड-स-र्येग्-प्र-ह्रेन-वर्ग-पर्झेस-स्वान्य-स-र्केस-प्रवेश हैंग्रयायार्धेन्याह्मस्रयाश्चित्राक्षेत्रायाहेन्द्रित्यावस्य स्वाप्त्राया र्श्वेन् स्वायाम् वार्षे न्याया स्वाया स क्रयश्यवियान्, न बुदाव्यार्श्वीन् यावयान् यान्नीयार्थी वियाश्चान्ते । गशुरःस्वःस्रवदःद्याःद्रदःवयायःबिरःस्यासःपदेःयसःयसःयसःदर्सःपःविः वरःश्वरःश्वे। वेवायः केवार्यः क्षेत्रः स्वय्यः श्वेशः वश्ववः याद्यः विष्यः विष्यः मदे शुम्दरायमायम्माया दे या दिस्याया में या विकास मिन्ना मि <u> वर्षेट्रेन्स्यियायवेःलेयार्याट्र</u>्नेवर्याट्यायायाय्यात्रहेवर्यवेष्ययाश्चीर्यया राप्तरः बनः र्रोदिः त्यया वेया पाप्तराणे भेया ग्रीः र्रोहें प्रयाप्तरः भेया स्वाग्रीः कः विश्वास्त्रम् अश्र भ्रम्भनाया भ्रम् विष्वास्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वस्त्रम् विश्वस्त्रम्यम् विश्वस्त्रम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम् विश्वस्तिम्यम् विश्वस्तिम् विष्वस्तिम् विष्वस्तिम् विष्वस्तिम्यस्तिम् विष्वस हे स्रेट्राय देवा यदे ने अर्जन हरागुव हैं न ग्री नदेव याया नहेव यदे यस ฏิ:ริม:นาระาฮูาฮิ:ฉนิ:ฉมาระาวมีราสมมาฏิ:ฮัสมาระายกมาฏิ: ळ लेशम इसरा ग्रीशन सुन नर्गे रामदे सुन ने । ने सून न प्यान मार

 त्रा विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्रां विश्वास्त्रास्त्

ฐญาราสผมาฤธุสารุรามาฐญาราคิมารุรามาฐญารายกมารุรามา चलाचा वेशःकुशासराचगायःश्रूवाःहिता देवेःदेवःकुत्वासरायता देः इससायदी हो नामान्या भीता । श्रुवाना हो समानिससाय हो नामा । क्रायागुराधी अर्केना थ्रदाया अर्थित संदेश महामार स्थान हिना हिना पि.श्रमा.मीश.सर्गे.पर्डे.लेश.ग्री.मोबर.श्र.लेश पि.श्रमा.मीश.जया.स.लेश. ग्री माव्य से ने या या से माया से माया से से से साम्य सर से प्रस्ति माया स्था मुलर्रिते न बुन्य पद्भेता देखें अपिव निष्ठे न अर्क्ट वद्द प्रिट्य शुक्रे <u> हॅ</u>णश्रान्द्रेरातुश्वश्वात्वात्रार्थितात्वात्राश्राद्रेराकेन्द्रान्द्रेरात्रे स्वाप्त्रा इस्रयाते श्रुव सेवायान्य वर्षात्र वर्षात्र स्थाते । श्रुव सायासेवायापिः वनराः इसराः सः संदार्भ सर्वीः ह्रसः ५८ वा । ह्रसः वाः सेवाराः पदिः वा बुवाराः ८८.५२.५.लुव.बूर । वावव.लट.कूट.त.इस.ल.चक्क्ष्रं स.कूर.च बुट.वय. गवर नर्से स से नर्गे य वे य वे र नर्शे नर्रे स युव प्रम्य हैन ग्रीय र्से माया मृःसरः त्रुद्रशः त्रुयः नगागाः केटः। देः कृःधेतः त्रुद्रः कुनः सेस्र स्ट्राः रुषासुरनञ्जयायारुरसरञ्चे दायानहरानार्टा द्वाया विस्रयानसुरसायाया शॅग्रथाम् अर्थाने देशदेन अर्थो नदेश्वेशस्य प्रक्रायस्य ग्रह्म इस्रायरायवर्षायायस्थायाया विस्रकारा विराक्ष्यासेस्राया ग्रीःसःर्रेषःहुः द्वेतःसः दुवाः धरः नवाः धरः नक्षुनः धः विदे दे हे वाकाः धवेः ग्रहः क्रनः ग्रे भ्रेनः धेवःव। ने वा के सुव में ने न्वा वने भ्रानः नु स्व क्रा के समा

धेव'राख्या'या'इयया'ग्रीया'हे'विया'हा'विया'हेर विटारे'र्या'स'र्रेया हु धेव' यःगवितः नगःयः शुतः वर्धेतः यसः श्रेश्रयः श्रेष्ठि । यः ययः य। वर्ने हे स्रुयः न्ः शेशश गाःविवे मुल रें र शूर पार पार पोव पारे शासुवा रें व शि शिर रर मीभावायाचीत्रायाचे भीषास्यावळवायाधीत्रात्या चुस्रवायाचीर्या मा नर्डेसः धूर प्रदूष में हो सायम्य स्त्री । नर्डेस धूर प्रदूष ग्रीस नगर स्याम व्ययमा मव्हारक्तारोस्याम्यदेशस्य स्थान स्रेवायान्यात्रम्यायात्रे प्रमोप्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्याया नने न्वा वी अप्य वार्वे न स्वर शुरान्या शुस्र स्वर वार्वे वा वार्वे स समा विन् ग्रेमाग्राम् नम्भयामानुषा दुरास्रो नामे सम्भाना समा न्वायर नश्चन्या नश्चयाय नुवा दुर दुवा विस्र संग्री सर्रे वा हिस्र संग्री सर् नभ्रयायात्रुवा दुरानर्वे दायदे यार्रिया कुर्ता नभ्रयायात्रुवा दुरानर्हे व वर्युनर्याग्री:सर्देय:हु:द्वेद:य। नङ्गय:य:दुग:दुर:नययःगहद:ग्री:सर्देय: हु: ध्रेवःय। नञ्जवः यः जुगः इरः वेयः र्वाः यः र्वः यः हु: ध्रेवः यः प्यरः र्वाः यरः नश्चनशन् ने त्या भे सुन में ने प्राप्त में नि प्राप द्धनः भ्रे। यदे व्यः भ्रे भ्रें दाय हेदा ग्री द्धारा ग्री या से विष्ठा हो दे द्या दे श्रें दाया धिर्यासुःसःन्याः परावशुरःरी वियासी । नेयानः सूरिने शेरिशी हिंग्यायः र्धेन्द्रभन्मः भी कायायनन्त्रा केत्र में यान क्षेत्र से या की या य <u>र्राची क्रेंब्र प्रवे क्रेंब्र क्रेंक्रेअ स्वयाव वर में क्रयया परि प्रवादे रेय देवा</u>

अमें निवेर् अधीव में विश्वास्त्र मानि निकारी नायाने श्रे तायार्थनायायदे श्रे ताया इस्राया श्रे श्रु के नाया त्या नश्रान्य यनि र्सूर हिन् शेर् में नियायायहन में सेन्द्र थीत थी। थेन्द्र ने या कें ने में श्रुमासदर विवास्त्र केवारी धीवाते। यदी सुरादे । धरादवा मधीवावादी दिवा <u> न्यायदे नित्राया अर्दे ता शुया नु हिंगाया यदे थे हिंगा यो लेया है ना यदे या </u> केव में म् कुन प्रवे कु व श्रुक इसका निमा विन प्रमान हो कि निका অ'ব্বহ'র্স্থর'ঝ'বস্তুব্'ঘরি'গ্রহ'ঐয়য়'য়য়য়'য়'য়ৢৢ৾ব্'ঘ'য়৾'বৃঢ়য় धरावशुरावा देवि देवा शाया साधिव हो। शाव द्वारी से दे त्या वरा श्री वा पा यार्श्वारायार्डे र्वेर्यूर्यारारे रे पीत्युराख्यायात्र्यायात्र्याया यः अधीव हैं। विश्वास्य न्य द्वारायश्चा सुर्यायश्च सामे स्वार्य स्वितः इयाद्यायायाय इक्ष्ट्रिं द्रायराया श्रुद्र संभीता दे द्राया यी दिवा है न इवा सा इयायान्वत्रः इत्यायस्य व्यायदे भ्रियः वित्यायः इत्यायम् र्नेत्र'न्य'रा'य'वात्रय'रादे'ळे'यात्य'क्कुय'त्र्यय्य'ग्रीय'रे'य'र्स्ट्रेट'रा'हेट्' ग्री हैंग्र भरायदी रहें अ ग्री अ दी प्रकंट क्रु प्रम स्थे त्रा है। अद वें अ प्रट प्रम यरयामुयात्त्रययाम्यात्रयाम्यात्रयम् । वितास्य वितास्य । वितास्य वितास्य । वितास्य । वितास्य । वितास्य । वितास्य ग्रीः भुः नदः भे भे अः नदः विदः यः श्रीमा अः यः क्षनः से नः यदिः नमः यदिः नमः यः विद्या |देद'ग्रे'क्रॅ्न्स'य'र्स्सम्सप्टराष्ट्रिद'य'सेद'ग्री| देवे'स्ट्रेस'वर्स्सस्य क्रिंस्स भीवा सेस्र उद्दार विष्ट में द्वी प्रेस के विष्ट में प्राप्त के स्वाप्त के स्वा

ने भूत्र्राष्ट्राया युष्या युष्या युष्या युष्या युष्ट्र खुना सेसस न्मदेः असी पार्थे नायने त्यापात्र अस्ति ग्रुम् कुन से समान्य स्वा कुन ग्री र्श्वेत्रयम्भी देव्यम् निष्ट्रम् व्याप्त स्त्रीत्र स्त्रम् सरसः क्रुसः नर्डे सः खूदः यन् सः इससः ने : न विदः न विनासः सदेः पो स्वेसः हे : नरःश्रुनः धरः अह्नार्दे । देः वः वदेः श्रुनः छे अः ग्रामः नगवः श्रुवः हिं। देवा अः ग्रीः ব্ৰ'ঐবাঝ'র্ম'ঐবাঝ'র্মা | শ্বেম'র্ক্কুঝ'গ্রী'র্ক্কর্ম'ররম্ম'ডদ্'ইম'র্ম্ডুরাঝ' सराम्चानायायने ने 'र्नेन'न्सासदे नार्मेन'सदर'धेन'न्ना देन'म्मर'रेन'मेः क्रॅनर्यान दु:८८:क्षे.पहीन्यायाया:श्रीन्यायायायायायाः स्थान्याः सुर्याः सुर्वाः सुर्याः सुर्यः सुर्याः सुर्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः क्रियायायाने हिनायायेन छी। यनया क्रुया ग्रीक्रियासुन सुयार्क्षेयायायाने । धिरशसु नडवानम् मुनवे भ्रीमान हैं ता सुरा हैं सका भीन । नर्ने ना से नि क्षें पर्दे हिन् ग्राम् अपर्दे र विग | देग्र अप्ते हिन् ग्रे अप्ते सुर वि न इस यर वर पार्चित गुर ही अपार्श रेवि भ्रे कें अपि अपि न कें तर हें तर से प्राया श्रु कें वा अ गुव-हु-द्युद्द-वर-द्युर-व-इय-पश्च-ळेवाय-ग्रीय-पोषेव-श्चे-व-दि-द्या-यःश्रेंबर्यानीय । पारःरेयायःग्रेःत्। र्वेदःग्रेःश्लेंदःययः प्राप्तेययः उदःग्रेः निना । पर देना या ग्री ना वदे हैं हैं के या इस या ग्री के या है देने । दे नि वह व ग्नेग्रांभात्त्रस्य सम्बुदायदा सुदासा सुदायदा स्ट्री स्ट्रिस स्ट्री वे नावर्यास हे न ने। यने सूर के या बस्य या उन सूर मा हे न न न के या बस्य या उद्दाद्यीयाश्रास्त्रेद्रास्त्री । तदीश्राद्ये दे निविद्यानियाश्रास्त्रस्रश्रे हे स र्यः हुः र्वे : यरः वुः यः अवः भेवः भेवः भेवः भेवः भवः यः यः यः यः विष्यः वयः यः उर्ग्येशग्राराह्मसायराधीःह्रेषायदे केंसाहेर्यदे तर्ह्य तर्हे । यह देषाया ग्रीत्रा देन्ग्रीः भुःळन् सेन्पान्मधे भेषाळन् सेन्पान्म सम्सा क्रुयाग्रीः विरःळन् सेन्यन्य भेन्य सर्वे अयर्वे व्ययः वर्ष्य व्यवः स्वतः सेन्यन्य दिन् श्रीः <u>न्शेयःवर्षिरःळन्ःभेनःमन्दःन्श्रम्भःशेःषदःवनःक्रभःमरःन्नःमःळनः</u> बेर्यायार्थ्या हिर्गीयाग्रारेग्वित्राम्ब्रीयार्थेर्ये र्शे । यर द्रेर त्र शुर्ने के ते कु अर्कें र त्र ग्राय त्र य स्तुत परे कुर पी य नर्भेन्द्रम्पत्र्म् नदेरके देश्याम् हिमाया है उस केन्या है । कु सकेन्या ঀৢয়৶৻৸৾৾য়৾৾য়ৼৢ৾৾৻ড়৾৾৸ৼৢ৾৻ড়য়৸ড়ৠৣ৾ঢ়৻ঢ়ঀৗ৾৾য়৻৸য়৾৽ড়৾৾৽ঀ৾৽য়_{য়ৢ}ঢ়৻ড়ঢ়৻ भे केंद्र पानिवर्त्य अनकुर्परक्षेत्र वर्षायन पाकेवर्षे वा भे के धराधुर् र्ड्याविवा त्या ब्रस्था उर्दासिवा प्रदेश्य सार्टे र्डसा वार्टे दारा दे र्डसा वै। अने अर्चे अर्चे न प्रवेर्श्वे त्रुन् न सूर्या पायनु सानु । त्यसाया यान प्रसारा स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्व त्रायरः रापञ्चायया वाश्यायते भित्र शुरायय वित्राया स्मित् वेरः व्यान्तरः क्रनः येययः न्यवेः क्रेन्यः यायाये क्रेन्यः वे स्टानीयः स्टान्सुः বর্না

हिराधराधी सेससामाने त्याने न्या करा है। है वा ही वा होना ना ही वा है वा ही वा है वा इशःशुःशे वेदःधशःद्रशेषाश्रायेदःग्रीःश्चेदःधःहराया देःववेदःदुःभ्रूषाःशः इस्रशःग्राम् क्षमः विमा सर्ने विश्वास्य ग्राम् मेरी देव मानु वा विष्य सम् वाश्रुरमःमदेः भ्रुरः रे सूम्राज्य ने उसामी मार्करानर वित्रास्त्री सुः स्रेवामः उदान्ती से समारे पारे पारि वि पाद्या हमा सम्मायदा सहसार माने पारे पादि । त्यादाने १ १ मा १ १ वेदाया से दायसाय सम्भिता सम्मार स्थान वा विन् सम् नु सूम इन्याम सूम कृत मन लवन के या केन वा मुसा सम शे हिंग प्रते के जुर कुन शेस्र प्रति श्रें न प्राप्त स्था रहन कर प्रत्य प्र नश्चेषा केत्र सम् त्र कुर में । मेर मेदे त्र म् मुजा मुजा वर्ष सम् पाश्चर स मशने उस मुक्ति स्टिन्स स्टिन्स दिन्स ह्या दत्या नाया नायी ध्रे'न'कुर'नठश'र्स्रे_वर्'र'स्रे। विश'र्सेन्।शाध्रिश'तुन्।ग'र्धेर्'पर'नश्रुरश' धर्याने वित्व त्रुवर रेवायाया । देयाव क्षुवया वेद प्रवे र्श्वेन प्राप्त विवास ग्रीयाचित्रामित्रे भीयाम्याची नियम् त्राम्याम्यामित्रे विष्याम्याचीयाम्य नदेः सन्। ज्ञान्तरम् क्षानाया स्वायायाय वहुत्रा पदे से के क्षेत्रे साम् र्ह्में प्येत्र से दर्भे राया वितर् । क्रिंट या के दर्भे या स्वरं के राय स्वरं के राय स्वरं के राय स्वरं के राय इनान् श्रे वारानित्रान्दा श्रमान्दा श्री राजान्दा ब्राह्म राजान्दा विदाय है। श्री न्या से स्वर्ण म्या के स्वर्ण में स्वर

वुनायासर्दिनम् लेवायानत्ता क्षेत्रायम् स्वा विकायान्ता स्टार्यानासुस रायम् न्रीम्याराराञ्चरायमाञ्चेत्रारा चित्रारा हिस्या सकेता नन्त्राम्यान्यम् । विमानन्त्राप्ता क्रम्याम्याव्या न्धेन्यःहेश्वेन्यनेष्वस्य उन्देश्वेणयदी । धेन्यःशुः शेर्हेण्यादेश्वानः क्रनार्चे । विश्वानाश्चर्यायात्रस्थराययदायवियानराश्ची न्दार्धिः देवः वे। नन्गामहेशस्य भेर् हेन्स्मा हुलेव मश्राम्य म्यान स्थान र्शेनाराने सान्ना प्रयान्त्र में ज्ञान वर्ष के वर्षेनारा नित्र यशसुः क्रेंत्र या क्षेत्र है। यावतः र्वतः त्र्या या या या सुर का यका या प्रतः देवः धरा द्वेवः के व्येषाः हुः स्रदेवः धरः वेवः धरः ग्रावः वरुः चर्त्वार्यः धरः स्र न्वान्यःयःने स्ट्रमः वन्दःश्चे। श्चेतः श्वां वार्यः स्रवायः स्रवः यस्त्रेतः यस्त्रेतः यस्त्रेतः यस्त्रेतः यस्त हे। ने व्हासाधीत तान्सी वासाय सम्बुदात्र सा श्रुताय सुत्या ना वेसान से वासा यम्भूरान्ये। पूर्वे अयम्भू मार्भु वायान्य प्राचान्य विवासी स् रेग्रायाययाने क्षेत्रायायीर्यायया हित्रास्य विकास विका वरेनशःकुषःवरेःक्ष्रःसहर्भःवरेःमानरःविनःहःकेःक्षे। वरेःधेनःकेःवेंगः , पुःर्वे विश्वा अप्तर्थ । ज्ञान्त्र विश्वा क्षेत्र क्षेत् वहें त.र्. गुरान्यायळंत नडरा शुः वरें र पवे शुर हैं।

इसायि मिट्ट में सुसायि मिट्ट सेससाद है सार्श्व प्रमा

र्शे सूत्रायि र्श्वे स्वायाय स्वायाय विष्ठा विष्ठा

यदे वदेष्ट्र श्रुवायि हैं नाया श्रवाय उदायिं रान् श्रवाद हैं नाय थे ळॅंशःग्रे:नन्गःवहेंदर्;ग्रुशंद्रः चलेशःगहेदःग्रे:धेंदर्द्रशेशशंपर्नः न्यायर्ग्ने स्प्राप्तके प्राप्त प्रमाप्त स्वाप्त स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त वर्त्ते.र्यरायर्त्रायम्।यर्थराय्येयर्त्ते.वर्त्ते.य्येट्राय्या विभवाराय्यः श्रीटाहे ५८.घट.क्य.ग्री.श्रेश्वरार्श्वेट.य.५८.५५०.श्रुश्यश्चेट. न'बस्राउन'य'वने'वे'वनेदें'वने'यश्वादने'वज्ञून'र्दे'वने'य'र्धेव'न्व'न्न' केशन्द्रीम्यादने प्पॅन्सूयान् नयस्यान्यानेयान नर्मेयाः धेव नश्य दे न्या य है क्ष्र रहेश रा के न उस न् केंश में नद्या वहें व हे प्रसेय प्राप्ते या धर के या ग्री प्रमासे प्राप्त है । इस के प्रमा नश्चर्यायाने रहे सार् त्यायाने प्रमानी हे सामाहे स्कूर र् त्यों निया है दिया *ॸ*ॸॱक़ॱॸढ़ॱॾॖॕॻऻॴज़ऻढ़ॖ॓ॴख़ॱॼॸॱक़ॸॱज़ॴॴढ़ॸॣॸॱऒ॔ॸॱॺॴढ़ॖॴॴॱॴ देशक्ष्रानुग्राश्चायाः क्रुवः देदावा वश्चेदाश्चरः श्वराद्यादी । देवे श्चेरः त्यश्चित्रयोष्ट्रायोष्ट्रास्ट्रेयास्य स्ट्रेस्य स्ट्रेयास्य स्ट्रियास्य स्ट्रि र्वेन हुर हुर या महिरा से प्यायायाया हुर। यस ही से प्यर निर्माण हिरा

য়ৢॱয়ळ॔**ৢ**৽য়ৼॱঀहेत्र'पदे'ॸয়ेषाয়'য়ঢ়ॸॱह्य'उंয়'ড়ঢ়'য়'য়ৢয়'पदेॱয়ॗॕয়' वयाययरारे अभी अयदेव पार्रा यदे या अयदे प्रवृत्तर्रा यदे या श्रुव र्शे । दे प्यट मविदे स्थान नदेव मिहिरामहिरामहित त्य प्रते न राख्य स्था स्या प्रश मभा सुर-५८-देवास-मस्य-दिर-५८ सः ग्री-क्रिस-बसस-४८-१८-५८-१० र्सूट-ख़ॖॻऻॺॱॺॺॱऄढ़ॱख़ॖऀॺॱॺॱॸॸॱॸढ़ॏढ़ॱड़ॺॱड़॔ॺॱॴॸॱॺॱॻॗज़ॱय़ॸॱॻऻॸढ़ॱॺॱ वनेनश्रासदेर्भेत्रप्राम् इस्रास्य वर्षेत्राप्तदेर् क्ष्रप्राम् कुर्द्राव्यक्ष नुदे के अ दुर वर् गुर अ पकें या नर के के रहे अ पदे कु पत्र का क्रापर वर्हेग्।रावेः श्रुत्।रावेः ळत्।यान्देशः यात्रे यायतः खुत्रः तुः मार्वे दः ग्रेतः ग्रेतः ग्रेतः ग्रेतः ग्रेतः वर्त्ते न क्षेत्रे हें र्रे र है। विवा विवा वी वी वी वी राष्ट्र र विवास है न मानेशानुम्बदेशम्यार्थाः स्रुप्ते निष्ठे स्रियाः स्रेनि स्रुप्ताः स्रेनि स्रुप्ताः स्रेनि स्रुप्ताः स्रोत्रे स् खु:नन्द्र-स्मः हुर्दे । खुरः ना खुअः मदे 'र्ने क' को अर्ने 'र्ने दे 'श्लेन अर्ने 'श्ले 'न खः र्शेनार्यापार्श्वेत्रप्रवेरभ्रवर्याधेत्रप्रश्चेत्र्वर्यायार्श्वेन्यायार्श्वेत्रप्रायार्श्वेत्रप्राया श्चेरायरः द्वेत्रयायः हिंगायरं विराहेगायरायरात्रग्रायायं सार्वारः द्वेत्रश्चे। दे <u> ५वा से नम्रेन पर में र हुर में न प से न हैं।</u>

नेते भ्रित्र अरम्भाम मार्चे प्राप्त मार्चे प्रमान म्यान स्थान मार्चे प्रमान मार्चे म्यान स्थान स्थान

नश्चनमान्यानामा इसमायन निष्या ने विषापा नुराधी त्रा मः इसमः ग्रदः श्चितः परिः पुषः ५ । गुमः दमः १ । दमः १ । याः १ समः शुः पेदः वुमः परिः कुरःकेषियायार्थयाःश्चेतःयःश्चेतःश्चेतःययःयरःतुः त्रुयःदःरेरःर्धरःश्चेः र्वेग्रथं सम्द्रियं शुर्वेद्या सम्द्रमुम् में । ने सूम से होन सम्मानिया श्रे भेश्रामान्द्राश्चेत्रम् यात्र श्रिम्याम् व त्रुद्रम् यात्र व त्रुप्त स्थाने व त्रुप्त स्थाने स् र्शे विश्वासुन्ति। स्टायटासुटायान्वतायटासुटानस्ति हेटानसूत्राया त्रायदेः परमे तर्ने पर्मे प्रश्रे न्या भी मुर्गे अर्दे गुत्र यथा प्रमाय भी वर्षायान्त्रमायवदार्थे सेंद्राहेषायावर्षात्रमानुसान्ने प्रवीप्तर्याया **য়ৢॱয়ৣ**৾ॱनॱढ़ॆॱनर्र'য়ৢ৾৾৽য়য়ৼয়ৄ। ।য়ৢৼ৾৻ড়ৢनॱয়ৣ৾৽য়য়৽ড়ৼৼ৾ঀ৾ৼঢ়৾ঀয়৽য়৽য় र्रेयः तृष्ट्वेतः प्रवेष्ययः प्यदः प्रेंद्रयः सुः से किंत्यः तुः ततु दः ग्रीः ययः से । विसः ৴ে৷ য়য়য়৽ড়৽য়ঢ়য়৽৸ৼৼয়ড়৽য়৾য়৾ঢ়ৼড়ৢয়৽য়৾য়য়৽ঢ়য়য়৽৾ঢ়য়৽য়য়৽ र्से हिन्य सर्देन पर नर्से न्या स्थानिय विश्व निष्य ग्रीश्राधीनियायाया देवाशानुपदि भ्राक्षे द्वेरान्ये हे कुप्यशादनर हे कु से द द दे वि प्रमायकुम में । दे प्रविद दु द से प्राया प्राया से स्राय प्रमा न्रीम्रायान्ते। नर्भायान्त्रीयाया न्रमे। के'नर'वे'नर'भे'नेत्। केंत्र'सेंहरापाद्येग्रायप्य पत्रुट'नर'भे'नेत् या सर्स्या हु ही त्रायदे प्रधेषा या या या यह विद्या सम्मित है है । स्रेराय है दा छी । न्भेग्रश्रायदार्श्वःश्वर्द्धः विश्वर्धः विश्वर्षः विश्वर्धः विश्वर्

मुश्यम्भ्यात्वश्यस्य प्राप्त स्वर्धः विष्यस्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

नु कुषे हे भ शु हो न पर हेन पदो व ही के भ हे न प्येन पदे ही म ने विन व न्वीरशन्याश्वराहे महानगरारी व्यवागा देखे नया देखे न रान्द्रसम्बद्धन्त्रास्यसम्बद्धन्त्रास्यस्य सम्बद्धन्यः सम्बद्धन्यः सम्बद्धन्यः सम्बद्धन्यः सम्बद्धन्यः सम्बद्धन ग्रेग्र मार्भे न वर्षे राय स्थान क्रम्भावनुद्राचाने ते कुंगिरेगास्मायाधिवार्ते । ने से देशे माने वा ग्रे कुल'नदे'श्रुश दे'नदिर'मिलेम्राराम्स्रुश्ये'वे'लर'न्म्'यर'द्युन'रदे' कुःळद्भेद्रायात्रत्र्याञ्चवान्य द्वराधाराद्रवान्य स्त्रीत्र स्त्री वद्यादावे द्वा वर्ने सु है। वर्रेन् वस्र न्दर्ध ने राग्ने कें वार्य कर से न्यर से देसराय लर्रियाराष्ट्रियाराष्ट्रिया वेशक्षिरकेर्यन्त्रियार्या है असेर्यस्यायाश मर्भात्रभूत्रामात्र्यास्य ग्राम्या ग्री में विष्या । ते प्रवित्र विषय विषय स्वरं भूति । नर्भेन्'त्रसम्'नकु'यम'नेम'मर्भुम'मर्भे । न्वो'नदे'क्रेम'मसम्'ठन् यशरेशमरक्षेत्रमर्थे । प्रमे प्रदेशयशक्ष्य से प्रमायश्रेत्र नर्दा विशक्त्रश्यम्यन्त्रन्ति । सर्वेदःर्यः सुनःग्रीशःग्रमः। नामः केः यर्याक्यान्यायात्रास्याची । क्यापराने स्वरायहेना हेवानविदा । पावया येट्टे के के अभी विक्ति के स्थानिय है के स्थानिय के अपी विकास के व वर्रे भू तुवे वनमान्द्र ने मान्यायारेया हु श्रेताया तुनानी मानसूमाया क्रेंन'राने। सूर'न १८ रा सूर सूर्या रा ५८ स रेंग हु से ना वाहे रा गारे बुद्रास्ट्रिन प्रेव रहे। स्वारा शेषाबुद के न दुः सद्रा वाववा प्रसापद दूर ख़ॗढ़ऀॱज़ग़ॕ॔॔॔ॸॱॾऀॱॺॢ॓ॸॱॸऀॻॱढ़ॹॗॖॸॱॻॱॿॺॺॱॸॸॱॺॸॱॻॏॱऄॺॺॱॻॖऀॱऄ॔ढ़ॸढ़ॱ

म्रुयामानसूनामायार्स्नेनामिनेस्यामानेनाम्यामानेस्य

वेगामळेत्रमें श्चे त्यानसून कुंयान्मा

| ह्यान्य स्ट्राह्में हे ते हो या साथ क्षेत्र स्वते कुष्य क्षेत्र स्वत्य स्वत्य क्षेत्र स्वत्य स्वत्य क्षेत्र स्वत्य स्वत

वहें त'यर क्रें न'तर क्रें स'यर वें गुर्भाय प्येत प्येत क्षेत्र से । दे प्रूर प्यार हार र्यायया व्हारकुनःसेस्रयाद्मादेरकुषाः विस्रयाग्रीः श्रृसाराः पराद्माराम् स्नरः नम्पर्देन्याय। स्वग्नान्य कुन्ये अभगन्यवे अर्दे से वे से दे से से प्राची अर्थे वर्ने खर्भा ग्रुट कुन से सर्भ द्राये निर्मुन सदे निर्मे निर्मे के सदे निर्मे भागित न्यान्यस्वाराने न्यानस्यान्य स्त्रास्त्री यायाने स्वेदावसायस्यास्य र्या ग्री अर्थे र श्रें र यहवा अर्थ अर्थे य र ग्री या ग्री अप्पर द्वा । धरावहें वर्त्व व्याधि श्रीराधरायाधीव। धर्मेषात्र व्याव धरे श्रीरा षरः अधिव व वे। हारः कुनः श्रेश्रश्चान्य नह्वः र्वे धिव यमः नेषाः यमः हाः है। दुयाविस्राणी हैंसाय पराद्यापर व्यापर विदान के या प्रविदान देश ग्रम्बेर्पस्य मुलेर्परेष्य दर्वेषा प्रस्था मुलेष स्था । देश द्वा सूर्यः वशःश्चेतःवर्देदःश्चरयावयःश्चेयायात्वरयातःवितःतःवह्वायरावश्चरावयाः वर्ने दे वनश्यवार दे | विष्य भूतश्यविष्य विषय विश्वापिष्ठश्य मान्य विषय क्षेत्राची त्रिम् केश सम् वर्गुम नश्रेत्रा हु नश्रुव सम् हुर्वे । विहेश सही कुषा विस्र राये दिवे प्रवेषा सम्। दर में हि सूम ये व सुवा राष्ट्र ने सामवा वयाङासूराद्राहेयाग्रुयाग्रीसूरावाइययावश्रुराद्धयाद्रा हययावाश्रीरा नर्रेशःस्माराङ्गस्यराञ्चरायराम्। ज्ञान्यराधनः विदायराञ्चेत्रायः सेदायरे स् र्रेषः पुःदेशः धरः प्रकृष्ट्रविशः धरः चेर्द्रश

गशुस्रारायागशुस्रा ग्रारायानस्रुतारादेगावि ५८। ५२.नस्रुताराह्सस्र वर्षाकुषान्ता ने पाहे सूरावस्वरायवे रेसायवे । न्तर्ये दी वासपाववे न्त्रे न अवयः धरा ग्राम् ने वा सार्चियः हु से वा सार्चियः हु न सार्चियः शेसरान्धदे नक्ष्मा गुः इसरा वर्षे नश्चित गुणा दे गुमा से सरा ग्री प्यया ग्री ग्वन् अवतःन्गा न्यू अः परिः क्रूँ अः केतः परिं । न्यू नः निवे । परः ने रः वन् । क्रू श्चेत्र'म'तर्,'न'ते'श्च'या केंना'श्रुत'म'ते'श्चेत'र्ज्ञा'यश'न्रस्थरा'हे'ग्रार्थ' त्रःयः वर्दे अश्वः धेवः बेदः। देवः श्चेदः प्राद्यश्वः प्रवेदे विदेशाया विवः। नर्गेर्ना भेताया देवासम्बन्धाने स्टामी शाम्यानाम् वा न्यान्या नर्गा नश्चन'रा'भेर, रादे हिर'र्से । ने 'भर क्षें ग्रामिश्र अ'र्टर नश्चन'रा ग्राह्य अ'य र्श्वायाम्याग्रम् ग्रम् यो प्रयाप्तया व्यया उत्तर्भया स्ति। वितः इगामी अमें निप्त क्षेत्र प्रमुक्त क्षुत्र चेत्र मान्व ची अपे ने क्ष्र की नु अप्त आ ध्रेत्रज्ञात्यः नस्य नदेश्यावे छेत्र मं सर्केषा धेत्र देश

महिराया महिराया विदेश मित्र म

देशकी वटाकुनाग्रीःश्रुँ ५ पाक्षनशके नाक्षशः हैं ग्रथायाके स्वयः नमग्रानुःसेन्यम् नुर्म्या नेर्याया नेर्यायसम्भेतः सळवःहेन्'पॅन्स'सुः€ॅग्रस'रे'सेन्'पम्। न'स्रेतेःहेव'वन्'वन्याळःरे' रे.४अ.लूर.सम्यानभ्रममा.मेर्यामा.मु.सम्बा हेव.क.सममा उदान्यास्त्र सुयार्क्षे वायाया निवादवीयार्थी । दे प्यदावादायार्श्वे दायदे वेदियार्श्वे न निरामान मी यार्श्वे न प्रवेश ख्यान न मान निराम होता है न सदे दिस्रिन्द्रिं प्रश्ना की अवदाग्राम् वह्रस्र सामा स्रामा दिवा स्रामा क्रियायायायविष्युत्वियाप्यों यार्थे । प्रेप्यासुत्र्युयार्क्षेयायायाययाग्रीया ग्रम्फ्रिंब्र सिम्स्र मित्र पुर्वे प्रायम प्रमानिया है वर्षे मित्र मित्र प्रमानिया है वर्षे प्रमानिया है वर्षे श्रेष्ट्रीं न न्या नेया गुर्धे केंगा प्रयास्त्र में राष्ट्री प्रविकास्य स्वयाया स्वित्र है। अर्थिनाः सरः वहुनाः केरः व्येनाः पवेः दक्षेनाः यो नायः सरः से दः यः विनाः दर्गेयः है। मान्वर रु.व श्चिमा सप्तर कु भीर प्रमानी प्रमुख मु सम्बाध प्राप्त है है हैं श्रुवास्यानकृताःसः सुन् स्वः र्वेषायाने छेन्। ग्रीयानकृताःसरः वर्गुरः नवेः ब्रेर-र्रे । भिरास्य प्रिंद्य सूर्य क्री प्रवाद स्वित प्रश्न की प्रवाद स्वित स्व वर्षासूरायटाकुः इस्रयायायनदादे हे त्रसेयादुः वर्षे या वेशार्या सेदार <u> सूर नर्याय भी वर्ष या तु वर्ष वित्य सुन प्रयादी वर्ष वा या या या रात</u> हो यो सुवा नशः धुः सः वः सूना नस्वा नदे वर्षे । वर्षे नशः सरः वर्षु रः र्रे । । देशः दः श्ले । न ग्वित्र र रे र जुंग वर्जुर नवर कु से र र र से स्त्रुत संवे कु लक्ष से वर्जुर बिटाहेशाशुः अश्वतापदे कुं प्यटा धेता दुगा हु देशा प्रशासे के वदी राधेता दुगा

शुक्षः क्षेत्रः विकार्या विकार्य विकार विकार्य विकार विक

ने भूर हेत ने भू तुर्य ग्रह से सर्य ग्री हुँ न या या हूँ न या त ग्रह । शेशशाग्री ग्रुप्त दी पादिशाश्चा वर दे स्टामी देव द्राप्त पावव ग्री देव नश्चान मर्ति । देवे भ्री मर्देव महिषान सुनामा व स्थित स्थान स्थान है त्या ग्वित् ग्री देव न्यून प्राया विष्य स्वर विष्य स्वर ग्राद्य स्वर ग्राद्य स्वर ग्राद्य स्वर ग्राद्य स्वर ग्राद्य वा ने प्यम् से समा उत्राचार्वे न प्रके निम्म र से से से माना के माना वि भ्रे त्युर्न नथा वावव वार्वे द वावे द र वडश र वश्य से वाश सर हैं वा र केन्यावनर्नेन केन्यें धेन्य राम्य द्धारा विस्रमान्यें मार्थे । नियम स्वितः मायवराद्ध्राम्बित्यान्बित्यान्बित्याम्बित्यायम्बत्यान्यम्बत्या विसरान्यार्थे से विरायमा स्निप्यार्वेन या है से सूसाय दे पर्वेन प्राप्ते स श्री विदेशक्षर्यस्य म्यान्य विद्या मेर्या विद्या स्वीता विद्या विद्या स्वीता विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या नेशायत्वावशानगो नायाश्चरतु । प्रतायावव नेवा केवा सेवी । प्रता गी दिंद है भेश रव ग्री अधुश इस सर में ए प्रदे वदे वदे पर में प्राप्त है । दे'णदःशेस्रशः इसः परागणेदसः प्रायः से दिदः तस्य वस्र या पृतः श्रीसः सेससासहसामान्या से नियम सामान्या है सुर वर्षे न वर्षे न नु यदे प्रशासुम में निष्ये के विषये के स्थानिक स् तुःक्षेप्तयः नदेः नर्हेन प्रयुक्षः हें सप्ते क्षाप्तकारे वे पे प्रवासी माने वे । पे का वर्देवरमहिक्षर्भेरि मञ्जूनरम्य भ्रीवर्ष्णा हुरिक्षःहै। क्षेत्रक्षरह्वर्देवर्यः र्याय हैं वा । या हैं राप्ता या वें प्राय्वें प्रायं प्राय्वें प्राय्वें प्राय्वें प्राय्वें प्राय्वें प्राय्वें प्रायं प्राय्वें प्रायें प्राय्वें प्राय्वें प्राय्वें प्रायं प्राय्वें प्रायं ग्विरः वरुषः प्रथा । स्टः देवः इस्रायः वस्रायः उदः श्रेत्। विश्वः विश्वः गविरार्देव इसारा वसरा उदारा से दार्दी । गविरादा र में या दावेश से सरा <u>रक्षेत्राश्वःत्वात्रश्वः यात्रश्वः वात्र्वः वीः व्यतः हेशः ५८८ विद्रः यः वशः</u> मुँवायानेश्वास्याम् । व्याम् वि'ग्रव्यायाञ्च्या'अर्वेट:र्'श्रे प्रविषायाँ । रे'स्ट्रेर:द'श्रेययापदीं राज्ञायरः वर्देन्'मः इस्र राग्यान्यने वे निर्माणका मित्र मित्र क्षेत्र मित्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप इवानी सुराहेवारायायादेरायाहेटादवेरार्थे।

ग्वतः र्नेतः इस्यः पात्रस्य अरु र पार्ट्य या स्वायः प्रायः विश्वाः प्रायः विश्वाः प्रायः विश्वाः या स्वायः स्वयः स्

व्रेगाःकेत्रवस्रम् उत्सूत्रायाः हें मार्यः मार्यः मार्यः मार्यः स्थाः वर्षः स्थाः व्यट्याश्चित्रहेत्यायाश्ची कर्म्यायाश्चित्य याहेत्यार्देवर् श्चीयाहेत्याया वेदिशः श्रेनिःषः से निष्मान्ता ने पेनिः दः निष्मानः निष्म कुषानिस्रमायेन हिराने पानुसामा निस्ता सेस्रमा हता निस्ता स्वापन धेव पाया नहेव वया हुट निर्देश सूना नस्याया निर्देश स्था से हिं निर्देश न्वो नवे ग्रुन्दि वर्न न व के मूर्य हैं न या है न या है से से के के निष्ठ के विष्ठ के ग्री:इत्यःवर्श्वेरःक्षे:हिवा:य:५८। क्ष्रवा:अर्घेट:वी:इत्यःवर्श्वेर:क्षे:हिवा:य:वर्ङ्गेयः मन्त्रमानी अन्ते त्यने अन्यम् नियो केत्र व्यवस्थ उत् नसूत्र त्या ने निया ग्रद्धित द्वा मी अ देश प्रमान श्रुव के दाने प्रश्रास्त श्री द्वी अ प्रवे श्री माने वेदिशः श्रें द्रायदेव प्रमः से द्रायदेदा । मनः त्र्या याहिशः या से श्लें द्रा । इयादर्रिमः इसायमः से हिंगाया विवाके दासवयन्ता वर्षेमः वर्षे विका श्री । दे ऋर द वेग केद य पहुंग धर पर्दे द ध द र हो द द ग द सार हो से ।

ขมามมายางาฏาสมารายมงาชรารณิ รุกรารุามรัฐานนิ ฺฎรงา देशन्। ইন'ইর'দের'ড়েঅ'গ্রি'র্মিদ্মার্শ্রুদ'অ'स'কল্ম'দের'অম'सম' वनराते क्षेत्र पासे गहिंदानाय वीं सरायरा दे त्या कवारा प्रदानाय नदेः ध्रेर्रे । ध्रुयः अर्चेन परे चेन परे देन द्रं केया नदे क्रा ग्रेपर केंग्र यदे व्यवस्त से रहे व्यविस्था है। द्यो र्से द्यो र से साया या स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स अविः इसः नापेरः वस्र अञ्चर् से । यद्भारतिः स्वीरः से । से स्र अञ्चर से । नार्हेरः नदे वन्या दे न वे न स्था विद्या हो न विद्या हो न विद्या वि धीन् भी त्युद्द निवे भी निवो निवि निवे स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय्य स्वर्य स्वय्य स्वय्य स्वय स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वर नर्हेन्द्रम्भागस्ययापाययाने विषयानर विष्टुर नदे भ्रेताया इस्रायर रें द्वारा विषय स्वर्थ के स्वर्य के स् केंत्र:बॅट्याय:प्ट्राप्तेय:स्वा:ग्रेय:वेय:ब्रेन:इय:यर:ब्रेंट्रप्ते:धेर:र्से । देवे भ्रेम भ्रेम पुरादेश है। ध्रय इस्र साम क्षेत्र साम्या । दे भ्रेम इस्राम्पेटार्स्स्स्रामाववा सिस्स्राउवासीमार्हेटायसेयानान्दा स्त्रिनामा इस्रायरार्श्वेरानामवन्। विश्वार्शे विर्देराधेनाग्री इस्रामधेरा ग्रुटानदेः न्नर-न् से वर्ते न व स्वाया स्वाया स्वरं क्षेत्र सान्ना स्र स्या सुराया स्वरं वा सा यर्ने दिसे निर्मात्र में दिस्या धीदा प्रिक्ष माधीत स्थित स्था प्रिक्ष या विस्था या विस सेससाउत्। होत् 'दत्र' साम्राह्म सामा विदायहुद हे नाया नहेत्र त्रा पे दे दे देत यश्चीरःव्यापदेगाहेतःर्रेर्देश्वाचेत्रःयाचेत्रयायाचीस्यापः व्यापदेन्या न्नो न न्या स्था स्था वितान् सार्थित स्था न स्था स्था स्था स्था सार्थित स न्यायी सव धिव श्रियाश नश्यश्यश मित्रे श्विष्ट श्विष्

रार्षेर्न्ना पर्न्त्वा पर्ने के स्थाने के स्थानिस्था में के वार्षा विस्था हिस्सा में किया हिस्सा हिस्सा में किया <u> न्यायर सुर्यायदाय ने नाया सुर्यो याने नाया सँग्राय पदे नर्वे न्यस</u> नशुरःनशरे दे देवे वर्षे र से । नश्रशमान्त्र दे शेश्रश्री नश्चन प्रापेतः वा नेशर्ना देनेशर्म राष्ट्री नक्ष्म राष्ट्री निर्देश वर्ष्य अदि निर्देश ममार्थसमात्ममार्थमार्थसम्बद्धितः द्वार्यः हिष्टमार्थस्य नक्ष्यम्य विश्वस्य नि र्रे नाशुम् । व्रामानहेमाग्री हमानानहेमा । नाहेना हे नाशुमा करायापरा गर्नेग्या वियर्शे दिःस्रम्यःहेत्स्र्यःश्रुयःर्संग्यःयःहःयन्तिगः वीशःस्टःद्राव्यव्यक्तिःदेवःखेर्यस्यःशुःह्रेवाश्वःयःहःवदःयःविवाःवेवाःयःवारः यान्यस्य स्थान्य राष्ट्री द्वारा है स्रेत्र प्रम्य स्था नस्र न स्य स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स *परि:हेत:५८:६ॅत:५८:वेग:ळेत:५८:वनश:५८:नश्चन:५:३४अ:ॲ८श:शु:* क्रियायायम् ब्रेन्यान्त्र सुन्यम् ब्रेन्यम् ब्रेन्यम् स्रित्यम् स् ह्यात्या हिट सेस्र में क्रिस्य प्रेत्र ही मान्द म्यस्य कर ही के स्थापित प्र

यम्बार्यक्रित्रं व्यक्तिन्त्रं व्यक्ति ।

ग्वितः धरः दरः से त्र अः दिवितः चय्य अः से व्यव्यायः से व कुं ते निहेश हैं। वें रश क्रें र त्या कवा शरा र र विसाय कवा शरावें। | रेदे गहेत्रसॅर्ने श्रुवः सन्दर्खंयाविस्रश्री । यद्रिया प्रयाशग्रारस्य श्रे भ्रीत्र प्रमासूमार्थे वा प्रवेशक के विकाल के विल् के विकाल के स्वानस्यानान्दान्वो स्वासायाध्य देटास्य स्वास्य स्वास् नर्दे। निवेश्वाहेन्स्र से नर्वेन्स्य न्या नर्देन् स्वास्य न्या नर्देन् । स्वास्य स्वास्य न्या मर्देन्यायाहे से सूर्यायान्त्र राज्यान्य मार्चित्र से नाया है ना सूर त्र-निष्ठानिदेश्वीं निः इस्रया ग्रीः श्वीं निष्ठा भी यात्रया श्वीं निष्या स्था श्वी निष्या स्था श्वी ब्रैंग्।रादे कुदे गहेद रें हो द्वारादे नहें द्वारादे नहें द्वारा है ता नहें द्वारा हो नहें गवर्र्, केर्दे । रे उं अपि ग्रुर् कुर से समार्थ हैं र पर सा बर् र स्रेरे र्भःग्रे:न्ने:श्रुरःवदरःन्गदःश्रुरःवदःश्रदःवःन्रेदःवश्रदःहरःनःन्रा यार. पश्चिमाया हो जिया मा किरमा सह में अक्ष में में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में रान्द्रान्त्र्रेत्रात्युवाधीः अत्राद्यात्यायाः श्रुद्धाः स्वात्यत्रः वे । । नन्नः न्याः क्र्याः ग्राटः कुन् च नवे कुं वे नविष्ठा है। ये अस्य नवे नवे नवे नवे नये नये न्या था थे मान्यायि द्वाराय मार्थित नाम्या निष्या मार्थि । निष्या मेर्या मार्थि । निष्या मेर्या मार्थि । निष्या मेर्या भी वै नर्यस्य मान्त्र म्हि से स्वर्थ मान्त्र मुं से स्वर्थ मान्त्र मुं मान्त्र मा नर्हेन् स्वाया ग्राम् देवा सेन् स्वर्ण स्वर् र्नेत्रायाम्यत्र्वित्रावेद्वेद्वेद्वेत्याः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्य

महिश्यस्वर्धाः से सारे श्रास्याम् श्रुस्यस्य । श्रुप्तिः से स्यः स्वास्य स्वा

श्री।

श्राचित्राचार्त्राचे स्वाचित्र स्वाचित

वाशुक्षायाने त्यार्श्वे वायवे देवायाया वाहे वा

श्चेन्यश्चे त्यःश्चेन्यदेखंयःन्य

र्ट्सी स्टावी अट्या क्या की रहें या श्लेष स्मान स्म

५८:स्र्

श्चेत्रपरेषम्धेत्रप्तस्य स्वा

श्चेत्रायदेर्भे ने पश्चेत्रायायह्यायदेश्वयम् श्चेत्रायदेरम्य ह न्द्येन ने न्यामी में त्यस्य निर्देश विष्टा स्थायमा श्री त्यापे से र्ने हेर्नार वे व्या व्या चित्र वस्य अरह र्म्स्स मी खुराय से माने मिर ळुनःशेस्रयः न्धंदेःसःळग्रयः प्रान्दः ध्रुतः हेगः झ्रेसः पदेः शेस्रयः पानः पीतः यन्ता नेयागुन्नस्यानश्चरस्यामञ्जेत्यमः ग्रुन्नदेनम्सार्थे प्रिस्यासुः यर्हेर्न्यदेख्यन्द्रम्यायी यसन्द्रा वेस यश्द्रस्य यहेर्न्यदे सेससम्प्रमानान्त्रान्त्रभग्त्रस्य मह्म्स्य सदि खुर्यान्त्रा मी प्रसार्थी । ने या श्रे व परि सर धेव हैं ग्रायाय है। श्रे व ग्रिव हिया ग्रावव या निरायाय वर्ते न इसमा भी न्त्रयान में रामा या से निहें माने दे हा साधित कर नित्र वर्ते नियानियोदार्थे न् सार्थे न् प्रसार्थे न स्त्रीत् प्रदेश कुषा न द्वारा स्त्रीत् प्राप्त स्त्र स् या द्वीत निराद्य स्ट्री | देशाव खुशाद मारा भी मार्च प्ये। श्रेसशाम् में में शुरामाक्षे वदी क्षरास्टावा नदिना मदे सुरा नदा विद्या क्षेत्र प्राची साम्राय उट्राया से रास्त्रे दे प्रदेश पात्र स्थापात्र गर्हेर:वेरा दे:डंस:रु:स:वर:वहर:वहे:वव्रस:तु:इसस:ग्रूट:सेसस:उदः यान्रम्ने वे क्रिं वे व्यापार्ये द्या शुः है न्या या या या श्री तुः पदे यम् श्री तुः नुः वर्गुर्र्भवते भ्रिर्भे । ने क्ष्र्र्भपर क्षेत्र वह्मा यथा नव ने वर्गे न न्त्र्य वस्य । श्चित्राचित्र स्थानित्र स्थानित्य स्था

गहेशमंत्री सुराद्रायेंद्रशः श्रुंद्रायः सेरः सुरायः सुरायः नर्डेअ'म'र्डअ'ग्रीअ'दे'श्रे दाये'सर'ग्रेद'र्'के'वश्रूर'हे। सेर'श्रुदे'वर्रेट्' ळग्रार्ग्यी:ळर्गार्हेग्रार्यार्थेदाय्याचेग्रान्यदाग्री:न्ज्ञानर्हेयायात्रेया ग्रीभाग्रम्भार्मेद्रान्मान्यस्थायास्थास्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस् धिरःगर्हेरःनदेःगेग्राश्रासेरःसूदेःग्रादःहःवहेदःसःनसवःनःउसःनुःसःवन् नर्नेग्'रा'बस्था'उन्'ग्वित'यापित्र'यादे'न्यस्था'रा'स्रेन्'व्या'रा'त्र्यानस्रोन् न्वें अःश्रें । ने प्यः पें म्यः शुः न बुदः नवे हे यः न्ये म्या यः न्दः न न नवे स्वरः ल्य-वर्श्वेशन्वेशनश्चेन्यह्निन्यम् नुदेश व्रिः वर्श्वेन्य स्वर्श मुख्यमः शुर्रासदे खुरायदे द्रा अर्थिया ग्राम्य विषय है । अर्थिया शुर् यायरायाया । श्रीयायपरी प्रमाळवायाययाया । भीतातुः या सुरयायया इशक्षे । भ्रेमामदेन्द्रम् ५ स्ट्रास्ट्रा । से सावसादके नद्या नर्वेद मश्रार्थिता । दे द्या भे प्रवाद से सम्बद्धा या देवा । विमासुमा भी पाउँ ता न-८-श्रुच-५-वा चर-श्रु-छ-क्षर-वार्ख-न-८-छ-४-श्रुवा-वाद्येयान्ययः श्रु-

ग्वितः नगरः उतः धेतः समार्यः नम्मरः निर्मान्यः सेनः सार्यः सेः समार्यः । श्चुःसःष्टुःतुरःनह्न्दःसरःनक्ष्रश्चर्यारेःयःळवार्यःसःन्वावाःनवीर्यःहे। नेःसः वेंगान्त कनार्या प्रति न्वर न्तु से र हे र हे र हे न के त से इसस न समास न्या यश्राग्रम्। श्रेश्रश्राष्ठ्रम्यम् निर्मात्रियाः हिन्द्रम्यम् । नेर्पायि हि व्यट्याशुरद्दितामा हो । दे स्वयानात्या श्रेतामा तत्त्वा माना श्रेता । श्रेता मःश्वरःयः ग्रुषःद्या ग्रुर्षः रुगुर्म । विषः ५८१ वश्चवः वरुषः वषः ग्रुरः। वर्रे सूर नर्गामी खुर न्दर सेस्या । सूर हेगा रे रे र वर्गे न हेर्। । माया हे से ह्वा दे त्वव प्रयो । शुर्य ग्रीय ह्वा केट दे से द ग्री । ग्रुट कुव वर्षेत यर प्रश्नुर व दी । ने दे रे व से न हे न से व स्था । वे य न न हो या से या स यश्राम्या नन्यासेन्वहियात्यासेन्येन्येन्येन्येत्र्या । स्वानस्यानेन बेर्म्गापुः बेर्गार्ड्स्यवे । सुर्याग्रीयान्वद्याय्यद्ये नियाय्युर्द्याया न्वायः नरः शेष्युरः ने वे अवश्यायाः धेवा विश्वाश्वर्षः स्था वननः य:तु:स्रशःतशुद्रशःग्रदःदेशःसरःवर्देरःतृषेशःसवेःश्वेदःसे सेतःसवेःस्र माव्यायान्यस्थानस्थानहरानस्थान्याव्यान्त्रे देवास्यान्यस्था दे क्ष्र-ह्यें से हुँ दः न दे नद्या हुद मर्दे सूस्र द्रान्यस्य स्यास्य स्थान मनावन यानिहरनदे हैं है है नुदे । हैं निद्वायम ग्रम वसमाउन नहरःनशःश्चःत्वः । नन्गः र्त्तेः श्चःत्वः यन्शः शञ्चन। । वसशः उनः गिर्हेर:नर:ळनशःगिडेगाःय। शिस्रशःउतः इस्रशःयः नहरःनः सर्केग । डेशः

र्शे । धरः ध्रेतः नसूर्याः प्यायाः ग्राटः। वीद्यः श्रेतः इयाः प्रीतः स्वाः अर्थेटः श्रुरः डिटा । श्रुट हे छेव से रूट मी एट शुर वा । श्रुव राजन्या मी श्रिय नव्या गवराग्ची नित्र हि. देवाय प्रदेख्य ग्रीय हिंगय प्रदास्य । वार विवादे व्ययायहिषायाया श्रेष्टियाया । वियायापारायविषादे व्ययायहिषाया यत्वत्रा । श्रे केंग् बुद सेंट ह्या हु न श्रुट द्यें यह है। । विद द है या परे न्यायित्रिं से प्रशुम्। वितासमायहेया हेतामार्सेया पर्ने पारस्याय। । सा विवाकें विदेशितायवर सूर्या नसूर्या नसूर्या । से प्ये में सहस्र सुरासदिः रदःनविवःक्ष्म । विद्याशुः यानहदः दे द्याः योदः यमः वश्चम । याः श्चितः र्वेरम्बय्याभेम्नाभेन्ययुरमे। । धिवाययाने नवार्थेन्यये वाहेरम् र्रे से दः सदर पे दः सर प्रमुस् । वार विवा पे दस्य सु वाहिर वास्रावसः सस नस्याया भ्रि.में.ग्रेयायारे न्यायार्थयात्यात्या । व्यार्थः स्यायाः भ्रेष्ययान्यान्यान्यम् । भ्रिम्यम् म्याः दुन्यम् सुम्याः स्वान्यस्य । यदे प्यय से द हैं द से द स न हो ना ना द विना हो व पर दे हे प्यय हो सकें ना दे खर्यायावत शुरावयायाय ययायाय प्रमायाय प्रमायाय विकार्ये।

यदे नर्शे द त्रस्था दे खेद न्या स्था के वाया नदे ख्रा प्राप्त हो देव र्रे केवे बेट न क्या दे भूत न हेत्र प्रवेश वर्षेत् वस्य गामा । गाय हे ने वे ग्राच्यायारुवास्य । ग्राज्येतात्रे साम्नेत्रात्रे साम्नेत्रात्र्ययास्य स्थानेत्रा श्राद्यम् । ने ते नर्डे साध्य पद्य श्री साम्य हिन्स । नि न्व के नि सा साम्य वे पर्ने प्याञ्चरा । श्रेस्रशास्त्र प्राच्या । स्वर पर्ने न ने वे ने तर्भे विश्वासी विवयपारमहिराय प्रेयाय प्राप्त र प्राप् ८८। श्रेम्स्यादमेवान्द्रा गहिरसेस्यास्स्रेयाम्स्रेग्नान्द्रा स्रेया राष्ट्रस्थायरः होत्।यदे प्रदेत्राच्या हात्। साष्ट्रस्थायर होत्।यदे प्रदेश स्थाय स माववरश्चित्राश्चित्रवदरञ्चराचराभ्री श्वराश्चेत्र वर्ष्य्यायायात्रा भेरा स्वेते र्र्भेत के याद यो सार मे सार प्रमुद्ध र स्था । यि दस सुर या हिंद से समाय से या नर्भे वशुर्गिर्वे । वित्रावहें व्योग्या शुरवशुर्गिर्वे नहीं नर्म । शुर कुन सेसस न्यस सास्य प्रिंस स्था सुर होता। विष्य विषय र्रेरःदशुरःनःन्न । अरःन्ना ग्रुरः कुनः यसः यः श्चेनः ग्रेनः न्। । ने वहारे र्वेरः रसर्देव केव कुष श्रेन् ग्रम्। । ग्रम्क्र सेसस्य प्रस्ति स्थान भेवा विशःश्वी दिःक्ष्रः होदः प्रदेः के रःश्वरः धेः हादः वायायायः हादः वः व्राप्यानर्गापावस्याउर्'नहर'व्यानुर'क्वानञ्चन्यापादरा नन्गःग्रम्भेतःह्रास्यास्य स्वाप्त्रास्य स्वाप्त्र स्वाप् वीशःसूरःखुशःवेदशःश्चें दःदवोःवःत्रस्रशःउदःशेस्रशःउदःवःवःवहदःदशःदः यर वेंद्र श्रेंद्र वाक्ष क्षार प्रस्ते विद्या विद्य स्राचित्रात्राच क्रिम् विचाराचरा विश्व हो निष्ठ मा स्राचा स्रोचरा स्राच्या स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा स्राच्या स्रोचरा स्राच्या स्रोचरा स्राच्या स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा स्राच्या स्रोचरा स्राचरा स्रोचरा स्रोचर स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा स्रोचरा য়৾৽য়৽ঀয়৾৽য়ৄ৾য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়৽য়য়য়ৼ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়য় वह्या । ने वयापर स्रम्यविव होन पर्ना वह ते सुसान् वस्य स्र यक्तियारारा चे से देखेरायया वियास समय में से रासकें ना द्वारा सम्मा निरा | दे मर्वियः स्टर्मे द्रायं वर्षः नर्षा न्या न्या हु। । विद्रायं दे वर्षे वर्षा वर्षः इस्रायम् नर्ययान्तरे भ्रम् । स्रोस्याय हेवा परे प्रसाय परे प्रवाहेवासा । वर्ते निर्मुद्रायान्य मिश्रासुर्यानहरास्त्री । निर्महरार्के या ग्राम्य मिश्रा श्रम्यात्र्यात् । श्रिः मेयान्मेयायान्यायीयाळ्यायात्राचा । श्रमः येवे । श्रिया नविव नन्याय नेयाय प्राधिव। वियार्थे। निः सूर निरानिः प्रवाधिव स्वराधिव सर त्रवस्यस्य द्रसः विद्रासः केत्रः संप्ता विद्रसः सुरव बुदः विदेशे साद्रीयायः नश्रश्रायदे क्वें न्यायहे ग्रथाय के दार्या नक्कें प्रमुं प्रमुं प्रमुं प्रमुं प्रमुं प्रमुं प्रमुं प्रमुं प्रमुं गैरा भेट्री

दे निवेद न् नुस्य स्वर्थ निक्षेत्र निष्ठ निष्ठ

यः स्टावीरः वहें वः प्रवेः श्रेट्राया श्रेवा वाष्ट्रायः वाहें हः प्रवेश श्रेश्रयः रा: अट: द्राः अट: द्रुव: अव्याः द्राः विक: त्रः क्षे ब्रेन'नर्भभामात्वमा वदी'न्या'बसमाउद्। हिन् ग्री'नर्देम'धेन'हे। विदी'वा नन्गामीं राक्त्यानन्गायासेन्। । ने यन सन् तुराक्कार्हेगायरान्याया। सेससन्दर्भ । सदसः क्रुसः नससः ग्रीसः से वितः स्रुसः सर्केना नासुरः। वेशःश्री । ५१% संसारासा श्चेतः हेर हें नया कुर नया सेसया उत् इसयाया नससम्बर्धसम्बर्धन वित्रवित्र वित्रम्भारा निर्देश स्त्रम्भ स्त्रम्भ स्त्रम्भ स्त्रम् ग्रद्धारार्श्वेनामित्रित्वदेश्वरायायासुद्धात्वा में स्रायासेद्राययाद वर्दिन्गुन्ख्यःश्रॅवाविर्द्रिन्शे तुयःसर्वस्वावतुयःसयःवश्रद्यःसयः ८.के.४४१२४४१२ ब्रै८८५१ १८.४१ १८.के.४४४१८४४१ उत्राथानहरानवे अभागे भार्ताम्य स्थानित र्देव-द्र-पद्मे-द्रवा-श्रुद्र-पद्म-द्रविद्ध्य-पद्मे-प्रयाप्य-पद्मेद्द-द्वय-दर-देव-द्र-बेर्प्य हेर्नि केर्ने केर् उदायस्य उदायाद्ये व्यापादि वद्ने विषादि वापादि द्वारा विषय । उत्राज्ञत्वेजानी भ्री मः कनारात्र ते केंत्र सम्या उत्राय प्रत्य प्रति । ग्वित यः नर्धे अः यः ने 'न्या'यः ग्वित ग्री: ह्या शुः वर् 'वे अ त्र अ 'न्र गी श्री रः र्श्वे दाया ही वाले वाद्या प्रत्या प्रत्या विदाने वा वाद्या विदान বর্মুস্রস্বস্থার বিষ্কৃত্য বিষ্কৃত্য

वर्दे त्यापि हिया । श्रेस्रशास्त्र वस्त्रा स्तर्भा तर्दे शामाधित स्राधिस्य स्रोस्रश उद्याचिनात्यः देद्राबदाळदाना भे श्वेदायश्वायश्वायः भे दिदा देशा वर्देदा या ग्वन्द्रम्य अस्य उन्ने मे त्यद्र पे जुन्ने या में नार्क्ष स्व पे श्रात्वर्यस्भुःविद्या याया मावर्यायर्भेश्याग्रह्रेशःम्प्रात्वार् नः सेन्यस्य स्याम् सेन्नें विष्य हुर्ति । न्वेन्स्य मन्ते। सेने वर्ते न्यामा नर्भायात्राच्यात्राच्यातर्थे अःविदादेशाग्राद्याः देशान्याः प्राच्याः प्राच्याः नदेः भ्रम्भन्यः शुःग्वितः श्रीः धेतः यमः वर्षः भेयः तयः मनः मेतः देतः दः वेतः प्रायः मेतः बरळ्टावायमार्येटावरादे वाद्याद्यां । देवे भ्रीतायाववारी ख्नायासुः क्षुप्तदर्भा तबद्दी । ये यया उद्दिर्ग्टर्गी विद्यार्भे दृः सुद्दायः विविद्धित्त्रम् सुरात्रम् सुरात्रम् सुर्वे निविद्धान्ति । वसून निविद्धानिक स्वार्म निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्म निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्धानिक स्वार्य निविद्य र्से न्दर्भ राषे से द्या के द्या के त्या के त् नशुर्रे श्रुधामका श्रुत्व हेकाम केत्र हो। व्याहना हु हे विदेश्यका होत्र म यार यो अप्तर्कें ना निर्मामी इस प्यें ना साने आपी का में। विरामी। वाया ने प्यें। वशुरारें श्रुधावा देवे श्रुवाबेदादी दे हेदायशा नेव हा हे वेंदि देवाया नर्हेन'रादे'ज्ञन'ग्रीश'हे'र्ने'न'राय'र्शेग्राश्रास्थाह्यु'नदे'र्ह्ने'ठन'ग्रीश'ग्रान् नःसेन्यम्भुन्यम्भेर्यसेन्नि विश्वर्शे । न्रिश्र्रासेस्रास्त्रयः र्रे से दर्ने सूस्र दुः सर्दा स्ट्रा से हुः से दे हिन त्यस्र दे सूर हुँ दुः सदे हुन कुन से सस् न्याये वित्र हैं। विद्याय विवा वी साने वित्र साने स्था निर्मा क्ष्य क्ष्

गशुस्रामाश्चेत्रामित्रम्यातुर्म् हो नायायासुस्रा हेत्रावस्राया स्त्रीया हेत्रावस्राया क्ष्र-ग्रुन-५८१ हेव-र्शे-शे-व्यक्ष्रियमि देन-५न्ने-५८१ श्रुव-४-५८-वी-६-र्वेदेःरनः हुःन्रे नर्दे । ८८:र्वे त्या ८ सामा जुना खूर ५ जुःनवे हेर ८ सामा है। इरळ्न'ग्रे'सेसस'य'नहेर'म'से'नेस'ग्रादस'नस्रम्स'दस'न् न्देशस्नान्यायाते। श्रेमश्चेतायतेन्देशस्यायायायास्निनाया हिन्यम् इस्रायायह्याया सवदानेवे नस्रायास मेन्या पिन्ते र्नुन्न्यापादी शेस्रशास्त्रम्थशास्त्रम्यार्न्न्रापाद्ययार्न्न्न्रेन्न्राप्त्रम्था शुः यदः यदेः श्रेरः त् गार्ने दः नवे । विवयः यवियः यः त्यः यः दे। इयः यरः शेः हेंग्रापदेः धेः भेरा ग्रीरा बेदायाया ग्रुट्या है। यया प्राप्त स्था देश्वेया रदानिवरसेदाहिषायाग्रीप्रेयास्याग्रीयानेवर्यायानुहि। । पर्देयाद्याया वै। नहरमित्रे निवास हिंग्या ग्रह्म निवास विद्यास मान्या प्राप्त वि र्हेन्स्स्र म्हान्य क्षेत्र क् 到

यर: ध्रेत: त्रुग: ध्रुव: त्रुः यः व्रेश कें राः श्रुव: क्षेत्र: व्रेत: व्रेत:

नर्चर्यावावत् श्रीश्वाक्षेत्र निर्मान्त निर्मान निर्मान्त निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्म निर्मान निर्मा निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान

गिरेशमारी श्रेमाबम्बेमगी श्रेतमा हिसमित हिस्सि स्टिस्से स्था ग्रेस हिम या ग्रुट्र से ससार्म ग्रुट्र मी सार्के साग्री श्रुद्र मा ग्रुट्स मे ग्रुट्स है। ग्रुट्र सेसराग्री से से सम्माया नि से प्रेस शिष्टी श्री स्था से स्था प्रेस से सिंदी सिंदी से सिंदी यानारामी अरअरअरकु अरग्री विरामा कृति सुरामी ग्री अरक्षेत्र प्या देव से किर्मू नत्वःश्रीश्रास्त्रापुः नगारःश्रेष्टे निविवागिनेग्राश्रास्त्राप्तर्वेश्रासाधारः द्या धरःक्रिवाश्वायदेश्यद्याःकुशः इस्रशः वाद्यवादाः सुवादाः वशः वृत्देदेः तु। र्ना हु जुरानर शुरामधे जुरा छुना सेससा नमदानार नी साळे ना निवे पदे। क्षेत्राश्चार्यात्र प्रात्तेत्रा त्रभूतात्र त्रि दे दे त्र शक्षेत्र त्र श्चित्र श्वार प्रात्ति । नश्चेत्रो पुरेदेत्व देनविद्यानेग्राययदेन्याः हुन्ययदेन विरामी श्रुवाया ग्रायम् अयावरार्टे । विश्वार्शे । दे प्यरार्धे याया श्रीम्या यदे वर वर्षे द्रात् वर्षे राया प्रति द्राया राया वर्षे या वर्षे या वर्षे या वर्षे या वर्षे राया वर्षे या वर्षे या वर्षे राया वर्षे या वर्षे राया वर्षे या वर्षे राया वर्षे या वर्षे राया र्या हुर वी शावर विराळे दार् प्रश्चायश्वर श्रुवे वा विराध राया वा वी |*ॸॸॱ*ॻऀॱॸॻ॓ॱॻढ़॓ॱॻॖॱॸॱख़ॱऄॱॻऻढ़ॕॸॱय़ॸॱऄॕ॒ढ़ॱॻॖऀॱॸऄ॔ॸॱढ़ॺॺॱॻॖऀॱॺॺॖॺॱ श्चेत्राचित्रेत्रेतित्रेत्रे नायाम्बुयायया केंयाग्रेश्चेत्रायती नया यदे के अधिव के अप्येवायम क्षेत्रय प्राप्त वर्षे व्या के वाय के वाय विवास के वा ग्री प्रथा ग्री अवदावाद अर्घे ना से ना से ना साम से दाया ना नक्षन मदे ग्वि पहें तर् पहुना मदे । के पहेना राम हे क्रिया र्रे प्रदर्श्वेस मुद्र त्यः श्रेवाश्वारा श्रेवे त्यहेवाश्वार प्राप्त श्रेर वो प्रदर्श्वाप्तरः कु:श्रेव'य'शॅग्रथ'राशे'स'धेव'रादे'व्हेग्रथ'रान्त्र। कुन्त्रसे प्यार्शेग्रथ' रायगुरावदेखरिषायायाययायेययायवर्षेत्रयायुः क्रीवायदे । । वदावेदा गै श्रुव राया गहेश वर वेर दिसा शुर्गि र नदे श्रुव राप र । रुषाग्री श्रेव पर्दे । प्राचे प्राचा श्रुषा वर वेर चिर चिर परे खुवा विर प्राचेर यात्यात्राहीः सूरा हुन। श्रुवारावे योग्याया होता सेता प्राप्ता । प्राप्ता यानवी यारायामें रानवे विरा यारा में या में रानवे न या है सूर गर्नेर नदे श्रेन्य गर गर्नेर नदे नहें अधे वि । नद से दे न दुः श्रे नद वास्रवादिन्यास्य स्वाद्य विकादम्य विक्रान्य विक्रान्य विक्रान्य विक्रान्य विक्रान्य विक्रान्य विक्रान्य विक्रा सव नोर्दे द नाद प्यद से हो द सदे नास्य या प्रदा कुरा विस्र राय से नास भीत्राचित्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक इस्रत्यत्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्ष

नश्रमायायाश्रमायश्रम नश्रमाया नश्रमाया द्वार्याया नश्रमाया विष्याया विषया विषय वै। यदे पानहेव वया ह्या व से दाये छ्टा छुन ग्रे कें वाया श्रे व पाये पर ध्रेतः हैं गुरुष्य स्वर्धः सूरुष्य स्वर्षे राष्य स्वर्धे गुरुष्य स्वर्षः स्वर्षः नर्डेवानायेदामाकूरामहरानरात्रानदेग्रहामी।ह्यावाम्बदात्रीःधेदार्देः सूस्रामान्द्रिं सार्चे त्यान्द्रीयासामान्द्रा सूद्रामान्द्रा से सूद्रामान्द्र से सूद्रामान्द्र स्वापन व्यःवर्रे द्रवाः वर्षाः वी श्रेवः प्रवेष्य स्थितः हैवा यः यरः हो दः ययः वर्षाः वीः <u> न्वो नदे न्वे अ शे सूस्र म विद्या न्द्री वा साम स्रे नस्र मासुस्र न्द्र</u> विवासान्त्रीयाने। सराद्वीवानव्ययासायया श्वीतानायदेवानु वित्याना स्वासायया श्रभानेया विषयायये ग्रम् क्ष्या क्षेत्र स्थित प्राचित्र विषया विषय वर्षेश्यन्वात्यान्ववात्व्यान्त्र्यात्रेषान् । । नवी नवे नवे श्याहे स वर्षे स्तर् অ'নশ্লুদা বিশংরী

न्द्रभः भेरिन्दे ने वार्तित्वा वार्या ने विश्वा वार्या विश्वा विश्वा वार्या विश्वा वार

राधिदाया नससारा ही ज्ञापारादी। ज्ञित्र रा होत्र रा या हुससारा दे से ससा ८८। स्वानस्यानायास्रीटाहेवे नससायाद्या वित्तरहत स्वापादविः नश्रयः प्रदा स्वायदेवाश्राम् स्रश्रायः नहरः श्रूष्रश्रयः ग्रीः नश्रयः पानविषाः वर्शक्षेत्रसम् नुपर्वे विदात्त्रस्य स्वयद्य सेस्य स्त्रिस्य सम् नुप्ते स नित्र श्रेतः राजन्तः नवे नवे विषय अत्यापतः स्रितः वार्षे वार्या स्रोत्रा शेशशास्त्र वार्तित्य वित्यम् वित्यम् वित्यान्य वित्यान्य है नर गुः हो त्रानामायायया ही तामार सेर सुन्द न्याया हिंद न्या र्श्वेन से त'ने 'न्या या । सहसार से समार्श्वे समार समार पहिंद नदी । श्वे वाने ' श्चेत्रारार्से त्ययान्य । प्रहे प्रयाश्चेत्र प्रमादे प्रयाया । प्राप्तेया । प्राप्तेया । प्राप्तेया । ठेवा उर देव यहिर या । यहिर वर श्रुव यार सेर श्रु सेना । दे वे दसप इसराग्रीरानस्याया वियापान्या पॅत्राह्म समयाप्यापाना स्रित्या यशःग्रहः। गृहःविगः भ्रेः नः न्यवः नृहः वेहिर्यः यश्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स वःलर्। । यञ्चे सेरः यञ्च शः तुः वर्रेरः स्थः क्रेरः याववः व्यवः प्रवः नवाः परः स्वरः वर्क्केयान्। ।नश्रयानक्षमाने ने श्रेष्ट्रेन्याने श्रेष्ट्रिन ना निर्माय स्थानित स्थाने र्शे विश्वा । ने सून हिन दे श्रुवाय हे य सून न स्थय थ है द पर न वेन थ ৰ্বামা ৰিম:মাঁ

त्रम्भाराके त्र्यान्त्रम्भारान्त्री स्थारात्या स्थारम्भ स्यारम्भ स्थारम्भ स्थारम्य स्थारम्य स्थारम्य स्थायम्य स्थायम्य स्थायम्य स्थारम्य स्थायम्य स्थायम्य

हेव यस पद्भारावे कवास ज्ञा प्रत्यू र रे सूस वस से हैं व पर्वा विद्यायदे व्ययम्य से द्वार्य हित्य से स्थान ह्या व्यवहाय । वर्ष्यवरमान्द्रा होवावकार्याः चर्याके याहें दार्से दाराधिवा ही याववा वे हो ॡॱऄढ़ॱढ़ॕॱढ़॓ॺॱक़ॕॖॺॱऄॺॺॱॶॱऄॱॻॖ॓ॸॱॸॸॕऻॿॺॴॻॖऀॱऄॗॸॱय़ॱढ़ॺॱय़ॸॱॸॺॱ यदे सर्ने प्रकाग्रमा के के के के कि सम्माने स्वापन क्रथ्यायाथे प्रतासरा होत् छेटा। देशा ग्राटा विटा विष्युत्रे प्रशास्त्र स्थापन कें प्यट कुष प्रक्रय या भे सूत्र या सूत्राय सा से कें कि स्वट में से प्रदाय से हिट केरः अप्तर्भाने अप्तरायर्थे स्क्षुर्य यात्रा वर्धे द्राया स्थान स्थान <u>दे द्या मी से सम्रम्भ में मिर्याय यात्र राज्य से प्रमूची राज्य में द्राय के स्व</u> विस्रयायार्सेन्ययार्स्नेनायर्थे विस्रानम्पर्ने विस्रान्यस्य यश्चर्यम् नर्स्नेत्र्याद्युत्त्रात्युत्त्रात्यः स्ट्रेस् । वित्रः ग्रीशः ग्रीशः वित्रः ग्रीशः वित्रः ग्रीशः ग्रीशः वित्रः ग्रीशः ग्रीश नदे के न न न न में न साम में न त्या । तर्ते न प्रें न प्रें न त्या न तर्ते न त्या न तर्ते न त्या न तर्ते न त्य ग्रम्दे अर्वेदर्भिन्यम् । व्यव्यक्तिक्षेत्रायायाव्यक्तिन्त्री र्शेन्यकेश्यासक्ताद्वरापत्रमा विश्वायाष्ट्रमार्भे हिन्यदेशम्बर्धाः येन्यती सून्याग्रायर्दिन्न्येत्रस्त्रेव्यास्त्रेव्यास्त्रेव्यास्त्रे मसेन्यते क्षेत्रमित्रक्ष्रित्त्वर्याण्यामधिन्यविष्क्ष्रित्यवे क्षेत्रमित्रक्षेत्रम्य वेन्य वैन्न राम्य वर्षेन्य सेन्य सेन्य न्य वर्षे स्था में के स्थित सेन्य

एक् छे न इस्र के स्वर्ध स्वर्ध प्रिंत स्वर्ध प्रिंत स्वर्ध प्रिंत स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

यव्यान्य निष्ठा निष्ठा स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री रे'त्रशम्हेरित्राधित्रायाक्षे भ्रेनें ह्रस्यश्चित्रश्चित्रायान्दाक्षेत्रायिः स्रेशक्ष्याः मन्दरः स्वाः नस्यः स्वाः नदेः सत्रुः सेनः मन्दरः मन्दरः मन्दरः मन्दरः मन्दरः मन्दरः स स्वा नस्य नर्भविद्य निर्मे । इस श्चेत या नस्य निर्मे निर्मे । मन्। व्रेष्यायावेद्यार्श्वे नामान्यस्य स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् नः सेन्ने। वन् होन् वस्य यहन हो श्वेन् सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य होन <u>ढ़ॖ</u>ज़ॱॺज़ॱॺॕढ़ॱज़ॕॾॕॸॱॸ॔ढ़॓ॱॺॖऀॸॱॸॕऻॿज़ढ़ॴॹॖॺड़ॴॶॱढ़ॼॺॱॶॱॸ॓ज़ॱ यारे नावर्गेना मधेर ही। शेर मदे सुरा नर सेंद्र सा शेंद्र उसाया हैन हुर वहें त'रावर्गे ग'रावें। । गाव्र 'धर श्रे त'रा न न र त सुवारें शें ग्रा श श्रे श गर्हेट र्सेन उत्रात् भेरात्रानगुर क्षे हुट त स्रुसर् र सेंगा वर्कें दे न रस यः क्षेत्रः यद्या प्रत्या स्त्राया स्त्राय स्त्राया स्त्राय स्त्रा र्रे त्यानश्चानवे नम्मान्द्राचे नम्मान्द्राचे नम्भान्द्राचे स्वान्द्राचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्राचे स्वान्द्र्राचे स्वान्द्र्याचे स्वान्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वान्द्र्याचे स्वा धरामधेरमासेर्पान्या क्रिंटानासेरीलेंगासूनासूर्सिम्भाग्रीमार्सूर्णना बेर्'स'र्र्र्र्र्र्र्र्र्य्याय'र्सेग्र्य्र्र्य्येर्द्र्य्येर्द्र्येत्रें स्त्रुत्यर्वेर'यर्ग्यव्य यःश्चेतारावे नश्यारा से दारा दा वाल्य में शावादार दुसे श्वारा सर श्चेत

मःश्रें श्रें विश्वविश्व श्रें श्रें विश्व निर्मेष्ट्र के शत्र श्रेष्ट्र निर्मेष्ट्र

हे सूर्यार्ने द्वारे श्रुरियाय यात्रियायय। श्रुरिया हे त्वार्य यात्री गर्नेद्राचित्रा शुर्द्राचेराधी श्रेरावरावश्चरका है सेरावाद्या हैं दार्थेदका धराग्रुश्यक्षाने विश्वास्त्रेरायान्ता केंशाश्रुश्यादिया हेवाग्री खुंयान्ता श्रे वेशन्यानरुरामायाधीत्रान्त्राम्यास्त्रान्त्रान्त्रा हेत्रानम् गीवरभ्रेरः नः न्दा न्या गडिया हु ही वाय या केया नाया नश्री या है । सुदानु वया क्षेर्रान्दा कुयार्थेराकुरायान्यान्नान्नान्त्रानुराकुरायार्थेनायाहे क्षेरा नन्ता सः अन्तर्वतः अर्वाअः सदेः धेर्नुन्त्रवर्षी अञ्चर्याने पाववरः यः क्षेत्र:व:५८। वावव:व:वार्वेद:धर:वशुत्र:ववे:घवक:ग्रेश:क्षेत्र:यार्वेद: नन्ता रहकेरक्ष्रिस्रायस्य स्यास्य स्वाप्त्र निष्त्र विष्ता स्यास्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व र्रेशःश्चानर्गेट्य्यः चुर्याद्याः श्चेर्यः न्याद्यः यद्यः कुर्यः ग्रीयः वदयः सदिः नक्ष्रन'रा'न्र'द्याय'नर'त्रुक्ष'हे'स्ट्रेर'न'न्र' वॅर्क्ष'र्क्ट्रेन्'वस्याय'हे'स्ट्रर' वरः ग्रुःववेः श्चे रःवः धेवः वश्रः ने 'द्वाः देरः वरः ग्ववें। ।देः प्यरः ग्वरः श्रे अशः ग्रीयानयम्यायायते श्री वायाचे । विष्या श्री नायायाया विष्या श्री ना हे सूर हुर न न ने तुर हु तुर न ने कि साम के न न ने न *ড়ूर*:नश्रवाशःत्रशःत्रशःवाडेवाःहुःवाहेंदःनःवःनशेंद्रःत्रस्रशःध्रवाःसःसेदः

राष्ट्रराष्ट्रेरायायाँ रासेराङ्कातात्राष्ट्रवाययावीराक्षेत्रत्वेतायवरात्।या यन्दरम्दरमे । वया मे अन्दरन् अः शुन्दरम् वदः वर्षः श्रे मार्वेदः यन्दरन् मादः शुन्शीःस्यानस्यानस्य नस्य स्थाने । दे नया यो व्यस्य स्थी । यो व मर्सिदे खेतु खर्मा रेसर्से म्य स्थित है मही सारे न सुरा न सारे महित खर्मिन स धर्मारेसार्ग्रे नग्रीन्यम् व्यानन्यन्ते नश्चवान्यादे रेसार्ग्रे न র্ষ্রন্মন্ত্রন্ম ব্রুষ্ণ্যনম্বর্জন্মরার্বিইরস্ক্রম্বর্জন্ত্র্রাব্যব্দ वश्रा वेशन्ता ग्विन या भी मिर्म मार्म प्राप्त में में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में नहर्मान्यायर्षेनायराय्युम् सेन्नेनायर्षेन्यम्यस्यानस्य श्वेरके नर वर्ष्मा वेशमश्रुरश्य स्वर्मे । सर्हेर स्थरायमा नर्र के विवायश्येरशः श्रेनिकु केवारी हेनायर गश्रम् श्रेन्य श्रेनायह्व मश्रे में द्रशः श्रें द्राया विद्या श्री श्रायमः द्रा श्री कें द्रा श्री द्राया श्री वाषा मश्रा

बेर्यस्थित्यूर्यस्थित्यदेश्यात्र्यात्र्यस्थित्यः विवादित्यः गवर ग्रे श्रेव रावे मैं ग्राय हो रायवे श्रे राय है। रराय पे ग्रद पे राय के रा য়ৢॱঽয়৾৽ঀয়৽ঀয়ঀ৽ড়ৼয়ৣয়৽য়৽য়ঢ়ৼয়য়ৣৼ৽য়৽য়য়য়৽য়ৣ৽ঢ়ৢয়৽ৼৢ৽য়ৼ৽য়য়৽ यग्'विरानग'येनयापराग्रुयाने। यर्'भूर्'र्'र्येगाव'व'र्षे ग्रुर्'कु'केव' र्रे पित्। नेर श्रेव प्रवेष्य स्ट्रीव हैं ग्रथ प्रवे श्रेम न् श्रें त्या प्रवेष श्री हिन्र्रेहिन्यन्द्रान्द्रवान्त्रेवार्ष्ट्रेयावित्राहिन्यन्थन्द्रवान्त्राहेन्य याने नियाया ही वारेया । याना वाने निया वितासी वार्ष की वा यायाधी स्टानवर ग्री अभीवा हे या न द्विति । दे या ग्राट दि स विदास से द हिरा <u> न्यायः नशाने निवेदान् हो निष्ट्रम्य ने न्यायः से मञ्जूदे हे सामस्याः</u> नदेः अर्नेद् निन्न प्राधिद है। देअ ग्री अर्गे अरुपाय अर्म है द्रिया ग्री अर्गे र्वेर-छ्र-इ-क्षेर-विराय-ळग्याय-छ्र-इ-यानहेव-व्यायविर-दर्दे-या नहेत्रत्रशक्तेत्रः स्वेत्राची । ने नित्तित्र रूप्ता नित्र स्वित्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र <u>५८:ब्रॅ</u>ग्रथःनम्रथःळग्रथःठवःग्रेह्रःश्चे त्रथःसदसःदे स्रेवःग्रटःथे नुहः बेद्रायाद्वस्थायाधी नुद्रान्तेदाने दर्गोद्वासकेवा मशुस्राया श्रेद्वाया नेद्रा वह्मार्छरःस्टर्छेर् भ्रेर् भ्रेर् भ्रेर् । विदेशक्षेत्रं स्टर्मी नर्शेर् व्ययश्वितः हुः यरः र्रे न हो न जा वाव वात के वा वी कें बर्जे म्या व कुया वा के वा वी कें या वर्देर्नारास्याकाराम्य विकासान्य क्षेत्रकारवन्त्र विकासान्य विकास धरःषदःवशुरःर्रे॥

ने निवेद नु रेंदर ले जिन् से नु दे निवेद न

नश्चन्याने स्ट्रेर्ना प्राप्त न्याने प्राप्त न्याने न्याने स्ट्रेर्ना या प्राप्त स्ट्रेर्ना स्ट्रेर्ना या प्राप्त स्ट्रेर्ना स्ट्रे

न्द्रश्यां व्याविश्व विद्रान्त स्थानित विद्रश्यां स्थित स्थानित विद्रश्यां स्थित स्थानित विद्रश्यां स्थानित विद्यां स्

यहिमान्या वर्षानिर्देशसँगिर्देशसँगिर्देशसँभि वर्षानिर्देशसँ यहिंदासे यहिंदासे स्वाप्ति वर्षानिर्देशसँभि वर्षानिर्देशसँभि वर्षानिर्देशसँभि वर्षानिर्देशसँभि वर्षानिर्देशसभि व

र्शेवाश्वासः श्वेदः नविः नविः सुदः श्वेशः धेनः वश्वदः वर्षः श्वेदः हेः केव रेवि नममानामा मुमा ग्री नम् न् र्सेन प्यानित नम् निम्ना नहुरायरा नारानीरार्श्वे नरावसूरानवे नहें त्रस्यूराने हे प्रदान विना धेव वे व निरदि से निराक्षा करा निष्य से निष्य मुल्य में में में में से से से में में में में में में में में में यदसःस्रेशःयःर्षेट्रशःसुन्यःश्चेत्रःयःह्मस्रशःतुःद्गादःवदेःयशःहस्रशःहिसः यः भ्रे निरेन्दर्रिया भिष्टि के निर्मा भाषा स्थानि । विर्मेश से स्था उदाक्रयसायासुसान्चिदान्नेदार्सेट्राग्नी देवाग्रटाट्रसासापीदाराट्रासास्य र्श्वेर्प्यायमार्थेषायम् वर्ष्या पाव्यप्ताया में सम्बन्धाय स्वर्षे प्रमायम् वर्ष्या য়৾য়য়৽ৢঢ়য়ড়য়ৣ৾৽য়য়য়ৣয়৽য়য়৽য়ৣঢ়৽য়ৢয়য়য়য়য়ৣ৽য়৽য়ৢয়৻য়ৢঢ়৽য়৽য়য়৽ धेरा वर्षशतुवे सुरार्थे के दार्थ कुरा वा वर वर्षे रास्त्री । देवे से रावस्वार्थः मन्त्रमानिः सर्दिनः ग्रीः सर्दे व्यथा तुषाः संयो न स्वर्ते न स्वर्ते न स्वर्ते न स्वर्ते न स्वर्ते न स्वर्ते न ग्री त्यरास्त्री विसामस्तरस्यास्त्री विसादरा क्षेत्रावह्यात्यसाग्रदा क्षेत मालवरनमारहा दिवरळेवरमञ्जूनरमयेरक्कुररमहर्दि। विशर्भा

नर्गे स्वास्तिः क्षे विस्ति। नर्गे स्वास्ति क्षेत्रास्ति। नर्गे स्वासि क्षेत्रास्ति। नर्गे स्वासि क्षेत्रास्ति हो निस्ति। नर्गे स्वासि क्षेत्रास्ति। नर्गे स्वासि क्षेत्रासि क्षेत्

राश्चेत्रपदेःमोग्रासाद्राच्याविदान्त्राव्याद्रस्यात्रसाद्रासायात्राच्या उदासर में दे में द्वाया मदे न्वें याना के नदे के। यदायवा या से वाया या र्श्वेर् छेर्र प्राव्या प्रदेष्टिर र्रे श्वेर विया उँ या पर रह हैर या वर याश्चेत्रायराधी । श्चेरायार्यि श्चेर्य याश्चेत्रात्री यह दारेया ขู้าลูารุราริสารสูมสายผิวผิมสาธสาฏิสามส์ารชมสายผิวผสมา मर्भाष्यतायात्रात्रार्श्वेषार्भास्त्रिम्यस्त्रे स्थिति। देन्याकेन्यायि धेरःर्रे । श्चितः सः ८८ से सरायहिषा सः सहस्र सः ग्री सः श्चितः से दिरः से से रः हे। वर्रे द्रवादी नश्रम्भायायायाय श्रिंद्र नामाधित ही । त्रु नहें या उसार् वर् यदे भ्रेर्स् । दे प्रवादि साभ्रित्य स्ट्रित्य से प्रवास्य स्ट्रा भ्रेत्य स्ट्रित्य नरत्युर्न्तर्वे दिन्नासम्बद्धास्य स्त्रेन्स्र स्त्रास्य स्त्रेन् यम् मुः भ्री देः प्यम् प्यमाया स्यान्य ८८। याववरग्री के अन्ध्रवरग्री प्रति स्थान বার্ষাস্প্রব্যান্ত্রনাস্ত্রীর রামাবার্ট্র রার্ট্র

धितिन्दिस्यार्थे महिन्द्रिया महिन्द्रिस्य स्वाप्ति स्वाप्ति महिन्द्रिस्य स्वाप्ति स

राक्षेत्राचाद्वा नन्दान्तिन्दाः अक्षेत्रभाद्वाः श्रुवाः याद्वाः विवाः मीशायनमाशानिरामें शासदे नवरान हुर क्षेत्रान रहा के क्षेत्रान केंद्रान र न्भाभा विदास्त्र । त्र विदास्त्र । त्र विदास्त्र । त्र विदास्त्र । त्र विदास्त्र । विदास्त्र विदास्त्र । ग्राम् ने प्रत्यात्य व्यवस्था श्री मृत्य के स्वार्थ के साम महार स्वार्थ के साम स्वार्थ के साम स्वार्थ के साम स र्शेवार्थायप्राप्तारे प्राप्तायार्थायार्थे स्थाप्ताया वार्ते राजायायायाः धरःवहवःश्वरःवेदःद्वावःवरःश्वरःग्रदःश्चेः सहवःवःददःवार्वेदःश्चे दःददः ८२। ४१ म्हरूयः क्रियः क्षेत्रः चायः चायः व्यापः क्षेत्रः चायः व्यापः क्षेत्रः चायः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः नहुरः भे वर्षे न भन्दावर्षे न ग्राटा स्टिन भे ने बार सर्हे हा नवे बनाय हो। न्या क्षेत्र न न्दा ५ उटा क्षेत्र पा के विदायम्या यथा पा त्रया वर्षेत्र पा क्षेत्र नःयःनेःन्वाःक्षेत्रःनःन्ना सुःक्षेत्राक्षःच्वःगाःर्केषःनःन्नः श्लोवाकानसः **શે**ઃર્નેત્ર'વેત્ર'યર્સ્ટર્નેર'યં સંખેતુ યાર્તે રાશે 'વર્તુ' બેત્રા હતુ શેત્રા ક્ષેત્ર' સ્ટાયા म्रोग्रयायस्ट्रेराचाक्षात्र्री । ज्ञार्यराने क्ष्र्राण्यास्ट्री मुर्यायर <u> इर अदे क्रायर गाहर या द्वाय प्रायक्ष प्रायक्ष प्रवृत्त प्रायक्षेत्र र्</u>रीया व्रिमायदेः भेषाम्या उत्राह्मसमायाः श्रीतायम्य विदायन्य सार्वे वाद्यायाः वर्षाः धरावश्रूरार्से । देरियाः श्रुवः धरेरि श्रुरायाववर दयाः श्रुरः वर हो दार लर्धियंत्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्रीम् स्त्रीम् विष्याने स्त्री वन से दिस्सा प्रदेष नित्र पाल्या पर्ट से सामर हा त्रा से स्रुस पर हे स्रु हा

विंतिये सेस्रा भी सार्श्वेत पर हो दात्र दे । पात्र सार्शेत से दारे । पात्र हे दस यदे के अः सूर नर्डे अः यदे न्रोग्यानसाससा सु स्रेग्या उत् न्री नसूत नर्डे अः दशसम् वैश्वेतरायमात्रपर्मियाश्चेतरम् वेतरम् वितरमान्तरयम् ढ़ॖ**ज़ॱऄ॓**ॺॺॱॸॖय़ॺॱक़ॖॆॻऻॺॱॸॺॱॸॖॆॺॱॿॆढ़ॱय़ॱख़ॻऻॱढ़ॱॸॸॆॕॻऻॱय़ॱॸॆॱख़ॸॱॺॖॆॺॱ हे स्यर्थ क्रुश ग्री माशुर रचा धी मो र एडी र माल्या पवस पदमा हे द ग्रीश ग्रद्रश्चेदर्भे से से द्राप्ति स्वर् धेद्रश्च शुक्षिश्यर गुलिद पाल्य द्राप्ति स्वर् येवार्यायामित्रमान्यम् नुर्वे । वायाने स्रोवार्याययायाने राम्सूमान विगार्देरशात् गुराकुरासेसशार्मशारे त्यावरेसार्ग्वेरावा के विगा गुःवेसा ॲंट्र शु:दे न्नर्तुः क्षेत्राय हे नर्हे द्याय पॅट्या शु: वेंट्या कुट्न न्यर्त्तु हैं । वेश वेर व्या वृह कुन शेशश द्यश ग्याय हे स्रेग्श प्रस्ते केंश की स्र र्वेव जुरुपा विवापी वाव वे पे प्या श्रुव पर से जुन्नर मेव पर्वे वा वा मेव श्चेत्राचरात्र्री । पायाहे रेता से पादा पाहे सामा सा ही ता ग्राह्म पादा सा र्वे न से न ने विषय है के राष्ट्री में तर्त के राष्ट्री के निकार क गुर-दे-नदे-नद-धिर्याशु-विर्याशु-विर्याशु-र्य-गु-नदे-धु-रःश्चेम्याय-नय-दे-हेर श्चेत्रायम् अर्थे । ने निष्वित्र न् नाया ने नात्र प्वेत नुष्य निष्य । ने निष्य वर्रे नरवर्दे द्राया हे क्षुन्य निवेद द्राम्ब्रिट वर्षे नरवर्दे द्राया वर्ष

ने नविव के । । ग्वराष्ठ्रायम् ५ त्यमारायदे नम् यदे । स्री से से से से न'य'स'त्रेत्र'त्र'त्र'त्र'र्स्न न्द्रम्य क्रम्म स्त्री । विकार्स्य हेव ग्री क्षें वय श्रुव ५ र्थे ५ र न्य वी र र के र स्वेय या या ग्री र वी या र नश्चनमः वेदःसदरः सेदःषः देःषः सेरः श्वृदेः देःसः ष्यरः सेदः सदेः स्वेदः प्रेरः स्व वर्देन्द्रमार्श्वेद्राचायात्रीम्यानयास्ट्रेर्यात्रास्तुर्वे ।वद्रीस्ट्रेन्द्र्यात्रास्त्रे कुः सळ्दादी ळें अरग्री श्रुव पादि स्वा श्रुव श्रुव पादी प्राची रामा स्वा स्वा स्व रुट्यक्ष्यायदे सेर्थित्वाया सेत्राया स्वीत्राया से सामित्राया सेरा ल्रि.क्री व्रिथ्याकाल्येयास्त्रास्त् न्वे रामि ही रामे वर्षे भूरास्याया रोस सूते हैं सारो राम्या रोस सूते केंत्र:बेंट्र राम्यायायी: दर्गीय: यान्ता यान्तीत्र: याः भीयाः श्री: विवाय: यान्ताः यान्ताः यान्ताः यान्ताः विव सर्वेटायाचित्राताकेताचे स्थापन्यूरायाद्या सामिताता सेस्याउतावस्याः ठ८.ज.सर्भर्भर्भर्भः चर्नः चर्नः चर्नः चर्नः चर्ने संभाग्ने स्थान्ते स्थाने स्याने स्थाने स्था उदःदि'न्दःश्रेस्रशःउदःग्वदः मस्याःउन्नगदःनमः ग्रेन् व्याःग्रेः ग्रेदः व पर्ने मिडेना सु न्याय न उसाधिव सदि द्वीर र्ही । विर सर न्यें साम हे क्र-ने स्र-नाश्रम्भिन हैं निवह्ना यथा ग्रम्। क्र-हिते ही मनु के से नहरा विश्वाम्बर्धरश्रामश्राम्या सामित्र हो । श्री श्चेत्रमित्रस्याते। यदे हिंदाया से श्चेत्र ते सामित्र स्वाप्त लुय.मु। वयश्राप्रशायश्चर्यः श्चर्यः श्वर्यः यष्ट्रित्यः व्याविष्यः व वे पर्ने पोव हो। हार से समा हो सान्दर में विमायान इति सहसा हुया

त्रम्थेययायार्थे तुन्वययाउन्। नयस्य प्रमाययाय्यायस्य वि न्नो क्वेंद्र मे अ अविद क्वेंच त्या के अ में अ त्या के ना अ त्या का ना अ त्या का ना अ वयानर्थेयाने पळटानानवेदार्वे । दे सूरानर्थेयामयाणे ग्रुट्रानयम्याया धेत्रग्रद्यम्यार्थः प्रदे देग्यायः यात्रयः प्रदे ग्रुद्रः सेस्रयः वेयः ग्रुः से पर्यदः वस्रभान्यमा हु से नायमेया ये। । ने साथें । गुनाने नमा गुनास्या मुर्सा त्रम्थेययः इययः ग्रेयः नर्डेयः नम्पर्यः नम्पर्यः मित्रः हे स्त्रिम्यः र्रे दिर्मा भिरापे जिराने पार ने पा श्री का मार्चे मार्थ की मार्थ की साम स्था कुरु:गुर:शेस्रशःग्रेश:शेस्रशःठदःष:स:नहर:नदे:थें:गुर:पार:प्यर:सेर: र्ने श्रुय: न् नुय: ब्रेय: या वें य: य: य: येव व वे : इय: यह प्राय: ग्रीय: कें पा: नविवर्राने नवार्या नर्धे अपाया नहेव वस्य नविवर नवर्य वर्ते वे वाववर शुःधेवरो हिन्यरमार्श्वेवर्यसेन्नि विश्वस्थित्रायह्यसेशर्मित्र ग्रेन्द्रि । याद्यस्यान्यान्यान्यान्यान्यः देवः देवः देवः देवः देवः द्यान्यः द्यायः द्यान्यः द्यान्यः द्यान्यः द्यान्यः द्यान्यः द्यान्यः द्यान्यः द्यान्यः द्यानः द् हे। ठे दशाग्रदादेश जुदासेस्रायायदी स्रेताया के दशासी स्रेतायायीता म्री स्वायाययायने श्रेतायये प्रत्याय स्वायाय स्वयाय स्वयाय स्वया स्वयाय स्याय स्वयाय स नने सूर हो दारा से भी यार ना उदा ही हो दार्थी।

*क्षेत्र*न्तःयःगशुत्राणुत्रःन्देरासेंग्वार्डें∙केन्तरःश्वरःनशन्देरासेंदेन्तरःन् नग्रस्थार्स्य विदःसदेःगान्नःयः नग्रसः नस्य नरः दी कें सः में सः गास्यः ८८.८.ज्ञाचावयःसदुःल्.चिर् क्रियाःसःसरसः क्रियःग्रीयः हेयःशुःयायरःयः इसरायासेरासूदेग्वरासासेर्डिंग्नियदेखेंग्रासायाहेग्वरासार्वेज धेववर्श्वरावायायाचेवाण्याहेकायायेनायराम्बर्धर्याहे। हे भूतात् व्रा <u>ढ़ॖ</u>ॖॖॖॖॸॱऄ॓॓॓॓॓॓॓॓॓॓॓॔॓॓ऄढ़ॱॸ॔ॱढ़ॖॗॸॱॸॺॱक़ॕॴज़ॕॎॴॴॖॶ॓॔॓ॴऒज़ऻॸऀॻऻॴऄ॔ॱ नदे नायारेना सरामात्र सामित्र हे सा शुः स शुन सराय शुरान नामायाया हे । र्श्वेर्यार्थे पायरें दाया इसमायार्थे से रायहण्या है। श्रे वायरा हो दायावा अर्चे न से न में । जाय हे न जो न दे सुँ जा स य हैं स म दे सु र पे त सु । वर्ने न यदे वित्रासु महिनायायाया धीवायया श्रीवायर से हो नुवदा वित्राया से ही नः भेन् मः मिं तः धोतः र्वे । विशः श्री । चुनः कुनः श्रे अशः न्मदेः श्रें श्रीनः वनः रायमादी पुरेदेत्रा मयाहे ग्रह्मस्य सेसमाद्रम्य कें मार्गमासुमा धिर्यासु यहर है हैं दारा यें वार्षे वें रामें स्वीत यह स्वा देश वर्षे दारा <u> इट न न क्षेत्र य अप्पेत दें। विश्वा न सुरश्य श्री के शर्ने श्वा सुरा हित्र त</u> वे नुरक्षेस्रस्य नुरुष्धर वर वर्षुर दे।

चतः न्र्स्याः क्ष्रिं त्यायाने न्यायाने न्यायाने क्ष्रिं त्यायाने न्यायाने न्यायाने क्ष्रिं त्यायाने क्ष्रिं त्यायाचे क्ष्रि

त्राश्चेत्रः द्वारा के स्वारा के त्राया र्वे। १२ निविव ५ म्वाया विष्युम स्थाय सुम निवाय से प्राधी पर्मे स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय माब्दाया से मार्दे दाय दे कु त्या से मार्था पाद दा । से मार्क मार्थाया से मार्दे दा स ब्रॅग् क्यायाययायद्यास्य स्टान्स्य निर्यं के स्वीत्य स्टार्स्य वास्य बेर्'यदे'ववद्यत्र्रम्स्ययःर्सूर्यायः श्रुव्यत्वेषाय। स्राप्त्यावद्यायः वःहेः सूरः ग्रुः वे व्या व्देः वः दर्भः व व स्त्रें द्या से स्त्रें दे व विकास गविःवर्देर्प्यः ह्रें गुरुष्यर्त्र्यात्र्यात्रेर्यात्रेर्यात्रेत्र्यः वङ्गरः वर्त्रात्य्य अ'त्र'त'ते'नग्रेत'पदे'पर्देन'पः <u>ह</u>्याय'पर्ग्युदे'सूय'पः र्धेत'त्'तहरः वर्षा हो न्या प्रवित्र प्रकारा हिर्मा गाँदे । यहे न्या भू न्या स्वाप्त । यहे व नवर। रशर्षे विद्रादि दर्भे द्रश्ये क्षानग्रेव पादि त्यानश्रेषा वेदाप्रशिद्र र्रे नर्ह्मे नामें सूसर् प्रासेस्य सेना हेरा क्षेत्रा वह्सर्ये रामें नर ग्रुय द्या वर्चेर्सन्दर्भे ख्रायदे वर्देर्स है न्या स्वाय होते । दे ख्रा त्रे से त्राय स्व निव र तु वाय के वर सूर वर्ष दी या रास्त्री द्रिया या वर्ष या से द रा ह्र स्था र दे न्तर्भवे दर्गे दर्भा या विव द्वा प्रविद स्वी।

गिर्धेश्वरामार्गेराचरायातुर्यात् । सूर्यात् । श्रूराचार्येयात् । सूर्यात् । सूर्यायात् । स्वराक्षेत्र्यात् । स्वराक्षेत्रे । स्वराकष्ठेत्रे । स्वराक्षेत्रे । स्वराकष्ठेत्रे । स्वराकष्ठेत्यात् । स्वराकष्ठेत्रे ।

नरत्वयाने वर्षे अण्यारानिया वर्षे रानिया वी अण्यारावरे वर्षे रासे । देशः वःवरेः नहरः वः धेरः द्वायः नः दरः श्वेरः सें ख्वरशः हे विके नवेः त्रशः होर्वे। । वर्रे निहर्न वर्के निरंत्रा शुक्ते के में राया कवा या सर से वशुर विदावर्शे द रासेन्यान्वायां वेरास्त्रायाः भेर्ते स्रुसान् न्यस्यास् । निःसूरानस्यस्यः ग्रम्मित्रं स्वात्रं वित्रात्रं वित्रम्मित्रं स्वात्रं ळे*वॱॺॱॺॺॱॸ्ॸॱय़ॅॱय़ॱॸ्ॸ*ॱऄॱॻऻॸॕॸॱॸ॔ढ़॓ॱऄ॓॓॓॓॓॓॓॓॓॓ऄड़ॵॱॸॖॸॸॱॸ॔ॖॱक़ॗॖॸॱय़ॱॸ॔ॸॱढ़॓ॱ नरखेत्र'यदेख्र'न'न्रान्यन्वा'न्रान्यन्वा'वीर'वहेत्र'य'याव्याय्यायाय য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢ৻ৢঢ়য়৻য়৻৸য়য়ৢঢ়৻য়ৼঢ়৻য়ৼঢ়৻য়ৼঢ়৻য়য়ঢ়৻ <u>ই শ্বেমট্রের্বের রম অভব রম অভব শ্রী রম মধ্যে ই লা অভ্যম রেল্রু মত্য</u> ने सूर निवानी या नश्चिम विया र्से दाना से त्या से निवासी या स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स द्ध्व-५: स-५-१ प्रते हे सामान्वन स्थर- प्रते स्थित प्री से से स्थित हे सा यासेन्यादे साधिवाते। जुन्येससायासेन्सू सून्यम्यसूनानत्सा यदुःसम्राम्नेन्यम्। वर्षे । वर्षे सुन्नम् मान्यम्। हे से सूर नः अर्देवः नुः वेदरशः शुरुः शुरुः शुरुः शुरुः शुरुः । विदः । व्यःश्चित्रः न्यत्यवायायायात्रः स्या । वह्यायवे क्विनानीयाने प्येत्यात्रः नर्वे। धिनःकनःश्चिम्नः इम्म्यः विम्याधः विष्यः । विष्यः । विषयः । भ्रीतिकीर्भ्यत्र विद्यास्त्रीत्रीत्रम्भास्त्रम्भास्त्रम्भास्त्रम्भास्त्रम्भास्त्रम्भास्त्रम्

र्णेरश्रश्चराध्चेराववानवान्। विशर्शि।

श्चेत्र प्रति यो या राष्ट्र प्रति स्रोत प्रति यो यो या राष्ट्र प्रति या राष्ट्र या राष् वर्त्यूट्र न दे हैं। अ वे अश्वाप्त न मुन्य न विष्य अवाय न न विष्य नुःसःसर्वेदःनर्दे। ।देःयःददःर्येदेः श्रुवःसरःनुःनदेःह्रसःथेदःनविवःदः য়ৄ৾ঀ৾য়ৢ৾ঀ৾৾ঀ৻ঀ৻৸ঀৄ৾য়য়৻ঀৼয়৻ঀয়৸ঀয়৻৸য়৻৸ৼঢ়য়৻য়ৣয়৻ঀ৾৾য়৾য়ৼ৸ৼ৻ रेगायर हुअवया ५ प्यट श्रुव या अन्तर द श्रुव या श्री या श्री वा प्रतर श्री वा या वासीन्ववादानरावयुरार्रेष्ट्रसानुःसँस्यरान्वायानेःसुन्यरानेन्धुन्यरानेन्थी सा मैं अर्थायदे हे या पदे प्रवाद प्रदेश महिंदा वर्षे । महिया से विषय हैं प्रवाह उटा कुट्यायाया नहेव वया गहिंदा नवे ये यया थे। क्रेंग्ने ने वे गहेव से र वै। यर्रे स्रुसर् रुप्तर्वा यर्वेर न्य द्वार्वेर निर्देश के सर्वे या या सव सामानिका धरःकूर्वःग्रीःषशःश्रशःवाववःग्रीः द्वरः तुःग्रुरः धशः वग्रेशःक्षेत्राः वः श्रेवाशः मदेःस्वानस्यानर्भे न्यादान्यास्य स्वास्य वाषाने वावन्यास्य नम्बार्यायानहेत्रत्र्या गुरानदे के त्रिते स्वानस्या ने सानन्या पके षर निर्माय ने श्रुव र मिं व लेग्य ग्रे श्रेर न में मुर न र्रे मुर न याधिवाहे। विस्यार्श्वे नाने खेना ग्रामार्थे सन् छे । यान समानिया विस्तार्थे वि सूसानु नसससान्य। येंद्रसामिते सूना नसूताने नद्दरनु सुद्रसाने श्रुव नद्दर होर्'यर्दे। ।वाशुस्र'यंत्रे। श्रुव्'ह्रदे?ह्रसंनेव'रु'धेर्'र्र्दर'वेर'सर्हेवा' हु: गुरु: पाया कवा शाव शाक्षिता वा वा वित्र वित्र श्रेष्ठ शाक्षेत्र वित्र वित्र श्रेष्ठ वित्र वित्र वित्र वित्र

गहेत्रसॅरते। क्रम्यायदेष्ठेयायाते सुरानरारेगायरा ग्रुयात्रया नि स्यानस्यानायाननेतिस्रुसानु त्वनु स्वेशास्त्रीतास्य वा प्रायम् ति से स् यं.ज.र्म्या.चर्या.चर्रेन्.त.त.लुय.य्रेस.र्.त्रेय.यं.त्रेय.यं.त्रेय.यं. ने श्रुव पर हो र पर्दे । निव पर्दे श्रुव पर निरं र पर निव पर हिनाया मदे नुरक्तावनुरन्दि सद प्रेंद्र साम में प्रकार में प्रकेर से दे स्व धॅव'य'नक्ष्रावरामिंद्रानिर्देश्येयराष्ट्री नेदेमिहेव'र्येर्दे हेरा यने शुरावर रेवा यर ग्रुयात्रय श्रीरावर् ग्रीत वस्य या अत्राहित । स्व वर्षायहैगारान्दा हिन्यम्नु वेद्यार्थेन्यः श्रुन्यहैगाः वेदायव्यायम् नस्या র্ষাষ্ট্রীর'ঘ'লা্র'লার্ন্র্রিম্মমান্তর্'র্রান্তর্র'র্মর্ন্র্রেম্র্রান্ত্র্রান্তর্রান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্ত্র্ होत्रपर्वे । वित्रार्श्वेत्रयार्श्वेष्यायायवे स्वार्श्वेष्ठ र्यायायक्षाया हो। देव ग्री:म्रेर-प्रां ग्रुन् वस्र अंडन् यह्याया सेन् यर मान्त्र व्या महिन् निर्दे केन्या यातिर्द्धसर्मेनरग्री नर्सेन्द्रस्य स्थाने वर्षेनर्द्धनर्द्धा सेन्सर्सेन्द्रहेन्से र्वेन ग्री वर पाने भी पर्वेन भे नित्ति नित्ति पाने परी परी में नित्ति । या वित्रभातुः केवारीं वितृदावशुरावेश विवादिराधीरभार्या वित्र वै। किंद्रः श्रेंग्रथः नविवः तुः श्रूतः धरः वश्रुरा विवः श्री

महिरायायययाययाचित्राधि होत्याय वित्रायम् वित्रायम्यम् वित्रायम् वित्रायम् वित्रायम् वित्रायम् वित्रायम् वित्रायम् व

वस्रभान्यमा मुःसेन्यायसेया नान्या ने प्यारा ग्रह्मा सेस्र भारायसेया र्य.१४.मी.भ्रीय.सर.घर.४.५४.५४.मीश्रर्थ.श्री। तिर्मेर.स.८८.भ्री.स्व.सश् वर्रे ग्रु नर वना न बर में अ ल् अ म व अ म ज्ञुर अ ग्रुट वर्ग् र व्यू र ग्रु अ ग्रम् ग्रम् के स्वर्म विषय के निष्य के स्वर्भ के स्वर्य के स्वर्भ ग्रेन्'रादे भेरार्य रहत ग्री श्रेव राम्स्राय है। स्वा प्रया राम्य राम्य राम्य राम्य NNTETT अर्चेन नर्नु : धेव छी अने : चेंन व अर्वे : वेंद अर्झे न् छी अ र्वेरमानाभी भेराते। ग्रामानमा ने सूराव ग्रामान के मानामाने हैं। श्चेर्-नश्रयः मह्यः धरः द्वाः धः अर्थेन ग्रीः नरः दुः वेद्यः श्चेरः दे । द्वाः येदः ने। भ्रेम्प्रिम्मिविवर्त्ने अस्य उवर्ग्ये श्रेवर्म्श्रेवर्म्य होत्रम्भेवर्ते॥ অঝ'অন'বৃত্বা'ন্ন'বৃত্ব্ৰান্ত্ৰীব'ন্ন'বৃত্ত্বুন্ন'বৃত্ত্'বৃত্ত্ৰ'বৃত্ত্ৰ'বৃত্ত্ৰ उट्टर्सिट्यः श्रेट्टिश्चर् से भीयाया श्रेट्यायर प्रमुट्टर्से । वियाया श्रुट्यायया र्शे।

यवित्यत्तेत्वाची देवत्वस्यवे । इत्ये स्रम्य शे स्रम्य व्यव्यव्य स्रम्य स्रम्य

नर्भे अ'स'न्दा

र्त्ते दे स्ट्रिन्स सामुन्य स्थित वातुर वात्र क्रिन्द्र विष्ठित हे स्ट्रिन् <u> चुर्यात्र या प्रवर्षा या त्राया या या या या या व्याप्त या व्याप्त या व्याप्त या व्याप्त या व्याप्त या व्याप</u>्त र् केष्राश्रक्तर् शश्चे व प्रदेश्यम् भ्रिवः हेष्राश्रासम् भ्रित् व श्राम्या वस्र राज्य नियान के के जिस्त में स्त्री के निया के साम ग्रीशः मुद्दार्गेशः सरादग्रुरः या के रत्रशः वावदः रुदरः दह्याः श्रेरः शेः वर्देन्'मश्चान् कुन'सेसस'न्यवे हुँ न्'म'य'वहुम्'म'नेत्र'हुन्मव'नर वर्गुर-वरि:धेर-र्से । मानवर-पर-धर-धेर-वर्ष्यायायया श्रेव-यर्देश इन् जुर् द्वारोसम्। दिन्दिरे श्रुवायमित्र वर्दे दिने से नहरा विदेया हेत वर व गोर्ने र वर्ने द से सम्बन्ध । गार्ने र प्रवे वर व सकें गारे स मुल'नर्याम्बरमा वियामब्रम्य र्सेन्स्रेन् सेन्स्रेन्स्रिन्स्रेन्स्रेन्स्रेन्स्रेन्स्रेन्स्रेन्स्रेन्स्रेन्स्रेन शेसराहेरासु:५५ हिरानर्सेसामान्या नुमासुन:ह्रेंदावेरार्सेदायस वरेनअ'म'ते'महिंद'न'वस्राउद'ग्री:ह"न'द्रामहिंद'न'वस्राउद'ग्री: सर्केना धेत समाने त्यायन सम्बन्धे। यने ते त्यना न वर नी माल्या सि र्देव नश्रू शासदे नाव ५ ५ तथा सदि।

মুঠ্

क्षंयाविष्रश्राग्री:सराष्ट्रीतानक्ष्रायाख्यायाख्या

क्ष्याविष्रयाग्री दे निर्मेष्यायाय द्वापिये वनया क्ष्याविष्यया

ग्री:रन:हु:रही:ना ने:रना:नश्चन:यथे:कें:हे:क्ष्रर:हु:ना ने:रना:मी:र्नेद:नश्च: नर्दे। । ५८: सें है। मान्व या मार्वे ५ या माने ५८ या स्वरुप्त में मान मदेः श्चेंद्रः सेस्र अदे रहेषः विस्र संभित्र माना सेस्र अदि रे विस्र सम्मित्र स ग्रॅंट-५-फ्रॅंट्य-श्रःक्ट्रॅंच्य्य-प्रथाः खुंव्य-विस्थाः ग्रीःसः रेवः ५ म्डीय-पर-वर्ग्यूर-वः धेव भी। भे रेष पुरसेस्य उव पार्वे न प्रके सासुसामा न माना प्राप्त में न यदे क्वें त्राकुष विस्राणी यम क्वें त्रामा प्रमान क्वें माना स्वाप्त क्वें माना स्वाप्त क्वें माना स्वाप्त क्व ख़ॱॴऄढ़ॱढ़ॱॸ॔ॱॸॖ॔ॸॱऄ॓ॺॺॱढ़ढ़ॱॾॺॺॱॻऻढ़ॕॸॱढ़<u>क़ॆॱॸ</u>ॸॱॺॱॼ॒ख़ॱॸॺॱॺ॒ॸॱ ঀৣ৾ঀ৾৾৻য়ঢ়৾৾৻য়৾ড়৻য়৻৾৾য়য়য়৻ড়ৢ৾৻য়৻ঢ়ৢ৾য়য়৸ঢ়ৣ৾য়৻য়৻ঢ়ৣ৾য়৻য়৻ ८८। श्रेश्रश्राष्ट्रम् १८वा ग्राटावार्वे ८ १८क्वे १८८ व्यापाय विर्धे वाश्रास्त्री । वर भे त्रायि भे रामे । देश त्री रेश त्री से या तुर से स्था उत्वास्था स्था विकास से प्राप्त के प्राप्त के स्था के स न्दः ज्ञायः यसः स्वायः प्यदः ज्ञाः प्यो स्दः मीः क्रुनः क्षेटः नुः ने न्नाः यार्वेनः सः অমার্টুবারের শ্বীনের মর্মার্বী মর্মার নুর্বারি বিরুষ্ঠার প্রমর্মার येव धेव हैं। श्रें न पह्या यथा ह य श्रें यथ य यान विया है। निनया यश्नि भ्रात्यूर्यर्वर्व्यभूत्। भ्रिंद्यवे सेस्राही भ्रिंद्याविस्रायः र्रेया द्वेत पर प्रमृत्र । देश श्री । द्वया विस्रसाय प्रसुस र् प्येर सेर सेर वर्ने र गार्रे में श्रें अ पवे रहे वा विस्न ग्री प्रवर पुंच स्व र श्रें र पवे से स्न र शुःचल्दाने। देःधरःगुक्ःश्चिर्द्यर्वाच्यायवेःद्वरःदुः च्याव। शेःद्वोः नडुःश्वॅटःनदेःश्वॅटःननडुःधेदःय। स्टःगेःटें दिवेद्वान्दर्नुः नुश्वा शेद्रगेः नन्त्रभ्रित्निर्ध्यान्यानी यथा शे स्तानित्रभी भ्रित्ना नित्राधित है।

यहणायवीयायम् देर्याह्म् स्वर्मान्दर्द्वात्रे स्वर्मान्दर्द्वात्रे स्वर्मान्दर्भेणाः स्वर्मान्द्वात्रे स्वर्मान्द्वात् स्वर्वात् स्वर्यात् स्वर्मान्द्वात् स्वर्मान्द्वात् स्वर्यात् स्वर्वत्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात्वात् स्वर्यात् स्वर्यात्वात् स्वर्यात्यात्वात्यात्यात्वात्यात् स्वर्यात्यात्यात्यात् स्वर्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात

देशन्ता द्वा विश्व क्षित्र क्षेत्र क्

ने म् द्वी म् द्वी म् द्वी म् द्वी म् त्वी म् द्वी म द्वी म

यत्थ्वत्ते। इर्ण्यत्वत्ति इर्ण्यत्वत्ति विष्यत्ति । त्रियाध्वत्ति । विष्यत्ति । विष्यत्ति

यन्ता कुव्याववःवे ५ उरमविव यन्तरः । कुव्याववः वे १ उ বস্ত্র মান্ত্রী বার্ব মান্ত্র মান্তর म्बर्गार्वेद्गःनरः सःशुःषः धृदः षटः त्रस्र स्वरः उत्तिपः नः नश्चेतः स्वरः क्रुतः ग्री:सर्क्रेनान्ता देःनबरःसँगाववादेःहेःसुँगारुःसुःपर्मेःधर्मारुःसः धेव'सर्से वर्त्रे नया द्विष्य रात्रे नया द्विष्य विस्रय ग्री मुन्य स्वरे दि वे द्वितारा त्रस्य राज्य दिन्ते वा प्राप्त के वा प्राप्त के वा प्राप्त के वा प्राप्त विश्व के वा स्थान विश्व के यदे हो गुदे चुना य हे र र च चुर ला तमाया परा हें द से र स र दे र स न द र क्कें निर्मादि द्वापार में राम स्वाप्त की स्व यशस्यान् वृत्तान् वर्ष्युराने। ने हेन यश् द्धयाविस्राने वे विनासरा गड्र सास्यामी स्टायं विवाही । भूषि स्वायामिय र त्यी साम्यास डेशःह्य । विस्रराम्बुसःग्वः हःधेन देन देन सुराक्षे । स्वः हुः हुन दर्शः त्याया चुर्या रा प्येता | का स्याया या श्रव प्याया स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य । विश धे वर्ष दे दे वस्याय सर दशुरा विय पर । यावव पर या उरा या या वी क्षेत्रा अपहें द्रिर वित्र दें स्था श्री शक्षेत्र श्री श्राय श्री त्र श्राय श्री त्र श्री त्र श्री त्र श्री स्रोति निवेश्वेर्स्य श्रेन्ट्रिन्ट्र नी स्वत्र निवासिक स्वर्थ में यसेन् ग्रह्में में गुवादर्ग्यान्य स्टावी विहेव त्यार्थे विश्वास्था सेवास शुः श्रें भःशुः भेरः पर्दा ध्रः प्रवायः यहना यः पर्दः से भे यः पर्दे श्ले हें दे ख्रिस्यव र्णेव द्राक्ष राज्य या क्रिया या या व्राप्त व्याप्त राज्य या व्राप्त व्याप्त राज्य या व्राप्त व्याप्त या व्राप्त व्याप्त या व्राप्त व्याप्त या व्राप्त य

छ्यः विस्रश्चात्रेत् । विद्याः विद्या

गशुस्रामाळ्याविस्रमाग्रीन्त्रीनादीनाशुस्रास्री सूसामित्रक्याविस्रमा ८८। रगे.यदुःक्र्अःसूर्यःपद्वेःक्ष्यःविस्रश्चरः। सेस्रशःहतःग्रीःर्देवःग्रेरः यदे खुषाविस्र से । दे पाद्र में दी ग्रुट स्र से से स्वर पारे साम्य यःग्रह्मरुप्तराध्यःश्रेष्ट्रम् । श्रृष्ट्रम् । सुत्रः स्कृतः से स्रक्षः प्रवेशः श्रेषः । यः ग्रम्भाराधिम् म्हे । विभारायसार्या सुरामी सिंग्रामी से स्मामी से सा रान्द्रेशन्दरने न्वान्दर बुद्धा स्वतः श्रेंदर श्रेंद्या दे श्रेंद्या स्वतः द्धांवा विस्रयः धेवाया र्शेष्ट्रम् श्री र्श्रेस्य प्रवेष्ट्रेव प्रवेष्ट्रम् स्वेष्ट्रम् বতমান্দ্রাদার মার্স্রানান্ত ইবামান্দ্রাম্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রার্ম্রান্ত্র क्ष्याविस्रमार्से । द्रमो न कें मासू द्रमा श्री से माना माना माना माना स्वाप्त न्धेग्रस्य स्टाकुन्यस्र क्रेर्यस्य क्रेर्यस्य क्रेर्यस्य क्रेर्यस्य स्टान्यस्य क्रियस्य स्टान्यस्य क्रियस्य स्टान्यस्य क्रियस्य स्टान्यस्य क्रियस्य स्टान्यस्य स्यानस्य स्टान्यस्य स्यान्यस्य स्टान्यस्य स्टान्यस्य स्टान्यस्य स्यान्यस्य स्यानस्य स्यान्यस्य मैं रिक्स में रित्र होया नर हो रिस्में। से सस उत्तर्ने वर हो रिस्मे से सस उत्तर इस्रायान्य स्वाचित्राची दिन त्यान्ये वास्राय स्वाची त्ये प्राप्त स्वाची त्ये प्राप्त स्वाची स क्रमानित्यार्भे निर्मानित्यार्भे विष्ट्रमानित्यार्थान्यम् विष्ट्रमानित्यार्थाः क्रिशासराळुंवाविस्रयाचे द्वेदे इसाम्पर्नु राजन्याची यामान्यायाचे रा मर्भाने मेर्यास्य प्राप्त प्राप्त प्राप्त के विकास के विकास कि स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्य के स्व नरुरामा इसरादे । जुरा कुना से सरा न्यादे र्स्ट्रेस खूद रनन पुनुरानदे नक्षून विस्ररार्शे वराग्री परसार देश समारे प्राप्त व से स्वरासे प्राप्त व व से साम होत्रपंदेत्। ह्या कुन के सक्षात्रपरायदा हिंगा समागय के नका ने हित्या नश्चनः सर् नुः श्रे वृदः अदे ना नृतः यः द्वा न्यः यः यश्वः व्या विस्र अः इयायाग्रुयार्थे ने न्याययायने क्षेत्रे। क्षेत्रायते क्षेत्रा विस्रयायने ने क्ष् यशःवाववः राः नवाः ग्राम् स्थाः विष्टः नशुमः नयः विष्यः यथः विष्यः विष्यः विषयः । निरास्य मुस्सात्र दे व्यस मान्य पार्म ग्राम्स से मस्सानिर से प्रसुर नर वर्गुर्रान्य। देवे:मुर्नानुराकुनायेस्याद्यादे र्स्ट्रियापेते स्वाधिस्याद्यस्य तःर्सेसःमः वससः उदः ५ ससः प्येतः परः नहेंदः परः नुरेषि । विसः पासुरसः मित्रे श्वेरमें । दित्रे श्वेरमें अस्य स्मित्र श्वेरमें स्मित्र स्मित् नुःन बुदः दशः देवे वहुवा क्षेवा वी वहशास इस्रशः देव हो। बुदः कुवः सेस्रशः न्यदे नक्षन ग्रुमावन विमाय क्षेन कु धेन य क्षन वेर न ने ग्रुम कुन

स्याश्रम्भाविष्ठ्रभाविस्रभाग्नी स्थानिस्यान्ति। स्थानिस्यानिस्यानिस्यानिस्यानिस्यानिस्यानिस्यानिस्यानिस्यानिस्य

ब्रैंसरिद्धंयाविस्राणीयिं ने प्याना स्टानिव मी विस्ता से मार् इस्रशः श्रॅट्स्या स्ट्स्यिव इस्रशः शुः प्यटः हेशः द्रियायः के स्वरेः यावर इसमा नम्भारा वे वेया पार्यो दिया वसमा उर र प्राम्य स्थार भ्री नियो नि द्वा क्षेत्र प्रमाने निया निया गुत्र क्षेत्र देशा प्या भी क्षु निवे क्षेत्र वर्षा भूगश्यालर्रियातर्भूयर्प्यात्र्या सर्धियर्प्यस्यात्या सर् रेशम्बर्धियने यस शुर्मा श्रिष्ठ । यश्यायसम्बद्धार्भियर स्वराह्मस्य ह्य । पर्दे प्याम् राम्यायम् प्याप्यम् न्यायम् । प्रमायायम् । । प्रमायायम् । वर्चश्र-वी.लूर्ट.सर.वर्चेर्य | रचा.सेश्व.लूर.ईश्वश्र.लट.रेचा.चर्नेश.ची.ची |सर्-रार्म्याक्ष्याविषयाणेत्रावेयाक्ष्याम्याम्याम्याम्या खुरुष्टर् नवे नवे प्येत्र प्रमा । ने से रायने न ना मुरुष्टर स्मासी मा सर्धित श्री भ्रान्य श्रासी द्वी न दुः श्री दाय न न दाय। या न दुः या या से वा या मित्रे सिर् हो दु स्य प्याप दे त्यू मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त शेशशःश्रुद्यात्रः र्द्धाः विश्वशः श्रूषाः शः इश्वशः ग्रदः वदे : त्रूषाः पुः दश्वाः परः वर्गुरः र्रो | ने नगः है १ दूर न श्रुवाया दे। नयाया दुवा १ द्वा प्रवादित । व्यत्तुन्त्रञ्जूनःमः है। यर धेत्रः जुनाव्यतः तुन्त्रञ्जूनःमदे छे रहा खुवा विस्र स या भ्रमास्मर्भात्वे स्वाधिस्मायायम् न्यास्य विस्मर्भात्वे व्याप्तिस्य स्वाधिस्मर्भात्वे व्यापतिस्य स्वाधिस्य स्व

थ्याने निया यो निवान स्वापनी क्षेत्राय है नाम स्वापनी ढ़ॺॺॱऄऀॸॱहेॱढ़ॺ॓ॺॱॸॖॱॻऻॸॕॸॱॻॱढ़ऀॱढ़ॖ॔ॺॱॿॎ॓ॺॺॱॺॱऄ॔ॻऻॺॱय़ढ़॓ॱऄॗॕॸॖॱय़ॱॺॱ वह्मामवे इन्याधेव केट से समा उत्वस्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्षेत्र रादे प्यट सर्के मा प्येत स्था अ सर्वे त रिवे रहे व विस्था ही क्रिस्य प्रेत स्था स र्श्वेव परि पुरा मुं र विश्वेष वशःश्चेत्रायान्दा । ह्यन्यसःन् श्चेर्नो न दुःषःश्चेन्यायाये स्दानविवान्दा नठर्भारादे।पादासार्चिनापादानेर्भारात्मादे।सार्चेर्भार्भारासारा र्नित्र हैर्नित्र ने र्निया यी विद्युवर स्था यादा है सामा यादा विश्व स्था स्था से स्था से स्था से स इस्रयायार्श्वस्थायस्य । प्रतित्याय । स्वर्षे । दे स्वर ८८.र्मेग.यर्जा.क्ट.र्भ.चेट.क्य.श्रुम.श्रुम.ट्मह्मय.स्यश.ह्म्याश. धर हो ५ व्या हो। ५ व्या १ क्षा १ क्या १ व्या क्षरावीयाक्त्र्वार्वियायरावक्त्र्याक्षेत्राच्या क्षेत्राचाराक्ष्यायाय न्मदे नक्षन माला क्षेत्र के तुरु सम्द्रम् न राष्ट्र न राष्ट्र न राष्ट्र न राष्ट्र न राष्ट्र न राष्ट्र न राष्ट्र

नर्जेन्यदे सर्धे त्यान सून रहेला था

नर्जेन्द्रप्रेट्रेन्न् ने नर्जेस्य प्रायायह्या प्रवेष्ट्रम्य नर्जेन्द्रम्य प्रवेष्ट्रम्य प्रवेष्ट्रम न्वेना नेन्सूनमंदेळें हे सूर्चना नेन्नामी में तरम्निनमें। न्रिंदी। माववरमार्वे ५ मा हो ५ मा त्या है। की स्नुका मा निर्मा मा निर्मा मा निर्माण स्थाप हुरः नः वः नृरः नु से वः पः नृरः। के वाया रे वाया र वे वाया र हुःगावर्यः भर्दे । देः द्वाः वीः श्रेः सञ्ज्ञाद्वाः स्वेरः श्चेषार्यः ग्राहः ग्राह्यस्य स्वा द्वाः स्व वे ले स्ट्रा निष्ठे अपावे ले स्ट्राप्ट लुस व अर्थे ले नाप्ट । नार्य सारा वै अ से अ भी द से पर्दे द पर्दे । दे प्य प्र वे वि प्र प्र प्र के प्र प्र स्थित है जा अ पर वे । पर उँ संधित ही। से समा उत्र नसमा उत् सी नसुत पान्य न वा में सा सी । न्वीयाने। नश्चनायम् भे न्यायि भे मानि मानि स्वाया मानि स्वाया मानि स्वाया स्वया स्वय ग्रीसाद्वीसारात्वीयाराष्ट्राष्ट्रीमात्री श्रीतात्वीयात्रमा स्राम्भारात्वीयात्रमा द्यासित्रप्रविद्या । ने न्यापिर्विस ग्रीस प्रिन्स से त्या । वि प्रवि से सस वरी मिडेमा नर्डे अर्जा । न्यारी म्रम्भ रहर के सम्मान प्राप्त । स्रम्भेर वरी न्वार्गेर्यायार्थेवाःह्य । नेःश्वेन्रेर्गे न्यायायायाया । भ्रियायभेयाउँ याग्रीर्गे नर्भात्री । यास्नेरात्रस्याउदाम्प्रिम्याद्वा । दे नित्नित्र द्वी र्देश देश र्रे प्यरा । वर्षामेश भ्रेर वर्ज्जेषा अप्यर वीया । वर्षा मेश अयय वर्षे ध्रैर्न्स् वार्त्वे । वाववर्क्ष्ययात्र व्याप्त विवाद्ये या विवाद्ये या विवाद्ये ।

गिरेश्याने निर्देशियानाया वहुना मिरेश्वन्या है। क्षेत्रामा नुष्टिन ग्रामाने विगानर्वेन् परि यद र्धे दन्दर से नर्वेन् परि हे सन्से ग्राम नर्के साम नि धरः हुर्दे। दिःषः सदः पेंदः दी। हुरः यः यय। हुरः कुरः ये ययः देश हैं गः अर्विवर्गनर्वेन्यायायवर्षेवर्ग्ययायवर्षेवर्गन्थवर्षेवर्गे। यान्यवर्गनर्वेन्याउवर्वे ष्ठे अप्यान्त्रास्य न्य से प्रश्नुरान प्रान्य हो नासरान्य से प्रश्नुरान प्रा नदे'न'न्रम्भेन्ने'न'सर्न्यर्वस्यक्र्यान्ता वर्केन्यसेन्यर्वे नदेः न्यः होनः परः प्रमुद्रः नः नदा। स्याः विवान्यः ग्रामः नदेः पर्धेः सर्वेः देशः ग्रेप्टिमाहेवरुष्ट्राह्मसम्बर्धा ग्रेप्टरुरुष्ट्राह्म निर्देष्ट्रमाहे। देर्पेष्ट्रमा मदःर्षेदः नुः नक्षः नदाः हेन् ग्रीकः ग्रामः नर्वेनः हिम्। ग्राव्दः प्रमः नर्वेनः सःलरःन्याःसरःवहेत्रःन्द्वाःल। नर्तेन् संवे नश्यायःसवरः नर्हेन् छेरः বাদ:রবা:বর্রিদ:র-ডর্মর্রিদ:র-ডৌদ:দ্বাদ:রিদ:গা্র-চ্:দ্বাদ:বন্-দের্মুদ:ব: धीव दें। विश्व प्राप्त वर द्वेव प्रश्व श्वा व्यव श्वा व्यव दें वर्षे र प्रदे थेट.टट.र्जेथ.रा.जी किंका.ग्री.ट्रा.य.च.च्यूट.रा.लुथ.खेश.योशेटश्री विह्या. हेत्र येग्र रास्त्र शुर्र रहेग्र रास्त्र । वि नदे हेन् त्या न वि न स्था प्र शुःश्चित्र । यशुःभ्वः इसमाग्रीः मुवःग्रीः न्यायः श्वे। । न्यायः श्वतः रहेषाः पळ्टः इसरायार्द्वेनराग्रीस्या । पार्देन् सेसरायर्द्वेगामी से या कुणी कुता । यदे ८८.यावय.तार्यूट्रेट्र्यं.यज्ञूट्र्यं.यज्ञूट्र्यं । भ्रें.यूट्र्यं.यज्ञूट्र्यं.यज्ञूट्र्यं.यज्ञूट्र्यं ळाया अितशुद्धे रेविकेषाची अन्यस्यायास्या नित्राप्तर्शेन् प्रदे बे 'हेंग'न बर 'गुरु 'डेर'। | ग्रामाय प्रदे 'बेर'न 'फीर'र् 'देर नर 'दगुरा । वेय

न्दा ध्रिन्त्रसहेशः ध्रवः सळवः स्वः वक्कवः प्राधी । या बुवाशः श्रुवः वर्षे धि'ग्रव्यार्ग्याद्वा वियासेस्य उत्ती में नाम्यान्य र्नेत'यश्राभे 'ब्रेंग'रा'त्र'। नगे सन्, या प्रहें स्था प्रदे विनित्रे नग्रायश क्रिनामानमा निर्देश होता स्वास्त्र स कुवर्तरा हैवःबेर्यर्थाम्द्राच्यर होत्रायदेर्गायः बुवःयः क्रथ्यः हीः ब्रेंवशः न्यायान्ना वर्षेन् सेस्याग्री से केत्र में वर्षे स्थाया से कुते कुतान्ना से नश्रुद्रासंस्थराग्री वेजा श्रुवाग्री अन्यासी वेज्यासी वेजिया स्वीति कार्या वासे र मुःसर्गा उदादम् नदे से गार्ट थे र तस्या र प्रें या स्वार्थ या स्वार्थ स्थान मदेःनर्जे में स्वाप्यामायार्थे ग्रायाये मद्रायदा प्रवाद मुं द्रायाया स्वाया नर्ये । श्रेनित्रह्मायश्यामा मान्तिमानश्चेशश्राने श्वित्रहेंसश्या । ने दे यदी प्राचानिक र प्राची । विश्वामाश्चर्या मार्चे प्राची क्षेत्र र प्राची विश्वामाश्चर्या मार्चे प्राची विश्वया मार्चे प्राची प्राची स्थाप मार्चे प्राची या धुःसायान्द्रायम् पर्वो वा छेटा नदे पर्वे विदासमा उदाद्या सबमारेसा येग्रथः स्ट्रेर्र नर्या पर्दे श्रिःग्रवः हुः पर्दे । परे प्रवा त्यः स्व विषयः पर्वः सवः पर्वः इस्रमान्त्रित्रात्रमानुद्रान्द्रेत् कुःवत्रमानुःवत्रेवारावादेमाराज्यनुग्राह्याः व्यानह्रदाराया हेराग्री नरात् नहीं या पराज्ञी

क्र्यामा विवास श्रुट्य प्राचामा साम्याद्वी श्रुट्य प्रमान विवास स्थित । विवास स्थाप । विवास स्थित । विवास स्थित । विवास स्थित । विवास स्थाप । विवास स्थाप । विवास स्थित । विवास स्थाप ।

यर मेर् । विश्वाम्बर्धरश्रामा से वर्षे विश्वमम्बर्धा पर्या स्वर्धि । हे भुन्न निव र्श्वे न पहुना हुनर्गे न प्रमा भूम मिन्न प्रमा स्थापन स्थापन र्रेयः प्रदे सर्रे प्यश्र है। न्यूयः प्रानक्त्र र न्यायायः प्रदे र नो नः पर्हे स्रयः सर.योशेटश.को पर्देयो.सर.लर्। यञ्जेक.स.यभ्येर.यश्योश.सप्ट.श्रेचे. *पः*न्दः&्यःविस्रशःग्रेःसरःग्रेतःयःग्रेस्यःपर्नेस्यःपरःग्रुयःपदेःन्गेःनःक्स्यःर्निः মিটি'নমম'ন'শ্নদ'উবা'ড'ম'নিবা'শ্লীম'নম'গ্ৰদ'নইমম'নম্বাধ্যদম'ৰ্মী १७१य:है:वर्:वेगाय:ब्रिंश:य:दर्गेशय:वे। वि:वेग:ग्रुट:शेस्रश:दर्गेशयर वळन्तः विकिताधायाञ्चे यानिन्यते स्थाने वह्यायायमा यान्छिन कुल'श्रशहरायादियायाधिया । श्रुवाद्वाध्यया गुराद्वी पानस्रायाया नकुम्। निरुष्यार्थः भ्रम् छिषाः यो राष्ट्रस्य । वेर्यः वाशुरुर्यः सः म्हारस्य सुद्रः धरःश्वरःहैं। विराधिःश्चे प्रदे हेवादी ग्रहःशेस्रशःग्रीशःविश्वतरः द्यो हः এইমমার সূদ্র মমামাথীর মমান্ত্রদ মীমমাথ বিষার শ্বাস্থ বিশ্ব वह्रमायमेयाययाम्बर्धरयानेटा ध्रयादे मुद्दासेययास्यादेया ५८। ब्रिंग्वरे क्रुं अळव ग्री क्रुंव अर्वेट न न नेव क्रेंग्वरेव के। सूर न १५ राष्ट्ररमी:न्वो नंवहें सम्मायावन नर्वासुरमार्थे । श्रीरन्वो नवे स नःवर्हेसस्यायात्वरसेसस्याविसायासीन्विसाने। नसूनानत्सायस्य वसवारायां मान्या वर्षे द्राया द्राया वर्षे व १८मी श्वेरियो अपदे सुर श्वर श्वर रे अंदि सर्के र हे द या प्यव या विस्था उर्ग्येशम्बन्य वर्ष्याने सेससार्या वर्षे मा वर्षे वर्षा ने सेर

यग्राश्चर्भे । द्रमे :श्चेर-द्रम् । यदेशःश्चरिः द्वाः विवार्वेदः रावेर्वेवाः द्वाः द्वाः व्याः व्या नकुर्विःनविःकूर्यं प्रोशेर्यो स्ट्रिंस्य स्थायः व्यापिरे नर्यं स्थायः हे स्ने द व्यादि स्मे द द द विकास के ता के द के ता है द के ता के त र्द्धरावशुरातुः विरुषा र्द्धेतायरावशुरार्देः । विषाशुरावषा देवषा केत्रा <u>৽ৄর'য়'ৡ'য়য়'য়৾ঢ়য়য়৾য়ৢয়'য়৾ৡয়৽ৄয়'য়ৢয়য়'য়</u>ৢয়য় र्शे श्रु र न न तृत् ने न रें अध्य प्य अप विषय । अप विषय । विर्वे अ नर्डेअः धूनः वन्या न्योः नवेः इत्याने न्यानारः न्यान्यानः न्यान्यान्यः न्रार्धेर्यासुः ग्रुरावाद्रार्धेर्यासुः बन्यस्यग्रुम् हे वस्यविस् हे स्रूरः क्रमायासक्रम्यायम् र्से न्यायास्य स्ट्रान्यान्य स्थायम् नुयायाने स्थान् वैरम्भासासर्वेरास्त्री हेरनम्पर्विम् नेस्पन्वोरनवेरहण्यासेत्रीर्पा नश्चनश्रान्दर्धित्राशुः ग्रुट्याद्दर्धित्राशुः बद्याद्याद्वर्युद्रः दे । हे नदः वर्षेत्र देन्ध्रात्रश्वरहेन्द्रशायवायात्रात्यवदास्रेस्रश्चात्रीस्रावर्षेत्रश्चात्रेत्रात्रात्र् वः इसम्पर्भे अपाद्राप्तर्यस्य स्थित्य वास्तुः श्रेष्य ग्राप्तः वेषा वर्देव दें। विश्व श्री।

ग्रुट:श्रुट:ग्रुदे:अ:र्वेद:श्रुट:शे:वुरु:दंर्वेद:श्रेटरु:सर्थ:सर्थ:सर्वेद:श्रेट:नःश्रे: श्चित्रप्रदेश्चित्रः स्त्राविषायायायायायः विवायाश्चरः स्त्रा । क्रुः सळ्वः देः वे सारे सामा सूर है। से से से में ने साम हेता में हिन साम है साम है ना साम ह श्रुरमः परे द्वा परदः मार्चे व श्रूरमा प्रोत् ग्रुद्दा द्वा व दिन मे व दिन स् ग्राट हुया क्षेत्र वित्र पाये क्षेत्र प्रवेष्ट्री स्टास्ट मी हुया क्षेत्र स्टूट त्रशः बदः प्रदेः प्रश्रः द्वो : श्रे द्वो : प्यदः श्रः त्रे दः श्रू दशः प्रः श्रे दः ग्रु दः । श्रे दः छदः क्रेव'न्र्यंत्'ग्र्र'क्र्याञ्चेव'ने'यग्रूर'भे'श्चेन'यथे'भ्रेन्त्रा श्चेन्यं स्थाने' श्रॅन्द्रन्वर्त्त्रम् स्वर्धिक स्वर्ते के स्वर्णिया स्वर्त्त्रम् स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर् नदेः अः र्ने न् अप्तार्थन्य के नित्र नित्र नित्र हो नित्र नित्र हो नित्र नित्र हो नित्र नित्र हो नित्र नित्र नित्र नित्र हो नित्र नि नःभेःभेन्।मवेःभ्रेम्भे । गाव्राध्याःभूमः इत्यामवेः ययः ग्रेयः वर्षिमः नमः क्षेयार प्राविक या शुरुक संभित्र प्रावेश प्रवेश विकास या र क्षेत्र संभित्र ग्रीसप्तमे प्रत्याक्षे प्रमो प्रायहेँ सस्य प्रम्पत्वमा से मुस्य विष्य प्रमासुरसः यदे भ्रिम् ने विवाद्म श्लेव कुर नश्लेर राज्य प्राप्त के स्वार्य के वहेंस्र राष्ट्रेन पुरान्ते रायम वर्षे मान्त्री

नेशवादी'यार्श्वेन'न्येव'योगश्चित्त्वेन'ग्रेश'वे। सूर्यान्त्राप्त सूर्याभे'न्नो'नार्स्वेनश्चविशस्त्रुट्यायार्थ्यात्वेन'ग्रेश्वर्या ग्रेश'न्नो'स्वर्डेस'याग्रेश्वर्यायार्थ्यात्र्येन'न्यात्र्यु'गु' ब्रे.पर्वीर.य.क्षेत्र। र.यार्ट्रेर.क्रेय.रट.ब्रट.व्यय.ये.पर्वेय.क्ष.येय. याश्रुद्रशःश्री । दे :प्यदःश्रूद्र:त्र-१८ :पःश्रूद्रःश्रीया:पः नश्रयाशःपःश्रूद्रशः प्रविशः ૹૄઽૹ[੶]ઌૹ[੶]ૡઽਗ਼੶ઌૢઽ੶ૡૹ੶ઌ૽ૼઽ੶ૹ੶ૹૢૢૺ੶૱੶૱ૢૹ੶૬੶ૹ૽ૼઽ੶૱ૹ૾ૺ[੶]ૡਗ਼ੑૹ੶ਜ਼੶ૡૢਸ਼ੑ पि.कुर्याता.क्रीय.ता.ययटा.य.टटा.क्षेता.व्रिष्ठभायश्रीटभाराष्ट्रातयभायी.क्रूटभा श्चित्रात्रात्र्यास्त्रत्युयास्त्रियायायात्र्युत्रात्रात्र्यात्र्यस्यायात्र्या न-८५ होट-श्रेम्यायाची स्थानित होट्रायाकु स्थ्य होता होया सुरायटा ही व रान्दर्ख्याविस्रयाची निष्कुत्रुत्ताना विष्ठेताः सान्दर्ख्याविस्रयाची निष्ठेताः यावरामी र्ख्या विस्रसाया सँग्रासाय हो राम कु समुद्रा सेग्रास्ट कुद क्रवाशःशुःदर्भूदःवावर्षेश्वत्रा स्रुशःद्वाद्यःश्रुद्धः स्वार्थः स्रुवः स्रुशः क्रियायायाय वृद्दानाक्षे विद्वेसयाया प्राप्ता विष्ठेया वासूराचन प्राप्ता सुरासुरासुरा नश्रू व विन्न प्रति । जुर से सका या विर विषय क्षेत्र स्त्रु का व न स्रुवा पा विवा पी का ই্লামান্মনর্নির্মাননি অমান্তী ইলামানানলার বিলানিন বিনি নি रान्विनाः श्रे अत्रायमाने कुनायाधेनायाः वाद्यायाः वाद्यायाः धुव श्रीश त्यस नर्शे द स तुल द् र्से द न स्था तु स्थे स दे र व से द न ने न तद्वा याययर देवे हो दायाद धेव वस्य ४ उदायद्या से दर्वी याय दराय वर्ष न्वो न न के अप्यायदर ने वे ने न प्यापर प्येत म्बस्य कर प्रहें स्था से न्वें या रायासूर्यास्त्री वित्राग्यान्यते वाया के वितासार्या कुरा स्वापा विवासी खुर ८८.८.ज.च्रेय.सपु.५.च्याय.स.च.च्रेय.य.५ १८.८च्याय.स.च्य. नश्रायेग्रश्यराग्रीहरस्यायक्ष्रायान्ध्रन्यस्त्रीत्। विष्ट्रस्यस्योः क्रअश्चित्राचे त्रित्राचा क्रिया प्राप्ते व्याप्ता विष्ठा क्षेत्र श्चित्र विष्ठा विष्

सर्बेट के अपि हो अपि स्थाप अपि स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप શુંદઃતઃઽઽઽ૧૧ૡઃતઽ૮ઽ૱૽૽ૺૺ૾૽ઌૹૣૻૠઌ૽ૺૼઽઌૡ૾ૺઌૄ૽૽ૹ૽૽૱ૹ૽૽ઌ૽૽ૹૼ૱ઌઽૢઽ गहिन् से मेन संवेद से सस्य म्यान् गात्र साम में महत्र माहस्य साम हा। वे <u>ৠ৴ড়৾৽ৢয়য়য়ৼয়ৢঀ৽য়ৣয়৽য়ৠৣঢ়য়৽য়য়৽য়ঢ়ৼঢ়ৢয়৽য়য়ৢঢ়৽য়৽ঢ়ৼ৽</u> सहत्यने अरग्री अरग्रदार्श्वत्व अर्श्वेदायाद्र र श्री वायायाया स्वारा श्री देवा रायार्शेम् अप्तास्त्री श्रिन्तह्मायया वेस्टा त्या हते सेस्रायकरात्रा विन्दे ने ने निक्ष राधे हिंदा दिवाय दर नि ने ने ने ने ने ने निक्ष निक्ष विक्ष निक्ष दिर विर नह्न भे त्युम्। विर न्वार्वे र न्दर नगुर क्षे प्ये या विव हिन है र यानहेन शुराया । ने न्या ग्या है स्थर ख्वा यदी । हे न्यें वाने त्या या कें नायर मुला रि.लुश्रासहत्यनेशःश्रुर्यरावधिया श्रिवायश्यस्थाः भेषः भे होत्। । अर्देरक विंच नदेर मात्र भा । दे के त्याव पर पेंद्र साधेता वियार्थे । भ्रुमार्मियाययाया स्वाप्ति । विरामियाये । विरामियाये । शुर्त्र । क्रिव् श्रीश्रामकुव प्यराम बरार्धे रार्थे राश्वे श्वरा । व्यया श्ववान व र्र्,र्या.ज.थज.श्रीर.श्रीर। व्रि.यद्, श्रीय. देश.श्रीश्राश्चीरी |नन्गायायत्रमदेर्नेत्रवयुनानहेन्ययुर्गाने । विन्यान्त्रमान्या

नः सर्ग्यीः रेजिने त्राप्याधरः हसस्य । सहदानि सार्गा नी सार्ना हा याञ्चार्याश्चर्यात्रा । वि.चयास्री:रेवायायायात्ररास्ट्रारायरायव्या । यदः ८८.योट्ट्रि.सर.श्रेश्रश्चात्रा हिं.ध्रेश्चराय्या । स्वाय.क्टर.त्याय.ब्रिट.श्रेश्चरा श्रॅटर्ना हु से नकुर स्ना नस्य श्रॅट्रा । निर्दे द रा के द से नुस्य स्थर महेर्नित्रिय्या ग्राप्ति । निर्माया ग्राप्ति । निर्माय ग्राप्ति । निर्माय ग्राप्ति । निर्माय । न न्या। वन्यायीयाने स्वरंभेयावयावी। निःधायश्चि वर्धे वर्धे वर्षे वर्षे स्वर्धे शुःविनानर्वे न्यम् होन्। विश्वानश्रम्भ श्री नि न्नाया श्रीनश्य रिश्वा <u>५ अग्रास्ययावि नाययावतुरानायारेयामानहत्रासे हे ५ हे ५ ५ ५ ५ स्त्रीया</u> धरा हुर्दे। दि स्वराव हुँ दायह वा यथा वे स्वराक्ष हुवे से वा सा से दा वर्षे दा यःक्षुःत्रवेःनगवः श्रवः सेन्। ।ने नसः नर्हेनः यः तत्रः हतः न्। । श्रुः र्कें गयः र्ह्यः ग्रीभागर्स्स्र सम्स्या विभागस्य स्थान्य सम्प्रेम सम्प्रेम सम्स्र सम्ब्रा सर्वेद्रान्यक्त्रित्र्वात्रात्र्यक्ष्यात्र्यक्ष्यात्रात्र्यक्ष्यात्रात्यवदाद्ये। । मदः रान्द्रस्ति कुः सळदादी वह्या व्योवायमा कुः सळें के दर्धि कुदे क्ट्र श्रदःग्रद्यार्थाःग्रेशादेशायराधीः त्रायाः स्ट्रियः देरात्त्रायायः स्ट्रीतः पदेः यळ्ययः देशम्यस्र भे तुर्था श्री । देवे भ्री स्ट्रिस्य प्रमुख्य स्तु स्थित पुर से विस्ता प्रमेव स <u> ५८.२मे.च.च.मेर्ट्र.स.चेर.सद.क्रुंग.स.चे.स्र.मच्र.स.च्या.वर.सक्र्या.</u> मुन्दर्भ नार्थित्र साम्राधिव विषाणा सुन्या सुन्य भिवाने। इस क्षेत्र सिन तु'क्षे'दिर्नाकेशके'न'वर्ज्जेन'ग्राम्'नेगे' इ'क्षे'वर्षे स्थान्'ने र्वं स'त्'ह्रेना'के'

नःभेदःमदेःश्चेरःर्रे॥

नर्बेन्'सदे'स्न'न्द्रे'व्य'मासुस्रा गर्वेन्'हेन्'व्य'हे'से'सूस्र'प्र'न्न्। स्वानस्यान्द्राचेत्रान्द्र। क्रियायादेशाश्रेस्राग्री वर्षेत्र । वर्षे र्रे निर्देर हेर या है : श्रे श्रुश्रायदे निर्देर या निर्देर हेर ग्रीश्वामें द्राया मुश्राया स्थाप से प्रमें द्राया प्रमें द्राया प्रमें द्राया प्रमें द्राया स्थाप स्थाप स्थाप यः भ्रेष्ट्रमायः विद्यः सुद्रायः यावायः यावायः यदि । प्रद्येषः यावे श्रा यदेः यदुःगोग्रयाः चित्राः सम्याः यक्षयः यक्षः सः यः स्रीः यक्किः सः स्यागाः सः ८८। चग्र-चःश्रेष्रायाः भ्रेष्यायाः भ्रायाः च्यायाः च्यायः च्यायाः च्यायाः च्यायाः च्यायाः च्यायाः च्यायाः च्यायाः च्यायः च्यायाः च्यायाः च्यायः नश्रुवः भः नृहः । नृहेः नृष्टः नृष्ट्यः भ्रुष्टः । नृहः भ्रुष्टः । नृहः भ्रुष्टः । नृहः भ्रुष्टः । ध्ययन्ता ध्ययञ्जन्ता हेन्ययनहग्रयन्त्रीरिग्रयम् व्या स्टान्नराषेत्रसेन् मह्माराज्यसे सेमारायती महिन् होनायाहिनसः रेगार्थायदे कुं सळद नार धेर सूस्र पुरा हमा सर होते । दे सूर नहमार्थ यनिस्तर्भारमार्विन्या होन्यर्निन् हो नसस्य स्थित न्या हिन्

नशर्मानी नरे नानग्वापाययासुरान्म सेसरायाधी न न् से किंदि निर्दे स्वानस्य नस्रेन्य स्थान्य वाय हे ने सर्र या विद्यासी हिन्य यं रदःद्वदः धेंद्र विवर्तुं विवर्तः विवर्तः विवर्तः विवर्षः विवर्यः विवर्षः विवर्यः विवर्यः विवर्यः विवर्यः विवर्यः विवर्यः विवर्यः वि ननरमान्नस्थेन्नो मान्नस्थित्रः निम्नान्स्य मार्वेन्सः ग्रुवाः राधितास्यार्विताधित। इटार्सिन्ध्रस्यार्वित्वस्यीरिवायात्रे। देशाविद्रित्यः ब्रेन्यने यास्त्यास्त्र न्वत् स्रेन्यते स्रेस्ते । वर्षे स्रूस्स्रेन्ये स्रायते । केंत्र:बॅट्बर:ग्रे:बर:वेंत्र:बॅट्र:य:प्ट्ट:खुव्य:कें.य:प्ट्:खुव्य:यवित्र:बर्धेत्र:य:बेट्र: या हो न प्रिये कु न न के त क्षा अर्थे मा अर्थ न मार्थे न प्रिये के अअर्थ ने मार्थे न स्थान सूत्रानु सानस्या ग्राम् कु क्रेन ने न्या यो सान से न स्याप्त प्राप्त स्थापत से स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत ५८। कु:क्रेव:दे:५वा:अ:ळंट:व:वश्चेट:दें:श्रूअ:५:वश्वश्वशःग्रह्याह्व:शे: भ्रे नवे भ्रे में । ने भ्रम् क्रु के व ने नगा मी या मोर्वे न पर हो न व्ये न मुरे यः नेशःग्रम्पार्वेन्यः ग्रेन्यिः श्रेन्यः म्रायान्यः म्रायान्यः विष्यान्यः सूना'नसूल'नसूरि'रवे'सीर'त्र'नार'त्रम'र्ने'ल'रर'र्न्नर'र्स्ट्र'त्रन'र्मेर' र्ने। क्रिकेट ग्रह्में अर्थेट अर्थ यावन ग्री प्रवर्त्त ग्रुस्थ अर्थे वे प्रवर्ष र्शेट नवे हिरारी।

रदःषः रदः द्वदः वाह्न सेदः सरः वाल्व श्री अः द्वदः सेदः द्वस्यः व्यान्त सेदः द्वः व्यान्त सेदः द्वः विष्ठः प्रः प्यान्त स्वान्तः सेवा अः हे। द्वेरः वः वाद्वि स्व श्री अः व्यान्त स्वानः स्वान

यःश्रीवाश्वाचेत्रग्रम्। यदेःवेषादेवःग्रीश्वास्यम्यादेशः ড়ৢয়য়ৢঀৼ৾ৢঀয়য়য়য়ঀ৾৽য়ড়ৢয়য়ঀৼয়ৼয়ৼয়ড়৾য়য়য়য়য়য় यायनद्राम्यानिवात्। ज्ञार्यस्याम्यानिवात् महित्रम्यानिवात् । ढ़ॗॸॱॻॖ॓ॸॱय़ॱॺऀॺॱढ़ॕॱॺॢॺॱॸॖॱॸॺॺॺॱढ़ॺऻ<u>ॎ</u>ज़ॸॱॿज़ॱॸ॓ॱॺॱॹॖॸॱॿॸॱॻॖॸॱऄॱ ৾য়৺য়ৼ৽ঀ৾ঀ৾৽ৡ৾য়৽য়ৄৼয়৽য়৽৾৴৻৴ৼ৺য়য়য়৽য়ড়৽য়ৢৼ৽য়ৢয়য়৽ ग्रेश्वेर्प्यायायवर्देश्वयार् सेययावश्चेर्प्यो । देश्वरायराविः नकुःसःयश विष्यदःवर्त्वरःसँशःनतुदःनःयशा श्चित्रःसःविष्याःसःसेतःदेः सूर्य । ब्रुन:मशरेंद्र:सॅर्स्य:र्ग्यर:ग्रीवाय:ग्री । हिंद:सॅर्स्य:र्र्स्य: यार बया भेता । वेश ५८१ क्षेत्र ५६४ त् त्रु न ख्याया या प्रशास विष्टि र सेसराउन र्रेन्ट्रिन सेन छै। १८९ ने रेन्ट्रिन सेंट्र सम्मार्स्स्र स्थित हिया। इसायर गशुरुअःमःक्षेत्रःर्से । श्रुॅं ५:वह्माव्यः रेम्यायः सः सः ५:मशुरुयः ग्रादः वदेः हिन्देशमञ्जी स्वाविन विन्यति यहिन सिन्य विज्ञान स्वाविक स्वाविक सिन्य स्वाविक सिन्य स्वाविक सिन्य सिन् য়ৢৼয়ৼ৻৸ৼড়ৢয়৻য়য়৻য়ৣ৾৽ঀৼ৾৻ঀৢয়৻৸ৠৢয়য়৻ঀয়৻ঀৗ৾য়ৄ৾ৼ৻য়৻ঀ৾য়ৢৼ৻য়ৼ৻ *नाशुर्र्ञायत्रः तर्रे 'त्रः र्देत 'नाठेना' प्रश्चायदे 'त्यः देश' प्राक्केत् 'क्केत्'त् 'नक्कें* अ' धरः हुर्दे । पाषः हे से ससः इतः दे द्वाः षः रहः द्वहः धे द्वादः षदः स्वानस्यानराभे त्युराने। स्वानस्याने भे तर्दिन प्रेते स्वर्ताने ने ययर रूप प्रमाणित संदेश हो स्त्रें । यात्र प्रमाणित संदेश हो स्था ह्या

र्रेश्चर्स्य केश्वर्षित्र प्रस्या केरायद्याय स्वाया साम् ग्यपर'र्'अर्केट'र'र्' केर'य'र्ट्स अर्कें द'य'र्शेग्य राय्यमिर्द्रित'य उटापः त्रसः पार्डेट् पः सेवासः ग्रेट्या वाववः यः पार्वेट् पः यः सः से स्रुसः स्रुसः रू नश्यश्चात्रश्चराष्ट्रितान्वावायरा हुर्ति । श्चिन्ति वात्यश्चा ने स्ट्रम् वस्य उदावाब्र श्रीन्यरा ।दे पीन्यर वी शादे प्यर से द्वा ।दे स्थर से शादश श्रुवाक्षात्रुवी । नर्देशारी गुरावा शिक्षात्रुम् । विश्वान्ता ने नशान्यावया यह्यः पर देन। यि देवाय हो र या स्वर्धर सुर वा विदे वह वे से देवाय । गुरार्ने विया दि सूरार्शे अया है नदे नर अर्दे या वाया है रदादवाया वर्चीय.वर्चीय.वी वियोव.लट.र्सेयो.यर्सेता.शु.वर्ट्रेट.तश्री विश्व.क्षे.ट्या.वु. वश्रश्चर्या । शुःलयर सून्। नर्षेया प्रचूरा शेन्युरा । वेशन्दा गरः कें र्हेन्सेन्सन्यन्युर्यस्य । यन्यास्याहिनः युर्यारेन् ग्रेन् ग्रेन्से ने नियामान्त्र स्थापा । यार्वे निर्धा हो निर्धा में निर्धा या सुन्धा र्शे।

न्यायाः भ्रे श्चित्रः तह्याः प्यश्चा यायः हे । याव्यव्यः यो न्यश्चेयः या । विश्वः याः विद्वः यो । विश्वः विद्वः विदः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः विद्वः

न्देशन्दरम् कुन्यान्यो श्वारेन्यायान्यात्रम् वार्थान्यात्रात्रा नर्रेशासुमिर्दिन्यान्सेन्यवेमिर्दिन्दिन्यार्क्षित्रस्ति न्तुमायार्सेम्रास्य यार वया नविव र वि र वे र या न कुर वर्ष या वे र या के या वे र वि र यार्बिनिने न्यूनायार्थेनायास्त्रेयायास्त्रेयात्र्यास्त्रायात्रेतायात्रेता या हो दाया वे स्ट्रा के सदा प्रका वे स्ट्रा या विद्रा के कि विद्रा प्राया र्शेम्बर्द्रस्यम्भित्ते। नियाने त्येत्रस्य वित्व दिः यद्वे सूर्ये स इन्यम् विभवन्ते सूर्य विभिन्न विभन्न विभन्न विभन्न विभान्य विभन्न ब्रिंक प्रसेव सम्बन्ध प्रवास विष्य स्था निर्मा क्षेत्र सम्बन्ध कि स्था विष्य कि स्था विष्य कि स्था विष्य कि स ययर विंग्नर रेग्नर याया ने सूर से पहें न पाने। क्वें से रेग्नर परे प्रस न् र्रोट न पीत्र प्रश्रामेग्राय द्वयाय व्ययश्वर न् न् यस्त्र प्राया देयाय इराया न्युमाराष्ट्ररामराबमाययरास्रीक्षिनराग्चानवे सुम्बर्धायीराद्यर ह्री यने ययर न्युमाय नर यसे वास में या महिन से समार्थेन से न सी मा भे भे ति रामि स्राम्य प्रति स्राम्य प्रति स्राम्य प्रति स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य গ্রনী

गर्वे प्रचे प्रमुख प्रवे कु ख प्रमुण अ द कि प्रमुख प्रमेश प्रमुख गर्वेद्रचेद्रचेत्रचेत्रम्भूद्रम्यान्यस्याधेद्रान्त्रचे क्रुःसेद्रम्पद्रस्या रादे कुं त्यरासे त्युद्द नरारे हें रासु समुद्द रादे कुं त्यरा त्युद्द ना धेद त्या ने·प्परःश्वेत्रः मुः स्वोः नवेः प्ययः प्येतः स्वेरः श्वेतः स्वाः स्वाः स्वाः प्ययः मुः नवरः मीशमार्वेद्राचेद्रास्टाद्यदासेद्रास्य मुख्याय धीवार्वे। ।देवे छेरास्टामीश यव भाषायावव त्यावि नम् से मैग्रास सुसार् महाया थे यव ने न वसा र्वि.च.म्बा.च.म्बा.च.च.च.दी.मी तर्गमःच.मी तर्गमःव.मोमा नवे श्रुट्या इस्र स्ट्रिंग यस द्वा ग्री स्व म्री द्वा स्ट्रिंग स्ट यनिवन्ते। यन्वायीयार्श्वाळन्यो ।यनेयन्यायी वार्वेन मन्त्रमा ।दे नमामेसमा उदायके नेदाया । नद्या त्या विद्या दि । रेग्या वियन्ता वियम्यस्यायस्याक्षाः वर्तिन्छेता स्वानस्याक्षाः नम्रास्याय । रूरानी हेयास्यानोर्वे रायसूराय। । नाववायानमें वार् हे विगाः भेरि। । रमेरा तर्म श्रुया प्रदेश श्रुरा सार्या । रखा श्री विषय स्वाया स्वया क्ष्म । म्हर्म । स्वर्म : स्वर मी'लय'ग्रीय'नभूल'नुयादया |नन्ग'ल'गर्देन'नेन'स्यय'पनुन्धे। | दे'धेशसेस्रारुव्यद्यायदें हा । नद्यायी शरे द्या सन्त्र्यायाया । वेशःश्री । १९ से नियन्त्र वया त्र शाम्य । दश्या या व वे सः सं त देवः द्वा देवः देवः द શે ત્રવા લદ શદ સેદ શું ત્રસ્ત્ર વસ્ત્ર વસ્ત્ર

धुवारुवायानहग्रयात्राह्मीयात्राह्मीयात्राह्मीयात्राह्मीयात्राह्मीया

नश्चेत्रपाने स्वाप्तस्यास्य वर्षेत्रपार्थे वर्षेत्रपार्थे वर्षेत्रपे द क्षेत्रः सूना नस्या सार्थे विना या से नर्जे न स्या प्रस्या नस्या नस्या नस्या नस्या नस्या नस्या नस्या नस्या नस्य हु: बेर्-प्रदे क्रु: वव: क्रीशन क्रीर प्रदे ही सः र्रा । देश व नर्गा वे: भेव: हु: ब्रुव: मर्ते श्रुष्ठानु रेर्ग्यो ष्रास्टाया वियाने नाने वित्रामा है। ८.केंद्र.केंचा.चर्कता.वर्ट...इश.जवरा। ।चरवा.व्रीश.चर्च्र...चर.श्र.वेश. वा निश्वन्त्रुयानवे सूनानस्य कु। विन्ति विक्रिं किंगि से होना विश र्शे। । ने या वर्षे न प्राप्त मुक्ते न प्राप्त मुक्त वर्षे व वर्चर्यानु प्येव प्रथाने हिंदान्य वे हिंदा ही प्ययाद्य वहंद प्या वर्षेत्र प्रमः อुरादादे भ्रेमामारूम् दुः भ्रेमार्थमा स्ट्रम् नर्थम् द्रम्भ सम्भिष्य नर्था र्वि:ररानी कें अरुअअरायायवर से निस्नानर ररानी सेना या सुरानवे हिरा ५.७१ मार्था त्र निर्मा में देश हो निर्मा हो निरम हो निर्मा हो निर् यथा गर विग रर में केंश हराया थे से स्था प्रमा । यह ग में से म सुर ध्रेरवे विवास वर्षा विदे व्यवस वर्षा वीस वर्षे रामर से हो राषा वि यशमाव्यस्त्रित्रेत्रेत्रित्रं विया विशादम्। यह्यास्यश्राम् र्हेत् อुर्भाराःधिःश्चेर्द्रगेदेःषश्चाश्चित्रश्चारा । वदःधरः होदःधरः वर्हेदःधरः वर्देर्प्याने हेराने विवय वापार्वेर्प्यान्य हेरा विष्य स्वाप्य हेरा विष् र्वेन छेन र है । भ्रे तुर न विन प्यर होना । डे य र्थे। । ने य न न के न र्थे गर्भे नदे वन्य शुनाहर श्रेगा हो द्राया न वेदा स्वा न स्वा न स्वा के त र्रे नर्ह्हेग् निर्दे हिन्दु म्यानस्य छ्ट हु या नर्हेन् या नर्हेन् या नर्हेन् या नर्हेन् या नर्हेन्

हेव.ज.चस्यायावाह्यायाचाह्यायाच्या यार्चेर.यहाङ्कीतः उदः र्भेद्रितः सेन्यः यहमा संदी ने धीः सर्वेद्वर्नर यन्यायीः सुर्या प्राहिर्यायाः स्वानस्य कुः धेर है। दिस सर्वेद निवा वीरा सुरा सुर द्वा विद विवा यंत्रेविंत्रर्धेत । शुर्वाक्षेत्रेया बुवाकावरावा । रेवाक्षेत्रवेत्र्या नश्याउदा शिन्यर्नेरमानन्यायीयान ब्रम्यूना । नेयायर्नेन्यासु यावि विराद्या यायास्त्रिस्याम्याविद्यारा हित्। विरायास्त्रिस्याहे वि शूरवा । ने त्यः र्र्भेव से न या न यो अश्वा । र्र्भेव न न य से या न विया प्येव।। वेशःश्री । रदःमीशावशः स्ट्रह्माश्रायह्याः यही व्रवः र्वेशः यद्याः यादेयाः सुदेर्देवर्, ल्वायराययर भेरवर्षे नर्वे न्यर हिं नर से रेवाय वः नर्वा दे Àয়য়'ঀয়ৣ৾ৢ৾<u></u>ৢৢৢৢৢৢৢয়'ঀয়'য়য়য়'য়য়'য়য়'য়ৢঢ়'য়ৢয় सम्प्राच्यास्मर्यानेम्। याववःम्रीःर्देवः ५. वियायाः वयाः येयाः यवः स्रयाः उदः ॲंट्यःशु:न<u>बु</u>टःनःषःक्षःकेःक्क्रॅ्यःस्रुयःनु:नश्ययःत्रान्वेन्।पदेःनश्र्यः नश्चेर्प्तर्भि । में में नदे वियान्य ग्राम् अर्था क्रुया ग्री नसून माया स्वासी होत्रप्रधिवाते। वर्षेत्रपानवार्ष्या ह्यूत्रवर्धेत्रधी वर्षेयायम्। वर्षेया नश्रव भारत विवा वेस वुनश वेता ने शर्व श्रें समाविता विवा नश्रवः सः इन्वावयाने यानिवाना धीवा श्रीते नश्रवः यादि उवान्य सेना रहा मे दें अप्यं के राज्ये अप्ताय के राज्य प्राप्त विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व सह्याः सन्ध्रयः त्र्यायायाः स्याक्ष्यः महाराजहृहाः व क्रिन्दः सेन श्रुरः त्रशः नरे नः श्रुरा गर्ने दः हो दः त्राः श्रुरः प्रसः देवे हा हु शः प्रशः हे से । নন্দ্রের্ন্র্ নাধ্যুদর্দ্র যা

महिश्रासानके न्यान्य स्वाश्यासाने श्रेश्रासानके न्यान्य स्वाश्यासाने स्वाश्यास्य स्वाश्यास्य स्वाश्यास्य स्वाश्यास्य स्वाश्यास्य स्वाश्यास्य स्वाश्य स्वाश्य

भे त्यून । नन्गः द्वेनश्रेनश्रेभे त्यून्य वन् भेन् भेना । सुश्यानने नन्य पर्धः वशुरार्से । वनवाने रमार्देन ने शाशुरान । ने वारमार्देन हे ने वार्षेत्। डेशन्ता हेरअदेरियम् स्वास्त्रा हिरासम्बर्धाने वास्त्राहरा । ने निव्यक्तिन में निर्माणिया क्रियं मान्य विद्या । निर्माणी से स्थानि ही सामानि विद्या । वेशर्से । पारेश्याये । पर्हेर्पायार्सेपायाय हेर्सेस्यार्पेदायापेदायाया ग्राधेरः न: न्दः क्रीं : १४ व्याविष्ट्याः सः न्दः खेतः हतः व्याः स्वाः नेवाः नक्री नः सः न्दः <u> न्वो नदे नु न इसस ५ सस मन्ते न में सूस नु नससस दस ने न्वा यः</u> धेन्द्रवृह्यान्त्रभेन्द्रम् वर्षेन्द्रम् वर्षेन्द्रम् वायान्यान्त्रम् विद्या ने अर्चे क्किं नवर वहेना पर्र होता । धेव कि नव स्व व्य स्व वि नि नि । स्व शुंबार्क्कवार्वायदायहेवायरा होता । हेवार्की । वाशुंबाय ही हे ख़ूरावः नन्गानी नर्देन् प्राप्त म्यायाय स्रुव प्राप्त स्रुव प्राप्त स्रुव स्वर्ग स्वरंग नन्गःन्द्रः वर्गेरः वर्गे नः शुरः हो नः नरः कवा शः धवे वळे नः नः वार्रे नः हो नः नरः स्वा नस्य या यहवा यर पर्दे दाय दे से प्रवीवा या हो दाय स्वा स्व या ही स क्रन्याक्षातुरागुरायाधेवार्वे स्रुयात्। नयसयात्यास्रुटा वनायात्यसार्वे न'न्वाया'हेर'न्याय'न'न्रश्चेत्र'चर'न्चु'श्चेत्र'न्य्याया'ने नर्श्चेत्र'र्श्याया वै। ।गाविना:ध्रेरःगार:५ना:हेर:मावर्यःम। ।दे:५ना:व५ना:वे:५व:र्सेर:५। । क्षरायाम्ब्राम्ब्रिम्ब्राम्बर्गायाम्बर्गा । यह गार्वे में याया में में या । के न ८८.चगुरःक्षेत्रेःवक्केटःक्षेः८वींशा । याटः८याःच८याःचक्ठेटशःब्रेवःवीटःया । ने त्यानन्या ने हे स्ट्रम् विं । नन्या ने स्या नस्या वह्या वर्ने न त्या । सम्स

मुश्राभिश्वे भित्राम्य । विश्वास्त्र । विश्वास्त्र विश्वास्त्र । विश्वास्त्र विश्वास्त्र । विश्वस्त्र । विश्वस्त्य । विश्वस्त्र । विश्वस्त्र । विश्वस्त्र । विश्वस्त्र । विश्वस्त्

गिरेशायामहर्षाया सँग्रायासुसा हो दाया सी प्रोत्ते दाया दाया पा वै। शेसरावे सुराउदासेव प्रायान्दिया सुपावदा ग्रीया पर्वे दाया ग्रीया भे त्राया स्रायप्ति स्राय्य विद्यास्य विद्यास् यः धेवः व नहुषः यः तः स्वायः ययः वे सुष्यः ययः यविष्यः स्वः व्यायः खुरारोसरामहैरामायासेमार्हेरासराम्मायान्य स्वादान्य सुराम् वर्याधिन सी निर्माण से ने निर्माण कर ले सूर सी से निर्मे । निर स्नरः परा धेरदे सुराउदायाधेदायमा । शुरागुराग्रार प्रदानार्वेयः श्चित्रा विश्वातात्रास्य त्राम् विष्यात्रात्रा विश्वात्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स गर्वेत्। । नहुरु १८८ के गा हुन हु। न १८८ । । शे सूद भाषे के गाने प्येर्थ। । सुरु यान्वेर्प्यस्थित्वयुस्त्। । सेस्र अहिं रिष्ठे से स्वाप्ति । विश्वेष्ठि । नियास्य वियास्य वियासिराम क्षेत्र वियास वियास वियास क्षेत्र हैं। के कं अपार्शेयाप्यम् अपेरे व्याङ्कायान्म विन् स्रोत्या विष्या गुनःश्रुनः सिरः श्रवः प्रश्रायने वितः सुरः वितः वितः सुनः वितः सुनः वितः सुनः वितः सुनः वितः सुनः वितः सुनः वि वर्ने अन् वेर व्यापा अँगावित्वर्ग में विदासर इया तुरा परि प्रभाषा या ग्री या गुरा प्राप्त द्वारा है स्था पर्ते साम भी या स्वार्टे इ.जा द्र्यूज्जावावायायायायायायायायाच्यायायाच्यायायाच्या ममा यन्नरासेदेः सुमिविःसे या हो दायाया दें तर हे या हो दानासुद्र या या

ने निर्माने के के से सन् से स्वर्ता किया श्री।

वा वित्राम के स्वर्ण के स्व

भे न्यायन्य यन्याया भे यार्वे न से न्या वित्र स्थान हेता व्यापने वित्र स्थाने स् <u> न्यात्यश्राक्केन्यात्वेन्यम् कन्त्रेन्यश्रामक्ष्यायान्यस्या</u> स्रुवःमः श्चानः वार्विदे स्रुवान हेन्यः विनः ग्रामः विनः नविनाम् विवासा देः यःविराधिःश्रेषाः संक्षेत्रः स्वाद्यात् वर्षः हेतः संक्षेत्रः स्वाद्यात् स्वाद्यात् । वेवापर्केशरेटर्ग्योर्वेदरायिहेशस्ययवार्टेग हिर्यार्वेवसेरेटर वैं नक्कर्नने न शुन्यन्य विं विवार्ष या विन्य विश्व स्थान मिहेरामा इत्रामित खुवार्डसा तुः बत् ग्री देवे के निते सूर्या मी वितास रहे प्यार बेर्पिते हीरार्रे । प्रवेर्प्त ही त्यवार् विष्वहर्मित हीरा वर्षे प्रवास है। उस्राविमा मने मार्श्चेरमा मारिका कर महास्त्री है। मने स्वाह्म स्वर है। व्यम्हरूषायान्द्राक्षे स्रुव्यायार्श्वेषायायार्थेषायायाः धिद्याचे विस्तर्भावस्य है। मान्वराधीः दिरास्टरहेरा छ्रास्य रहता तुः सुनासाय दिवा माहेरा से दास्य

यर स्कृत्या । क्रिया क

गहिश्यः प्रचारित्रें स्थायः श्रे स्वार् विस्तु स्थायः प्रचार वाद्यः स्वार स्व

उदावस्या उदानदेरावर्देरायस्य । ज्ञारक्ष्या पुरे से स्थान से देश । शेसशरुव रूट्योशयने हेट्या दिया है भे हिंचर होता विदेया हेव गशुस्रासर्केन् प्रकंट कु निम्न । सेस्र राउत क्ष्य स्वी पर्देन । निश्चेत नगुर-दनर्देन उसासर्वेद क्या । वे से रादे त्या गर्द रायर से दा । वार्ये स यार विया हिंद या शेंजा । हिंद हेद री शक्त है है वा हो हो । या हेद री शाय हैंज क्रेन्जूरम् ।न्यारक्षेत्रजूरन्यरक्षरार्वित्वा ।ने के वर्वे वर्षे वर्षे वर्षे वा । ने ख जुर कुन वर्ने न यार धेवा । यार विया यावव वर्जे र बिं ने खा । जुर कुन सेस्र में ना त्य पेंद्रा निय है ने स ने त्य स है न न सा हि त न न न हिसदाम्बर्या । गुनः हुने हिन्य सेन्त्र। । हिन्स के ह्या विश्वार्शे । न्या मुन्यायान्यायान्यान्यान्यस्यान्यस्यान्यस्य <u> राप्तर्भात्रस्थराग्राप्ते रहसाग्रीसाप्त्रायास्थापत्रिं पार्श्वर्भापस्यापः</u> इस.री.बर.को वार्च्र विवरःसरःवालयःसरःवर्षेत्रःचरःवर्षःकुरःवरुःकुरुःदश्चिवारुः नर्मस्यात्रम् स्थान् वस्य १८८ त् निया । स्य १ त्रा दिया दिया स्था । न्यायः वा । ने व्याधिन न्यामः के विया पिन्। । धिनः ग्री पिनः श्री वा क्या भी वा विवास ने त्यामिर्देन स्वे क्रून क्षेत्र वर्ष्ण्य । व्रिन् क्षेत्र त्ये स्वा नक्ष्य ने । व्यान वयर हिंद द्वार है विवा थेंद्रा विवय है यह देश सर वेशुर वे वा दि यश स्र-निवर जावव के पेरि किंव से रूप के मार्थ निवर के प्राप्त के प्रा वे से नवन्गवेन | ने यन बुर से सय र सुय तुस मर पर । | नुस्य नदे श्रूर:सर्यान्यापळेंदारेया विशार्या।

८८. श्रे. पर्ट्रेट. सप्ट. श्रेंचा श्राचश्चा या प्रत्या प्रत्या है । प्राची प्रा वासवताविवा हु से वर्दे दायदे इसायर नक्ष्मा दादे वसाधी दासे विदे भ्रेषा देखियात्वलेष्ट्राचभ्रेत्रहेटास्रवताहिनाः हुसीद्रावातातार्वेनाः त धिन् से नि दें वा त्या ने के वा के स्ट से भी नि स स्ट नि स्ट से वा स राइस्रश्राभीश्रादे।द्यात्यास्रवदायाद्यात्र्यात्र्यादायाद्यात्रास्यात्राद्यात्याङ्गी र्अन्य विद्वित्वामा सर्ज्य है। है या द्येम्य विद्वार के निवे हिरार्दे। वर्गेना'सदे'नान्सर्भारना'ग्रार'सूर'नसूत्र'सदे'कुष्भ'श्रुभ'त्रस्थर्भग्री'रेनार्भ यः स्टः वी रहें व : क्रेंट्यः यः प्टरः वक्तयः त्यवः व्ययः वयः विष्टः प्रविष्टः विष्टः विष्टः विष्टे । अर्क्षेन्। विराधितम् अराधरा हो दायि खुला वदी द्वा प्येत स्था अर्थेर ৾ढ़ॕज़ॱय़य़॓ॱऄ॒॑॔॔॓ॴढ़ॏज़ॺॱय़ॸॱॸॖय़ॖॸॱढ़ॺॱॸऀज़ॺॱय़य़॓ॱॾॣॕॱॸॖॱय़ॱढ़ॺॱ नगमान्त्रविद्यविद्यन्त्रक्ष्यम्भः देवायः द्यानेम्यः विद्या वर्षेत्रः स्त्रिः द्या व्यास्त्रे त्या यटान्या मदे सुटायी देव दे सासे नाये देवा साम हेन मदे र्वे नियमित्र क्ष्मियायायया भ्रे या या रे श्रिताया क्षेत्र प्रयाय विष् तुःनहरानाधिरार्दे। ।शैं शैंराहेनामने भेशर्मा ग्रीशन्धन श्रीयान्देर नः इस्रयाने प्रदे प्रमाया सँग्रायाये गुरासे स्राया ग्री हुँ प्राया स्राया से द र्रे वस्य र उर्दे र प्राधिव प्रया र र र र र पावव स्ययः ग्री र व्या प्रवे हेवः यःश्वेदःर्से वेदःरादे ने नवा सञ्चादः सेदःराधेदः सम्वेशः सम् गुरुषः यः त्नाः नवेदर्रञ्चरन्यरः हुर्दे।

गहेशनःस्वानस्यन्दः दुः येव संदे नर्जे दः या मुन्दा व स्वा भूगानमृषान्दायेवादेशासमान्त्री शासवे कु सळव न्दा दे नभ्रेतासवे য়য়য়৽৴ৼ৾ঀয়৾ঀ৾৽ড়৾৽ৠ৾য়য়য়ড়য়৽য়ৼ৽য়ঀৼ৽য়য়৾ঀ৸ৼৼয়৾ঀ৾ঀয়ৣ৾৾ৼ৽ৼঢ়য়৽ यश नने नते कुं ते ने शत्याय विया स्याप्त कुं ते वित ए सरा विश्वान्यस्य प्राप्तेम स्ट.क्या यास्या नस्य प्राप्ता स्ट.स्. विवा क्रुव रुप्तत्वुर्द्धान्यस्य दुप्ति स्वेशस्य विवासे दुर्द्धाः सुर्द्धाः देख्याः धेव व ने य न सून न तुया शुर्म श्रम थर व ले सूर न से न त्या षर'त'यस'नर्झेस'रा'य'र्से'ने'नदे'तुस'रा'नक्केन'त्रस'न्ने'न'य'र्सेट्टे' नरःकर्र्रियम् रावे भ्रिर्भे । दे प्यरः सूना नस्याम हेना हे नाव्य ग्रीश चुर्यासदरार्धेत्। पारेवादिःयसायावर्हेत्यसराग्रुर्यासाग्रुरावारायदरः ब्रैंव ग्री प्रश्न ग्री अ न क्री ८ प्रतर प्यें । पर है वा वे रेव वा व अ प्रकर प्राप्त र न्नो नदे ग्रु न ने त्य ल्या या द्यु माया स्वाप्त या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व र्ने । । ने क्षर क्रें न ग्री व्यव ५८ व्यव ग्री मेन ग्री ५ ५० व्यव १ की व्यव १ विष् न'ने'न्या'ने'ने'लेया'नर्ह्ह्या'भे'नुर्याणे। गुराधराने'त्य'न्र्र्यन्यंन्य'लेया नश्चेत्रप्रेशेस्राध्याची सूनानस्यानस्य नस्त्रप्रेत्रप्रेत्र नित्राचीत्रप्राप्य नर वर्गुराया दरायेवार्षेदावास्यानस्यानि नवनादे सार्वेना ग्राटादे था न्भेग्रान्याभावसाधिन भेरते होन्या स्थान स् श्चीराया स्वाप्तस्याविवारे ययरायसार् प्रिम्प्रम्या

सृगानस्य के शक्र निर्मान के त्री । दिशः व स्वानस्य के शक्र निर्मान के त्री । दिशः

यहेवा | ब्रिकाक्या | विद्याचीका प्रचेता चुंदा प्रचेवा | ब्रिकाक्या | विद्याचीका प्रचेवा | ब्रिकाक्या | विद्याचीका प्रचेता चुंका क्षेत्र स्था | विद्याचीका प्रचेता चुंका क्षेत्र स्था | विद्याचीका प्रचेता चुंका क्षेत्र स्था | विद्याचीका चुंका क्षेत्र स्था चुंका चुंका चुंका चुंका चुंका चुंका क्षेत्र स्था चुंका चुं

नावेश्वान्यश्वा श्वान्यश्वा श्वान्यश्वान्तः वित्तं त्रित्तः व्यान्यश्वान्तः वित्तं त्रित्तः वित्तं वित्तं

वित्रभासायामिहेश। वर्षास्य स्थानिस्य स्थानिस्

नर्यान्तर्नु न्तर्निर्म्य देवायात्र ने नया कुत्र न त्या कुरि हें स्था सुसार् । यह वःश्वाय। । नुश्रुवः नरःश्रृदः स्रवाःश्रुदः शुद्रः ग्रुदः। । नन्वाःवीयः स्टःवीः देवः ८८ है। । यावव भ्री देव प्यट सा ग्रुस स्वा । यदि वे दे रहे सं यार्वे द से व या । र्देवःकेवःन्याः ग्रहः त्युवः त्युक्तः वर्षा । त्युः वर्षः यार्वे नः सेवः स्वाः वस्यः या । न्यायः यः त्यवः वियाः वर्षे रः शुः रेयाया । वियः याशुर्यः यः भूरा सूरः रहः मावव ग्री देव मार प्यर सम्बन्ध राये द्रमाय सुर दे उस ग्रुस साय प्रसंस्य वया न'वे'नेव'केव'र्से'वर्युन'मदे'सून्ना'नसूत्र'हेदे'स्चेर्रासे नर्सेन्। नेस'व' स्वा नस्य पेंद्र ग्रद्ध प्रमु नु नु र पेंद्र पादी निवा वी स येवा स पा हेद र्ने सूर्यात् से सरा तयर या स्रेनित निष्य । पावन प्यान ने या पहेन अर्केट्राचान्द्राचे ख्राचक्षेत्राचा के वाका श्री प्राप्ता क्षुत्र प्राप्त होत् । या क्षेत्र प्राप्त होत् । या क वहिना हेत मदे निर्मे अभानस्य सदे के न न् विन प्रसान हैं है न न न न स्थान वर्ग्चेर्न्स्यूयोश्राग्नीःर्रम्यान्यर्थान्द्र्यायान्यस्य वर्ष्ट्रम्यायान्यस्य । वादगादाञ्चुद्राचीयायीयदिवायायायञ्चेद्राव्या

श्वा नश्वा ने विष्य निष्य निष्य ने विषय ने वि

श्रुमा निश्च प्राचित्र निर्मित्र के भाषा निष्य भी। विश्व भी। विश्व प्राचित्र निर्मित्र निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्र निर्मित्र निर्मित्

कुर-रेअवशर्गीस्रश्व सी-द्रगवन्ति। ग्रीस्रश्व सुनर-सी-व्युर नदी । नर्देशने नार प्यर पेंद्र अपीता । ने नश नार्देद रा सुर नर्से अश पर्या विर्मेद्राचे के सेवर विराधित स्था विराधित स्था स्था नर्यान्दर्रायेत्राच्यायायात्रेत्र्याः करन्त्रास्याः स्वान्याः स्वान्याः रेसर्रावर्ष्या ग्रीत्र ग्रुमान्यूया वर्षा प्राचेत्र प्राकेष्ट्र में वर्षा है जिसा है। वर्गुरर्से | नक्ष्मन नहुरायरा ग्रम् ने त्यासूना नस्य छूट हु त्याने सर्था प वःमीं समारादेः न्वरः वी सः से समारवदः वसमारवन् स्वाः वस्यः यः वने वरः नेशके नरमन्त्रामार्गेश्वराम्यानने नदे नदे न्दर्नेशके नरम् धरावशुरार्से विश्वार्शे दिन्यार्देरायाधराइमानुवाउदाश्रीशावुश्वारा यमा निरानयाशुः यद्वासाक्षुः तुते स्रोसमाद्वारा न्यान्यः तुर्वे । विमाद्वा ब्रैंट में नर्गे द्रायया ग्रहा नु से हिंद ग्रेय हें तु से द्या वसय उद निर्वा पर्वे भ्रेम मुन पर प्राय प्रवेश रेश स्थान मुन्य प्राय मुन्य प्राय स्थान स्थान

सूना सेसमः भेत्रः तुन्तः तुन्तः तुन्तः तुन्तः स्त्रेतः स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रेत् स्

गिलितः क्षें त्रश्च श्वास्त्र स्वास्त्र व्यास्त्र स्वास्त्र स्वास

हेव ग्री कें राज्य नहेव पाने। या हे न पान में या सुव पान में सुर सुव पान में सुव पान में सुव पान में स नश्र्यानान्दावहेषाया बदाया मानानाना विष्ये के सार्वे म्हास्य स्ट्रिया मन्यायके नासे न्या के प्रहेषा हेव ही के या धेव वा ने वस्य उन न्या रे'रे'ल'नहेत्र'मधे'सूना'नस्ल'ह्रस्राच'र्से'र्सेर'नहन्यात्र'त्रा'र् येव भर्दे । श्रुरियम या नहेव भर्दे वक्षा भर्दर वशेट न दर्दा । इस्रयायमाहेन् सळ्तात् भेर्यास्य मुद्दान् स्राम्य स्राम स्राम स्राम स्राम्य स्राम्य स्र नित्रानात्वार्त्त्रिकायनेनकायम् क्षेत्रेत्राचि । क्रिकार्वेत्रका सुप्ति त्राचा नहेव'म'वे। नर्गोव'सर्केग'माशुस'त्य'सर्केन'हेर'नेस'में होन'म'नर। ह्य यायायर्केन् हेन् देयार्गे होन्यान्या केंग्राह्मय्यान बुद्यान्या न बुद्य नः इस्र भः नावतः तः क्रुं के रः क्रूँ वः पः प्राः ना स्र सः नर्के पः पे । पि हे वः पुः चः वः त्रा विवासुः द्वेवः धरः वावशः हे : धरः द्वाः धरः शेश्रश्रः धरः द्राः ह्यः वर्चेराधेरावाचेरामशाचेरामदेखे विष्यानक्षेत्रामक्षेत्रे सावहेरामान्त्र वै। १२ द्याय हैय न द्या न स्या न स्य न स्या न स्या

र्श्वेर्यश्वेर्यात्र्वेर्यात्र्यात्रेष्ट्रियात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

ने'ग|व्रव'यश'हेर'मश'यर्ळे'नश'ग|व्रव'य'स्ग|'यश'मंदे'यर्ळे'न'उर्व'र्'| क्रेन्याक्रम्यम्यम्याक्ष्याः वित्रस्थाः श्रेन्यमः हिः श्रेन्यक्षः निवेष्यमः नुष्यम् क्रॅंशर्ग्रायाः श्रेंग्रायाः पर्वेद्याः प्राप्तः व्रेष्ट्रायाः श्रें प्रायाः व्रेष्ट्रायाः वर्षेष्ट्रायाः वर्षेष्ट्रायः वर्षेष्यः वर्षेष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्येष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्येष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्येष्ट्रायः वर्येष्ट्रायः वर्येष्ट्रायः वर्षेष्ट्रायः वर्येष्ट नर-५-अदि पर्देन-भ-इस्र अप्य अप्ट्रेंग्-भर-ग्रु-न-५८। ग्र-५८-५ ब्र-भ र्शेवायाश्चरयाययायद्वार्चात्रार्थः श्वेतायात्रात्वार्थः स्वायाया र्शेवाश्वासान्द्रान्यवास्य मुद्रान्य श्वास्य स्वेते स्वेत्रः स्वेते । न्वायः हेन् त्यशः व्यापाः क्षेः क्षेत्रायः व्याप्यः वहेवः वर्षास्यानस्यानुरानाद्रान्त्राचेत्राम्या । सर्वेदासरान्हेदासरानुनासा यानहेन्यानी न्वी द्वीयायायान्तेन्यायायायायान्यायायाया ८८.पधिया.स.८ता.यषु.योषु.तात्रा.चैट.यषु.र्स्या.यर्कता.स्त्रात्रा.स्त्रा मर्दे । श्रेस्र रहत श्रे में त्र श्रे मान प्राप्त में त्र श्रे में त्र श्रे मान स्रो ने त्यमासूना नस्या गुरानवरा नरा नु त्यमा ग्री । वस्य ग्री ग्री ना ना नहेन मन्त्री क्षूरावर्रे ५ दिराकें अपी अपी त्या वा स्वा स्वा कुरावर्षा पि'व' अ'र्चे 'व' से दे 'वेद' तथ अ' दद रें केंद्र 'दूद कु व' र्चे 'व' वेद 'व अ' वर्कें 'व' यःश्रॅग्रायःमान्त्रियःमदेःवद्ययःग्रेःगुःगःस्रेःगेःययःग्रुटःनदेःसृगःनस्यःन्टः र् जेर्मित्र्व । रे सूर्मावे नक्त्राया सूर्य स्वाप्य स्वाप्य प्राप्त स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्व नश्चेनश्रागुर्द्शेर्श्वेदेनहेंत्रात्युश्राश्चीर्द्रित्वेद्वात्यात्रहुणाया <u> ५८.७ वोश्वायाय भूचा त्रायाय मुचायाय भूचा प्रायाय मुचायाय भूचा प्रायाय भूच</u> ধন:দেল্যার্গ্রী

माशुस्रायाः केंद्रायाः देशायम् स्रोस्रायायाः स्रोत्रायां स्रोत्राय वा र्रेश्यायते पुराने नित्र हो न्याये पुराने निर्मेद सर्वे नाम्युस ग्री:पॅब: इवर्ते । सर्देव: ५: ग्रु: नदे: खुव्य दे। नद्या: सेट: या है राग्री: दें। वि विक्तित्री विदेत्रविष्णुयावी सरसाम्सान्यत्रम्यास्य इस्रयाग्री सम्राक्तेत्र में भी देग्यर सर्देत सर नेया सदे सम्राम्नेत इवानी सम्भादिता हो सामित्र के वा की सामित्र सम्भादी सम्भादी सम्भादी सम्भादी सम्भादी सम्भादी सम्भादी सम्भादी सम वे। येग्रथं सम्भून सन्दर्धे असम्भून संदे कुन्दर ने न्या वी यत्र अ नुःवर्देन्यन्द्रसे वर्देन्य क्षेयदे महिका कुरा निक्कें स्वाय प्राया निक्कें र्वेन जुदे र्देन जुर कुन ५८ रे र्वेन पदे वनम जुर से समाग्री नसून पदे यसम्बस्था उर्दे प्यति प्यत्या हिसा सु स्वा हिसा निष्या में सा सु स नश्चनःमदेः खुयादी नेश इदिः श्चेष्ट्राध्यादे से ह्नायाया से न्यायाया शेष ख्र-प्रानित्रें । क्रिन्या ग्रीरिन्या ग्रीरिन्ये द्या निर्मार स्वाप्य । नदुःगिहेशःयःशैंगशःपदेःन्यःपदेःकैशःयःनकुन्ःपरःगशुन्यःपशःनेः धेव'म'त्य'मेश्व'मंह्रेन'व्याधे'सत्रुव'म'सेन'म्न'त्रहेव'हेन'धन'न्न'धन' र् अंस्र पर्मे स्वाप्तर्था । स्वाप्तर्था प्रमाप्तर्थे स्वाप्तर्थे स्वाप्तर्थे स्वाप्तर्थे स्वाप्तर्थे स्वाप्तर ळ्य्याष्ट्रेश्ची ब्रद्धार्थायश्चराम्ब्रद्धार्थायम्ब्रित्यः स्ट्री ब्रिट्स्स्ट्रु र्वेश्वर्थः नर्जेन्याम् प्यत्रम् न्यानिष्ठ्याः निष्ठ्याः निष्याः निष्ठ्याः निष्याः निष्य

यर धेत दुवा रूट वर त्र श्रुभाव श्राम श्रुमा यावत वर्षेत प्राप्त वर्षेत्र प्राप्त वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर

थ्रायाने प्राची में त्रायक्षाया है नायते हेता से ससाय हो नाय है सा शुः इतः विदः नर्झे सः संदे। रेशे संस्था उतः त्रस्य संस्था उतः वर्षः संदे नर्धे द मायायमें नामायमें नामे हामायो नामाया ने हो प्रमेयान् प्रमान सर्वेद·रेंदिःनर्वेद्रःपःक्सस्यःग्युदःश्चेद्रःपदेःधुवःत्रःतुस्यःक्षेद्रःनःद्रः। অম'ন্দ'র্ম'নর নার্রি'নয়ৣয়'য়ৢয়য়য়'নয়য়য়য়য়য়য় कुषानिवर्न्ने तार्श्वेन पान्या हे भून निम्नि संदेश सक्स साम स्मिन वयर ध्रिमः पर्के अभाषाया वर्षे वाया पूर्वी अभी। दे प्रवाक्षिया योव भी के प्रवा नर-देर-वामन्यामें नाकेवामें नुस्य कुन्तुन में यापर विद्या क्री न'नाव्र-द्रिट: ग्रेस्थ ग्रे श्रेंद्र-प' स्ट्र-द्रुट न' स्यथ प्य ह्रस्य श्रे येव पा के अ विव पु प्राया निव प्राया विव प्राया । यस मी पाव प्राया प्राया । यस मी पाव प्राया प्राया । यस मी पाव प्राया । यस मी प्राया । यस प्राया । यस मी पाव प्राया वयानुयामान्स्ययान् भूत्रयान्भूताः वेदाः से । तुयामान्स्ययाः वददान्यययाः श्रुद्रशः वा यगः न वरः ग्री शः (व्रशः या श्रुद्रशः या श्रुद्रः के ग्रा शः कुरः हुः <u>२८.क्रेच.यर्जा क्रेट.र्था पब्रूट.राषु सर व्रिय.लूट्या श्रीक्र्या श्रास्य व्रिट.</u> यःधेवःर्वे॥

नर्हेन्'व्युर्गाग्री'सर्'धेन्'नश्चन'र्ख्य'य'स्

च क्रिंत्र त्यु अ ग्री में ने ने स्वर्थ शु ले त्या प्र त्यु प्र प्र प्र त्यु श्री प्र त्यु श्री प्र त्यु प्र त्यु श्री प्र त्यु त्य हो प्र त्यु त्य हो प्र त्य हो हो त्य हो हो त्य हो हो त्य हो त्

यो हि.ट्याशियाश्ची यक्ट्रियाश्चर्यस्थाश्चर्यस्थाश्चर्यः यो हि.ट्याशियाश्चर्यः यक्ट्रियः यो वि.ट्याशियाश्चर्यः यक्ट्रियः यो वि.ट्याशियः यक्ट्रियः यो वि.ट्याश्चर्यः यक्ट्रियः यो वि.ट्याश्चर्यः यक्ट्रियः यो वि.ट्याश्चर्यः यक्ट्रियः यक्ट्र

इसायाम्बर्यायम् निमा विदेशि राधियाने प्रमायस्य निमा ८८। सर्रे.केंद्र.केंद्र.जराजरा रगे.यदु.क्र्याय.ग्री.यट.य.यक्र्ययाय. सर्केन । पर्ने भूर रे प्यानहेत त्र अरे हे अपर्वेन। । नर्हेत प्रमुख ग्री अरे र र्बेर् त्यानरे नात्र अर्केन । नर्रे अन्तुन वहेना हेत् वर्ष पर्र पर्देना हेत् यर्देवाया । यर्डेद प्रयाय ग्रीय दे श्रेट श्रेट पर्टेट प्राय्वेच। । यर्डेद प्रयाय ग्रीशक्षे प्राप्ता प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र विश्व विष्य विश्व विश्य वर्षात्रमःमूजा विर्ट्वतःवर्षेत्रमःमुग्ना विर्द्धतःमकूषाःभरमःमुगा वि वेशन्ता नर्हेन त्र्युश्यून राजेंद्र स्ट्रीं न्यी श्रायम सेन्। नर्हेन त्र्युश ૡૢ૱ઌૹૢ૾ૼ૱ૹૻૻૼઽૹ*૾૽૽૽ૢ૾૱*ૡૹૹૺૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૹ૱ૢઌ૽૽૱ઌૹૢ૿ૢૼ૾ઌૹૡૹઌ बेत्। विद्वत्त्वुराष्ट्रवायार्षेवायरायरायरायेत्। विरादा ग्रुटारायरा ग्रम्। ग्रम्भे भ्रम्भ्रम् स्वर्ष्य स्वर्थस्य प्रमेष्ट प्रमेष्य स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं धरावर्युनाधरात्रुगविः कुवैःवार्षेः ने प्राराधिका स्वर्थितः स्वर्थितः म्या नाववादी ने १ द्वाराणीय पाने वे स्थिता न हें व १ त्या वादी स्वादा के ना पान <u> न्याःसरः हेवाश्वःसदेः ग्रुटः कुनः वेनःसरः ग्रेटः सदेः वेशः नेः नवेनःयानेयाशः</u> राक्त्रकाराक्ष्र्वायकार्क्ष्र्वायाक्ष्र्वायाक्ष्रम् । विकान्मा सम्भितावक्ष्रायाका ग्रमा धर्मा र्शुः र्र्भुः सेन नर्रेन प्रमुक्ष के खून न । से पर्वेन से प्रमुन हमा ममाराधरा सेन्। विकारमा से सेन गुन गुर रो रो या सन समानाया हिर वह्रव द्वारा गुर गुर वर्षे न पर वर्षु मा दिव सक्त नु साम प्राप्त स्था । र्थेन्यम्यन्त्र । थेविन्वर्केष्यश्चिश्चर्यस्यम्यक्ष्मः वर्षेन्। । श्रेःथेः वसेया विश्वासी प्रति देव इस्या श्रीया । से हिंगा खुड़ या प्रविव इस्य प्रमः

हेश्यन्भेन्यते क्षिण्या क्षिण्या विश्वास्त्र विश्वास्

वर्डेन्द्रव्युक्षःश्चिः स्वाद्रविः व्याविः व्याद्रविः प्रदेशः प्रदा वर्डेन् व्याद्रविः वर्डेन् वर्डेन्

नदेः ध्रेमः त्र्रा सेस्र अवसः न्रुयः नः वित्य स्वात्र स्वरः धरावशुराववरार्श्वे वरारेते हैं वाया ग्रहार वी भी से सार होता यान्त्रें तार्युकाया लुवाका रायदा की वार्ति द्वा तुका ग्री प्युवादे व्यका श्वदाना वर्ष्युयःश्री । ह्यूटःसेस्रयःग्राटः वर्ष्ट्रेत्रः वर्ष्युयः देः वर्षः वर्ष्यः वर्षः स्वर्धाः वर्षः वर्षः वर्षः <u>५५.स.६स.चभ्रे</u>र.स.र्ने.लर.चध्य.सू.सू.सू.सू.सू.मू. नर्हेन त्यु अर्हे अर्प न्या पुर भेन प्रेन प्रेन स्था स्था होन न से न स्वा अर ने निर्म्य संभित्ते श्रीया ने या ने जिस् क्रियं निरम्य विषये श्री श्री संभित्त विषये या शेस्रशालुसामिते प्रायान सुन् प्रति सामित्र सुन् ग्रायान सि । ह्य अराय राष्ट्र विष्य विषय । विषय विषय । विषय ৾য়ঀ৽য়৾৻য়৾য়৽য়য়৽য়ৢ৽য়ৢয়৽য়৽য়ৼ৽ঢ়য়৽য়য়_{য়ৢ}য়৽য়য়ৢৼ৽য়য়৽ गुरें।

यर ख्रेत न श्रुका न त्या प्रकार प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प

 ने न्याय श्रुम्य निर्देश । श्रेस्रश्रास्त्र स्त्री निर्देश स्त्री स्त्री स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र यिष्ठेश्रामा स्ट्रिस्य विश्वास्त्र स्ट्रिस्य स गिहेशःग्री:८ग्रामःकेशःवस्थाःउट् श्ली:व:८८:याद्यश्यःपः८८:वर्धयःवःवर्दे व्यः रवायम्यम्यम् वर्षे न मुन्यम् १ स्वरं १ स्वरं १ स्वरं १ वितः १ स्वरं वितः १ स्वरं वितः १ स्वरं वितः १ स्वरं वित स्राप्या चुन के दार्श वि न ख़्दे ग्वा वृद हे दार्शे क्षि वि द क्षे द न दे व व व व व व व व व व व व व व व व व व क्रियायायम् सर्वेदाययादेवे ख्यायाय हिंदायम होते । यदे या प्रवेश वर्हेद नमनामान्या ने महिमायानहेन नमान हैन प्रमुक्त हैं स्माया सुरात्वर न गिरुषा भेः अष्रुवः र्सुगिषः रिषा न तुरः न देः श्वीरः न वे । विष्ठा । मर्दे। । न्दःमें दी ययाया थे पहुणामाया गरिया है। श्रुमा तुरामा सर्वेदः वयाभी वह्या पर्दे । श्रुव वुयाभी वुयाय हैं विया सुवया भारत्य भी वश्रुव र्वे। । १८ : वें त्या वाहे अ : वें ८ : दे । ५ : ५ : वें ८ : वे ळग्रायशबियाग्री सर्वेदायवे । दे सूरायदार्श्वेदायह्यायया दे यो शे सम्बद्धिम्यान्वन् । विःवें प्रतायने वा भिन्ने प्राप्ता । भिन्ने प्राप्ता निवा हित ब्रुश्यायाद्व विश्वार्थ विश्वार्थ विश्वार्थ के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्म के निर्म

ने सूर नवे वनसानस्रेत पाया न्या सुरायया वि न ने वि की के लि वर्गेनामायाम्यस्य स्थार्वेनमावदे सुराद्रात्रेनामा ने नदे देनाम वर्वे रःसूरःव। क्षरः षरःहेवः व वरः से वर्दे क्षेत्रः नावः वाश्वयः वर्क्षेययः त्रअः वेदः वेदः दिनः प्रदेश्ये वेदः विष्यान्य । त्रुतः वेदः वेदः कुदः व्यानक्षेतः नर्दे । ने नशुराने स्ट्र से राजु स्ट्र हि स्त्र नश्च न स्ट्री । ज्ञान न्वासायाः कवार्यासान्वायाः पद्मी न्यासदे के राष्ट्रे स्वीतः स्वादः सम्बदः थर्भायात्वीरायपुरायपुरायप्ता र्ट्स् स्थायात्त्र स्थायात्र स्थायात्त्र स्थायात्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्र स्थायात्त्र स्थायात्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्र स्थायात्त्र स्थायात्त्य स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्यायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्य स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्त्र स्यायात्त्र स्थायात्त्र स्थायात्य स्थायात्य स्थायात्र स्थायात्र स्यायात्र स्थायात्र स्थायात्य स्थायात्य स्थायात्र स्थायात्य स्थायात्र स्थायात्य स्यायायात्य स्थायात्य स्थायात्य स्थायात्य स्थायायात्य स्थायायात्य स्थायायात्य स्थायायात्य स्य यःश्रीवाश्वाश्चीः इस्रावाधोरः इस्रशायदिवे देवः केतः से दिस्रार्था स्वारी है । म्री सर देव साधिव पासूना नस्य ५ सान भ्री ५ पवे नावस सु सर्वे दिया नश्चिम्रशायान्यान्यम् नुःश्चे न्यायः नवे कुः वे सम्यायश्चि । न्याके श न्वायःचवः अर्क्चाः श्रुम्यः वर्षा । श्रुमाः नश्यः कुः वेः इयः वाषे दः न्दा । कें नः र्शेम्श्रायः हिंद्र हे हे स्ट्रम्याय विश्वर्शी।

श्चित्रास्यस्य निवाक्षित्र निक्ष्य प्राप्ता निक्ष्य स्थित् विवास्य स्थित् ।

न्त्रभार्त्वाकार्यक्ष्यात्रभावात्रभार्यस्थात्रे क्ष्याः स्थार्थ्याः स्थार्यः स्थाः स्थार्यः स्थाः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थाः स्थाः स्थार्यः स्थाः स्थ

त्वीं वा खं या है। वर्डे अध्वरत्य स्वते वर्षः स्वर्त्य स्वर्य स्वर्त्य स्वर्त्य स्वर्य स्वर्त्य स्वर्त्य स्वर्य स्वर्त्य स्वर्त्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य

व। विरःक्ष्यःवर्षेयःनगवः त्रः येनः वर्षेय। विन्याः सः नेयायः ग्रेः येनः स्रेयः या । यत दर पार्वे द स दें भी या तथा । इस कुर हुँ द स या न हर ता । न दगः मीर्था ग्रह्म रहेरा हेरा हिर्था स्थित । वावन प्यतः सूर्व रायहरू मुर्था है वन्यामान्द्रान् भूमायद्या क्रुया है। यत्वायामान्द्राया देद्यामान्द्राय क्षरा कु'न'ने'न्ना'ग्रन'अन्याकुष'वेद'गठेना'ने य'त्यय'न सुनय'र'धेद'ग्री नन्ना रुना तर्ना निना नि न प्यर प्याहे अर्बेर निने न या स्या की मा यन्दरक्तुःनर्देश्वरान् नमस्यायम् व्यान्यन्त्राम् नर्गे व्यान्धेनः यथा ह्य रुव से सम्दर्भ के प्रमे प्रमे निष्य निष्य में प्रमानिष्य में प्रमानिष्य में प्रमानिष्य रा.लट.रेची.सर.क्र्रेचीश.सप्ट.शटश.भिश्वाचार.रेची.सर्ट्रेचीश.सर. श्रदशःक्रिशःसःदेःद्वाःददः। वादःद्वाःस्ट्वःसरःह्वाशःसरःवळदःक्रःकः ने न्यान्ता यार न्या अर्देन यस हैया अप्यस्य खंदा कु नम व्यास्य है। न्नाग्रम्। द्धाराद्भेरद्भान्यम्यस्य स्वीरद्भान्यम् द्वाराद्भीत्र नश्रास्त्रस्त्रः ह्रिन्यश्रास्यः अद्यास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः स्त्रास्त्रः म्। अर्देवःसरः ह्रेंग्रायःसरः पळंटः मुः तरः त्युरा वेयः गुः तः वया देः नवित्राम्नेग्रारान्ते प्रमाग्राम् ने प्रवित्राम्नेग्रारास्य सुना स्था सर्वित्यरः ह्रिनास्यरः सरस्यः क्रुस्यः सः स्येवः क्री नन्नाः ग्रहः वेस्यः स्वः वः बेर्'रा'षर'र्वा'यर'र्हेवाय'यदे गुर्'कुर्यसर्देर'यर'र्हेवाय'यर'दळर' য়ৣ৽য়য়৽৻য়য়ৣয়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়ঢ়৽য়ৢয়৽য়য়য়৽য়য়ৢয়৽ <u>ব্রংশ্রমশতর প্রমশতর অব্যান্ধ বার্ম রাইর ব্রার্থ গ্রীশ বর্বা দীশ</u>

यद्दी विकार्शी विकार्शी विकार्शी विकार्या विकार्या विकार्या विकार्या विकार्थी विकार्शी विकार्थी विकार्थी विकार्थी विकार्थी विकार्या विकार्य विकार विकार्य विकार्य विकार विकार्य विकार विकार विकार्य विकार्य विकार व

विभाराःभ्रे नाने प्या भरमा भ्रम् भार्ये नाम्य समय प्रमान सम् ঀ৾৾৾য়৾ৢঀ৾৾৽৾ৼয়৻য়৾৾৽ঀ৾৾৴৻য়য়৻ড়য়৻য়ৢ৾৽ড়৾৽ড়৾য়ৢ৽ঢ়৾ঀ৽ৠৄ৾৽য়য়ঀ৻ড়য়৻য়য়য়ঢ় मन्द्रा श्रुविश्चिष्यवयः धर्मान्यस्य प्रमानान्त्रीया सर्ये वार्यस्य विषयः , प्रमाय प्रमाय प्रमाय के त्रा के त्रा के त्रा के त्रा के त्र इस के त्र के वरेट्रट्रस्य द्वाय गुरायय वर्षिय स्थारी वया शे में वर्षिय है वर्षिया हुः शॅर-व-द-व्ह्रेवे-द्रश्रानिव-दुः व्व्यायान्व से क्रेवें विवाग्र से निवाग्र से निवाग्र से निवाग्र से निवाग्र ह्वार्या से दार्गी विश्वासी दिया विश्वास के त्राया से देन प्रत्या में प्रायम व्यूट्र क्षेत्र क् नर्यायवाराधेवाते। वस्यायेवायान्त्रायायान्यसामीयमें सह्या रवारारीयान्त्रीवारायदे सुरार्क्षराना उसारे नसूत्रायात्रवरा दे उसा न्वीयात्रासुयात्र्याचेरात्रयायेग्यायारार्झेरावरासूराववे धिरार्दे। । ११ रःचदेःवयःवर्गःग्रहः। यमायेवःयः अव्याकारादेः ग्रहः कुनः सेससः हरिः र्श्वेद्राचार्यात्र स्वत्य स्

ने विनामित्रे वनशाया लुयामा निमाना से विनामित्र सम्या मुर्या मान्या सम्या मुर्या सम्या मुर्या सम्या सम्या सम्या मद्रायमात्यास्रीम् साम्यान्द्रम् स्था दे त्यः या निष्यः साम्यान्यः स्रुयान ने रह्या शुः सूना नस्या ने नर्वे न नर्वे या ने । क्षे न न स्यया या या विग्रासर्रर्द्रियार्गर्स्र्र्र्याय्यद्राय्विर्गर्मर्यात्र्र्यात्र्र् मन्दर्भानान्दर्भानाः स्टर्म्य विषयः स्टर्म्य विषयः स्टर्म्य विषयः नर्हेन् वर्षायन्त्रामा श्रीमाया ने माया माना मित्रा व्याप्त किया वर्षा वरम वर्षा वर्या वर्षा वर् देव हे मह यम य से मारा माहर हो राजनमा वे वह मारा ने वा शि न्राधरान्यान्धरायम्। क्रिन्यामयान्वाने वहेन्यायान्यान्। विश्वरा मञ्जेर्भास्यास्यास्यान्त्रा । वित्रवाद्याः स्यान्याः स्यान्याः । वित्रवादाः नश्चेन। ५८ मानेना वर्षुर श्चेश । इट कुन वर्षेन धर शे वर्षुर दे । वर्ना मी जुर कुन नश्चन पाणी । श्वना नश्च पायने वे केंद्र पे पित ने। । जुना ह किर नक्ष्मायित्रिन्यस्याधित्र विस्त्रास्यित्रम्यते सूमानस्यायित्। श्लिस मग्रुव्रग्रह्मार्थेर होत्रा । भ्रिनि न ध्रिम् अवत् भ्रेत्र होत्। । ते न श्रुवाः

नर्यासरमें न्या विविसाधिरासे नरे कुरावर्षे न्या विवारी। ख़ॖॺॱॻऻढ़ॕॸॱॸॱढ़ॆॱॸ॔ॸॱय़ॕॱढ़ॺॱढ़ॎॾ॓ॻॺॱॸढ़ॆॱख़ॆॱॺॊज़ॕॸॱॻऀऻॎॾॗॗढ़ॱय़ॱख़ॱॸॆॺॱ ग्रीअ'नक्षुनअ'मञ'रूटाखुअ'य'ळग्राय'र्येग्'डेट'। श्रेट'हे'ळेद'र्येदे' क्रॅनशःक्तुशःमवेःके:र्नेतःकेतःमें रःवशुरःतःगर्नेदःनशःगर्नेदःनवेःर्शःशुः वै:८गव:व:बेट्टी वार्शे:८इ८:वव:व:वद्दा । श्रुव:व:बर्ळवाः वीयायायहरी। किंगानीयाहायहयारी धेया। वरकेयार्यायेरावारी नरःसहत्। क्रिंदःसःयःश्रेष्यशःश्रेष्ठःसःययदः। विदेषःसशः र्वेषाःसरःश्रेष्टः नरसहत्। दिःयःर्वेषस्यस्याधिस्यस्यो दिसःश्रीस्यरापीःवाधरः गर्नेटा । गटकें रटमी खुराय दी । क्रेंट र्से ग्राय सुर् दि हैं हुर रापा । दे कें भाषा श्रीम्था महिन्या । दे त्यादमाय च के विमाधित्। विश्वाशी । देश सा पि:ठेवा:स:र्सेय:ह:धेव:पवे:बेवा:स:स्य:ख्य:श्रेवा:वाहेंद:द्वेंय:स्य:वाह्द: नन्भेन्दिन इन्यादनदेखसर्से बेर्न्स्तिस्तिस्तिस्ति वात्रास्त नगाना सूर से। गुःनगाय नदे पर्निश से नदे मेर पर से पार्ने राया केंन्स र्शेग्राश्चेर्यान्द्रावर्षेत्रपृत्तुः वित्रे के विदेश्वर्यं वित्राचित्र याट.री.यावश्रावश्रावश्चिताराष्ट्रायावश्राका.खीश्राचा.रा.याया.रा.यी कुरान्त्रुनारान्ते वर्षिरानराष्ट्रे नास्त्रवाष्ट्राया सुन्यान्त्रा होतान्त्रीया या नेवे के विक्रानवे स्वाप्तस्य में अपार्वे न प्राप्त ने से न से म श्रुयात्र वृत्रःश्रेययाः ग्रेयाः श्रूत्याः श्रूत्याः स्थाः कुः विवाधियाः स्थाः व्यूत्रः विवाधियाः स्थाः व्यूत्र नःस्वानस्यासे वर्ष्ट्राया वर्ष्ट्राया वर्ष्ट्राया वर्ष्ट्रायाय वर्ष्ट् यानहर्वायराश्चेयायाञ्चा नर्वायाश्चेत्राचित्रास्यात्राच्याः वःवित्रानरार्थेन्। गुरार्श्वेरिवासेन्। यस्त्राने स्वरानस्त्रा स्वापारास्त्रम् म्रीमः सूना नस्या सेना । सामर्था भरेते म्रीमः सेना निर्मे । सिने सूमः सेना धरःह्रेंगाः धर्मा । श्रेमाः धर्मा अस्य दिरा । वर्से द्वस्य । ग्रीशक्ष के त्युश्य निर्मा । सम्बर्ध माधीशक्ष के से स्था निर्म का निष्म के निर्मा नरमात्रश्राम् दी। श्विराहे उत्राप्ता हे श्वे श्वे । विश्वाप्ता ने प्रश्ने प्राप्ता गुरुरोवानदी । हिरक्षितरोस्रा हिरक्षितरो । निर्देष्य निर्देश वर्ते निया । सेससम्वेसासु विवासी निया विवासी । विवासी । निया विवासी ५.५ अ.५ मग् फु. ये५ स्य वर्षी र नया ग्रह धे५ ख्या सर से ग्रा के। ५ या है र नर्स्यार्श्के निवे कुः सेव मिने से मिने स्मान्य माने स्थाने स्वानिक निवानिक निवानिक निवानिक स्थाने स नर्जेन्द्रगत्य्युव्देन्द्र्र्य्यः केन्द्रम्या । सूनानस्यासेन्केन्द्रन्नेन्या सवयः प्रभागुर के विवा वर्षेत्। । ने व्य स्था श्री स्वा वर्षेया सेता । धीर्गीः सूना नस्याना याधित्। । ते वे क्षेत्र हे सायहे ना हे व सूना । ते किर ग्रीयात पुत्र मेर पात्या । ने नया यह या क्रा मेर मेर मेरा मेरा है पाया है नि यर:ग्रा विशःश्री

षरःवर्द्धरःकुःवःवःर्क्षेत्रवाशःस्रवदःषशःसः<u>ई</u>त्राशःद्वीशःव। देःविदः

हुन्गदन्यस्थे तुर्यस्य सूत्रानु लुयायम् भे नुः स्रे केन् नु नुः नियायस्य ঽ**ব**ॱয়য়৾৾ঀ৻৸য়৾৾৽৸ঀ৾৾৴ৠ৾৾৴৻ঀৣ৾৾৽য়য়য়৻৸য়৽৸ र्वेन:यर:वर्रेन:यय:गुरु:द्यानश्चर्याने। नुय:न्यना:मु:येन:यरःग्वर्यः न बुद्दाना वाहेदार्वेवासार्वेवाद्दारोब्यायंव्यद्वात्वा वाहेद्यायायेद्या वस्र १८८ द्वार्य १८८ द्वार १ वस्त्र १८८ द्वार १८५ द्वार है। ने हैन प्यमा हैं गमा इसमा गुन हुन या समित नहा । या नह सुन हो । ८८.धरा हि.क्रेर.भवत.लग.टे.चबुव.टी किंग.चर्य.शुश्रश.१वर.भवत. श्वेट.चड्ड.चर्या किंग.चर्चत्र.ट्या.तया.ट्य.च्या.च्या.हे। ।यट्य.क्य.हेट.ता. न्वीन्यम्मेश ।ने स्मायह्रवायम्यावर्गने वी। सि द्रयायायस द्रयापम द्रा । परःद्रवाः स्ट्रह्मा । वर्षाः सेदः सुरः स्ट्रा । वर्षाः सेदः सुरः से स्र स्ट्रा । इसमा । समयः प्रभाष्टी मः तः सेसमः उतः निवा । नर्से मः तसमः समयः प्रभः स्वाःवार्श्रवाःदशुम्। । अवदःधशःनेशःदःशन्यः सुर्वाः। अवदःधशः वर्डेन से नगव लेखा । गार लेग नयग से न नुष्ण मानका है। । खुरा उत् न्यगः हुः सेन् 'न्व्रा । इनः कुनः न्यगः हुः सेनः वर्नेनः केनः । निर्गे नः न्यगः हु: क्षेत्र: ब्रेत्र: या । ते अ: गेरिं ब्रह्म: हुन हुन । यह वा हु: क्षेत्र: सुक्ष: निवःधेरा । व्यवायः ग्रेयः नेटः में राधेः विवायः यम् । हे सः नुरुत्यः वर्षेनः थेः वशुरा विशःशी

नेशन नुस्रामान्द्रभेदाहे न्द्रानुदाकुन ग्री सेस्राकेश केश निदातु न्वाय द्वा दय थे द न क्रें द राय ये यय उद की देव द यह या का का त्य त्रुट्ट् विया य वित्र द्रुष्ठा य प्येद द विद्यु हिंदे सळ र प्या दे द्रायी श्चित्रप्रविश्वास्त्रप्रत्यात्रश्चर्यस्त्रप्रविश्वास्त्रस्यश्वर्षेत्रप्रवि ने स्वर र्शेट्य शुर्भ तुर्भ सूस्र वर्भ हे प्यस पर्केषा न स्नूट् होट्य हे र्श्वेत सेस्र भाषा नक्तृ न्वर्यामें न्द्रिया वह्या सेस्र स्थाने न्या हेया हेत ग्री-देवार्थाग्री-त्र्यापादे-द्यादाद्-र्योदाद्यापळंदामु-वावाळेयादेदाद्-र्वो है। ह्या कुन हो से समा हो हैं नम के म के म के म मान हो न मिर कुं या कुया चदिःन्वेन्यायासुः सूनःन्दः र्वेवायासेन् र्योयान्त्रः यान्त्रः यान्त्रः यान्त्रः यान्त्रः यान्त्रः यान्त्रः यान् धरःविष्यायः नवे श्रीरःर्रे । दि श्रूरः व खु या व या न सूरः ध या या दि । व । या प सव्यक्षितः हे खु सातु वर्षे निया गुत्रा कुता त्र सुत्रा प्रदेश स्वय सात्र स्वय स्वय स्वय स्वय स्वय स्वय स्वय स नेयायम् नुयात्रात्र्यात्रे मानेद्यापार्द्यम् प्रत्येत्र स्ययायन्य प्रत्येतः रान्द्राच्याक्षे क्षेत्रास्त्रयायम् वृत्राययार्षेद्रयाययात्रस्य मी। दिनमा स्वान्त्रामा द्वारा विष्या स्वान्त्रामा । द्वीया स्वान्त्राम्या यानहेत्रचुरात्व । स्वापुर्नायानवराक्षान्यावरावरात्व्या । दे नया वहिग्रअःविरःश्चे द्वावः अः ग्रेदः चर्म । हिः क्ष्रूरः ग्रुः चर्वे ः व्यवशः ग्रीकः द्वीं वाराः

कुः केव भें त्यः क्रें न रहं यः इससाये ग्रास्ने साम्य ने साम्य हा सामे निया निया धॅव निव निव में व रें अ श्री अ र्कें मा नि अ सी हो न मा महि अ नि म खेता में हरासळ्य हेरासाधिय ग्राम स्वितासाम स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप केत्र रें विवा वर्ड में सूर्य विदाने गार्वी सरायश केवा सर वहीं ताया सरा यर वेंब मुब क नारे ना धेव केंद्रा वेंब ग्राम ने कं या ग्री का नाम प्याम थी ही व र्ने विश्वानम्य श्रून ने भें कु विया चुन व धिन भेव कु वु अवस्था वर्षे न स्थून नमा धॅरान्त्रः स्वामार्थे मार्थः स्वाप्तान्त्रः स्वाप्तान्त्रः स्वाप्तान्त्रः स्वाप्तान्त्रः स्वाप्तान्त्रः स्व वर्क्केषानान्ता नक्ष्मनानुःस्रवत्ष्यसायायाक्ष्मेनान्त्रीयागुनात्व्यायासेनाया *भेव:ए:५गेंव:धर:ब्रूट:*र्टे॥

महिरायस्य स्वास्त्र स्वार्त्त । विर्याय स्वार्त्त स्वार्य स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त

मदी देवे प्यम् इत्याह्या हुने । इस श्चेत प्यम् युन स्र्रेसिय प्रमास्य वेशन्गरम्वनामिष्यश्यश्यश्यत्रभातुः धेन्न्द्रिंद्धे देट्द्रुट्न र्द्धवानक्षेत्रायायायन्त्रन्ते। न्नायमायन्त्रायन्त्रम्यते हेत् होन्यमायस्य मर्थाधिन क्रेश ग्री प्रमुप्त पादिया ग्री या श्री माना प्रमुप्त माना हिया नश्चेर्यंत्रे भ्रीत्राच्यायम् । देः प्यरायम् अवस्थित्रः स्थित्यम् द्वात्रः स्थित्यम् । ग्रे श्रें न्याम्स्रस्य ग्रे त्यत्ये त्या ने न्यायस्य विस्तर्य हो स्वास्य ग्रे कु त्र्राक्ष के सकाराधित है स्नित्र ग्रीका लेका के | | दे स्नित्र हो गा के दाया श्रूराय्यात्राच्यात्राच्यायात्राच्या स्टाचावयाची हेरायायवयात्राच्या न-दर्भित्रित्र्वास्त्रवारम् निर्मात्र्यः स्ट्रिस्या स्ट्रिस्या देशः सः से से नवाःकवाशः ५८: नवस्यः ५५ वाः भरः हो ५ : भः ५८: व्यवः ५३ वाः धरम् अयर हो द्रायाय भ्रायाय द्राया विवा वी स्था द्रवी स्था वद्याया ते[.]दे'द्वा'सेव्य'व'द्दःवस्त्रुव'यदे'वर्ह्हेत्'द्वुस'ग्रे'कःव्यस्टे'प्पद'से'सूद' नर्भानियानी सान्यानार्ने दासे नातु । निर्माणी सूसानु । नर्भस्यान् स्था र्रायार्या क्रिया मुख्य दर्वी अपि वर्षा प्रमालक क्रिया के अप्या विष्या बेर्-नर्वाचीर्याविष्यः ग्रुः हे। विरादः हेर्यायः से से त्यवरा विश्ववायः मु सर्वेरः बर् शुरुरा हिसाबर हें सामारे पी दी। कि प्यराम निया सास वेर व। श्रिया प्रस्था प्रस्या हि. से दः प्रदेश्याद्या । यद्या मिं कि साहे श्रिदः सायाया। नन्गंन्द्रमान्वर्ग्धः प्रवादि । स्राप्ति निष्या र्धेव प्रवासे में प्रवास । विश्वास मा अर्कें म विषय । विषय । विषय । स्ति म्हिन क्रायायमा विविध्यामा स्वयाप्यमा विश्वासी । क्रिनिया स्थम हिन्

नह्रव परि क्षेत्र अत्रे निर्धाय क्षेत्र प्रमुख परि क्षेत्र अत्र क्षेत्र अत्र क्षेत्र अत्र क्षेत्र अत्र क्षेत्र क्रॅ्वा'सर'सबर'वरीव'सर्वे । ने'स्पर'न्र्राचें के'त्र्रा'त्र्रा'स्रा'सर' येग्रयास्य तह्यास्य तुरुष्य स्थित तह्याया से तुरुष्य से से तह्याय ८८। विग्रायात्रयात्रम्भगयात्रायहेरानाययात्राहेर्याया सर्केगाधेन दें। निवेक् अर्कनदी न्यान इसामान सार्ने सार्वे सामान र्शेग्रथायर्देरात्रथाळे देराध्रेगाययेयात्रात्रा क्रेंग्राण्वत्रात्रे देशयत्रथा नुःभूवा नभूवः वसेवः नः नृहःभू सः ने नुः नमः नश्यश्रः मशः नृवो नः वाव्र देकेद्राग्रद्रायम् अभिवासमाङ्गिमा सम्भाने । स्रोत्या विष्टी माने । सर्वे मान ग्राम् ज्ञुः वर्षः प्रस्वा वरुषः याने । व्या अर्थे । स्री । स्री व्या ग्रावित । याने । व्या प्रस्व । व्या प्रस् ग्रेग्रार्श्यादशुर्वेर कुं अत्रुद्र श्रेशर्थे अप्याप्य सुर्याप्ये प्राप्य स् लर. श्र. चह्रव पर्ते । ते स्वर लर्ग पर में क्रिंर च चह्रवाय वय वी । वह्रय समायराम् से नहसा है। सा नहसमा पाने सकें ना पेन ही। नहसमा नमा र्द्ध्यात्रम्भ्यः श्रुःचाव्यः १ द्वाय्याव्यः १ देवाय्यः विद्याः । वसेवावसुराने। । मान्य प्रायम्य स्वीता स्वायम् स्वीता । प्रायम् सुराने । प्रायम् वर्षियः सुरुप्तिम् । विश्वः स्त्री

नेशन्त्राचरुत्यम् स्वर्धित्यरादर्दित्यश्राराक्त्याम् सुराचर्सियः नर्जु है। यशन्दिर्देव सेंद्रशत्रुव श्रामा है। विश्वसमें निवाय प्राम्य वेशःश्री दिःयायशःग्रीःदःक्त्यादी गविवःशुःयायदःस्टानीःयस्यन्भूनः मदे में न्या भी निर्देश मा भी प्रकर नम महिं न्या निर्देश निर्द गडेग'स्य'जुर्दे'वेया ।वर्दे'वे'यय'ग्री'ट'क्क्य'हेरा ।डेय'र्टा नवेय' ब्रैरमायमाग्रम्। वरायाचन्यायास्यायमायमान्ये। ।यावन्यीमा म्यायानम् स्त्राच्या विष्याचा स्त्राच्या विष्याचा स्त्राच्या विष्याचा स्त्राच्या विष्याच्या स्त्राच्या विष्याची रे'नर'नन्ग'गठिग'र्र्अ'नश्चून'र्ने'श्रूअ'र्राय'र'कुय'न्द'त्र्न'र्येन्'र्यअ' नेरानन्ग्रासर्वे विसामवेदाम्याने वर्षेत्रम्सस्य ने देवास्य स्यामे नगरानु शुरायशास्तामी दिवाधारा मञ्जूनाधरा शे वुश्वावाववा शे दिवा श्वा ठे र र्र्म्या नन्या यो य दे रम्यावन र शै र दे रम्यून रम्य त्या स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा नश्चनःयः है। हैं वः सें र अप्नार्या अप्यारेषा हेवः वर्षे अ। । यह देव नश्चनः यर्से तुरुप्यम् । वर्षे नरुप्यम्या भूरसे तुरु है। । दे नरुप्य प्राप्ति । वर्रे गुःर्दे । विश्वर्शे । गावन प्यार पर्ने प्राया ग्यार प्रश्ने प्यश्वर स्वरं प्रश्वर स्वरं स्वर भ्रे.पार्ट्र-व.यर्गातयभाये.वी.प्र्यू भारायश्चेयासप्तान्त्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभार्यद्वात्रभारत्वात्यात्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्यात्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्यात्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्यात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्वात्रभारत्व सूसर्नित्रसम्बद्धान्यः में ग्राह्मे ग्राहमे ग्राह्मे ग्रा नन्गानिनः यह ने हे सूर वर्षा । हे रु र्शे । दिन यह हे पानि रु रु न सूर्य पान ग्विन हिन्न न्यान्त्र स्टाय क्रिया स्थान स्वाप्त स्थान माउवरन् निक्षाव्यान् कुरान्दायायने यापन् नुः हो। दाकुरा नीयायने सी।

ग्रेन्द्री । यन्यात्यः र कुत्यः सेन्द्राः सर्केया । हे सः से । याववः ग्रीसः से स्वरः यः नद्वाः वी अः त्रु अः श्रु अः यः प्यदः दः क्रु यः द्वः दः स्थः दः क्रु यः दः नन्ग्राश्रा वित्रिस्यायि दाक्तिया है। वित्रिस्याया इस्राया वस्राया वस्राया व र्। इन्द्रान्यन्त्रयान्यन्त्रात्रे न्यात्यया कुषान्य स्त्राधी वदे न्यानन्याः यशक्राधरक्त्रायरक्षे गुर्देश्रुयर्, से सत्तुव सदे से वारावहेंस्रायः यः र्ह्वेदेः न्यवः नक्केन्द्रवयः नह्रवः यन्त्रेन्द्रः स्त्रेष्ट्रे नन्याः वीवः ग्रावः यवाः ह्याः च.ह्री विद्यालयाशुःष्यराक्त्रायाः विष्यावासेरायोदेःस्रयाद्याः मर्था । र.क्रियायरी तायावरा सम् । विराह्या । ते प्रमुमास विराधन हो भी । वःभेः समुवः स्वाभः रुटः दुभः ग्राटः वार्वे दः धरः वुभः यः वे। ने विदेः श्रूयः दरः इर्-वुर-वा वि.लट-श्वरक्टि-क्षेचर-ह्येरा विल.हे-वर्वा-हेर्-ह्य छर वा । भूरान कुरा दुवरा मार्ने दायर होता । बुकान करा है या नार्दे राजाया।

न्यान्यत्रे विव्यव्या कें सर्वे स्वरे स्व

गर्डिन् से त्राप्या नेयात्र म्हायाने प्रसेन् न्वे स्वापा हिया न नश्चेत्रप्रभावे। विवासिष्धेयाग्यम् श्वराधम्याय। देः नयः सेययादेः नह्नः र्रे पिया । भूर न इस्य दे न विया हु। विया र्रे । दे भूर से प्रिय प्रे न स्थून नरः वर्दे दः यात्रे । यात्र यात्र यात्रे यात्र यात्र यात्र यात्रे । यद्या वे १ सूदः ययः सया श्रमा । प्रमया गर्भ या सुर्या पर्दे दान विदान दिया है। ৾ঽ[৽]ৡ৾৾৾৾৾৾৾৾য়৽য়৾৾৾৾ঢ়য়৾ঀঢ়য়৾৸ড়য়৸ড়ৼয়য়৽য়ৼ৽ড়৾ঢ়৽য়য়৽য়৾ঢ়য়৽ नम् तकन् सेन्। ग्राल्मायाय्यायायायाय्यस्य । नि सूम् न्याविवाया रे.च.चग्रवाद्यश्रस्टःवादेवाःस्याद्येदःसरःवीःचवी । देःष्पटःवाद्यदःग्रीयः र्रिस्त्राचु नर्भे त्याची र्राचीय त्यार्थे सूस्रान् प्रिस्टल्य दे क्ष्र-अर्वेट द्रशन्त्र्या प्रदेशके प्यट हें द्रार्थेट शास्त्र त्या विवासी देश द्ध्रायात्रयापदादेह्ययायी त्यायरा होत्रायवे हिंदी पहताया मुद्रीत हेटा ধম্বদ্যাঝরঝাবাশন্ত্রবেশ্জীপ্রমানতঝাধারয়ঝাত্তপ্রথায়রমান্ত্রির वर्रे र ग्रे क्वें नहत्र में स क्वेर ग्रे नर र क्वें

न्गवायते द्वेनया मुद्देन्य मुद्देन्

वह्रमामवेके अरादमायम्बेरात् वह्रमामादर। व्यायमवेके अरावया नेवे वर्षे गर्हेन पर के वर्हेन प्रकासी देसका प्रवे नक्षा पाने न्वाय प्रवे क्रॅनर्अपोत्रप्रभाने नक्रोन्यम् जुर्वे । निःषा से में सम्भानि सुषा है प्यन्य न विगानक्रेन्। हेन्सेंदिनने त्वरादर्नेन्स हुन्। विने धेरा गुनि यशन्तर्धेत्। विशर्ने यदि वित्रः श्रुष्टे विश्वर्ते असे देशस्त्रम् ग्रा विश्वाश्वर्यात्रम् ग्रीयात्रस्ययाः हेन् स्रिवेष्ययात्राने स्रियायाः स्रोतः सरत्ह्नासन्दरत्द्वत्ते क्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राचन सर्वे । दे प्यरत्वयस्य नने नमा के दिसमाना निवानु ने दि कु ते त्यमा ग्रीमा ग्रामा के दिसमा निवा है। वःसयःमः इससः वर्षसः तुः नदेः नः वर्षे नः से वर्षे नः वे केंसः वः नः वः प्याप्य र वनर्वसायह्याःव। यसायारः सुर्वत्वसातुः नरे नायहुरः नरः रेसायः यः र्रेस्सरस्य सेन् प्रवेष्ट्रिम् है। यदे विदेश्वर प्रसाद्यस्य स्वाप्त । यदे विद्यूमः भेरवयुरमिर्वाहेषाभेर्यो। विरावी प्रश्नित्वरेष्ट्युरम् । दिःषश्रभे हिर हे सूर नि विशर्भे । कु सळव परिया ग्राम्से समा स्था देवा या है। शु मिदे स्ट्रिंग वर्षेत्र वर्ते वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र व श्चेत्र नि त्य वि न त्यो । न से न त्यस्य ग्रीस से हे से में स्स्रा । विस्र मासुरसः राःक्षेत्र। सरत्रः त्रेरः द्वरः बर् श्वरः क्युः व्येतः यह वाक्षाकाः त्रः श्वेः वाक्षान् वाः रादेः शुः ती 'र्हे त'रें दि 'र्शे 'त्य'कण्या या दि 'श्वूट' है 'तृट' त्र त्र 'त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र र्षेत्रग्रम् वर्षेत्रभूगानम्याक्त्रमाक्षेत्रप्रेत्रप्रेत्रपर्देत्रपर्वेष्ष्र हर्ना हिन्द्र निक्र के निक्र क यद्वास्तर्भा विश्वासी । विद्यासी । विद्यासी

है। द्ययाध्वासावियाग्रीका हिद्दासरायसम्बर्धस्य ग्रीनाया हिंदाया बराध्वेंद्रायम्बर्धस्य हिंदा हिंद्राग्री हिंद्राग्री हिंद्रा हिंद्र हिंद्रा हिंद्रा हिंद्र हिंद्र हिंद्र हिंद्र हिंद्र हिंद्र हिंद्र हिंद्र हिंद्र ह

वर्गेन् मदे के सर्मेय वर्षे समामानिया स्वीत के सामित के समामानिया स्वीत समामानिया स्वीत समामानिया समामानिय कुर्यस्रित्रिं मिर्दित्यायनन्यायायमान्यस्यायायायम्यायस्या वह्स्यरायात्रेरायादेःवयायञ्चयःयाविवः त्र ञ्चयःयः संप्यरः हेवः स्रा *ॸ्ॸख़ॿॻॱॺॺऀॱक़ॆ॔ॱढ़ॕढ़ॱऄॕॸॺॱॻॖऀॺॱख़ॖॸॱऄॺॺॱॺॱ॔ॾॱॺॸॖऀढ़ॱय़ॱॺॱॾॕढ़ॱॸॖऀॸ*ॱ केराव बुरावादरा सराया वाहे दार्था वाहे दार्था वाहे सामा वाहे सामा वाहे सामा वाहे सामा वाहे सामा वाहे सामा वाहे यान्यायम् ग्रुयान्यान् हेन्या ग्रुप्तीयाने। ने भ्रायाधीन न हेन् सें म्यास याडेया'यी'होट्र'स'विया'याहेद'सँ स'न्याया'ग्राट'हेंद'सँ ट्रस'यावद'वेया'यी स' ग्राम्प्रची नदे कारवाद विवाद स्वाप्य स्वया स्वयं स्वरं से स्वरं प्राप्त स्वरं से स्वरं स्वरं से स्वरं से स्वरं के ज निया न भेर प्रभागिक भागा सहसारी मार्थित स्थानि भेर्से मार्थ भेर विट नर न्याय नवे भ्री रे ने ने ने ने रामा है न ना के अ हो न पाय के अ यानायाके नरावर्गाश्रुयावयानेयाया दयाया श्रेरार्येरान बुरावया स्र नठन्यन् से भेरायदे से न्याय मेराय स्थाय स्थाय स्थाय है व से न्याय विव यार्चेदायानुयाम्यानेदेरिनेदायाहेयार्श्वेदानुः स्रयार्गेयाद्या सुदाकेयाया र्रम्यासरायग्रीराज्ञात्रा विद्यासायद्यायाराक्चित्रावाणाकः वरा वर्वासूस्रावसावर्सेसामार्सेसेम् वर्षे में मान्यान्य हेत्। <u>ই্স-র্ম-ক্রম-ম-৪্র-৪৮-ম-নশ্লুরম-ম-মম-ম-র্ম মান্ম-শ্লুদ্ম-মর্ম-র্ম্র</u> राक्सशाग्ची पठशापदे पहुंगा केंगा के शार्के राज्य का कुंव पु शहर प्रश वह्समाराः सः नुत्।

ने भूर हैं व सें द्रश्राद्य प्रत्य प्रति के प्यार वाष्य प्रति न प्रति है अ शु

यग्व स्थान् भे सूर दान सर्ग्ये स्वित्र प्रति । स्वित्र स्थाने । स्वत्र स् भ्रे.ग्रेन्यराने साम्रमा सुरास्त्ररा स्ट्रास्या स्ट्रास्या स्ट्रास्या स्ट्रास्या इयायानहेन्। परि द्वापि यदि यदि वर्षे न वि न्याप्त पर्यो न सूर परि परि प्र मर्भाने स्थाने स्थान में स्थान वा विह्यायायया शुरुर् वेवाया भूरा विषयित विवास विषयित वि | नुसुयानवे वहेग्र इत्सूर सुर नुसुर । विश्व श्री । इत्र मंने त सुया के न वर्दे अर्वोद् से सु क्षुन ग्रीय ग्राम्य प्रदेश है। द्रवर द्वा श्रय गर्दे न्या स्था निवाय द्व यानदेराम्नेनार्याभ्या । नर्मेर्पायाचेनायदेख्यार् हे नरानसूत्र । दे वे नर्भुस्यान्यास्त्राधर्मन्यान्यस्य । । इत्राधानुस्य । । इत्राधानुस्य । । इत्राधानुस्य । वहिनामरत्वारा विश्वार्शे । नारायाद्वारानक्षेत्रमदेखायायायायानेशा र्ना ग्रीस खेनास परासे ना विना इव प्रसाय है वाय धेव ग्री। इव या या रहा ननर-तुःध्ययःवर्रोन् कुःसेन्न्। विस्यस्यःग्रीसःहेःक्षःतुःविषाःग्रेःनःन्वेसः व। श्रेन्याश्रद्धन्यवश्यक्षात्रक्षात्रक्षात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र विर्'यर'र्'र्ररररां अ'विअ'विर विर अ'यरे क्रें अ'या इस्थ 'ग्रे क्रिट विर इसराधित प्रमा दे द्वा त्य इत प्र द्वा प्र प्र वित्र प्र हेत त हुसरा होता <u> ह</u>्यायास्त्रप्रची अवयार्ध्यायायात्र्याय्य्यायात्र्यायाद्यास्याय्या नेशनक्षेत्रमार्थ्याश्चित्रात्रेराम्सप्यम् भी स्थित्रम् । दिःप्यमाणुयात् स्याशीः न्दःस्यात्रम्भःस्वित्रःचात्रायन्द्रन्दाः नक्कुःत्रःवित्रःचात्रादेवः मंत्रे नसर्ग्रेसर्मियामंद्रे वहिष्यस्य क्षेष्य क्षेत्र मंत्रिष्य विष्य प्रि

য়्वाराख्य या व्यानक्ष्र्यारावे व्याप्तात्त्र व्यापत्त्र व्यापत्त्य व्यापत्त्य व्यापत्त्य व्यापत्त्य व्यापत्त्र व्यापत्त्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्त्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्त्य व्यापत्य व्या

दें व हे श क्रें न कुन ५ उं अ ल जन तहे ग अ धर न स्क्र व अ क्रुव वश्रद्भार्या स्वाप्त्र विष्या विषय <u> न्दोर्-त-त्वाःसन्स-खुर्-त्य-स-छुर-वन्देवा-वर्हेन्-त-ने-त्य-वहेन-त्र्यः</u> रेट रॉन्से अं वें वा या पर खुया बयया उट या दुवा कुया पर प्रकुर प्रयास ने नडन न्यादर्भ न ने या भूना हेया श्रेन ग्रीया ग्राम से स्था से स्ट्रा बद्रियाःयश्रायित्रं याद्रादे । प्ययः वद्राद्दे राष्ट्रं युद्धः दुः श्रेश्रश्रायः विवः वदः वित्रम्याकुराद्यस्थावयुरावी केवार्यरावयुरावया द्रार्थावयाय वर्ज्यात्रम् वर्षे वा सन्दर्भवा सन्दे सुद्र व स्थर दे स्था वर्षा हु सुद्र व स्वर द्रे व है। है सूर विवाय पहेंद्र वडरा दुया | र्वा दे सुराय विवादकूर वा | रे नविवःस्राग्राशके के न्यू म्हा विश्वास्य शेस्याया हिनासमाय हुन। विश श्री वित्रकेत्रस्त्रस्याम् नाध्ययायमः मुयानस्यमेत्रस्त्रस्त्रम् स्यान्दर्भेषः नवितःहे सूर नस्रेत सूरान हुर्यासर नगर नवे र्सेन नसूर या । रया

१न हुःयः लुग्नार्यः उत्रः ग्रीरारे 'पवितः पश्चिया । विराधः सुरः पश्चियः प्रीराहे। वर्दे गृ हु 'या देवे हु द वि सम्बद्धा सु द देव मा मु द साम स्वि साम स व्या विश्वरावश्चेस्रयाये के श्चेराहेश श्चेराद्या विराधरात्रा विहास स्ता विदास स्ता विदास स्ता विदास स्वा विदास स्व विदास स्वा विदास स्वा विदास स्वा विदास स्वा विदास स्वा विदास स्व विदास श्र्याश्वासायो स्वितः क्रुं स्ट्रिंग्स्य स्थूर व र्त्रा र्त्रे से से स्थाने स्थित स्थाने हिंग न्वीं रात्रे। ने न्या पर प्रमुख वें राया । हे सुर सेर राया सुरा हे नविव गिरेन निरम्भे अर्देन अर्वा । शुरु र निर्मा न हैं गिरम हा । विका र्शे । ने प्यम्प्रें वार्डेन यार्ड असे वार्डी। हे याया हुम्य ने प्यापीन से म्वाय नन्भेन्द्रने अप्यथा नन्गः र्येन्य अद्यन्ति । स्राप्ति । स्राप्ति स्राप्ति । स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्रापति स्रापति स्रापति स्रापति स्रापति स्राप्ति स्रापति स् नर'विद्यम्। वित्रपर'त्'वित्रक्ष्य'सेस्रम'द्रवे र्द्रेस'रा'न बुत्रद्रभ'देवे नक्ष्मनः जुदेः से सम्बन्धिं ग्रासः यान्यः यान्यः से स्वितः तुः क्षूनः यदेः यान्यः से स्वूसः र्निय्ययासन्ता न्धित्रक्रन्द्रेयासायने पो सी यहाराया विवा हरि स्रुयार् मुब्रक्र-र्श्वेय्यायेत्रविव्यव्यविष्याम्। यदः दुः मित्रः स्री हेयः यः मुदः वारेः रे.चबेवा । नन्यायाञ्चन्यस्य रे.वस्याग्यम्। । नन्यायाग्चेसावने से.वज्ञूनः ना । ने भूर गुले अ धुन रेट न ससा । वे अ से । ने भूर गुले हान इन स क्रेंनशःध्रवः क्रुवः कषाशःशुः द्युदः नदेः क्रुः वादः वनः धः वः दनदः धरः युः क्रे। न्यामने ने यान्यान ते स्वामने स्वामन स्व व्यायाश्चित्राया विष्याया विषया व भ्रम्यश्यदी:र्माया विष्यामी स्थानम्बर्धाः स्थित्यम् । क्रियदी:पीर्यादी:

नवि'रा'ने'यशस्त्रश्रेशश्रेशश्रायशस्तुः सुरानर ग्रु'नवे' र्ख्यादे। ननर र्कुरमिरे क्रिन्या है। दे प्यरम्बा पिर्ये दु द्वार्य निर्या हुर रोसराग्री नसून ग्रुपानसून न्वीय परि न्वीय खुवाय न्दा वियासूनयः वर्षायानसूनरादारेषाद्यीयारानिदातुःके नाद्या हेव सेंद्रायाद्यारा नक्षःख्यारु। देवे के द्याव श्रुद्धा विस्तु श्री विद्या स्तरम् मुद्दा निष् नदे से समाग्री हैं नमान हो न स्वापन हो स नर्झें समान्मा सुमा से समान्नो नायानर्गे या नु सी मुनानि सकें मासूना नरः ग्रुः भ्रे विष्यायया ग्रुटः भ्रें दः रें या द्या । वस्य राउटाया दे सम्राप्टि म्। निःक्ष्ररावनार्धेन्यानुसाइकाने। विन्नानिनःस्टरायापरावरात्व। विका र्शे । निःक्ष्रःत्वन्ःचर्या वर्षेत्रः त्युराहे क्षः तुः विवाः क्षेः वरः वयुरः स्रूराः त्रा निरानवानी वर्तना सासरावा वर्ती नार्तर हुरावा दिराना वा हुरानी सार्नर नश्चरानाविवात्। रामी खुरारोसरायात्वी नाया श्चीतिवेश्ची स्वार्था ग्रैसंन्तरमञ्जूरविदा देवे हे संसु हो दाय न से दाय से प्राया स्र

गुन'म'भेत'या दे क्षेत्र'न'दे त्र शंकेषा राष्ट्र मार्थ कर नि ह्या 'हु' दशुन' धरावशुराने। हे सूराकुराने वर्षे वर्षे वर्षा वर्षा विदानका निरामका द्वरामक्षुरा न। । ने निविदः श्रीं नम निवार निश्च में । ने क्षेत्र ने क्षेत्र ने क्षेत्र निवार निवार । विवार श्री । ने भ्रानु इसस्य गुर्नाय प्यट में रातु सी सुट मी प्यन निर्मेश है। निर्मय व्यवः समित्यः मुर्गा दगायः श्रुदः त्यर्था वे सार्वा भारता । वि विसदः हे दः दगायः शेष्ट्रिया । देश्वर्षेर्यायदाया विवायाया । विवायीयाया वश्रुरायेग्रायम् श्रेया विरार्शि । ने न्या मञ्जून परे के हे सूर ग्रुर वै। नर्हेन त्युराग्दारहें साधार द्यारा दुवा खून तु गुना दार छीन दुवा दर वर्त्रेयानरान्त्रुनार्नो राष्ट्रे। नर्डेनाव्युर्यार्थीःश्चेनाने राष्ट्रीयान्या वर्षानावराने वारवीं नामधेराया भ्रमास इस्यास्य स्राचनिन वी । थ्याने निया मी निवान सुरान दी। हुँ न प्रिये हेव हान ख्रा ही से समाहे सासुर इत्रिंद्रान्स्रीयापादी। सेस्राउत्वस्यस्य उद्ग्वित्त्वास्य पर्वीद्रपदि र्देव-दुःश्चित्र-धायाश्चाया वेद्याया देन्द्रेन्यसेया-दुःविह्निद्यानेत्रम् N'सर्वेद'रेंदि'नर्हेद'दगुर्थार्हेस'स्ग्रायाराह्मस्यर्थार्झेद'रादे'स्यय'र्5'ग्रुर्थाहे' र्श्वेटःया यशन्दर्भेः पदे नर्हेत्र त्युश्याय नश्चन सुन सुन्य स्थराया पदः वुर्यानान्द्रमञ्जूवाव्यात्वन्तान्द्रा हिन्यम् नुष्व स्त्राधिवाचि नर्हेन्द्रमुअःग्रेश्वरःग्रुल्यायःह्रययःयेग्यायःयरःवर्गेग्रायःदरा र्वेनःग्रुः ਰੁਸਲ੍ਹਾਸ਼ ਦੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਦੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹ ਦੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਦੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹ ਦੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਦੇ शेयानान्ता तुशकेशानेतान्तर्स्वाशास्त्रवाधशासान्तरम्यावाशुन्

यदः स्वीर्म्स्।

श्वीर्म्स्याः स्वीर्म्स्याः स्वार्म्स्याः स्वार्म्स्याः स्वार्म्स्याः स्वार्म्स्याः स्वीर्म्स्याः स्वार्म्स्याः स्वर्म्स्याः स्वर्म्स्याः स्वर्म्स्याः स्वर्म्स्यः स्वर्म्यः स्वर्म्स्यः स्वर्यः स्वर्म्यः स्वर्म्यः स्वर्यः स्वर्म्यः स्वर्म्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्म्यः स्वर्यः स्वर्

नश्रमान्द्रश्चित्यः नश्चनः द्वायः व्यायः

त्रश्चान्त्रःश्चीः देन्द्र्श्चान्त्रःश्चान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्तः व्यान्त्रः व्यान्त्यः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्त्यः व्यान्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः

म वि'ग्रव्या'भे द्विग्रयाया अर्था अर्थेता अर्थेता या अर्था वित्र प्राप्त वित्र वित्र प्राप्त वित्र सेसस्य न्यदः इसस्य ग्री नस्य गान्त श्री दि में हिन् न् देवा पर ग्री विस न्ना श्रुन्दियाःयशःग्रना नेःक्ष्मःन्र्हेनःद्युशःनश्रुन्द्रश्रेता । धिनः वे किरारे प्रहेव प्राप्तवम् । हेरा श्री । महिरारा है। मराया महत्र मर्झेयरा यदे यत थेंत प्राप्त स्थान के स्थान स्यान स्थान स भ्रम्यश्रुप्रकर्प्यरप्रमुर्दे । सम्मिन्ने विष्यु व्याद्यस्य । त्रअः धेः तः प्रदेगः हेतः सः ५८८ दे । प्रयाप्य अः सः या हे यः ५८८ धें या यः शेः क्षे प्रया ग्रुसप्पॅर्ग्यरा हेर्प्ययाग्रीयाहेषा हेप्दीप्यास्यायेयायेयस् म्बर्भास्य होत्राचित्र वर्षा मान्त्र प्रमा व्यव म्बर्भ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स नससमान्त्रप्ता सेससाउदाग्ची देवा होता प्रदेशनससमान्त्र हैं। विष्य न्दःस्री ग्राद्यायद्यायरान्वगान्तःस्यान्द्रायान्द्रायाः नश्चेत्रपदेरनस्यामान्द्रम्सस्यास्य । मान्निस्यान्ते। सर्देद्रमेस्यत्रम्य *ॸ॒ॸॿॸॖॱॺॸॱॸ॒ॸ*ॱॿ॓ख़ॱॻऻढ़ॕढ़ॱऄ॔ॻऻऺऺ॔॔॔॔ॹढ़ढ़ॏ॔॔॔॔ऄॸॱॸॿढ़ॱऄ॔ढ़ॱॸढ़॓ॱऄ॔ढ़ॱॸढ़ॱ नश्चन'मदे'नश्रशमान्द्र'क्रश्रश्चा । पाशुर्यपादी देव'ग्रु'न'नडु'मदिना'मी' र्नेत्रः इस्रशः नश्चनः प्रदेशनश्वापात्रवः देशि

हे। स्ट्रिंग्वर्गित्रं के किर्ने प्रहेत्रं प्रवेश्वर्गित्रं विवास्त्रं विवास्तं विवास्त्रं विवास्त्रं विवास्त्रं विवास्त्रं विवास्त्रं विवास्त

ग्रीःश्चेत्राया देः यानिन्नायाः इययाश्चरान्त्रायाः स्रायाः जुर्दे। दिव नसून दी र्रेंद मित्र हेव से समान से दिस स्वाप्त हिन नर्से स मंत्री शेस्रशंख्य वस्रशंख्य वर्षा सेट्र क्षेत्र क्षेत्र स्थापनि स्थापन र् क्रिंगरायाञ्जया होराधेवायमा रे नह्रवायराष्ट्रेयावयायमान्वा में रास इसरा ग्रम क्रें दाये प्राया पुरा हुरा द्वारा स्था या प्रवास विकास वहें तथा है। तुरु शुः श्रुं श्रुं नामिन नहें तथा श्री महिंदा नामिन नामिन है। क्ष्र-अन्त्रुक्ष-त्रम्भनन्तु-द्रावायानदे हेश्यास्य कुत्र-तुर्वेश्यास्य व्यून-नन्ता कें रन्यान्वन्त् पार्युर्ये समाम्यान्य वित्रे वित्रे वित्रे न्यायायह्यायदेनक्ष्रवाद्यायाक्षेत्रायमःकेषाविनः तुन्यायायमः वर्षुमःया ने भूर ग्रुश्य दे के प्रदेर प्राय के स्थान विद र नार्थ र ना हे कुर र प्राय त्रामायमाम्स्रम् स्रम् स्रम् व्यतः प्रशामका यात्रवा की स्वरा द्वीवा है या वार्य स्था प्रदेश विष्ठा । विष्ठी स्विष प्रमुर्अःसरःविःगव्रअःग्रीःभ्रवश्रःश्रःवळन्ःसरःवश्रूरःवशःविरःसःश्रूरः Rep.

नेशम्याग्री सम्धित्यान सूत्र रहेषाया सू

नेशन्तर्गीर्नेन् नेरम्भेन्यायायह्यायवेष्ट्रम्भ नेशन्तर्गीः

रतः हुन् हुन् । त्र व्यान्य विष्ट हिन्द्र न्ह्र न्य विष्ट व

महिरानराष्ठ्र । विकारनानक्षेत्रस्य विज्ञान्य ने स्वार्थित । विकारना के राय के

राधिता । दे सूर दर में गुरा राधिया । नेयार राधुया के दाग बुर नर ह्या विशसी विशस्य श्रुविश्विषा स्थित स्थान यार कें भी अरम राग्री अरमें 'पेंर अरम्' में में मुन्या । में कें भी या है में ग्री मार्थ है । वर्ने प्ये केर वर्षे न के प्रति स्व के के के कि के के कि या हि:श्रेन् सेमास श्रेमास स्वास स्वास से प्रति । विकासी पिर्व प्रव माव्यायान्में अरुषादी नियेम्द्रमाश्रेम्प्य वार्षे त्यायान्य वार्षे वार्ये वार्षे वार्ये वार्ये वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्य <u> चिन्नामर्न्नाम्याम्याम्य सेन्स्य के के के के लाख सेन्याम्य प्रेम्य</u> <u> दःश्रॅवःषराग्रदःक्रेराःवेदःपुःधेदःवर्षे गाःचःचवेदःत्। श्रेवःयःदरानरायः</u> गहरामुः नरः वृःरिवे गर्भरः मुः मुरुष्परः रेग्रभः मः प्रार्थः रेग्रभः मस्र धरावहोत् तुषाधिः भेषार्या श्रीविद्यात्रावहोत्यात् भीताः स्वारात् सुरात्र वर्गुरहो वर्ने अः श्रेव रश्वेव अवश्यां के अः इस्रायर द्वापर श्रुव पर हो द यर्गेत्र न उरु श्वेषा पर्र स्र शुः श्वेत । त्र श्वेर श्वे श्वेत न व र स्य प्र श्वे र्क्षेयायाया । देव केव पद्म नर्गे द र्वेद र में यायय पर नविवा । येर ये वेर्देव याने न्या प्रवास्त्र । विशासना यने विकासना से विना । नियम र्रे : स्ट:स्ट:धुव्य:ग्री:ग्री:श्रवा:व्या । अश्च:वावव:धीट:ग्रीअ:वायव्य:वस्त्रव: यःचवेदा विशःशी

ৡ৾৾<u>৴</u>ৢ৽য়৾৾৾ৡ৾৽য়৾৻ড়৾য়৽ড়৾৻৺৸ড়৾য়ড়৾য়ড়৾য়ড়৾য়ড়য়য়য়য়য়ড়৽ नेशन्यादेशहें दार्श्वेद्या वद्यान्य प्रत्या प्रत्या प्रत्या व्याचित्र प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या प्रत्या वर्गुराने। न्नायार्श्वायायवे न्नारार्थित इसायायरा। ।न्नरार्थे पाव्याया र्त्ते प्रविव ने राप्त्र पार्टी । दे पी सर्गे व व्यव पे व प्रव के स्वर्भे व ने राप्त्र । हिंव ब्रूटश.बर.तपु.क्ष्यायायात्रयार्मात्यांना विशाश्री विराक्ष्यायाया <u> ५८.७४.स.स.सूचारायदुः इसार्ह्याचीरायुः त्युः राजी नेरास्याग्रीराहेः</u> र्वितिक्षेत्र सर्वित् र्युत्र सायमाधिवाया श्रेत्विते स्त्राप्य सर्वित विश्व र्याग्रीशर्ख्याविष्याप्तिव्याग्रीन्त्रित्र्र्यात्र्याय्याः व्याप्त्रात्र्याः न्वायम् होन्यम् अय्वान्यम् अर्थन्यम् वर्षेत्रः वर्ते वर्ते वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्ते वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः व नेशवराने या वर्डे वायरायरा शे केंद्र के नाद्रा ने किंव हेट शे देवा यान्य रायदे न्य रायान्य श्री न्याय यहे सर्वे वा वे स्याय प्रते स्वयाय नहेत्रपदेश्वेयःरनःग्रेयःसूनःपरःग्रेन्पयःसूक्त्यायःसूक्तियःस् धराष्ट्रे सूराब्रा । सूराकुराक्षेत्रकार्यस्य रहामी भाग्नेव स्यान्। । भूव सी भीहा

त्त्रीय । कुर्मार्श्वा । श्री विश्वास्त्रात्त्र विश्वास्त्र । श्री वि

यम्यानम् श्रून्यति र्योद्दर्श्व प्यान्ति स्थान्ति स्थानि स्यानि स्थानि स्थ

नवे पापार्थे से दाराद्या नहर हैं समा के दार्थे दार कु व दा हुव पार पर्वे नदेन्त्रायाञ्चन्द्रियाग्यम् स्रीयायेयान्त्रे स्वेर्यास्य ग्रीर्या होन्त्री ने प्रया क्रेंत्रअः अद्धुर्द्रअः शुः तङ्कुतः सदेः वोवायः नेयः रतः ग्रीयः वर्वेवाः सदेः श्रीरः र्री | ने क्ष्यः प्यतः में निवासे के त्या के क्ष्या के क्ष्या के कि का की निवास के ख़्र जुर कुन से सम द्राय प्राय । स्ट निव कुल से व त्यु र न से द रायमा विशासनायें नात्र हैं नार्ये स्वर्ध स्वर्ध । यावन या सव होना र्रे मिडेम् नुस्याया । वर्रे ५ कम्यायायो न प्रेर्म साम्याया |गवित्रःग्रीःसृगाःतस्यासेःवर्तेद्रास्त्रेदाहेःय। ।सुःदत्तिरःग्रीसायेःवर्तसासेः न्ययः न्या । न्यायः यक्कें याः न्यः स्वाः प्याः याधे रः से नः न्याः । वर्षे ः न्यः भ्रे माणेया महरा भ्रू समा केता में प्राप्त । विता हता ने प्राप्त हिता मिले यस् । नेस रन केत सें स नगाना प्रस इस प्रम सहें स् । विस सें। । नावत लर्। यर्ग्यश्र्यायर्ग्यायर्ग्यायर्भेर्यायया क्र्याक्षेर्यस्य सहर या।गुरार्हेन:न्रापराहेशाशुः अधुता। विशामशुर्शाराष्ट्रमा अर्व्वासरा वहें त्र परे प्रेग्राया पृत् ग्रुर स्या स्या स्या स्या प्राया मुनाया यो साम वर्चर्यानुः शॅर्थेर्व्यनुदानायादेशायान्तिरात्रमायान्यान्त्राह्नेदार्वेरान्त्रहेता नवरंभेशम्नारुदायां भेरत्यायां विरासश्चरायां परादे हिन्यमा म्बर्यन्य प्रमानायाया । हिंद्र नम्बर्ययय स्मिन्ने मा कुर्ये । व्यायम्

हेरास्र भित्रं हैं।

हेरास अप्याप्त विश्व हुत स्वाया प्रत्य स्व के स्व के स्व कि स्व

ने भूर ने अर्म से हे नाया विषय न ने अरम्म रहत या से विषय न स्रवतः प्रश्ना नित्रा विष्या है स्राची विष्या नित्र विष्टा स्रवास्त्र स्र यान्तरानग्नासरात्राधेत्रग्रारात्नेरसासासीयनस्वेसासनाग्रीसा वर्चेन्यावरी वे श्वेरास्या की नश्या रास्य व सेन्या धेव वे । सर्वे स्व नेशन्तरायम् । देरदर्वःस्त्रस्यास्य स्वायायस्य स्वा । नदेरः ग्नेग्रार्स्रेन्स्न्य्र्यं स्रुन्स्य्ये स्वयः हुन्य् । अद्धन्स्यसेन् अर्केग्रारु हुः नःवस्रश्रास्त्रम्। पित्राप्त्रत्वेत्रास्यान्त्रस्यस्यस्यस्यस्य वर्दिः भेशास्त्राकु वा नहेत्र हिरावहुरा विहिषा हेत्र द्या ता श्रु क्या याहेरा मळेंगान्दा । गाँड्यायमा सेयाय हो से दे खेंदा खेंदा साम । खेंद्र सा सु क्रेंद्र <u> चेन् र्ह्मेर्नरःस्वयायायार्थेवाया । इसानर्गेन् र्ह्मेराग्री । घुन्यमः वर्नन्ता ।</u> क्राय्याम् अत्रास्त्रास्त्र स्वराष्ट्रीं निवानिता । विद्यानितानितास्त्र स्वरास्त्रे क्रासाने । ८८.८४। विकास्रमास्र कुष्य सम्बद्धिय विदाय। विद्या विस्तर्य नेशस्त्रास्त्रुत्यश्राद्युत्। विशस्त्री

नेयम्यासेन्यदेष्ठेयम्सेन्या नेयम्यसेन्यस्क्रीत्रस्मियः न्धेम्यान्यः सेन्यान्ते नाव्यान्वियाः इस्या विस्याधन्ते सेन्यान्ते ना वह्रवाचरवावावज्ञुरा विशरना सेरान सेवासेरास रेवा सेना से वासे व न्भेग्रास्तुःसेन्प्रसाग्रम्कुनानेग्यमःत्रसायधित्। विसार्से। निवेधित्रः श्चेत्रःश्चित्रास्त्रस्य स्वाप्य स्वीप्य स्वीप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वीप्य स्वाप्य स्वीप्य स्वीप दे। नेयारवायेदावायातुःर्देवायाहेराया । श्रुवायावद्याहेदाह्यायर न्याः भे प्रसूत्र । याव्यः नेवः निष्ठः निष्ठः निष्ठे । प्रस्याः अर्देरःश्रेषःर्देवःश्रेश्वेरःयःधेवा वियादरा वियासयःश्वरःययः सुदःयः स्राचर्यात्व । व्हिंत्याविस्रसान्त्रान्तराष्ट्रम् स्राच्याच्या । स्राव्याकेराने स्र र्यः सेर्ः राषाः र्दुवाः विस्रकार्या निकायिः र्स्नेतः रीकाः रेतः सेर्वाः नरुरात्युम् । वेरान्मा वेराम्यायेषा मदे र्श्वेत्राचीरा सेरार्स्यारा न्यादे सुषा पळ माने । धिव ५ व से माने स्वाप्त स्वाप्त सामाने वा । वेशन्ता अवश्रासम्बर्धायास्यान् न्यूयाश्याम् क्रिन्ति । दे यश्यास्वितः वन मान्यविष्ये ने मा विर्देन मिन्ने के कि मान्य के विषय के विष्य के मान्य के विषय के विषय के विषय के विषय के व धिन्यसन्दर्भेरन्वेसन्यसेन्सेन्से वर्ते विसन्दा विसन्दर्भायः नर्हेन्सेन्स्रिंप्करम् । नेपीप्रमार्थेर्स्स्स्रान्यासीप्रम् । वेस्स्सि । ने

यः कुषःयः व्यवारायते। धेवः ५वः सेटः सदेः कुषः सः यः व्यवारायायः व्यवः हेवाः हुर: पर: १ अरु: दर्श नि: १ १ १ १ १ १ १ अया: र्रेट्स में देखा हैं । नियास्या शे विद्रा के दाया भारत स्ट्रा के विद्याला दे दाया भारत दा विद्या क्षेत्राह्मन्छेद्रक्ष्यान्य स्थान्य विवादी । वर्षे निष्य क्षेत्रक्ष्य स्थान्य विवादी । वर्गन्याम्। भियास्यादेन् ग्रीः सम्राह्म वर्ष्यम्। म्यस्या उन् न्यस्यः वशुर्भेर रंभ वनव विगासुमा विभादरा दे नमार रागी समुद्रम्सम गुन्नातृग्रायाके । निःवर्द्वे भेयास्या दुवाया वर्षेत्राया वर्षेत्राया वर्षेत्राया वर्षेत्रा इरिमानि कु ने वें निमानि निमानि निमानि के निमा गिवेदाके नाद्राक्षेक्षेक्षेक्षेत्राकेदाद्वीदायायाक्षेत्रमायाक्षात्राव्या या क्षे : क्षे अपन्य विवाद स्वे अपने स्व अपने स के.य.र्टर.यर्या.पर्ट.यश्राचे.यंश्रच्य.र्टे.विंशायश्राचायात्रा.याचेरेय.रा.ता भ्रीत्यायायाधीवाही यो स्रिम्भ्रम्भात्रात्रभ्रेवात्रवास्रेवात्रात्रा । यहिताधीः ८८। विवासिर मुलर्जे व सम्मेर्दे व व दे प्रमा । प्रायसे समानिष्य बेवारम्या गुरानवे मुर्या सिव्यामवे भ्रे में निर्मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व मदे इस हैं न द्वा के लें न स्पा विषे स्वा कु लें वि लें मासूर स से । नेशन नम्नेनर्देशन्त्रास्त्रास्त्रेसर्चे नम्नेनर्ने । निरास्तरम्बनर्धेर व्यापायद्वायम् या वियापाश्यम्या स्वयाप्याप्यस्व स्वयात्या

मन्द्रम्यादे र्वे अप्यादे निया विष्या दे से द्राव र्वे अप्याय अप्तूराव ८८.यश्रश्रश्वात्त्रश्चित्रः यद्वात्रः भेशास्यः श्रीः ला देः क्षेत्रः वेषाः वर्षेत्रः राभ्रेश्वेशासदेभ्रिमानम्। व्रिशासानुश्वादानेदेभेदेवानश्वशास्त्राप्तश्वा हुर ने भेरारवा क्रें त्या दे त्यरा वर्षे सरा हुर ने भेरारवा परसारा वहुर नवे हिर्दे । दे प्यता द्राया थ्रव द्राया वैश हिराद सुश वेंदा नक्षेत्र मदे खुंवा क्षे भेषा । दे केद देश में कि विवा नश्या मन हा । दे नश र्वेश यान्त्रेत्र मुन्यम् । नमसमानित्र निर्मासमानित्र निर्मासमानित्र । मायगुरा विश्वार्थे हि नर्द्धन गुरुषाम्या ग्रामा विष्या मुरामस हैंगायन्ग । देखें भेषा हुते क्षेत्र यस परेंद्र। । शेर श्वर्थ श्रेंग्य स्था हैंगायारा। ने वे केंब्र बेंद्र अञ्चीन सम प्रमेता। निकासन प्रकाराबिव परी न्यान्ते। श्चिरःक्तुःयावनः येदःदेः धेःश्चेत्रा । नेयः त्र्यः यक्कें याः धेदःदेः यावेः दे। विरामने भ्रिमकेरामकेर्या विरामश्रम्य है। विर्यमन क्रियाम ग्रम् नर्बेन् गुःर्वेश्वाप्तरं वाप्तरं सक्रमःसरःचवनाःयःचर्हेवःगुःविदा विरामशुरुराया देवेःसदःवर्गयः यशग्रम् भेरवर्षेत्रभेर्भेर्न्यत्रभेर्ष्य्यः मेर्न्यस्त्रभेर्म्यः स्त्रभ्रम् यायान्त्रें व्याप्त्रम्यायम् विष्या विष्यायान्त्र से यायान्त्र से यायान्त्र से याया से याया से याया से याया स गहत्राची वनसाद्राहेत् सेंद्रसामा इसामर श्रुट प्रवेशवनसा ग्राट से प्रेसा है। देरवरात्रः भ्रुर्ग्न सेद्रायम विराधन विराधन हो। वेरा द्रा सेद्र सेद्र से नुसः बुसः सः स्या ग्राम् । यदे व्यूनः देवा सः ग्रीः नुः र्वे सः सः प्रमः व्यूनः स्वे सः स्वः

यशुर्यार्थे। विश्वास्य प्रश्नित्र विश्वास्य प्रश्नित्र विश्वास्य विश्वास्य

ने भूम त कें श कुं य निवेद नु निश्च न यम यमें न या इस साथ या या ही ! श्रॅग'न्य'राळें य'रन'रु'क्य'यहोन्'ग्रे'नेय'रन'नश्चेन्'र्यदे कु'व्व'व'येन् या द्वीया सेन्या सेन्या स्वाप्त निष्ठ निष्ठ से स्वाप्त सेन्या सेन श्री विश्वास्तर्द्रम्भाषाम्यानस्य नस्त्रम्भाष्ट्रा दे दर्गेषास्य स्त्रम्भूष्य द् श्रेश्चरायायदेखी विषयायोवाची के स्थानिया स्था स्थानिया स् क्षेत्रं नर्गेत्रायायानेत्रायासहेन्छेन। स्रीन्मेत्रायम्यन्त्रास्त्रस्य स्रीतः डे·वेंग'गे'ने×भःहेंद्रपादनवःविगामीॱक्रेंत्र'धेद्र'म्या नद्रग'येग्रयासुः वर्रेर्प्यश्राने पे वर्षा पर्ने प्रमान विवाद अपना माने । विवाद में प्रमान के व र्रिदे वियात्रमा है र्ने मा इसामा बसमा उदास हितामदे सदसा हु मा न हुना राया रें हे सहैं वियारं साराया गुनासा गुरायर या विवा क्रॅ्रेन'यर्डम भ्रिन'यर्डम'त्रुर्याय्यायाम'यर्या श्रीत्रमाश्रम्। सुःकुर'यः नमा नसुन्यसानुराधरायदीःगुरुषावे नसूनमाने देनामा है साभीः नेयायमान्त्रेन् नेम्याद्वार्यम् नेत्राच्याय्यम् स्वार्थित्याययार्थः र्ने निष्या भी त्र स्वास्त्र स्वास् वया दवेदवी:वर्षेयाव्याचीयायावायावदावायावहेव:र्'र्षेट् स्थानिष्यं त्रिं त्यां श्रा क्षेत्रा क्षेत्रा त्रिं त्यां क्षेत्रा त्रिं त्यां त्यां त्रिं त्यां त्यां त्रिं त्यां त्यां त्रिं त्यां त्या

ने स्वर्यस्य स्वर्य स्वय स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

ख्रामी नमूत्रामा मुनामित नमूत्रामित्र भाषा भाषा भी नामित्र भाषा भी नामित्र भी मचेत्रस्यायम्भेयामरचेत्रमधेत्रस्य वित्र वित्रस्य भेयान्य विष्य नगायानाधितामभाञ्चनामाभार्ते सानाविना होतान हेतान हेतान हता विहास सर्क्रियाधिव परि श्रिम्प्रम्। श्रुव परि वस्त्रम्य सार्वे मानम् परि व स्वर् वी'नश्रृद'रा'स'र्देर'नर'र्वी'न'य'रवा'यश'रादे'ध्वेर'र्रे । देश'द'श्रूर'र्हेश' यर-र्-भेश-द-१४ श्राच-योद-दी-कें-रे-र्ना-नी-र्नेद-१९ र-न्यून-र्नोश-पश-नहेर्रानुनारुः भेर्द्राया दरार्थे द्रभाक्षेत्रे अत्यापरावु सामराभेर् नरः र्ह्से न्दर्न सुत्र सदे विकास के कुट न्वाट त्वन् ने त्या त्वन् ने त्या है का राख्यायायाचीरास्यायायायाचीरायाचीरायाचीरायाची यारायाचसूरा परियात्र अपि 'हेर'वा र्वे अप्य अअप्य प्राप्त विष्य अस्ति या अपि विष्य अस्ति । यार्वीस्थार्श्यात्वा द्वितिःसम्रके नतस्य न्टार्से कुटायटार्वीस्थारस्था के नरःश्रॅरःनदेःकें। यसःग्रीःरेसःमःने हेन्हे मुश्राश्रानहरःनशःगश्रुरःसनः ८८.८गूर्यात्यायाद्वीयाद्वीयाद्वीयाद्वयाद्वीयाद्वयाद्वीयाद्वयाद्वीयाद्वयाद्वीयाद्वयाद्वीयाद्वयाद्वीयाद्वयाद्वीय র্ষমানত্তরাজী দ্র্রীমার্কী।

नेति श्री मान्यश्वास्य स्वित्त स्वत्त स्

धर्याने प्रतः विवास हेन प्रमः ५ १९ सराये व मी मित्र से प्रस्याय में न प्रस्ति । राश्चित्राण्डी नश्चेत्रासदेःख्याःखेत्रास्याःशुर्हेन्।याःसदेःश्वेययाःखेत्राःशुरान्यत्राः देशमा हे दाशे श्रीदायशद्यायदे प्रतेशानियाद्या श्रीवाशाया प्रहेता विश्वास्त्र यदे द्धयाविस्र र्पायाविस्य बुद्य ग्रम्स रायदाद्य प्रमान वशः त्रुवः निवेरः निव्दे देशे निवाशः द्वारा निवाशः व व्यादाः व व्यादाः व व्यादाः व व्यादाः व व्यादाः व व्यादाः ন'র্বা'দ্,'নদ্ন'র্থ'র্ক্টবা্ঝ'ন্থবা'ম'ন্দ'শ্বীন'ম'শ্বুদ'ননি'শ্বী'র্'ঝ'র্ঝ' वह्यामिते कुळळ दारे यावन्त्र दे दशक्षे याष्ट्रियर में दिवश में र्'तर्रेषायदेर्भ्यायापिटार्ख्यायायाञ्ची । । न्यायास्यया वाषरादराषराद्वेशसम्बन्धेनावहवानरानेनाहेनावरानेना ळॅंशन<u>हे</u>न्न्,नडुणन्यायेस्यायहेत्रकुर्यारेखार्स्रेन्यनेखार्मणः येत्। क्षेत्राकेत्रस्यायार्द्धेत्रपास्य। क्षेत्राकेत्रपद्चेत्रपार्यद्वेत्रपेत्र नःधेवा देःदस्यनङ्गस्यस्यनेदस्यन् क्रिस्नेन्द्रस्य निया न्वें भा ने सूर नमसम्भासमारे संवेश नहत्त्व त्रान्वो से न्वेदे नमसम् वस्रश्राहर हिंगा संधित स्रश्ना श्वरा ह्या धित विश्व श्वेया हों या श्रा ही श्वरा हो राजा है। कें अन्तराने सूरायागुर्या अन्यानि नियानि सामित्र प्राम्य स्थानित श्रुमान्यामिदी। वात्यामी १३ त्रापानिया में स्मिन्य ने स्मिन्य के निया में प्येन नेशन्तरभेद्रायाद्रायदेशयायायश्रम्भाद्राद्वी क्रिंद्रायायायश्रमा वःर्केन्द्र्भे कुःश्वानिवर्तः हे नेरायाननेवाश्वयावयाना विनायरावर्षे गशुर:र्रे॥

गशुस्रायानेसार्या के र्या कुर्य हो निवाद सार्वे मार्थ सार्थे हिन देव दिस हिन सार् यन्ता गुनःहेनिहेन्यायान्ता येययाउन्हीनेन्द्रान्तिन्यायदेन्येया र्यःम्। । न्रःम्सि । यर्याः भेरः यदेः ने । विष्यः हेरः में वः श्रे वे ः श्रे विष्यः व ८८.अर्देव.रं.क्री.रं.रंतु.श्री.वंशायहवायद्यी विश्वेशायदी। देवा.रायु.वावशा <u> ख्रायास्यामस्य प्रते स्वर्भे सर्दे सेते मुत्रायस्य रेगा परे प्रतस्य स्वर्थ</u> र्वा.ज.चर्ट्स्य.तर.श.चेश.तर्। विस्त्रीश.शक्र्यो.गुरा.बर्शश.१८. सिंदिन है न से प्रमूप्त है। नि स्थान स्थान वितान मार्क मार्च <u>५८। । नद्याक्षेद्रःगुक्षक्षा ग्रुष्ट्रेस्द्रेश्यःदेश्वर्ह्ह्यः ग्रुष्ट्रा । विश्वायाक्षुद्रश</u> राःभूमा नभूतःराःयाः अञ्चेराः इस्रशः क्षमः निरुष्तेः भ्रीमः भ्राः निरुष् क्रियाश्वरियाः प्राप्ता अस्थाः स्थ्याः स्थ्याः स्थान्यायाः प्रिये स्थितः स्थितः स्थितः स्थान्यायः स्थान्यायः स गर्भे न रेग भर्दा स्र हेर गुबले अ धर हु न दे हु सब रेग भर्के य नर्ने दर्गे अर्थ हो ज्ञाराधिव त्या दे वस्य उद्गार अर्थ कु अर्थे न यदे भ्रिम्प्त्र कें त्राचा के प्रमासे न्या विश्व वा की से समा उदा हमा से ग्री पदी दिराष्ट्री अदे दिवापन अप्ते पाने अदि । यह विश्व नश्चन'रावे के है १६ म हान है। ने सम्मन् ने मुख्य न हो न रावे के न न सम इगाञ्चर, र् ज्ञान प्राप्त हो न प्राप्त विष्य वर्ष हो प्राप्त विषय वर्ष वर्षानावनः नेर्वास्यायमें दाराने नेर्वास्या में के वार्षान्य में वर्षा ष्ट्र-चन्द्र-चन्द्रितः देश

यः याने निवानी में वानस्थान वी सूराय के ना सर्वान स्थान स्था र्नार्थिन् गुरानुराकुनाग्री सेस्रासेन्द्राने नुरासेस्राग्री क्रेन्यरासे वशुरावरार्श्वेरायदे हेवारोस्रायस्थित है। वर्षेया दुः वहाया द्या वार्षेत्र য়য়৽ঀয়৽ৼয়য়ৢ৽য়ৼয়ৢঀ৽য়য়য়৽য়ৼয়ৢয়৽য়য়৽৻য়য়৽৻য়ৢৼ৽ नन्ता थे:नेश्राश्ची:र्क्षेषाश्राक्षेत्र:सेन्स्त्रेन्स्या हेषाश्रास्य होन्स्रिः वनसःनेसःरनःगशुसःनभ्रेट्रायःयःदःक्षुःदसःवनदःहरःर्वसःयःळेवः न्वें राष्ट्रे। ने सूर्या ग्रुरा त्रुरा न्युरा ग्रुरा वर्षे में निर्देश वर्षे राष्ट्रेरा वीर्यायहें अर्थापाद्या कें स्वर्थावाव्य नुवरास्य म् विश्वायाया से स्वायः नमा निरम्भेस्रमान्नी नसून निर्म्समाय र्सेन पर्म से त्राया हे विर्म्स यावियात्रःविद्या क्रे.याववः र्यायद्याया य बद्यो त्राव्याया व्याया स्वर्याया यः क्षरः ने अः रवः ग्रीः वरः श्रीवः वरे । त्वाः पुः हे वा अः वरः ग्रीरः वु अः यदेः श्रीरः र्रे। । ने ःक्ष्ररः सर्ने ः स्वार्या विद्यात्रेर्या यो याद्या यो याद्या याद्या याद्या याद्या याद्या याद्या याद्य नर्यानियात्रेय्यात्रेय्यात्रेयात्रीः मुक्ताना ख्रीत्राचा विष्यात्रात्रेययाः मन्दर्देशक्षेश्वर्शेत्रम्भेत्रम्भेत्रम्भः इदः वदः वक्ष्यः प्रेष्ट्रम्भः वर्षः हे स्ट्रेन पायान्से वार्यापियो स्वाप्ती में में स्ट्रीन स्ट्रीन स्ट्रीन स्ट्रीन स्ट्रीन स्ट्रीन स्ट्रीन स्ट्रीन रेस्रामान्त्र के न इस्र न्य स्वाप्त वृत्त नित्ते के साम है के नित्त कर है के सरत्यूरर्से । ब्रिटक्तिसे अस्याद्यद्यादक्ता वादाकु वसस्य उदास्रित् द्वा र्गमुरुरुरुषाम् वर्षामान्द्रसादेद्रुरामान्द्रम् सुरास्त्रम् सुरास्त्रम् शेसस-न्यवः इससः ग्री-नर्गेन्या विषा-यदे व्यसः नुः वेसः यमः ग्री-नः न्या वरी द्वार्गर कें राष्ट्रस्थ रहर ग्री कु सर्कें के द में पी द स्रा द स्रा देश ग्री ग्वन देश मुन्य से न प्राप्त के न प्राप्त के मार्च के प्राप्त के मार्च के प्राप्त के र्रे प्दे प्रमानी साञ्च र से प्रायप्त प्रमान स्त्र है मासामित्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र धरः वैवः धरः हो दः पवेः हादः कुवः श्रेश्रश्चः द्वादः ह्वश्वः वेः दग्नरः विवेश्वेशः ॻॖऀॱक़ॖॱक़॓ढ़ॱय़ॕॱॸ॔ॸॱॸ॔ॻऻॸॱय़ॕय़ऀॱक़ॕॴॻॖऀॱक़ॗॱॴक़ॕॱक़॓ढ़ॱय़ॕॱढ़ऻ॓ॴॻॖॱऄॢऻॎऄॴॴ ठत'न्रस्थारु'ग्री'क्र्साप'न्रस्थारु'र्युत'स्यार्स्केषार्स्केष् ळेत्र सें श्रुत प्राधेत हीं । दे श्रूर दे द्या ये या तरें द्वयय द्र प्ये शेया ग्रीः कैं गुरुष्य प्राप्त प्रमास्य प्रमुच पर प्रमा पुरसे प्रमाने दे प्रमुख स्तु स्तु स्तु स तः क्षेत्रः सः प्यतः त्वाः सरः क्षेत्रा का स्वतः स्वतः सः स्वतः सः स्वतः सः स्वतः सः स्वतः सः स्वतः सः स्वतः स येट्ट्री विश्वर्शी।

বাইশ্বা

ग्वित् श्री सुर श्रेव पर शेर पर सुर पर वि पर श्री

नशुःनविदेः रें निवस्तवमा प्रदे कुः सळ्या नशुःनविदे हो नः स्था वर्षे मञ्जून प्रसाने व्यानहेन प्रमें सामा इतः बन्धा स्थानिय विदे हो नामा याने त्याने स्तर्भात्र विष्या विषया वि

गशुस्रामात्री नसूरमानि सिंग्येन साम्यानुत्या मुखा है विगा मेनायी म वेन भ्रुवामयने के याद्वामये भ्रूपात्र मुन्ताम निष्ठा पळनाम में वान्वावानमान्त्रेन्यवे स्रिम्मे । स्रुन्स्याने नस्रुन्न न्त्रे से स्रोने वार्ये सा धराबेदादी देवादे बे बचा हु लेका धराबेदा के से सामार्केदा धरे हो रा र्रे। दिनःश्चेर्प्यश्चेर्यश्चर्यायिवनःश्च्यायरः होर्दे। दिनः सम्माय वे लुग्रमाने से देंगा पर धुव रेट रें र सुव पर हेट पदे हेर है। दर र्भराष्ट्रेन् वर्षु मन्दियारी क्षेत्र । विदेशमाधिया है से सामाधिद्र । विदेश राधिरादे सुरारासे। विवेश्यराह्मारार सुरित्वे विरार्थे। विवेश्ये। विवेश्य वै। गर्यः गुःगुवः ग्रेःदेवःगुवः वगुवः यः द्रः व्रवसः व वरः सेरः सरसः मुसः इस्रभःग्रीभःगश्रुद्रभःस्रभःत्। वर्षिरःश्रुद्रःभःइस्रभःग्रीभःवदेःवःनहेतः नर्गेशने। वर्ष्ट्रसून्यन्द्रक्ष्याम्बर्ग । क्ष्यावने वर्षे प्याने नक्षेत्र। ।गुत्रःश्चीःर्देत्रःगुत्रःवश्चनःश्चेत्रःवेदः। । वनशःनवदःधेतःनरःस्नःहः বর্ষবাধা বিধ্য:মূমি

यः माने। स्नुनः श्चायामित्रायम। यहिमाहेन मी स्वयाप्त स्नुनः श्वनः स्वरः स्नुनः श्वनः র্ষি'বাहेर'ऄ८'ठे८'पवित'ग्री'अ८८श'ग्रायय'पर'एईअ'ध'र्स्ट्रेत'र्5'पहर' है। विस्रसादर्ने नायार्सेवासायादिवाहेत्यी दुवाग्रीसासेस्राउदा इससा न्वायःवरः होनः भर्दे। । यदः न्वाः भर्देः क्रें यः वश्रुवः यः नृदः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्व वै। ८८.स.८८.क्ष्याविस्रस.८८.व्रस्यान्टाम्हेटान्टरानेस.रनान्सेट यःश्रीषाश्चार्यश्च इत्रास्त्रम् यदःयः इतः यदेः यदेः यदेः स्रोत्रायः वि केंशः क्रेंत्रः मंदी । मराम्बेर्ना मंदी म्याना क्रेंत्रः क्रेंत्रः क्रें सका में स्वर मदिक्षित्रान्त्र्र्म् न्यर्भे भीत्रात्त्र्यायायाधीक्रात्र्यम् न-८८-२ सूर्यान्य के या की या प्रयान से दार के दार में ना परी कर है का दा पर ८८। श्रेश्रश्चर्याण्यःश्चिः वर्षाप्यःश्चितःश्च्याश्चरः विराव्याः विवाशः विद्रायायावे सूरावा सेदायरायवा यदे किया विह्नेदायदे सूवायरा सूर्या के सा न्गवन्त्रस्यस्यप्यापदः र्स्त्रिन्यन्द्रा कुन्सः श्चेत्रस्यः श्चेत्रसः श्चर्नान्दरः नि-तिर्मेर्भे, निवेष्ट्रिर्द्, शृर्रेष कु.च.निवेर्केश श्रुव पान्ट रहेष विस्र ग्रीमिष्याचेर्याप्ता कृत्भ्रेवायाभ्रेवायाद्वायावेरायेयया यदे.य.र्रर.र्षेत्र.रा.को लर.र्या.सेक.ग्री.क्ट्र्यायस्योग्न.राद्र.यदेय.रा.यखे. क्रॅंब'य'न्टा विभाय'न्टरम्ब'हुचुट्यावनाभेन्याक्रथावनार्थेन्यः न्वेन्। प्रदेश्वेन्। नभूषानान्नावेश्वेष्ठा वुन्। नः इस्रायान्यवेश्वेन्। नु कॅरापकर हर प्रवेषागात्र हो राज है सूत्र पर सुप्तरे सिंही र्नेन श्रुनिने अः श्रेन पः श्रेन परः श्रेन परः ने प्राप्त । श्रेन परः मुस्य अः श्रेन परः

नर हो द रा निष्ठिया थीं । दे निष्ठिया यथा के प्यदे वे दें दें दें वह वि दें निष्ठिया था वे। वेंदशक्षेंद्रक्षश्चन्नुनःपःद्दःनशुदःनःद्दःश्चेवःनवेःवनशक्षेत्रः <u> ५८.सरीय.सम्बद्धा.सम्</u> ।कु.मु.सपु.सूर्य.स्य.स्य.स्य.स्य.स.सी वेंद्रअः श्रुंद्रश्रद्रशः त्रुंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रेंद्रश्रे धे अप्यायानि नम्मे अप्यामायिक स्थाने सामे अप्यो । के वि धे पाहि सामि सामि स वहें बर्नु वहुवा भरो । विभागवसार्या वुराया वहेवा हेवा भन्या निष् श्रेयश्चित्रः तृञ्च द्रशः या त्र भेति । द्वीः या इत्यास्य स्पर्मः द्राप्तिः स्थाद्रः स्थाद्रः यशयद्यायप्रवित्रायदे भ्रिम्भे । दिन् क्षेत्राया के या नाया वाया प्रदायहणा क्षे र्वेन्द्रमे इस्मन्यम्य प्रायन्ने नायहिन्द्र प्रमाद्रमाद्रम् वेंद्रअः श्रेंद्र सुद्र र्क्षेत्र अपके दर्श रहत द्वर स्वर्थ है । यत्रा से दर्श या वि र के दर्श में अर्थामें अर्थापा इस्यादी प्रभूदायायी त्यासूट विट ह्युदायश्री प्रायाप त्रेशप्रदेश्वेशप्रतः उदाक्षशार्वेषाः अरः श्चाप्रेशपदिशयः दवाः वाद्या । देः रॅन्-ॲट⁻न'क्-र्केश'बन'र्से'न्ट्-वान्स्रस'टवा'झ'र्से'व्य'वह्वा'पर्न् बेट्-ने॥ व्यः स्टः वात्र व्यः स्ट्रान्त्रं । दे व्ह्रस्य वे विष्यः व्यः वे विदः के व्यवः विः र्देव'य'न्भेग्राय्व्या न्यायायाव्यन्देव'न्न्याय्यायान्वेयायान्धें र नमःस्टायन्त्रान्त्रीमःहे। धेवःहवःस्रम्यस्यमः नर्सेन्याः स्यायः विगास्र हिन्स नुयानविन नुस्य अभाष्य स्थ्र प्रिकेश के गाञ्च प्यता । सर मी किंगान्द त्याय नर होन प्रशामान्द्र न्या यानुय नर से नुशानेशा हिन्शीशन्वेन्शन्यन्यन्ति। स्वन्यन्ति। यात्रवार्यन्याः स्वन्याः सहन् वया ।रे.वेग.यरग.वेर.अ.र्थ.य.वेर.पर्य.यरअहर.बेर.यह्य.य. यग्रम् विष्यःश्री विष्यः न्यानविष्यदः विदः विष्यः न्यान्यः निष्यः विष्यः ग्रीयः नसू न महिरा रहा वह से वह से हिर में श्री के न महिरा में से के न महिरा में महिरा महिर वार्रों अर्चे :क्रॅं अर्ग्ने :वर्षे :वर्षे अर्थे अर्थे । वि :प्यट :द्येवाय :पदे :क्रॅं अर न्तः श्रुनः परि कें अन्तरं ने 'क्यायं र श्रु तानि कें अ है। वतः वेतः न्तरं के अ वै। ।नशुःनवे:नर्देशःराःनवेरःवर्देनःर्दे। विशःशे। विशेषाःनुश्रामशुश्रः गठिगामदेख्यसधिवाहे। नष्ट्रशादराष्ट्रदासरावशुरानादरा । गादादगाद क्षरक्षर्भेर्न् भेर्त्या । दे गुन्दे प्रमानिक मानिक विकास । विदे ने के समार निक्षित भेर यम विभार्सि दिःषाश्चिरः ग्रुटः सेस्रसः ग्रुःश्चिरः पायास्रवयः प्रसः ग्रुटः श्चिसः के न ने सर धेत न न स् न ने प्येत ने विष्येत ने विष्ये स्थाय स्यामित्र ग्रे कुं र्कें ग्रां श्रेव पर ग्रुं न र्र र शेयया उव ग्रे कुं र श्रेव पर ग्रुं न ग्रेव यशसेन्या नेपित्रभायम्धितन्त्रम्यसम्बुन्यस्येधिम्भी ।ने क्रुमः प्यारः वृद्धान्य स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थ

ने न्याया अष्ठ्याहे आ शुःहे व्ह्रमाय श्रुमायदे खुंया दी। हैं में के दार्थिया न्या क्षेत्र से सम्भात्र होत् । क्षित्र संस्था होत् न्या से वा स्था यद्गयाव्यायद्यायदे द्वयादर्द्धे म् श्रीया । क्रियाया ग्रीययादि । यह व सर्वश्रम विश्वाम्यात्रम् कृषाश्रमाग्रीः श्र्रमान बुदानदे ग्रहा ऄ॓য়**ॺॱय़ॺॱॸॣॸॱय़ॕॱय़ॱढ़ॕॻऻॺॱॻॖऀॱ**ख़ॺॱय़ॱॻऻढ़ॺॱय़ॱॸॆॺॱॺढ़ॺॱॾॆॺॱॻऻढ़॓ॺॱ यार ग्रेर ग्रर भ्रेत द्वा प्रश्राक्ष प्रत्य प्रश्ना भ्रेत द्वा प्राप्त प्राप्त प्राप्त विवा हु नभूट विटा याया हे अ विचा तु न भूट है। न अया नित्र ही दें ने विना न अ ८८: भेर द्वेत क्री में में राष्ट्र रायदे ख़ूना सर्वेट प्रवाद विवास हस पावना हु नर्झें अप्या सर्रित प्रार्थिय प्रार्थिय प्रार्थिय प्रार्थित स्वार्थी । वयाय विया हे अ र्चित पुरा मुर्हित । यर्चे व र व्यु अ वे र अ व अ या हे अ या हे अ । ग्राम्प्रित्या नर्जेन्यवे सुँग्रायाचेना केंया ज्ञान सेंप्याने साम्प्राया स्थाप रायवाय विवा वे अष्ठ अववा विवा पुष्पर य तुर हैं। । हैं के वे वे वा अष्ठ अ मावना यह राष्ट्र राष्ट्र मार्मा हिं स्रोति हैं स्रोति ह

ॡॱज़ॱज़ॕ॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔ॴढ़ॴॗ*ऻॾ॓॔ॳॱॻऀॱॸॖॕज़ॱॸॱॾॗॗॸॱज़ॸॸ*ऻॗॎॿॸॳॱॺॱऄॗ॔ज़ॱय़ॱ गुर्रे में राष्ट्री । सक्षायर नव्यायदे रुष र्या हा । वि याव्या सुना सर्वेर क्र अद्रअ विद्या | ने क्रूव ह्या हु र्यो अरु अरु । विरु र्रेश ने प्रे र्यु रे र्रेड्डिन यःभेवःहः अदः ५ जुदः यः जुः ५ गवः यः क्षें स्थः श्रुद्यः ययः वें यः यः वः धेदः यः गर्राचार्मेर्प्यस्थराते। ग्राचेस्यस्थरात्रेयाम्यस्थरात्रेयाम्यस्थरात्रेया क्षरासु नवेरा से न्या मारा वेरा मरा मुरा मेरा हुँ त परे पुरा सुंत कॅर्-र्-वींस्थानर-व्यापान्। व्येश्वान्यन् निमान्यन्ति । व्यापान्यन्यन्ति । व्यापान्यन्यन्ति । वी प्रत्यो अप्यह्या प्रार्थे प्रयानी अया प्रायाय के भ्रेष्ट्री प्रस्था यह वा शे त्रायम् अर्थेट त्रायाया ह्रे ह्येट प्रते वी स्रायद देन द्राया क्यायम्प्राचायाय्याके संवित हुप्यम्प्राचित्र ही माहे। ध्रित हुत् समय षर्यास्तरम् नर्देत्रास्य वाराविषाः विषाः विषाः स्तरम् स्त्रम् त्र स्तर्रास्तरम् विषाः हेत् । स्तर् मर्वेद्रान्तः क्रे त्र मुन्द्रा । मादायदा विद्रान्ते देता मुन्द्र स्था । वी रहा है न शुर्म । ने अन प्यें न हम न वा ने प्यें हम वी समाम स्थाप नम्प्रायम्भा विश्वासी । दिवासीम्प्रायः न बुद्दान इसरा ग्रीया र्से द्वाराया से र्से नायदे व्यवसासे द्वार्थ सर्गा यह गार्थ सरा मायार्स्स्तामदेर्भ्स् भूग्राययेयात्रात्रर्भ्स्यामात्र बुदात्रभीत्र पुरातह्रत्यमः वर्गुर्रान्यरावन्यराग्वर्ति । भ्रेयानु केन्यरियायाग्री रेयायायय। र्रेन र्शेश्वराष्ट्री । ।

गुर्भायमाध्यापळ्याया ।

विट्रायर्ट्य स्ट्रीव्यायायाद्वेयायायश्चरायाद्वी

वि न्यावस्थान्तः वि न्यावस्थान्तः व्याधान्तः व्याधानतः व्य

ह्यों विश्वास्य स्वासी स्वासी विष्यात्य राष्ट्र स्वासी स्व तुरःर्वेनःभन्ने कुर्नःग्रेःर्धेनः हनः सःधेनः नम। वेनः हनः ने । नमः वस्र । उत् ने महिरा ग्री पर्वेर तुर हे सूर प्यत् सूरा वि मात्र र द्वा सर्वेर न्रें अ'ते'वळन्'यर'वशुर्रानाशुर्रानाश्चित्राची स्वापित थेत्रम्य नेग् मः के कुरमे थेंत्र हत् नयस्य उत्ते गिहेस ग्री वर्ष्य स्तुःस धेव ग्रम् द्रमे निर्दे द्रमेम्य स्थाय सेस्य हे महिमारा धव कर् ग्री हिर हे वहें त इस्र भ वि गात्र भ ग्री रें गांभ शु वर्त ग्या है व्हा नवस है ख्रे न पवे रें त *ऄॕॱऄॕॸॱढ़ॻॖ॓ॸॖॱय़ढ़॓ॱऄॺॱॸॻॱॸॗऒॱॸॱॾॖॺॺॱॿॗॴॱॺॾॕॸॱॺॊॱॺॖॕॴॺॱॺॖॱढ़ॸॖॱ* नथा दे प्याद्वेदियाद्वयाचे पाया शुर्या शुर्येद एत् प्रस्थ रहत है । भूषा वी प्रत्रका सुर्राच का प्रकार का वा प्रताय का के ना विष्य प्रती है का निष्य प्रकार के ना मःकेवःमें यः न्न्यम् स्वास्ति स्वर्ते यथा ग्राम् नेवाया ग्रीः तुः इस ग्राम्यः यदेशःग्रद्दाः क्ष्रद्राक्ष्रद्राक्षेत्रः केष्रकाद्रायः इष्रकाग्रीः वेषाः पाळे दः वेषः वा *८८.स.मुचा.स.कुप्त.स्यूच्याचनुद्रः च.चाट.कु.लट.पुटा दे.मस्याउटा* दे.स्या यम्'अ'म्पोदर्भ'यदे'श्रेअश'ग्रेश'र्देद'द्द'र्केश'यद'द्या'यम्'यश्रअश'य' यशः हुरः नरः रेगः परः हुर्दे । विशः गशुरशः हे। अः गणेरशः परे शेसशः वे वि पावरा ग्रे स्विपारा से सरा हे पाठिया पा पीव त्या देव प्र प्र स्थापर प्रा यर शेस्रश्रम दे ख़ूवा सर्वेद वी द्विवास से से रहेवा संदे के सर्व देया

देशवास्त्र विवाद्य विवाद विवा

रे'नर्भ'न्रञ्चन'में सेद'र्हे । प्यट'न्वेट्भ'व्योव्य'यथा क्रुं'न'सें प्येश'यूवा' अर्चिट-५८। वि'ग्वस्थार्मीस्थान्य-जुस्य-दी। ।ग्वस्थान्य-योद-ग्री-१८केटः नन्ता । अक्षव अदे पकेट प्रश्न इस में वा प्रमा । विश्व माश्र रूपी । दे यान्यम्भाद्यायेवावे। ध्रयाच्याद्येवाचे विष्याचे विषयाचे विषयाचे विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय व्यायाक्षेत्रयाक्ष्याच्यायव्यायवे वाष्ट्राच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्या ध्रेत्रिं वें वा त्या अर्देत् प्रमानेत्रा प्रमाने माने प्रमाने वित्रा प्रमाने वित ८८। रू.स.कैया.सर्हर.यी स.हीर.जा ही.स.बे.योपश.ग्रीस.हीर.यर.जेर. ध्रेत्रः अतः न्याः तुः न्यतः न्तिः । नेः न्याः वेः विः ध्र्याः योः श्रः श्रूनः न्यत्या अः सवेः सवः धॅर्वाधेर्यो वेष्ट्रमामे नम्हर्याया मान्तर <u>५८:वेश:रव:ग्रे:यव:वेंब:पाशुरश:य:इसश:ग्रट:वर्द:पाहेश:ग्रे:यव:वेंब:</u> र्नेश्रासर होते।

महिरास्त्री निर्मात्वे स्वित्र वित्र वित्

ञ्चनाः अर्वेदः नी अः नष्ट्र अः धरः रेनाः धरः नुर्दे । वि अः नशुद्र अर्थे। । दे अः वः हिटाटे'वहें **व**र्टेव'र्'वाहेर'व'क्स्याचीय'वीयावयावदे'र् हो व'सबद'पय' रास्त्रप्रदास्य के त्राप्या हिटाटे प्रदेव गुवा की खेला के प्राप्त की खेला गिहेशःग्रेः क्रेंदिः द्धयायेगाश्वास्य इत् निष्ठित्यात् साग्वा कुत्र से स्वास्य हि क्षेत्रान्त्रेयात्रया देग्यानर्हेयायूदायन्याग्रीयाग्रुटाकुनायेयया इससाग्री हिरारे वहीं ताम द्वारा किंदा से दाया दाया हु से दाया से वासा रानभूत र् वेत ग्रम् वे मात्र र द्या अर्थे र माहे र ग्री र हिर रे प्रहेत वस्रश्राह्मतास्रात् वे जात्रश्राद्या सर्वे तात्र्या सर्वे तात्र स्था सर्वे तात्र स्था सर्वे तात्र स्था सर्वे तात्र स्था सर्वे तात्र सर्वे वह्यामित्रे वसाने हिन्न हिन्स स्वित्र विकास निमा क्षेत्र से सम्मा यथा ने पहिराग्री अ हिरारे पहिंदा बस्य उत्तर्भ्य प्रवे श्रिम् इया पर्वे र माम्राया उत्राधियात् याम्याया उत्रात्तेया सम्भावत्या प्राप्ति । याम्याया स्थापित्या स्थापित्या । याम्याया स्थाप नक्षेत्रस्य न्युः क्षे वेश न्युर्यस्य स्था

नशुस्रान्य विःनावस्याग्रीः र्टः विः वि नर्ने त्यात्र्यायायस्य ने नि वि नावस्याग्रीः विः नि वि न्यात्र्यायायस्य ने नि वि न्यात्र्यायायः वि न्यात्र्यायः वि न्यात्र्यः वि न्यात्यः वि न्यात्र्यः वि न्यात्यः वि न्यात्र्यः वि न्यात्र्यः वि न्यात्र्यः वि न्यात्यः वि न्यात्र्यः वि न्यात्यः वि न्यात्र्यः वि न्यात्यः वि न्यात्य

ने या इसायर प्रवेदाय है है भ्रेदाय प्रवेदाय है। प्रवाह इसायर वर्चेन्यने हे स्वानवर्चेन्यमे । नेश्यन्यन्यक्ष्यं धेन्रेन्हेंग्यः <u> न्वास्तरहेवासवे छे वे प्यत्याशुन्धेन्य प्येवस्य स्वयायाय विषयः</u> बेर्ग्रियान्त्रत्रे। हैंगायां के सेरानरहेंगायाधिकाया नर्हें रायां के विना यम्पर्शित्रपर्दे । अळव्यसम्पर्देवरम्बी यनेवर्वहेवस्थर्धेवरश्चीरध्या ग्रीःशुर्भरायग्री । देःश्वरादादेःश्वर्षः श्वेदायग्रीदारारे रे या विद्रा शुःहैनाःसः नदः नुर्धेनः सः महिराः महिराः धेनः । निर्मेद्रसः द्रमेषः नदः स्रुतः यम्। वयवार्यास्पर्नेवित्सर्केवाः श्वेतायरा ग्रम्। विवात्रस्वे सेस्रास्ते याडेया पर्दे । व्यया सर्वेद दे । प्यत्र न्या स्य स्था स्था । विश्व या श्वर नरम्बर्द्धर्भा हिनद्वन्तुस्यास्याग्रम्सर्भेते कुत्रास्य क्रियाग्री श्रेरावे नर्श्वेष्य रायदायदी विगावयाययात् वियायरा व्याप्य विष् यसके ने में तर्मसम् । इसम्पर्नि निर्मासम् ने सम्म । विस्तिन्। यह

न्वायावर्षायायात्रहेवय्वया । सेस्रयायासेस्रयाहे वहेवा धेरान्या। केंग र्यः इसः धरः वर्रे नः प्रदेः स्रेत्रा विः यावसः न्दः वेः भ्रूषाः सर्वेदः धेवा विसः षर:न्या:यवे:हिर:दे:वहें तःय:यहेत:तशःशेसशःवहें या:य:वे:यात्रशःन्ः। केंशन्तर्त्त्रस्यायराद्येद्रायदेश्वेशन्तरात्यःस्त्रायास्त्रेत्तास्त्रात्रास्त्रात्रे सर्ने त्र राने व्हर पाश्र र राने प्रति द्यों र राने प्रति त्या वित्र त्र प्रत्य या रामे ब्रेवेर्नेवरम्बन्दुःइरःदुः भेरद्वर्यस्दुःने । व्यूरःकुनः शेस्रशःद्वरे रायराग्रम्। न<u>ह</u>्निन्,सेन्सिनेन्स्सिनेस्सान्सनेत्रस्यान्नीन्सेन्स स्रोस्रार्भित्रासुरम्पोटानाम्बस्रारुद्द्द्द्द्रान्त्रायान्त्रीत्रार्भेद्दाः स्रोत्रायान्त्रीत् नयन्त्रीम्यानात्रस्य उत्तार्थेयानात् वरामे हिरारे पर्देव श्री सक्त यात्रस्याताः सेस्रायदेवाः पान्दान्यस्याते । वहेवाः पान्यस्य क्रियाः पान्यस्य गठिगाः हुः हो दःसः ददः हिदः दे त्य है वः दुः हो दः सवे न्य सः वदे वे वे न्याव सः वे सः नुर्दे। । भ्रूना सर्वेट माट । ले । नात्र सः पेट सः सुः नर्से ससः मदे । पेट । या नेट । यने हिन् ग्री अन्दे स्ट्रम् न अअअयम् दे के अने न मा हिन् ग्री अळव अपी न या वर्तेन्यन्य। क्रुयायर्यावयायान्यनेयार्यात्र्यात्र्यान्या लिवारायदी विश्वासर्वेद विशानुर्वे विशास्य सम्मान्द्र सम् गश्रम्याने। वर्षयाते यर्षे प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते व्यापि स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स् নশ্রমান্ত্রমান্ত্রী বিশ্বেশানী দিনা বেইব অ'দিনা নদ্র নম্মর্দ্র দিনা

क्षेत्रानेसानम्यायमा ग्रम् हिर्मेया ही प्रायाया ह्या प्रमाणेमान विषय वर-रु-त्रीम्बन्ध-व-क्रुव-रु-रर-मी-रर-मीबन्द्रम्-व-व-र-र-ह्यों ।वि'मान्याने 'हेन'यामन्याने याने के 'ने 'वि'न'या ह्या समानहीं न'यामर धेव मने वे भ्रमा अर्बेट धेव हो। वे राम द्रा ने र द्वेव अव द्रमा खरा ग्रम ने या है स्रेन प्पेन प्रमा कुर प्रान्ता है स्थान निव न् कुर प्राप्त स्थापर भे हेंग मदे ग्रा त्राया राष्ट्र प्राप्त स्वार्त है । वि यात्र राष्ट्र प्राप्त स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्व श्रेन्थिन्यर्श्चरयान्द्रिः स्वान्यवित्रः तृश्चरयायः हैनायान्द्रया यदे न इन्याय न इत्र र् कुर पार्वे खूना अर्वे र नी प्रेम याया विया है सूर नन्द्रहे स्रेन्सि देवाया के हिंगायर पर्हेगाय के विगाव राद्रा ध्रयाने गिहेरायाम्यापरान्धिनायाचे व्याप्याचेतानु विद्यायाचे वा यशःग्रह्म नर्डे अष्ट्रदायह्यः तुः विवाः विष्वाद्यः ग्रीः ह्येवायः यावाया नगदर्ख्यायाविवासे। वर्रे सुरे इसायम्से हिंवायदेवारावह्रवः र्वे। १५:विनाःभ्रमाः अर्थेटः मीः ५ से माराः यात्रायाः नातः सुराः याचे ना वित्रः क्षे। इस्राधराहेंगायाप्राप्य वस्राधिया त्या स्वासायक्ष्य है। । प्रावियापे यहिसा गिदे द्रियायायायाया नगिद सुराध पित्रे यह सुरे दि दि सि से समय: प्रमाण प्रमाण । विकाम सुरका संदे प्रमाण । स्विकाम सुरका संदे प्रमाण । स्विकाम सुरका संदे प्रमाण । स्विकाम धेवर्ते। ।ग्वाययान्त्राययान्द्र्यायद्वायान्त्राय्यान्त्राय्यान्त्राय्यान्त्राया यहिराश्चाशुरराम्या वृद्धे मरास्य वित्राम्य वित्राम वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्र

सर्वेट में में खत्र हैं हैं हैं हैं हैं ने कि स्था में कि मा स्था हैं ने कि स्था में हैं ने हैं ने

दे.लट.सुस्यान्त्री.स्यान्ती.लीयायान्तीयात्राचा.ची.यसायटारी.देशयायात्रा याग्वराम्याद्याव्याव्यावेयाच्याय्या युगामास्रीष्ट्राम्यान्या तःध्रुवाः अर्थेटः विशः ग्रुटें। । वाटः द्वाः श्रे अश्वः श्रेटें वाः प्रयः वात्रश्रः प्रयः प्रवाः प्रयः । ग्रथाक्रे रूर् से द्राया के मार्थ स्ट्रा म्रथा करे रूर से प्राया से मेर नर्रेशन्ता वैवाशसेन् ग्रेजिव्हरन्ता नर्सेस्य प्रेस्य प्रायासेवास्य प्रे गल्र-लि'ग्रव्यान्यभ्रान्यभ्राम्यभ्रम् राष्ट्री अळ्द्रक्षेत् क्रु केर ग्राह्रदाय विवयः मः इस्रायाया के स्राया द्वीयायाया है। यहिया प्रियाय दि । दि दि । यहियाया वि म्बर्भान्ता वेशानुदेन्त्राधरान्याधरास्यानुदन्दन्नेन्। प्रदेनेशास्याया ञ्चनाः अर्बेटः नु न्या शुरुषः प्रान्दाः प्रवायः नवेः श्वेरः नदा । विनः प्ररः नु से स्रवः *बे:*हॅग्नार्यः नेग्नार्यदेःग्रब्यः कवेः दर्रायें द्रायें द्राये दे हे दर्रे दर्शे दर्शे दर्शे दर्शे दर्शे दर्शे द बेन्थ्राचिन्यर्धेव्यी वेश्वराची। इन्यर्त्यात्री। इन्यर् है। वियावसःग्रीःहिरारे प्रदेश्वास्यस्य उत्त्यप्रराष्ट्रीरायः सरस्य प्रारं स्थाप्य न्वीयाया विरागन्दावयानवे निरादे वहें नामस्य स्वास्था से समावी द्रस्यः क्रःदेयः यस्तिरः विदेशिसः स्वित्रः विद्यान्ति । दियः विदेशः विद्यान्ति । दियः विदेशः विद्यान्ति । विवाद

देःवहें ब'न्दःवेशःस्यादी ध्रवायन्याः सेन्यायिशायादः धरासुरः याही देशहेंग्रास्यहेंग्रास्थी:क्वेंद्रस्याम्बर्यस्यान्तर्यः वशुराने। धुवानन्यासेनासेनानेनेनिक्तनेन्त्राह्मात्रास्त्रीयसानेन म्रायाया के हिंगा संदे हिंदा देश हैं साम्या हु से दाया के से प्राया है से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्व न बुद्दान शक्रें ना सार्रे के खुरा ही अप्तान रामा क्रिंद हे दा सार्ने प्यद से प हैंना परे हिर हे वहें वर्श्वे नायायायाया हर बर ग्रह्म से राया हे दे श्वें वर्षा शेसरामेट्र वेद्यत्रोसरावेद्यद्यस्य सुरास्त्र स्यास्त्र सुरायरास्त्र सुरायरास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र भ्रेअपात्रात्युर्याद्राराये अर्थायाद्रवादायदे भ्रेष्ट्रीया कें या के दायाया यदे पा भ्रे प्राचीया विद्या दे भ्रे अप्याद प्रवाद निर्देश के राज इसाया मार्थ प्राचीय समुरारोसरायाम्ययाळ देंट नराया नरे न्यायय से हिंगा परे हिट हे वहें तः वस्र राज्य के ने विं त के ने हें वा राज्य ने साचे ने प्राचे ने प्राचे ने प्राचे ने प्राचे ने प्राचे ने न्यायाकेष्यराभेनान्। ।नेयानाभूराकेनान्यायाकेकेरानेतान्याया नदे न्यायय से हिंगा स दिट ता सूट हिंद ता सुं विस्त सुं विस्त सुं विस्त स्ति है दि दि स ययर नरे नार्यय से हैंना सप्त हुर न के सासर नरा रे नाहे सा ही । हिर् हो र ন্বীমার্ম্যা

न्वीं शर्भाष्येत्र क्षुवात्वा नन्न प्रमः ग्रुक्षेः न्ये मत्र व्यक्षंत्र वे विवास मेशः नक्षानवे देव द्यारा से सुरानवा सरा से निवाह नासवान द्यारा निवाह भ्रे.पाल्र्.प.पाष्ट्रेश.र्टर.र्जेष.ये.यं.भ्रे.क्षश्च.त्रीय.लेष.यं.यं.यं.यं.यं.यं.यं.यं सर्से से न्याया प्रवास्य प्रवास्य प्रवास्त्र त्रीय न क्रिन्द्व प्रवास्त्र स्थयः ग्रथयःसॅर्स्स्रे अर्बेट्या विवर्त्। वयःसँवैर्देवाक्ष्यायवदःदे विवर्षेत्र हे सूर पर्दे द राजवेद द जाद राजवेश राजे के जार्ज के राज है राज क्षेत्रमार्थयान्यस्थार्वेत्यो । सेस्रायान्वत्तुः से प्रदेश्यान्यम्यान्यस्थाने से हिनाः मदे हिर दे वहें व खेर ग्रूर खेव खुग्रा के हेंग्र मदे ने रास्त से राव दे र र्वि'क'हेन्'स्र'नदे'सेमान्द्र'न्यानमा हेट'रे'वहेक'याहे'र्डस'र्वेसमाग्रद धेव खुग्र में कें निया से से निया से न यदे स्वान प्यान से सका हे ना हे ना , ज्ञान का ना नहता सदे हिन ने प्रदेश बेन्द्रा रूट्ट्यट्सेन्स्य वर्षे नदेः इस्ट्रिया वी क्रूट्यी अन्युया अस्य धेत्रस्यार्था से देत्र यार्था यन् सर्वेद्र या से से देत्र प्रेते से से प्राप्त है र सर्वेट प्रवाद विवा वी रावे द्वार पर्वेट रायदे से सरा पुराय द्वार पर वायेट नरत्युर्ग्यी क्रुर्गोवरवाद्वापदेशसरसे निवत्रं पह्रापरसे वशुरःर्रे॥

ने निर्मात्र भो भी श्राम्य निर्मा क्षेत्र कि निष्म निर्मा

नशन्याहिकामायन्यन्यस्त्रेन्यम् नुर्दे । दिवे भ्रीमायसम्बन्धाः स्पर्धान्यः शुः ह्यान्द्रायशायन्त्रायाः केदारेदिः सर्ने त्यशायान्। वृदार्त्रेशाः स्वर्गायेशः वे ने निवित्र मिलेमार प्रिये मेगार स्थान स्थित हिन्दे प्रियं के निवित्र मिल स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान धेर-८८:नेश-रनः कुर-नवे धेर-र्रे । इट-कुन शेशश-८मय इसश ग्रीशः वे अर्बेट सेंट सी से नायय है। लेस रन सी लय के नवे से र र र है र रे वहें तरकुर नवे भ्रेर हैं। । दे नवित मुने मुरा राय है म्यय ए उद्गानि मुरा है। विःगवसःन्राध्याः सर्वेर्यः सर्वेरसः सर्वे स्वेरस्य विसःनगवः स्याने। वियावराग्रीस्वियाग्रीरादेशस्य से स्रूटासेट्यरायवगापायविदा र् द्वाराम् हेंगा प्रदे हुर ह्वाया ग्रीया येया पार्थे नम् से प्रयूम में। । भ्रूगा सर्वेट्यो अर्वे स्थानात्वर्यदे द्वाना सम्यान्य स्थाना व्यान्य स्थाना स्थाना व्यान्य स्थाना स्याना स्थाना स्याना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्था भे छे ५ दे | त्रुप्त भें दे स्थित है स्थित है स्थित है स्थित है स्थित है स्थित है स्थित से स्थाप है स्थित है स गश्रम्य मः भ्रः तुर्वे । वेयः श्री।

नेश्वात् श्रेश्वात् विवाद्यात् व्यात् व्यात्य व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात्य व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात्य व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात् व्यात्य व्यात् व्यात् व्यात्य व

वरानी अराभे निवेदार् भे अया ५ उटानि पि नया निवासे रामि देने ही। श्चे 'प्यर'ग्रम्था' नर'भे 'के 'बे 'ग्रम्भ मुन'से 'के 'र्म्यू तःते :५ : उटः वार्थे : नवे :श्रुॅं त :ध्रें वा : ध्र : व नवा : क्षेट् : ध्रे :दे त :श्रे :वा श्रवः वरः वशुरावराञ्चना सर्वेदानी सेसरा से मार्थे विदेशक से हिना सदे वि नादरा यश्रुं न'पेद'में। पेद'ख्वाराहेंग्रारादेट क'वे'ग्रद्यारायराह्रें न'सेद'हे। *ॸ्*य़॓ॸॱढ़ॱॺॸॱऄ॓ढ़॓ॱॻऻॿॖॻऻॺॱॻऻॺख़ॱॸॸॱॸॖ॓ॸ॒ॱय़ढ़॓ॱख़ॱऄॗ॔ॸॱॸॖॱॸ॔ॸऄॱॺॗॱॺॱ यश्रभुःषे। द्वरःभ्रुतःपदेःषेयानःश्रेष्याश्रयश्रभुःषदःसरःसेःसेःपार्षः नवे नह्त्र पवे क ने प्यापार्य माना या स्त्री न ने सूर से समा सदिःनेशःस्वःश्रेशःवह्रम्शः वः प्याः द्वाः सदिः द्वः नेशः सरः दश्रः रायः रायरान्यायाहे सुनायविदानेयायर त्युरार्से वियायश्रम्याते क्षिया रेसर्टर्से प्रमा सेसम कुरविवर्त्या पिर्वरे हिर्वि वावस ग्री वावि सेट धरान्यम् अप्राचेत्राचे अद्रयाधरायान्यना प्रवेश्ये स्थानी सामे प्राची प्राची सामे हे भूपानविवर्र्भेशपर्से व्याने। वर्डेस थ्वर पर्या ग्रीय ग्राट सहस धरःचव्याः धरुः प्याः पाः देः क्षुः चः चवितः तः स्वाः द्वेशः शैं विशः चगादः स्यार्ने । विश्वार्ये । विषान्यम्यान्यान्यान्याये । यायाः स्वयान्ये न यदेःवेशन्त्रः स्वाधिःवदेः र्स्रुवः व्याप्तरः स्वाधः स्वाधः द्वारा *५८.७५५.च४.७४.२*४*म्थ.५८.घघश.स.५८.४८.५.५८.घ८.*७८.कुन.कु. स्वर्भी । निःदिनःनेनासमःनिःसेन्तिःसेन्तिःस्यः क्षेत्रःस्यः स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स्वर्भः स्वरं स्वरं

दे न्थ्रस्त्र द्रेश्च श्रम् या देवा या श्रे श्रम् या वित्र द्रेश्च या या या वित्र य

रुषाक्त्र-रुधिम्यायायाविमान्यायहम्यायायस्यायहिमान्ययादे वियायया नश्चनरायदे दर्वी राया संवेश मरा राया द्वी श्वी राया र्वे वा रा के दारी से प्रमुद नरंभेशनराम् हुर्ते। निःक्ष्रमञ्जून हुन्या सान्ता क्षानवे हुन्या हुन्या हुन्या हुन्या हुन्या हुन्या हुन्या हुन्य हेंग्।रादेःलेश:र्वाण्येश:र्व्धर:र्ह्मेश:र्देर:व्रःशेशशः हे:ग्वेग्।रादे:हेट:देः वहें ब नर्से स स ने ब र ह ने वा स र ह न वा से द र वे ने व यःदेशःयःभुग्रयःद्रग्।यःक्रुतःदेदःतःत्रश्चेतःयदेःव्रत्रशःश्चेरःदेन्।यदेः नेशर्म ग्रीशर्म ग्रम् स्थार्भे रामदे हैं स्थान या न्येन श्रम् स्था अर्थे र बेन्त्रा वियावसायाध्यतः है रहं सामें ससार ग्रुसाग्रह हैत से दसास हैत गुरवर्गे गर्वेद परं अंशेर्गी देवे अर्वेद इर्द्य श्रेर्प व शेर्शेर्प्य श्रि वि'नावर्यार्यस्य नर्सेस्य स्राचि धी भी स्राचित्र स्राचित्र स्त्रीस निष्य स्त्रीस स्त्रीस निष्य स्त्रीस स रेसानरामायमा विपानसार्यसायनयविवार्गेससायरागुसामसाने द्वारा वर्चेर्राम्स्यर्था ग्रेस्त्रिया परिकेश सेर्म्या ग्री रेजिया हैं दार्थेर्या स्थापरा मर्वेद्यार्थं अप्तुः बदादे। विश्वास्या ग्रीः श्रूदाया ग्रुदाया श्रेदायस्य मार्थाः विश्वास्य येग्रथायर:क्रेंब्रथायर:क्षेप्रकृर:र्रे । देप्रथायप्रयायायायर्गिरयायः देश'सर'वरोष'न'दे'हेद'यश। नश्रभ'नाहत'रीश'दे'हेंद'र्सेदश'स'ह्रस' धरायार्वे वर्ते । विशास्या ग्री शादी प्रया व्या खाला खेया शास्य वर्दे स्र शासरा होत्ती विश्वानगद्रस्याती विस्ववाश्वासातित्ते वहित्ती सुयारी यश युरा हैररे प्रदेश हैं अप्यर होर अँ र यी। । रेअ है प्यर्वा हु पर्र लेअ

वहिना भे छेत्। । ते पी केंत्र सेंद्र साधित विदायन विना भे। । भूना श्रेंत्र विदायने त हिरावहें त्रावर्के सामावित्। विवाहि के सामाविता से दारे से से हिंग । से र्शेर-दे-नह्म्यायायाने नश्चियायाची ।देन्दे सुन्द्रायद्यायायायायाया मु। मु:मवरमारधेरदेशदेविरसे प्रमुम। विशमश्रम्भर्भे। छिर র্ষমান্মান্ট্রাইর্রের্মান্ত্রীমার্ক্রবান্মান্ত্রীর্বার্মার্রীরের্মান্ত্রী नगरमी अयर्देन प्रदेश्यकुषा नुः भूरा बिरा भ्रेष्ट्रा मा जाना निर्माण स्थाना निर्माण स्थाना निर्माण स्थाना निर्माण स्थाना स्थाना निर्माण स्थाना वक्रे न न न स्थाप्त न न स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत लूटशाश्रीमुल कैयीयर्जा श्रीसिटामुल्यशामिटालूटशाश्रीमुलाप्री ने या नर्गे न्या न्या ने प्रविदाया ने या या या या दिन क्षेत्र प्रविदाय या है या शुःस बुद्र रा वें रा रहे : का रें विया रा वें या नर रहतू र रें वे रा नगद सुरा है। वेशमञ्जूरशःश्री । देग्ध्रमश्रात्रःश्चिममाश्चरम्याश्चरश्चरश्चरशःशुः न्वायदे भे से स्वर्द्धार वर पर्दे न स्था वे यात्र साया यात्र साय से सार्वा नर्झें अरमर मुर्ते । ने भूत प्रसम् अरम प्रमें व सर्के मा महे मा अरम स्था गुर नगद सुय है। दुंव विस्राय दे ग्राद्या द्या हैर दे दे दे दे व हिरारे विह्नेत्र वित्र त्र्या ग्रारा के या स्वा क्षेत्र स्वा के या स्वा भी या स्वा भी या स्वा भी या स्वा भी या स नेयाम्यापराद्यापायम्या । पोनेयाम्यापराद्यापयाद्धयाविस्रयास्य र्गे देश देश प्रें कुंय दी। हैं निष्ह्या यथा। विष्युवस स्व हुः ध्व र्पते खूवा अर्वेट वी श । वित्र वेट श इस मर वर्टे सम पर की श गुरा दश विवासरविवानस्य वर्षात्व वेसावस्य सम्मा स्वास्य विवासस्य नश्चनरान्याने न्याने त्यानहेन हे ख्र्या सर्वेद न क्षेत्राय धेन के । ने या वर्रे स्रुसर् रुर्सेस रेसर्टर में वस्ता देवे दसे नाम सम्मान स्थान से माने वेशक्षान्यम् भ्राप्ते प्रमास्य स्थाने स्थान स्थाने स्थान स्थाने स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान नन्द्रभः भूर वि वाद्रशः शे द्रभेवाश्वः सः यः के शः उदः दर के शः के दः वाहेशः <u>ॲंर-प्रशन्दर्भे निर्वाक्षेत्रपदेर्देवर्गे निर्मुश्याद्यादेश</u>्याद्येवायाहेर नर्झें अरु पर्या अंअरु माव्य न् से मार्थ म न्धेम्रअस्ते खूम् अर्वेन महिरामा देशम् विमान्त महिना स्त्री न ठेदे भ्रेर क्रॅब्य वियावया नर्या वया देया देया क्र्या अर्थे दार्श्वेया प्रम्ये । वा ने त्या वे नाव राष्ट्रया अर्घेट यो र्ष्ट्रेव र दुर्यो खुया राष्ट्री वद्या से न र्षेत्र हें या रा यदे स्वाप्त वे में प्राप्त के पात्र अर्थे व र पर्यो से र में अर है। वे पात्र अर बेर्'रायवर'क्षुनाक्षेुं नर'सर्वर नितेष्ठिर'र्रे । क्षुनारे वाधेर्'वगुर्नारिः

दें त ले पात्र रा ख्रुपा सर्वे द त्य प्रों रा खुपार रे पाट पीत ख्रुस स्रुस त्री वर्दे यान्वीत्रावन्नोयात्रमा र्रो। र्रोन्सेन्सेनामवे भी सामनामे सामानिन यन्दरम्यातृत्रस्यायम् वर्तेदायदे वर्त्तेस्यायाचे। देश्वेदाद्राख्यायोसया निवर्ष्णञ्चरमामञ्जेद्रायमञ्चर्षात्रमामने श्रीद्रात्रः श्रूषा सर्वेदरद्र हे मासु समुद्र-पितः धेन्-धेन-धोदाया ने-प्यसः भिदासुन्सः सुन् सम्बन्धः र्गशुर्यायम्। विगान्यायभितान्यास्य स्वास्य विशास्य स्वासीया न्धनः भूषाहे रुषा चुषा ग्रामा नेषा सबमः खुषा क्षेस्र भी तः तुः श्रुम्या परिः न्यायः नने न क्रेन् स्य स्था विष्यात्र अर्थे न क्रिस् के स्था निष्यात्र अर्थे न क्रिस् स्था विष्यात्र अर्थे न मभा ने त्या वे नाव शक्तुर न्वी शहे विना पुरत विना सर होते। नि शव शे र्शेर-हेंग्। रादे-लेश-र्नः ग्रेश-र्श्याश-राज्ञेग्। त्याश-राव्या-रार्म् गुर्नः यदे द्वेनश ग्रीश विद्युह्य न द्वेन व्याप द द्वेन सर्वेट द्वेर प्रमा ध्यार्भूट्रमान्नेन्यान्भेष्यायाद्रभेष्ययान्भेष्ययात्रम्यान्यान्यव्यास्यः

द्वरः वी अस्ति सुर्धरः न सुर्वा अर्धरः वि वा व्या न सुर्वा स्था स्वरः स

न् त्यून्य व्यून्य सर्वे त्या सर्वे त्यून्य सर्वे त्यून्य स्या स्थान स्

वि'ग्रवस'न्द्रम्'अर्थेद'मी'में 'देस'ने' अद'न्दर्ये र'ग्रस्नुन मदे के ने भूर हो न ही अ दे भूग अर्घर र्से व न न से स्थान अर्थ के न न से क्षेत्रामयर हिर्माय में रेस रेस रेस मासे र रे वित्र गुराय सम्माय स यायाते खूर्या सर्वेद र्वेन पाये वर्षी विष्यात्र स्त्रेत से दे खूर्या सर्वेद यानहेत्रत्र्यावेषात्र्यायक्तियम् होत्ते । वियापाश्रुम्याय हे सूमः लिय-विन्ता देन्द्रि-नम्भमान्त्र-दर-स्विन्द्रेर-नर्भूनामानीमान्यन्ति।वि ग्रम्भासार्वेनामास्रीमास्री नर्भसाग्रम्भान्यम्मार्थिः महिसाम्बिस्पमास्री वि'ग्रावर्थायार्चेन'यास्री ने'यार'ननेव'यानवि'यर्देन'सुयानु हिंग्यायाव्याने' न्द्रभागावि त्यमा गावव पाट सूगा नस्य वस्य तस्य मी नर नुवट पाट द्या यहिः भ्रानानितानु स्नानु भेषायान्यस्यानुत्र न्दार्से या स्नामानितान र्वेनःश्रे नेःदर्गाः अवगः तुः शेस्रशः व्हेंगः श्रेः के शः इसः यरः दर्गेनः यरः शेः होन्नि ।ने ख्र्वा सदि भेश स्वाने हिन्य वहेत् द्रश्या सदि से स्था या स्थ्री स्वाने स्व

र्शे रेरिन सून र्ख्याया गुरा

वि'ग्राव्या ग्रेसिंग्या ने'या ने'या नेहेव'व्या वि'ग्राव्या नेसिंग्या क्ष्या नेसिंग्या निंग्या नेसिंग्या नेसिंग्या नेसिंग्या निंग्या निं

बि'ग्राद्यार्थे केंग्राया में द्राया दे।

क्षायभ्रत्मभाक्षेत्राध्यम् विद्यान्त्र । विद्यान्त्र विद्यान्त्र । विद्यान्त्र विद्यान्त्र । विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र । विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्या

यःश्रेष्यश्चिःश्चेःभेःभेःभेःभश्चेष्यःभःभःभःभःभःभःभःभःभः ग्रम्भःग्रबद्दान्दा मृत्रःभःग्रभुद्दान्धःभःभेम्भःभःग्रबद्दान्दा য়ৢয়৽ঀৢয়য়৽৴ৼ৽ড়ৢ৽য়৽য়ড়ৢৼয়৽য়য়৽য়ৢয়ৢয়য়৽য়য়ৼয়৽ ८८। हेन्स्स्भेर्न्स्सर्भेर्न्स्सर्भेर्स्स् नर्स्। विर्मे सेते मुक्त प्रकारणमा क्षे स्वापाम प्रमान धरःहेर्दरम्बर्भःचबरःदरः। । भःचबरःचःदरः व्याषाःचबरःदरः। । इतः वर्चेर्न्सन्दे नदे खें जुर्ख्या विश्वास्य र्श्वा वर्देर् मास्ट्रा केंद्र में अप्यार्श्वम् अप्यान वरार्धे त्या सरार्धे त्या स्वृत्ता तरार कत्र या से दार्थे । |ळॅगॱऄ॒*ॺ*ॱय़ॱढ़ॆ| ळॅ॔ॺॱगेॅ्ॺॱय़ॱऄ॔ॻॺॱय़ॱॸढ़ॱॸॕढ़ॱढ़॔ॺॱॾॖॆॸॱय़ॺॱह्यॱॸॖॱ क्रियान्वेरामर्से वि.य.सट.स्.ल्रट्स.सी.सेट्स.स.सी हे.क्र्यटासम् वेत्रप्रत्रभूत् वेत्रप्रत्रभूत्रयात्रहे त्रःश्रेष्वयाष्ट्रभूत्रयात्रि |&्वाविस्रशाह्यसम्प्राचित्राचित्र के स्वराद्या है स्वराद्या है स्वराद्या है स्वराद्या है स्वराद्या है स्वराद्य गायार्म्यविदान्यवर्भायदे।पादासार्चे पदे पश्चा नुदे प्वित्रे पद्या नन्ता नन्तेन्यस्यस्यान्त्रः स्रोन्यस्यम्यम् निन्तिन् निन्तिन् वर्क्ष रामर हो दार्ये विर्दे दाया श्री वा राष्ट्र ह्या है वा व्यवस्था श्री श्रू दश मन्त्री वर्नेन्या इससाया मर्सेन्या न्या स्त्रीत्र व्या स्त्रीत्र स्त्रीते हिसा द्येग्र-१८८८ दर्गेर-१८में निर्मेश्व के मुन्न है स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् वयायय। यरवादिराववे न्देयारी ये न्द्रित के विरावस्था वर्षे

ने ख़ःतुवे कें अ:तुवा ते 'हेट' दे 'वहें त' नबट' से 'वा अर:तु 'श्ले 'व' तट' श्चेरा:बेद'रा:शे:६सरायरायद्यायरा:५८:वेंद्र:द्यार्थेद:५:५२:वेंद्र:विकेट क्रेव भी मवर न्यूयाय है। विराध र र ख़िया विस्या र मा या र र वर्षे र या यःहेशन्भेग्राश्चान्धःनःन्दःसत्रुत्रःसदेःध्ययःतःग्वस्यःसःगर्डेःर्नेःधेतः र्दे। । नगे न ने शः श्रें तः परे विषात्र या। सर उगा सर नगा मि तया पर श्रुसा धेवा सव नगारिक नर्या नरा निर्देश से निर्देश हो रासे निर्देश से निर्व से निर्देश से निर्देश से निर्देश से निर्देश से निर्देश से निर्द नावर्यायाओर्प्यरायवायायीव्यायायारा व्याव्यायाया विकास के स्थान्य विकास स्थापन र्शेग्राराणितः है। । ग्राव्याणदायमः द्वीयः प्राप्ति विदेश्यापायस्य ग्राप्त्यः ग्री केंग्राया के प्राप्त के निष्ठ के न यःश्रेष्यशायदेन्ययः भ्रेष्यक्ष्यं विद्यस्य विस्रश्रायः येष्यश्रायः विस्रश्रायः सूना नसूयाया सँना सामा माना माने स्वा माने माने स्वा माने स्वा माने स्वा माने स्वा माने स्वा माने स्वा माने स्व वर्गुर्यान स्थायान सुरात् युनार्थे । दे नयान वर्षायायान देवें द्याया देश'मर'वर्ग्रेय'च'ख'र्सेवार्य'म्'यर्थ'ग्रुट'र्स्चे द'म'ख'र्सेवार्य'मं में ट'स'वें ट यदे कु हिन्धेन प्रमान्य मुन्हें विकाम सुन्य ही । यस क्रेन यय ग्राम

वि'याव्याप्य त्या द्वा श्रम्य त्या प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय क्षेत्र प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय

ने या नहेत त्र मात्र मात्र मान्य माने सामित है या पानि है या

श्चें र प्रतादा प्रत्या विद्या । प्रतादा । प्

र्श्वे रामदी

য়ूर्यत्वित्राचे श्री रावदे र्के श्राच्या प्राप्ति । स्वर्या श्री स्वर्या स्

न्देशयाविष्ययाहेश

युक्षानी क्रीं दाया है वर्षा नक्षीं सामा दिया नक्षीं सामा है द

नन्दर्भे। दरमें। सुर्याभें भें दायस है प्यत्य न से सामा है।

क्षेत्राने साम्यान्य वार्ष्य साम्यान्य साम्यान्य स्वरं के ता प्रत्य साम्यान्य स्वरं के ता प्रत्य साम्यान्य साम वे हे नद्वात्रस्य स्पर्धात्यह्न ग्री भ्रेषार्थ ग्राम्य मुन्य स्वात्य स शः ह्रेनिश्रायवसायदा भ्रीयागुदा धेदायदा सुदा क्षेत्र गुर्वे । भ्रेगा दे ५७८८७८३१८३५७८८७८३१३४४८२३४६३३४८७८५६। । सुर *वे 'क*'डर'षर'क्कुन'रु'से'न्ग्रे'कर'षर'सर्त्र'त्र'से'न्ग्'नर'र्द्रर'र्सेर' नश्रद्यायाः इतः पान्याः हो। वर्षाः वर्षा सहस्राध्य प्रविचा विष्यु । सर्वे के से सर्वे से प्रवादित स्थित स्था के वा कि स थॅं नर नवना है सुन र है नर इट में र नवना ने । र्रे नट सकु है रह खुग्राराश्चार्यायस्य विवामी । भ्रे.दे.पार्श्वेदे.दूर-त्यावर-री । दत्यायः वे श्च वर र् कु न श्च उव र् र स्यय र र र के र न न र वे । के 'त्रश्राम्य सम् कु 'र्ख्य कु 'से 'र्खेर 'त्रर' त्या तु 'त्या तु सायत दारा से दा धरःवह्याःधःने सूरः हुर्दे। १९वः शरः श्रद्धः क्रुशः ग्रीशःयव्दरः वदेः विवयः बिद्यदयः क्रुप्ति निर्माति स्रेट्र स्रेता पुर्मा क्रिया है। यह वा प्राप्ता क्रुप्त क्रिया है। यह वा <u>ॷॱॻऻॶॖॖॖॖड़ॺॱॸॖ॓ऻॖॶॺॱॺ॓ॻऻॺॱय़ॸॱॸॷॖऀॺॺॱढ़ॱऄॗॗॕॖ॔</u>ॸॖॱॺॺॱॸ॓ॱॸॖ॓ॺॖड़ॱॾॗॗॸॺॱय़ॱ

भ्रीः नान्दः हे भः शुः सत्र वृत्तः ना स्त्र न्य स्त्र न्य स्त्र न्य स्त्र न्य स्त्र न्य स्त्र स

नश्चिमायदेःस्यामान्त्रेन्यन्त्रास्य

यश्चित्राच्याः श्रें क्षेत्रः प्रवित्रः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः वित्रः यात्र्यः यात्रः यात्यः यात्रः यात्यः यात्यः यात्रः यात्रः यात्रः यात्यः यात्रः या

<u> ५८.५ेवे.चावेब.स्.वर्.चे८.चक्कि.स्.वर्.चे.चे.चे.चे.चह</u>्य वस्त्राक्ष्य कर् वनशाधितामा अर्रे श्रेन् सान्दा अर्रे श्रेन् मुनान्दान्त अवदान्दा वसम्बार्था सः विषय से दः श्रीः राष्ट्रे प्रदः द्वाः सः स्रीत्राः देशः मासुसः या स्रीत्रायः रान्यसम्बन्धः वित्रम्भः सूर्वः यः वस्ययः उत्। ययः सञ्जनः यत्रः वास्यः वि वर्षेटरेख्द्वेवरेशस्यरवर्षेवरस्यव्युरर्से । देटस्यट्वस्यस्यापृत्वः स्रवःत्रवाः व्यवः स्रवः व्यवासः स्रवाः स्रवः बूरक्षे हिर्देष्ट्रेत्यीः र्क्षेत्रभात्रः वेश्वर्यः प्रद्रावर्यः विद्रावर्यः विद्रावर्यः धरवे 'धुव 'रेट' धॅर'ववर 'ग्रट' हेट' दे 'वहें व 'वश्व व 'धर' अ' व श्वर अ' श्रें विशास्त्राची यथारे यायशायळ दारी यदी दी चात्रा छेता से स्था सा भी हिता देःवहेंद्रान्ञ्चनःद्ध्यायादेशामःद्वयामराद्यामःह्रेदामवेःयातृसाद्द्राधाः ने पा श्रे र वेवा पावश्रम ही प्रमाही रेसामदे पहिन रहें पा इसमाही वसवारायार्चेवारासेट्राग्रीरारासे खूराकुरायरावात्रत्यायवायरारारा येव क्रेंब भवे माल्र वे ने लेव ए क्रु अ की | ने र प्यर माल्र माठेग ए क्रु अ धरःचन्द्राःचाबुदःचाब्दःद्रःक्क्ष्यःधरःश्चेःवळदःधश्वःबेःचादशःददःख्रूवाः अर्बेट निहेश दे निह्न य द्वारा निर्मात स्वारा निर्मा त्या हत है से ही साम स्वारा निर्मा <u> नर्गे अःसरःगशुरअःसअः१६दःअःभिदःर्हे कुःसःधिदःदे । हेःनद्धदःग्रुसअः</u> मश्राम्याम् स्रेते कुत्राप्ताप्ता स्वर्थे स्वर्था म्या ५८:श्रॅट्रनदे:वर्, न्ते द्वान्य श्रद्याया दे द्वाया भे श्रे या शुः वर्षाया

रदे कु ग्राम् की अविश्वास्त्र स्था की शामा है र है र है वह स्वास्त्र स्था मःसरःनुःसहन्ते। व्युःसुन्दःविवाःयेःन्दःधेःवोःस्वासःयःन्द्रीवासःसदेः न्भेग्रासाभी प्रज्ञाना सामित्रासा हिना है। प्रति विश्व स्था स्था से । क्रम्भिन, प्रमिन्ता विरासम, र्. प्रेरामे प्रमिन, क्रिमान, विरास क्रिमान, नवे क्रिन्स्यमान्दाने क्रयमाहे सूर्यमेयानवे सुवाक्यमाने सर्दे सेवे *ऄॖऀॻऻॺॱ*क़ॺॺॱऄऀढ़ॱॸॖॖॱक़ॖॗॺॱय़ॸॱॺॗॸॱॸॆ॔ॱऻढ़ॕढ़ॱॻॸॱॻऻढ़ॖॸॱक़॓ॱय़ॱक़ॺॺॱॻॖऀॱ *য়्रेट*ॱढ़ऺॴढ़ॺॴॶॱय़॓ढ़ॱऄॴॳढ़ऀढ़ॱऄॕढ़ऀॱऄॣॾॱॴख़ॗॾॱॿॗॾॱॻॴॾॾॱॻॏॱऄॗॕॱ क्कें वर्षी दे अपालु र दे द्वा या या या या वर्ष दे क्ष्य श्री दे वे कि वा वे द र या उसाधेवाग्री क्षेटारेंदि देवाक्षेवायदे यादस्यात्वरात्या तुरात् खेटायरा तत्र वयाने निया वया निया प्रति किता है ता निया निया प्रति स्था पाया क्रिया शु येव मदे के व हे सूर धेव शुं ने केंब सपर है है नर सूर हैं॥

वर्दे खामहेश

इट्ट्रिंग् इट्ट्रिंग्स्ट्रिंग्रुव्येन्यस्त्रित्र्यः व्याप्याम्युस्य

र्ट्स्या अस्यान्त्रियायायायार्हिन्यदेश्चित्रः हिन्द्रम् ज्ञानः दी

हिर्टे वहें देश ने के स्वार्थ के

यःविवःश्वरयानश्चेत्रपदे कुंदिरदे वहेवायान हेवायाया कुवायवार् क्रिंग तुरुषा पार्नी राज्ये । दे प्रमेन पार्य के दारे परित पार्मे तार्य पारे के पार्थ प्रमानिक प्रमानि वर्वायात्रमार्थे कुवाथ्वायात्रमें अर्थे। । देवे कुरावे हिरारे वर्षे वर्षे । हर्मा स्थान दे वहें व क्री खें व न्व से समाम दे प्राप्त प्राप्त प्राप्त क्री साम होते। *पिर्दे 'द्रपा'मी 'में 'देश' है 'हसर्य सु*रक्ष हुर स्वरूप द्रश्य के संवेद 'हु 'प्रारुप' नर-देश'यश'ग्वर्'द्यायर'न बुट-क्षेत्र द्युश'सबद'यश्रा ग्वर्थ'द्रट-दे याम्बर्यान्त्रा । कुःन्त्रव्यकातुःहेन्द्रःह्य । वेकाम्बर्यार्था । नेःवा ग्रवशक्ते प्रत्व प्राक्षे के प्राचित्र ग्रवशक्षे । ग्रवश्य विकेषा प्रवस्य पर्केष वर्चिश्वाश्ची विर्वेश्वास्त्र के विराधित विष्या त्रिया क्षेत्र क्षेत्र स्वाधित विष्या नदे प्रत्र अ तु ते भी त र हु श्रु र अ भवें। विदे र न श्रे अ भर र तु न वे र हे र रे वहें त्रिं भें विष्ठ त्रिं विष्ठ विष नदे'न'कुरु'परुष'अर्वेद्रिक्ष'ख'नदे'नर'ग्वरुष'प'द्रा' खुरु'सेस्रा विदः तृः श्रुट्यायः हेट्राययाये स्थाप्तायः प्रोययायः यादः पर्देट्राय्योपः र्द्रास्त्राच्या स्टान्नराधेन्यसाधेकाचे विष्यापायापेटानावे नशहेशः श्रूरियर में से प्रतुर विर प्रो न मार हो द सूनशके न प्रा वि ग्रवश्यायहेवावश्यदेवानेशान्दाहायध्यार्थेग्रश्चार्थाक्ष्यात्राह्य नश्चनःतुरुप्तन्द्रा हिन्यम्द्रिने त्यानहेत्रत्र्यादे स्वार्त्राच्या अर्वेद्राची हिंग्याया श्री नया दिन्द्राचेद्र नदे हाना श्रुम्द्राची हेन् त्याया श्रीवाया शे .लूब्र न्वर्गार न्यस्यस्य निर्देश निर्देश

নান্ত্ৰ সামান্য নান্ত্ৰ মা

शेस्रशन्दिनायदेनाविन्द्रीन्यायाः मेर्या

पंतः वा बेवा श्रायक्ष्यः प्रदेश वा बेवा श्रायक्ष्यः प्रतः वा क्ष्यः प्रयः वा बेवा श्रायक्ष्यः वा विद्या व्या विद्या विद्या

नर्दा । दे.क.रश्चायाचेर.कु.सू.ययाच्या.म.चु.याच्यायाच्येयाक्ष्या हे। ८८:र्रे हे ख़ूना अर्बेट मी ८ से नाम संस्थान महिमाय है वि मान्या ही । न्रीम्रायर्थे । म्राच्यायायह्रम्भे म्रायः म्रीम्रायः म्रीम्रीम्रायः म्रीम्रायः म्रीम्रायः म्रीम्रीम्रायः म्रीम्रीम्रायः म्रीम्रीम् म्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम्रीम् म्रीम् सळ्व.स.ट्रे.ट्रेस्स्सेव.सर.ट्रेयु.स्स.स.धू.त.सूट.चर्च ।ट्रे.क.ट्रियास <u> ५८:नडसःमदेःगञ्जनसःमङ्ग्रहे । । । । ५२:५:सम्बर्धमसःमधःमधः५३५:५३५:५२:</u> शेसरावर्देग्।यवे के न्धेन् छेन् छेन् ग्रेन्स्य सेन्यरास्य स्थान्य सेन्यरा नक्र्वरणेवरश्रुम्भावा श्रुप्तरम्बर्श्वेष्ट्रियोग्यरम्भाव्यरम्बर <u> नुभेग्रथायाथात्रात्र्वास्त्रस्य स्थायम् श्रुत्यत्रित्रभेग्रथायाद्रेश्यः</u> या त्राया रायक्ष्व त्रया स्याया ध्येव हिं। । प्रयाया शासिया शीसी विषया शिष्या शि मनिन्दिरासिकामवाधिवाने। वदी समानु वदी विकासिका विकासिका र्ने विरापिते हे स्रेन्पिते प्रदेश में दि समय प्राप्त विरोधित स्रमान्य रागीः ग्वित र् से ग्विस से विसाय दे है । सूर्य दे र दे सारे दि समय ग्विस से वि |दे.यःहे.श्रेदःमःवे.स्ट्रॉ.कंरःवर्शःचेशःवश्वशःवरःदरः। विश्वशःवर्षः नमुन्दरभ्रें अकेन्न इंगिरेश शुं केंश वस्र अं उन्दर् नि नियानुदेर्द्रसार्वे म्रस्य राउद्ग्राम् ने स्वरक्ष्य न् मित्र १६१५१नवि न्येम्यायाने न्यामी धरान्याया केनान्य ने नविवक्तेन स्याया स्यामुनःसदेःदेवःद्वी । प्रम्यः सुदेःङ्कीं द्ययः मत्वाः सदे द्वीयः सः धेर्यः सुः

शुन्यः इयः परः श्रुन्यः वे। वर्षेन् क्वायः श्रीवायः व्यक्षः केरः श्रुन्यः इयायरार्श्वे दानवे प्रोग्यायार्थे। ये सूनायप्त गुर्यायप्त होया न्दावस्थाशी रनान्ती न्दान्त्रवासाय हुदा हुन हे खेरी । दे त्यासी हुवा पा यन्भेग्राम्यते। अन्तर्भुयार्भेग्राम्यत्रे तुग्वित्रत्यो भेष्याप्य न्त्रा इयायम् क्रियायायार्थे वार्याया दे द्वी में या द्वी क्रिया प्राप्त के क्रिया प्राप्त के क्रिया विद्या विद्या के सूगामितः इसामित्रां वास्त्राम् वास्त्राम वास्त ८८. यर. थ. योश्री श.क. ८ श्री योश्राच्या अध्याः सर्थः यव्याः सर्वः सर्वः यदेः श्चित्रासदे त्रम्यास दे विस्यास है। विस्यासदे तहे द सूर्या दे दे से द्रम शेशश्चार्यश्चित्रायाय दिन्द्रायाय हु अश्चार्याय देशे वाश्चार विश ध्ययः इटः ध्ययः उत्राविका गाःयः त्रुस्र स्य स्य स्य स्य हितः यत्रेयः यन्भेग्रासनी रुषाम्बुसन्यद्वरानदेन्द्रेयाची केंबार्या यान्तिन्यायदे यया होत् या से त्राव्यया तु द्वया सु हीता न से सेत् यदेन्द्रियाने स्ट्रिम्द्रियामाने सेस्यायह्रियाम्य्री । विस्था ग्रीम्याद्रीया न्ध्रेग्रथं संदे। अन्तरकुन्तर्थे न्दरकुन्तर्थे न्दरकुर न्दरक्षा अपियन्दर क्रा भेषा थीः प्रस्थानु ना नी क इस्र शर्सि से रही हो हो द सम्भाषा निर्मा स्वाप्त स्था से स्था

यहें व्याप्ति । प्रत्याश्चार ह्याया प्रत्या व्याप्ति । प्रत्या व्यापति । प्रत्यापति । प्रत्य

सिम्बास्तुःर्म्भग्रास्तराखाः हो। स्राम्बास्याप्रस्तुः स्रो सिम् न्रम्हेत्रविष्यन्रम्यात्र्यम्यात्र्यस्य व्याधित्रम्यः यात्र्यस्य । नेर्ष्यस्य र्रे दे न बुन्य र में स्ट्रिं र्रे न र स्था के त्या है त्या स्व स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स अमिर्मिश्रास्त्रीयन्त्रान्त्राची वी नास्त्रेन्य स्त्रे स्तर्भे स्तर्भे । भ्रेगा तः श्रेग्र श्राम्य प्राप्त वर्षे म्य क्षेत्र प्राप्त वर्षे । वर्षे प्राप्त वर्षे । वर्षे । वर्षे । ने द्रमभग्नरम् भी भार्मेद्रायमाय वृत्तायि कुते कुते भी भारामें। । भी सकेन्द्रिः सेना त्यः सेन् सामित्रः सकेन्द्रः महिसाधितः या ने त्यः सामसः यक्षेत्रदर्गाः क्रें सकेद्रज्ञां के क्रियं के अर्ज्जां में स्वर्गा से दि के क्रियं दि है भ्रे अके ८ द्वा दे दशेवा शर्य दे भ्रे द ८ द्वा वा श्रा श्रा व्या दि पी ८ दे दे स वया मदि क्रेंत र्रं ने या मदि। हित प्रतिया ते प्यत प्यया य दुः यहिया पीत त्या है। यास्राप्तराप्तरे ने न्वायासे ह्वाप्तर्म्य न्यास्य स्वाप्तर्म्य स्वाप्तर्म्य स्वाप्तर्म्य स्वाप्तर्म्य स्वाप्तर नेशमर्वे । गावशप्रपावशस्य धेवप्य वे प्राचे प्राचे प्राच्या स्या श्रीव धेप्प प्र ग्रवसःसेवःयःसँग्रयःधेवःयःदेःयःस्रावसःयःवेःदेःसूरःवेसःयर्दे। । यदेःवेः हेत्रप्रदेशपायास्रामसामये हे ज्ञापित हे हिन्यम हे प्रदेशसी प्रदानये हु इस्रक्षक्षेत्रायर हो र दे । विदे र वा वि वावका ही र से वाका यर हो र संदे हैं। र्हेन सेंह्याना इसानर श्रुं हान है। हेन सेंह्या ग्री या नेंन हस्य श्रेंहा धर हो ८ मा ४ अ ५ ८ अ भें त्र इत् द अ श्वें ८ मा श्वे । ५८ से दे १ दे वे वा अ भ वे। वर्नेन्पवेरमञ्जानमञ्जापम्योन्पवेरम्नेगमकेन्गीः वर्मेन्यवेरमञ्जानमञ्जा रवारायान्द्राचे दासदे विषय धेराया विषय स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र विषय यःचिवेदेः से :ह्याः यः यः स्यास्यः य स्वः तुयाः में । यदे :द्याः ग्रदः वे यात्रसः ग्रीः न्रेग्रम्भार्यस्त्रेन्यवे के ते से न्रेन्यस्ध्याने न्यामी इसायान्य यग्।नडुःग्रिअःर्भे म्रस्रस् उद्दे निष्ठे दे त्याग्रिक्यः न द्दान्य प्राप्त ननःमर्दे वेशः वस्रशः उदः नस्राने दे त्यः सेस्रशः वहें नाः मः दरः हे उसः मुकाळेकाइसकानस्कामरावयुम्यविस्टिस्टिक्षिण्यावाद्येवाकामान्ट सर्वट-च-८८: व्यान्ये अट्याक्त्या क्या भी भी व्याच्या या स्राया स्था सर्वे |स्राम्भाष्यायायहेवाःक्ष्यादे। यन्त्रानुषात्रस्य स्राम्भावन्य ख्यायानेयायर ग्रुयाया देवयादे द्वापी वर दुः देया ग्रीयाय स्था नेव मन्दरने त्यन्त्रीयायात्रयायो स्थानित स वेषियात्रःश्रास्त्रास्त्रःभियास्यःभ्रास्त्रःश्रीः वास्त्रःश्रूतः सायावेष्ययास्य ग्रीय वदरःध्ययःगवदःयः भे दर्भे नरः दक्षेग्रयः यः श्रे स्र श्रम् र पदे हिरः हे

यहें त्र श्रे में | यदी 'ते 'कें श्रायदें त्र प्रदेश स्वर्ग प्रता हो | दे 'प्रवित 'तु श्रे श' व्यय श' व्यय श्रे श' व्यय श' व्यय श' व्यय श्रे श' व्यय श' व्य

र्शेनाराष्ट्रनामराञ्चून्या इसराश्ची कनारार्शेनाराष्ट्रिना सुरिन्दे । या नहेत वशकेरारे वहीं वार्षे वारामा सुरवशान् से वारा पानु रायमा उदा धीवा वा यप्रशासदी:न्येवाय:मस्यय:वे:क्रिय:ने:न्वा:यय:यानेन्वाय:सदी:वारः য়য়৽য়৾৽য়ৼয়৽ড়য়৾য়৽য়য়৽য়ৼয়ৢ৸য়ৼ৻ৼয়ৣ৽য়ৼৼৼৣ৾৽য়ৼৼৼৄ৾য়৽ <u> शुःसञ्जदःस्याविः पादयाग्रीः द्येपायायाये विद्युत्व स्वित्याः विद्यु क्रिंद्येर्यः </u> र्श्वेट्र निर्देश्य के प्राया स्थाय है। हिंद्र सेंट्र अर्थे देश महेद्र सेंट्र दर्शे निया हैद्र के'न'धेद'र्दे। । विन'रादे'न्रीम्य'रादे। न्रीम्य'रास्थाय'रे'न्मा'ययः ब्रम्य सेन में । नेवे सेमन्त्री समाह्य प्रमाय क्रम्य स्वापित विष्यावर्ष ग्री-न्द्रीग्रायायायहेत्वरात्राहिताते वित्तात्रीयायायायाया ग्राता <u> न्याने खप्तर्भेट सुर्शेयायाया नुश्चेयाया हेत् सुर्श्व यश्वेट दे प्रदेश पश्चिया</u> मंत्रे हिर्दे व्हें व्र क्रे प्रशेष्ठा या प्रति ह्रया प्रस्ति वृषा प्राप्ते के या प्री व्याप्त प्रस ग्रथार्थे। । विकेग । द्रियायारिया प्रदार्था ग्रुया स्थाने । वार्षे स्थान सुरा वःसळवःपद्देवःतःपर्मे स्रूसःवसःते स्रुःत्वे दिन्दे न्योग्रस्यः धुवःवःसे गिर्हेतः धरःहेवः सेनःनुः वर्हेषाः धः छेनः स्ट्रेनः छेनः वर्द्धेसः धरः वर्नेनः धः वे स्ट्रेनः छेनः नर्झें अ:र्खुः या पृत्र अ में निर्दे ह्र अ त्यु र धेत है। वर्दे सूर देवे रहे भे अ य

बेन्द्रिं केन्द्रिं केन्द्रिं सामित केन्द्रिं वर्षे हे विवालेशस्य लेशस्य स्ट्रिंवा संदे लेश ग्रु स्ट्रेंट द्वें शर्शे । नियानुः वित्र ने दे दे दे दे दे दे दे दे वाया या धेन हे। धुया दर दसे वाया यन्दरंभेशः शुः इस्रशः देवः ग्रेशः यो देशः श्रेनः वे । देशः स्निनः देशः विदेशः व <u>षदः सळदः वहें दर्र वहें दर्र दर्गे सम्मास्य स्वामाने दे दे रेगा सम्मासे दर्शे ।</u> ग्वितः धरः क्रेंदः यः क्रेंद्रः ग्रीः क्षें स्वाद्यः स्वीं स्वीं स्वीं क्षेत्रः ख्रुग्वा रुष्टें ग्रायः यदेः सु ठेर'यर'से हिंग'र'र्राहेग'रवे क्वेंत्र स्वाप्त हो सुरायर देंग' वशः भ्रेंव वे । प्रेमिश्य ध्यया से प्रायम प्रमें पायम प्रमें प्रायम प्रमा सम गी'सेसस'वर्रे'हे'तस'ग्रार'ध्ययान्यवर'से'वर्झे'न'रे'सूर'न बुर'रे स्रूस' रार्श्वेत्र-त्रान्द्र-त्र्यार्थे स्थापद्दित्र-द्र्यो साम्या द्रीयायायाः से स्थाप्तः विगायः न्रेग्रायः दयः इयः यानः नुतरः ये तर्धे नरः वहे दः यः नेयः यरः नुः दर्वी अः संभा दक्षे वा अः सं अदः सं सः स्दे दः सः स्टः वी : श्री हैं हः सः स्टः स्वायः सः धेवर्दे। १२ अवरहेटरे प्रदेवरम् मून प्रदेशम्बर के न इसस्य वस्य देशम्बर मःसरः त्रन्तराया देः त्वाः वीः देवीं सःसवरः सूरः चन्तरः सः सूरः धेवः सस्रा सेसरावहैं गायवे दसेग्रायाहेरायास्यायरास्य होते । क्षेत्रायस्य विः वात्ररा क्षेत्र विवादा त्या हो राज्य क्षेत्र व्यवस्थित । व्यवस्थित व्यवस्थित । व्यवस्थित व्यवस्थित । न्रीम्यायायात्रम्याचिमान्या वियाम्यायायात्रम्यास्य न्रीम्यायायाः ञ्जामानियारेयाम्बरार् से प्रमेषियानेयामे स्वियामिया विवास स्वियामिया स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास

यार पर्या कर पा शुः यर क्षेत्र पा क्षेत्र ते ॥

यार:बया:यार:यो अ:यार:य:रक्षेयाअ:धर:बु:च:वश्रुव:ध:वे। वर्देर: ळग्रान्य न्या के पात्र या इया है गा न्या के प्रति प्रतः शी ग्राप्त वर्षा भी वर्ष हो। वयः गुरु । लुरु । स्ट । वर्चेर्यास्यावर्चेरःश्चेर्यायने वर्देर्क्ष्यायाश्चर्यायास्यावित्रं विवाधिवावावे न्ध्रेग्रथायाः भ्रम्यायायाः श्रेय्या रित्यम् मित्र वित्यम् भ्रम्य विगाधित त ते ज्ञस्य पायर्थे । या हे स्या श्रुप पा विगाधित त ते मे त परी क्षेत्रः भ्री मेहत्र केर प्रदोष प्रम्य विष्य प्रम्य विषय प्रम्य विषय प्रम्य विषय प्रम्य विषय प्रम्य विषय प्रम् विस्रश्राभी रता हुन् ही नाया से स्राप्ति निर्मा होना है। विस्पन्न इस्रायर हैंगाय शुन्यार्थे करने ना धेवाव के नत्या साह ना सान हा ना सा वर्द्धरायाद्वरायायायेययाहे वरामहिंदायरा हेदादे। देख्यायादे हेयाया सम्रुद्ध-प्रदे: प्रदेश वार्या या या या या या या विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः गश्रम्थःभिना १८ वाययायाना ने वायानानानान वर्षेत्रक वायान्त बे श्रूर प्रामित सुना प्रामित के वा प्रामित स्था प्रामित स्था प्रामित स्था प्रामित स्था प्रामित स्था प्रामित स वै। रे विगान्दर्भे किं वर शुन्य इस पर श्रिंद्र प्रेम् स्थाप स्थ्रित्य इयायर श्रुट वर ग्रुशे देवे देवा हु से समावस्था महिष्या स्थापन बिटारे प्रवाकी प्रश्रेवायायारे प्यटार्थे सेंग्रें राटेयाया वित्र रावश्रुरावयात्र ने न्या यो अ के यार्ने क से साम न्या साम स्थाप अ साम स्थाप । विश वाशुरुरुप्रस्थ देय पर्रम् इसेवाय पर्मे प्रवाप्य वर्षेत्र पर्रस्त्रेत्। विस्थ स्थ

धरःश्रुत्रधःत्रःहेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रायः कुरः विदेशारः वर्षाः धित्रः त्रः वे श्रूरः वर्षिः <u> न्रोग्रथः प्रेन्यायश्यापः याद्यायः वर्ष्यः स्वयुर्धः विवायः श्रेश्रशः वर्षः ।</u> नशकेंगामी |देशपाउन्धीप्नीशने। वन्शायश कार्यवसास्युत रानेशके शेस्राम्बर्यायके के के उसामी मिना पान वादान रावमूरान ने या निक्त सम्बाधी हुन्य इसामम हुन्य दे हिम्दी साधित दे। वि सहसामराश्चरायाचे स्थानाया विवादा है वार्षे वार्षे स्थाना कुरानवरा ने प्रविवादा रेगामर होरी विशामशुर्शार्शी हिला कम्राश्रीमश्राष्ट्र भ्राके नही श्चे प्रश्रास्त्र क्रवास स्वास स चित्रारात्राक्ष्यात्राञ्जात्रास्त्रेत्रास्त्रात्राक्ष्यात्राञ्जात्राञ्चात्राञ्चात्राञ्चात्रात्रा ळण्यार्थेण्यागुत्रात्रायक्षेत्राचेष्यायरायात्राय्यात्रायात्रायात्रायात्राया *ગુદ્ર-દ્રે-દ્રવા-ભઃકેશ-દ્રશ્રેવાશ-*શુઃસ-વકૃશ-શુદ્ર-સા-દ્યુદ્ર-વશ-દ્રે-દ્રવા-વી-ધ્યુવ્ય-यःकवारार्श्रवाराष्ट्रराकेत्रार्भे प्राचित्राच्यार्थे वाराष्ट्र भेरत्तुरन्यसाधिवरमेरी किंवरसेरसासास्त्ररमात्री भ्रेरमानविवर्त्स्समास र्शेवार्यागुर्दानुष्ट्रान्यसेरायार्थायायात्र्यान्त्रीयार्थान्यस्थानः য়৾ঀৗ৵৻ঀয়৻য়য়৻ড়য়৾য়৻য়য়য়য়য়ৣ৽৻য়ড়ড়ৼয়৻ৼ৻ৼয়ৼ৻য়৻ৼয়৻ৼয়য়৻য়৻ ळग्राश्चिम्यानुयानमाञ्ची याध्ययान्त्रीमानमानुदार्थाञ्ची नर्दे। १८१८८८ वर्ष अर्थे वर्ष अर्थे निकाले निकाली स्थान क्रिया क्राय के स्थान क्राय के स्थान क्राय के स्थान क्राय के स शुन्द्रभावे क्रिक्ट सुव केट से अधीव मन्द्र। वेव से द्राप्त सुद्र न या वे शुरानाशुरानराश्चेश्वरामान्याम् वाराम्मावश्वराम्।

स्राप्तरास्त्रे प्रसेषारास्य यादा चर्चा यादा यो साम हिन्दा स्वरा वस गुर्भावुर्भामायम्। वसाग्रा गयाने द्वी स्त्रित्त्र स्वादर्वे साम्यादर्वे सा र्श्वेर्प्याने प्रत्रे होर्प्यस्य उर्प्यो स्ट मी सक्त हेर्प्य गुत्र हुर्से रस यदस्य निर्माद्र सेस्र राज्य प्रमान्य स्थित । प्रमान्य स्थान । वनानी न्देशसे लाग्व हुर्से ह्या या विना धेव व वे सुद्रे से ला या व्याप्य यासेससाहे न्यानित्या होता । कुल्यागुन हार्से स्यापा विवाधिन न वे प्रमाय वाष्ट्र । क्रिवाय गुवात हिंद्य पा विवाधिव व वे हुं। यःग्वः हुः क्रें न्यः यः विषाः धेवः व वे हेवः वे नः व होयः यम् यहानः यायायाः मन्द्रा वावसन्द्राचावसायाधीवायायासीयसाहे वरावाहिदायराह्येदा र्ने विरामश्रम्भः निर्मायायने वृत्ते । विराम्यायने वृत्ते निर्मे यः क्वेंग्रायम् होन्दी । हिंद्रास्ट्रियायाम् स्रायमः क्वेंन्यवे न्ह्रीयायायायामः वयायार यो अर्थे अर्थाया हें दिन्दा अर्दे दिन्दे हो दिन्दा वर्दे दिन स्थि। वर्दे दिन स्थि। वर्षे दिन स्थि। ग्री पर्दे द : कवा य : दर प्रवाय : वर्दे द : य : विवा : धेव : वर्दे द : य दे द : य द य य : ग्री:रवार्याय:रेंद्र:दर:वाञ्चवार्य:इसर्य:ग्री:वि:य:हेद:यर्दे। |वाञ्चवार्य:इसर्य: यशरदेर्न,क्रम्थर्टरत्य्ययाचरत्रेर्न,याविमाधिवावावे माञ्चम्थर ग्री:रवार्याय:हिन्:न्रा बुवाय:येन्:य:क्र्यय:ग्री:बि:व:हेन्:य:येयय:हे:वरः गर्हेर्-धर-बेर-दें। ।व्हेग्-ळॅग्रथ-घर्य्य-४-४-४ यथ-श्रु-चर-व्हेर्-

डेट इस मर में या नर पर्टेट मा निया पीता तर ते नित मा सूया नस्या नर नदेव'रा'गुव'द्युट'द्रा'नदेव'रा'दर्गेषा'रा'द्रा'नदेव'रा'व्यस'यासेसस के'नर'गर्हेर'सर'हेर'र्दे। विश्वामश्रुरशःश्री । दक्षेमश्रास'यरी हस्स्रश्रेतेः ञ्चनाः अर्घरः नी अर् न श्चरः क्षेत्रा श्चेत्रः यात्र रा ती यात्र अर श्चेत्रः वि स्वा क्षेत्रः श्चेत्रः या यिष्ठेशःगदिः नुभेषाश्राः सम्दर्भे विश्वान्यः विष्यान्यः विष्यान्यः विष्यान्यः विष्यान्यः विष्यान्यः विष्यान्यः ग्रम् विक्रियाक्षे विक्षाम् विक्षाम विक्षाम् विक्षाम विक्षाम् विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक्षाम विक् ठेगाने वि'ग्रम्भः गुनः वेदः शिदः सरः उदः दः होदः सदेः द्रभेग्रभः सरः दशूरः नर्भावे मान्या ग्री प्रेमाया प्रदे स्मान्या सु मन्द्रा प्राप्ते स्त्री । प्रये माया प्रदे । क्राम्यर्थान्स्रम्यानी ग्रारायासेस्यान्त्र्रान्ते ग्रावि हिरारे विद्वार्भी न्भेग्राहेत्र्यून्यन्त्रिये प्रीयायाया इस्या शीःया बुग्रायह्र्यः द्या इयायार्क्के यासूरायारे वे से दिया में इसामार का दी। कुता का या स्वाम या स्वाम व नक्रुवादे । प्याना बुग्या नक्रुवा वेया ग्रामा ग्रामे मारे । यह वा ग्री । यह वा या प्राम हैर-दे-वहें बाग्री-श्रें राख्याग्री-ख्यार्यर हैर-दे-वहें बाग्री-बनशार्यर हैर-दे-वहें व भी क्षे न्दर्धिन या भेन प्रवे हेव न्दर्वर न् क्षायर हैं वा प्रवे खुरा न्रस्टरमङ्ग्रावेशःग्रान्यः स्रो नेर्याः देःवेशः ग्रिः न्रस्थाः न्रस्य मदेःगात्रुग्रायम्ब्रुद्रानेदेश्येटःगीः इस्याम्राध्याः धेदः मरः देगाः मरः हुर्दे। विसः याशुरुष:सःसूर:र्रे[[

भ्रम्य अप्तम्य प्रिम्य विषय । विषय ।

वावर्यानञ्जूनाञ्चरात्रा ने वे सूराइट्यानवे स्टे से सूरावाडेवा पुः सारेया है। यदः वया यी खें : व्यया यी श्राद्येया श्रादा श्री श्री खा खु : प्रदार स्था खें द्या स्था । खु दा स्था । र् वि'ग्रव्यायायायाविगारेयायर न्यूत्र वर्षेत्र क्यायाव्याया र्शेनायायाधीतात्रात्री प्रधीनायायायेयाया उत्ताया ग्राप्तीयाते। दे या ग्रायायाया ৾ঀ৽য়ৢৢৢয়য়য়য়ৢৢয়৽য়৾ঀ৽ঢ়ৼ৽ৼ৽ড়ৼয়৾৾য়৽য়য়৸ড়ৢয়ৼ৽ঀ৽য়ৢয়য়৸ঢ়ৼয়৽ श्रे तर्बेरायदे हिराने। शुर्या इस श्रेरियो प्रस्था श्रुर्या ग्राम् ध्रुर्या ग्राम ध्रुर्या ग्राम ध्रुर्या ग्राम ध्रुर्या भ्राम ध्रुर्या भ्राम ध्रुर्या भ्राम ध्रुर्या भ्राम ध्रुर्या भ्राम ध्रुर्या भ्राम ध्रुप्य भ्राम ध्रुर्या भ्राम भ्राम ध्रुर्या भ्राम भ्राम ध्रुर्या भ्राम भ्राम ध्रुर्या भ्राम भ्राम भ्राम ध्रुर्या भ्राम भ् निव हिर्मेर संग्रियाया मियाय स्विपायया से प्रमुच स्वा सुन मः इसः श्रुरिः नी दिसेना सः सर्देरः नसः से त्युनः सः सः हे श्रुरः सदे श्रीरः से । <u> वित्रपर त्रुक्य हैं गाल्य के नय दे तेय पर कुर नर्के य पर वुर्तेय थ</u> श्री । वारः ववा कः अष्ठअः धरः श्रुतः धवअः क्रेंत् से दशः कुरः ववेः वारः ववाः धेतः वविःस्र-निविद्याः स्राप्ति विष्या राष्ट्र स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर गरःर्श्वेरनःयःन्धेगशःहेतः हुर्दे।

म्बद्धान्त्र स्त्र म्ह्र म्ह्र स्त्र स्त्

यायवर्ग्वाश्वराश्चे । विश्वराध्यः विवानित्रन्ते । विश्वराध्यः विवानित्रवान्तः विवासः व

यद्यान्त्रम्यान्त्त्रम्यान्त्यम्यान्त्यम्यान्त्यम्यान्त्यम्यान्त्यम्यान्त्यम्यान्त्यम्यम्यत्यम्यम्यत्यम्यम्यत्यम्यम्यत्

यास्त्रियः प्रति विषयः प्रस्य क्षियः प्रत्यः व्याप्यस्य विष्ट्रस्यः प्रत्यः विष्ट्रस्य प्रत्यः विष्ट्रस्य विष्य विष्ट्रस्य विष्ट्रस्य विष्ट्रस्य विष्ट्रस्य विष्ट्रस्य विष्ट्रस

दे·नवित्रःग्रनेग्रयःभवेःश्चःहेःवर्ःनःविगःवःन्भेग्रयःभवेः हेन हो न हें सामित्र का सामित्र के ने त्या हता पर्हें मान के निष्य है ता समित्र के निष्य है ने त्या है ता समित्र के निष्य है निष् ग्राञ्ज्याराने प्यराग्रोरानर्षे अदे अर्देगान्वित त्रारोराया अळत प्राप्त से ग्रीसासीसासा उत्तामी दिवासा निवास मुन्दा प्राप्त निवासित । त्रयायर्देन्यावश्चेत्रक्षेत्रकेटा ही टाया द्वार्या स्वार्थे वा स्वार्थे वा स्वार्थे वा स्वार्थे वा स्वार्थे वा यने श्रेन्न् न्यस्यान्त्र हुर्वे विस्नास्र स्थितः हिन्ने वहेत्र स्थ र्रे प्यश्राग्राम् नार्थम् श्रीमार्म् नार्थम् स्वर्थम् स्वर्थाः श्रीमा विद्याः हेन स्वर्गन र्रे ग्राव हु अहे अ स स्रे । दिसेवा अ स दे त्य वाद वी से स्था पहुंचा या । इह क्र्नः सेस्रसः न्रायः ने स्रह्मः न्राविना हेसः ह्या विसः न्रासः सः सः न्रायः न्द्रीयाश्वरप्रदे हेत् हुद्री । ने प्यरायाश्वर नु ह्विश्वर हुद्री राज्य हुन्। मुर्भायवियोग्नामाना वार्त्रेयमाना है भाषा है स्वाप्ती से स्वाप्ती से स्वाप्ती से स्वाप्ती से स्वाप्ती से स्वाप

त्रुन्ते त्वेत्। वेनान् व्रुन्येन्य व्यान् व्युन्ति। त्रुन्य त्वेत् त्वेत् त्वेत् व्यान् व्यान्ति त्वेत् त्यान्य त्याच्य त्याच्य त्याच त्याच्य त्याच

न्भेग्राक्तेत्रः धरः त्रेशः भुः न्दः खुग्राश्वः अः श्रेंग्रशः श्रेः चुः नरः सरसः क्रुसः द्रिसः ग्रीः इसः सः उदः ५ , पळ रः नः सः नक्ष्मः वि । पिः देगः क्रिंच-दर्भवायोः भेषाक्षेषाचगानामा वे भेव-तुः येगाषाने। नेदादे वहेव-द्वाद र्रिदेश्वेर्रायायाये न्यूना के त्ये प्रिंश्वेर्रायाया न्यूनाया के दार्या हिना दे विद्वारी दिया ही दिया माना की प्राप्त की की कारा के दिया ही सुवा प्राप्त की रग्रायायात्रीग्रायात्रयाते त्यानह्रत्यात् स्त्रीयायात्रीयायात्रीया धरः ध्रिनाश्चावव वश्वश्चाश्चरशः भेटा ध्रिटः चः ययदः स्वाश्चाः भेवः हुः वकरः श्चान्यः श्चादेः रवायः रेयावयः रयेवायः हेतः ग्चः रवेवियः वा वितः प्रसः

ने नश्च ने निर्देश वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर रेशाम्बुरायार्श्रम्थायार्भ्यम् विष्यं स्त्रित्ते । स्त्रित्ता स्त्रित्ते । स्त्रिते । स्त्रित्ते । स्त्रिते । स्त्रित्ते । स्त्रिते । स्ति । स्त्रिते । स्ति । स्त्रिते । स्त र्रे तर्भु नर्भा न्युर्यार्थे । विद्यन्य राप्तर्भे राम्य न्यार्थिया गश्रम्याने। न्रीम्यायाचिमायानह्याद्धयान्। यिन्गीःनययायानह्या सर्ज्य । दक्षेत्राश्रास्य सर्भे नक्कूर्य स्था । धिर्दे केंत्र सेंद्र स्थायहात्रा सर वर्गमा विशानस्यामिष्यम् न्यूनासंदे स्मनसः सुमास्यासा व्यासून यशःग्रहा दक्षेत्रासःमहास्त्रहान्यादेवाःदवाःया । प्येदःद्वेःदवोःयःवाववाः धरः ह्या विशानिकार्यात्यात्रेशमाशुरश्रायदे देशमञ्जरमी क्षेत्रामीशः म्बर्धर्यः स्त्री । देयः दर्रः दर्धः द्रयम्यः याच्यः याच्यः याद्यः विष्मद्रयः विष्मद्रयः क्रेन्द्रमाष्ट्रिमाद्रेश्वायम्परान्ध्रेष्यमायायीत्रात्रे। क्केंब्रान्द्रमायमा यार यो र के र ले द र या त्र या अप अप स्था हो द र यो दे ते र के स्थार में र द र प्रायम अप या र्शेनार्थान्ये हो हो ने क्षेत्र स्थान्य र्'न्विरश्रासंदेशस्य त्वोषानाया श्रेष्यशायश्याय स्वाय हैया वर्धे राम

म्ययाग्रीयायायदेन्त्र्यायायद्ग्यायास्ययात्री वियापाश्चर्यात्री।

ने भूर विवासर से समापार या वहें ता पित हो वा मा हेत हे ना पित क्रन्त्री न्तुःन्नः स्रमामिष्ठेशःन्नः भ्रुदेः विमामान्यः न्नश्यादेशः नेयः मःमिवेदः नुःषदः त्यादः बुदः या रुषः या न्यः या नृतः यः नृतिः स्रवः सुतिः श्रुः धीनः यः कैंगानेशन्त्रभात्रभादेशप्रश्रेयशम्बद्धान्त्रीश्रश्री ।देवे कुःयळव्दे पदिः सून। ने रं अ ग्री अ र्केना भे अ ग्रु अ त्र अ अ अ अ अ से प्रहें त पर ने प्य अ ग्राहर म्रायायाः विवापर्देत् द्रयाधराधराम्यया यहान्यः द्रयायायाः दुरा वतः ग्रथः न् पर्वे प्यतः श्रेयशः ग्रवशः कवे नितः ते प्रदेवः श्रे हेन् प्रतः स्वावनः हेनः मदे नेन्या स्थान्य न्येन्या स्थिन्य स्थित्य स्थान्य स् <u>न्रोग्रायाने हेन त्यायेयया त्राया त्राया है । देश</u> दशपार्थयानःयःवेषार्थःवर्हेद्रायर्थायार्थयःकःवरेःत्वृषाः हःवशुवायदेः श्चिरः र्रे । पर्ने हे हें न नर्रे द प्ये प्रेश के ते जान्यश्रामा यश प्रमुद्द हे जाय के नर 製工芸川

न्भेगशःहेत्। तक्रमःख्राशायाः शुःनिविः क्वाः गिहेशः ग्रीः ह्रसः ग्रीविगः स्ट्रम् अद्राप्तः श्रूपः श्रीत्। यादः व्याः गीः तेयाश्रः ग्रीशः ह्रसः पः विक्रमः प्रापः श्रुः न्द्रमः विवाः विक्राः विक्रमः विवाः विक्राः विक्रमः विवाः विवाः विक्राः विक्रमः विवाः विवाः

ब्रु:र्क्टिनारु:प:विनाःब्रुट:नरु:टेश:प:बेट:ट्री | निरुट:ब्रूनारु:ग्री:ख्रुदे:क्र्य: वर्चे र नश्चन प्रते भ्रम्मन र प्रोत्ते त्र स्थित ह्या र ना र या र प्राय र प्राय र प्रमान ៹ঀৗ৾য়৾৻য়য়৻৾ঀয়৻ঀৼ৻ঀৣ৾৾৻য়ৼৼ৻ৢ৾৻য়য়য়৻ঢ়ৢ৾৻য়৻য়য়ৼঢ়ৢ৾৻য়য়য়৻ঢ়ৢ৻ न्वीं राग्री यने रावे 'खेदे 'म्यारा के या तकर नर न्याय व स्राय स्वापित न्द्रीयार्थायात्रात्र्याचेयाःव्याच्याच्यात्र्यात्रेयायाः ह्यायाः विष् मात्रशर्यी हिरारे प्रदेश राज्या विचा युवाया प्रविश्व रियोर्स के प्रविश्व रियोर्स स्वीता युवाया प्रविश्व रियोर्स स्वीता युवाया प्रविश्व रियोर्स स्वीता युवाया प्रविश्व रियोर्स स्वीता युवाया स्वीता स्व र्रे । तर्नरायराञ्चास्रायार्वे वार्यात्रस्य वर्षात्रस्य स्वरायाः वर्षात्रस्य स्वरायाः न बुद दर्गे राजा दे जिद चुद रहेंद ग्री राष्ट्री रे ही जान बुद विद सुदे दे रहे न्यादगदिवा केया गया नर्यू द्वारे वा ने से गया नर र्शेट्य पट्ये प्राच ब्राह्मी । देवे के से राशे न क्षेत्र परे द्वारा प्राच्या स्थान न्यान्त्रः तुरे विर्देगाः अते अत्यान्ता वत्यायाः परे प्रवेष्य वर्देन्यायानवेदसामवेर्न्त्रीनसम्बर्ग्यायान्यात्रात्रेत्र्यायान्या यदियाः नर्झे अः सरः वर्दे दः सः वः यदि अः श्वरः नः वः द्वः नुत्रे : महस्यः अः दे अः सः दहः। के न न क्षेत्र सम स्दे दिन साय की दार्ति कुट न कि मान मान है। मजुरम् देन्यामी हे सासुप्य वार दुः प्रे से स्टाय सामा विकास साम विकास सामा वि यार धेव य दे विंद य प्रदेश या अ हेव श्व देवीं अ श्री। বাইশ্বা

ने या शेस्रश्राहे स्ट्रम्याहें न प्रते खुयाया ग्रास्त्र

क्रिव्सेन्सिरे खुनार्या नवना यान्या क्रिव्यान्य स्ति खुनार्या नमयानद्रा शुन्भी कर्निम्मून मर्दे । द्राम्भेन मर्दे । द्राम्भेन मर्भेन मर्भेन मर्भेन मर्भेन मर्भेन मर्भेन मर्भेन नवे किरारे वहें व वे हिरायर गढ़िया प्रवास विगा प्रवास के विश्वास शेशराजीतः पुरावारायः वार्यायः करे प्रस्प्तरः ध्रुतः यः प्रमा प्रशेवारायः व | नर्ने न न सूत्र त्र माशुस्र नु हो न माल्य न माल्य न माल्य न सूत्र । त्रानित्रचेत्। युराद्रस्यायाचे । वितायस्पराने स्वत्यायस्य वित्राच्या भे दर्गे राया हैं र न से स रादे इस राउद मी द्वाय न दे दे सून रादि र नश्चन'मर'तु'नदे'हेर'रे'वहें ब्रुचे'वर्ष्यातु'व्यंवतुर'णर'। नश्यागहर न्द्रमित्रेन्द्रम्म्याभ्याभ्याम्याम्यामित्रः निद्रम्याम्याभ्या र् से त्र त्र त्र त्र विदा वेवा संवाश्व संवादे स्व त्र त्र त्र स्व त्र त्र से से त्र त्र से से त्र त्र से से त तुःगाशुरशःभवेःनश्रयःगानुदःनवेःभवेःनेरःरेःवद्देवःग्ररःशुशःनरेः<u>न</u>रः श्रेश्रयान्ते,योट्ट्टिलट्स्क्ट्रियाक्षेट्याक्षेत्र,देशात्रीट्ट्याय्यात्र्यात्र र्शे । विश्वास्त्र क्षेत्र प्रमास्य स्वास्त्र वहें तरवाद विवाय से दारा सर्दे से दे कि तरसा वा ब्रवास से दास्र स यदे नमसम्मित्र प्राचिम मिन्न मिन्न विद्या मिन्न राय्याय विया सायार्रे या साय दे । जुर से ससा इससा यससा या हुत : श्री ससा

न्यू र्यायि हिन्दि यह व त्याय हेव व राष्ट्रिव प्रत्य होता व सुव प्रत्य व राष्ट्रिव प्रत्य के व राष्ट्र के

ने भू तुवे नार्या कवे प्रमार्थे तुन्य के हि प्रमानम् तुन्य है गडिग'रावे'से'हेंग'रा'य'वे'र्नेर्'रास्य'नर'र्'गहेंर्'रास्य। हीर'र्नेर्'गहेस' ढ़ऀॸॱ**ॸ॓ॱढ़ॾॖॱढ़ॹॸज़ॱढ़ॻॖॸॱय़ढ़॓ॱक़॓ॴ**ॺॱॻॖऀॱॹऻॾॕॱॸॕॸॱढ़ॕॸॱॸढ़॓ॱक़ॗॖॱॺख़॔ड़ॱ विगाप्तरार्देशः वेदाद्याप्तेशायमें गाप्तरा होतायोः हिताने । यहेदा ही हुँहा स्यायान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् वियान्या भूगायार्वेदाः भूषे विर्मान्यान्या भ्रे निस्त्रे से निस्त्र के निस्ते निस्ति में ति निस्ति में ति निस्ति में ति से निस्ति में निस्ति में ति से निस्ति में निस्ति मे निस्ति में निस्ति में निस्ति में निस्ति में निस्ति में निस्ति मे ने या स्रावसायम् जुर्वे । ने या जैन के नि वि वि वात्र साय प्रावसाय के त धेव विद्या वयाय क्रेव देश वहेव सन्दर्य मा क्षय देश वे वेया हु क्षेव मशायदीरावे वि वात्रशायग्राया मधे सश्चर मे व किरारे पहें व पश्चे प ख्रिया न्हेंन्यम् नुके । यदे या हेटारे यहे बचे। शेसश्य से म्यास्य हे या हेया हुःमाद्रशासदेः क्रःधोद्रायः देःधादः द्रिमाशासः यः क्रुदः युदः दुः क्रूदः पः विमाः न्वें अर्थे। । ने त्या दे र शे अ श इत्य दे न शे या श या न त्या ये द नर्से होत्रसंदे बन्या विवादिया वार्षेत्रस्य वार्षेत्रस्य वार्षेत्रस्य वार्षेत्रस्य वशुरक्षे वशुरहे स्वान विवन्ते या माहिया निवास विवास विवास ८८.याहेश.स.च. नेश.याबेय.लाच.हा सर्ट. हेत. क्या. व्या. यन्दरनेशनविवन्ते हे नरमाहित्यर होत्य हो। यहिना वीश शेस्र न्रीम्बार्याययाय्ये वर्षे न्या होन् निर्देश हो स्पन्त । व्यक्ति स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार् वर्से न रन रि. जेश राष्ट्र ही र रें विश यशिरश श्री विश राष्ट्र श्री न्भेग्रथायाम्द्रित्वाधीत्रथात्रथाने साम्राप्तिन्भेग्रथा स्र्रित्यात्र प्रमुत्र नशन्भेगश्राम्यानहेन्यवे इत्रामः इत्याधित हे॥ ८ यस्त्रेशक्षेत्रकार्यम्बार्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षित्र राः क्षरः दक्षेत्रा या अत्यः त्र त्र त्र या अवतः विताः त्र स्तुरः तः दः देः नेयामयाक्षेत्रामुकाम बुदानदेषदेष्ठा सूद्रया श्वाया उदा विवास से द्राया सेससःग्रीःवयदसःसर्वे नरःग्रुसःहे ग्रासरःत् ग्रादःयः षदःसे दर्धे दःसरः वहेंगामर्दे। विवास के गुवास राम प्रभायका विवास माना के या विवास के न्देशर्से त्या के क्रका श्री निहेन्य केन्य के क्रिया क्रिय ठवर्ते । विश्वाह्यन्त्रम्याशुरुप्तनः ध्वास्याशुरुष्याशे । देःयान्ध्याशः राध्ययाची विदासराते। सूरासादिसारावे ध्यायायाद्वरारा से से निसादिसा यदे-दर्भार्यात्यात्रेशात्रास्त्रात्री भ्रान्यात्रेम्द्री-सूर्यात्रेशास्त्रास्त्री न्धेग्रथान्त्रेत्रश्ची । इस्राययसायहेत् सूर्याश्ची। विन्याय वै। शेस्रश्राभितहेन्द्रासेन्द्रातिश्वानासुत्राने सेस्रश्राभितासानहेन्द्रातिः ळ से। अन्य प्रेन्सेन्से नियाय हेत्या महेत्य विष्य विष्य विष्य याववरश्चेशःदेशःसः ५८: २८:योशः देःयः हैयाःसः व दुयाःसः व ५ शेयाशः हेवः देः वे पर्ने पर्न न प्रेम विषान् सम्मान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व म्री अंअअन्त्रीवायायायायात्रवायायाने मुस्रे देव वया दुर वर्षा स्टार्म स्री

ने भूर से समान्द्री ग्रामाया यह ग्रामा है । यह या वा है । ह्या वा है । वर्षानवे द्रोक्षाम्बर्धाने। द्रोक्षाम् क्रूटार्चे वसामानः विवाहन वहना यःविष्यश्चाःविदःहःश्रःचःत्ःस्याःशेःनश्चदःमदेःस्रःसं चन्ष्यशहेःस्रः हेशहे सूर नक्ष्रवर्य प्रस्ट हो दार येवाया हो हो दार सुवाय सुर्हेर सेया न-१८८८ न-१८६ । अर-इस्र-१०५८ मधि-१६६ मान्य-१८५८ में । अर्थ-१८५८ मान्य-१८५८ मान्य-१८५ मान्य-१८५८ मान्य-१८५८ मान्य-१८५ यदे वया यया वर्षेटा वेटा दे त्या क्षेट्र त्या वर्ष्य वर्षेया वर्येया वर्षेया वर्येया वर्षेया वर्येया व धेर्गी सूर्ये वें वा वर्षे वा विश्ववार्य वे वा वा विश्ववार्य वे वा वा विश्ववार्य वे वा विश्ववार्य वे वा विश्ववार्य वे वग्रामर्थानेयान्वेरयाद्या वियास्य भुग्याया गुर्यास्य स्वाप्त । विया महारमक्रीता क्रिंसर्ससम्मायमाग्रहा इवासन्दर्भेसामविवाग्रीः वनाम्बर्भाधेन् ग्री सुरार्भे के न्द्रीन् वास्य सदि क्रेंन् से ने हिन्य निन्ना वास्य सर चुर्रा विश्वास्य स्त्री सिर र्स् सायस निश्वास सुरायस स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स

नरःगशुरशःय। सुरःष्ठे अश्वापान्दरःदरःनरःगशुरशःभवे से स्वायः हे। शेशश्रान्ध्रेगश्रामात्म् कुत्रः वृत्र्वान्त्रः प्रान्देश्याने द्वाना प्राप्ते या नेशनविद्यापरम्बुन्देशसेसशन्द्रीम्शनायमिन्नेन्देन्धिद है। ग्रीटायादरार्केटायादरियायया ग्रीटार्केटातुरायग्रीयायविवाग्रीया रेगाःमःत्यः नहेत्रः त्रुयः ने 'न्याः गीः न्यरः नुः यो जित्रः न्यः न्ये प्रयोग्यः । व्यत्वेषायवे भ्रिम्प्रा स्माद्रम्याय स्माद्रिम् स्वाप्ति विवापिते विवापिते विवापिते विवापिते विवापिते विवापिते ग्रम्। इसलेशमहिशमान्द्रीम्थम्भः वाहे न्यम्महिन् हो न्यम् यदे भ्रिम्भे । इत्रयाया नहेत्र त्र या है मारे प्रदेश त्युन यम् ग्रीस्य या ८८। २४.स.घर्यास८८.५२.चर.श्रेश्रश्चर्द्रश्चरात्रीय्यास.स.स.क्रिय.हेर र्'यर्गम्'त्रेर्'र्गम्यरम्'नम् हेर्'रे'यहेर्'ग्रे मुन'तेर्'रे विः श्चिरःकुषान्ते :इत्रामिते श्चिरःकुषाधिताय। इत्रामाध्यरः देशामिते स्वामा उत् ग्रीपिट्टेन सूर्याउन पीनायया हिरारे पिट्टेन क्रिंग नाम ने या पीना हो। सूर्यान्यार्थे सेन्यराज्नाने वहें वायायायाये स्थान्य स्थानियायाकः द्रिट्या देशन्त्रेशःशुःदरः व्यवः योशया कः शे व्यवः यशः द्वरः यः व्यवः उत्रञ्जे नरसे वर्षुराय। देवे धेरा हैराना झर्से परसे विवास समाहिरारे वहें तर्श्चेत्र उत्रावित्र व्याप्त देश हैं भी व्याभी व्याभ भे प्रहेग्। प्रमः से समाभे हिंग्। पाउं सः क्रिंट प्रमः ग्रुट से समाध्यापाराया लर. हुर. लर. हु. हूं यो. सर. योचयो. सर. ही हूं। विश्व. सह. योट सश्च. रयो. रथ. वर्षाने वर्षा से सर्वे अराधी वर्षे वर्षा स्थान स

याने प्यतः निश्च व्याया व्याया हो स्वर्धः प्रवर्धः प्रवर

भ्रुविन्दर्भक्षायदे सुम्बारम्बा नर्मय हिते सेमा हेना वदे क्षे.ये.लूर्रे इंर.ययरे.स.केर.चेश्रास.यसरश्चायश्चर्यं वर्षेर्रे. नश्चेष्रश्चर्याक्षे हिंगायर नविगायात् श्चेर नदे श्चेत्र दुर बर् ग्यर से र से र रेग्।यदेःग्राबेर्याग्रद्धा येग्यायायरान्ध्रीयायायरात्रींद्यायाग्रयाययाळः ह्यूर-रॅर-भ्रें नः अर्वेद-दशा वनशने दे नान् अशन्ना के दर्गे धिद दें सूधः र्देशस्त्रेर्त्वमा सूर्त्रास्यायाः सूर्यास्य स्थान्यस्य सर्वे रॅंशः र्र्जेनाः पर्रः सूरः र्रेन्। पर्रः दे हीरः नः स्रेशः पर्नः र्रेसः स्रेशः प्रेशः पानिशः सः होत्रमवे मात्रसाधीव हो। यदे सूर्र हिरारे यहे व र्श्वेव से त वे सूर्र न वित्र स ख़ॣॸॱॿॖॸॱय़ॸॱॻऻढ़ॆॴॸॸॱख़ॖढ़ॱय़ॱॸॖॺॕॴॻऀऻ ऄॴॴऄॱऀॸॕॖॻॱय़ढ़॓ॱॻऻढ़ॴ**क़**ॱ नहर्मानिकार्शकाक्षाक्षाम् । यात्राहेर्ने त्राहेराक्षेत्रकार्हेर्गाहेर्मा र्सेन्-सेन्-प्रवेश्ववेनस्याधिन्व हीन्-वाधिव ग्राम् ने सेन्-प्रम्सेसस्य वे स्वायापान्ट हिटान विवेयाया हे न प्रते वात्रया नु सूट नया प्रते क्याया कुरुष्यरादेवा हु नसूद्रायर हुद्री | देशादा नसूर्वे अरुष्ट्रवारायदे देवा या रा <u>৽ৄব-ৢৢৢৢৢয়৽য়৽ৢয়৽য়৽য়ড়৽ড়ৢঢ়৽য়ৼ৽ৢয়ৢ৽ৢঢ়ৢয়ঢ়৽</u>

वा ने ज्ञार में न्या न सुन्या प्राच नावया कर्षे न ग्राम हो न या के नया ८२.ब्रॅब्र.सद्यःयोश्वतःयःश्चरःट्री विश्वश्चार्याश्चरःद्वितःच्योश्वरःयादः ५: अट: अ: शॅट: नवे: न्य: व्रेंद: र्यंत: यद्धंय श्राम्य: विव: कु: वेव: न्याव: नवे: धेरा हिराकेर्प्तराज्ञयानवेषिरारेष्यहेत्रक्षेप्तगवानायानवेर्ष्रकात्र्या श्चित्रप्रमु के विष्या वर्षेत्रप्राच श्चेत्रप्राचीत्रप्रप्रचेत्रप्रप्रचित्रप्रप्रचेत्रप्रचित्रप्रचित्रप्रचित्रप्रचेत्रप् | ने श्वरकात ते ल्याम श्रे निराय स्त्री । विरोधी मे निराय स्वराय ह्या क्रेट्रन्यायन्त्र । यद्यायीयायेयस्य स्याप्यायायायस्य दे हे विया प्रश्री । विया ग्रह्मार्थाः वर्ष्ट्रवारायक्षेत्रायां विष्यक्षेत्रयां व्याकायां के ते विकास के विष्य सेससम्बाधानम्बाद्यान् वहुवाना हेन्न्यार्थे वेसामदे नेंद्राते । ने सूर यर देवे विषये या अरम मुमाने प्राची प्रमान वर्षे व पर के प्राची प्रमान विषये प्राची प्राची प्राची प्राची प्राची प <u> न्वो नदे सुवास त्य सर्दे न सर हैं नस नहीं सस हे तह वा स त्य हु त्यी</u> वेशन्ता र्केन्यरप्रमूर्यदेष्ठेश्यासस्टित्वश्यर्केन्यने सूर्याने क्रियानानहरानमा सुमान सेससान्दर्ता त्या विसामा सुम्सामा सी । धरान्यवारा नर्से नायरा यन नायरा यह वात में नाय वह ताय है ना १८ में १ व वे १ त्यापा क्षे १ वर १ त्यापा १ वर्ष न्गायः व । यन्याः यो स्थे असः न्यायायः स्था वे १६ वियाः नश्ची । विसः यास्ट्रसः निद्रा देवे वर्षे वर्षे सम्प्रा निव हु त्यन राम्या मुक्षे समा है वह वा हिर

र्मियानाम् ते से सम्माने सिंदा के दाना धोराना प्रमुद्धा । समार्सियाना यमा गुद्धा सम्मानम् सम्माने समार्थी होता या

ने ख्रूमाने के स्वाहित प्रेस ना क्ष्री ना क्र

 नालेशन्त्रस्य स्थाप्य न्या स्थाप्य न्या स्थाप्य स्थाप

ने सूर सूर ने निर्पास्य इत प्रकारोस्य प्रमाय प्राप्त निर्माय । यन्त्रेन्निन्न्द्रन्द्रस्यास्त्रस्यात् वर्ते वे ग्रन्ते स्याप्यापीय हो क्षेत्राने स्याप्तरः रायमा ने सूर्यारायायर्ने रायदे रसे मुमामारी या मे समान विवास मारी हेर्या ध्रीराविव क्रुवर्र सेस्रा वाववायर होर्वे दिया हे वराववा वयासेस्रयायायने सूरान्ध्रन्यर ग्रुप्ते हे । के निस्ने म्यायायायासेस्रयायाया धरावहें बाह्यारें बाहे ही हार सार्वे बाहे ही देवा ही खुवावा इसाधराव स्रा नशः इसः सर्गणेरसः ससः सूसः तुः नहना सर्गन्ति । विसः नशुरसः सदेः धिरःर्रे । वर्रे प्यरंहेरारे वहें वानहरावयारे खुरानक्षान क्षेवाची। हेरारे वहेंत्रायान्य रावितासंदेष्टरात्य स्तानित्र प्रियायाया सूरा विवापा ॡॸॱॻऻढ़ॺॱऄॱॻऻढ़ॺॱॸ॔ॸॱऄॱॻऻढ़ॺॱढ़ॱॸॖऀॸॱक़ॕ॔ॸॱॻऻॸॱॸ॔ॖॱऄ॔ॸॱॸॡॱॸॱ**ॕ**ॺॱ होत्रमञ्जे हिरादे प्रदेशियान्वयान्य अन्तर्भात्र स्वराम्य स्वराम्य स्वराम्य स्वराम्य स्वराम्य स्वराम्य स्वराम्य ५^१७८८:देट:वःषट:अःषेवःवर:वर:वर:वर:वु:र:वुट:वःषेवःवेः । ।विःष्टः स्त्रेश्वर्थः विषयः प्रत्रः स्त्रः स्त्र स्रतः स्वर्थः विषयः प्रत्रः स्त्रः स्त्र स्त्रः स्वरं स्त्रों स्त्रः स्त्र

ने निवेत्र न् निर्मात्र न् निर्माया स्थाय द्वार्य साम्य साम् श्चिर्नायायायर इत्रामा श्वेत्र वा के नान्द्र कुता थ्वान्त्र वा स्वेत् कुरान्वे वा मर्भाइत्रामदेः श्रुरि: खुवाधित्राहे। हत्रामायम्। देःवासेस्रमः श्रेमियाः व क्षेत्राचारावेषा अस्या धरात्राधरात्राहेशासुर्वारात्राकासम्बद्धारा यः न्रीम् रापः न्रः क्रुवः न्रः स्वः यः न्रः विः वः यः त्रः यः न्रः न्यायः वः ५८.क्षेत्र.संदुःश्रेश्वरात्त्रीः क्षेत्र.योटः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त्रीतः त হ্য দ্র্যা নর মৌ মার্ম ক্রি নার বা দে ক্রি নার ক न्राधरान् हे अरशुः इत्राधरा हो ना है अर्था है अर्थान स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स विरःसह्रदःसः<u>न्</u>रःसःन्याःस्रयःयान्स्रयःविरःहेसःसुःनस्र्वःसःर्वेनःसः ग्राम्प्रीत्रामानेवे प्राप्त प्राप्त का स्वर्था सम्प्राप्त विष्या स्वरे स्वर्थ स सासर्वि, र्वे विश्वासार्वे, या क्रियान्य स्वरायं हे सास्य वह्रमाध्यरान्तेन् केराहे वस्याहेन् यस्य नुप्ते । विश्वान्ता नुप्रश्यविः वर्षेयान १५ वर्षा १६ वर वर्षा १६ वर्षा क्षेत्राचि विश्वास्य स्था इत्यान स्रेत्य स्त्री न्येत्र स्था स्था न्येत्र

यानहेरामके प्येरामेशन सम्मान स्थान स्यान स्थान स धेर्या होर्य विष्य । द्रियेर्य स्वेश्य प्रति देव त्याय विषय हिर्य है स्वेश देवा श मन् यरायराधेरायाद्वरायरात्त्र्यात्राचेर्रान्यायात्रात्राद्वी । देशः नर्गेशया शेस्रान्धेम्रान्यशयाव्यत्त्रंभ्यापेट्यरळेर्रेर्रे म्रान् वयानुः माने निमाने निमा वनराधेत्रस्य देःवर्तने वाष्ट्रम् वास्येत्रसूस्र वर्षानग्वात्रह्त यन्दरंभेशनविवार्द्वेत्रश्चित्रश्चित्रः भ्रीति स्वतात्रात्र स्वेत्रः स्वत्रात्र गशुस्रामा मुद्रामी :कंद्रामधूद्रामा दे। दें दाद्रदामसा से समाद्री महामाया नन्ग्रायाने यादि राष्ट्र मान्य द्वार मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य प्राया मान्य मान् न्यासेन् हे व्या विन्यार्वेन् ग्री न कुन्यार्थे स्थित् स्थार्येन् स्थार्थ स्थार्थ हन विष.क्ट.ज.चटश.शट.चर.चि.ट्रेम्श.चाश्रट.ट्र.। ट्रिय.क्चे.शक्ष्य.लट.चि. ठेपात्राने। व्रुत्र कुरारे प्रिये श्रें याद्र राज्ञ या ज्ञायात्र हिराया रेया ग्रारा नर्भेग्रामायार्चेन्या श्रुवासेन्यावा श्रुवासमायगुमानमायर्देन् छेन्। वाववा न्गाने। बुन-रेन्यान हिन र्सेन् ही न्नन् नु त्र्ये क्षान्य हिन रे त्र हेन् के त्र बेर्भुः नगयन्य नर्विर्दे । १९४ साया श्रीम्यायिया वृद्र के ना इससा त्राष्ट्रत्यीः र्क्षन्यायायम् । व्याप्ति । व ने भुःतुवे ने अप्यादि अरकु कें न मिठे मा मा अर्थ था के खु न खे न न अर्थ है याडेवा'यास'हे'श्रेन्'त्र्रा'राने'श्रेन्'तृत्वह्या'सर्ग्यह्ये विरामश्रद्रा

या यने वि नावर्या गुन ने व तर्या भूगा सर्वे द न भू सार्ये न् रा ग्री मुव र द र ग्री:भ्रेन्य:श्राम्बर्य:ब्रेर्य:ब्राम्य:ब्रेन्यव्य:ब्रेन्यव्य:ब्रेन्यव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीन्यःव्य:ब्रीच्यःव्य:ब्रीव्य:ब्रीव्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य:ब्रीव्य:ब्य षरःवर्ःवरः सर्वेद्वः प्रश्ने द्वेद्वा । देःषरः श्रूरः वश्वरः प्रश्नेरः श्रीः इतः यन्दरनेश्वरविद्या भेर्ते द्वाया याद्ये वाया याद्य याद्य स्तर्य स्तर स्त्र हेना'नर'नर'न्, होन'व' बेब. बेर'र्नर'लर'र्श्केष'न्, खे'प्रसुर खेन्। देव'स्टर यशन्दर्भे सम्बर्धके नाया बुद्दर्भेद्रशाद्या धरादानहे न दर्श हु। स्था हु लेट्याव्यात्वे विटा देवे के सेयय विटायव्या में दाराया विटायट धुव रेट रें विवाद यारे विया पड या या उपार विवाय पा सुर रें र रें या से बिव या धरम् इत्रम्भ महेर् यर हेर केर केर केर हैर केर हैर केर हुरः नः इस्रश्रासुर सेर सेरा से भी ने ना है सा से स्थान से । इवःसःक्षेत्रवाध्वाक्षेत्रायायमः द्वाकेष्टायमः वश्चमः । व्रीःसवादे विवा निवर्श्वराष्ट्रवर्श्चे नायानरत्यार्वेत्रस्य हिट्टार्नेत्यार्वेत्रस्य विवर्तः <u> न्यायः वरः वर्षुरः र्रेष्ठा । व्याप्तः प्रमः न्यायः वर्षे न्याये न्याने । व्याप्तः वर्षे न्याये । व्याप्तः व</u> र्केन्'जूर'न'रेंश'से 'बेक्'स'दे।

 न्त्रायः विद्यान्त्रीत्यः त्रात्ते व्याप्त्रायः विद्यायः विद्यायः

न्स्रेग्रास्यायान्न्यते देवा हुः है सुर ग्रुप्यायाने या

त्रास्त्रीत् न्युत्त्वित् न्युत्ते स्थान्य न्युत्ते न्युत्ते स्थान्य स्थान्य

विर्म्याम्म्। वर्षे वर्षे व्याप्यस्य विष्यम् वर्षे व्याप्यम् ।

मुंश्राचि। श्रेस्याम्याम्यानि विटास्याम्यावर्षे नाश्चे पर्दे प्रस्तायाः मुंग्राक्षेत्राधिन स्थाप्यायाः श्रेष्ट्राचि मुस्यायस्य पर्दे प्राप्ते ।

होत्रायमान्त्री सेसमान्स्रीयामान्यायान्यान्यान्यान्यान्त्री। मदे में द्रायम प्राप्त में द्राया है द्राया है सम्बन्ध स्थान है स्थान स्था स्थान स्थ <u> चे</u>नन्। नन्वायानर्हेन्यया हेन्ध्रहेन्ध्रम् वेनावयायान्येवायानेन। । ने निर्देशकी प्राप्त प्राप्त मानि निर्देशको में में निर्देशको में में निर्देशको में निर्देशको में निर्देशको में निर्देशको में निर्देशको में मे मदी । शिकाकाक्षास्रास्त्रः स्वास्यान्यस्य न्वरः स्रोतः इत्या । विस्राम्यस्यः सः ख्नरःर्रे। किंत्र^{के}त्रसेंद्रशयाव्यःग्रीःश्चेंत्रश्चार्थश्चाय्यः। व्यव्यः र्गणेरःनरः होरःभवेः वर्धेः नःदरः रे निवेदः र्गः नवे नवेः द्येग्यायः मावदः यादर्शिनाने में नामाधिन नया ने ना में नामा ने प्योप्त मार्थि कर्म राष्ट्रिया धेव नश्राहेव सें रश्यावव शे कें वश्याधेर न वे कें राश्यव शे हे हैं व व्यत्र्र्स् नित्रे निवे निवे सेससन्दरसेसस जुर है मैवास सुत्र्मे निस्तर् ন'য়য়য়'ঽৢ৾ঽৼয়৾৾ৢঢ়'য়৾য়৾য়৾ঀ

चिर्यात्रे विष्यात्रात्र्यात्रे विष्यात्रात्वे । विष्यक्षेत्रात्रे विष्यात्रात्वे । विष्यक्षेत्रात्रे विष्यात्रात्वे । विष्यक्षेत्रात्रे विषयक्षेत्रात्रे विषयक्षेत्रात्रे विषयक्षेत्रात्रे विषयक्षेत्रात्रे विषयक्षेत्रे विषयक्षे

ग्री नर्भरामान्द्र मास्यार्थे के द्वर्भानी श्रीयामान्द्र यादर्शे नासे नास्य नाम्यान्त्रित्ताम्यान्त्रम्यान्ते स्रोत्रमान्यान्त्रम्याम्यान्त्रम्यान्यान्त्रम्य वर्रेन्यरः सूरः रें। विदेश्वेश्वेश्वेश्वेष्य । सुवायायावेश्वेर्प्य सुरा महारमानमाने महिनार्के अर्थे से पित्र प्रवेष्टि रहे। क्वें अर्धि प्रवास प्रमा ने^ॱषःग्रायः हे : ह्युन्य अः सः ५८ : या है ५ : यी अः हें द : द अः श्रे अ अः ही ८ : ८ अः ही ८ : ५ : र्देग्रथः सर्रः अर्वेदः द्या वेशः ग्रस्ट्रश्चार्यः स्वेद्धः स्वर्धे सः दर्गे दर्गेद्रशः दर्गेषः स्वर्थः ग्रम् नायाने स्नायाप्तम्याने माने माने स्वाया है स्वया स्रीयाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया *ৡ*ॱনঐॱৡ৾৾৾য়৾৽য়৾৾৾৾ৼয়৾৽য়৽য়ৼৼয়ৣৼ৽য়৾৽য়৾৽য়ৼয়ড়৾য়৽য়ৼ৽য়ৣৼ৽য়৽ঢ়৾৽য়৾৽য়ৼ৽ र्भेययम्यापरम्यापेरानाधितार्वे वियास्यायारान्तावितारीः यहारा सेसरा हिटाना वटानी इसानाधेट र् नासुटरा परि हिटार्से । गुनायस नहुरायराग्रहा हिटानाहे हें दार्ग हमाग्येटानी भ्रम्यराश्चान नहार्येटा ग्रम्। देरावल्यापिरायाद्यो वाष्यम् व्यापिरायाद्यो वाष्यम् व्यापित्रायाद्यो त्यादेशःश्री

देशन् सुवाश्वासन्ते। गुरुष्यश्वाह्यप्यश्वा सुवाश्वास्वाद्वेत्वा विद्यास्वाद्वे । जुरुष्यश्वाद्वे स्वाद्वे स्वा

सेस्रयायसासुःसे सुरामा हैरामाराधेदामर्वे । विसामसुरसार्से । विरामा वे। शेस्राश्चित्रान्ध्रीयात्रान्धः वहित्रान्धेत्रः वहितः स्नूट्र वहित्रः स्नूट्र वहित्र स्नूट्र वहित्र स्नूट्र निवः तुः पार्याया नवसान् सामान्ये । वहीं वामाधिवः मस्या विन्या सामानिवः । न्रेग्रम्भारित्दें त्रभूत्राक्षेत्र पुरायायायायायाया स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्री स्त्री स्त्रीया रेसानरामायया गरागे के रसुयार्वे राष्ट्रानुत्या से सुनामरात्वायाः कृतुत्रम् भेग'नईस्रर्भपः'कृतुरःसेस्ररःग्रेसर्भःग्रेमप्रदेशन्भःपार्याययःनरः श्रे अर्बेट न ने दे के हिट नर शुर नर रेग पर हों। विश्व ग्रुट श्रेर <u> भुर्</u>भ्स् । पार्व्रः के नापाव्य व्यान्त्र मान्ने स्वयः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः नः अर्थेहर्ने । हिरानाया दे निषे नाम्रान्य स्वापि अर्थेन्य। खुगामी कः भूषा मिं द भीद दें। । मालु र के न द स्थय द य ग्रामा ही र न से य नःषःश्रद्धःकुशःग्रेःश्चगत्रुगश्चःषःश्चँगश्चःप्रद्याश्चरत्रदेःध्रवःधेदःषःगुः न-८८-अ८-१-१ अराज्या अराज्या विष्या मुद्दी अराज्य न मुद्दी अराज्य मा अराज्य विष्या में स्वर्थ में अराज्य में स नश्रस्थायासुत्राननामाष्ट्रानुते पुषासे नाश्रयानाम्म स्रितः स्रम्यायसम्यान्ययः सुर्वे म्या स्यापाया स्या न्ये वायाया वायाया ८८.५६४.४८४.ग्री.ग्रेश्वर्याक्षेत्राक्षर.८ग्रेश.ग्री। तीतायोशकाय.२.६श. ८८.लेख.१४५.मी.१८४१.१९४१.मी.४१५५५ वि.स.५४५५५ विदःनः विद्रभः श्रुनः पदेः पविदः के नः इस्रभः द्रभः प्रायम् वदः द्रभः सः न श्रुदः नशक्रान्गवन्तरसूरविरक्षेत्रः तुनायाधरके नरसूर स्रे। वर्ने या हैरा विरासें र हिंग्यायाये लेया निवास निव र्वे न प्रेंन प्राचे अधि के वार्षे । न क्षेत्र अधि के न ही म के न हिम्स इरहे भ्रानान विवासे अध्येषे अधिव विवास के मानि । अविष्ठित्रे में अविष्ठे अःश्लेअःधरःश्लेःविदेश्ववशःशेदःधवशःरेषाःधदेःभेशःविदःश्लेःदर्षे अःति क्षेत्रानेराष्ट्रीः यापिरायया रोसया हिन्द्राने प्रायम् सर्वेतः वा वेशपान्या शेशशर्तेन्यवसर्तेन्त्रंनेषशपर्यस्त्रेन्ता वेश महारमानि हिरार्से । दे स्मानुदे लेगानि विमान क्रेमिया है । वर्षायदेवे प्रमाया ग्रीम में दासे दारे भें साम्री वासे प्रमाया प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय ग्रम्भेम्प्राची भे। विमर्तेन्वम्यम्ये अपम्ये विमर्ति नेशनवित्रः भूनशायुत्राया भूताया दे दिन्दी । दे व्यूनाया प्राप्ता स्त्राया । यथा बैर-दर-मैंद-स-हैंग्रथ-स-दरा विश्व-बैर-मैंद-हैंग्रथ-स-य-वेश-नविवरनर्गेश्वरम्याशुरश्वर्यानवे श्रेरमें । । ने व्हर्मन श्रेरमें न श्रूरम्व श्रेरमें न श्रूरम्व श्रेर रेगामके श्रेन्यवे भेषानविवास श्रेषान्। नुषारेन संस्थाने जुषा ग्रम् ग्रीम के म्यान विवाद के के के स्वास के स्वास के स्वास कर के स्वास के स्वास के स्वास के स्वास के स्वास के

धिवर्दे॥

र्देन्त्रियानविताने हे सूरानक्षेत्रसूत्रात्र वर्ते वर्षेत्र प्रदे द्व रदिः श्चेरिः खना रुप्ते : मुग्नाया के स्विरा हेना धिवा है। यदी सुरा ह्वा या कुवा थ्व सने न भे न व्यापा न से न स्थापा सम्म न से न स्थापी न धर त्राध्या हिट में द क्षेत्राय पुर देट में र के के राज में नाय हो हिट र्केन्द्रिम्बरक्षान्वे भ्रीत्रात्री इवाचात्रुवयाच्ये न्या मान्या होता केन्द्रिम्बर्गा न्या न्या हि अॱढ़ॺॺॱॺढ़ऀॱॸॖॺॱॻॖऀॱॻॖऀॸऄॕॸॱॸॕज़ॱॺढ़ऀॱॸॖॺॱॸऀॸॱॿॖॸॱज़ढ़ऀॺॱऄॗ॔ॸॱॸ^ॱॺॱ नर्भेर्द्रस्य निष्ट्रस्य त्र क्रेस मास्रय विष्ट्रित प्राप्त में द्रिस्य द्रिस्य द्रिस्य विष्ट्रित प्राप्त स ग्रम्। ग्रम्के इत्रम्धे नुर्से त्रम्। । नुरुम्नि दिन्द्रम् व्रम् ग्रम् कें भी अपनितर हैं दर प्रमुद्ध विद्या विश्व स्थान द्वा अधि समी व्यापनित यशग्रम् नेशनविवन्ते द्वायायान हेन्यम् शुरुव हिम्य द्रिन्य हैंग्रथः धर्दे । विश्वानुः चर्ते : इतः धरे : चरः ग्रव्यान् श्वाने वितः प्राध्य धरावशुरारी । देवे श्रेराइवाधाया महेदाधराशुरावा वेथा श्राचा श्रेराहे। बेरामश्रुद्रशःश्री । क्रुंमिडेमादेश्रीराने वित्रः क्रीः क्रुंद्रः ख्रम्रशः श्रुवः स्ट्रासः धिव नः धिव ने वि से स्राप्त स्त्र स्त्र स्त्र म्या स्त्र स्त यदसःश्चित्रः निर्मार्थसः वार्यस्य र्वसः स्वायः यद्देत्रः स्वेरः हसः सः सः दिस्यानः वर्षास्य प्रत्वित प्रति । प्रति निवन्रभुद्दिनिवन्त्रम् । निष्ट्रम् । निष्ट्रम् । निष्ट्रम् । यह ।

८८ श्रेस्रश्राभी वात्रश्राभ्रवश्राया । यट ५८ व्या ५ ५ व्या १८ सर्देर्द्रा भिरानविदानसुरानदेशसळदाहेरार्दे । विरामसुरसामासूरा र्भे । देशन वर्ष शर्ने श्रिट में दा श्रे निया मान श्री दा प्राप्त स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त स्व नवित्रन्त्रभेत्रा इत्रामक्षेत्रः स्वाभित्राचे स्वी पोत्राम्या नित्रामहेत् दशःदर्गेन्।'स'धेद'मश्येन्।श्यम्'द्रभेन्।श्येत्।श्येत्।'स्वेन्।'द्रमें श्रेत्। ।देः ख़ॖॱॺॱऄढ़ॱय़ॸॱक़ॣॕॱॸ॓ॱक़ॺॺॱॿॺॺॱढ़ॸॱॻऻढ़ॻॱॸॖॱढ़ड़॓ॺॱढ़ॺॱॸॺॻॺॱॿॖ॓ॸॱ र्यदे में निर्मा देर अर क्रिंट न निवित्त निक्ष मान ग्रीशनश्चनशर्भवेष्वत्रश्चरातुःहिरादेष्द्रह्माग्यरादेष्वत्रात्वतानुदः दुर्गशः र्शे । ने अव ग्वाल्टा सुरु अ सुरु के वि से से से स्टर न सूव है भीव हु लिया संदे क्यान्ध्रिन्'ग्रेयान्ध्रन्'व्याक्ययायेव्'ग्रीयाग्वर्'यायन्यायावेगाःविव्'तु गयकेथी क्षेट्र रुगर्स्याय रेज्य के जुक्षे यर देव नक्ष्य प्रायम नश्चम्यान देवाळेव वश्चना । डेयाना सुम्यामधे स्रीम स्री

गहिसासिस्य वित्र ग्रामाने स्थानित श्री स्थान वित्र महितासि स्थान स्थान

देल्द्दिनचीः भ्रुवः विवाहः के नाधेवाहे। देल्द्रमः ग्रुयावः भ्रुं त्यमः नुः र्यमः र्भे । नियान दीर मैं न दूर न श्वें र नाय यन् सी हो न सिय महेन से र यन् त्रेन्'यवसःर्हेषःनःवेशःनहग्रयःयदेःशेसयःयःनर्ह्हेसःयमःत्रुदें। ।वर्नेःयः गहेश शेससम्बर्धसन्त्रम् विटा होटा के दिल्ली मार्थे सुवादि । यादा यानहेवावयान्त्रीरार्केताक्षेष्ट्रीयि कुर्देयान बुदानर्दे । प्रदार्वे गुवायया नहुरायरा रोसरामान्वेम रोसरासर्द्रान्त्र्नेन्याधिन्तीः यशहे। नवी नन्दर्भे नवी नन्दर्भुदर्भुदर्भुत्र सम्बर्भ या से सम वह्याम्यरान्तेन्यवेष्यश्चरात्रे । विश्वाम्युरश्चायक्षरावेश्वासरानुदेश दे·षदःद्वेरःदःर्हेः।वनःयेदःग्रेःद्वदःग्रेशःश्वनशःरदःद्वदःसेदःयरः नार्थे निष्ट्रम् अस्य निषे से निष्ट्रम् स्व निस्त्र निर्म् गर्थे विरःभ्रवानमः हो नायि से समा हुन वे से समाया प्रीम वे नि विरामें नापान्य प्राचीता वार्षे क्षेत्र प्राचीता वार्षे व्यवस्था स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स श्रेश्रश्राम्बुदर्देग

क्री ने प्यत्यत्या क्रिया क्री स्त्रीत्वा क्री त्रा क्षेत्र स्त्र स्त्र

नदे-नगदन्यसेन्द्री। यद्दर्भे देन्यः स्वास्यस्य स्वरः स्वरः सक्ष्यः स्वरः न्यायरा तुयाया न सुरा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रमान क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त विष्टे क्षेत्र व्याप्त विष्टे क्षेत्र वि राप्तराम्हेत्रम्भेरार्हेत्रहेर्त्रभेग्रयायायहेत्रायायायीयायावेत्रसेयया व्रीटानरा व्युरामा देवे के। सूरानवे पर्नु भेषान क्षेत्रामयसास के वा मुन्याय नदेःन्देशसं अद्याक्त्रायार्थेष्यायार्थेष्ठात्रात्रेत्यात्रेन्यात्रेन्यात्रेन्य नन्ययायान्भेन्यायाने केनान्यान् न बुद्दाने । वियान्यायान्या र्रे । पर्दे प्यः क्रुॅं नदे प्रेग्यायान क्रेंयायर से ग्रुः क्रें क्रुं प्रयादे से स्याप्तर र्भूर्भित्र्यते कुः धेर्यस्ये भ्रीस्री । श्रीशीर्मित्रं मित्रा भेर्यास्यः भेरास्यः भ्रीस्यारायः न्धेन्यर वर्नेन्यवे पुष्य य न्ध्रन्य अर्थे य दवर ही र न खेँ वा से। सर मुन्न नर्भ्यायायय। भूगायर्षेट्य स्त्रेन्य स्त्रेन्य मुन्न । वियायर गुर्-द्राम्बेर्यागुर-पर्देन्। वियामशुर्यार्थे। द्रिक्र-विरागवयाल्या म'ते'न्रेग्राम्यदे'दिह्न, सूर्यादयर्यान्यदानु सेंदान्यानु दान्दानु उटावटानु नसूर्याययात् लुयाया लेया गुः नाधीतायया वहेतासूर्या नर्सेना यन्दर्दियायायाकुन्यक्षेत्र्वयार्श्वयायाय्येवात्रायायायायायायायायायाया यथा विष्यः प्रत्येवायः प्रक्तिके विष्या विश्वेषयः प्रयापद्यः प्रतिन्तुः व्य विराद्या व्यायापरावे नर्हेव वश्या राष्ट्री । यव प्यवास मित्रा विराय नर्हेन्: व्याविकान्मा नक्ष्मान हुकायका ग्रमा ने व्यापीन (ब्राम न्यायन नर्स्रेयसम्बर्धान्य नर्सेन्य । विस्तायान्य नुनः केत्र से स्यस

यारावानहेत्रत्र्याचीरानाक्षेत्राचरावचुरानवे कुः सुवायायादारावाहेतः ८८.५.योहेश.५५५.१५.११ श्रम्भ श्रम्भ स्त्रेय स्त्रेय स्त्राय स्त्र स्त्राय स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स में अश्रायदे महेत से नक्षेत्र तत्र दे द्वार्य महेत प्रदे हिरान के क्षेत्र विरा भ्रेश्नामार्थेवासमारविमार्भी विदेश्यार्थेन्यसार्वेष्टवासान्यस्य सळव्यायेग्रयाम्येप्रायाम्येत्याम्बुदाव्यायदान्द्रायदान्त्र्यायदान्त्रेत्यायदान्त्रेत्यायदान्त्रेत्यायदान्त्रेत्य सळव्यायेग्रयाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच यन्ता अद्याक्त्रभन्दःक्रियन्द्रन्ते। त्त्त्रन्दःक्ष्यः विस्रयन्दः वाहितः न-१८१ हे अरु: इत्र-१: दुवा वार-१८८ मा दे व्यय-वावद रादे १८८ मर वर्गुर्राचि द्वीत्रायायात्रस्ययाग्रीयायेस्यायात्राचित्याचित्र्याचित्र्याचित्र्याचित्र्याचित्र्याचित्र्याचित्र ५८। स्वार्याकेन् श्री केरान्सेवारा स्वित्य से स्वर्यात केरा सम्बर्धात के स ᢖॱज़ॸॱढ़ॺॱॺॱॺॴज़ॶॸॱॸॕऻ<u>ॗऻॎ</u>॓ॱॳॸॱॸॖऀॸॱज़ऄढ़ॱॸॖॱॶक़ॱय़ॱॸ॔ॸॱॺॺॱॸ॓ॱ ठं अ'यश से दिंद द से अस ग्री पहें द सूद स मी सस पर ग्रुस है । पर्से स पर

मंदे वर्षे नर्वेषाया गहेत में दे इसस है मेग्य मर महेत दस है राम श्रद्यायान्द्रम् अस्य निष्ठि । श्रेय्यायान्य निष्ठित्व । श्रेय्यायान्य निष्ठित्व । श्रेय्यायान्य निष्ठित्व । **ટ્રે**મઃકૃતેઃત્રેગ્રામઃવઃસેઃગુમવઃવમ:સેમ્રમઃવઃશુત્રઃવગવઃવઃકૃ;તુવેઃફ્રમઃ रा:<u>श्रवःत्रश्रुवा:वाट:रुट:श्रूट:व</u>रे:अ:वश्रय:वर:वर्श्वेसशःव:ग्रीट:व:वडट: न्गवःनशःनेवेःगहेनःसॅनःवेन्ग्रेःश्वनःनःधनःधनःनश्चेत्रःगनःनुःश्वेः हनः श्रायश श्रूरावाद्याय्याद्याद्यात्राहेत्। व्यावाद्याय्यायाः व्यावाद्यायः व्यावाद्यायः व्यावाद्यायः व्यावाद्यायः रा. ये दारे दे से सरा ग्री साले जात्र साद दा सूचा सर्वे दायदा दा पर दे से सरा निग । विन्ने भूमः विगावरान्य भूगा सर्वेद्यो । यस या सूर निर्वे प्र नर्झेम्याया नायाने न्दर्भिने न्यमान्सेनामाया सम्माया सम्मायम्से ॻऻॺॺॱढ़ॏॸॱॺॗॸॱॸॱख़ॖॸॱॸॸॱॹॗॸॱढ़ॱॴॸॱॸऄॗॕॺॱय़ॱॸॏ॔ॺॺॱय़ॸॱॻॖॺॱय़॔ढ़॓ॱक़ॗॱ *ने प्रमुक्त ने अप्रक्षे वा अप्याने प्यार्थे अप्याक्का यम् वा अव्यान प्रमुम्पन* केव से हिन्नु स्यू स्री विष्य हे न्दर से हिन्द साइसाय स्वायया न न ब्रूट न के त र्रो र क्यूर प पो त त ते हैं हे पे ही र विट क्यु के र वित हु ह्र व्यापर । ग्रथयः नः निरु कुराना केता से किता निष्या है । अविश्व में ज्ञान से अविश्व में ज्ञान स दशन्द्रीम्थायाम्ययाद्वदरावर्द्वेसाधरातुः वर्षान्यादाः २
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
२
<p ने हेन प्रमा सम्सेत में निष्य स्थान सेते सुमर्गित में निष्य समाने सिर न्ग्रेयादिर्यम्भूरावदेशसस्य सात्र्रम्भिन । देशान्युर्यास्य र्रे। । श्वरःनवेः अळवः अःनश्चें अः यः वर्ते वे के रातेः वर्ते व की त्यां वि वरः अः बर्'मश्याविव'र्'लर्'बुर्दे।

र्मेर्प्यंत्रे क्याश्यप्रे क्रिंत्र्या व्याश्राश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्याया व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्चार्या व्याश्या व्याश्चार्या व्याश्य कुगानाधिवानम। ने या वे धीन वरानु सुन प्रित कु धीन वर्गुर निवे निर्मा र्रे पिट्या गुःषा देश र्केट्या विस्वानम् स्या स्रम्यी द्वी वार्याया सेस्या यहसायराववासे। क्षेत्रारेसान्दारीयया वादावी से स्वार्ति पान्दा है नःयःश्रेष्रभःमःइद्रावेदःनरःनरःत्रश्रेष्रशःक्षेत्रःमरःसर्वेदःनःदेवेःक्षेःश्रेः ह्यायायार्श्वेष्यस्याधेन्यवृद्यस्य विष्ट्रस्य स्थिन्या वेन्यस्य र्केन्यावे नरामुर्वे । ने वर्षा अपनान्धे न्याया ने हिनाया से स्थाय से वर्षा वर् होर् मा सेर् पर वह्या मायावनर पर होरी विसार्ता रहा सह र्रे प्रमाग्रदा में दास भे ह्या या में या माना । पिदाय ग्रेदासमाने यदा ग्र विराद्या मधेररायाधेररायदेखळ्यसाया हिराद्रीम्यायसः नशन्यू नरः ह्या विशन्दा नसून नहुश यश ग्रहा क्रिं पर ग्रूर व भे ह्वापं भे द्वाप्य भे त्राप्त कार्य का के दिन स नुग्रम् द्र्या सद्या कुर देट न चुट द रे विग्राय न क्रिया स क्रिट या क्रिया नर्भेयामान्त्रपुर्वानाधेवाण्ये। येययादर्भयानेयाण्येयान्त्रप्रा वर्हेग्राम् सेवर्ते । केंद्रमदेरसंदेश्याद्रभ्वयासे के नाया दे वर्धेयाम देनगुग्रा वयान्येग्यायायायान्य्यायम् न्यायः न्याये व्याये यार कें खुर पदे भेरा विष्यादय कुष भी या त्रीय पर हा विया पर यर्रे त्यमा सेसमार्म प्रदेश में विमाग्री विमाग्री समार्थित में में प्रदेश महिन सें र

हे 'क्ष्र्म्य स्वाक्त्र हे वास्त्र हो न्या क्षेत्र हो स्वाक्त्र हो स्वाक्त ह

चैर्ट्स्ट्रिं निः श्रे निः कुंट्स्य न बुर् निः स्वे निः स्व निः

चेत्रप्रदर्भेस्रस् सुन्यप्रम्य प्रत्याप्य प्रत्याप्य प्रत्याप्य प्रत्य प्रत्य

दे.याये.य्.द्व्यायं. दर्वे स्वायं स्वयं स्वयं

देश्वर्ष्यस्य श्वर्ष्यस्य अर्थे । व्यव्यक्ष्य । व्यव्यक्ष्य अर्थे । व्यव्यक्यक्ष्य अर्थे । व्यव्यक्ष्य अर्यव्यक्ष्य । व्यव्यक्ष्य अर्यव्यव्यक्ष्य । व्यव्यक्ष्य । व्यव्यव्यक्ष्य । व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्

गिरेशःहै वर्षाः भेतः ग्राम्प्रमान्य स्थान्य स् न्वीं रात्रे। ने सामुरान सर्वेन सरावन् से मेन प्राप्त के सम्बन्ध स्त्रे स्त्रेन *ॸॸॱॾॺॱय़ॸॱॻऄॸॱॸऄ॔ॻऻॺॱॾॱऄॕॱॾॺॺॱॾॕॻ*ॱॺढ़॓ॱॸॖ*ॺॱॶॱॻ*ड़ॸॱॻॖॸॱऄॱ कैंद्र'मश्र'ग्वद्र'मर'भे' गुर्दे स्रुअ'द्रश'षय' नर' देंद्र'न'द्रह्र' दें द्रअश नुनार्याद्याद्याद्याद्याद्याद्यात् कृतः सेटानवे खुन्यात्रात्वा सुनार्यात्वरः य:८८:क्रुत्व:ब्रट:दे:तशःदे:यशःशे:वार्शेवा:यशःवड८:शे:८वेंशःश्रेशः वया ने नगर्श्वेन नवे श्रेम्प्त्या अस्व म्यम्प्त्य से श्रेम्प्य ने प्रवासी या वे प्रेम्प हिरारे व्हें वर्षे वर्षे वर्षे पारे माने माने वर्षे वर् र्शेग्राम्यानितः देत्र वर्षेत्र वर्य वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर धुःर्रेयः हुः शुरुः धवेः धुरुःर्रे॥

म्रो निर्म त्या के निर्म त्या के निर्म त्या विष्ट निर्म त्या के निर्म क

गिंदेशमान्त्रीमार्सिन्नमान्त्रयान्त्रेन्त्र्यान्त्रे स्ट्रमान्त्रमान्त्रे स्ट्रमान्त्रमान्त्र राष्ट्रमः हिराक्ति द्वार्के प्यमाय वर्षा यह स्वार्थित वर्षा स्वार्थित वर्षा स्वार्थित वर्षा स्वार्थित स्वार्थित वर्केन्प्रस्त्वयुर्म्पतिः श्रेष्ठियायाः श्रेन्प्यस्थे अश्वास्यकुर्यायाः केन्प्न्यम्। सरप्रकृरःनवे के। पर् होरायय के पात के राहे प्रहेत हो क्रें त प्रेराय का नेवे पाहेत में र पहर हैं समान हैं सम्पर् होते। ने सूर पर हैं सम्मानर यायम् निर्मी कें हिरान प्रार्मित्य सेत्य स्तुर हे प्रसेन्य स्ति स रोसराद्वार्, वर्वारम् सर्वेट निर्देशके। हैं यान त्रें निषान निर्देशसा शुः जुः विरारे वे रहे र शेरा वर्रे राग्ने । वर्षा श्री विरार्थे । विरार्थे । विरार्थे । विरार्थे । विरार्थे । <u> नःपर्भेर्भप्यार्ह्रेयानानुषाम्बर्भेन्यः प्रमूर्यम्यार्थानः देश्यान्यः स्व</u> वेवा वरेवे सेसमर्मे न्यवर र् व्यापाय सन्द भी राज्या ने स्थान हैं न ने नर्से समाममा मुदायळं समामे या ही मर्से मुसे सहूम निवेश्वा ने मर्से न यदे र्या शु र्वेषा यदे र्या यदेव र र वित र ह्य निरः क्रेंट्रिं न्य पीत्र है। दे व्ह्रेंट्रिं ह्या त्र क्षेत्र में सामी सामी सामी निया

र्देन्त्रनहरः द्वेष्ठ्रस्य ने हे त्र दिना धेत सुस्य न ही र नहर द्वेष्ठस्य यार्कें राजानहरार्श्वे समान्दार्क्ष रामेनामेन सिन्धार्म सिन्धारम् वर् होर हो नहर हैं अया मार्थ या सुरया या या वर्त हो वर् होर नहर क्रूॅंबर्याधेताया नेविन्देन्तें ते क्रुंत्रायाया ने यानहर क्रूॅंबर्यानर वे ता वे नावरु:न्द्रभाः अर्वेदः नीः श्रिनारु:ग्री:न्द्रीनारु:चः खः खेस्रुः गुवःवरु:हेवः बॅर्सारासेन्दिसेस्रासहस्राराहिन्द्रस्यान्द्रस्यनाराद्रस्यान् ८८.वीश.वर्षेया.स.८८.श्रेश्रश्चश.यट्रे.य.८८.श्रेश्चश.व्यश.श्रे.देर.यद्र. <u>हे अःशुः कें ल्यानः क्षेत्रः पदिः गुःनका गार्हेत् । यो व्यानश्चित्रः । वो व्यानश्चित्रः । वो व्यानश्चित्रः । </u> राष्ट्रमःवेशासमानुर्दे । देषदानवेषनहराष्ट्रेसशार्चनामवेष्ठेषे हिरादेषद्देन नर्झेयामन् विरामें न्या वुरानवे भ्रम्य श्राम्य र स्र्रिय शर्ने सर्मे न्या वुरानवे भ्रम्य श्राम्य र स्र्रिय शर् यार्ह्स्यानास्री द्वाप्यम् वाविषाप्यम् हुर्दे। विदेवे प्रसेषास्राप्यस्य सर्वे सर्वे स वै। ने हेन प्रमा ने प्यानहर हैं समाग्री सक्त सामार वे ता नसे मामार

ने भूर हिर दे पहें व क्रें व से र न क्रें र न वे खुवा न वर पर हे क्रिस के <u> २२४:२८:सबदःइस:सरःदग्ने८:सःलसः हे :नद्धः गुस्रसःसरःगशुरसः</u> राष्ट्रराधेवाहे। देश्वराद्या देरायावयाययायात्राद्यरायाहेता दिवाइयया वस्रश्राहित्या । विद्यासान्य विद्यासान्य विद्यासान्य विद्यासान्य विद्यासान्य विद्यासान्य विद्यासान्य विद्यासान र्यते कु त्यमा चुरावार्ये । त्ये त्या द्वा त्यम् मा विहेत प्रा बैर-५र-क्रें ५-४-५८। १०५-२० बैर-५८-१०५-१० १०६-५० १०० ४-४-७ वर्देन दें। । मान्य राद्य ने व्यामान्य राद्य । क्रु द्रा विकास स्वाप्त के दें दें |दक्षेवाश्वासाम्हेदासमासासुमादमा । श्रीमादमार्मेदासाहेवाश्वासादमा । दे र्श्वेरः सर्देवः सरः पर्ः होरः दरा । वि के स्यार् पर्वा । वि सामा सुरसः र्शे । दे प्यादेराम् वाद्यादे से सम्बद्धान्य प्राया निष्य दे दे दे प्राया स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स हैं साराने राग्वसारा है। ने या से ससायसा सुर हर नवे हिरारे वहें वा हुति। । ने ·ध्यम् अर्देव भी अरवः श्रेवा अरवंदे रे देव ब्रस्थ । उत्तर विद्या वर्ष स्टिन्स वे हार वस्यानी मदायवयान्य भीव स्थाने व स्थाने व स्थान स्यान स्थान स बेन्यर्वे ।नेयन्वित्रिंदिर्देष्ट्रिंद्रिंद्रिंद्र्या

यःश्वेट्राचित्रधेर्, दर् छेट्राचेट्राचेट्राचेट्राचक्र्याचेत्रक्ष्याचेत्र हेशमाध्ये हैं मानदेखें का ये विषेशमाधेवाहे। हेममे वहीं का य राहेशराक्षे। द्रीम्थरामहेर्द्धास्य स्थिम्थराम्य नवग्नायसेन्यदेष्ट्रियर्से । अष्ट्रययस्यवग्राययाद्वीयर्केन्छेरास्ट्री दे'महिस'ग्रीस'सेसस'यस'सु'तुर'न'सेद'सर'ग्रेद'मदे'ध्रेर'र्रे । ।ग्रेर' र्केन्'तुर्निकें'से'हें यानिहें सामा है। नेसने महिसा वे नर्से होन् मस <u> चैरक्तॅ</u>रमहेशम्बेनाः हुः चुरुष्य स्थापेतायः श्रेर्स्स् स्थे द्रश्य हेश्य सः चुनाः हुः यरःश्चें यः देयः द्वययः दयः वाश्चरयः श्चें । दे 'द्वा' वी 'वाहेद' शें शेंदः वदे 'वर्' बेर्न्स कुर्त्य अप्ये विदेशमहेर्द्ध र्त्त्य के कि विदेश र्त्त्य प्रमानित के विदेश नन्दर्भेन् श्रुद्रअःशें। ।दे न्न अन्द्रेन प्रअन्दर् है दर्भेन प्रदर्भे होतः यन्दर्द्वित्यवेषाकेवर्येर्द्वस्यायः स्टूर्द्वयः यन्दर्द्वितः केंद्रिष्यः यदेःवेशनविवादरावर् होरायदेःशेश्रश्रायादराम्यार् वहेंगायदेःवहरा क्रूॅंबर्याधेतरो नेर्पादेश्यम्कुरायम्य १५८३वर्गे । १५८५पादेरिटः देल्हेर्न्यसून्यदेन्यन्स्रयान्स्रयास्र्वेग्षेर्यस्य र्स्निन्द्र्येत्रकेर्न्यम् यायानी यदे से या रेया ग्रिया दराया वितायर मुग्या र मी या र यो स्वार पार के तारी इसराग्रीराहेरादेष्ट्रवान्त्रुवारावेष्ग्रवरात्रुवराविष्ग्रवरात्रुवरा ग्री विष्योय प्रमः विष्याद्व राष्ट्र स्त्रुप्त परि स्त्रुप्त स्तर स्त्रुप्त स्त्र स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्र स्त्रुप्त स्त्रुप्त स्त्र स्त्रुप्त स्त्र स्त्रुप्त स्त्र स्त्रुप्त स्त्र स्त्

यदी है से समारे पारे पारिया मित्र है दारे प्रदेश है न दिन समाद्वा है न प्रदेश য়ৢঌ৽য়ৢ৾৴৽য়ৄ৾৴৽৴ৼয়ড়৽য়ৼয়য়৽ঢ়৽য়ৣ৾ৼ৽য়ড়৽য়৻য়য়য়৽ৼয়৽য়য়য়৽য়ৼ৽য়ৢ৽ . त्रुवः सॅट : न : प्येव : या अर्क्षवः के न : ग्री : त्रे न : या के स्थान : या वि : या वि : या वि : या वि : या याभी नर्गे अर्थे सूर्यान् गा बुरानराभी ग्रास्ट्री स्वावर्शे राह्मा दाये सुना ब्रेरप्परम्बर्धरम्भः बुद्दार्सेरम्यप्षेत्रमदे द्विरमे । ने भूर्त्पा दे वहें ब क्रिंद नवे वर् हो द द्वार व्यवस्थ हो वर्ष वर्ष कर हो स्टार प्रतिवर्ध वर्ष वावर्याया वर्देन् कवार्यन्य व्यव्याय व्यावाय्य व्यव्याय व्यविवाय व्यवस्थाय व्यवस्थाय व्यवस्थाय व्यवस्थाय व्यवस्थाय न्वायम्र्स्ट्रिन्यर्थेन्यस्य स्वायस्य न्या स्वीयः स्वितः स्वीयः स ग्रोचेर्यासर्वे नासाधिव प्रमान्त्रीय प्राप्ता वियान हेव प्रमुखान प्राप्ता प्राप्ता वियान यन्दर्भेस्रक्षः क्षेत्रेन्द्रेन्द्रेन्द्रम् वास्त्रम् वास्त्रम् । सूर नन्द्रमदे हिर्दे वहें द्रायशशु सुर्न न दे हिर्ह वहुवाय शेषाश्रम् ल्या भेषा विष्या विषया विषया विषया विषया विषया मधीवाया देख्युनामायाञ्चानवे क्षेत्र्त्वामाइयासे मार्चनामा नर्हेवा वशुकाकुर-देर-धें कार्चेन प्राप्ता नुक्षेण्या स्वाप्ता प्राप्ता हिरादे । हिर्टे प्रह्में ते श्रे चे राष्ट्र के श्रे के

ने यं नहेत् त्रा शेस्रा पात्रा श्री प्रिय प्रेस प्राप्य पाश्रम

स्रम्भावसम्भे नदः देशान्द्रम् । हे नदः वहँ ना मही क्षेत्रम् स्रम् न्या । देश्य मान्द्रम् न्या विकासी हे न्या विकासी हो न्या हो न्या विकासी हो न्या विकासी हो न्या हो न्या विकासी हो न्या विकासी हो न्या हो न्या विकासी हो न्या हो न्या हो न्या हो न्या विकासी हो न्या ह

यय। सेसरास्यापोटानिसान्यास्ट्रिंटान्ट्रसेसराव्ट्रिस्यापोटा श्रूरमात्रमान्द्रमेनामान्द्रमेन होत्रायात्रम् । स्वर् मुवासवारमा सेससारराविवाग्रीसामु के नायसायराद्रायरा व्यनमें दान्य में दानु प्या । ये समाने वदानु नम् नमाना । वे समान्य म मन्दरम्बन्ते। १९वर्षायय। दरसें र इवर्षे हे वर्षावना हे से सम *ष्ठे:*रॅब:हु:क्षे:वार्षे:व:ब:व-१८:दे| इद:घंदे:क्र्रॅवश:वक्रेट:दश:वहेट:दश: ग्रैर्भाष्ठी:र्रेषापुरावापोरावराधी ग्रेरायमें। । त्यावराग्रेरायमें। प्रेरारे। वहें व की खें व प्रवास्थ्य व व के प्रेर दे वहें व व प्राप्त व व र के व र व वर्याधेव नव सर्वेद निष्ठिम् । निष्टि ने प्रहेव प्राये स्वरायन्त्र पर्वे । विश्वा यशिरशःश्री । १९४, यायशःही या त्रयायः श्र्यायः ध्रयः यः ५८, ५ या या श्रयः *५८:क्नुेअ:घ:५८:तु५:बे५:ग्रे:बळव*:ब:ग्रट:त्रेअ:केअअ:ग्रथे८अ:व: *५८*:सॅ.४४.८,२यो.ज.६४.८५४य४४४,२५८८५४४४,४०६५४८५५८५५४ मैशर्शेस्रश्रदेश्वर्से राधे क्षेरानायान १८ देश वित्तरा हो द्राप्य पेरा यः र्भेर्द्रान्यस्थान्या हेटाटे वहेदाया से द्वायान वि नरा हेटाया से । गणेर हे या या अर्थेर प्रदेश हो । दे त्या क्षे प्रवाय वि य र ह्या । वि या स्वा । ह्या रायरात्रे। वर्ने न प्रवेत्स्य हेवा वार्रे वाराय वित्रसाहेवा न पर्वे न प्रवेत्स्य हेवा न पर्वे न प्रवेत्स्य हेवा वर्त्रमवे श्वेन प्राया श्वासाय विष्ठे प्रवे हें त्र श्वेन शामि सामा विष्या स वा ५८:र्से वर्भाने त्या हेर्भान् सेवार्भा सुप्त त्या त्या हिवा ५८ हेर्ने दिन है न्वाया शेस्रशयर्से स्थे स्थे स्वाया वित्र हैं।

*য়ৢঀয়*ॱय़ॱ८८ॱॺऻढ़ऀ८ॱख़ॱऄॕॺऻॺॱय़ॱॻॗॖॖॖढ़ॱय़ॱॾॖऺॴॾऄॱय़ॸॱढ़॓ॱय़ॸॱॿॖ॓८ॱय़ॱॾॖ॓ऻ ळग्रारोस्राधिन से निर्मासम्बाधा । यहस्य मने निर्मा विस्ति । वेशःश्री । १९वर्शायश्रादी नहेन्द्रशः श्रीशावशः धूनः नेवनः पदे । इसाहेनाः ८८. १९१९ व्याप्त वित्त होता है। वित्त वित् ग्रेग्'हु:बेर्'य'है। यगर्'येर्'रु'यह्ग्'यये'धेर'रु'यगर्'यर्'बेर्'य'स्रे। ने न्यार्श्वेयान हें न उवर श्रीयारी। । स्थेययायाय देन प्रमादन् होन प्रक्या। र्रमी ररमी अपनुरान पर्वेन। विश्वारी। दिष्पर क्रमा असेन धरत्रु होत्यत्रत्वरुषाध्यावरत् कत्यायेत्यत्रा कुत्रकवाया धराहिरारे विद्वा की कुवाया विद्या धरा के ना है। हे प्रसाव कुन या के या ह <u> चे</u>र्प्य धेव दें। देवेश पश्चिम संस्था स्थान स र्देव में श्चानर श्वर दें। । यद्या पर वहें ना पा दे। ये यया यद्या पर शूर यत्रतिहरर्श्वेस्रश्रास्त्रेत्रप्तायार्श्वेस्यत्र्यात्रस्यात्र्या कुन्ताविनाः प्तृत्वेद्रासम्बद्धान्य स्त्रम् वैवायायाने राष्ट्री वासवारवा त्यायाया सुरुषा ही प्रेन्स्र प्या ही विस्था मायसायर् से होत्। विसार्से। विदासमाने मारे विदास होता विसा गशुरुराभेटा देवे:देव:प्पट:दे:हेट:पया गुव:ह:वश्वेव:हेट:वेवियाःपर:

देः क्रॅन्यः द्वापीयः त्वाप्तः स्वायः स्वायः क्रंप्यः क्

दे-द्वाचीश्रःश्रेश्रवशः श्रीशः विद्वाचायिः स्वाचिः श्रेशः स्विः श्रेष्ट्वाः स्विः स्वाचिः स्वाच्यः स्वच्यः स्वाच्यः स्वाच्यः स्वाच्यः स्वाच्यः स्वच्यः स्वयः स्वच्यः स्वयः स्वच्यः स्वयः स्वयः

र्घते से सरा गृहेरा त्युन हो। दसे ग्राया प्याया प्याया प्याया प्याया प्राया प्राय प्राया प्रा वःश्रमः श्रीः नृश्चेषायः यः इवः वयः वदः नृःश्रुनः यः नृहः स्वान् वयः वदः व नुवारानश्चेत्रते प्रधेवारायरायरावायेत्वरार्थे होत्रपदे होरार्से । निरा निवरग्री क्रेंनश ग्रीश दे र्यानर ग्रेर प्रेरे शेशश र्र ले नर ग्रेर प्रेर सेसरामिक्रात्यानासे। इसाईमान्दाकेर्वे स्थानिस्या न्भेग्रस्वेस्यविद्यम्भः नेपाद्यस्वेस्य म्यान्यस्य न्यान्यस्य न्यान्यस्य न्यान्यस्य न्यान्यस्य न्यान्यस्य न्यान्यस्य यावर्द्धराक्षे स्ट्रेराववे द्वेरार्दे । वर्ह्ड दाव्युका ग्री स्ट्रेन वा ग्री का दे हिसा सरा वि'नरः होर्'यः र्रः हे 'वाडेवा' हु होर्'यदे से सस्य विस्था है स्था हैवा' <u> ५८% हें त्रुर्त्त संस्थित स्थित संस्थित संस्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित</u> ख़ॣॸॱॻॖॺॱय़ॺॱॻॖऀॸॱक़ॕ॔ॸॱॺॱऄ॔ॻऻॺॱय़ॺॱॸऀॸॱॸ॓ॱढ़**ॾऀ**ढ़ॱॺॱॸॸॱॸढ़ॸॖॱय़ॸॱऄॱ व्यासरक्त्रक्षायायायुः भ्रे प्रदेशिरादे प्रदेश प्रवासित स्वीतासित स्वीतास्ति । प्रदेश यार्वीस्थायाळेशायवे क्रेंन्या ग्रीयायन सेन न्याय के तार्वा स्वाप्य के नि दे पहें वर्श्वे प्रदेश ही सर्भे इंदे प्रवासि एवर राष्ट्रे प्रवेश में प्रवासि प्रवासि प्रवासि विवस धेव मशा ने यश जावव न् प्रकर्म श्रूर थर धेर नह्व मर शे नुर्दे।

ने त्या श्रे श्रश्ना प्राप्त वित्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र श्रित क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षे

इव'यश'यव'रेग'यहस्य पर्राचना'व'रे'वश'इव'नेश'व'रे'क्रुव'युव' नु नक्षेत्र मा सा मुद्दाप्पदा हिटारे विह्नेता ने विद्वे से विक्र मा सा मुत्र कवा रा शुःकु्वःदेरःसॅरःवह्याःश्वरायःवियाःवद्युरःस्। । ५वरःवेशःकु्वःथ्वरायःरेः नक्षेत्र मते हें या न के न में का मका करें ता मान पत्र हो न मत्र पत्र न हें या बेर्'यावेश बेर'याधेव र्वे । १ क्षे या श्रें व र इत्याप र लेश या वेव क्रियानश्वरने निष्टेवा होराकेंद्र श्रेवाश्राष्ट्री श्रेयाश्राष्ट्री माश्राष्ट्री माश्राप्टिया स्थापित गर्डेन्'से'त्र्रापर'त्रुत'रेन्'सें'वर्डिन्रा'पवे'हेन्'ने पदेंत्र'वेग्'सें'न्नेंरा या ने प्यम् श्रेस्रश्चा न कुन्य प्येत के विष्य प्रमान के श्रित किन्य য়৾ঀয়৽য়৾ঽ৽ঢ়ৼ৽ৼৼয়ৼয়ৣ৽য়৽য়য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়য়৽য়য়ৼ৽য়য়ঢ়য়৽ यम्प्रत्यापम्। यमेष्याद्वस्यानम्भेषानविदानम्याळन्त्र्वस्रेदान्वेषा मश्रास्त्रिः मरावर् होरामवसावनर हैं वार्टानस्याम लेश हेराना धेरा र्वे । निःश्चेःनःवः द्वेरः र्केन् र्वेज्यायाद्यः व्याप्तः श्चेयः वयः प्रदरः न्यायेवः धरःवर्षेषाः संवेषाः दर्षे अः धर्याः श्रेष्ठाः यद्तु सः दर्षे अः श्रेष्ठाः । देः श्लेः चराः इसर्हेग्-दरहेर्देव्शीयायोदानायहेयद्रीयायासुनेयावयारे न्या यः भ्रे वर्षे नरः गुःरः ग्रेरः पदेः वेशः नवेदः भ्रेनशः थ्वः दर्गेशः पशः श्रेसशः <u>अप्याद्याद्यायाद्यों राष्ट्री विश्वाद्य के स्वाद्याद्या विश्वाद्या विश्वाद्या विश्वाद्या विश्वाद्या विश्वाद्य</u> नङ्गनर्यासदेः भ्रीस्ट्री । देःवर्षः यादेः श्लेष्ट्रायः व्यापदः द्रीयायः यायायेदयः वर्द्रसुर्द्र, दुसेवायाया इवाया द्राप्त द्राप्त व्याप्त सेवायायायाया प्रेर नर्भे होत्रपरे द्वापाद्रमें अप्यक्ष सेस्याम्सुस्य प्रतिपाद्रमें अहे।

ने'गहेशके'इव'म'ने'गहेश'ग्रेशनश्चनश'म'भेव'मदे'ग्वेन'र्से । ने'श्चेन' वाष्परः विवासरः सेस्रसः द्वीवासः वाष्ट्रवासः वाद्याः वाद्यासः वाद्याः क्रुव से नापेट न दर्गे अ सम्र से सम्दर्भ ना है सर्थे व द की ना पेव दें। ने भूरत्य अर्देर न्यू द दर्भेर ग्राह्म अर म्या के अर में हे अर शु प्रवास्य यास्रीस्रसास्रसाम् पर्देषाः स्वामासामा ने प्रसाने भूमानविषाः प ने·พ८·พ८·नश्यश्याः कृतः दु८ः वर्षः युरः युरः युरः युरः सेरेः क्षेत्रः कृतः नश्चुरः। शुर्-रु:इव:य:दर्। दे:वशःग्रह:इव:य:भुग्रथ:उव:वश्चेट्राय:दर:र्से:वशः न्भेग्रारायश्राभे येत्रायदे न्त्रायदे स्नित्रायभ्रेत्। न्त्रायः स्नित्रा उत् गुनः सः न्दः नुभे ना अः सः स्था ना व्यनः नुः ना से दः निदः मे निद्यों अः ग्रेः भ्रेष्यः दशः श्रं शं माणे दशः दवदः दे । सः वनाः देना दशः क्रुवः नार्डेदः सः ददः नरुदः वश्राभेष्म श्रुवार्श्विषाश्राणेश्वान्य स्थान उत्तर्भने क्रुवाहे से दात्रा पहिंदान वि क्रियानदे क्रिन्यानक्रुन् ने क्रुयान द त्र्यान द्र्यानक्ष्यान्य विषया मः र्रीटः नुः सुरु द्वार्यन् देवा सेन् सर् हेट हे वहे तुः वर्रे निवे सेसस न्त्रापायमुनायाधेवार्ते। ।नेश्वाताशेश्रश्रश्राप्तायाधेनायादे में राष्ट्रा कन्न् इत्यादर्द्धिन्यम् सेस्रानेस्य देन्त्रान्य देन्त्र दे न्वें राषा रोसरा न्त्रा पार्चेन द्रा केन्न् प्रस्य स्पर्दे ना प्रदे हिंदा नास व्याग्यम् सेस्रान्ते । दे स्ट्रिन् न् ने स्ट्रिन् ने स्ट्रिन् ने स्ट्रिन् ने स्ट्रिन् ने स्ट्रिन् ने स्ट्रिन्

म्बर्भासन्त्र्रिने द्रमायाधेदाया होदासायवि खेदास्य देया स्टा हो। नश्चेस्रराने वहुवा सन्दर्भन्य र्नु वळद् छेट वहुवा सन्दर्भन्य शुः वळद् मस्त्रेन्यम्यह्रम्यम्पङ्ग्रम्भुव्यक्तिम्यम्यह्रम्यम्यह्रम्य धराबेद्रायाद्रायाद्रवाधरावहेवाधराबेद्रायावित्रक्षेत्रस्यादे मदेखेन्या होन्या । नसूत्राने वर्षे वा प्रमानित्र होन्या । वर्हेग्।यराग्चेर्।याद्राप्यावराग्चेर्।याद्राले।वराग्चेर्।याद्राले। नरः होत्रायाने भ्रम्नार्था स्कत्र हित्रायहित्रायि धीत्राया होत्राया पित्र वि कुर्यादेगाः हु होर्यायादे अन्याशुष्टकर्यायेर्यस्य हुगायदे प्येर्य <u> बेर्</u>म अर्थेर्न्स् । हिर्ने प्रदेश स्त्र केर्ने स्थाय के के स्थाय के स्थाय के स्थाय के स्थाय के स्थाय के स्थाय धेन्यः होन्यः धेन्ने । विश्वासेस्यान्यः मित्रः होन्त्यः सुः देवन् नयनभ्रीयन्त्रीयनयनभ्रीययनिवर्षानन्ता देवयसेययन्ति

भूनशःशुःते हिरःर्ने ५ शेशःनरः ५ पठ५ त्रशः शुतःरेरः से क्रिंरः शे त्रशः धराञ्चनराशुःवळन्छिनःवह्नाःधन्ना नेःवर्थाश्रेश्रयःवक्कुनःधायाद्येः व्रीटार्सेट्राग्रीयानराम्बर्ट्रायी त्यानराष्ट्रवारीटार्से सुटाष्ट्रवाराया सूनया शुःवळन्यासेन्यरवहुषायान्ना नेवसासेससान्ग्यायासेन्यराष्टा श्चेत्व्द्वन्द्वर्ष्ट्वान्यायम् क्रुव्यान्यस्त्रेष्ठ्वः श्चेत्वान्यस् वह्रमानवे धेन होन वहें नार्मे वित्र सेससन्दर्भ महिसाग्री स्नानस्य वळन्'डेट'वह्या'म'र्थेन्'या शेसर्यानर'म'स्दे'भ्रवर्याशु'प्पट'वर्श्वेस' न्वीं अप्यार्थिन् प्रायान्द्रार्थे पादि अप्यायकन् केत्यह् वा प्रवे प्येन् होन् प्येन धरकी पळत्यात्रा वर्षायाय श्रीस्राके प्रह्माय थेता होता वर्षा यम् भे प्रकर्भ के ले त्रा भे समाप्तर में पिहें सामा के से समाप्तर प्रेम र्'तर्मे नर्रेर्से तर्मे तर्मे न्या है शासी स्थाप नर्स है । हिरारे प्रदेशयाग्वसामा केसारेरा नसाधी साया हिरारे प्रदेश छी नरा नरुन्यते त्रसून् सहन्यास् सायासासहन्ते । नेते सुराने पिक्रागाया नश्चेष्रयः हे प्रह्वा यः पेर्टा यम् वे प्रदः सेर् ग्राम् स्रव्या सुरव्य र वेट प्रह्वा <u> सःर्रे ने अपववार्गे । ने सूर द सूर प्रन्य भर प्रवे के वारा यावरा पर गुरा</u> वशःहिरःदेःवहिवःवश्चवःयवेःवहिवःवग्चयः क्रुवःव्याः विवावसः वर्ग्यनग्री यन्ने रे निष्ठेश निष्ठेश र अपन्य निष्ठिश स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स र्देर्न्न् भेरत्युन्यरम् म्यूर्याते। यर ध्रेत्र्न्य्यायया क्रूत्भेर्यायया

क्ष्यायदर्दे र भ्री । विश्वयापत्र र भ्री । विश्वयाश्वर र भ्री । विश्वयाश्वर र भ्री । विश्वयाश्वर र भ्री । विश्वया ।

नर्झे समाममानि मानमा मुनामित स्वामानि स

वि'ग्रात्रशः गुनःपः न्दः सः गुनः पदेः शः सळं स्रशः नश्रृतः पः न्दः। विः वावर्यायायहेव वयाययायर्वे दार्ख्या श्रे रावस्व याद्या । विदायरातुः वहिना हेत परे वसान में दर्ख या न सूत पर्देश । दर में या न हे शा न दें सा ग्री र्देव'नश्रुव'रा'न्रा धेन'ग्रेन'न्राथ्व'रावे'ह्याय'र्देवाय'योर्वेन'न्रायख्य नर्दे। । नर्द्भानी सूर्वन १ निर्मा ने सुर्वे । सूर्वे । सूर्व । सूर्वे । सू नियान्यान्युर्यापया येययान्त्रार्ययान्वेत्र्युराने येययान्त्रापा <u> ब्रेट्स्</u>र्मेन्स्स्रेन्द्राच्यानरः ब्रुक्सेट्स्स्रेन्स्स्रेन्स्स्रेन्स् नेशनविव कुन प्रवर्त्त निष्ठेव प्रवेष्य प्रवर्त हैं या या की निष्ठे शामित सुवर्त्तान *ज़ज़ॾ्ॻऻॱॸढ़ॱढ़ॸॱॸॖढ़ॾॣॺॱॾॖ*ॻॳॱॿॖ॓ॱॻऻॳॴॾॖॻॱॸक़ॹॗॺॱॹॺॱॿऻ नन्द्रास्त्रास्त्रे हेरादेष्ट्रिं विद्रायदेष्ट्रिं वायायाने वातुः सुद्रायार्थे वायाद्राया अॱर्चेन'रा'निहेश'र्सु'र्सेन्'रमश'निल'हे भीत'र्सुट्रस'स'र्चेन'त'वी'नित्रशहेश' सम्रुव राधिव मी। विगावस निर्मा सेव रास विगावस निर्मेश स्रुस मुव मदे भी दाया हो दा के अरहा हो। दर्गे द्या प्रहो या वर्षे अरह स्वरूप द्या

नुःधेनःयःनश्चेनःयःमःस्याभिनःषुः श्चून्यःयःन्दःश्चेययःभिनःषुः श्चून्यःयः अर्चेन'स'नेदे'नर-र्'धेर'य'नग्रेर'स'ने'य'डे'बेश'नग्री वुसश'मा वे' ग्रवशक्ती संधिव है। विश्ववश्यी हे संखु सम्बुव संदे से संस्ट्र सह स्व धराष्ट्रवाराधिवाधरावाईनाधरात्री विशान्याधरानरान्युर्यानी सर्ने स्वेदे क्रुव त्यया ग्रम् दे में समाया त्यया तर् से होता । दे वसारे पी ख्यान्दर्भयम्। विवाहासुद्यायाके में नवमा विदाया होनान्दरावस्या वेशः व विश्वान्यर्भरमा धेरायः वेरायः वे मानशायर्भरावे नावशायः बेर्नायाधेवाहे। क्रायाय्यायायात्राम्यायायात्राम्यायायाया रेसानरामायमाग्राम्। देख्रराविषात्रमार्गेसमाराज्यामारेवेख्रमारम रोसरामारमी के निराष्ट्र श्रुर्यासरम्भूरसप्तरहे । सूरपरेंद्र सामित्र न्भेग्रासायासेस्रान्नरान्, शुरामानेते स्टेनेते विष्यात्रसाय्येतः धररेषा'धर हुर्दे । विश्वादश्चिष्याश्चायायात्रश्चायाः यात्रराष्ट्रायाः प्रमान नितः हु सुरुषः या विश्वः द्वी वा यर या शुरुषः वी । देवे : श्वेरः श्वेषः देवः द्वा र्रे प्यम्। म्रानी के न्रीम्याय ने हिन्य सर्देन प्रम्पत् होन्य सेन्यम हे·श्चेन् प्रदेन् प्रदे न्य र प्रदेश अस्य प्रह्मा प्रमायक्ष्य र प्रदेश के विष्य वस्य ह्र्यायारात्त्रयाराप्तराचा हो। वेयाया स्थार्या त्राप्तरात्त्र स्थार्य स्थाय स्था स्थार्य स्थार्य स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्या स्थाय स्था रायान्वित्रायाधिवाने। श्रें यानेयानम्याययान्ययानम्याश्रद्यायये धेरःर्रे । गावन पर प्रायाय वर वर्षः श्रें र परे पर् हो र पर्कर पर

 बिंद्या यहें स्वर्त्ता है स्वर्त्ता है स्वर्त्ता है स्वर्त्ता है स्वर्त्ता स्वर्त्ता है स्वर्त्ता स्वर्त्ता है स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर

त्रंत्रःभित्रः हु श्रुट्याः स्वाद्यायः दे दे त्यः वित्रः स्वाद्यः स्वादः स्वादः

यःन्वादःचःयःचरःन्,वार्डेन्रहेन्रहेन्रहेन्रहेन्रहेन्यःयदेःहेव्ययःशुःशुरःधदेःसुर्यः য়ৢ৽য়ৢয়য়ৼয়৽য়৾য়৽ৡ৾য়৽য়ৼয়৽য়ৣৼ৽য়৽য়৽য়ৢয়৽য়৽য়৽য়য়য়৽ मदेःषमासुःमेः मुदःनःददःन्यः ममःसुमःसूदःनःषदःनःमेःसुमःयमःसुः र्दर्भवर्षे । ने निवेदर्भेद्वर्भेद्र्यर्थर्थर्भरम् निव्यव्यायात्र्यस्त्रम् विद्र *ৡ৾*৾ঽ৽য়ৼ৵৽৶৽য়ৢ৽য়ৢ৴৽য়৾ঽ৽য়৾য়য়৽৶ৢ৽য়ৢঽয়ৼয়৽য়৾য়৽য়ৼয়৽ यग्राप्तह्याः हुः से रद्वार्याद्वाराष्ट्रस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स बेर्परपरपह्नापाने सेससप्यस्य सुर्द्रपत्री । देष्ट्ररप्य ह्येन द्वेन हें नहराश्चिमा ने त्यासुमायमासु सुरानानी सुमाशी सरामी शुनाहममाया ख्र-चःषरःचःचारःषयःवज्ञुरःचर्दे। |येययःषयःसुःरुरःचःदे। षरःद्वाः यर'भेर'य'ग्रेर'य'य'व्याय'यदे'येयय'ग्रे'येय'य'प्रद'प्यर'यर्ग्यूर' नदे कु सेसस यस गुरानदे के सामान्य र गुरास मार धेता सामे। दे र र शु:रुट:व:बेश:ह्यों विशःगशुटशःहे। सर्देर:व:वेव:श्रुटशःर्वेव:हेवः ब्रॅटशःब्रॅट्राचायार्क्रयानमःवर्देदागुरा यश्रायाम्बरम्मानी ग्रुपायायह्या राः सूरः सळे रः सूरः वी यः यह् वाः घरः नगदः वदेः सुयः ये सयः ययः सुः सेः र्दर्भात्राचित्रा सुर्वासेस्राभीत्रातृत्वर्गावानिः नान्दाध्वासमावश्चरः $\widetilde{\mathbf{A}}$

ने भू नुवे भुभ न्दा से समा समा सु नु न न में निमा सा ने ।

यळं दे हे न व्यान स्थान स्थान

श्ची या या प्राप्त के प्राप्त के

दे वर्षासेस्रयायसासु सुरानदे नित्र हु सुरसारा दे से सारादे सत्रु यानहेवावयास्यानेवाहाश्चरयाम् । वित्रात्ता श्री निवेश वित्रात्ता श्री । नररव्युरर्से क्रिंटर्नेख्याग्रेक्ष्मयायाष्ट्रनायरानक्रुयायात्र ख्या য়ৢ৽য়ৢয়য়৽ৼয়৽ড়য়৽ৼৼ৽য়ড়৽য়ৼ৽ড়য়ৣৼ৽ঀৼ৽ড়য়৽য়ৢ৽য়ৢয়৸ৼয়৽ড়য়ৼয় गहेत्रसंख्यानेत्रपृष्ट्रम्यामाञ्चेष्ट्रे देः पराख्यावस्याउदाक्त्यात्र यश्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रीः अष्ट्रशामाद्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र रायमा ने भ्रेमाममास्य भित्र कि श्रुम्मामा भ्रेमान हा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ळेत्रस्तिः क्रूटः द्याः खुर्यायः क्रुः यदः वयुरः हे। देः द्याः क्रुः यदेः दुर्याः क्रुं द नःयःन्वायःनवेःनरःवार्हेन्। चेन्। संदेन् सेन्यःसवेः द्विवायः सुः सुरायः स्या ग्री'मार्क्रअप्टरायेर'मार'धेर् प्राप्ते प्राप्त व्याप्त स्वाप्त स्व स्वाप्त स् ঽ৽৻ঀয়৽ঀ৾৾য়৽ঢ়৽য়ৣৼয়৽য়৽৻য়য়য়য়৽য়ৼ৽য়ৣয়৽ঢ়৾৽য়ৼ৽য়৽য়৾ঀয়৽ঢ়ৢ৽য়ৄৼ৽ नरःत्युरःर्रे विशागशुरशःश्री दिःषःस्थाःभितःहःश्रुरशःपःदी सुशः ગ્રે'ત્રદઃમી'સેમા' ગ્રુ' તે અ'બેદ' દ્ર'ર્વેદ' ત્ર' લેમા' બેદ્ર' ગ્રેસ અ' ગ્રુદ' તે' એદ્ર 'દ્રો (र्स्रेन'न्स्रेन'र्स्रेन'र्स्रुर्ग्या स्थ्य'ग्री'रेग्।ग्रुदे।घ्रन्पर-नगदन्यान्याने वात्र ख्यानेव हु श्रु ह्या सर देवा सर हु श्रे धे प्र द्वाय व ख्यानेव हु श्रु ह्या

धरावशुरारी विश्वासरे यशवशुराववे भ्रेरारी विश्वास्य श्री ने सूर खुरा की त सुरया र्वे गा सर से या पित है के त सुर गी स बुरा युर्यायानने निर्देष्ठ्रस्य केत्राचे क्षेत्र्या स्वापायान हेत् न्या सेस्यायापाटा <u> न्यायः नने ते क्ष्यश्राके शासुयान् नुमाना यत्त्रमाना व्यामाने । ने ते हे शा</u> शुःवितःश्रुद्रशःर्वेषाः सरःश्लेशः प्रवेश्वाशानेः देशः श्लेशः स्टूदः दुः दर्शे श्ले। देः गर्षे नशरे खेँग दश्मीन अप्तर्भ स्त्रन सदे की द ह श्रुम्य स्राधी गर्षे न हिरादे प्रदेश न्दरस्य बुद्धार प्रयुद्धार प्रधिदार्देश । श्रेस्र श्राद्याप्रध्य प्रथा प्रथा प्रश्ना दे धरावेँ वा त्रा दे त्र राशे अश्वाद्ये वाश्वादा वात्र स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्व नः केत्र में अन्तर्भे नः मदे अलि नः न्ना न्या नदे लि मात्र अप्टेश ना प्या धेता है। १९वरशायम् प्रत्येरप्रेशेशयरश्चरायार्थे हे से से सम्प्रायायात्र सेससःवितः हुः हससः नदेः नः नदः सेससः सर्केनाः हुः ननावः नः नदः धूदः सः यः न्भेग्रथः प्रान्दः अर्देत् । यरः न्यायः यः न्दः वरुषः यरः । यदः सूरः वरः वर्षः स र्रे। ।देवे देवा हुः वेद हुः श्रुद्या सवे व्याय दर में भ्रुय सावार धेद स दे पिन् ग्रीयापिन ग्रीयापिन पुत्राचन प्रमान स्थापा स्थापा प्रमान स्थापा । र्श्वेरः वरः वशुरः विदा अययः विः यावयः श्रीयः हेः वरः वह्वः छेरः रवः हुः विः नदे दस्य प्रभान्से वारा प्राप्त ह्वा प्रमाय विष्य वार्ष प्रभार्थ १ने भू तु तु इत्रम्भ नियाम् मार्मिय प्रमायमा धिन प्रा होन निया होन निया हो

प्रमान्त्रास्त्रे सान्ने प्रमान्त्रे सान्ने सान्ने सान्ने स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स् स्वान्त्र स्थान्त्र सान्ने स्थान्त्र स्थान्त् स्थान्त्र स्थान्

निक्षान्त्राचा धेन्छेन्न्त्र्यक्ष्यं स्वाक्ष्यं । निक्ष्यं प्राप्त स्वाक्ष्यं विव्रक्ष्यं स्वाक्ष्यं । विक्षान्त्र निक्ष्यं स्वाक्ष्यं । विक्षान्त्र निक्ष्यं स्वाक्ष्यं । विक्षान्त्र निक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं । विक्षान्त्र निक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं । विक्षान्त्र निक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्षं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्षं स्वाक्ष्यं स्वाक्षं स्वाक्ष्यं स्वाक्यं स्वाक्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्यं स्वाक्ष्यं स्वाक्यं स्वाक्

यशन्दर्भे संधित्या होत्या न्या न्या न्या विष्ट्रम्य अपि । विष्ट्रम्य अपि । नेशम्बन्यश्रम्भून्यदेशेश्रस्य स्टून्ट्रिव्यय प्रस्ति स्रम्भिन्य मन्दा सेसस्वित्रः सुद्रस्य मन्दा सेससः हे महिमायहर हुर हु र्वेनः यन्ता र्वेत्रस्य स्थानम् र्युत्रित्रेत्रेत्रायाया र्युत्रित्रेत्राया नःलूर.इर.वंश.स.रेरा रेषु.श्रंशश्ची.क्रेर.वहंश.सर.वर्केर.य.रेरा वे. म्बर्भाग्रीस्राकेष्ट्रान्द्रम् स्थाप्ता विस्तान्त्र नेष्ट्रम् प्याप्तान्त्रम् माया वर्गाः क्षेरे से सरा वर्ति । यर वेराया वर्षु रावा सुरावर से सरा प्राया नेव ह श्रु र र पर प्रमुर पर दिया । सुर भी मान्य पर व मे व दिया मी र पेव र , जुर्ने द्वार स्वार्थ । द्वार प्वार प्वार प्वार क्षेत्र स्वार प्वार के प्रार के प्रार के प्रार के का कि का कि जुरान के प्रार्थ के प्रारम्भ के प्रारम न्ना वेशमन्ना यन्याने कुन्यस्यान्त्रयान्त्रस्य वेतानुष्य मामिक्षिमान्दराष्ट्रमान्द्रमान्द्रा देग्ध्रान्द्रमा स्वानिस्थितः वा बेदायाद्रान्य अपने ह्या अप्दरास्त्र सार्थे द्रशासु । ब्रह्म पा प्येता धरःरेवाधरः हुर्दे । वेशः वशुरशः श्री

ते 'सूर ह्वा शर् 'द्वा द्वा द्वा स्व संवे 'खेद हो द्वा हे ने 'ह्वा स्व शहे 'वे 'वा द्व शहे 'वे 'वा द्व शहे 'वे 'वा द्व शहे संवे 'खेद 'खेद संवे 'खेद सह वा 'ह 'खूर 'शे स्व शहे से 'वा दे वा 'वा दे 'वा दे से '

र्रे । ने भूर पर १३व रायया हे भू हे भूर ने वे सुरा नर से सरा ने व ह राहित्रह्मायरावयेषावरावयुराषा हे सुहे सुर सेस्रा हे पाठेगाराहित क्रायरप्रेयानरे क्षेत्रे क्षेत्रस्थ्रात्राह्य अवस्थित क्षेत्र हास्या धरादमेयावरादगुराने। कैंशामहिशारीं परीक्षेत्री शेस्रशाही मोविमाधा *क्षेत्र'त्र'*भेत्र'कु<u>'</u>श्चुर्र्स्र'स'ते'त्वा'त्ते'वाठेवा'त्य'वाठेवा'त्रहेत्र'स'त्र्राचीठेवा' यापियाप्रमायम्भायम्भावित्रम् विकापास्यम्भार्भः । स्मिर्द्रम्भारम्भा *য়ৢॱ*ड़ॖॖॖॖॸॱॸॱक़ॗॸॱऄ॓ॺॺॱढ़ॾॖज़ॱय़ॱज़ॾ॓ज़ॱॸॖॱऄॕॸॱॸॺॱक़ॗॸॱॺॺॱॺॖॱड़ॖॸॱ नरत्यूरत्य देवे के स्थानित हु श्रुर्या निवास विमा ने हुमन व से समारी सेम र् हिमने वहीं व हिमन सम्बन्धी न मा नेयाग्यराह्यराययाशुः दुरानाष्ठ्ररायरा उदार् नश्चनयायया स्थार्यया शेशशानितःश्रुट्शायदेवायाःश्रेष्ट्ररावन्दायाःश्रूरःरी।

र्म्वारायवर्ग्याची ने स्ट्रान्यायन्त्रियान्तिया

श्चे मन्दर्यस्य मित्र भागि के निर्देश्य स्वाप्त स्वापत स् नन्नाः भेनः सञ्जेदः सञ्जेनाः सम्हेन्याः सदेः स्वानः नम् श्रीनः सञ्चदः न्नाः वी क्क्रिंत खेवार असर हैवार वर्ष स्वित्त चार खेत खुर वित बर पर देंतर गहेर:ग्री:देश:दत्रुट:गी:नश्रय:धश:बेद:द:बर:धदे:खय:र्:दग्रुट:बेटः। वशुराने। निर्मारम् नुनावर्षे व्यावस्थानिक वास्त्रेरानिक श्री मान्या &्य'विस्रराञ्चापठिवा'नशुप्राप्य । प्याप्य स्थापापे । प्रवाची सः विदाद स्था য়৽৸৴য়য়য়য়৽ঽঀ৽য়ড়ৢয়৽য়য়৽য়য়৽য়ৢ৽য়য়৽য়ৢ৽য়য়৽য়ৢ৽য়য়ৢয়৽য়ঢ়ৢয়৽য়৽ঢ়ঢ়৽ वर्द्या वित्रः ग्राटः वर्दे र वे व्यक्षः मान्वर विमा मी श वे त र वि क्षे त र वर्षः । <u> ५८. वस्त्र अन्तर्भाष्ट्रेय. संदुः ज्ञार्यः वर्षे स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त</u> वहें बरे र्नर में में में हैं क्षें बरायस मार र् वर्धे र हैं र राधे व हैं। । र र यायान्दर्भेययार्ययापदाञ्चनायर्षेद्राची सुन्वदे पुत्राहे सुर्गाह्र तथा गुत्रायसान्त्रमान्द्राकृतार्वेसाग्री साह्यसासु वि ग्विसान्द्राष्ट्रमे सर्वेद यिष्ठेशः शॅर्शेरः श्रुशः प्रदेष्ट्रात्रशं विष्यव्यात्रश्चात्रश्चेश्वराद्यात्रः श्रेश्वराद्यादेशे देशः रायान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्ति । दे स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य

नवेरारी ग्रव्रारे प्राप्त हा स्वारा स्वारा से स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स डेर-देवे-श्रुव-ख्वायाग्र-छ्व-यर-बुर-रु-वन्द-धवे-ध्रेर-र्से ।दे-वन्देव-रु-न्तुःसदेःश्क्रेंसःनेसःक्स्यरान्दःलेनःध्रेतःसदःन्याःयसःग्रदः। सेससःन्गुः वि'नावर्याण्ची'त्रया'न्द्रम्'यांसर्वेद्राची'त्यया तुर्रात्र् न्यास्त्रात्या विस्रयार्केया ব্ৰান্য্যুদ্ৰান্যস্ক্ৰৰাশ্ৰ্যুদ্ৰেল্পান্ত্ৰীৰ্যান্য্ৰান্ত্ৰ্যান্ত্ৰ্যান্ত্ৰ্যান্ত্ৰ मश्कितःहः क्रेतः में महारूप्ति । त्यान् में निरूप्त वा के वा प्राञ्चन हे । । वायाने क्रमास्यान स्वतायाने त्याने नाम स्वाप्त के स्वता भे हैं गाम बन में भेर मम ले जात्र मर्स भेतर या भे हैं जा मर्थे र त ते हैं र राहित्र्यी हिरारे प्रहेत्र त्र्यू रार्से सूस्रात् भे हिंगा या बना से विशासि वना र्रेदि:र्नेत्राम् प्येत्। र्रेर्स्स्रेन्स्मा प्रदेश्वेर्यास्या ग्रीराष्ट्रा नित्रा नित्रा वर्षाने वर्षाने वे से हर्ने से हिंगा सर नवगा साया हो न नवा ग्रान्य स्था हैंगार्री नर्रे न्यर नवगाय रंगाय होना नर में सूर वा ने पर्याय ने सूर यक्षेत्रः भ्री कित्राचे विद्या कित्राचे विद्या स्थान कित्र के विद्या कित्र के विद्या कित्र के विद्या कि कित्र के विद्या कि कि कित्र के विद्या कि कित्र कि कित्र के विद्या कि कित्र के विद्या कि कित्र के विद्या कि कित्र के विद्या कि कित्र के कित्र के विद्या कि कित्र के कित्र के विद्या कि कित्र के विद्या कि कित्र के कित्र कित्र के कित्र कित्र के कित्र कित्र के कित्र कित् धेव सुम्राम् भी सूर्य वित्रों निष्टित सन्दर्भ निष्य मुन्य मिन्न स्थित स्थान ऍन्यदेग्नान्यनाः भूर्वेनाः हुः नव्नाय्याः से हिनायः क्रेन्यायः क्रेन्यायः क्रेन्यायः क्रेन्यायः क्रेन्यायः क्र क्रॅट्स हिन् ग्री हिन्दे प्रहें ब नक्कें बादा प्रेव कें। । श्वापित कें निर्मा केंद्र स्वी प्राप्त केंद्र स्वी प्र वग्रिंन्यान्त्रीःहिंग्रान्यम्यङ्ग्रीयान्यस्ययाः ग्रीःङ्ग्रीयादी। वनः सें र्स्ट्रिन्यः हेन् नर्झेम्यायायाधेनर्दे विकार्स स्ट्रिन्स स्ट्रीन्स स्ट्रीन्य स्ट्रीन्स स्ट्रीन सेसरापरानर्स्स्रियः क्षराचराचरा उदादियाया सेदादसा सक्षरासेदादसा सेहरा महिन्यानससमान्त्रमर्देविसाङ्कानम्से नुदेश

ण्याने हें न्याने निकान हैन निकान ह

त्रवःश्वायश्यायः। ने ने वे के के क्या प्रस्ति । प्राण्डे प्रार्था विष्णा विष्ण

यार्गे यथायदे हे याप्यायळं दाया प्राम्य स्वाप्य हें गापा प्राहे वि दे हें द ब्रॅट्यायान्वाचीयासूटावरावशुरार्स्से स्वायरावशुराद्यीवायायरा होता धरावशुरावा ने शुरारे रें वा वा वारी खा हो। हे या न ये वा या स्राय से राय में क्षेत्रःग्रीःत्वरःत्,ग्रुक्षःके :इक्रयाक्षेत्रःयःत्ररःधेत्रःयः ग्रेत्रःयः ग्रुक्षः है। देःक्ष्ररः इतः यं से दः यः दूरः धेदः यः से दः यसः दसे गुरुः यः देः इसः धरावनिवा हेटा। इसाधरावस्था वासूटावासे दास हेटाया हे वरावन्वा धरादगुरार्से विशामश्रुरशाहे। यदे वे विषानशास्त्रा विमानश्रुराधि भूनर्थाशुर्वाशुर्वात्वा विःगव्यानशुन्द्रम्भन्याशुन्दे न्युन्त्वेयार्श्केत्र ममा हिम्पार से हिंगा परि र्स्नेस वस्य उत् र्सेट परि दिस्स परि हमस येत्र-५:वर्देन्-प्रांत्रे अविश्वापये नविन्नान् ग्री नात्रश्राधेत्राया । विन्नाप्र-५: इव्रन्धासेन्छिन्धिन्षात्रुःवासेन्धितः स्विः स्वित्रात्रुं वासुन्सानानान्धिवः वस्रसः उर्-क्रेंद्र-क्षेत्र-वर्क्के अप्य-पर्वेद्र-पयद-क्ष्य-अवे-खुद-देअ-येग्राय-पर्याग्रा राधिवार्ते। भाववाधरार्श्वेसारेसान्दार्गायम् विषावसाग्रीर्देर्गेहेन्दे रोसरा हे पारे पारा रंस र्वा वर्ष हो राहे हो राहे हो हो पार्व राह्म सम्मार ग्रेश्वेदेश्यळवरहेर्धेवर्वे वियामार्ट्य निराधेवर्यवरमात्ययाग्रामा *ॺॗॱ*ळॅंगशॱबूटॱनदेॱशेसशॱदेॱहेदॱख़ॱद्येगशदशॱधेदॱग्रेॱन₹ॅद्रः सूदशः यावियावरानर्सेस्यम् ग्रुष्ट्री वेरायास्ट्रिस्रि धेर्ग्यी नर्हेर्या वेर्या वे परिदेश्वेशः इयः धरः हैवाः धर्षे । वाववः धरः सूरः दर्गेवः अर्केवाः श्चेवः धरा

वि'गवस्य सेस्य है'गडिना प्र हिन्य न स्विन्य स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्था हैन्य स्था हैन स्था हैन्य स्था स्था हैन्य स्था स्था हैन्य स्था हैन्

ने भूरत्यति द्वार्था गुरार्धि पार्था राष्ट्रवाराष्ट्री येपार्था प्रमान्यति त्राञुस्रयःपःत्रः र्वेग्यायः सेत्रःयः सेत्रायः प्रयायः प्रदेः विः ग्राद्यः प्रदः ञ्चनाः अर्घरः नीः ञ्चनः खुनायाः भीयाः सरः ग्वः श्वेषाः नेः श्वरः या ग्वयः विः नावयः *য়ৢ*ॱড়ঢ়য়য়ৢ৾ঀয়ড়৾ঀয়ড়৾য়ড়য়য়৸য়য়ড়য় श्रेन्रप्रे इन्य गर्डेन् प्रेय श्रूया अर्थेन् नुष्य द्या ने प्य न्येय या स्र र् क्रेंग्रान्यार्या इययापर्यापया सरावावन नहीं नरावार्तेन थे वर्षा |अप्रशः गुनः रूर् १४व १ इस्र २१ थी । गुन् र १ वी गुन् र १ गुन् र १ गुन् र १ । वःवह्वाःश्वेषःश्वेःह्वाःवरःवह्वाःवःविःवःत्रः। क्ष्याः सर्वेरःत्रः वश्चवः यत्रः श्रॅर्भेरः हेना प्रदेश्वेशः रवः ग्रैशः श्रॅर्भेरः श्रेत्र श्रद्धाः तथः <u>नश्</u>रद्धाः प्रदेश वाश्रुद्रशः श्रूद्रः नः व्या हिवा पः व्रस्रसः उद्गानितः वहीतः नुवानितः व्यस्यः उर-देर-हे। गल्र-ळंर-थ्रव-इसरायरायेगराय-में नर्जेगर्या नर्गः बेर्प्यते भूपायार्वे रावाया हेर्ण्या वेरायर हेर्नाया भूगायर्वे रावता र्बेदि-देव-क्केंब्रा-घर-होट-घर्ने। कुःवनानी-यानव-धें-नुःभट-मी-ख्रम्थानवनः

त्रः याद्रेशः यापि व्यास्त्रः हो। क्षेत्रः याश्रुशः विवादिः विश्वः याद्रेशः याश्रुशः विवादिः विश्वः याद्रेशः याश्रुशः विवादिः विश्वः याद्रेशः याद्

वियान्यायं महेन न्यायया मर्गे न प्रेय खुया श्रे मानश्रव पाने।

ने अर स्र न्य १ नवे से हैं जा सवे हिर हे वहें व धेर या हो र स है व रानेशाम्रयान्दा अहिमारायार्शम्यारादी। हिन्यराउन्ही से हिमा नश्चेन्यने केंत्रस्य स्वापने स्वयायने स्वया सर्वे दिया होता स्वर म्या ने या नहेन न्या भूषा अर्थे म्या न भी न्या है न में प्या के उस র্বীমম'নম'ন্তুম'শ্রুম'। বর্দি,'দেমম'শ্রী'র্দ্দর্মম'শ্রুম'র মুমম'শ্রুম' नम्सी त्रात्रा हिंदासेम्सामा वस्ता उत् श्रिमाना श्री राज्य है प्री राज्य स्त्री राज्य हैं स्त्री राज्य स्त्री नेवि: ध्रेनः ख्रूना अर्थेनः नर्से अः धरः ग्रुः न्वी अः श्री । ने प्यनः हेन सेन्या अर्नेनः शुर्शेर नवे वहे वा हे व रावे व्यक्ष श्री य नर्शे द रावे खूवा अर्थे द र द । है व बॅर्स्साग्री सार्वेद इत्यद्यार्श्वेर विदेश दिवा हेद त्यसावर्स स्वीता नर्गेर्प्यते ख्रुवा सर्वेर्प्य विश्वायशाविद सदे त्यस मेर्प्य नर्गेर् विश्व बेर्नो क्रायाया रेक्ष्रिं धेर्याने न्या हेर्या हिन्या हिन् नदेःन्यादःनःकुरःदुःषःल्याकाःसःनेदेःयोँरःनुःनर्ग्रेन्।सरःग्रुःनःवेःयाल्वः बेर-रे-गहेश-विंवर-बर-री । गहेश-गर-वे-व-वरे-व्र-क्रे वर्गाहेत-परे-

८८। वह्याःहेरायश्वर्यश्यदेश विश्वाशुर्यश्री । देख्रःवेयाद्यः रामा त्रीत स्त्रीत स्त्रीय स्त्रीय स्त्री स्त्री स्त्रीय स्त्र हेत्रायशायन्शायवे प्यसाम्चीशायमें प्रवेशभूषा सर्वेदापादा नर्भे साधादा है। नर्झें अप्टेर्निरारिया सूर्रार्चिन प्रदेश्वी मान्यारे विष्यात्र स्टर्ने अप्टर्ने अप्टर्ने अप्टर्ने <u> चेत्र्या ने क्ष्मानङ्गेस्र सम्पन्ने ने तृष्ट्वा हुन्सामान्द्र सेस्र सः हे पार्ट्या प्राप्त</u> निवर्तः प्रसेयः विद्वान्यावर्यः देः धदः विवर्तः यह्नवः यदः प्रयुदः देश । याववः अट.बे.केंग्या.मा.सक्त.स.स्मात्रा.लट.स्मात्रा.सट.चेट.का ट्रेट.क्या.ध. यसमित्रेसमाराधरासुरानसायमें यर्देरासरे या हैसासरा हो राहे। व्रदास यम। देखायमाद्रास्तिः इत्यावर्द्धेन्याधेदायात्रेदाराद्रान्यम्भायाते वे निर्वापदेवा हेव सवसप्देवा हेव यसप्दिस्य रावे वर्षे रास्य पर्वे निर् त्रदें श्रूयावयाधीरायात्रेरायाने केरायायवायरात्त्रते । विष्युद्धे ख्रूरा यवः सरः त् : ब्रेनः सः ने : क्षुः ने : क्षुन् : क्षेत्र : सळवः ने : न् नः ने : न् वा : वन् शः स् शः ने वे : निव हि श्रु म्याय प्रमास्य अया है या है या प्रमास है दाने व्यवे व्यावेद हु या या दर षरश्यर्यस्त्र्यूरर्से । वारावी के ते पी पी त्या होता या त्या विरामह्याया য়ৢ৾য়য়ৼৼঀয়য়য়য়ড়ৼয়ড়ৼয়য়ৢৼয়ৼয়য়য়য়য়য়ড়য়ৢয়য়ৼড়য়ৣয়য়ৼ वि'ग्रव्याप्त्रम्'या'अर्वेद्रम्'मे र्सुग्रयाम् अर्क्ष्य्याम् स्वय्याम् स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थः स्वर्थः स्वर् धराशुराधारेवे के तारे वहेगा हेता धवे व्यवस्था यह गाहेता वया वर्षा मदेख्यम्यान्यो अदर्शेन्य स्दे न्या ने त्या क्षेत्र मा स्वीत्र हिन्ते । विश নাগ্যদ্রম:র্ক্যা

ने त्यायहे वा हे व स्वेश खूवा अर्थे म्याय स्वाय स्वय स्वाय स्वय स्वय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वय स्वय स्वय स्वय स्वय स् र्गेरासायावित्रमाष्ट्रामवे वित्रमाया ग्री ह्रसामा उत्तरी क्षेत्रासे । विदेशा हेता यशयद्यारादे ख्रूमा सर्वे ८ १६ सम्पाशुर सारादी यदेव प्रवे वा से १ १५ मा यायार्श्रेम्यायायाय्व दुमामी क्रियायाय्व प्राचित्र विश्व विश्वेष में विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व वनानी नन्ना सेन हिनास पदे भू नर्दे। । ने भू म सूम निन्दि पदि । ने भू म ग्री भी प्राची प्राची के प्रे त्यायहै मा हे दाय अयद्भाय दे त्य अ मी अ अ वर्ते त्यावहिषा हेत्र प्रवे त्यसामी सावर्ते प्रवे पाट बषा है वर्त प्रेंट प्रवे हि रायया देखान्द्रमाळेखिल्यहेनाहेन्द्रयायाचित्रयायींन् वशुरःविरःवहेषाःहेदःयशयन्द्रशःयवेःयशःश्रीशःसःधेदःयवेःयारः वयाः र् र्षेट्र हे त्र हुराया निले हे। त्रे के त्रे त्र स्रो त्रे त्या ही रेवाय हरा ५८१ केंशरिन संभित्र ग्राम् केंत्र विषात्र शक्षेत्र क्षेत्र सित्र में हिला में <u>५८। ने निवेतर, ५०८ में के अपरान्ने निवेक्त सम्मार्थे स्थाश्वा सार्वे स्थान्या</u> धेव न हो वेश महित्राम सूर में निया ही में या परि हिया परि हिया परि नन्द्रभित्रे वि वाद्रश्रेच प्रमामस्य राष्ट्र दे वाद वा वी नद्या से द्राय से र र्शेन हिंग मदिने अन्तरा ग्री अन्त श्रुन्त अर्श्हेरित या ओन्ति। ने न्या यन्या ओन् राया क्षे क्षेत्रा सदे हिन्दों । । नेदे हिन्य पर द दि वात्र या के हिंगा राने हिन द्रसाविवार्श्केटाला लटायावित्रवायात्रीत्रस्यायात्रवर्ग्नीत्रवायार्वेटायर्श्केयाया उयाचेन्यमायहैवाहेव्यविष्यमार्वित्यमार्वे वर्षे । केंसायने यास्मा

क्रुश्राराधित ग्रारार्श्वेत वि गात्रश्रा ग्री प्रदेश दिया देश विगापा ग्रीस्थारा भ्रा केर नक्षेत्र नक्षेत्र मदे प्रवर्धे ह्यार्थे धेत्र त्वी र्शे से से हिंग मदे भेरा र्या ग्री अप्यन्या सेन् प्रवे में त्रायान् सुन् त्र अप्यक्षे स्याया से म्याया या स्याया <u> न्वायः धरः नन्वाः भेनः पदेः नें नें भें न्यायश्चः ने व्यायहेवाः हेनः पदेः</u> यसमिन्स्य वर्षे न प्येत है। पर स्व म्यूस क ने मिन्स क्रिन न र हो न पर लर.य.यु.वु.चु.रयाया.यु.र्ययात्रव्य.यु.र्येया.यबूर.द्र्या.वुया.यबूर्यात्रवी.र र्ने । वर प्र अरुष कुष प्र प्र नगर हैं व प्र नग से प्र प्र पे पे दें व विष्ट प्र कुप ग्राप्ट ननेवासासर्वासुसान् हिंगासामितानो हासाञ्चेतासाधीवावतराळे ने त्या वहिना हेत त्य अप्यत्य अपि अन् स्वेत् स्वी वस्या अप्यस्य स्क्रीत् से स्वराधका वहिमान्हेर्रायदे त्यसार्वे त्र रावर्ते नित्र विश्व शुःषी नित्र मार्थ निर्माय निर्माय राद्राञ्चमा सार्चर पञ्जी सामराभी तुर्भामा भी तुर्दी । चुरा से सर्भा पळ दा कु पा यःश्चे, नः निष्ठेना नी अर्थेन अर्था धारा श्चेत्र सामा अर्था श्चे, ना श्चे अदे त् अर्थे र र्श्वेरायम्बर्गन्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्र वेवायायदे:तृयासु:प्रयायायायसःसे:पङ्गेतःप्रयाळे:दे:प्यापदेवा:हेद:पदे: यसमीसप्रमें न विसन्तर्भी नन्यासेन मंदेरेन सम्मासास सेव हैं। वर्रे हे सर्हेर वर्षा क्रेंबर्र न्यं हे हैं वर्ष न्यं हुन है सर्वे स्वाप्त हैं स्वाप्त हैं सर्वे स्वाप्त हैं स्वाप्त हैं स्वाप्त हैं सर्वे स्वाप्त हैं सर्वे स्वाप्त हैं सर्वे स्वाप्त हैं सर्वे स्वाप्त हैं हेव'गठिग'त्य'ग्वा । दे'धे'श्वेंत'त्'वर'क'सत्र्वा । वेर्याग्रुद्याय'द्रा समुद्र-पदे मेग-न्यद श्री माल्न भी पळ म शु ख्रा भी द श्री । क्रिय में द वसम्बार्थः संभित्रार्थे न स्टर्मी निवेदः संभित्रे वि

ने भूर द श्री रें या या वि र या या श्री स्वारा उद श्री या या श्री स्वारा द्वारा रादे देव नक्षेत्रया वया हेव से द्या स्वाप्त या से प्राप्त व्या से प्राप्त से सर्धरावन्द्राविः विवादसः क्षेत्रेः दिः दिः दिः दे विवादि विवादि । नन्द्रभवे वि ग्वस् दे वे श्रे व्दर्गिष्ठ रागवे इया वर्शे राम इस्र श्रे हेत बॅर्स्सर्बेर्न्यतेयाविर्न्यम् नेर्यस्य वर्षेनाकेव्यस्तर्वेनान्यवः मानिक्षात्रीं स्वावर्ति स्वावर्ति का यह हिराहे वह ता निक्षुता हो का निता वेगाकेत्राययदासूग्रायाद्वास्य स्वीतास्य होतास्य हिनास वस्रश्राह्म क्षेत्राच्या वित्राम्य वित्राम वित्राम्य वित्राम वित्राम्य वित्राम्य वित्राम वित वर्चेर्स्य वस्र राज्य वस्त्र वर्षेत्र वित्र वित्र प्राचित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि ग्री मिल्ट इस्र अस्तर अन्तर्भिते वि मित्र अग्याट खूटे क्षा या द्रिया अप्यायस धुगाः अळ्दाः द्रयाः भेराने व्यासेना साराव्या द्रसेना साद्रसा सुनि हात्या सेना सारा <u> न्रोग्रास्ते विन्यम् न्रान्यक्षेत्र यदे व्ययम् विग्रामे विन्यम् स</u> गर्नेग्राय:पेर्टिन्देव्हेत्र्यीःश्चेत्रेत्यःयःसँग्रायःस्थ्रेरःद्वेयःयःदर् ने न्या मी यहित से न्द्र सन्दर्भिय निव त्य से याय से तर्स तर्स व स्ट्रिय नि वस्रश्रास्त्र मुद्रासेंद्र प्राधीद प्रश्रा हिटा दे प्रदेश दे दे दे दे दे ते हैं है है है के प्राधीद र्दे। । ने पानमें न्यान्य स्थाय में प्राप्त स्थाय से पान के क्रिन्मी हिरारे विद्वानस्य उर्व विष्युवा वी हिरारे विद्वार्त वर्त वर्त वास्त्र स्था

हिरारे वहें व त्यास्रावस्य पर्रेत्यस्य वि भूगा गढ़िसाया साम्रास्य हुर्दे। ने वर्षानि के कि स्तर के निष्य रान्वेत्र पुः सदः पदः। वार्डें र्वेदे द्वेत्र रावे स्वा सर्वे द्वेता सर्वेदः वी हेत्र राव होतः मदे के न प्येत त्या भ्रमा अर्घन प्यापन हें त से न सम्बद्ध न स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स नवे वि नवार्या भी द्वारा उदा ही ने वा पान्य दिया मान्य हिता है । मदे । यद । वेया म । के कुर वुद र्से द नदे । भूया सर्वे द विया प्र र हें द से द स । मदे । ড়ৢঀ৾৽য়৾য়ৼঀৼয়৻য়ৼয়৻য়ৢয়৻য়৻ঢ়৾৻য়৾ঽ৻ঢ়ৢৼ৻য়৾য়৻য়ৣৼ৻য়৻ঀঢ়ৢয়৻ড়৾ৼ৻ रायम् अयाते सुत्रसुत्रसुत्रार्केषामानदेः प्यताया पीत्र ग्रीसे द्रासे सुर बेवाया द्येयावे बेन्द्रां के सुनामित्र प्रवाया प्रवाया के स्थाने वा स्वार्मे व र् महेर नर् ने नर्ग सेर पदे रे किं न हेर् किंट र् कुर पदे खूरा सर्वे र नश्चेत्रान्य वुर्वे । दे प्यत्यदे सूर्यस्य भूत्रा सूर्य की विषात्र या यथा याह्रदर्दररेदि हेर नर्सेवाश ग्री अश्वर्ष्य भाग विवा में नाद हे । प्यद कर ग्री नश्रमान्त्र त्रमान्त्र व्यापान्त्र विष्यांत्र स्थाने स्थान वशःस्वाः अर्बेटः वर्से अशः प्रशः दिर्देरः वदेः दक्षेटः वः अवदः द्वाः यशः र्सेवः नवे वर्षा वर्षेन पर तुराया नन्ना सेन पवे ने वित्र हेन साहेन सानेन अप्रक्षेत्रश्चरम्य विष्यत्य । विष्यत्य । विष्यत्य । विष्यत्य । विष्यत्य । विषयः । विषयः । विषयः । विषयः । विषय मदेः भ्रूना अर्बेट नी या है। प्यट से ट्रामा स्वतः स्वतः श्री हैं वर्षेट्या सर्देव श्रूरः वस्रकार्य क्षेत्र वार्ष सेत्र केते स्रोत्र क्षेत्र स्रोत्त स्रात्र स्रोत्र स्रोत्त स्रोत्त स्रोत्त स्रोत्त स्र

यहेश्वर्स् । निःह्ररः प्यत्वेश्वरः स्वेश्वरः स्वेश्वरः

য়ूर्यत्विर्यते विष्विर्वा विष्यते विष्विर्वा क्षेत्र विष्यते विषयते व

हिन्यम्नु वहिषा हेव प्रदेश्यया नर्शेन् खुर्या न सून्या या विश्व

धिन होन विन वर्ग हिन सेंद्र अप्ता क्षेत्र निम्म प्रमें न प्रमान करा होन की न रेगा'सदे'भेन्'होन्'नर्झे अ'स'हे हेंद'र्अन्यास्य स्थापर श्चें न'नदे'यथान्न सें धरावाशुर्याप्या अळ्वाहेराश्री श्रीरारीवाधावश्चियाप्याश्चित्राराधीरा होन् विनः संभित्र हो। क्रम्य स्था ने स्था धेन् स्था होन् सदे स्था स्टार्स स वे हे न्विन हुन् न हे न त्य है और दुष्पेर त्य हो न त्य अपित के न के न त्य क्रेमिडेम्'मंहेन्'यास्रेन्ममे नर्न्न्यस्त्रम् स्राप्तेन्स्त्र ब्रॅटशक्ष्यस्थ्रिट्यदेखश्राद्रास्यदे। धेट्रयाचेट्रप्रवेतास्ट्रेवः बॅर्स्साम्स्रसायस्य सेस्रार्श्वे रावरावर्ते नामिस्सर्वि सर्वत हेन्से सेरारेवा मदेखिन्या होन्या वाराधिक याया व इस्र संवित्य के वाराया वीं स्र स्यापारा धेव भः भ्रे वेश ग्राह्म स्थाप हिंदा है स्थाप हैं स्थाप हैं स्याप हैं स्थाप है स्थाप हैं स्थाप है स्था स्थाप है स् धेन होन क्रिया दशायहै वा हित या नितायहै वा हित त्य शायन शाय दे कवा शा चलामी लयान में या पर पा शुर्या प्रथा श्री । सूर प्रभू प्राप्ति ले पार्य रहे र्श्वर्र् राज्ञ्चन्यावया ने वयायहैना हेव या प्रत्ये नित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र য়ৢয়য়য়ৼ৻য়য়ৣয়য়৻য়য়৻ৡ৾য়৻য়ৼয়৻য়ৣ৾ৼ৻য়৾য়৻ড়ঢ়৻ঀৢয়৻ঢ়ৢয়ৢয়৻য়ৼ৻য়ঀঢ়৻ मायदे सद्यान्त्रे नक्ष्र्याचर्ष्या विष्या इस्य श्राधारा वायवा चराया हुरा नमा र्वेत्र मी र्केश सर्देत्र य में दर्मा या सामसाम सम्भूदसा परि में दिसा इस्र में स्वाप्त के पारित वि पार से वि पार से वि प्ता न से वि पार से वि वर्भार्द्रवार्धेन्सार्श्वेन्द्रवार्ध्यायने नार्ययान्यस्थार्थेव्यसूनार्दे॥ नेशन कुन शन्य निम्पानि । योग्य सम्साम स्थानि ব্যথম.

महत्र-प्राच्चित्र स्थेन् स्थेन् स्थिन् स्थित् स्यात् स्थित् स्यत् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित

यक्षव केट्र से से स्टेग पान हाट क्षेत्र या वे प्रक्षेत्र समा वे प्रक्षेत्र समा वे प्रक्षेत्र समा वे प्रक्षेत्र समा वावर्यःसूरःसर्वेनःमःवार्यरःतुःनसूनःमरःसेःत्र्यःसदेःस्रीरःर्रे। ।सूरःसदेः न्र्राचावितःस्ट्राच्यायःस्ट्राच्य्र्राच्येन् चाडेवायायःस्वर्ष्ट्राचेन या नित्रश्चर्यायार्चेनात्रविषात्रयायात्रानास्य प्रतिष्यात्राचेतायायार्थेनाया रायशाम्ब्रुद्रशासदे भ्रिम् हेम्र नर्द्वम् वार्यम् स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः वर्षेन में। इनेशन हेर नर्षेनशन र सेंदि धेर हो र हुन नी में ना अहे हेर-नर्स्न्य राग्ने राजस्यानि द्वापाय में राजस्य राज्ये । यो प्राप्ति । यो । हेर नर्भेग्रायान्द्रास्य स्त्री मिंग्या स्रोत्ते । देवे में द्राया है स्वर्भेग्राया स्वर् नस्यायदे विताद्या दर्गे प्रायया श्री वित्रानस्य विताय प्रायस्य यदे हिर्दे पद्देव अर्चे न मेरिन मेरिन ने पद्देव वस्त्र वर्ष कर कर् गडिगामार्वित्राधित्राम्या ग्रालुमाळे ना इस्ययात्रयान श्रीना ना सूत्रात्रा ख्या अर्वेट खु वें या वे या व रा वर्षे या या पार की वा तु हु रा यर खूट हैं।।

वि'ग्रवस'य'नहेव'वस'यर्देर'स'य'ळग्रस'न्र-'न्य'नर'न्नेर'संदे'र्ख्य' वै। स्र-निवर्धिते विष्यवस्यायस्य निर्देशम्बर्धिता स्वर्धे विस् धर-र्-अ:र्-१:ध्र-धःरे-४ंअ:विगायःग्रेंअअ:धर-ग्रुअ:द्रशःध्र्वाःअर्वेदः गिहेशन्तराधरायान्त्रीयस्यात् वर्तेरायायस्याग्रीहेत्स्यायरेत्यग्रा नः धरः रे विवाः वः दर्वे वाः धरः भे त्रान् रहेन से दसः धने सः रेन प्रान् भे चित्रेश्चेन'मश्चेंद'न'क्ष्रं हे श्चेंश देवे स्चेंद्र'मं यशकाळग्रामाद्राचया नवे नश्यामान्त्र प्राप्ते प्रश्चिम स्पर्ते प्राप्ते विष्मान्य से प्राप्त हेत् त्र ख़ॖज़ॱऒॾॕॸॱॸॾॣॕऒॱय़ॸॱॻॖढ़ॕऻॎढ़ॕॱढ़ॱॺ॒ॸॱढ़ॏॱज़ढ़ॴॱढ़॔ॴज़ॱज़ॕॺॴय़ॸॱॻॖॴॱ *वः*हेवःब्रेट्शःसः अर्देवः शुरः वर्षोः गर्वेवः सरः न्वन् । सः न्दः हे ः क्षूरः श्रेः वर्षायः वे'ता र्भुव'सेन'ने। सूर'ग्री'ने'वे'वहेग'हेव'यवे'सूग'सर्वेन'वे'गवर्ग'ग्री' र्प्रिस्स्स् स्वाप्त्रस्य प्रति । वर्षे मार्चे । वर र्थेव-र्-पर्वे नेदे हेर-नर्थेग्य-र्-र्ययः नस्यः पदे वि ग्वयः ग्री-र्नर-र्-चुर्यासदिः धुर्रार्से । कवार्याच्याच्युचासदिः खूवाः सर्वेदः देः व्याप्यदितः यदे द्वारा उत्र प्राची स्वाका ग्री द्वारा उत्र वाहिका ग्रीका कवाका या प्र चलानमाचेनामदेखलामहिकालका वर्नमाचे त्या द्वीमाचे स्वरी स वयानक्ष्मनः रुषाः भूवायाधेवार्वे । यदी या हेवावी वद्या से दारी सुना रुदा बर्ग्यार सेर्प्य देश्वे र्रेल प्राप्त हा कें रायरे प्राप्त वासेर प्रदेश स्वाप्त र क्रेंब्रासेंट्र अञ्चेंद्र न दी। क्रवायाया दे त्यायदेंद्र प्रवे परेंद्र क्रवायाद्र न ज्ञाया यम् शुः चित्र श्री माम्य हिंदा स्थित हैं स्थित श्री हैं स्थित हैं स्थित हैं स्थित हैं से स्था हैं स्थित हैं स्थित हैं स्था है स्

रेगामिरे देशमानह्र से पिर्यामा द्वित रुवि मान्य गुनमा से राज क्रिक ॲवरेगिहेशन्धेर्यायाहेर्याचेस्यान्स्य स्त्राचेस्य स्त्राह्म भे त्राया पर वे पार्या मुन गुर से से र रेग प्रम र से र राज्य प्रम स ने या हे उसान क्षेत्रसा ग्राम हैं ता से मार्थित स्थान वि स्थान वि से ना नि स गान्यस्थ्रम्भार्यते स्थित्रम्भार्यत्रम्भार्या स्थ्रम् । यदे स्थ्रम् स्थ्रम् स्थार्थे राज्य वस्र रहन के क्रिया प्रमान विवासि । ने स्मान स्थानी हिन्सी के स्थानी हिन्सी के स्थानी हिन्सी के स्थान स्थानी हिन्सी के स्थान स् र्शेन्दिन्दिन्दि अळव केन्द्रिन्द्र कुर्ने वा या वे ने शादवाद वे शायाद्र ने शा विषयान्यस्य मुद्दार् विषुद्र निर्मेश मिरा स्वाय स्व नशर्मेश्वानश्रसायश्वात्रभात्रश्रानश्चित्रामित्रभात्रश्चात्रभात्रभावित्वाः तुःवि रवार्या ग्री दिव दे व्या से साम हो दाया है। से साम व्या सुदान वे व्यो दा हो दा है। | पर्देर १६व : राज्या | अळव : या दे १६८ : प्राप्त ये पाय या वि : पाय या दे पाय या प्राप्त या वि : पाय या प्राप सर्हरःश्वेंसःसरः ग्रेन्द्रि विसःगश्चरसः भिनः। धनः ग्रेन्द्रगः सदेः स्रवसः शुःष्परः विः भ्रुषाः वर्भे सः सरः पाश्चरसः या धिरः वे रः र्राटः भ्रवसः शुः रेवः यःश्रेवाश्वर्यते वित्तुवायः द्रशेवाश्वर्यस्वाशुद्रश्वरादी अन्तर्यावाद्यः दुः ख़ॗज़ॱऒॿॕ॔॔॔ॱ॔॔ॱख़ढ़ॱॺ॔॔ॸॱय़ॕ॔॔॔ॸॱॹॶॖड़ॺॱय़ॺॱढ़ॸऀॱॸॗॹॱज़ॸज़ॹ॓ॸॱऄढ़ॱफ़ढ़ॱक़ॗॱज़ॱ नर्सेस्यास्येत्यप्यास्येत्रास्येत्रास्यायार्ये।

नेश्वान्त्रेन्दिः होन्दिः ह्या अर्थे अत्यान्त्रे अर्थे विष्या विषया विषया

नर्झें अर्या प्येत्राया प्यम्पन्धम् रावे सम्भः विष्मा सम्भः ग्री देवा ने स्वा के पा प्तृत्वहें पान्य दे वि यावया न क्षेत्रा में प्रदेश में प्रदेश प्र शुःनर्झेयामार्गेययामायामहेत्रत्यापर्ने<u>न</u>्यवे हेत्रस्य सेत्राचेत्रा वित्रा र्रे भ्रुरामन स्वाप्त प्रतिवास दे । स्वाप्त स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । धेर्ने हेर्ने । देन्वयर्गे नत्यः श्रुर्ने राज्याने म्या हेर्न्यदे वर्दे रायदे हें वर् नर्सिन्न न्ति निर्मेशिक्षेत्रस्य सूर्यास्य सूर्यान् हिनाय हिन्से न्दायान्यानिवान् से कुं नाधिवान्या दिवाने क्यायान्यान्यान्यान्यास्या कु न धेत सूरा दरा ने सन परे हिन नु कवारा खुल ने द नु सूर्वा प दिवा यान्सेनायायात्राकनायायाः भ्रीप्तरासर्वेत्त्रया ने सूरायवे सुरान् नर्भेसा यायान्वायान्य होन्याने नहीं नायते प्येन होन्ते । विनेश्वाने साञ्चन्याया याश्चरकार्के स्रुवायदे राक्तुयार्श्वरार्दे । दिवयायराश्चरास्र दे रावायार्शे । र्नेव'ल'र्से'र्सेर'न्रेंन्'रा'न्र'न्ध्रन'रावे'स्रवर'हे'याठेया'तु'वर्हेया'रा'याहेरा' ग्। गुरुष्वेर नश्चें सर्या यर्देर प्रतेष्ठें द्वारेष स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स गशुस्रासन्दर्भवित्रान्दर्गामाने केंत्रस्य श्रित्रमित्र गहेत् सेंदि । दे

स्र-१९४ स्वर्धात्रभामः स्वराहः श्वर्धात्रभामः वाद्वित् स्वर्धात्रभामः स्वर्यात्रभामः स्वर्धात्रभामः स्वर्धात्रभामः स्वर्यात्रभामः स्वर्यात्रभामः स्वर्यात्य

त्रस्यान्त्राचार्त्राव्यास्याद्वान्त्र्याची न्यू न्याद्वान्त्रस्यान्त्र व्याद्वान्त्रस्यान्त्र व्याद्वान्त्रस्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वान्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वानस्य व्याद्वान्यस्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वान्तस्य व्याद्वान

नेवे नश्चन स्वाम भेव र हु बन मवे सर्ने भेग रन ग्री सर्मे स हु ही व माया र्शेग्रयायात्रयाये अर्थायहिंगा द्धेया द्या ग्रायुर्याया द्या या देशे अर्थे स्थाती स्थाती स्थाती स्थाती स्थाती स नर्गेर्नार्थस्यः इत्रायः द्वा देवे द्वीत्रायः सर्वे सेवे सुत्रः त्यायः नः ८८। वसवासाराः विवासासे ८ ग्रीसा ग्रीटा सार्वाटा सार्वेदा सार्वेदा सार्वेदा सार्वेदा सार्वेदा सार्वेदा सार्वेदा यान्वनायानसुन्वनास्यित्रम् नसूत्राने वासुन्याने नसूत्राया विष्युवा गिरेश १८व साय वियायसम्सा सहित पासून १८व साव क्रिया समान ग्राया नन्ता ने क्रम्भ भी में वन्तु अदे क्षेत्र में सन्ता ने मधेव अव मा हु गश्रम्भामान्या वाववाणमान्त्रुभास्रवयः वशःश्रीमानवे वर्तः चिनानक्ष्मा हेशनान् र्स्ट्रिट रहेल ५८८ वर्ष मध्य विष्युत्र मध्य विषय । इस्रश्रीःश्वेदःर्भे इस्रश्रायेग्रायरायहग्रायाहे रेदरावर्भे द्रायायरा नक्ष्र्वाराज्यारे देशासराने शासरा हु द्वीं शाहे। वदी इसशानश्रया पृत्र मापि हिया त्या है। श्री मार्थ साथ मार्थ साथ है है साबु मार्थ साथ है है साबु मार्थ साथ है है साबु मार्थ साथ है है साथ है है सा है साथ है साथ है है साथ है सा यःश्रुद्रअः पदेः त्रअः शुः क्षेत्रा र्ड्यः पेत्रः ग्रुदः देतः येत्रा शः परः यः ते । त्रश धेशक्षशयेदाग्ची के प्रविश्वास से प्रायम स्वर्ध है स से प्रायम से स नश्चुद्रशः प्रभा वे निः विवासः प्रस्ति विवासः सः से दः प्रवे ह्वासः स्था विवाससः ग्रे मुंज्यस्य स्वराद्य प्रताय के निर्मे स्वर्म स्वर्म स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय दे पहीत्र पुरिवास सुराया ही तर गिरु रागिये हिरादे पहीत्र ह्यू वर्षे राम शेसरान्गु'रार्डस'विगार्चेन'त्र इत्य'दर्चेर'त्नु'सेन्'ग्रेर्ह्ग्यर'रेस'सळ्द क्षेत्रः स्वान्त्रः वर्षेत्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रे स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्व निशः क्रुंत्र श्चे त्या विद्या व्या व्या विद्या वि

पर्नेमःश्रूषःम

स्ति। हिर्द्ध्वःश्चिर्यं क्षेत्रः क्ष्यं विद्या वि

वार्वे अर्भुरुषायायी। विवायान्यापरावी वेरातु रेवारे के। दिरावया यहूरी विर.गुअ.मैरअ.सपु.यविर.जयायर्थयार्थरापु.हुरी वियायारी. बेर्'रा'ग्रं वेग्रथ'त्र्य द्वार्यर ग्रंथा । सर्'र्'र्वेश'रा'त्रग्रथ'तरे'र्दे वेश। । गशुरमाराने पी में बायदर न् शुंदा सर मेगमा । हेर प्यर से में ग वहेंगानिक वित्रावस्थायमा । १८० में रावस्थानिक वित्राचित्र वित्र वि नश्यामात्रम्या । दे द्याची श्राग्य द्राद्यायश्यायः । द्राद्रेव वश्रीं द्रा द्ध्याद्दे प्रविद्याले या प्रमास सिंद्या । दे प्राधिदाद कुषा प्रदे प्रमूदाया । दे विगादयःवर्शे ग्रुश्यः वार्वेदःयः कुटा ।देःष्ट्ररः ग्रुश्यः शर्थेवायः सेदःग्री। गल्र मी शाले मात्र शान श्रुवा सदि रहेला । वन्तर सायदे प्यार कुषा वा नसूत्राम सेटातु मात्र मा श्री सार्रे ।

ने ख्रम्य निष्य विषय स्थान के वार्य प्राप्त के वार्य है ख्रम पर्देन राःक्षरानवगारम्यामरानवगाः हुर्सेनास्ये से हिंगासन्दा ने प्यराहीराना <u> ५८:ज्ञयःनवे:न्रथःन:५८। स्राधेंत्रःग्रे:छि५:सर:५गवःनरे:५८:नरुशः</u> यदे वि यावर ने उस श्री र किया के रासे श्रायमा ने कि व किन श्री व के^ॱसःसेंजाःसरःदेशःसदेःलेशःर्नःनङ्गेर्नःत्रशःध्रृजाःसर्वेदःनङ्गेसःसरः ठु:८वीं याते। देग्धायाधेवावाते हारे प्रहेवारी खारी खारी वाराप्य प्र . बुद:र्सेट'न'धेद'मश्रा दे'र्डस'य'र्गेसस'मर-ग्रुस'ग्रट'दे'ह्ससस'ग्रे'यस' निवन्त्रित्रें विस्वायि यात्रे यात्रें विस्वी क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या विस्वीया विस्वीय विस्वी वशुरावदे भ्रिरार्से । दे सूराधर क्षेत्रारे सादर से त्या हे सूराद से वाका यायाक्षेत्रकानहरूपराज्ञकात्रकान्वेकार्याज्ञ । म्रे। यने भूर ने अपि सूर न जुर न अग्रुव हिंसे र अपि अपि विव हि र्श्वेरः नरः वशुरः र्रे । ने सः सः धेव व सः श्रेम् य र उव इस्य र न विव र् र हिरः दे पहें व र या ग्री या हैं व से द्या पा श्वें दा प्रमा से प्राप्त है। अन्ता वहेमाहेवनमावे हेन्वहेंव श्रें या हेन्या । ने वे नन्मा हु वर् नियायहैना भे छेत्। । ते के केंब्र सेंद्र साधित वितासना से । । भूना केंद्र ग्रीयारी हिरायहें तायदेरा नश्चिया नविया निया नश्चिया साम्रानुदे । विया महारमार्थे। । ने पार्निन प्रहें महीं मार्चिन ग्रामा वेसाम में सूमान निनामि भे हेंगा सन्दर्भाग्य याया श्रीम्या मधे छित् सम्दर्भ स्वर्भ से हिता से स्वर्भ से से स्वर्भ से से स्वर्भ से से स र्वे। । ने नर्क्षे अअ ग्राम्य निष्ट्रें नर्के न्यें में से न्यें न्यें निष्ट्रें न्यें न्यें न्यें न्यें न्यें

न्याः अर्हेटः यः नश्चनः स्वार्था

दें तर्हे तर्विना नर्झे अरु रारु वर्षे न स्वेत्र सूस्र त्र सुर हे ते सहना ने अ वर्गा हे न नु स्र र इन अ स स्र म वाय हे के अ य न न मे न से न से र हैंग । ठेश श्रेंग्य रहे। गय हे नित्रा सेन प्रति सेंस से संस्था श्रें सेंस नहम्य स्था नन्गासेन् ग्री देव भे निवेश्वेस स्वानक्षेत्र मान्या से से से से ने नहमास गयाने नर्झे सामन्। विसानन्यासे नामने स्वानिस्ताने हो नामने से निसा नर्झेसम्मे ने ने ने सुम्दर्भन्य स्वर्भन्त स्वर्भन्त स्वर्भन्त स्वर्भन्त स्वर्भन्त स्वर्भन्त स्वर्भन्त स्वर्भन्त यर्थासयसाधरायदेशयव्यात्राक्षेत्रास्ते कुरोधिककी विशासदी दिन्दरो नर्स्रियमः प्रमान्द्रियः प्रमा दे से दः स्टान्य विवा नर्से समः प्रमा ग्राम्य स्थान क्षेत्र विष्य क्षेत्र विष्य क्षेत्र विष्य क्षेत्र विष्य क्षेत्र विषय वेशने वश्यानवर मदे वश्यान क्षेत्रं स्था ग्राम ने से न न स्वा ब्रॅम्बर्विवरक्षित्वस्थि। विवायन्या बेन्स्येन्वे वर्षेन्या विवासीन्य इन्नाम्डिन् हेन्-रुक्तिः पुन्यस्य नर्मस्य प्राप्ते न्तुः सदे क्रेंस रेसः त्वरा दुःभरायार्वेदाहोदाद्राह्मस्यायसायदे यादेसासहेदाद्वीसाहे। अःश्रेग्रशः शेः इतः श्रॅटः इसशः यवदः हेटः देः वहें वः दटः सरें वः परः वेशः पः यः श्रें ग्राश्रासंदेः धें द्राप्त द्रासंदे ग्राम्य नित्र विष्ट्रास्त्र स्रोत् स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य वर्षिरानायमा दुराबन् ग्राम्यम्यामे तुमामदे भ्रिमार्से । दे निवर्षन् सूमा च्यान्यात्र विद्यान्य विद

श्ची र कुण निर्देश विद्या मुद्दा स्वर्थ स्वर्ण निर्देश स्वर्ण स्वर्ण निर्देश स्वर्ण स्वर्ण निर्देश स्वर्ण स्वर्ण

धरावाशुरश्रामाञ्चे। सर्विन्शुसानुत्रसानकुन्यसाने।विन्त्रसर्विन्नुवासया नरः हो नः प्रान्दः ने । विष्यः या विष्यः या विष्यः न । विष्यः विष्यः व । विष्यः व । विष्यः व । विष्यः व । विष्य नशः सुत्रः पानश्यानः निवेतः नुः भूष्ये निवः नामश्रास्य स्त्रामः र्भे । वि.यावर्था इ.स. श्रीर्था दे । यो स्वेर्था न्या स्वर्था स्वीर्था क्षेत्र । स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स ययर शेयानम शेयमूम भी भेशमन ग्रीश में वित्र येग्राशम न र्र्सिस्स वःलुःश्रेशः इत्राः सरः द्वाः सरः द्वाः म्रेशंकः देः विः वः हिवाशः सरः द्वारा विशः रवः र्वित्वराञ्चीनायाप्यमञ्जूष्यात्रम् श्रीत्राच्यात्रम् हो। दे स्थान्यात्राचीया वि'ग्रावर्थ'याव्याने भेने थार्य ग्रीयारी किंदा पेर्य या सुर्वा वि वि'मात्र श'र्ड स'ग्री श'र्दे र केंगा सम्'यहें त' सम्'से ग्री में नि' मिं त'हे 'सू' तु' वे' व। देवर्वसम्पर्देशसंज्ञस्य उत्पादः वर्षात्रः के सः श्रेष्टिन पात्रिकः ग्रीशः र्रेट्र पारेट्र हो। वेशः र्शे। १दे वित्तं केट्र दे प्यट स्वर द्वीतः इसराग्री वहः <u> दशःवेरःधेदःग्रेशःह्वाशःसःधेदःग्री वस्रशःगान्दःयःश्वाशःस्राह्वाशः</u> धर्मे वुरुष्मा वर्षा वर्षा वित्र देशाय विराधित तुरा विवास वर्षा वर्षा नियास्याम्भेराद्वीयाहे। द्वीरयाद्योत्यात्यया वर्डेयास्य तद्या ग्रुटा ब्रेवःसःवादःवीरुःबह्द्वःसःखवारु। श्रुवःस्रुःवाबेवारुःद्वदःश्रुव । नेरुः र्या ग्रे.स.र्रेय रि. ही व.स्रायह्में वार्ती विश्वार्थी विश्वार्योद्यावया स्रमः इरअयाष्ट्रम् वेषायाळे दार्ये त्या प्रमान केषा र्याक्षेरम्बर्यात्र श्रुराक्षेत्रक्ष्यात्र स्वर्या श्री विषा क्रेत्र त्या दि । स्मान्यस्य प्रमान्य प्रमान्य

स्वासर्वेद्राची स्वास्वेद्राची स्वासर्वेद्राची स्वास्वेद्राची स्

ञ्चनाः सर्वेदः नीः र्केन सः नश्चेतः सः नि

नश्रद्धत्वात्रम् विवानी श्राप्त्रम् व्याप्त्रम् विवानी श्राप्त्रम् व्याप्त्रम् विवानी श्राप्त्रम् व्याप्त्रम् विवानी श्राप्त्रम् व्याप्त्रम् विवानी श्राप्त्रम् विवान व

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

चहेत् त्र न् शुक्ष व्य न् वित्व वित्य वित्य के त्र के त्र

त्रु श्रु न श्री न विष्ट न स्वार्थ न स्वार्य न स्वार्थ न स्वर्थ न स्वर्थ न स्वर्य न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्थ न स

देश'यदे'र्नेव'र्न्ट्'गुव'र्ह्स्व'यदे'र्न्ड्'न्यदे'र्न्न्वची'ग्रीस्ट्र्यानुट्'र्न्

ते भूतः प्यतः क्षेत्रं क्षेत्

<u> ५८.घ२वा.स.स.२.घ२.घ२.घ५.सू.सू.स.५.८.सू.सू.स.५.२.२वा.स.५.५४.५८.५ू.</u> वेश होर्दे। विश्वापन्या से नाय निश्वापन से प्राप्त से स्वापन से स्वापन से स्वापन से स्वापन से स्वापन से स्वापन नठन्यदे द्वया ग्री अ क्षेत्र या इस्र अ में अ में त न्या निया था की निया से कि य:इट:र्नेव:र्:वाशुट्य:यथा वदवा:सेट्:य:दट:स्रे:व:सेट्:य:सेवाय:र्नेव: न्यर्ना क्रेरियश्चित्रः स्वायान्त्रः हिन्दियः स्वायान्त्रः स्वायान्त्रः । स्वायान्त्रः स्वायान्त्रः । स्वायान् मुःमुलर्से त्यराग्रम् द्वेरायान्ये न्यराम् नेन्यायस्य नत्रायस्य । देशः र्देव:सर्दे:क्रे:द्वा:वी:व्रे:व्या:लेखा । याद:त्यख:क्रेअख:ठव:याद:ववा:क्रेअ:व्र: नसूत्र । क्रेंशने वस्र अन्दर्दर निर्देश क्षेत्र । विराम्य क्षेत्र अर्थे। । निर्देश अःश्वरःतःषशःग्रहः। देःक्षःतशःत्रंदिःद्यःयःवर्हेदःयःविःत्रःदेशःयवेःदेवः धेवाया नर्ह्मेनायवे इटानदे देवाधेव के लेखा ग्रान्य विटार् कुरायर चिर्द्र। विस्तर्यात्रासात्रास्त्रास्त्र मुत्राम्यस्य उत् ग्री । ध्रुत्यायाय ह् या साधे भी त्रासूरा नदे क्वित त्यम ग्राम् देश मदे देव ग्रम् धेव म देवे देव द्या मदे । विभा ग्रह्मरुष्या भ्रेप्तासेन्यायार्थेष्यस्य स्वयास्य भ्राम् भ्रेष्ट्रेस्य स्वयास्य स्वयास्य स्वयास्य स्वयास्य स्वय नश्रुवःयःयश्रादेशःपदेर्देवःवे विश्वानश्रुवःहे। देःश्लानश्रावःश्लेखः यःश्रेष्राश्रामार्वे तर्मेत्रम्यामर्वे विश्वान्तरम्य स्था नेते भुरान्तु अरेग्रायाये केंग्रायानीत्यावनेवान्तरावस्या यादनेनश्रायधेत्रमदेः धुरार्रे॥

डिये ही माने प्रमार्श्वेन पाने पाने राषा इमानवि में नाम में राष्ट्र में नाम के राष्ट्र मे वेश गुःश्रुय वः वरेदे रें व वावव रु र् र र र से व्यायय व रेश परे गहरायान्यन हारे अवस्त्राया ने अव कर्त् इस्त्रा विष् ५८-दे त्यश्चाववर र यादा वया याववर की श्वाद्य र से से अंग हो द ळ्ट्रासान्द्राध्वामवे ध्रिमार्से । दे त्यूमायदान्त्रासासूदानायस। देसामदे र्देवःलरःयोरःकः शुःबेःव। क्दः सःदरः नडसः सःदरः देवः दसः सदेः द्वरः दः सहर्वस्य नित्र वार धेव संक्षे दे वे दे ते स्था वे वास निवा हु वाववः ग्रीभाग्नाटानुत्रदान्तराभी तुभागते श्रीमार्से विभार्भे । दे श्रीमाग्रीस्था यदेः भुजारा ग्रीयां वे 'इट' यदे 'दें व भी या या स्वारी विशेष के में व नश्रुवःसःस्रूरःमञ्जूरःत्रुःशेःसुरःमरःन्मेंदशःसःमभूनःवशःदेवःमाववःयः इट्टर्निश्ययया श्रुद्धानिवस्यर्ग्य श्रुट्टर्निसंविष्ठ सबरः बुगारवि दे वि द हिदासाधिव ही। दे त्यसामावव र प्रात्र दे दे दे वि र्नेत्रः क्री:सर्ने : इसरा क्षु: हे : नविद:पाधेद:परासरें : से : दे : प्रशः क्षेट्र : प्रशः क्षेट्र : राद्रान्यात्रां विष्या के दारा के वाका कुरावा क्षेत्र के कि स्वाप्य के कि स्वाप्य के कि स्वाप्य के स्वाप्य के क न्वें रात्रे। ने भ्रायाधीव वार्षा है निविव यायाधीव यम विश्व मान्य नुःवयःवें विश्वः वेरःनवरः ववनः यरः श्रेः श्रूरः श्रे ने व्यूरः नश्रुरः नः रेंदिः श्रूतः धर्मा भ्री वा राज्यों वा पा वा देव दिया प्राप्त वित्र प्राप्त वित्र प्राप्त वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र

सर्ने हें नु संस्वा हिन्यम् स्तु मान्य विद्याम् स्तु मान्य विद्याम् स्तु स्त्र स्तु स्त्र स्तु स्त्र स्तु स्त्र स्तु स्त्र स्

त्रु श्रुन् ग्री दर्गे दर्श रायमेया नदे रहे या है स्ट्रम ग्रुम् नदे

ने द्वाराक्षेत्र व्यवस्था क्षत्र व्यवस्था क्षेत्र क्षेत्र व्यवस्था क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यवस्था क्षेत्र क

नरः र्कत् अरः अह्तः प्रथा यनः श्रुअः गृष्ठे अः गृः त्रुः अः पः गृष्ठ इस्र अः ग्रेः तिरश्रात्त्रेयः त्रश्रास्य प्राप्ता क्षेत्रात्यः याचिरः ही । सुद्धाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थान वेशन्ता गवन इसराय र्स्याय स्वापाय दिन प्रदेन प्राप्त वेश मधून होता र्दे। । दे व्यः श्रू र न श्रः र वो र न वे शः वा हे व । व र श्रू र व हे वा । द्ध्याची क्षेप्तराधीट निष्पार्थ प्रति प्रति सामित्र विष्पार्थ विष्पार्थ विष्पार्थ विष्पार्थ विष्पार्थ विष्पार्थ विष् ॲन्यम्पर्देन्यः अर्ने श्रेष्ट्रीन्यवे न्त्रुः अया निष्णः व श्रुन्त् श्रेष्टे स्वासेन्। धरप्रदेर्पा इया वर्षे राष्ट्रे राष्ट्रे प्रदाया परिवाद सामित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स वर्षाभेरावन्त्रवार्षायदाविषाने। सूरास्ट्रिंराविषार्क्षेवार्षार्देवार्यानेवः नरत्रेत्रमञ्जूः अस्मिराणुनायात्रमञ्जूरानायाञ्चेत्रामः इत्रामरानवत्या उधार्रेवान्यायनेवायरायरेनायार्यातुष्ठीयाव्यायराष्ट्रायरे । नेयावेया ग्रीःश्रुः अर्वे ह्यूँ नः न्यें द्वं वि नः पर्कें न्दः गाः अप्यः वि व्यायः श्रेषाश्रायः धेदः यरः वर्देन्खा श्रुःसःक्षुःतुःन्न्स्नः हुः से गाव्यायवे श्रुन्ते श्रुन्ते सुः गान्यवे र्र्सूनः न्सॅन्।वर्डेम्'ग्रूट्'वर्देन्'र्ने।

ने न्या मी पर्ने न पा के ने या राजे राहे राज्य या यो राजा विष्य प्रति है ता है राज्य र्देव-द्रमः यदेव-यद्र-दिन्यर-भूद-या देवाय-वेय-ग्री-वावयः ग्रु-वे-देव-<u> ५८:श्रूटः च पष्टिशः गाः तथः मध्यः स्वरः श्री सः स्वा । ५५: सः सः स्वे तः सः मावतः । । ५५: सः सः स्वे तः सः स</u> क्रस्य ग्राप्तः देवा सः स्था श्रें सः पान्य स्वतः प्रेतः देवः देवः देवः देवः प्रस्ति । देवः वि धरक्षे निवेद धराये वार्या सामित्र हैं। विदेश्य हैं निद्रिय के त्र के स्रे न रे। श्रॅून'न्सॅक्'व्यम्बार्याप्य'ध्याश्रुर्य'मुर्य'नसूक्'नर्सेर्य'यह्न्य' रायश्चितिः देवाधेन् सेन् ग्रीः ख्यानासयानम् सासद्वाया नेविः देनाः तुः श्चेंन'न्येंन'येनाय'युव'य्वेन्'ग्रेय'क्य'म्र-देना'य'र्डय'ग्री'युन्य'स्त्र्व' इरक्षे वस्त्रन्त् द्वेदेनेव र्षेन् पदे ख्याय क्यायन ववार्ये निवय श्चित्रदर्भत्वे नायळे शाह्याय हिंद्रश्चित्रपित्र मृत्रिया वृद्राया नहेत्र त्रशा श्चुत् नुः धुः रेषः सेन् सः न्दः रेवः न्यः सर् से स्यः रदः निवः सेनः सर् दः स्वः <u>५तुःसदेःॡंषःसेःद5ःनःवेषाःसह्दःससः५तुःसःसइसःसःष्वेसःसुःहुरः</u> विटाश्यायायरे शेशें रायदे रत्याया वेयाय रटा है। याया इया पर्हेरा र्श्वेर्पित्र्यः स्वेर्यायात्र्यायाः स्वेर्यायः स्वेर्यायः स्वेर्यायः स्वेर्यायः स्वेर्यायः स्वेर्यायः स्वेर्यायः स्व क्ष्र-र्-अर्देव-वें। विव-ग्रा-क्षेत-र्वेव-क्ष-व-ग्राम्यायायायनि व सूर्-र्-छे-रेव-र्धेन्यम्यवेन्याम्यायम् श्रुप्ताम्बन्यम् श्रुप्ताम्यायम् श्रे र्श्वेरामाने साम्या देग्निन मुन्ति । मुन्ति साम्यान स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा वर्देन् मवरं नेत्र कुः से में मार्थ सेते हिन् ग्री से म्यान्य स

इसस्य न्तुः स्याधायायायाः स्याधिकः निष्या न

दें तः श्चेन न रेविन ने निया शुःषी है या शुःवज्ञ न या वसया या या यनः श्रूशः शे: दर्गे दशः पः प्रेंद्धः श्रूशः स्वा हिः तें केतः सें श्रूषः दर्गेतः त्रुः नः गन्ययःरगःवरेदेः तःयार्गेरःयः केवःर्यः त्ययाः गुरःख्ययः रेःयःगर्रः र्वेर वहें व प्राणेव वे । श्विन द्वेव न्नु न ग्राम्य प्राया स्व वे ह स्वेदे विषय ने जाविर पहेँ जा केर क्षेत्र परें तर ये जा राष्ट्र त हो न की प्रदान ये जा राज वन सर.म्.७्या.^भरश.ता.१८८.वर.भु.तवर.तम.श्रैट.य.५सश.शेप.सैट.यश वसवाशासवे नवीं नशास वर्षे या वर्ष सम्नित्ते । श्लिम नर्षे वा विश्वारी । वर्गेयामाइस्रम् दे वस्यायामायाम्य स्था ग्रीयाब्दावस्य स्था सेया र्नुहरनर्भर्वेद्यम् वर्षेर्द्रेन्द्रेन्यम् अद्यास्य सुर्यान्य न्यवाध्य ह्वानायायायाये हे या शुः वज्ञन्याय्यायायाये प्रति न्यो न्याया गहरायाद्याचाराम्य स्था

বাপ্তম'শা

क्रूँट्र मान्त्र मान्त्र यायने नका माने स्थाय माने स्था

ने किंत हेन या वह्या परे ने अपानमा ने किंत हेन या नता यन्दर्भःश्री । न्दर्भेदी वदेर्भेन्यस्य ज्ञानदेने वित्रिक्षेत्र सुर् वन्यामाने नामाधिता ने विनासमाने नामे विनासमाने निर्मा कर्मा ययर है प्दर विवा यो क्कें वर्ग पह्या माधित श्रूया ही प्रत्य वर यो कें या श्रू र्क्षेष्रभाराने वित्रसाधित निवेत न्ते वित्र केत्र नुसूर नायने वस्र राउन नवाःळवारुर्दर्वरुरुर्धः वर्षः व यः इस्रायात्रस्र स्वतः त्राचित्र स्वतः ग्रीः भूदें। । ने विं व केन त्या है त्यू मायह वा पिये में या प्री नि प्री मायह विं म नदेरहेशः र्रेड्रिन्न समस्यात्रस्थित् सुद्राहे। देरवरदेर वर्देन से सामित नर्गेश नेवशनेकुः अलेगवान्धेर्याप्य अर्थेना पर्वेर वशा वर्षेर नवे स्व ग्राम्प्रेत्रभूभ्रभे नेते स्वान्स्त्रम् न स्वा वहिना स्वास्य स्वाप्य विस् नवे इन्नर वर्ते खुन्य राय देश राय हिर बना राय राय है देश देश है हैं रा नरत्रें राया के अध्याया धीवाया क्षेत्र या की या प्रतिया विवादिया की ढ़ॣॕॻऻ.स.५.५४१२ बर्ट.चयु.चर्या.स्रेर.स.६्याश्व.सयु.स्रेश.स्य.स्री.य.स्य.स्या.

यश्रास्य अर्बेट व्यश्यन्य ने न्याया न्यों श्रास्य अर्बेट के न्या ने प्येंन यायाम्बर्निन्द्रिन्द्राक्षेत्रयदे श्रुवाद्येत्र्यी सुदान्द्रिम्यायाया वहेत् वर्षादेशायाक्केनायाविषाः वरायार्देवात् वाकेरावायेनाये वर्षायेनाये। *ख़ॖ*ॸॱॸॸॹॱॸॸॹॱॺॊॱॸॱख़ॱॸॸॱॸॿॆढ़ॱॹॖॸॱॿॸॱॻॖॸॱऄ॓ॸॱय़ॸॱॸॆॺॱय़ऄॱ धेव दें। १ - १ पट कें ना नाय प्रयायया नाय हे हें व से हम साम इस य दट यस ८८.धेश.स्यभ.८८.घु८.स.सू.८८.४च्यभ.घ.स्यभ.धे। पर्ट.८चा.स्यभ. उर्-दे-विंत्रिन्अः धेत्री वेत्रण्ट्दे विदेशेंद्रिः हो स्था श्रीवाश्वासाक्ष्रः ने किंति हेन्स धेव नविव न् ही अप सहस्र अप य ने किंति हैन ही ह्या स्य प्र श्वर न प्येव वा पर परे र रे विं व हे र वे गर वे ग प्येव पर रे विं व हे र पर वह्यानवरहे सूर धेव वे व वहें नर्र हो वरन्त है। वरन्त है वे नर्रे अन्भेग्रास्यव्यन्त्रः ही वायन्त्रा कुल्हे वायन्त्रा वी सल्हे वाय क्रायात्रस्थाउदातुः वदायायदी विष्यदे सादे रिविष्य के दार्दी । दे विष्य के दाया वह्रमान्त्र हैं। हेंद्र सेंद्र राष्ट्रींद्र इससासासुरावहिमार्से माराया । सुप्यसा बुरः नरः र्ह्ने : धेशः अर्वेदः शुरुरे हेर। । नद्यां दे : वदे : धे : धुवः दुः हेवा शः ग्रुशः वया । इत्यः वर्धे सः संभिषः वर्षा वे : वर्षे वा : सर् हो रा । हे यः हा : वः स्वा या यः मश्चन्तुःसायायह्वापायसानदयानसः ह्या विसामान्ता वदीः दासया वर्चेर्रायाने वित्व केरायावहुषा यर वर्रेर केर केंद्र सेर्याय प्राप्त क्षेत्र स खुर्यामान्त्रामुर्झेटानमायर्देनामाने। यर्विमानायदे छेये हानाउदाणेदावेया

ने भूरके नरहें ना मर हो राषा ने ने भूरके नर हें ना मान प्रिंग ना प्रहें ना र्क्षेत्ररायाः भुन्तिः इत्याउदाने दुन्युः सर्वान्याः वन्याः देश्यदेवाः स्वीतार्थाः क्ष्रनः नेते प्रभाषायायी स्वरं स क्रियायायायायात्राचा श्रीताविताते श्रीत्यायया हेता सेत्यायात्राचा स्थायाया तुःनःदर्ने छे विषा छे अ छे अ विषा असः नम्पा विष्ठः व्या है । नम्हेषा यसः हो नः र्ने । विश्वासुर्यार्थे । क्रिंश उदार्थे से नाम्या पृत्ये माया मान्यविदा वर्गेनामधेर्भन्यसम्भाग्यस्य स्वादर्भम्यस्य द्वार्यदेशे वे अर्दे र नश्रू अवशानन्या प्राप्त विष्या में नाया राषा र प्राप्त विष्ये प्राप्त पा प्राप्त विष्ये प्राप्त प्राप्त विष्ये प्राप्त विषये वि यायनात्रश्रांनर्क्केसायायने ते स्वानेदे रना होनानर्के नक्कनायदे ने ता स्वान धरःश्चेतःन्धेवःश्वरशःकुशःवञ्चरशःग्रीशःवाशुरशःधःयःवहेवःवशःश्चेतः न्सॅब्रह्मानायायायायायादानायायायात्राचारावयाः वी'नदवा'सेद'र्स्ट्रेंद्र'स'इसस्य ग्राट'र्स्न होद्र'न्नर्टे'न क्रुट्र'स'हेद्र'क्रुर्स्य सर वळन्याधेवर्दे॥

यायाने प्यते स्वी श्रेया के वायते ते प्रिंत हिन त्या यह या स्वी श्रेव स्वा स्वी श्रेव स्वा के वाया के त्या के वाया के

बेर्'रें। नन्ग'न्र'नन्ग'मीर'वहेंद्र'स'क्य'स'व्यथ'उर्'र्'बर्'स्थ' गिहेश'यश'हें द'सें रश'क्षूर'से क्षें 'नदे खुंय' श्रीश'गिहद' श्रूरश'रा'दे 'चेग' न्यवःव्यवदःविद्वेदःग्रदः। धुःन्दःवदःगिःक्रेयःग्रेःश्रेयःयदेःयक्रवःयः वस्रशः उदः वाह्रवः सः द्रियाशः स्रशः श्रूद्रशः सः द्रे रक्षेत्रः ग्रीः श्रुः प्षेत्रः पदेः श्री रः <u> ५८। वर्षाः थः स्टायं विवासे रास्यः हैं गुरुः संदेश यदः यदः स्वाः पुः शुरुः संदेश</u> सुर-र्से इस्र अप्ययद-स्दानिव प्येंद्र-सस्व देवा संस्थित। सस्य सुर-निवे ध्रेरते। निरम्केषात्राविरावेषात्रात्रीयार्थात्रीयार्थात्रीयार्थात्रात्रीया वक्षेत्रामानविवार्वे । ने प्यमाक्षेत्रामार्थायायाया नहेवावरामहत्रायाया यारियापिते श्रित से प्रेयाप्तराष्ट्रवापा इययाप्त्राप्त प्राप्ति स्वरं प्राप्त विवासि मिन्नेराश्चरायाः सुरासे व्याचे प्राची मिन्ने मिन्ने स्थित सामिन स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थान वर्रे हे सुर रेवि अळव हे र पेर्य पाया विवा वाया विवाहे सुर रेवि अळव हे र बेर्'य'विषा'डेश'वर'य'वर्रेर्'य'क्सस्य'ग्रीस'क्स'यर'र्न्धेर्'य'धेव'र्दे।। <u> इस्रायात्रस्रक्षा उत्तर्नु तृत्रीत् पात्रात्र वस्य पादित् पात्रस्य क्षा ग्रीकास्य द्रीयाकाः</u> यनेवे भ्रेमने इस्राया नन्ना भेन व्याप्त प्राया वित्रा । नन्ना नी व्यापी सरमायायम् । नन्यासन्भेयायायदे भ्रिम्पन्याम् म्यान्यायायाया नन्गामी नवर ने त र हे के अन् की ना अन्य स्थी विद्युर में । हि स्थर ने दि ह क्रिया'त'रेदे'प्पत'त्यया'न्या'ग्रह्किया'सर्थास्य सान्धेयायास्रेने प्रवित'त्। इत्य वर्चे र प्र प्राची अवार वी के वर्षा से र प्र हें बार पर है वि र वि हो के स्र र्यदे न्द्रेश र्ये निर्वाची नवर निर्वासेन सम्हिवास सम्बद्ध मन्त्री । विसः

म्याक्ते मारावमात्यास्य स्यावित स्थे न्यस्य हिं म्याया स्थित स्थान स्था

निश्चा व्यक्त स्थान्य स्थान्य

दें त्र स्ट में माट बना निज्ञ शास्त्र मुन प्रते हैं प्रते हैं शास्त्र भ्रा निज्ञ निज्ञ स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ क

युवा अर्वेद या न सुन रहें या सेवा सा

क्रे[.]षस'८८'दर'न'हे८'धेद'द'से'८गे'न'न दु'८८'श्रेद'र'ष'सेर्गर'प' येन्ययान्त्रेन्यार्वेन्यायदेयान्यास्यास्यान्यान्यान्याः भ्रमश्रामित्र प्रमुम्पारा अधिक क्षा वेश मे प्रमा के स्थान प्रमा से स्थान प्रमा से स्थान प्रमा से स्थान प्रमा स ननेवासेनान्त्रास्यास्यास्यास्यास्यास्यानेत्यानवे नेवासेनाने । नेवाननेत्रा য়৴য়ৢ৽ঀ৽ৢয়য়৽ৠ৽৴৴৽ড়ৢঀয়৽ৠ৽৾ঀয়৽৻৸ৼৼ৽ঀৢয়ৼ৾য়৽ঢ়ৢ৽য়ৢঀ৽য়৽য়ৢঀ৽ *ॸॸॱॸॹॱॺढ़॓ॱख़ॖॺऻॺॱॹॖ॓ॱग़ॖढ़ॱॾॣॕॸॱॸॸॱॸॣॕढ़ॱॸॺॱॸ॔ॱख़ऀॺॱॺॱख़ऀॻ*ॱॾॺॺॱ केशसी समुद्रायमा दे द्वा वीश गुद्रा है व हु व दि दि दि सम्मान्तु साम स म्बर्यास्त्रेत्रान्यान्, युनायान्या ने न्यामी शार्ने सन्यायम् युनायमः नःरे प्यरः से दःससादे दसस्य संदेदः सम् स्वर्ते । या विदः प्यरः दे द्या यो या द वनायनन्य अप्ति प्रतः श्रिम प्रसिक प्रमेते यादः वनायन्य विश्व विश्व श्री सः वर्षात्र्रेव से वर्षे स्रिन स्रिन द्वित वर्षे ते दे द्वा वा वा वी वर्षा बेन्हिन्यश्रामित्रः व्यान्यम् नित्रामित्रः वित्रामित्रः व हैंग्रथः तः यादः वयाः यो विद्याः सेदः स्रोहें या स्थान्य स्थाने देश हो सः हैं या स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स वःस्ट्रांसे ह्राः वेर् श्रेश्चाया स्ट्रांस स्ट्र वहें तरमर हैं न नरें तरदे न लेन प्रकाने न मानी का मान बमारें तर सम्म बेद'यर'हेंग्य'य'सेद'दें।

নাইশ্বা

ने किं न पान्न थर्न नन सम्में अध्यापात्रुआ

रेगश्रायदे प्रामा श्री स्थान ब्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थान स्थान

देवाश्वरतिवाताः शुरुष्यः त्र बुदः वः **यः या शुरु**ष

द्याया शुः येया शः यमः दिशः श्वेतः द्याँ शः यये श्कुः अळतः द्रमः। द्याया शुः दिशः अश्वेतः यम् यदः यो व्यवः शुया शः द्याया शः द्रमः। स्मः यो शः श्वाशः शः द्याया शः द्रमः यो शः यद्वेतः यये छ व्यः यो । दः से । दः से । दः से । दः से । विवासः से । वि

न्याया ग्रु खेया शास्त्र देश श्रेष्ठ न्याया ग्रु स्थळ व स्त्री

न्येम्स्य वारः ववार्यने स्थे त्र्वास्थ्यः न्ये स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः

स्वासर्वेट या नस्वतः द्वार्थे वा श्वा

ব্যন্ত্র শাস্থ্য

न्याया शुःर्देश्यः अविद्याया प्रत्येषा प्रत्येषा विद्या स्थाया स्थाया हिश्य

द्यायाः श्रुष्ट्रेत्रः यहेत्रः उत्ताश्चरः हेत्रः यहेत्। देशः यहेत्रः श्रुप्त्रः यहेत्रः यहेत्। द्रायाः श्रुप्त्रः यहेत्रः उत्ताश्चरः वित्रः क्षेत्रः यहेत्। द्रायाः श्रुप्ताः वित्रः क्षेत्रः यहेत्।

न्वावा चुःर्रेश व्हें व ज्ञार हा चार के शार न्वावा राष्य वाहिशा

वर्देन्यन्वहेन्यन्ता नेक्षिव्यन्यस्वस्त्रम्

क्ष्यन्तुः अवे देव क्षुप्तर वर्देन पायवा शें के वरो क्षेप्ताया शेंवाया परे र्वि'द'हेर'र्'ग्रुव'स'ग्रुव'र्धेर्'र्यदे'र्रेग्र्य'स्य'दे'ग्रुव्ययस्य द् सिंदिर श्री न्य स्त्री : क्रिया सम्मान स्त्री स्तर हो स ब्रुम्बर्भायायदर:देवाबायबरानुध्नाया बुबादानुवानुबन्धार्यं वा षरसेन्यदे सेन्द्रा व्यन्सेन्यस्य म्यादे सुनि दे वस्य राज्य नगमान्यस्य निर्मायत् सामिते के सामित्र स्वीत् स्वीत् स्वीत् स्वीत् । वाव्य प्यानितः र्वि. थ. केर. यो त्र यो अ. राष्ट्र. तस्य यो अ. राष्ट्र. त्ये अ. की अ. की अ. की अ. की . तया यो. र र राष्ट्र र अ. मुँवःश्रॅग्राशः है । जर्मेन । यर । या विषा या दर्गेशम्बर्भे; नःश्रेन्यायायेदादी । नायाहे भ्रे: नाश्रेन्यायायदेदायादे । क्षेत्रपद्धित्रपदेर्देषायाययात्रधत्रपद्धित्रपद्धित्रपद्धेरपद्धित्रपद्धित्रपदेश्चेषायाः नयन्धन्नवेन्ग्रीन्देयार्थेष्यन्ययाननेवन्देयाशुप्तश्रून्दे । नुस्न श्चे नर्जे न्यायायया विवायाय दे ने त्या दे न्या है । यह त्या दे । यह त्या दे । यह त्या दे । यह त्या दे । यह त र्भेः नायाश्रेषाश्रामाधेर्पमायरेर्द्रान्यक्ष्रास्यास्य स्वाप्य प्राप्ते ख़ॣॸॱढ़ॱॸॖ॓ॱॺॎॕॱढ़ॱढ़ऀॸॱॻऻॿॻऻॴॳढ़ॎॱॵॱऄॴऄॖॴढ़ऀॱऄॗॖॱॻॱऄॸॱय़ॸॱॻऻॿॻऻॴ नर्भानेशामुनासम् से प्रवदाया वासूदासदे सेवाची विसासाय सेवासास्य ग्रुनःसरः पर्देरः दाने दे द्वारळ दास्य धोदः सः नग्रामा सदे श्रिय दे द्वारङ्क्षयः बेर्ग्ये कर्म्स्र स्थर्भे प्यम् दे। हिर्दे प्रहें क्रियं के स्थर्भ से मान्द्र स नःश्रूष्परःळन्याधेत्। भ्रिन्दरसुरुन्दरःधेन्याह्यः कन्याधेत्। ।वायःहेः ननरमें वर्ने नगळन् धेवावा । वसम्यायासदे खया ग्रीया शुःवा हे विमा ग्रा

विशन्ता यह्यायम्प्या इस्रागुन्यहेषाहेन्छन् सेन् विश्वास्य प्रित्य विश्वास्य प्रित्य विश्वास्य प्रित्य विश्वास्य स्रोति स्रोति । क्षित् स्रम्य स्रागुन्य ग्राम्य प्रित्य प्रम्य प्रित्य विश्वास्य स्रोति । विश्वस्य स्रोति

नाया हे । क्रें नामका येवावार्देवाद्यायर क्षे । वर्देदायका गुवार्हेवा हा वर्रेन नर्गे अवा ने के से रेग्या को वह्या यायया ने केन स्रान्य स्था रे रामार विमामीया । यदमा दरमाववर यय भ्री : य देगाय सेव सदी । देगायः नेश्वासून्त्र्यारानेषाश्वास्त्रा । विन्त्रीः क्षेत्राचाराचीश्वास्त्रः वर्गुम् विशर्मेद्वर्मसम्भ्रेष्ट्रिः चर्मिन्यः मद्ये न्यास्य स्थानः स्थून् न्यास्य वर्गेवाः धरः वाशुरुषः धवेः श्चेरः र्रे । वाववः ष्यरः वर्वाः वाववः त्यः श्वेवायः धः निवे से निरम्पार के ले ले ले ले हो निर्मा कर है निर्मा कर हो निर्मा कर हो निर्मा कर है निर्म कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्म कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्म कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्म कर है निर्म कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्म कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्मा कर है निर्म कर ह वर्गेना'स'ल' सु'निवेर'नह्नारा'त्रारा'नाना'सरा'से विनारा'सर व्यूरे है। ने न्वायार प्यर भेतर्य भेते । स्वाया के प्राया के प श्चे व नावव ना शुरा के पर्दे द पर यावव पर या श्चे द में या दे वि के दे ना या है। यह्मारायमा माव्रायमाञ्चीमादेनाहेरायमाग्रह्मी हिमा म्बारम्यास्य विद्यास्य विद लर.श्रेर.वर.श्र.वे.श्रे क्रुंचाचायवात्त्रयात्र्यत्रात्रवात्वरात्रराश्चेर.व. नगमारावे भ्रेरमें । यदे खयर मि डेमा दे भ्रे माया श्रेम्य यात्रा सूद द्वर भे पर्देन ने राया वि के वा के शक्षुन नु प्येन पर पर्देन के रा वस्र अन्यार वर्रभूर्र्र्रिम्यायायार्केयाह्मययायार्द्र्योर्ट्रेय्याम्यायार्द्र्यविद्र

वर्षेनामन्ने क्षेन्न नर्षेन प्यते प्याप्य स्थाप्य स्थित स्थाप स्य

गहिरायां ने से प्रमान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

स्यायाने यान्तुः सदेः बुद्रः सॅटः सप्येदः पदेः विनः के यानापाः परः नसूदः पः यान्यस्य

न्तुःस्रायदेःश्चिन्ःक्रिंशःर्देशःन्जुनःनःन्तः। शुम्राशःनेशःनेःहेःश्चरः नमामाःमदेःक्ष्यःन्तः। नेःयःन्तुःसःमश्रायदःहेःश्चरःनहनःमदे।। न्तःसे।

न्तुःस्यविष्ठुन्केस्यम्य व्याप्त की

रेग्रायात्रुग्। इःयायय। नगे। नार्यनः धियाश्चे। निर्यनः व्ययः धोः वेयः वेयायः वयम्यायः हे। निर्यन् व्ययः धोः वेयः ययः चुनः निर्या । न्यः यात्रियः वे वेवः यमः विष्णा । वेयः याशुन्यः यः सूम्। वेयाः यः सर्वेगः।

ঀৗয়৻ঀয়ৣ৾৻ঀঢ়৻ঀ৾৾৻ঀ৾য়য়য়৻য়ৣয়৻ঀয়য়৻ঀ৾ঢ়৻ৠ৾ঀয়৻য়৾৻ড়ৄয়৻ৠ৻৴য়৻য়৻ ८८:या बुवार्यः श्लु:८य:याहेर्यः तर्वेदःयः दे। ययः ग्री:श्लूनर्यः शुः सूरः वन् ८: मःसूरः वनसः न्दः भेसः रनः षः सः न्यः नदेः नस् न् नस् सः न्दः षे सः हीः क्रियायान्त्रायान्त्रस्थन्यस्यायान्यस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्य য়ৣ৽ঀয়য়৽য়য়য়৽য়ৣ৽য়ৣ৽ঀ৾৾ঀ৾৽য়য়৽য়য়৽ড়৾য়৽ৢঢ়ৼঢ়য়৸৽ঢ়ৢ৽ঀয়য়৽য়ৢ৽ वर्दे न्दरवर्दे वर्द्धर वर्दे कु वर्द्धराष्ट्रीय सामाने सामाने राम्या सामाने सामाने सामाने सामाने सामाने सामान वर्देरम्यामाहि स्रेतामायाहेमामार्चिमामात्ता केंगामसम्यास्ताना केंगामसम्यास्ताना र्वे अः ग्रुनः प्रवे : स्टाः निवः ह्याः उधाः अदः अदः यस्ते अः यः ग्रिनः व अः हे दः मदे हे ख्रुन य देश मर्जिन या स्थाने अ सम्ब्रिक है। यह मिहिक मा से दात वनरान्द्रभेरास्यानिरुयानिराययाक्षात्रात्यास्रीदावनायान्यस्रीता रास्रीत्वर्त्त्रप्ति । ने स्रूर्त्वरात्वे स्रुत्रस्त्र स्रुप्ति स्रुप्ति । रदे कु त्यस की मान्द्र से त्युमारा मानिते स्थान मान्द्र त्य देने न स रहेता यः स्वाःषश्रः पदिःष्ट्रः चः वातृत्रः यः पदे चश्रः खुः यः दे । दे । सः ववाः तृः चश्रः पदे । ननेवागहेरायानेरायाहेरायादी धेवार्वे । यदी वे नत्यायायामहिनारा यःवादः बवाःवावदः शुद्रेः देरः ष्यदः दवायः चः दर्नः चरः सर्वेदः दशः से ः दवायः नरप्रकर्भे भेरायायाद्य विद्याद्दर्याया भेरातृ कुः के निर्दे द्वार् हुँद <u> ५८.र्ज्ञ सपुः श्वाप्तारा २ यो अत्राप्ता व्याप्ता अत्राप्ता श्राप्ता अत्राप्ता अत्राप्ता अत्राप्ता अत्राप्ता अ</u> वनरायास्त्रात्ररायरायायानवे दे उसायर से दानर महत्राय स्वादरा कुलानवे न्वे निरुषामंदे अवसः व्यापा हेन्ते ने लानहेन न्या स्टामी हेन मन्द्रमञ्ज्ञ संस्थित क्षित्र क्षित् क्षित्र क

र्राची के रार्रे अर्रे राक्षु निर्धास्य साम्यास्य निष्णा निर्या हिया नेत्र हु श्रु रया म्यया ग्राट द्वा यदे स्वा निया से खेत हैट द्वा सामाया र्हेन्यात्री क्रिंशवस्याउन्यान्मयी में में यात्रान्यते नम्यविव हे प्यम बेर्'मदे क्रूॅर'मधेववा वरेर्या में वार्यायायाय विष्य वस्र १ वर्षे वा रासे दासूर में विषय के न्याःग्रवः श्रॅन्त्वा । यञ्चनः यो नः सेनः यहे याः यः सेन्। । यसया यः यदेः यने वः यः नविःर्यः इसमा । विनःयः सेनःयमः वयः यमः वयः । विमः मनः नविनः श्रीमः क्रॅर-व-क्रे-विद्यान्दर-विदेश-विद्यान्य क्रिन-विद्यान्त्र क्रिन-विद्यान्त्र क्रिन-विद्यान्त्र क्रिन-विद्यान्त्र क्विंगायमा गयाने नर्रमार्थे मम्मार्थ विष्या मिन्न निष्या विषय । वा । व्रिन् ग्री क्षेत्रा ग्रम्स्य निवासेना । सम्य निवास स्था निवास र्शें । विश्वास्त्रायायायायावितासेन्यायावितायवितायवितायाविता बेर्यान्यूनायम्बेर्यान्यम्बेर्या विश्वासम्बित्येर्यान्युन्यः वर्देशके रूट विवादमें वा रावे रेवाश राश ग्रु ग्रेट वस्र रह नगवा रास र्गे दशः हें दः धर्दे।

ने अ'त'न्दें अ'से र श्चान'न्द्र' प्राचान अप्यान धेव'रा'यार्क्टि, रा'व'र्रा न्या विवासी यार्क्टि, रा'या विवास वस्रश्राह्म नव्या प्राप्त निर्मा स्वर्म । स्वर्य । स्वर्य । स्वर्म गुनःमदेः स्टानिवः ह्याउँ अभेनः मध्यानि भेनः गुनः मुनः गुनः प्रितः । मश्राकेषापाने प्राप्तापित हिंदा के राधित हो। इस्वेदे राम हो दा हेर नि यश भ्रुविद्वात्रयम् वर्ष्यम् निर्देश्यात्र वर्षा । विद्वा वे क्रेंट हेट क्रेंट होट या। याट दे टाय क्रेंप्य वित्त हो। याट या क्रेंट या हेट र ना निःषः वस्र अन्तर्त्तरः नरः वस्य । निरःषः क्रें रः क्रेन् से स्टरना निः यात्रस्थाउदासी दिया नायाहे पदी नाग्रावासूर स्वा विका र्शेषाश्राभी भ्रेंति स्टानिव सेट्राय स्थान त्या थे त्युट्राय स्था वट्रास्टर नविव ग्री अ क्रेंट पदे में नाया क्रें पदे ना के नाया र दान विव ग्री अ श्रेश्वर्धरायदे द्विवायाया श्रे सुरावरावाश्वरया श्रेष्ट्रा । दे स्वराधरा स्विवावायया यथा पि.म्.१वा.मी.म्यायायाये.१८.स्मर स्थाराय स्थार स्था स्थार रायनयः विमार् सः वन् श्री देव श्राम्यने वाया से मारा स्यापन नवमा मः वसरा उदः के संवेदः तुः तवदः मः धेदः दें विरानसूदः मदेः द्वीराग्राह्यः या यारायार्स्ट्रेरायार्देराया विश्वास्यायार्थीयाव्रायम्परा मः अह्रम्ति । प्रतुः अः इत्यमः स्यान्ते प्रते मः तुना मश्राहेतः यन्ने यः वहुः निहेशः

नेशक्षात्रप्राप्त्रप्राधिते देवाङ्कष्राचरप्येत्रपा इस्रश्रास्टर्विव सेत्रप यानश्चेत्। ग्रुः श्चेत्। श्चेत्। श्चेत्। श्चेत्र्य्याः श्चेत्यः श्चेत्रः श् न्द्रभःस्र-भ्रानदेःख्याभःधेवःमभा भर्गेवःस्र-सुन्धनःश्रेनवेन्यः कुन्नः क्रेव'यरी'न्र्र'यरी'य'यहेव'वश्ययश्चश्चार्य'यरी'न्र्र'यरी'श्चे'य'न्र्र'ययाया'यरी' कुःव्ययाग्रीः इसामावमा हेराया नहेरा दया स्टान विराग्नी सार्हेराया न्यान्त्रा सदे[,]यस'नर्यय'न्वें स'स'धेद'हे। स्व'ग्रेन्'हेस'नवे'स'यस्। हेद'हेर' वर्वेषायमावर्द्धमानामा । देवे के में मान के नाम । देवे नहेव वर्षा गन्गर्यार्थाः है। ।ने हिन्द्रायदे त्ययाधिन हीं। ।ग्रान्धे महेन वर्ष्यायधिन यदी क्रिंशत्यादणेंद्रप्रायाधेवाया दिः द्वेर्स्ट्रिंद्रप्रायाधेवायदी क्रिंश सरमाश्रुद्रश्रासायदी या कुं क्रेंत्राया नहेत्रत्रश्रुं नाया स्टानित क्रीश गुनःमश्राह्मार्ने लेशन ह्रेंगान्या अञ्चलिय । ने नलेन न् हेंन ह्रेंगायश

ग्रम्। जन्यः क्रेन्छिनः वर्षे श्रीनः या । ने व्यः में बाह्य सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध । जन्य यः श्रॅन्छेन् से श्रेन्या । ने यः हे यान से श्रेन्ने । यान विया श्रेन्न रहेतः वर्जुर-५८। ।५५:अदे वस ५:५५ वाडेग सम्। वाशुर-सर्केग सर्ह्य साम बेर्प्साधीः । व्यरमाक्त्रमारे व्यास्याप्यव्यव्यव्याम् । वियप्तरा क्रिंद्रिन्यत्वः द्वःसायशाग्रदा न्देशारीं वस्रशाउन्यत्वित ग्रीश सिंदाराधीतायश न्द्रश्चर्यश्ची हित्रविद्वर्ध्वर्ध्वर्त्वेर्न्त्वेत्रम्भेन्या । सर्द्ध्द्रश्चर्यासेन् मर्थाके नरानभूता विरादरा रेवाराया दुवा दुरायरा गरादवा मीर्थाने सामहेन पर्या । यह या या सामहेन सिन्द से हिन से हिन या । दे प्रया ग्री सा र्भे इसमा । ने हिन्द्र ते श्वन वर्षे न मा । ने न्या व प्या प्य ह्या स्वा मा भीता । ने न्याहे सूर दर्दर से दर्द्य । यार न्या नहेन न्या नर्देश में स्या । कु थे । त्रुप्तुम्त्री। याप्त्रपासाधितार्येषाः स्रेत्रपम्। यर्ने प्राप्ते प्राप्तु स्थासे वर्स्चित्र । डेशन्दर्भ वहेत्राःहेत्रायश्चर्यश्चर्यायरात्र वर्द्ध्दायायश्चरम्। वर्द्ध्या नर्यः रहा वी अ वि अ स रहा वि विव की अ वि अ रहा वि अ यो अ वि अ कुःसेनःहेंगानोःमधिसायरेंना । विंनःग्रेसाहेनः वेनःयन्यायस्यास्यास्या हेव हैर दर्शेय प्रमान शुराना । ने हिन हिन दे हैं रायम नवेन। । नर्से अ र्रे र्रा प्रतर प्रें प्र होता । अहस से प्र हिंद ही से प्र होता होता होता होता है स यद्रोयाधीत्रामितः क्रुष्यक्त्रं श्रीशास्टामित्रे स्थितः श्रीशास्ट्रियः वित्रामित्र स्थानिः

सर्वाद्यास्य स्थान्य स्थान्य

दें त्रः क्रेंद्रः हेद्रः वर्देद्रः चवेः श्चें वाकाः वादिद्रः वद्रकाः वसकाः उदः दुदः युग्रमःहे पर् भेव सुरावा नर्रे मार्च प्रसम्बन्ध स्ट्रिं प्रमान हिन्द्रश्चान्यादी। क्रुंक्रेवायानहेवावयायग्वानावे क्रुंयळवाग्रीयाने मञ्जू क्षे त्री त्रक्षत् प्रमायगुर्मे । ने क्षेत्र ने त्या हेत त्र हो त्या ने त्या वःश्रूयाःनश्रूयःषटःवन्नदःदे। कुःक्रेवःयःनहेवःवशःवतुदःनःयःश्रूयाःनश्र्यः नव्यान्त्रीयाणी नहेव.वयायाचुन्नायास्याचस्यायी. सुन्नदेधिर र्रे । भूगा नने व र्षे न व ने यान त्य श हुन न वे या व यह न न मूगा न भूया दे 'दग्गम् अ' मंदे 'दर्गे म् 'म' ५८ दे र 'दर्शे 'नदे 'ख्या 'दब्र 'म्या नदे न 'नदे ' थॅर्न्स् । नरेव नवे थॅर्व दे र्या ने अधर्म र हे र न र स्थरित सुय र <u> चे</u>न्यान्द्रात्यस्य न्यान्त्रात्या ने न्या क्षेत्र व्यान्या क्षेत्र व्याचित्र स्थानित्र स्थानित् स्थानित्र स्थानित् स्थानिति स्थानिति न्देशमें वस्राउन्नर्गविव ग्री संस्ट्रिन प्रेन प्रेन प्रेन प्रिन प्रेन श्चर्यानाने निया वस्र राजन्य निर्मा विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य

नेवि: ध्रेरः वारः वः क्रेंदः यः क्षेत्रः वदिः सुदः वादेः वादे वः विद्याने वादे विदः विदेशः विद्याने विद्याने व न:रुट:वा नट:व:हेन:डेट:वर्जेव:सर:वर्जुट:न:रुट:न:रे:व:वसन्याय:संदे: ननेवायानविः इस्र सारे वासायान्य स्ट्यू सार्चे । दिः क्षरावे वा वारावीः द्वीरा हेव डिट प्रवेश प्रमाप्त वृह पा हित स्वाप्त स्था प्रविद्य स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त स धर्मिः वश्चरः वर्षे साधिवः विष्ठाः । देरे वेर्म्यानिव विवर्षे दास्या क्षेत्रः धरावश्चरः र्रें 'सूर्या'नस्य'र्षेर्'त्र'ते सूर्या'नस्य'गुत्र'यहुट'र्ट्ट'सूर्या'नस्य'यर्गेया' रान्द्रभूषा वर्ष्या वर्षीषा प्रमावर्षी वर्षे त्याया सुदानमा वर्षु मार्ने वि श्रिमः श्रृवा नश्रृवा व्येषा शुः वेशाय ५८ गुत्र व्युट श्रुट्या या ५५ वर्षे वा या सर्देव,री.वी.य.रेट.जंश्वस्त्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्था नदेव'रा'र्षेद्रश्राश्वेश'रा'या'र्शेन्यश'रा'र्षेद्र'दे'देव्यश'तु'क्र्यश'रुद नर दशुर रें। । १८५४ र तु इसस पे ५ तु १८५४ र तु १८५४ दें। विश्वस्य स्वायस्य स्वयस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वयस्य स्य स्वयस्य स्ययस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस् र्रे । १८५४:५:०:वाद्यः ५:५८:५ (व्यायः ५:५वाः व्याप्तः ५:५वे:५वो:५५, व उटार्टें। विस्रवाशासंदेश्वदेवास्त्रस्थशार्थेद्वाद्वासंदेश्रेशाग्रदास्त्र नरःवश्चरःर्रे। । नसःमदेः क्रेंशन्दः नगेःवन्तः वें स्वर्थः क्रुशःग्रहः र्दरःवरःवश्रूरःर्रे । देवेःधेरःदर्गेवः अर्केवाः वाश्रुः अपः स्टरः वरः वश्रूरः र्रे । वहिना हेन य प्राप्त वहिना हेन एक विषय प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप विद्रास्तर दुः हैं वाया राष्ट्र स्वया रहत यह स्वर्ण के या दिन रहें या या यह स्वर्ण स्व न्वान्द्रादेशे त्व्रकातु न्द्राव्हेवा हेव मित्रे श्राप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्यापत

ब्र-इन्बर्धिः हेन् क्विंगानी हिन्य नेवे त्यव न्यन स्टर्म विवर्धेन यायानुनेत्रवद्यायदेश्यदार्श्वेनात्र्येवानुस्यायस्यायस्याद्याने। हेत् र्क्केयायम् पर्देशक्षम्यम् निक्केयम् निक्कियम् । निक्केयम् निक्कियम् ग्र-प्रमा । यार विया यहेव वसाय ग्रुट या दे। । यह यविव से द हि द धेव स्मर ह्या विश्वानाश्चरश्चिता देवे स्टायमेयायशामा मिन्योश हे नहेंश र्रे इस्र राग्ने देन के देन के देन के देन के देन के देन के किया के देन के दे के देन के दे बेर्'राधेव'रादे' धुरा दर्रे अ'र्से 'इस्य अ'ग्री'रर'रावेव' पर्मे ग्रा'रा से 'प्यर'र्ने ' वेशः सुत्रानाः केषानाः हु। नर्ने न्देराने नर्देशारीं ह्रस्यानहेनान्याः हुरम्यम्पर्धेवस्रिने हे हेर्रिस्परित्थेव ही । इदि हिस्ले वा सरमिव बेन्यादेन्यवित्रवित्रवित्रते । । निर्देशारीयान्यत्वादेवादेवायान्य वज्रुर्नानि द्वा वि रूर्मा वि रूर्मा विव रूर्मा विकास राम विव से र मदेः भ्रीमः में विदेश्विमः ने न्या क्रुं म्यः क्री मार्यः में में मार्यः में में मार्यः में मार्यः में में मार्यः में मार्यः में मार्यः में में मार्यः में र्रे। ।गाय हे नर्रे अ में इसस्य रूट निवेद की स व्येट व वे कु नट के व से ट ग्रम् व्याप्त विष्याचा ने स्थापमा स्थापित सामे वे से सम्मानित ।

बेर्या धेव है। देश वर्षे दाय दें विश्व श्वास्त्र विश्व श्वास त्या । देश विवर्ष प्राप्त विश्व स्थान क्षेत्राग्राम्हेत्र हेम त्र्रोय प्रमाय सुमान थीत हे मेरि से मामान वितासेन र्ने। । मरः मित्र से नः से नः प्रेनः प्रेनः प्रेनः से नः से निया ग्रामः प्रमानः प्रेनः । र्वे । हि.क्षेत्रःयंत्रासः रटः क्षेत्रायः अयात्रात्राकाः हेवः हटः वर्षेत्रास्य वर्षेटः वर केन प्रेन प्रेन स्वेन स् यने निवत्ता द्वे के ना ग्रम्हेव के मान्येया यम प्रमुम्न विकास दे हिमा रदानिव सेदाराधिव ग्रदा दिसारी इससारदानिव सेदारा रामा रामा नश्चनः सर्व्यासः धेवः स्या देः यः हिंदः है । क्षेत्रः स्टः निवः सेदः संदेदः धेर्नरिरे भेरा न्रें असे म्राम्य अस्ति भेरी मार्थित स्त्रीय स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धिय स्वर्धिय स्वर्ये स धेवर्त्वे विश्वरङ्गरायादाधेवरमादे से सुदार्दे । विश्वरदानविवरम्भेरामुनः वःकुःक्रेवःवःश्रेःक्ष्र्यःपःदरः। कुःक्रेवःवःक्ष्र्यःवःररःववेवःश्रेदःपश्राद्यः यदे है अ शु पर्वे क्षें वा प्रा प्रें प्रवे के वा वी अ प्रवादा क्षें वा वी अ प्रवादा क्षें वा वी अ

वयाया'रा'व्य'र्र्ट'यो'र्टे'र्वेश'युर'र्धश हिरा'र्धर'र त्रुट'त्रश र्टा'र विदः नर्र'र्'ननम्'स'सूर'शुर'त्रम'र्न् अप्राचे देत है सू'न'न वित हेर्'सदे वोवाशक्तेत्रः विद्युर्ग्नः धितः दें। । देः भूरः तः के शः इस्रशः शः रहः वोः हेः र्वेशः मुनः प्रदेष्ट्रान्य विद्यान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्व वज्ञर्या ग्री वज्ञेषा चाषा सदासुवार्या ग्री देशाया ज्ञारा राष्ट्रीय या व्यवसारी र्शेवार्यायाः श्रेवार्यायाः विद्यायाः स्वार्यायाः स्वीत्रायाः विवार्याः धर:इरशःधःवःररःविवःशेर्धःधःयःररःख्यशःश्रेशःरेशःधःइरःशःशेरः धरःश्रॅरःत्रम। ररःवितःभेरःधःषःत्रीरमःभवःषःभेरःग्रेरःत। रः र्ट्ट्रियंत्रियंत्रायाकेट्रियंत्राचेत्राया क्षेत्राकेट्ये पिश्र सिर्श संदुः कुषः विश्वश्रा द्या सर नश्चर न याविर नवा दशः के योशः नश्रवाःसःन्दःश्चेनःसःश्चुदःनवेःश्चेंन्,सायःवनन्सन्दःसन्दःसवशःसःनश्चेतः वश्रवेशयन्द्रावश्रयायात्र वर्षेत्रयम् वृदेश

त्रे त्र निवा खु अ त्र दे के निवा क्ष अ त्र के निवा खु अ त्र के निवा के के निवा के अ त्र के निवा के अ त्र के निवा के निवा के क

न्। हिना हु श्रूट नवट निर्मे के। श्रिस्य प्यान्य स्थाय संभित्य। निर्के न्यार्केशाम्बर्यायेना । श्वाचनायरेवासुयायाधेवाम। । वनार्वे ने में हि ढ़ॱतुर्| |शेस्रशःयः नरे : स्वाःवह्याः यरः वशुर् | क्रिंशःवरे : बनः धेरः से : वें धेश विश्वास्त्रत्रावात्रम् श्रुवाश्वास्तुत्र हो विश्वास्त्र श्रुवास्य स्था सुश्वा वया क्रिंशनसूर्वाराययार्येवायम् शुम् । वियानसूर्वा वर्षेयान्यायुरा र्ना इस्र अत्र अभी व रहे हैं वा अप्नाय निराम वा शुर्स अप धी व वि । ने १ क्षे स यग्'न्र्यार्रम्'त्रिम्'न्र्येन्यदेःसेम्थ'स्थ'स्र्यतेवेद्रःसेन्यम्बर्यः वनेनर्भासराम् शुर्भासंदे र्नेत्राया विष्यात्रम्। तुस्रासाया स्रिम्भासा स्रम्भा अकु:८८:अञ्चेत:य:य:र्शेम्यःय:२८:वी:धत:यम:मट:धेत:८<u>३८</u>:य:द:दे: <u> न्यायार उर न्यर अक्केर भव ज्ञाय अप्य की वर्षा की ख्रुवा नुर्धे अप्य प्रहेवः</u> वा ने न्यान्धिन सम्बन्धन्य निम्न वर्वार्वे सूसर्रिक्षायर वर्ष्यूरर्दे । दिवे के दिश्च रास्त्र से हे दान तुस रायार्सेन्यरासे होर्ने स्रुसार् सुरविनानी साले सास्रुसादसा धेर्पायरासा धेव से द नियद सा धेव विवासे सामा सुर सुर से वा वा से वा वा से सा से वा स या ध्रेत के लेंगा मुद्रम्यायायाया स्वान हे नाय प्यमें या ता प्यमें सा के या मु बूटर्टें। ।देवे:ध्रेरक्वेंश्रेंश्राद्याध्वायाद्यायीयवे:देयर्देव:ग्री:याश्रुटर्द्याः ८८.८ेषु.८गू.४४.५ग्रेष.भूष.यक्ष्र्य.यक्ष्र्य.यक्ष्य.यथ.याष्ट्र.४४.८या मः इस्र अञ्चर क्रेंट्र मः क्रेट्र ग्री देवरहेवर द्रोत्य ग्री देवर द्रा ग्री हर्य साम्र

दान्त्रस्यते श्वित् रहेत।

हित्य स्त्रित्र स्त्रित् स्त्रित् स्त्रित् स्त्र स

বাইপ্রমা

ख्यायारियारे हिं क्षेत्रः यगाया राष्ट्रे क्ष्यादी।

स्वाः अर्हेटः यः नश्चनः स्वाः श्वाश

स्मानित्र वित्र मिन्न के श्रिया प्रतित्र के स्मानित्र के स्मानित्र के स्मानित्र के स्मानित्र के स्मानित्र के सम्मानित्र के सम्म

सर्देर्त्रस्तानिक्षेत्रसेत्रस्तिक्षेतिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेतिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्तिक्षेत्रस्त

निवेश्वर्भ । विद्राया सेदायर वयानर वयुर्ग । विश्वर्भेषाया स्वाहिदा हेर्न्यवे यव्यन्दियः ह्यादे हेन्यन मेन्यन्ता म्याने न्दियारी व्यय उर्ग्ये। । स्टानबेदाग्दायाधेर्भन् सेदादा । हिंदाये केवा यह स्टानबेदा येन । न्यानिवार्ध्यायम् ये त्यार्था । वियार्स्य क्रियान्य प्रम्य য়ৣ৽য়৾য়৾ৼৼয়৽য়য়ৗ৾ৼ৽য়ৼৼঢ়ৢৼ৽য়ৼ৽য়৽ড়ৼয়৾ৼ৽য়৽ঀয়৽ঢ়য়য়য়৽য়৽ড়য়৽ र्दे। विष्यः ने स्टायविष्य श्रीया से दायी से स्टाय दिया गाया विष्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्व शे. मुद्राया वि.मू. १८ वर्ष मार्थ वर्ष मार्थ के स्मृद्र से सूरियाद पुर्द विश्व से से स् मश्राक्कित्रसेटार्टे सूस्राम् देने मल्टामी देन द्वापा राक्षेत्राचार्ययायया वित्रेत्रियायाय तुरावहैता सेत्रायाय से वहरास है है मेन्यम् साम्यान्यन्ति यामिष्यास्य विष्यास्य विषयः साम्यान्य विषयः निरा इन्नर: धररर निव र श्री अ र हें र पिरे र श्री मा अ त्या रे र मा र र र र र श्रेश्वेर्राचिः श्रेष्म् वायाक्षे स्त्राचित्र स्त्र स्त्राचित्र स्त्राचित्र स्त्राचित्र स्त्राचित्र स्त्राचित्र स्त्र स्त्राचित्र स्त्र स्त्र स्त्राचित्र स्त्र स् ५८। ५२, अ.ज.५६वा.स.जश.ग्रह्म ५६४.स.स्ट्रेंट.स.च ब्रवाश.चक्क्र.ज. र्शेवार्याया विद्वाराया हैं या इसराया वार्याया या प्रायया विद्वारा है । है । है से सारी स्थारी ग्राचुग्रभः प्रहुद्र श्रें ग्रथः श्रेंद्र प्यश्रा । नेश्यः प्रें प्रें ह्रस्यः प्रश्लें प्रमुद्र प्रमा । ने निवेदन्त्रास्य वस्य उत् क्ष्रिन्दाया । क्ष्रिन्दिन्दायाय स्य हुः क्षे नरत्युर्ग विश्वाशुर्यास्ते भ्रीरार्ग विष्व प्यराविष्ठ स्थार्मे वाश्व रेगार्थायर्थायान्तर्भेवान्तर्भेवान्यर्भ्यः न्यायायाः होन्यः स्री सुन्यर्थाः ग्रावर्ह्भवः हः नवावानवीं राजा नेवे के च सून न्याया विकास स्थान

उद्दर्शनायाने व्याचित्र प्रत्यायाने विश्वेष्ट्र स्थित स्थित

न्देशसें स्टर्निव श्रीश क्षेट्राव प्रिंस प्रम्थ श्री कु प्रम्थ प्रविष्ठ । शे. रूट नर हें द्रायदे या अर्गे द्राया श्रुवादी द्राया सम्यायस्य कुते क्रिंत रहं र त्या तयर या यो ता या यो क्रिंता तया क्रिंत तये ता या राजित । यधिव है। इस्वेदे रचा हो द हेर रवि यथा हिंद दे रद वी र्श्वेद इसस नहेर्यर शुर्य प्रविद्या विष्य हे र्देश इस्र स्टर्म विद्यायमा विद्र यर हे अ शुः शुः हो द वा । दे व्हाधी व व द द र अ से गुवा । कु क्रेव से द यर हिन्द्वार्ये विशन्ता नायाहे पर्ने गुन्दी गुन्दी पर्वुत्तन सेन्डित वहिनामा सेना विस्रम्या सम्बन्धित ने ने सम्बन्धित स्वर्था । विन् व्यासेन सम् वयः वरः वशुरा विशः श्रेवाशः श्रेशः वाशुरशः श्री दिशः वः ररः वीः देः र्वेशः ग्रुन'सदे'रूर'नविव'सेर'क्'ग्वाबक'के'बेग'र्थेर'केश'ङ्क्ष'न'वर्देश'वे'ग्वेर्व भ्रे वा निर्मा के त्रा निर्मा में देर स्मरम्बार्या देरे में मार्थित स्मर्ग स्मरम् स्मरम् स्मरम् याविकाग्राम् के से न्या विन्य स्मानिक के स्मानिक स्मान र्रे ने राज्य न से देन से देन स्ट्रिय स्वार्थ से है। दे स्वार्थ से स्वार्थ से स्टर्

वी दें वें अ ग्रुव भारतें वा भवे देवा अ भ अ धें द र अ द द हो । व द व व वा व याउँ याया श्रें वाश्वाया उदि ही साववी वाश्वाय स्थ्रा ने १ द्वास है। श्रेन नु । श्रु स्वा वा वा वा शॅवाशराइसशर्थेर्परपर्दिर्परने श्रेर्प्रस्वी में वेशवावायि थेर् धरः श्रुप्या रदः में दिनें अः ग्रुवः धः गातृ दः से दः वातृ दः से दः दः श्रुप्तः दे । सबदः गिहेशर्सुःसूरःवरःगिर्देदःसे वाचशर्न्देशःसेरःङ्कानदेःगे स्वायःदरःहितः बेर्या धेर्या विष्यक्त स्त्रीय स्था वर्षे स्त्रीय स्था वर्षे स्त्रीय स्था वर्षे स्था स्था वर्षे स्था स्था वर्षे क्षरम् हे श्रेन्त्रन्देशर्ये नेदे व्यन्य हेन् वेदान नेश्रेन्त्र स्वी दे से षरधेवरमंदेराया गरागे कें रूरामे दें ने राज्य न ने वे कें ने त्य नहें रा गिहेश शुः शुः नायश्याय प्रत्याय दि दि । यदि दे । यदि । उद्दार्विषास्य द्रगाय वस्य वस्त विस्तर्वा विस्तरा स्वास्य स्वा 到

बेर्'निवेर्'र्'नेर'बूर'निवे श्चु'स'दूर'तुर'तु अ'से देर'नश ह्ना परे सबर' क्षूर्य भेतर्ते । दिश्व केश व्यव १ वर्ष १ उयः परः गर्देनः यः तयः येनः यमः हें गयः ययः प्येनः यवमः येः शूरः नः प्येतः या ने भ्रावतरा ह्यु ग्राप्या के ग्राका सदे प्रदेश के स्वाका देव स्वाका के स्वाका स्वाका स्वाका स्वाका स्वाका स्वाका क्रॅम्पिये प्रमेश में माने के प्रमेश में माने के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के धरारेशायवे रेशानेशायर्देरशाता से दाये समय से दारा धेता दें। र्दायविदासेर्पार्दासेर्पायाहेशाम्ययायराद्येर्पायायया यश्यान्या शुर्वा है भूत्र्य वाया है ने भूत्र हिंद क्री शर्देश से स्वर्थ रटानविवासेटासराइसासरानवगाना दें वादी गटान हैं साध्य १८८ स ॻॖऀॴर्राया गुर्यायिष्य्या ग्री द्वयायर श्चेत्राय दे र्राया ग्रीया श्चेत्रायर वशुर्त्रात्राधेदार्देश विशामाशुर्श्वाराने व्रथ्य स्टन् स्वाय विश्वाय स्वाय प्रमा वशुरायायशन्दावज्ञशन्तायाश्चरायान्त्रनायदे भ्रित्रावज्ञायाये गर्डें नें र शुर्र र धेव हैं। विहें र पर शुः हो वि नें र जा से र र र र स थेव बेद्र'सदे'षय्य सुरद्र'षय पद्रयासदे सेंद्र'हिर्द्र'दर्शे च ग्याय पर्दर हेद्र' यधिवर्ते विर्मेर्ज्यादेख्यान्त्र्यान्त्र्यं न्द्राय्य्यान्यः विष्या सेन में लेश हुर नवर संधेत है। कें तर है ले ता वरे नगर मन ने तर सेन र्ने विश्वास्यायम् वर्हेषाया धिवार्ते। विश्वेष्ट्रायम् विवासेन्यम् स्थाया शु

दे त्यास्तान्त्वेदाक्षेत् स्याधिदाद्वास्तान्त्र विद्यास्त्र स्याधिदाद्वास्त्र स्याधिद्वास्त्र स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य स्याधिद्वास्त्य

र्मन्त्रीत्तुः स्वर्गास्य प्रति विश्वान्त्री स्वर्गान्ते विश्वान्ति विश्वानि विष्वानि विश्वानि विष्वानि विश्वानि विश्वानि

द्वशःश्रॅन्थः स्वाद्धः द्वाद्धः स्वाद्धः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः

चलि नक्कु स्वते त्रक्षे त्रास्य स्वया व्याप्त स्वया के निर्देश से स्वर स्वर स्वया स

केन्द्रस्यन्त्र्यास्त्रिक्त्र्र्म् । विश्वाहेन्द्रस्य स्वाह्य स्वाह्रस्य स्वाह्य स्वाह्रस्य स्वाह्यस्य स्वाह्

म्ब्रियान्य क्षेत्र प्रमेश्व क्षेत्र प्रमेश क्षेत्र क

हे। देवे:ध्रेर:वेंग्राय:धेव:वेंश्वयाद्यायरम्याय:वें। विवाय:बेंश्याद्य:वेंश्यः *रर* निवेद से द प्राप्त के देश के देश स्थान स ग्वित संभित संभे निर्देश से से निर्मित के निर्मा संदेश में वास के निर्मा संदेश में वास के निर्मा संदेश में वास वन्यायवे नर्देयाचे स्याया त्रया व्यवस्त कर्त्त से न्या के स्था के निष्ठ स्था निष्ठ स्था निष्ठ स्था निष्ठ स्था निष्ठ से स्था निष् नःधेनःमदेः भ्रेनः नृते वज्ञ यातुः सर्वेनः नितः भ्रेनः नितः वी दिः नियः थॅर्न्सदर्स्सधेवाहे। ह्यान्सहेर्न्च्यानदेश्चिर्न्ना न्रेस्स्स्रादहेवः सरः त्रवः प्रदे: श्री विकायन् कारा वार्के म्रायः विदे प्रमाणे के नः ग्रीनः श्रेवायान्यान्त्राची में में श्राचीयात्रात्रा श्रेवायान्त्रा स्वायान्त्रा स्वायान्त्रा स्वायान्त्रा स्वायान्त्र हेव प्रज्ञेय ग्री देव प्रेव ग्री नर्देश में से द प्रवे देव सेव प्रम्यास्य स्था यदे सबर सूर न धेन ही। दे न्वा धेन स उस न क्रान है न दे र से र क्रा नवसः धेनः भ्रानः भेनः दे। । ने निवन नः नुधे निम्मी निर्मेश में मुस्र संस्थित होनः यदे तुरायरा क्रेंद्र यदे दिस्या से दुर्द् दुर्द् दुर्द् रासे से दुर्ग प्रदेश बेन्स्यम् सुर्न्ता धेव्यी ने न्याया स्ट्रान्वेव सेन्सर सुर्यास्य सेन् सन्नरः स्ट्रान्यः सेतः देश

ने भूरणे से न्यान्य प्रति स्व से न्यान्य स्व से न्या से न्

वे त्याय दर्भ भूगा भ्रूप विराद्य अदे देवा पर इर बद ग्रूर भे कि दो माल्वरायान्यामार्या होन् रायदे के त्वरम्मा माल्वे वर्ष्यन् सेन् माहिकाया से माका यदे यह्या य शुक्र दर्भ या या दे यहिका शुप्त स्वेद स्वेद प्रमें अपमर र्रिन् ग्रीयावयात्वर्यानिवर्त्ते ग्रीयाद्वेयात्रार्थात् सेवाये देवाये न यदे हिर्से । यदे सूर्याने यार धर सुर याने या या स्टर्यने स्थित् स्था बेद्राचेश्वानह्यात्याचेद्रात्रश्चेत्रात्रश्चेत्रत्वेत्रात्वेत्रत्वेत्त्रत्वेत्त्रत्वेत्त्रत्वेत्र हे। नेरःस्वर्त्रायदेःसुरःग्रासुसःर्षेर्वतःर्रात्वेदःर्षेर्वारान्दःसेर्वाः गिहेरामाराधितावेरामह्यापाद्यानराधीरीमाराही रमेरादामार्देयाहा रदःचित्रः विदः सेदः चित्रः सुः विः स्विः सेदः सेदः से सः ने सः चुः यः विदः बेन्यिहेशःशुप्तः व्हेन्द्रेन्यः यास्याय्यशहे। न्येन्द्रन्नेन्यः यानेन् रादे या है या न्दर नु स्वते । या केंद्र स्वते विश्व केंद्र स्वते या निष्ठ या निष्ठ स्वति । या विश्व स्वति स् क्रॅंब केंद्र न्य त्य हैं या या विवादीं। विवास मार्थिय क्रेंब केंद्र वा विवास या श्रीया ৾য়ৄ৾য়ৢ৽৴য়ৢ৾য়৽য়য়৽৾ঀ৽য়ৡয়৽য়ৼ৽ড়ৼ৽য়ৢয়৽য়৾য়৽য়য়ৼয়য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽ है। हैं न हैं या प्रथा स्रायविव सेन परित्यें या वा । स्रायविव हैन न् र्यायुवावयुर्ग विशामशुर्शायवे ध्रिरार्गे । माववा पराने सूरावर्ने र रानेशके के राजाराया प्यरासुराजा शुर्श हिंजा सदी ज्ञारश रेशान हैं रासे दे मश्रे के स्वान निष्य र प्रमुर है। धेर सेर खर् की वार सेर वारे वारे वार स यमः यदमः प्रशास्त्रीयाः विशासे म्यास्त्राः स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थान

स्वासर्वेट या नस्वतः द्वार्थे वा श्वा

श्रें न्या सार्यातः विना त्या सुरा नाश्रु सा से न्या स्तर् नि से ने त्ये ने से न्या स्तर त्या से ने त्ये ने त्ये ने त्ये ने त्ये से त्या से त्य से त्या से त्या

देशन् इस्वे यथा स्ट्रिंश श्रुप्त हेश श्रुप्त स्वाप्त स्वि । से द्रेश श्रुप्त कर्पर्स् । दे से र वेंद्र से द महिरामा भाषा । सामरा मार्या महिरामा स नुःमें विश्वान्युरश्यायदार्धेर्धेर्छ्यायाधीः नेर्छ। दर्शार्धित्रस्थ ररःचवेव ग्रीशःश्वन परावशः स्वरशः याषा ह्वा कर् ग्री क्षानर दश्रूरानरः यार्थायन्य मार्थेर्थाते। क्षेत्रायार्थायया यार्थेर क्रेंप्यं स्थित् सेत्रि धेर-१६४ में १८८१६४ में भेर-धर-ध्र-१ वर्षित क ह्या-ध-८ कर-धर-ध्र-नरःवयःनरःवशुरःवेःवःवरेःक्ष्रा गरःवेगःररःनवेवःश्रेशःधॅरःया ।रेः वे से दाया से वा से व बयःवरःवशुरा । वारःविवाःसरःवविवःश्चेशःधिरःधरःवर्हेरःधःरेःवेःसरः निवन्यार्थेनामासेन्यस्य वसायरसेन्यस्य वितन्। नेप्यन्यरम् नविदःधॅर्पः हेर्र् प्रशाह्य स्वाध्यास्य स्वाध्य स्वाध्य स्वाध्य स्व र्श्वान्यवर्गान्यः भ्रान्या शुःन्रेस रिवेश्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्य

ने श्री अं विवा नि अं अं नि नि अं नि या विवा नि अं विवा नि सं त्या कर्त नि स्था नि अं नि स्था नि स्था नि अं नि स्था नि स्

र्वे विश्वास्था विराने प्रविवास विराधित स्वर्मा स्वराहे स्वर्भ स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म <u> ॲंन्'ब्रूबान्बराकें बाबबाराउन्'वान्न' ॲन्'या बाधिन'यम्'वर्नेन'नवर्र</u>कन् क्षेत्रे नायर र तुर्दे नायर विक्रम में नि क्षेत्र यह क्षेत्र मा क्षेत्र मा के देश के का ना नेशन्त्राकुर द्वेसश्रास्ट्रायम विश्वास्त्रेय विश्वास्त्रेयाम्या यथा रे विवानाय हे न्यस्य उर् हें र प हे न्यस्य उर् पें र प स पें र हे वेशःहेंनान्तःनेते के तदी तेंना सराक्षानर तत्त्वाराने। हे भूतात्ती केंशायी ज्यानर्न्न बर्ग्यूर्न्य विश्वावयाम्यया केत्र्रास्त्र विर्वेष्ट्र बेर्यस्थानधी । बेर्याउरारे रावे हिरावरावशूम् । विशावन्दर्भे । वेर क्षे प्यटा वस्र शास्त्र न्या क्षेत्र स्वा निवे के हो स्वे स्वा निवे के हो स्वे स न्देशसें प्रने न्यान्भेयायास् वेदायान क्षेत्र संदेत स्यून है। नेदे हिन

स्रायिक्ष स्रोत्ति हुँ स्रायिक्ष स्रोत्ति । विश्व स्रायिक्ष स्रायिक्ष स्रोत्ति । विश्व स्रोति । विश्व स्रोत्ति । विश्व स्रोति । विश्व स

ঀড়ড়৾৽ঢ়৾৽য়৾৽য়ঀ৽ঢ়৾ৼয়৽য়৾৽য়য়য়৽য়ৼ৽ঢ়য়৽য়ৢৼয়৻য়য়৽য়ৢয়৽য়৾ঢ়৽ धराधी पर्देन धर्मा है विवा कन धरे कन क्षानर पश्चर है। क्षेत्र हुन न प्रा बेद्राचेश्या ।देशदाळद्यायराष्ट्रयाचरादशुर्म ।वेशदेयद्यायाळद् क्षेत्रम्याशुर्वाकेटा क्षेत्रायाव्यव्यव्यव्यायाच्या इत्यवर्धेम्यागुराहेन्याग्रीः ननेत्रामा से भेरामा उसा ही सान होता माना महान वितासेता सराहेंग सात सा नेविः क्रेंद्रायाः हेदार्देवाद्यायावे अळवाहेदा उवाहें ग्रायाया है या विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास शुः भूरः वरः भेः वशुरः है। यारः विया राभूः भेरः धरः शुरः धरे वे के व वे के विगाः धेरासराय सुरा वियारे स्वराष्ट्रसार्य सार्वित सार्वित सार्वित सार्वित सार्वित सार्वित सार्वित सार्वित सार् नयास्त्रियाग्यम् सेन्यादेनम् स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्यार्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्व वा ने वे ने ने ने ना सामा धीव हो। कन क्षाना या ना कन कु वे नर्देश में सूर पिश्रास्त्ररश्रापान्ने श्रादाने त्रिता हेता स्त्राम्य प्रशास्त्रा स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्र

यश्राद्यश्रासे न्यान्य वर्षे न्याये क्ष्यान्य क्ष्याय्य क्ष्याय्य क्ष्याय्य क्ष्याय्य क्ष्याय्य क्ष्याय्य क्ष्याय क्ष्याय क्ष्या क्ष्या

ग्रम्यायम् वर्दरावार्षम् । ५५७ सामन्ते सेरामान्यान्यास्येरा राधिवाने। वारावी श्रेरादवी वारावी राया निवास के वारावी स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन वर्चर्यानु न्दरव्यहेषा हेत्र वस्य य उद्दर्भ न वित्र ग्री य क्रेंद्र प्रमः क्रुप्त प्येतः या भेरामानगण्यरारे प्रमाभेरारे लेशाङ्कानमा हेरामाधेवामारे विश्वेमा <u>५तु</u>ॱसःसःवे सेरःसःसः५८: हिरःसरःसेरःरे वे यः केंवःनरः हेरःरे । हे स्नरः षरः संधेतः हे। न्तुः संभान्यां ते हेत् छेटः वहोत्यः सरः वहुदः नः श्चः नः धेतः या हेत्र हेट प्रवेश प्रमाय वृह्य परिष्ठिम प्रदेश हेत्र प्रदेश प्रवेश प्र यायान्यायो यादी हो सूराहेदा हेटा यद्येया यरा यद्युरा या धेदा यदी सुराररा नविवाग्री अर्भेदास हेदाग्री भ्राविका यहिया हेवास देया या भ्राविका सादिका र्रे से दायर हिंग्या या या या ये ता है। विष्या से वा से व र्रेदि:इस्रामान्द्रामित्रामीर्यान्यम्यान्त्रामेन्द्रमानेत्रामित्राम्यान्त्राप्तेनः वेदःचःद्रदःवहेषाःहेदःवदेःदशःयःर्रेषःतुःवर्षे चःयःअर्वेदःदशःवहेषाःहेदः वर्ने र-५ क्षे मा अपने प्रदेश र्दे अपने प्रदेश प्रदेश र्दे अपने प्राचन प्रदेश र्दे अपने प्रदेश रहे । वर्ननसम्मन्त्रेन्याधिक्त्रेष्विष्यम्बर्धा

ग्याके न्तुः सामान्दाः स्वन्तः स्वाकितः स्वाक्षः सस्ति। स्वन्तः स्वन्

सर्द्धरमार्श्वास्त्रमा पर्ने प्यरक्षे पर्ने प्येम स्मानिक स्मा बेन्न्, वर्नेन्यमान्नेन पाद्यमान्न प्रत्याप्य स्वाप्य विकास वे खर्यायन्त्रवार्थेन प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते के कार्या के कि स्वाप्ते के स्वापते के स्वाप्ते के स क्षेत्रान्त्रस्य स्था न्याने ने स्थान स्थाने र्ने प्पेन प्राया प्रेन प्रायेन प्रायेन प्रायेन प्राये प्रेन के लिया भूता वर्रदेश्चेत्रमामळुटमामण्डिन्देश्वेत् मेन्द्री न्तुःमान्यामीमागुनः <u> इ</u>य. ऐ. लूटे. तया विश्वाधित अ. तया है. टे. यो. यो श्वाधिश शाधित श्वाधित । <u> भुराभे अद्धरमामे ५५५ । विमानासुरमार्भे । दिसाने ग्राम हे न ५५५८ ।</u> यशयत्र्यशर्भेग्यापयाये येदायदे द्वायायर यदे दायादे यहेगा हेदा कुरः यवः यः नदः स्वारा वदः वदः वस्व देते । देते रः स्वे वः देव देवे वा कि वा कि नन्द्रभावद्गन्ते कुः अळद्गन्। देःवाष्ट्रभावेदार्थेद्गवार्वि र्वे व्यास्त्रभावेदार्थेदावार्वि र्वे व्यास्त्रभाव वेशःग्रहः अष्वश्रह्भःष्य देः द्वाः भेदः धरः वर्देदः वः विः वें उवाः देः क्षूरः भेदः धरक्षे क्षु भे भें द्राया थी वा धरा पर्दे दा हे या ही पा शुरा वा स्टा विवा बेर्परक्ष्यापर्रिते कुष्ठा अळवर्रित होता वर्षे द्राप्त वर्षे द्राप्त होता वर्षे द्राप्त होता वर्षे द्राप्त होता वर्षे द्राप्त होता है वर्षे वर्षे द्राप्त होता है वर्षे देश होता है वर्षे देश होता है वर्षे देश है वर ग्विग्'रे'क्र्य्रअ'र्थेर्'यर'ग्व'हेर्च'रु'यवेर्'यर'ग्रुर्य्य'य'धेव'र्वे।

र्देर्न्यमुर्यासदेः से विवाप्याविवाची यादी रोगानम्यानम् साम्याने सामित्रा र् पर्वरायम् रास्त्रिया ह्रवाधी स्वरास्था वाडेवायी राहे मुदास देशकें रावमु वासर्वेदावसायदेशावमुसार्से विसास्चावादादेशाम्सा र्वेरःवरेःनमुश्रःश्रेष्वेशःश्रुशःसःष्ट्ररःत्मुत्रःसःनेशःग्रदःनमुश्रःशेदःग्रदः। गठिगाते नह्त क्षाया ठेगा विषा ते राते तर्म सक्षा नषा क्षे सक्ष द्राया निवा र्वे । भे प्यर के वा वार्य या याय हे में राये अकुम्य के वा वाय हे नश्रक्षे अद्धरश्रम् हेर्ने । प्रोर्ज्य न्त्रम् ज्ञानिय प्रेति स्वाप्तिय । गैर्भार्ते । प्यतः निष्णान्य राधीः भेर्यानितः निर्देशः निष्णानितः । स्थानितः निर्वाशः वर्देशनमुश्रार्शे वेशने वार्षेना सम्झुनम होना नावन ने ने निर्मेश शुःसर्वेदःवशःशुवःवर्द्यवःयरःग्रेदःद्वा ।देःयःदर्दशःसं वःददःयःसेदःयःदेः ॔*ॷज़ॱ*ॴॸॱढ़ॕॕॻऻऺॺॱॸॱॸॕॱॿॱॸ॔ॸॱॸऻॺॱॻऻॾऀॻॱख़ॱढ़ऀॱॸ॓ॱॸॾॖढ़ॱॸ॔ॖॱॾॗॗॱॸॱॿ॓ॺॱॸऻॾॕॸॱ या ग्वित यह निर्मित्र स्थान विश्व स्थित । मिर्डमाय है प्यान निर्मास्य नह्रवाश्वायात्रात्रात्रात्रात्यात्रात्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्या वाववः याते साधितामाने निवेतान्। यने साधारान्से सामिति सरामी में में हि सूप्ता निवन्त्रेयामात्त्रस्थारित्त्रं कुत्रमात्त्र द्वानाया सेत्रमात्र्रेयामात्रे वी दिन्दे हे १ द्वाप्त निवास माना साधिव साम्वाप्त हिना स्वेरा स्वाप्त साम्वाप्त साम्वाप्त साम्वाप्त साम्वाप्त स न्रह्में न्यान्याः अर्द्धन्यायाः अर्थेवार्दे । वियायाश्चन्याः विविश्वायाः विविश्वायाः विविश्वायाः विविश्वायाः रदःचविवःसेदःसरःवीःचःवःसस्यःतज्ञसःस्वासःरेवासःससःचगावाःसरःवीः दशः हु । तद्यशः स्टः ख्रायशः यावा । यादः क्षेत्रः से । अदः हुँ या शः यादः । अदः । अ

नेशक्ष्मित्रभेत्रम् होत् त्राक्षेत्रमे भेत्रम् स्यार्थेत्रम् स्टानितः भेन् ग्रम् कु त्रव्या ग्री हेव त्रवेष त्रहें या अ प्येन्य विया नर्गे अ है। नवि नक्कुःसदेःदग्रेयःसःयशा देःसूर्यः यदःदेवः वादः विवा भ्रिकाःसः यदेः देदः नन्ता । ने निवित प्रमामाराष्य पर्से नियो । ने प्य ने साम सम्मान वित बेन्ने। विष्यानेने प्रायम्मायविष्यं मेन्य के विष्या वेन्ने विष्या विष्य विष्य विष्य विष्य विषय विष्य विष्य विषय भ्रे। ग्राम्यव्यक्षित्रस्याम्य म्याम्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य हेत्र केर प्रवेष प्रमायवुर वारे प्या विकाम सुरका है। यह का वे पर ผู้สารุหัสาพรพาฮูพาลผูรพาปิพาบราพัราหารุรารัวสัพาปุลาหลิ हिन्यरम्बार्ययान्यस्थित्रयाय्यत्यस्तिन्। स्वान्तिन्द्रिःश्वायायाः यथा श्रुभारा वायाहे.र्भाग्यराभेरी कुंर्टराय्येश.ये.र्टराक्क्याशास्तरा बेन्द्रमान्वर् हे निगार्थेन्। ने स्थान्य व ने वे सेन्य मास्य व केन्येन र्वे। । नन्दर्या अप्पेवरो। हे क्ष्र्यहिंदर्यथा अप्याय मार्थर्य हैर यशःषेत्रप्रस्थेत्रासुःहैवायम् होत्याने सूर्ये प्रवत्यम् वत् हो। ते न्वानिहेत्रत्र्यावान्वायायस्त्रे श्वानार्वे । वियान्त्रेयार्थेसः श्वानाय्त्रेनाया क्ष्र-शि-रन्गे में र्वे अश्वान प्राची प्रवन में लियान ग्रामा प्राची नहेता

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहे या र्री वा रा

दशन्त्रम्य स्ट्रिस्य स्ट्

मर्वेर् हेर्ने महेर्न सहस्रा हो सार्य के हो के सम्मान हो।

देवाश्वास्त्रान्धन् वर्धन् वर्धन् स्थान्य वर्षा वर्षा

55:31

देवायाययात्र्यत्वात् वर्षेत्रः यो वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षेत्रः वर्षेत्रः यो वर्ष

या ब्रायाया श्रीयायाया श्रीयायाया स्थायाया स्थायाया स्थायाया स्थायाया स्थायाया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया

ने·विंक्'केनःवःन्धेनःचवेःनेष्रभःभःन्नःस्वरःत्रुषान्धेनःचवेःनेष्रभःभः वेश ग्रुप्त धेद त्या देवारा प्रदेश मा त्यारा स्वारा यर वे कि वे उवा के पर्दे प्रथा यदे व पर्दे शासु वया यदे क्रिका से पर्दे व |मायः हे :दे :द्वाः देवायः सयः दह्यद्वः भ्रे :वर्जेदः देवायः सयः विवायः सवे देवः धॅर्नस्र हे क्षूरत्वर् ख्रुयावा वरे वे रेग्यास्य रहार् से पर्वेर् रेग्रथः यथः गर्वे ५ : यादेशः ग्रेथाः हुः यद्वयः यः श्रेषे हे । दे : यदः यः अदः से : विगः वरो देकिर्द्रित्यवेरेनेवायाययायवीवार्येन्देवायरक्षेत्रया धॅर्द्र वेश र्भाय के नगर्डे या धेव मश्री के कि ना भी पर्दे र दें। विना श *पश्चन्यावीन* अप्तर्वेन श्री देव के ने किं व के न त्यान श्री न प्रवे ने प्रवास प्र नेशक्केन्यक्केन्धेवया नेयान्वित्वक्कार्ययेयवीयाययश रिंग्नेंउवा मी इस पर न्रेंद्र पर है रहा निवासी कर के वारा सुर हो दार है दा ही रही वेश'म्बुर्स्स'स'क्ष्म म्बुम्सार्स्सम्स म्बुम्स स्वार्थान्य स्वार्थान्य स्वार्थान्य स्वार्थिन्दर निवन्धिन् सेन् पर्केषान धीवन्धि । ने भूति मा बुग्याया सेंग्याया सर वी दि विश्वास्त्र क्षेत्र विश्वास्त्र के दिन्दी स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व भ्रें।प्यायार्थ्यःक्षेयःयःभ्रेदःही ।देश्यःदःदेयाश्वःयःदेःयःदेःहेदःयःद्वीदःयः वेश ग्रुः ह्रे। ने विंत्र हेन न् ह्रे प्यामा र्यम्य म्या वाया वाया न हिन्य धेत सदि 多不到

स्वासर्वरायः वर्षायः स्वास्

नेश्वान्त्रभे त्यावात्यार्श्ववाश्वार्थात्रम्य स्टावी दि विश्वास्य विश्वास्य स्टावी स्टाविश्वास्य स्टावी स्टाविश्वास्य स्टावी स्टाविश्वास्य स्टावी स्टाविश्वास्य स्टावी स्ट युन्य दिन्य राष्ट्र राष्ट् यः स्टानी दिन्ति श्रास्त्र स्त्री प्रमाना विद्वास्त्र स्त्री प्रमानी विद्वास्त्र स्त्री प्रमानी विद्वास्त्र स् यदे ध्रिन्दें भेते व्हातु देश क्षेत्र व र्रेग्याय अक्षेत्र यय न्दर्गे दे वेया युन सदसने वित्रम्युन सदे हुं त्याया र्से या शादवीया संधित है। रह यी हैं र्वेशःग्रुनःवःदेशःह्रेदःदर्गेशःसःस्यशःसःह्रेदःसदेःध्रेरःर्दे। ।द्येरःवःपरः र्द्धेग्रम् शुःतुस्रामः पेर्दान्नेद्राम् देशामदे पर्देषा स्राप्तन श्रीस्र १०८५ तुअमानर्यानदेखें के अहे नदिश्वेशक्षान्य विवासायकी मी। तुस्रायापॅरायारस्यारेसाहेराष्ट्रमावेगसा रेप्तिवेदार्पस्योपेर्देर्स्स युनःसदेः क्रेःनः विन्तः क्रेनःसनः देशःसदेः नतुः सःसदेः नेवाशःसशः नर्दयः नः तः क्रीः नः सः क्रेनः सः ने सः स्टः निवेदः दसः स्टः नी स्टि संस्ताना स्वेरक्रीः नः विग्रयायाधित ही। क्रेंग्नार्यसाहिष्ट्रमाविग्रया देष्ट्रमायमानिवासी वर्षेयायायम् नेते श्रेमने प्रमानेषाम्य समाममान्यन् । त्रः खुव्यः त्रः क्रांच्यः विश्वः व्यः क्रांच्यः क्रांच्यः विश्वः विश्व

वा बुवारु क्षु त्यः सेवारु प्याप्त्य हें वा या वदी हसरु व्येत्र व्येत् । कुवा ग्राट दे विंत्रायान् श्रेन्यवसास्यान्यविदार्थेन् सेन्यश्रेन्यवे सेवासाससाम्बन् श्रेष्युवास्याने प्रवास्य नेवायास्य प्रदेश्वह्याः स्थाप्त स्वासी विकार्श्वेष प्रदेश वर्देश'यद'यद'ग्रस्थःभेद्रा देग्रश्चित्र'द्युद्र'यः तुश्चित्र'देग्रश्च देशसङ्गेद्रपादागुदार्हेनपादे द्यापदे यापायागुदार्हेनपदे यापायासी सम्बर्भासानेश्वासरात्राम्बर्धरश्वासाधितात्त्री । प्रायाने स्रायनेता विदार्धेता सेता न्ध्रिन् प्रवे सेवाश्रायश्यक्षे प्रवाप्तवावा प्रमः त्राश्रावा बुवाश्राप्तः र्क्षेमः वा यःश्रेवाश्वर्यदेःग्वरह्नियःयःदिःन्वायःदेवश्वर्यःयहवायःविवःह्याव्यव्याः न्वें रामाधिवावा ने प्रमान के हैं नान्यें वादि प्रमान्य प्रमान स्थान महाराम स्थान उद्दर्गन्मनारम्भात् रदानिवर्षेद्रासेद्रान्धेद्रान्धेद्रान्धेद्राम्भान्धाः यदेःर्देवःरेग्रयःययःगर्वेदःयदेःर्देवःदःयर्देदःयःवेद्वःयययः केशकेरप्रह्मश्रायाधेवर्ते। "देग्निवर्त्यम्याश्रायदेशस्त्रयावर्गाः मैर्था ग्रह्म न विषय हैं मेर्था के स्वाया क्रिया के स्वाया क्रिया के स्वाया क्रिया के स्वाया क्रिया के स्वाया क

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

द्यामाःश्रॅमश्राश्चेन्यः प्राचिमश्रासमाः व्यावे स्टान्यं विद्यः विद्यः स्टान्यं स्टान्यं

देश्वर्त्वार्ते ते देव द्याया प्राया उव क्षेत्र व्याय विषय क्षेत्र व्याय क्षेत्र व्या

ग्रीशनक्षेत्रसम् ह्या विश्वास्य स्विता देवे व्योवासम् प्यता विन्ते रुगा वे प्रदेगा हेव ग्री गुव हैं व वर्जे वा प्रस्तु विदेशी र विव हु के वा शके वर निवश्यम् शुरु श्रीश हिंद् श्रीश यह ना हेव श्री ग्राव हैं न श्रीय विन । नायः ने हिंद्रायायहैना हेदा श्रीयानोर्देदायम् से प्यशूमादाम्स । इ.स.च्यापादिना होद्राया से स्थापादी । गन्नःसरः हुर्दे। । यहे गः हे दः ही अदि । यार्दे नः सयरः धे दः हे। वे अया शुरु अः यदे भ्रिन्स् । दे त्यावि वे उत्यावे त्यहे ना हे व भ्री ग्राव है न न हैं ना यदे भ्रीन र्भेदर्खेग्रायके नरमाद्यावेय वेया मे भेया मे भेया या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स लिय.१४५.५४विय.स.२८.या श्रेयाश्वाश्चाश्चाश्चाश्चाश्चाश्चारायहै। *য়ৣ৴*ॱनदेॱॺॖऀ৴ॱॸॖॱख़ॺॱख़ॱढ़ॸॸॱय़ॱख़ॱॿ॓ॸॱॸॺॱॸ॓ॱॸॺॱॸ॓ॹॴऄॱॸढ़॓ॱॸॺॺऻॱ बरक्षे वर्देर्गी वसम्बासमार्थः रवावा बर बेर पहुँ । ब्रिंर्गी मार्थिता हेत्रश्चीःग्वरहेन् र्शेषाविषा हेश श्रेषाश्वी ५ तुः स्राध्याप्वतः ५ नदः ह्रा र्थेन् पर्वो वा न प्रमाश्चिन् श्ची गुन् हें न ने वा मार्थ प्रवा वा वे लिया सर्वे नश्चे ग्रुश्यायायार्वे में श्रामाल्य न्यारामी स्टायलेया वर्षे माल्या हिंद्रा श्री अ गुत्र हें न देवा अ प्र अ प्यमें वा त्र अ त कि तें अ गुर हिंद्र य देवे मदेः भ्रेर-तुः त्यसः मङ्ग्रीसः मदेः नुगादः श्रुन् सो नुग्रीसः मसः वर्देनः सः धीतः र्वेः वेशः र्ह्रेदः प्रथात्। गुदः हें नः पः इस्यः रेग्यायः प्रथा से विग्यायः प्रराम्य हो। श्चे विवाय सम्भावन्य विवाय स्वाय *ॻऻॹॖॸॺॱय़ॺॱॸ॓ॱढ़ॸ॒ॱॸढ़ॎॱॸ॓ॻऻॺॱय़ॱॷॸॱॷॸॱख़ॸऀॱॿॱॷॸॗॱय़ढ़॓ॱढ़॓ॺॱय़ॺॱ*

मर्तेन्द्रप्रभाने द्रमाय्यसङ्ग्रेन्यस्के नवद्द्रव्देन्द्रप्रधेन्द्रस्य भित्रह्मा विकाद्दर्द्रस्य भित्रह्मा विकाद द्रम्य स्था क्षेत्र स

षि.ठ्रम । या श्वमार्थः श्रमार्थः श्रद्धरः र्द्धाः दर्गे या सदिः र्देदः यादयाः हैः व्यः र्शेम्रायायदिमाहेत्यार्य्य स्टान्यायायदे दिस्थी वर्षेमायायीय सी ने हिनाया न्धिन् प्रदे नेवारायरायर्गेवायम् क्षान्ते भीतः हु से प्रवन्ते। हैवायून या ने केन न हिन्य के से वार्थ स्थाप की वार्थ पर्वी वा त्या ने वार्थ स्थाप है वार्थ स्थाप हो वार्य अवशः र्त्ते अप्रक्षुर्यः प्रदेशे दर्भे पार्या पारायः देवा अप्यः से दः प्रदेशे स्ट्रा *ने* छिन् न्यूषे ने वार्यायया वर्षी वा व न्वावा य ने व सून नु । जु न्वी य यदे भ्रिन्दी । दे केन न भ्रिन्दिन यदे ने वाया यया क्री न व्यवस्था वर्षे वाया विकास व यदे दर्योय प्रायम् वाय हे इस यम मुस्ति रायमे स्रो न इस या बसम उद्दर्भनग्राम्यायसायर्स् साह्यसाङ्ग्रीम्यसेद्रायस्यस्व समायदेद्रावादी देवे के दे क्षु साक्ष्य दे हिंद दे से प्रमुक्त में के स्वानिय के स्वानिय के स्वानिय के स्वानिय के स्वानिय के स नः क्षेत्रः प्रसः व्राप्तः वर्षः वर्षः वर्षे वर्षः प्रसः वर्षः त्राप्तः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व वेन्री नेन्द्रभेष्यायन्भुयय्यस्य म्यान्द्रभेष्ठित्र বাঝঅ'বহ'বাধ্যুহঝ'র্মা

क्रअयर न्हें न प्रायने अपने अपने अपने ने किंत्र के न प्राप्त हों न प्रयोग से प्राप्त का स्वी য়ৣ৴: नरः भ्रे. नः धेतः रूपः वस्य उपः नगागः हे यः पर्दे । सिंगि नयः वेयः र्शेवाश्राभी देवादी श्ले नावस्था उदावावादार्थी वाल्या में ज्ञादा दिन्दी वि नुःयःशॅग्रयःयःनविवःत्। देवःग्रेनःयः वस्रयः उन्ग्रीयःश्रेनःययेःन्देयःसेनः र्'त्रमुर्'या रे'क्षेत्र'हेर'वर्चेय'सेर्'सदे'र्श्केर'र्'व्यूर'वदे'वहेग्रस्य देव-ग्रेट्-प्रवे-तुरु-प्राचयर्थ-छट्-ट्र-प्रवाय-प्रवे-श्रे-पान्वसःग्रे-तु-वा-श्रेषार्थः मदे श्चे न से न मन्दर्भ । श्च साम श्विम सम्बन्ध । स्व सम्बन्ध । सम्ब सदसःस्टानिव श्री अः भ्री नायमें वा हे सामर्थे । यह नवि न क्रा सदे व स्वीयः यायमा जायाहे सेवाया सेवासास समस्य से से दात देवे ही सह सुर सेवा वार्सिन्यान्यत्ते प्रवास्ति विदेशम्ययायया श्री म्यायर श्लेष्ठा प्रवेशे स्वास्त्र धराववगारे वा रे विं वें रुपायी शादी हमशा ग्री हमा धर श्री वा परे दें वें केट्र'नग्राम्यायाया यायःहे[.]सेवायःश्रॅवायःस्रस्थयःदर्गेवाःसरःनसूनःसथः ने हे भूर अपनग्वा छे वा विं र्वे उवा वी क्या सर न् श्रेंन संवे रर नविव र्ळेषाना भूमा हो नाम हम र्रमी दें में श्वान भारतीं ना विना ता सेना श्राम श्वाम वर्रेषामरावर्षुरावदेःषयाग्रीः इयामराञ्चेतामन्ते । देदेः ध्रैरने र्धेन प्रभागन विगा इसायर श्लेव पा हेन न् नसून पा से गाया से ग्रास मः धेर्मः भेरः द्वी विश्वासे माश्रास्य स्ट्री ख्या विषा स्वीवा स्वीवा स्वीवा स्वीवा स्वीवा स्वीवा स्वीवा स्वीव

विवाः शेः तर्वोवाः छे शंभितः तुः वाश्वाः वाश्वः त्याः वाश्वः त्याः विवाः शेः तर्वोवाः छे शंभितः श्रां विश्वः त्याः वाश्वः त्याः वाश्वः त्याः वाश्वः त्याः वाश्वः त्याः वाश्वः त्याः वाश्वः त्याः विश्वः श्रां विश्वः त्याः विश्वः त

ने त्र्रानदे त्यश्चर्यस्यश्चराम् स्रश्नास्य विष्या प्रमास्य स्राम्य स् पिर्वाञ्चर दर्वो वारा राजा शुरवा है। खर देवे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे है देवे ही र यविश्वास्थायहैवान्हेवासवेन्द्रेवायाहै स्नूनावन्त्रास्य स्थापरान्धनायाहै र्वि'क्'हेट्'अर्वेट'न'ट्रहेश'शु'अष्ठुक्'य'अ'न्डुन्'यर'प्यशक्त्र्यश'ग्री'क्य' नरःश्चेत्रायन्यसःश्चेत्राश्चेताराःहेत्त्राप्त्राञ्चरत्राहे। श्चेतारायसःश्चेताः रायगुरानवे रहेवा देवा हेवा सम्मायस्य उत्तिम्य स्राप्त स्विका र्शे । दे सूर्यर्र्र्या अपने व स्पानिक रामि स्थानिक स् र्देव-द्रयागृह्व-त्य-त्रवेचया-प्रते-देग्याया-स्याग्,वः ह्रेच-प्रते-ह्रया-प्रत्वा-रायाम्बर्तिन्त्रत्वे। यनेवारामहिषात्त्रस्यायरायहेनारावे तत्रस्याम्बनायावरा ववाया गुरानाधेन माने निवास वाहे मान सम्मान स्वास विष्या नु नवे अपिरुप्तरम् हे सूर्त्र्रा इस्याविषा हे पाहेर्याय वराविषा इर वर ग्रम् सेन् व वे नेव न्यामृद त्यायने नया प्रवे ने म्यायाया मान्य है न प्रवे इस्रायम् नव्यापास्युवाद्यीवायाययायायायायीवार्वे ।

क्षेत्रानार्ययाययायमा विन्दे ने देव द्यामान्द्र गुव हे वा ग्री निवेद रायाक्षे अप्रकारकायायम् यत्रम् या व्यव्यान्य सम्मायायाया ने द्वरायर वहीयायर होत्याधेव दें। । वि वि वे त्याव हें न हो नि व देव स्व द्वरा यर पहें वा याया यावया यदे हो र पहे वा हे दायदे हिं वाया हे दाया वादया हे। गुर्ह्ना ग्रे स्वाया विवाययय प्रति स्वित्य प्रति प्रवाय प्रति । वन्नन्यान्वन् ग्रीयाः र्ह्जिन्य होन् । वहिनाः हेन्यां क्रिन्याः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वया वहेगान्नेत्र प्रवे कें राखुग्र राय राष्ट्र स्था हिन् विं त्र ह्रेंगा प्रमः होन प्राधितः मी। गुर्नेनिने अधिवर्ते। विश्राग्रि हैनायश्राष्ट्रस्यायि मुन्यस्य श्चानार्वित्वावर्षियाची ।गुवार्ट्यनाश्चीयाची विश्वासाश्चरश्चीया ने हिन रायानित्राविकावहैवारायाक्षेत्रावर्षाय्यान्यान्यान्यान्यान्या यदे मञ्जूनार सँग्रास देवार प्रस्थ प्रमेवा य है हैं न देव दिन देव दिन हैं न से दूर यमाहत्रसाधितर्हे । सर्देरादाद्यासारसास्या वदार्यर है। यदेवासमाहिका ग्री:इस्रायराववारान्तेरायदे त्यवाराध्या भी व्यानी मुनास्रवर ह्या वा इस्र ग्री ख्रिम्बराया मार बना मान्वर ग्रीका विविष्य ने वर्ष का ग्री इस मान्या था वयायावर् निर्मेयायायार्षेर् स्रिन्यान्। वि.स्टामीयास्यायावयाः च्यायाया ननेवर्गमाहेशःग्रीनेवर्मभायवे श्विमशःग्रीनेमश्रामशःग्रवःहेनःभवे नेवर इससाशुद्रावदीदायरावर्रितायादीयाचियाचाराधेतायाराधेदादें विसावियें

भूगा'सर्वेट'ल'नसून'कुंल'र्सेग्रा

ত্বা শ্বর্টি। বাই ম'না ক্র'মম'ন্ত্রন'মন্বাম'ন্ম'ন্র্বি'ন্ম'ম্র্র'ন্ত্রির'মি'র্ম'ন'র।

ग्राच्यायायार्थेग्यायाय्याययायेदायादे क्ष्यायायायायायायाय्यायायायाया ग्राह्म संस्थान स्थान स् यदेःवेश्वाराः इस्रश्रेने विंत्रं हेन्या क्षन्या धेत्रायाना मी ध्याया स्रस्य उदायाळदायाधेवायाचायायायायाची ।देख्रमायदायायचीयायया ने भूरत्ने विंति हैन नश्यायायाययाया मास्यश्वित स्टन्साधित मी। यसमार्थान्य प्रेत्र सार्या दे साधित दे। वि से प्रहे मा हे द मी जो प्र यान्हें नामायदेन प्रथाने विष्ठा हैन स्थायमान् हिनायायहै वा हेवा है। अर्बेट्रिन्यद्राळ्ट्र्अर्ग्वरावर्ष्येव्यन्ते भूष्येव्यन्ता मृत्याने विद्यानेवा के अधीव व दी । वहिया हेव दे छेट अर्बेट न अध्यया अधावव श्री श्रा । डि न्वीरायसवारायदे यस श्रीरा हे विवा श्री । विवास स्था सम्मान याधितः द्वी वियानाश्चरयाया नेते ही त्रे वायाना सेनाया सेनाया स्वापित *ब्रथाने विं ब क्षेन ने या प्रेय श्री मावस्या या प्रिय व्यय विंदान् कुन प्रमाश्चानवेः* मुर्-द्वयाविस्रभाद्राज्ञेस्याप्त्राच्यास्याप्त्राच्या नश्चेयायावज्ञयातुः ५८ वर्षायायायीतायर विज्ञासातीयाताते हो हो हो स्

षरः अः धेतः दे।

र्वेतः भ्रेन क्यागुवायहिषा हेवाळन् स्थेवाने प्येत् । ने किन् स्थाय । विकाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय । विकाय स्थाय स्थाय स्थाय । विकाय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

दे.क्ष्रे-श्रमान्त्रे त्रियान्य प्रक्षण्य प्राप्त हिन्न प्राप्त प्रक्षण्य प्राप्त हिन्न प्राप्त प्रक्षण्य प्राप्त हिन्न प्राप्त प्राप्त हिन प्राप्त हिन्न प्राप्त हिन प्राप्त हिन्न प्राप्त ह

यर गुःक्षे वेश ग्रुर्श्य भूग हैं गार प्रम्य वेर सायहिया परे नेशमंत्रे सर्देव शुंस हेट द्वारेट दें। ।दे त्या सायहाय न वे ध्या ही स्टा वी'सळ्द'हेर'हे'सूर'वादस'र'सूर'वहेंद'सर'तेर्'रस्य'र्वर'रेंदि'नेस' सदे सदे र शुराष्ट्र गारा स्टासळं द प्रह्या नरा द गा त्र गारा श्री पारा यदे रूट मी अळव के दिने अर्देव शुस्र शृश्य दिने द्वा मी मानय हु धेव स्था ने न्याः क्षन् स्य प्रत्ये साधाराध्यायाया से ने वे स्ट यी सक्षत्र हेन धीता सर वर्रेन्ने। श्लिनन्येव वर्ने वे वळन्य रत्यू रान क्षर राम वी रे वे शायुन मदसःस्टानी सळ्दाहित् ग्रीका शुनामा दे । बाब्रूद् । त्वदाकी मिलेद् । सका द्वार र्रेदि:वेर्यायाने इस्यार्याया स्वरायाळ दास्याया या विद्या देशावाय देश ने न्याः क्षन् संभित्रः स्यायाः संते ने स्ययः धुवः स्वरं ने स्वरं हिनः यः क्षनः समः वर्ने नः या वर्गे वाः क्षेत्रः स्वा वर्गे वाः क्षेत्रः वे। वर्षे सः स्वा वर्षे ग्रीशाह्रसानेशाह्रसाशानह्रदायान्त्रुप्तरामानुष्ठात्रायानेशावनेग्रायान्त्रा इतेः <u>षदःनश्चुःनरःगश्चदशःमश्चःभःभ्यःनःनग्गगःतशःळदःशःधेतःपःवर्गेगः</u> ह्रे। भे नह्युन दे रहन अदे अहद हिन पीद पदे हिन में दिन नह्यु सुना थ ग्रांटाधेव स्रूयात् इयायाव्य पुराव्य रायदे प्रें या इयायाव्य पुरा ब्रूटाचा वेशामश्रुट्यायायदी धीताते। द्वटानेशाह्मस्ययायाम्ब्रम् ऄ॔ॻऻॺॱॶॺॱॺ॒ॱय़ॕॱॸॆॱक़ॺॺॱॸॸॱॻॏॱॺळढ़ॱढ़ऀॸॱॻॖॆॺॱॺॱॻॖज़ॱॻढ़ॊढ़ॱॸॖॱॸॸॱ गी'सर्वत'हेर'र्'श्वर'नश'व'रे'र्ग'र्र्राची'सर्वत'हेर'त्य'र्वर'सासाधिव' र्वे विश्वासाक्षे अर्दे स्वाद्यादार स्विन्वेशासादे द्या खुवा खूवे स्टा सळवाया

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः श्वाश

वर्रे वा नर्रे अ से र क्षु न अ है जा बुजा अ क्षु र्से जा अ वा र र जो अ कंदर *क्षेत्र*त्युवःयवेःस्टःववेदःयेत्वःतेःत्वाःदेवःग्रेत्रःयेःत्याःयःवययःयः ग्रीशः र्रेट्र प्रदे प्रदेश से द प्रदेश स्तर्भ श्रुवा स्वरं प्रदेश स्तर सक्त वा सर्दितः शुक्राक्षद्राक्षर्वाक्षित्राक्षात्राक्षद्राक्षरावर्त्ते सामेदावा धुवाक्षावा ळंद्रास्य स्थ्रीत्र द्वार रे दे राम्य विषय स्थ्री स्थर दे दे राम्य क्षेत्र स्थ्री स्थर दे दे राम्य स्थ्री स्थर र्ने। ।श्लेमप्रस्वादि विप्रप्रामी सक्ष्य केन्य सर्मे में साम्यान प्राप्त स्वाप्त स्व वशुरावशाध्ययावितायराशुवायाम्यायराविष्टितायवे ळिट्रायायार्टा यक्ष्याक्ष्याक्ष्यात्राच्यात्राच्या यात्रा यात्राच्यात्राच्यात्राच्या धरावहेवारविः स्वरायायार्या स्वरावी अस्वतः हेरावास्वरा स्वरास्वरायाः स्वरायाः हे। नवि'नक्कु'सदे'दब्रोय'स'यथा वहेगा'हेन'सदे'सर्वेर सर्वेर नश्नेर वि'न हेन अर्वेद्रान्यस्यानार्रम्यस्य स्वर्ष्यस्य स्वर्षेत्राते। देवे प्रदेगाहेत्रिक्षित्रायस्य स्वर् सक्ति भी वास के सिन्द

नेशन्धेगश्रामिः नित्राधान्त्र नित्राधान्त्र केश्वास्त्र नित्राधान्त्र केश्वास्त्र नित्र केश्वास्त्र नित्र केश्वास्त्र नित्र केश्वास्त्र नित्र केश्वास्त्र नित्र केश्वास्त्र नित्र केश्वास्त्र केश्वास

त्रियः सन्त्राहेत स्वाहेत स्व

विह्निया हेत हिन त्यारा यहेत त्येत ख्राया साती विह्निया हेत हिन त्यारा त्याया सम इयायराववा । डेयायासूरायदेश्वेयायारायायासूरायदेश्वेयाया हेन्'य'हें अ'हे ' श्रेव' रे 'वें वा' अ'वें वा' वाहे अ' वाहे अ' शु' न ववा वें । न न न ने रें याम्बर्निन्यते कुन्दर्व व्यन्यवी वह्नाविष्येयायम् नेयास्य सेवादर श्रेवा श्रेम त्यः श्रेवाश्वापा प्रम्पः द्वाप्तः व्याचा त्यः श्रेवाश्वापा स्रम्थश्वे प्रवरः वि व्याविद्रास्य में व्यवहाय व्यवहाय विष्याविष्य विष्याविष्य विषय विष्याविष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय र्रेयाम्पर्धिन्यमे। नेष्ठेन्यमा नेयासम्पन्यकुन्यसे सेर्पर्परस्याया र्शेग्रयायात्रयात्रेहिन्यवे सुर्यार्शेग्रयायात्रस्ययान्दरहे स्रवे केन्ये स्थाया ८८.२४.वि८.तर.१४.४५.वर.वीर.त.ता.सूच्या.सूच्या.सूच्या.सूच्या. गर्वेर-धर-होर-धवे क्रेव धे रेंब व व्येर-धवे व हो हे राज वे रायर वेंब वर्वेद्रायर:ब्रेट्राय:ब्राय:ब्राय:ब्राय:ब्राय:ब्राय:व्याय:व्याय:ब्राय:व्याय:व् कर्टरक्षेत्राक्तिकाळावाक्ष्याकाराम्यहेत्रायदाक्ष्म्यत्वीम्द्री दिग्ववितः र्'भ्रमात्रस्थाः भ्रापर्'ल्'श्रम्भारम्भारम्भारम्भः स्वाभार्दः स्वाभार्दः स्व र्शेम्बर्भराद्याः ग्रहस्ते अयम् जुर्दे । धिद् ग्रीः यहिंद्र सम् जुद्र स् से दे द्याः क्षियायाः सूर सूर स्वयं यो प्राप्त के या स्त्रीत् या दे सूर या शुर्या है। से यया यःश्रॅग्रथःयदेः भेट्रःश्रॅट्रः यदेः क्रुं मित्रेट्रः यः श्रॅग्रथः यद्रः भेत्रः वे । देशः वः यारेवारविरदिवरश्रूरयाग्रीःध्यावेर्देवावयात्वरायकन्तासूर्वासून्त्र्

बेट्स्ट्रिन्यूट्स्यः देवाः प्रश्नान्त्र स्थान्य वित्राम्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

यायाने न्वर्धिके स्थान श्रु स्वाति स

वेशःनगागाःमशःमःगावमःन्नरःयः शःश्रुनःनःस्यो सळ्वःहेन्ःग्रेशः गुनःमयःरेन्तं नवेनःमरःगाश्रयःयो । नेःश्रूरः यनःस्तः ग्रेनःहेरःश्रः मयः वेशःरनःश्चेवःशेःयश। यनेरःगायःहेःगाग्रुगशःवेशःग्रुः नरःयेनःयः नर्हनः

यन्दरक्षेत्राः तुःनिहेद्रायवेः गुवानह्यायायवे दे दे वित्रायादायेवा यो व र्ने विवन्ते। नर्ने अर्थे त्यः श्रमः यादिन स्थान स्थितः है। स्थान हिन्यान ह क्षेत्रान्तुन्यात्राञ्चर्यायदेवयायवे द्वेरार्हे । वियापाश्चर्यापेट्य वर्चे र श्रेन प्रायान्या ग्रावानहया या प्रवे में हिन वे यह व हेन में हिन बेर्या हेर ग्री अर्टे में हिर बेर में बिया बेर मारी माया हे मा बुम्या बेया हा वरर्टे वे के न न हिन्य र तु थे न य व है न य ह्र य य र है वा य न र के वा *ज़ॖॱॸऻॾॕॖॸॱय़ॱॿॱॺॢॸॱढ़ॸॕॺऻॺॱय़ढ़ॆॱॸॕॱक़ॕॸॹॸॹढ़*ढ़॓ॸॱॸॕॱक़ॕॱ केनःसेनःमकेनःग्रीसःनेनिकेनःसेनःनेविक्तने। ग्वाह्मनःकुणविकाग्रीःनननः गी'न्रेर्स्सर्से'त्य'सूर्र्सरप्रदेनस्याधीत'यस्यसेस्त्रर्द्रानरार्स्ट्रेत्रिते। वेस्रास्त्र न्दः र्ह्मे अः नश्रु अः परिः गाववः न्नदः त्यः श्रु दः नुः अळवः केनः देः निः केनः सेनः ने वेशपर्देन्त्रः भूरपरेनश्चात्राम्यास्य भाषिः धेरः दे । देप्य सक्रवः हेन्दे र्ने हिन् सेन प्रदेश्यक्ष हिन्दे न्या मान्य क्षेत्र हिन्न स्थान प्रदेश स्थान स्थान रोसरार्यस्य स्थाने सेन्यने गुर्यन्त्रम्य स्थायनेन्यो। याव्यन्त्रन्यः सळव'हेट्'टे'पॅट्'मश'स्ट'नबेव'पॅट्'या देव'ग्रट'नावव'यशःश्चे'नशः <u>रदायश्रञ्जे</u> प्रदेर्देने हेर् सेर्प्य देर्ने हेर्सेर्प्य हेर्य हेर् यःधेवःदे॥

सर्ने प्रतित्यायम् । यहारा यहारा प्रतित्यायम् । यहारायम् । यहारा प्रतित्यायम् । यहारायम् । यहारायम्यम् । यहारायम् ।

यः वृष्यअवेष्यर्रे ने अर्दे ने देशें देशें देशें प्राम्य सुर्या सुर्या स्थान सुर्या स्थान <u>५५</u>ॱसदेःषसःसबदःगहेसः५८:व्यानःस्नःहःनसूनःपदेःध्रेसःदेसःपदेः र्नेत्रावितः पात्रः पद्यायायमः सद्दायाधेतः वे । वियापावतः प्यापेतः <u>५स:सर:रें:वें:के़द:क्वें:नज़्याय:सःग्रुद:नह्याय:धेद:सय:दे:सेद:स:५८:</u> बःश्रूदःतुःमाव्यःद्वदःयःस्टःमीः सळ्यःहेदःधेदःस्थःदेशःश्लूदःवदेवशः रोयानरान्तुः सदि देवानसूरासरानवेदादे। क्षेताद्वेतावदे प्यान श्रुदा त्रस्याभी सळव के निष्यं न्यस्य विन्या विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं विषयं विषयं विषयं विषयं श्रुवादे त्रमारायागुत्र नहम्माराधेतायाश्रुवादेर रायाधेत्रामुनातुत्र न-१८११ रूप्ता न्यानिवाधार हेव प्रतिवाधार हिला हुरा पा उत्तर ही जावव १५ मा यःग्*व* नहन्न अःधेव यः अरअः क्रु अःग्रेः धुयः त् वे ः धेर अः ग्रु नः हुः वर्हे नः यदे दे दे दे दे दे ता शुक्ष ही द्वया विवाले शासर हु शाद शास दे दे द वे दिशास नन्द्राचरानुदेखिया अर्देग्वादाने केदायाधिवानन्द्रित उवा । इदार्देवः गशुरुरा रायर हिंग्या त्रा स्टा स्ट्रा विद्या । विश्वा राये विद्या राय प्राप्त स्व मभा अर्दे नर्गेरमायमेयामे देने देने देन महासमी समानिया इटार्ने व र् नबेर्नासराम्ययाया सरासुम्याराग्चीःग्वान्तम्याराज्ञीःमाब्दान्नरायासरा निवरणें न्याया सहन्यम। मानव न्यन्य सम्भून न्यन्यो सक्ष्य हेन ग्रैशः ग्रुनः परिः रदः निवेदः भेः निवेदः प्रधेदः देश विषयः दंभः पः इस्रशः ग्रीशः गुव-नह्रम्यायायार्द्रम्यायाय्वव-न्नर-न्दः धेर्यायुव-महियायळ्वः हिन्दिर्भिहिन्सेन्यर्से वर्देन्यम् नेयहिमायास्य म्यानिस्य सळवः १९८ १८ स्थान्य स्वादे द्रास्त स्वादे स्थान स्वाद्र स्थान स्थान स्वाद्र स्थान स्वाद्र स्थान स्वाद्र स्थान स्थान स्वाद्र स्थान स्वाद्र स्थान स्याप स्थान स्थान

ग्वित प्यट से समा उसामा मृषा झाम्या मे मे मान्य मि भागी प्याया याधिवाने। सी:सूरानदे:धुरावेशामान्या नु:यावन्यामवरानेदे:धुवाया धेव हे। इस सु से दिये हिम हु न पहिरा सुरा न विव दें विराह्मस मंदे प्यतः त् हिंगा मो प्यन र न र यथा स न समा स मंदे स र न प्यन द विग प न्नरः रेविः खुवा सेवः यरः नसूनः वः त्युनः यः वः नसूनः यः धेव। वेशः ग्रस्यः वया शुःसदेः यव र प्याया ने देवा या विवा सदे ह्या श्वर न य द्वा या र्धेग्रयासुरग्रस्य स्वरंदे के स्वरंदे नदे नात्रव के नाय क्षुन्य र हो न त्र दे। नात्रव के नाय नाव्य त्य या नाय र हिन धेव है। गर पर भूर रेग्र भाग विवास वे श्र र न शे रे में ग्विव र र मावव ग्रीअन्ने त्यास्रदान्त्रन्त्रायास्ये श्री राजान्द्राध्य स्थाने खुवाग्री दिन्दि यदा यम्। तृ नु अ त् अ ह् य अ र न ए , पर् अ । यर अहर न दे । इस । य व । नी । हैं । वर्द्धरायाधेवाने। देवायावाडेवायदेखार्यात्र्यात्र्यवायायादेदाय्यात्र्या रायाश्रीम्थाययराङ्गश्राचन्मारुमायर्नेन्ने अस्यायविवार्वे । यानामी

श्चेर्यास्ताण्यराह्म्यात्रज्ञत्त्र्याये यहात्राह्म्यात्रेत्राध्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र् द्वायाक्चात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

सूर्र्रदरसे नवेर्ने । नवे नकु सदे द्वोय स यस ग्रम् हे ज्वा स सूर र्रे में स्रिया इस्र राष्ट्रिया ह्या की ह्या द्वार्य स्वाप्य स्वर्ण स्वर न्यानु पर्देन् पाइयमान्तु यापयाग्व हेन जुप्तमा से प्येत पादी कासेन यःश्रेवाश्वःसदेः दर्देशः संख्यः ग्रुःषी देः विष्ठेशः ग्रीशः सदेवः सरः वादः वर्देदः <u>५५</u>ॱसःसंस्थागुदःह्रेच 'हु विस्थासे 'सूट 'चर ह्रेव 'स सेव 'हे। या त्रुवारा सुर्थः र्शेवाश्वाराने द्वापीश्वारने वासरायरें दाग्यादानु वास्वाराम् वास्वाराने वास्वाराम् मनिवर्दे। निवर्नमुः मदेः वर्षे यायाया निवर्धिः ह्या श्रास्तर्से वाया र्यदे भ्रून्य भी से से क्यान्य स्वेय भी की स्वार्त्त स्वार्थ स र्रे इस्र ग्राम् द्राया द्राया द्राया द्राया वित्र प्राया वित्र प्राय वित्र प्राया वित्र प्राय ग्रम् यहेत्र त्र अ यह ग्राया सदे यह ग्राया और प्रमान स्वीय ग्री खुया रूपा शुर्या निरा नेशमः इससासर्दि सुसामहण्यासामान्दर पुता इससासर्दि शुरायक्षव हिन्यम् प्रवेन प्रया क्षेत्र निर्देश प्रमान स्थान इस्रशः शुः वहें वा खुवा से वर् वर सूर हैं। सूर प्रवर के सर्द वी सर्द हेन्यः र्रं न्यः धेवः यः वर्गे गः यदेः भ्रम्यः श्रा क्यः यः ग्विवः न्याय्ये वि न्रेंशर्भे त्यः इस्रायाव्य न्यः स्ट्राये स्ट्री विस्त्यास्य प्रमा न्यः

यःश्वरः नःश्वरः श्रीः सदः नीः सळ्वः हे दः श्वरः श्वरः दे । प्यरः से दः निष्यः स्वरः निष्यः स्वरः निष्यः स्वरः निष्यः स्वरः निष्यः स्वरः स्

ने भुवतर नगर सेंदि लेग रा इसमा मसूर न् मा बुग्या भूषा सेंग्या यदे खुवा इस्र महस्य प्रमायहें वा यदे किंदा सम्से विष्ठ दे । इस्रश्रादिवात्तर्त्त्र्यात्तर्त्त्र्यात्तर्त्त्रः स्त्रम् स्त्रात्त्रेत्रः स्त्रम् स्त्रात्त्रेत्रः स्त्रम् स् ग्रीशः ज्ञुनः धरे 'र्ने दः सेन् 'स'दे। स्राध्य न विदः धेन 'र्मे हेन् 'र्धा सेन स्रोधः । नेशःसशःद्युवःसःधेवःग्री श्रभूतःसदेःर्ह्यनःसशःवान्वःशेःद्युवःसशः बर्श्वन्यदेश्वेश्वरायादेश्याने यहितायासासासीय है। श्चित्वायासि श्वर् ग्राह्मप्राप्तक्रुत्रात्यःश्रीम्रायाः सूरानदेः भेशायः ते सूरानाः सूराग्रीः र्देतः ह्याः न'नाहे अ'न्न' जुन्'नविन'य'र्से नास'सं सेन्'सर'म'सून्'सदे'ळंन्'साहेन् इसरायायराद्याप्तरायेयायदेःग्वर<u>ा</u>हेनाग्रीःइस्रान्त्रीःयरादबन्धायेदः र्वे। । ग्रायाने देग्रायायदे ने याया प्रमान मान्याया महेन नया विष्यासम्भित्रास्त्रीष्ट्रासम्पर्यम् स्वाराष्ट्रा स्वार्यस्य स्वार्थस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स् धरःश्वरःविःर्देवःभेदःधः सुरःररः वीः अळवः हेदः तुः श्वरः ववेः र्देवः धरः भेदः वा रननी सळव हेन ग्रेस स्ट्रिंग त्र वा स्वाय स निवत्यः श्रीवाशः सश्चार्द्धारा प्रति वा त्रुवाशः वहुतः यः श्रीवाशः सदरः ये दि दि *|देवे:धेर:दे:दवा:वःश्वदःघवे:क्वें:र्रा:दवाव:वःवःक्वेंश:वशःग्रहःधेव:हेः* वेवायावेवावी। हिन्यम् सेन्नें सूस्रात्र देव मन्यो सर्वित्रेन् ग्रेस् गुन

मित्रे में मित्र हित्र मित्र म धरः ५५:व्या वा त्रवाशः श्रीवाशः ५८:वा त्रवाशः वह्न द्रश्वाशः वाहेशः गः वः सूरः र् भेर पर पर पर वा पर्वापयोग यसे पहेर र र पर वा स्वार नक्रुव-५८:ज्ञवा-ळ-त्य-र्श्वेवाश्व-४ जुद- ज्ञद- द्वेवा-वे-नक्ष्य-प्य-स्य-देवा-४-५८: र्कें राजायार्शे ग्राथायुराबदाचे गावे जित्रे वासरासूरास्त्री स्टानविवादी सा रेगा'म'न्र्य'म्'क्राम'क्राम'म्स्राम'म्स्राम'म्स्राम'क्राम्'न्यं भ्रेन्ट्रे । । नेतिःभ्रेन्ट्रे <u>५८ वार विवा गुर्द हैं व हु अराव हु व या वे गुर्व हैं व ग्री व देव या अर्थ व </u> र्वे । विशः श्रें तः सें प्रायायायाया है नः नित्र समः वहें पा सः निराप तुपायः नक्रुवःशॅग्रथःगुवःह्नेनःननेवःसरःश्चेःवह्न्गःसवेःष्ठिनःसरःश्चेःवन्ननःनेवेशः नर्हेन्द्रायम् हे थेन्। ने गहिरामा श्रम् प्रते के रामा श्रम् प्रमान ग्राबुग्रथःनङ्कुत्रःयःशॅग्रथःयादे प्यदेगःहेतःयदेःलेशःयःहेत्ःग्रीशःनङ्काः यम्द्रियायाययायहियादिवःग्रावःह्रियःग्रीःयदेवःयम्स्रीःयहियाया र्वेवःर्यः वार्सेन्यायाने नह्नायाधेन ग्राम्पेन सहनायम् वहेना हेन प्रवेशेयायया विरात् कुत्रायराधी तुषायषायहैना हेता गुता हैना ग्री नित्रायरायहैना र्वे सूर्यात्। ने सूराध्याने पाहेराया शसूराय देशेरायाया सूर्या ने पानेरा नह्न तबन्य निवन् । ध्रया उदा महिका ग्राम बादी के का माया है का <u> ने भ्र</u>ेत्र हे खेँ मा सम्बन्ध मा स्वन्य सम्बन्ध स्वा

ग्याके निष्ठा स्वरं के सामाया हैं साने हिंदा है सार्वे ग्रामायी दादा न

য়ৢ**८**ॱ५ॖॱঀঀৢয়ॱॸॱॸ॒ॱॺॴॺॱॺ॓॔ॱয়ৢয়ॱॴ = য়য়ৢ८ॱ५ॖॱঀঀৢয়ॱয়तेॱॿॱয়ৢ८ॱ८८ नेयायानायाद्वेयात्रयाद्वेतात्र्यायायायायायात्रयात्रयाया यः वाहेशः वाहेवाः धेदः दः ववायः यः धेदः ग्रदः श्रदः देः वाहेशः देः श्रेः श्रेः यः लेव.राषा.व. व्यापा वर्त.क्षेत्र.या वियाषा.श्र्याषा.या.र्य.या. प्राचीया यदे रहार विवास वारा राष्ट्रीया राष्ट्री देव रहार है। से रहार वा साम स्थान र्नु नुर्गे राया ने प्राचित्र मिस्र मिस्र के रामे में मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस इस्रमायविकासाल्येयाची है.जमायावयासहास्त्रीयास्त्रीमासास्तरम्याया नः इस्र राष्ट्री दिश्व विश्व प्राया का की त्या विश्व विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व हेत्रमित वासून वासी वाया विन्दी वाया सेन के सामान विन्ति। वाया वेसा मदे कें वा वारे वा प्येत गुर पेंद मदे पाय पर हो ने सदे पाय वारे का देता नेशन्यस्तर्वावन्यायार्वेश्वावयायार्वेश्वावयात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या वर्रेन्ने। वहेगाहेन्छेन्यश्चनेन्धेन। वेशर्शेग्राश्चरास्ट्रमः र्रे। ।देवे:धेरद्रायाययादे:द्यायव्यायर्वेयायर्देयायादे:क्षुत्रदराध्ययः नह्न सामहिना साम्री त्याया है। ध्रया नि ने सामहिना नि ने ध्रया उन ति न्या अःभुःतुरःवर्देदःस्रान् वःस्रुदःतुःनह्ननःधोनःगुनःहेनःनदेनःसरः वर्हेग्।सवरक्षेव्यायको असेग्।सरविवक्षित्रधिरगुवहेन्से। विश ग्राह्म अपने अपने म्यानि स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति

ने भूर न्तु अप्यश्च सूर् न् र्रास्ट वी खुवाश लादि र दिन् शा ग्री इस यावया: अट: र्रे विया: वर्हेया: यादा प्रे अ: र्रे अ: र्रे र: श्रु: व: त्र अ अ: ग्री अ: र्रे प्रे अ: र्रे अ: र् वर्देन्यः बुद्रास्टित्रः धोद्यायस्य वित्रवाद्यायते देवः द्वर्यस्य वासून्त् धेन्यदेः वर्गेनाः द्धारा वर्ने द्याः विव कुर्नावः यथा यदेवः या यदिष्यः श्रीः इस्रायरः यवनाः राष्ट्रीत के सार्वे वा सम्हें वा सारा हो न सम्सूर हैं। विने सूम न हैं साहूर नवे वर्दे द रा इस्र रा गुर है न ह र्षे द रा वर्षे वा रा द रे वा रा रवे द हु द रा <u> चुराद्यानान्त्रीयाया स्टानीयागुदाहेन हुने स्वानायार्थे नयायाया</u> ल्रि. सुरालिया दे. लट. देवाया राष्ट्र है या खु. तज्ञ द्यार या विद्यार सिंदा है या खु. तज्ञ द्यार सिंदा है या खु. त्यार सिंदा है या खु. *ॺ*ॴरेग्यायथान्ध्रायात्राराम्यात्र्यात्र्यात्र्यात्राह्यायाह्यस्य व'गर्वेद'अष्ठअ'दद'भे'गर्वेद'व'भे'गर्वेद'अष्ठअ'द्'श्रेद'वश। द्यदःध्रुमः <u> ५८.चार्डे.च्.ज.श्चाश्चराच श्चेर.२.ज्रेर.चर.चर्चर.चा बचाश.ज.श्चाश.</u>

द्युगायार्सेग्रमायदार्धेद्रायराविषायेदाद्र्येषायात्रेश्रायद्धंद्र्यायरा सर्बरक्षे क्रेंशनरायदरम्मानी सुनाय ग्रीय यही पीत निरादि से वा ग्री र्रेश'न बुर'रअ'विश्व'वेद'र्ठ'प्पर' ग्रुर'शे' सुर'न'व्य'प्रतु' अदे'रे 'विं'द'हेर' क्रेन्यर क्वें अविराने प्रज्ञानियों नाने न्या है आशु अश्वन प्रि केरायर शे वहें त'सर'वहें वा'स'ख'क्षु'न'क्रस'सर'न्वा'सदे'नें त'ने क्षेत्रं स'सर'वनें न्य निवर्त्यात्रम् भूरादेश । यदी यदी यदी द्वा वी वी सामस्य सासम् । यदी यदी वि यदे जात्र सर् के क्र न्य विष्य क्षेत्र स्वाय स्वर्ध स्वाय स्वर्ध स्वाय स्वर्ध स्वाय स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध बेब'सर'रूट'नवेबर'दर्गेग'सदे'रेग्र**श**'सश'शश्रूट'सदे'ह्रस'सर'नव्ग' नः इस्रश्ने र्रे रः वर्षे रः यहसान्दायार्षे रः वासाने रामाना वर्षे रामाने र ध्रेव के विवानी भ्राम केव में प्येव मने ध्रिम में । ने या व पर्म पर्म पर्म में र्नेंबर्भागुरायरार्वापदेखानायादुराबर्डंबायराहेर्यं धेरवेर्नेवरा या वर् से स्टर् पर्यो से वर्षे स्वर्य स्वर्य स्वर्थ से से स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वय स्वर्य स्वय स्वय स्वय स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्य बस्रयाउन्दर्भी सुम्रायाया सुन्दर्भित प्रसुन्दि में। प्रसान्दर के या विदार् वम्यायायीत्रायवे धुरार्रे॥

राः क्षरः रहाः के 'हर्देश' से राङ्का या क्षरा ही 'वर्दे हारा श्रुव 'से हारा धेव 'या श नन्ग्रायास्य्रयास्य विश्वानित्रां स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वातित्र स्वाति स्वा नन्द्राचरानुदे ।दे वा श्रुद्रात् व्येद्राधराय्देदायाद्रात् अदायराय्देदाया वे के तर् न विवानी क्षे वर्ष वहें वा न धेव सूस्र वा व सूर न दे के या न ग्वित भ्रीश्वार्वे द्रारा से द्रारा दे विष्तु है द्राययस स्टाय वित पेर्दि से द &्य'नविव'र्'र्रेट्र'मधे'रेग्राय'यय'गर्वेर'य'से'यनन'य'विग'वे'श'सूर्' र्'ल्रिन्सर्प्ट्रिन्ता रेन्यात्वर्भायश्चित्रात्रके स्रोत्सर्प्ट्रिन्स् । रेन्याव सूर्याये भेरायाये के सम्मारायय है। सूर्या सूर्य राउँ अप्पेत्राची। सूरानदे र्नेताने हिंग्याने प्रूरासूराना उँ आप्पेतात्र आ देता *ॸ॓ॱ*ॸॕढ़ॱॻॖऀॱऄढ़ॱढ़ॖ॔ॺॱॺॱॸ॓ॱढ़ॢॸॱॻॖॖॖॸॱय़ॱऄढ़ॱॺॢॺॱॸॖॱऄॱॸॖऺॶॕॸॱय़ढ़॓ॱऄॺॱय़ॱॺॱ नम्नार्यास्य प्रम्यायाम् स्रायार्थे। । ने किनायासान् स्रायान्य प्रमायान्य स्रायाः थे। नहगाराधे से हो न या है से हो । विने हे विने हे न प्रवस्था मासून परि नेशमायाहे सूरासूरावेरा ज्ञानाया सासूरावहुना ने । धिरासुनायाहे सूरा धेव-नश्चन्वयावह्यान्यः सेव-सदे-श्चेत्र-वह्या-हेव-श्चे-श्वायायायः वियाशुः नवर धेर प्रश्रादि वर्ष के अपादी गुन सम्राह्म निश्चर साम्राह्म प्रश्ना उद्दार्थाद्वरावशाही तर्दा विवा वी क्रुन्था तर्द्वा ग्रामा तही वा हेव संदे ग्रामा श मदस्रास्त्रम् मदिन्ते स्त्राने स्त्राने स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम वहिना हेत मार्नि दिने कुन वार्षिन प्रमार्थेन प्रमार्थे न बुन में बुन अवशार्ते न क्रुम

न्वेश्वाराने त्या वावाश्वारा है । श्रूट विद्या हीं ट विदेश श्रूर विदेश श्रूर विदेश ग्विर:शुर:प:इस्रभ:र्से। ।यस:प्रच्रस:८८:संयस:प:र्सेग्रस:प्रथ:प मदे के पोत कुषाया है सूर पोत से न हैं न मदे ने या मर ना न पदर ब्रूट न प्येत प्रभावहिना हेत श्री श्रामाय प्राया प्येत प्रवेत श्री त से दि । व स्रूट मदिः स्ट्राम्याव्य में रामर्दे द्राम्य द्री द्रो स्वा स्वाम्य स्था स्वाम्य स्था स्वाम्य स्था स्वाम्य स्था स्वाम ८८ श्चेता कु त्य कुर्ते श्वय ५ त्यहेव पाव धोव खुन्य या हे सुरे धोव ५ हिंद यः सेन् प्रदेश हैं साम बुदान धोदा सेन् गुदा ने साम बुदान दे ति त्या शसून मदे ळं द अरु पार्के द मरू दे दिया श्रुद् द्वा अद से प्राप्त के विषे धॅर्भेर्ख्यानविवर्र्र्वेर्धरायदेर्भेग्याययार्वेर्यायस्य सून-त्रव्हेना-पवे-देन-इसस्य नः सून-पवे-कन्सस्य न्यान-पर्वे सः ग्रह्म स्टः निवरणें द्राये द्राया निवर द्राद्ये द्राया प्राये के या या ये विवर स्वर प्राया विवर स्वर प्राया विवर स्वर प्राय वस्रश्राह्म के वार्षेत्र प्राप्ते स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार

नेवे भ्रेम मेग्रा भेरा श्रेरा श्रेरा में दारा प्राप्त राम है रा यदिया हु त बुद दिया व स्थूद दु दियो स्थिया त्य स नदे स्थ्या त चुद न न दिया न्नरः सुमान्दरमार्से में स्थानने सूमा वहुर न महिसा धेव व धेव सहस सुगान्द्र गर्डे में अन्तरे सूगानक्षेत्र यन्द्र न्वो क्षेत्र गरे सूगानक्षेत्र यानिकार्यानिकार्येन् सेन् स्वाप्तिकार्यन्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व वर्यायःसरःसर्द्धद्रशःग्राटः। देवाशःसशःवार्देदःस्रेःवार्देदःस्र्यःसः व्रस्रशः उदः र्भे अर्द्धर्यायवे भ्रेरर्भे । दे त्यार्यावव भ्रेष्ट्रे याद्रेया भ्रेर्य इसराग्री:पर्नेन:पः बुदार्सेन:सःधेद:पर्शात्वःतहन्यरापदेःग् बुनःपद्देदः ळ. भेर-२८-वर्षा-२८-वार्डे-च्रे-२८-२वट-ध्रुवा-व. श्रेवाश्वास सम्बर्धन्। रे. <u> ५वा वी श्राह्म अपराद्धेवा यह ने व्यन्त प्रदेश्य प्राची में में श्राह्म या धी का श्री का </u> रैग्रास्यस्य नुद्यन् वस्य ने वस्य ने व्ह्रसः नुद्येन स्वरे सेग्रसः सम्बर्धन ने न्याः क्रेन्यर नमसम्बन्ध नविषा संधित समा ने विद्वाने व्यास्ट निवित विद बेर्'र्र्धेर्'र्वेरेरेग्रायायदे'र्ध्र्र्पायाव्रःश्चेयात्र्याप्यात्र्यात्र्यात्र्या यधिवाने। र्नेवाने रेवायाययान हारावर्षेत्र प्रदेश होरासे। । ते स्वरा <u>न्ध्रन्यात्रात्रेषात्रायात्रीयात्रेन्याये त्यात्रात्र्यात्रात्रे त्यात्रीय स्तुरा</u> नशने नवा सेवाश्वास्थास हेना यात्रा विवाश समावसूम है। ने नवा स्पिन व

रेग्रअप्राने 'न्या'यो अप्रहेन'न्यों अप्रवेष्ट्रीर'र्से।

ॻऻॿॖॻऻॺॱॾॗॱय़ॱऄॕॻऻॺॱय़ॱॾॺॺॱढ़ॆॱॿॱॺॢॸॱय़य़॓ॱढ़॓ॺॱय़ॱय़ॖॆॱढ़ॸॱॻ॓ऀॱ विष्या कुरि पार्वे दाया से दाया सम्माया है । सूर वा वा रा दे । सूर विवा पा डयाधेवाग्री नेप्तायान्नेप्तिप्तामान्नसूत्राह्याययार्देवानेपेवाग्रीधेवा द्धवायाने सूराग्रुवावयासूर्यातु । नुश्चन्त्रयाने सूरान्श्चित्याने यार्राणी भेवासमा ने न्वायास्यानिवाधिन सेनाम है न्यायासी नहीं न या ग्रम् से निर्दे । देव ने निवासे वा साम साम साम से निर्देश से नि र्भे । द्रमेर्द्रावर्दे खुवा धेव कें बिया ह्यूया यात्र कें तरहा धेव वया ह्यूर में धेवः वेशन्धिन्न् से सुन्न न्यान्य प्राची प्रदेश हेव व विश्वास्त्र स्थान यःत्रशः ज्ञानाश्वः भदेः देतुः धेतुः ग्रादः देनाश्वः यश्वः नार्वे दः यश्वः त्रः श्वः दः द्रदः बेट्रपदी अरेग्राचराट्टॅर्स्स्रिस्स्रस्य स्ट्रिने देने हे नित्रम्स न्दा वहेवाव्युक्षः स्टावी दें ते का व्युवासदे दान्दा दे । <u> अर गी 'रे 'रे 'रे र गी 'रे 'पे द 'यर 'यहें द 'य 'शें गुश ग्री 'पुय 'हु अश पे द 'यश '</u> वहिना हेत त नार मना या या या या या उत् नित्य या या या महिन कि वित्र नित्य से या य र्ने॥

वि.क्षेत्राचाब्राकाः श्रुः श्रेताकाः त्राच्याकाः व्यव्यक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विष्यक्षः विष्यक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विषयः विषयक्षः विषयक्षः विषयः विषय

विशः श्चानः वे : इस्राधरः साम्रेटः साधिवः हे। याववः रु: वः श्वरः रु: या ग्रुवायः र्शेन्या श्रुप्त अत्राप्त सेन्द्र मित्राया स्टानी में में सामुनाया अन् न्वीराधरावसूरावार्श्ववाराया रेवाराधानुवादुःधवेष्वसेषायायया ग्रमा ने प्यम्भ्रित है जिया है नि ने नाया श्रीयाश्वाम है नु नु विह्ने ताया नि प्यम यःभ्रेष्ट्री गुवःह्रिवः तुःष्पदः वदवा छेदः देरः दर्देशः वे दिः इसः यरः से वावश्यः व लेव.स.धेट.की.बीर.स् विव.इ.अ.ज्या.स.बी.क्या.यक्या.स.क्या. क्षेत्रपुष्टिवायक्षे। नर्देशस्यितेग्युवाहेनातुष्यप्रविष्ठितातेस्वित्रप्रिता ग्रे भ्रेर्स् विशहना श्रेन्य प्रति में प्रदेग हेत प्र मुद्र सें र र्म्याय । ग्राम्प्रेन्य विष्या मुन्ने देवा हु हो के लिया हु न निया के हिया के विषय गशुरुराश्ची । दे सूर्रासुरार्धे से ह्या श्चिमश्चाया शुःवहे व संवे हे या संवे सूरा ध्यायायविवाषटादेशायदेवहिंदासूटसायाळ्टासदेविदारासेटायसः ह्येत्र⁻हे स र्वे मा प्रवस्था स विद्यान । वे स हा या । प्रवस्य के स स स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स ब्रूट पुरायायात्र विया विटासात्र विया निते का निवस प्याटा से दासा सात्र विया ना वेशक्षे नुर्दे । प्रवरंभेशक्ष्यश्रभूरावायायविषावरावराषरावहेगाहेवा यदे देन सूर न न र हे अ शु स शु न र दे देन खें न य न र से न से दे से न स ग्रा बुग्र अन्तर्भे ग्रा अन्य निष्ट निष्ट भी अर इस्र अर्थे ग्रा पिर ग्रा के स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर या ने यश पावव परे प्रवास ने श पार्वे पर से प्रवास प्रवास में व धेव वे । सुर में ह्या याया श्रीया शायर विहेव संवे हें या संवे वहीं वा सूर श

ग्रे.लीक.वु.ब.क्षेट्र.यं, राषात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्याया धरावहें वायवे खुवा वे वा श्रुप्त पुंचा राषा देवा वा प्रवादा वा वा प्रमासी व्या र्शे। दिन'न्य'यर'र्य'र्र्या रेट'में र्यायुव'यदे ह्वा'स्वायायदे हिवा स्वायाय वित्यायां देवा वित्यायां व क्यान् हो सेनायान्वे न्यावया वाह्याया ह्या से ह्या न्यान न्या स्थान नन्गाः भें न्रिन्यान्यः श्रुन्त्वरा अळवा अव्याश्रुन्यमः मश्रुम्याः श्री गयः हे 'दर्रे अ'र्से 'इस्र अ'यः 'स्ट्राचे व र्र्से प्रश्ने प्र अपने प्राप्त के प्रहे व क्षूट्य:रेग्याय:य्यायुव:वर्डेव:य:प्ट्यःश्वर्:यदे:रेव:क्यय:ये:वर्गेग्राय: गहिरायगयाहै। यह्मायायया गहिःसुमायरायवितःस्वीयाधियाग्वाहेंना है। दियानारानर्रेयायानदेवायराष्ट्ररादे हैं। गुनार्ट्यानदेवानेया हैना रानेशाम्बर्धर्याने विशाम्बर्माश्चर्यात्रास्यानेमारादे प्रवर्णाय ग्वाहर्मितः श्रीः निर्वेषः समः वर्षेषाः समः वाशुरशः सवेः श्रीमः में विष्वा श्रीवः सेनः यदे न्वर में अपने देव प्राधेद त्या वर्ष अपने ने प्यर वर्षेद वर्षेद वर्षेद्र वर्षेद्र वर्षेद्र वर्षेद्र वर्षेद्र न्में अः स्यार्ट्य निवार्श्वे प्यार्ट्य या स्वीता नेशक्रिक् सेंद्रशास्त्र स्वासी सामित्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स नकुर्पाणम्करूर्णे। गुर्भेस्राम्स्रस्यसायाने सूर्पायदे प्राप्तरे सास्ये। रदानिवरणेवर्ग्भः नदेवरमरावेरमणेवरि। नदेवरमरासदेवरमरार्क्केम

यः क्षेत्रः प्रवेष्ट्वेत्रः र्वे अः प्रदेवः प्रदेवः क्षेत्रः यः क्ष्य्यः यः गुवः हे प्राउधः तुः ॻऻॹॸॺॱॸढ़ॱक़ॗॱॺख़॔ढ़ॱढ़ॆॱॸ॓ॱॺऀढ़ॱक़ॕॖऻॗॸॱॻऻॿॖॻऻॺॱॾॗॗॱऄ॔ॻऻॺॱॸॸ॓ढ़ॱ यने अभेगायदे देन धेव ग्रह्मा बुग्या श्रू श्रेंग्या अभेगाय देया यहेंगा मास्रीताने। निमाना वर्षामाया स्रुत्या वर्षामाया स्रुत्या वर्षामाने साम्री श्रूयाधेत् गुरायें गाने रादेशाश्रमा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्विप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व ॻऻॿॖॻऻॺॱॿॣॖॱऄॕॻऻॺॱॾॺॱय़ॸॱढ़ऻॾॕॻॱय़ढ़॓ॱॿॣॕॱढ़ॆॱॻऻढ़ॕॸॱय़ॱऄॸॱय़ढ़॓ॱऄॻॱख़ॱ र्शेवार्यायदे नेर्याय दुवारी इस्यय धेरायय यदी द्वा वीर्याचीर स्वीर दित बःश्रूदःत्ःषेदःधरुःदेवाराःधरार्थः द्योवाःषा सःदेवाःधरुःहेःसूरःव हुदः नःभूरःगुवःह्नेनःषुःषदःभेरःर्रे। दर्रे वे र्रे रूपे स्थरायः स्राची रे र्वेश गुनःमवेः स्टः नविवः श्चें वर्दे गुरुः संधिवः या देः वर्दः नवेः स्टः नविवः वेः शः सूर-रुवर-सेर-संदे-धेर-रें। । देवे-धेर-रेग्य-स्याग्य- मासूर-रु-वर्गेगः है। देने देना अप्याया तिना अप्याय सुन् नु न्दें अप्या सुरा स्याय सुन् या सुन् नु न श्चेत्राच्या । वाहे स्वाप्देश र्श्वे वहवाय प्रति स्टाविद प्य स्वा शेष्ट्रवा वःश्रेष्यश्चित्। धर्मः इस्रशः श्चेष्य विष्यः दशः वर्षेत्। कष्या शर्मा विष्यः वार्सेन्यासास्रुं निराद्युरान्यादि द्वापी वहित्सूर्या गुरारेन्या मश्रुव्यन्तुरावराव्यायाधेवार्वे । ने सूराधराववी वक्कायि विवास यथा वर्देन:कवाश्राय:श्रेवाश्रायनवा:ग्यानावि:श्रुवा:वीशःगुत्र:हु:वहवाशः मदे-निर्म्यास्त्रि-मद्भविद्यार्थि-वर्षास्त्रम्याः स्वान्यास्याः स्वान्यास्य स्वान्यास्य स्वान्यास्य स्वान्यास्य हिन्यरः र्र्से वर्ने वाकायर वह वाया हेन् शेष्टी वाहे स्वाप्यका शक्षी नि

धरःवह्वाःधरःवशुरःविदःवाहे स्रुवाःषःचहेत्रःधरःषदःवशुरःहे वाहे स्रुवाः यार्डें में हिन् ग्रे श्रेम्मे विश्वास्य श्रिम् श्रेम् हिन सेम्से में प्रिम्से स्थित से मिल से प्रिम्स से स्थान विंगाः सामेन् मान्याः त्यायाः मिन् भूताः भूताः भूताः भूताः भूत्याः निष्याः र्ने । दिवे भ्रिस्क्ष्र क्षेत्र भ्रेत्र भ्रेत्र भ्रेत्र भ्रायाय स्वायाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वय यदिशाल्य निवास श्राचा श्री वासाय स्वास स्व *য়ৢ*८ॱय़ढ़ऀॱळ८ॱয়ॱॿॣढ़ॱऄॗॖॖ॓ॺॱढ़ॸऀॱॸॖॺॱॺॊॱॶढ़ॱढ़॓ॱॿॱॹॗॸॱॸॖॱऄ॔ॸॱय़ॺॱॸऀॺऻॺॱ पशायमें वार्या क्षेत्र हैं। । ने सूर्य हुं न न में न स्वार्थ कु राय हु र र र र श्चेंन'न्धेंद'त्वु:न'ग्राग्रायाय'रादे'ख़्याय'य'श्चर्युन'न्दर'र्र्दर'र्र्दर'र्वे र्दे र्य्याय्याय यदे र्रायने व र्रायोग राया व स्थूर् यदे रेव इस्य स्था स्य राये व र् केशन्गवायम् भूरविराने न्यायार्वे न सेन न्यायार्थे न से या सामाय है या से स्वेश वर्नेनशःग्रीःक्षुःनरःवशुरःनरःश्रूरःनशःर्त्ते ग्रीशःन्रःक्ष्राः स्रायःग्रीशः यदे सदे स्वाया श्री गुर्दे न इस सर यहें वा द्वारा या साम सर हा है। वर्रे र वे किया सरमा शुर्रे वा मावसारे उसाय सार्थे मार्थे।

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

বাপ্তাম'না

सु'निवेदे सुे'न धेत सेत नह्याय त्या पर्योग प्रयास्त्र वित्र से त्या राम निष्ठ पर्योग

र्राविव:र्र्याहेशःगःर्र कुः येर्यः श्रुःव:वगवाःयशःश्रुःवः विग्रायात्रायात्रीयात्री प्रायम् । यद्भी । यद्भी । यद्भी यात्रायाः स्थितः स्थाने । यद्भी । यद् नःवर्गेनाःमःषः हिन्यमः श्रुनः भेः नर्गे भःषा भेः विग्रभः नः शुः निविशे श्रुः नः नगमाम्यर्भित्रम्याचीःभ्रेष्ट्रान्दर्भावेषायास्यर्वस्ये स्राचित्रस्य यासी पर्दे दाराया द्वी यदे प्यवाय भदाराया हो। है। देवादया द्वी ही। या प्रयापिया प्रेवा वरे केर न हेर भवे से वाका सका न हार न वे न र दि हैं। देवायःत्रयः नद्वाः ददः वाव्रवः यः श्रेवायः सुः नविः वादः ययः भ्रेः <u>दश्</u>दः द्वेत्रियः मशर्देव'न्य'ग्री'श्ले'न'वर्देन'मश्रास्त्र'नवि'ग्रन'रुट'गी'न्धुन'म'देश'मर' पिश्चास्त्रीश्रश्री क्रिन्द्रकेत्वरे व्यानहेत्वश्वरे व्युद्रची हो न उसाविना पर्देर प्रथा दे हो किं दिरे हुं। नाम्यासा हुर्याया हे साह्य स्थाप्या ने विंत्र^{क्षे}र य'र्न्धेर संदे सेवार्य सर्य निवाप र वात्र वात्र व्यास्त्र वार्य स्वार यश्रुं वेशहे क्षर्र नुर्हे नुरे रेग्या स्थान् सुन नर्हे न से प्रेर ने से य यदे भ्रेर्से । यावव प्यरायहेव वया हो या हेर ग्रीया हाय विदेशों या वर्षीया यधिवाने। वह्नायायया नाराधिरान्देयारी नहेवावयारवावगुरावया। हैंगायायने द्यायह्यायम् अत्याया । दे श्वेमहेवायश्वमध्यायने धिश्रादी । १८ १८ व. रा. या वर र या या के रा. या वर र या या वर र या

द्रिं । द्रिंदे हो र ले त्रा हे हि र श्रेन शर्श ले शर्श न शर्म हो द्रिंद हो र ले त्रा हे हि र श्रेन शर्श हो न त्र श्रेन शर्म श्रेन हो । विदेश हो स्था श्रेन श्रेन

सरायरा नेवे श्वेरार्यरावी सळव हे राष्ट्री साहित साहित साहित राष्ट्री है साहित है साहित साहित साहित साहित साहित साहित साहित साहित साहित से साहित साहित साहित से साहित साहित से साहित से

रदाविव श्री श्रां श्री श्रां प्रत्य श्री श्री या प्रत्य विव श्री श्रां या श्री श्री या स्त्र श्री या स्त्र या श्री या स्त्र या श्री या या स्त्र स्त्र या स्त्र स्त्र

नक्ष्यानिवाद्गान्तानिवाद्यां का स्वाद्यां के स्वाद्यां क

यार्च्यान्यस्यात्व्यात्व्यस्य स्थात्व्यस्य स्थात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्यस्य स्थात्वस्य स्यात्वस्य स्थात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्थात्वस्य स्थात्यस्य स्थात्यस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्थात्यस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्यस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्वस्य स्यात्यस्य स्

स्वा अर्वेट यः नस्न नः स्वा अविश

श्चेश्वायान्त्रित्यात्वयात्र्याः क्षेत्रः विश्वायाः विश्वायाश्चात्रः विश्वायाः विश्वायः विश्

ने न्या वी श्रादे श्रुद प्रदेशित ने न्या ब्राया उत् श्री श्रास्त प्रदेश से न रात्यःकुःतज्ञशःश्रेवाशःक्षःसरःपर्देवाःसदेःकुषःशुदःपर्देदःशेःत्र्शःसरः नस्रुवः राधिवः या श्री राशुवः वर्त्तीवः स्रूरः स्रूरः गीः सन्नरः श्रुवाः राजिः रदः गी सः सःर्रेयःर्ये यः न्याया यः है ःक्ष्र र द्युषः यये र ह्युन य र ने र न्या शुव ः यद्ये व र हेनः यदरःभ्रमास्रासेर्परद्मापाविमायात्रेर्पराधेत्रप्रभा हिर्ररमामेश नर्गेर्प्स है। शुक्र प्रतिक प्रूर श्रूर वी अवर व्युवा राधिक है। रेवा शास्त्र यर्वेर-भ्रे यर्वेर-ल-भ्रेवाश-पदे-नह्या-ध-ग्रुश-दश-यावद-ग्री-ध्रियाश-हे-स्रूर-वर्गेग्।रानवेत्। धेरायानर्ज्ञेग्।त्र्याने सूराश्वात्वीत्।यवे रेग्यायदरा न्वावायरम् च न प्रेम्प्रेस् स्वरेष्ट्रिस्स्रि । वायरे हिन्दे वा ब्राव्यय स्वर्थ वा स्वर्थ वा स्वर्थ वा स्वर्थ व र्थेन्यम् विश्वायेष्ठायश्रा ने त्यान् सुन्याने न्वायम् वार्यायेष्ठ स्त्री विर्मे ठवार्यः स्टाख्वार्यः श्रीः श्रिवार्यः सेट्रास्यः नश्चनः संदेशः निवार्यः स्ट्रुवार्यः स्ट्रुयः वा व्हेशः भ्रुवः दे 'द्वाः श्रूदः शे व्रश्नः वे 'वव्यव्यक्त्रः द्वः स्ट क्रुद् वादः वीशः गहरायायने नयायते स्नानयात्रया स्नित्रायराय सुरारी।

नवि'मा

न्र्र्सार्याः व्यान्त्राच्यान्याः अपनिष्याः विष्याः वि

<u>५ तुः अर्थः गृत्रः इसस्य अस्य ५६० स्या स्टा विवः विदः विदः स्टा सेटः ।</u> यन्तरमिष्ठेशमान्तरमिष्ठेशमाः भेवः सदेः सुः चित्रस्य रुत्रः चमामाः या नेतः वा व्दे वे सूर नसूव प्रसूर दिसारे या गहिरायश र दा गे दें वे साग्र न यदे निर्देश में है निर्देश माहिक मार नु र्षे न मर दर्दे न ग्राट दर्गे मा स्था र्देव:होन:तुरु:यदे:न्देरु:यंक्ते:ब:सून:न्दर्गेवा:य:यधेव:वें। ।न्देरु:यं ऄ॓ऀ॔॔ॱय़ढ़ॸॱढ़ॸॖॣॺॱॺॱॻॖॺॱॾॺॺॱख़ॱॸॸॱॺऀॱॸॕॱऄ॔ॺॱॻॖज़ॱय़ढ़ऀॱॸॗॸॕॺॱऄ॓॔ॸॱॸॖॱ वर्रेन'क'के'ने'वर्र'नवे'न्रेर्रं अभेन'ग्रम'वर्गेषा'र्गे देने'नवेक'र्ने'वर्रानवे' न्देशसें भें न्योद्रश्राहेश कर प्यट वर्षे वा या विश्वामा साधित सार्य मा रें ने अ गुन भवर वर्गे ग भर्य सु नि के वर्गे ग सु य बस्य उर्द है हे सूर र् नेशायर होते । ने पद नदे हिन पर हु र हु से न पर सुन वे गा पर्वी वा वर्द्रस्यार्थे प्रेर्प्य प्रम्प्त्रम्य स्थित स्थान्य स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स हे लेखानग्राम्य अराधराग्रहेखागाः साधेदायदर साधेदालेखानग्रा व'वे'विश्वात्वरश'न्रेंशाशु'ववायावाधेवाया ने'सूराधेवागुरार्श्केवासेनारें। वेशनश्रृंदादादे वित्रं उगार्श्वेदायाद्म्य उगारु शे हिन्दे। ग्वराधरासुरार्भे त्यास्रामी में में अःग्रुवासंदे स्राम्बेदादसानम्याः

नगमानामान स्टानिव न्यान्या सेट दें स्रुस मिले साम्या से स्वा र्यानेवे सुयार्या विवासेन साने स्थान वर्षे वा वर्षे न्या सावे स्थान सुव वर्चित्राराधिताने। केंबाह्मस्यारम्यावितासेन्यराहेंग्रायायिःवेशास्याग्रीः ध्याश्वरावदीवानवे स्थानि । स्टानविवाधिन स्थान महिलागाश्वरावदीवा धरावर्देरायाने वावदी वदी वरा द्या है। स्टार्से वार्या स्टार्य विवासे रार्दे स्रुस र्'रेश'र्यदे'नेश'र्या ग्री'ध्रय'र्रायनेत्राचेर'र्य'रे'हे'सूर'त्रुश'यश'श्रुर' वर्चेत्रः सः र्ह्मेरा भीना। इस्ने व्यया नायः हे स्ट्रेंटः सेत् स्ट्रटः वटः प्येत्। स्ट्रिंटः सव्हः इट वट र्षिट पर प्रशुरा । शे र्श्वेट इट वट र्षिट शेव वा । श्वेट पर र्षिट धरानायायम् । विशानाशुर्यायय। भ्रीक्रिंदायाके प्यारसेदाययार् र्राचित्रचीरार्भेराधेर्भेरायात्रात्राची पर्वी सह्या वस्र ४५५५ सहर र्ने। । ने ःक्ष्रः तः स्टानिव श्री अ श्रे द्वारा पाने स्टानिव श्री अ श्रु ना पाने । या र्रानिव भी अभावा ना स्टानिव भी अभावा न मसेन्सिरे क्रिंद्र सदद्र सेन्दे लेश क्रुप्त दिने एक मतिन वाद्र के निया ल्री वावयल्तरश्चे वी क्षेत्र कार्य स्टावी में में श्वीय संदेश्य विवासी में য়ৢয়৽ৢ৽ঀয়য়৽ঢ়য়য়৽ঢ়য়৽ঢ়য়ড়ৢ৽য়ৢ৽য়৽য়ৼয়য়৽য়৽য়য়য়য়য়৽ৢ৽ वहें बार्गी रराविवासेरासारे वर्गामें विवसासी वर्गामें सूसारामिहरा ग्राम्प्रियम् अपि अग्रास्त्र अस्य । या वित्र म्या वित्र म्या स्वर स्वी अप्य हैंग्ररंभेग्'दरळेरारेग्'सर्खेर्वे दिख्यरराविव सेर्'सायापेर सर्गत्र त्रिः भ्रे स्ट्रान्य विद्या स्ट्रान्य विद्या स्ट्रान्य स्

र्विःर्वे रुवाः वे रह्युः शुःषः स्टर्गे वे स्टिंग्वे अः ज्ञुनः धवेः स्टर्भवे व नगानाः धः वःस्टःचिवः सेटःर्दे स्रुसः र्टेशः धरः वशुरः या दे वशः र्हे वाववः विवाः गैरार्द्रायविद्रासेर्पारे हेर्पेर्पेर्दे सूसार्पदि वास्तरारे देप्या रैवार्यायरायमेंवायायेवाची। क्रूटकेटाटेयरावीटेवेंराव्याययायेट्ट व पर्योग पर धेव हैं। वि व रूट निव के दे र पर ने पर र निव पें द दें श्रू अ र्जिस्त्रम्हे स्रम्भे स्रुयाम ह्यामित्रम्मित्रस्य हिन्स्त्रम् *য়ৣ*ॱग़॔ढ़॓ॱॸॸॱॸॿऺढ़ॱॸ॔ॱॹॱॻॖॸॱॹॗॱग़॔ॱॸॸॱॸॿ॓ढ़ॱऄॸॱय़ॱॸ॓ढ़॓ॱॸॸॱॸॿ॓ढ़ॱ र्जिन्दे सूर्यार्जिन स्थानि स् धरायदेवासूस्रायासी स्रेष्ट्री पदानुसासेदादु यदेवासूस्रायास्रेष्ट्रीयात्वेवार्देष्ठि ख़ॣॸॱॻॖॖॺॱॺॱॸॸॱॸॿॎ॓ॺॱॻॖऀॺॱऄॱऄॕॗॸॱय़ॱॹॖॸॱॿॸॱॻॖॸॱऄॸॱय़ॺऻ_ॎॺॗॱग़॔ॗॺ॓ॱॸॸॱ नवित्रसेन्द्रसेन्द्रित्सायाणदास्त्रमी दिन्त्रसम्बन्धन्ते । वित्रानहेन् <u> तः कुः सळं तः परः द्वाः तुः तर्वे । नावे </u> क्रॅटरमक्षेट्रर्ट्स में दिनें अञ्चयसम्प्रीयायधिवरम्य याश्रुट्यके है। हे स्नूट्र त्। गयःहे क्रेंदः यःहेदः हे यः ग्रुः चः स्टः वी दिः वें यः ग्रुचः यः व्यावः विवाः वेंदः वः

ने ख़ुः सः धेव : प्रमः मरः मिवव से नः प्रदे दे हैं नः केन धेन प्रमः वर्गे वा व सरः नवितः धेर्मा प्रमान्य स्टानवितः इसाया श्रमा स्टानविता हासी उरमें। दिन्हरणरार्डेन् र्ह्जेनायया गयाने रहायविवासेन् हेन् ग्रीया । हे. ख्रे. रूटा प्रवित खेटा था प्रहास के के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प नविवक्षेत्रत्वानासम्वयुम् विश्वासदेष्मात्वायायश हेरसूमञ्जास <u>रदाविद्राभेदामभेदाभेदाभेदामभाद्र्यम्य</u> क्षेत्राय्यायविष्याचेत्रायाचेत्राचीत्राय्याचेत्रायाच्या <u> चे</u>न्ने । पायाने केंपा स्टानविव सेन्य हेन् ग्रेस न्रेस संस्था ग्री स्टा नवित्रसेन्यकेन्यमिग्यम्हेन्त्री स्यानवित्रसेन्यकेन्यम्यायाः हेर्ग्ये भ्रेम दर्भार्भे इसस्य स्टान्ने विदार्ग्य स्टान्य नविवाद्यान्यक्रामितः ध्रीमार्श्वेदायायाधीवायमात्र्यूमार्मे विर्यापीवातुः ग्रम्यान्य प्रार्थित्य स्त्रे हिरास्य विश्व स्त्र स्त्रे ने स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्

यरमायायम् । विशायदेने सम्बन्ति क्रियाम इस्र ग्रीश हैं राय हे न १क्ष्णात्रादेशस्य प्रदेशस्य मुख्यम् । याद्य मुद्रित्य केष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र । न्नानश्चनः हुः सेन् प्रम्यासुरस्य । विस्यापि स्ट्रिन्य हैन् नुः स्वावेस्य प्रमा रदानविवाग्री अर्थेदार्दे सूर्या दुः भ्रानाया थे । वेदाग्री सदानविवाग्री अर्थेदा मिते क्रिंदामाया मित्र माराम बुदानवसादिर सामिराक्षानाया सुदसामा धितः है। तुर्इ,यू.वे.ए.वर्षा यार.रया.र्देश.स्. इस्थ.रर.यी.ट्र.स्.वे.र्र. थॅर्न्स धेर दें वेश सर्दे प्रमः वेद पर ने र्ना थ। क्रूर पर हेर् हे राम हेर माहेत्रिक्तियासम्बद्धान्यादिका कुन्नाकेत्रिका कुन्नाकेत्र रॅर्जन्न्यायायायेवाची नर्रयाया इययारे में हिन्चीयायेन यायायेवाची धर वेद भरे पर्के पासर द्रा श्री यह द्या क्षेत्र भ केत् या दिस में कित्र ह सर्देवःसरः लेवःसः देः द्याः यः वे। याववः यादः यो शः ग्रादः सर्देवः सरः लेवः सः देः नर्ह्मिणम्बर्धाः तुरुष्ते। द्येर्यं देश्यर्धे प्रत्रेत्रे विरुष्ट्राश्वर्धे प्रत्रेतः यनेकिन ही वर्षे वा हे या हे या हो स्वापार धीवाया है। त्या के दा से हिन प्रहें वा दु गल्गाधरहिः भूर त्राधायविदः हे। वेशाद्ये प्राययश्चरः गुरुद्रशःचंदेः ध्रेरः दे।

ने भूराया गुरुष्या निर्मा विकास के प्राप्त के प्राप्त

नेवि:कें'र्नेन:सेन्'सर्मेश्रान्तां नेविश्वें'त्रस्थानां नेविश्वें'त्रस्थानां नेविश्वें'त्रस्थानां नेविश्वें नवित्रः धेन् स्वेन त्यः प्रमानवित्रः सेन में वित्रः नित्रः नित्रः वित्रः नित्रः नित्तः नित्रः नित्रः नित्रः नित्रः नित्रः नित्रः नित्रः नित्रः नित्रः बेर-रे-ब्रुब-र्-व बुर-द-ब्रु-व-धेय-रे-वक्रु-र-वर-वरेंद्र-वय-रे-क्रिक्ववावः धेवा देव ग्राम्प्रें रामिय मानिवा विवासी मानिवा में दिन ग्राम्प्रें मानिवा मानि वःश्चेवःधेवःवै। । होनः स्वरःव। वैरः सेनः हेशः नाईनः प्रवे के वैरः सेनः स्वरः र्'न बुर दरर र्याया र्यो अ विश्वासर एकुर नशा मिर्से रुया यी अ निहें रायानहेत्रत्यसहेत्रास्य । क्षिनानासयान्तर्स्हित्हेन्यान्त्रियार्गेरावेतः रायाम्बुर्यास्थान् क्रिंरामिन्ने नायमिनामिन्या क्रिंरामिन्ने नक्ष्यार्थं अप्यार्श्केष्ट्रित्राधेद्राधेदार्दे। |देशादाश्चर्द्राधाराध्ये र्भूट विश्वाहिता वयर ग्रह क्रा सेससा द्राय विश्व संसक्त सामा श्री दा क्री से द म्बर्भायान्द्रास्थेवा विभागान्द्रा देवाळेवाबेटानायशाग्रहा नद्याः ८८. यर्या स्ट्राय स्वार्य हिन्द स्वयः यः क्रेवः स्थाय क्रिया विश्वास्यः नीटा ग्वित्यापटाम्युटार्न्यान्द्राच्यास्त्राचेर्र्यात्र्यास्त्राचित्रासेटा धरःवक्षःवःइस्रयःस्रे:दुरःवरःगसुरयःधःइस्रयःग्रदःस्ररःवन्दःधः नियान्वीयाने। ने क्षायाधीयाया नृत्तेते त्या शुन्रम्यावीयायायाने रा ष्ठेत्रः वनः श्रें नः प्रमः पर्ने नः प्रश्नाः प्रमः नक्ष्राः प्रमः ग्रुः नः देशः प्रदेः प्यतः त्। स्रार्भिः स्रार्भे दे द्वा ग्रार स्रार विषय के सार्के र स्रार स्रार स्रार स्रार स्रार प्रार द्वा नरःहेशःशुःनकृर्वे विशन्दा सून्यायशःग्रम् केशः इस्रश्रम्मितः बेद्रायराधेदशाशुक्षेशाशुरायः द्विति विश्वास्त्रायः देवा श्विता सर्वेवा मुश्रित्यः भित्र। विश्वाद्याः व्याद्यः विश्वाद्यः विश्वादः वि

नेश्वान्त्रम् प्राचयश्चर्याः इत्यो इत्याने स्टायनेन श्वीत्र श्वीत्र विष्या रेगाःमःधेवःया नेःन्नःवहेवःस्रूरमःन्रेस्यःसुःवनायःनवेःक्वेंक्यानेःनुरमः वर्चेत्रःमःते स्टानित्रं सेट्राययस्य नित्रासेट्रायः हिंग्रस्य विश्वस्य स्वाप्त्रयाः गडिगाधीवाव। नेवे वहीवासूनर्यासुवाव होवावाने वित्व हेन ही खानावाना मन्ते से पर्दे द नविव द्वर विश्व स्ट्राप्य स्ट्रार में या है। विश्व माहिया से द स ८८। विश्वासदीयविष्यक्तासदीयासायश्च कवाश्वासाधिरशशुः वटासा वे शुःरव यशायन्त्रा सायर्वे नः सवे कुः धेव त्या ररः नवे व से रासरः नवः नःयश्रामार्नेन्यश्यमःळेशादनादःविनानेःव्हमःळन्यश्याधेरशःशुः वनः मदे कु र्षे द मा साधिव के वि वि के द से द से मा से साम साम से साम उवाग्री निर्मा से दाय दि हैं हैं निर्मा है साम से दास सम्मान है। सुर्म यशयन्यायवे में निष्ठे मन् वह्या यम् ग्रुन्य यादि या विषा सु वि व ह्या से न यदे क्कें धिव कें। । गाय हे प्यम क्केंट य है न न स्थळव स्थ से न प्यम क्केंव स बेर्पानेशन्त्रान्त्रस्यान्त्रस्य स्वराधि द्वीप्तास्य स्वराधित्र स्वर्षेत्र स्वर्णेत्र स्वर्षेत्र स्वर्येत्र स्वयेत्र स्वयंत्र स्वयेत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वर्येत्र स्वयंत्र स्वयं नन्नाः भेन् सम्भूनार्वित्वानि के सिंधित है। के सामासुसामानन्ना भेन् सम रेग्राकेरान्देशसंज्ञस्य उत्त्याळग्रायासासुरायराज्ञत्यायात्वारा धरावनायाविनानी देवार् नाहेरानवसासळवासरा स्थानासामा वार्षित्।

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

नेवे भ्रिम्पन्या सेन्य वर्ते हो हो नवे क्षेप्य हो स्वाप्त स्वर्ण हो । ने हेन्'ग्रे'सेन्'ज्ञन'ग्रे'ळॅग्रायया रन'नवेन'येन'यय'सून'य'सून' मदी । धिरुन्दरसळ्दरस्य हे विषा हो दुर्म र वशुरा । सळ्दरस मस्य उद्देश वार्या स्तर्य स्तरि स्त्री । सामका सका के के क्री क्री ता सामका सका वर्मम् विश्वानम् विश्वान्य विश्वान्य स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स र्राचित्रं श्रीशः श्रूर्यम् प्रस्ति । स्राचित्रं प्राचित्रं स्राचन्त्रं सदे द्याया न सुर अत्रा सुर द्या स्पर दे कि द्या स्था है स् नश्चनशःश्री । रदःनविवः इस्रायरः नठदः यः द्याः ग्रीशः पुत्रः देश्वः द्युदः यदं है द्वें राष्ट्री वे सूर हैं वाराया दे है नद्वा वाहे राख्य संस्थित यदे गहेत में भेत है। दे या अळत अम यहेत मदे हैं उस भर से न मदे धेर्र्स् । १८९ १८५ वर्षे हेंगा रायवर हुँ वर्त्व स्थान वर हेंगा प्र न्द्राहेनामानःधेदागुन्द्रमेनादादी कुद्रमानीस्मित्रादे दुन्द्रमानीसाव्दर वहंग्रयायदेंद्राधराम्याययायाधेदार्दे॥ বাইশ:বা

न्याया शुःर्देश प्रदेश शुन्र कुर्र र प्रान्याया प्राने।

पालक प्राचित्र के। द्राची क्राचे क्राचे वा पालक प्राची क्राचित्र क्राची क्राची

यदः इ.च.तम् ४८ चित्रः के देन तम् वी विश्वेटः चरः रुग्रमः सः लुब.बूर्। किं.रेट.कुब.तमा.वैट.ब.बु। ।रट.यबुब.विमा.वब.रे.परीयीया रदानिव नुषाय उदावेषा नुम् । दि सु नुम् नुम् नुम् नुम् । यदा नविव न्या वे नर्रे अ सेव न्या । यावव या नर्दे अ या से ना प्येव । विश वाशुरुरारावे भ्रिस्टें विया बेस्टें । श्रिस्ट्युम् वाराये श्रीप्राय विश्वेष्ठ वि न्देशस्य इस्र रूप्त विवादे । यह ना विवा कु बुन सर पर्दे न व न तु स र स नवावायर ग्रुन्वें रासेन् ग्रुट्य यदेर नवावा ग्रुटें रायहें व यदे वार विवा नग्राम् के के अम्बर्ध स्टर्म विवासे दार के दार के दार के विवास के विवास के विवास के विवास के विवास के विवास के कुर्यः भ्रेष्ट्रे निष्ट्रम्य विदेश स्वाप्त देश विदेश स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स नुसाहससा कु के ता की साम के दारा प्राप्त पाय कर की प्राप्त की कि स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स इस्रशः श्रीशः श्रुवः वेदःस्य। देः द्वाः यः स्टः चित्रः सेदः सः वश्चवः से द्वेदिशः धरःवशुरःवः नः ने नवा वी यः ग्राम् ने स्था स्वायः स्वयः स् हैंग्रायस्य विद्युत्स्य स्थित्र स्थित स्थि न्याया ग्रुपा व्याधीया स्टायी दिंग्स्या मुनासदे स्टाय विवाद मुनास्य के स्टायी विवाद यासी निर्देशमान्द्राचावित र्रसी प्रमुस्य स्थानस्थानस्य स्थानस्थानस्य वसरमारान्ते प्रतासदे माल्राह्मसमा सुर्त्या से ना विना विना यहा हो प्रवासि दशर्रेशन बुद्दान भेदार्दे॥

ग्वित थर देव द्या यर दर थर द्या यर ग्रुव यर प्रति यर

गुनन्दरम् कुं क्रेव ग्रीयाया मुद्देन संग्रीयाया सुन्द्युर द्वीया दे <u> न्याने ने न्यायर सुनाय श्रें या श्री ने न्ये त्या न्ये र त्या साया स्याने स्</u> बे ह्वाप्यश्वितः ग्राम् के ह्वाप्यान्य तुव्यान्य दे देवात् के तुम् वी विष्यान्य विष्यान्य विषय विषय विषय विषय नेदेन्त्रम् न्यान्यान्यां राम्यानिक्त्यां । नेप्यानिक्त्रम् म्यान्यम् स्थान रार्श्रेम्बराधेवावाळा बेरायदे प्रदेश सेराय स्थान प्राची बाद प्राची का बेरा ग्री-पर्देश-सं-वदेर-इन्ववि-प्राची-ग्रुर-भ्रो-वर्देद-दे। दे-दे-ग्रुव-अववःङ्कानः इस्रशःग्रीशः बुदःसॅटःसःधेदःपदेःपदेदःपशः निन्नशः पः उसःधेदः पश् वहें त'राने खुरा उत्वादिं रानर विकेट नवे हान की त'रावे ही रान्ता ने <u> ५वा:स्टःनवित्रः भेरःसरःगानृत्रःषःस्यात्रश्रःनञ्ज्ञीस्रशःग्रहः विवासःभेरःसदेः</u> अन्तेषान्त्रदेष्ट्रित्रप्रात्याचे प्यत्राची क्रिया हे न्या मी क्रिया स्वर्धित सुम वशुरावदे श्वेरार्रे॥

त्रेश्व त्राचाह्य त्राचित्र व्याप्ते त्राचाह्य त्राचाह्

सनदःश्चानः विंत्रयः नित्रायः सम्ययः दर्गेषाः यः ते स्यायः नस्ययः उत् : त् : से : इम्स्री ने भ्रामेन न भ्रामेन सम्मानन स्थापने न सम्मान सम्भाने । सम्मानिया यशनान्त्रयास्य स्वास्य पश्चित्रास्य स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्वीताः स्व क्षानरामान्त्रायायनेनरायां ने निष्ठीयायां में निष्ठा विष्ठीयायां निष्ठा য়ৢ৴*৻*ঀয়ৣ৾য়৵৻ঀ৵৻য়ৼৄঀ৾৻৾য়ৢ৴৻৸৻৴৻ৠয়৵৻৸৻৴৻য়য়৴৻য়ৢঀ৾৻ঀ৻ৼ৻৴৻ र्डसंबिनाः हुः बदःया देः क्षूरः गुरु नहना यः ग्रीः वहें दः प्रयः नहना यः पर्यः ग्री निर्माणिक रामेर सम्राम्य स्वर्षे स्वरं स्वर्षे स्वरं स्वर्षे स्वरं स्वर्षे स्वरं स् धरायर्देरावान् रहरावयाने। यह्यायायया यद्यासेराहेयायाळे ह्यायदे नन्गार्श्वेरावेरा । यदे वे प्रस्यहें व हेव प्रयम्भे यदें प्रमा । दे श्वेरानन्गः येन्नेयामयान्याक्षायाः इन्ध्रियाग्यमायद्वेत्वेयाञ्चायानेत्राह्यसम्। वेशमाशुर्रात्रेता वर्षेयायायशायाता यम् दुन वर्षेयाया से तायी प्रति दिन वर्रे हिन्द्रमेवे क्वें व्याग्ययान्य ग्राचित्र हिन्द्र निव्या निव्या हिना स्याःश्रूयःयात्रयः अर्थेटः नवितः न्। । यदे तः स्रूटः केतः सेटः हेयः देवायः नययः है। श्रियाग्री पहेनायायार्श्वेर नराग्रेन परी। ग्रियानावन ग्री नान्यार्थेर वशुरकेन्द्री विश्वानाश्चर्यकः हे। वर्ने नाम बना मी नम्ना सेन् व्यानाश्चर्यः ग्रद्राके अग्री निर्मा से दाय त्रा सिर्मा स्था से दार में मार से दा से दा से दा से दा से दा से से से से से से स नहनार्यान्यन्त्राः श्रेंद्राः विद्या । यदी वि सार्यमा हेव द्वरासी यदेंद्राः या । दे श्रिरः नन्गासेन्नेसाम्यासान्या । न्ध्रीसाम्यान्वेत्रावेसास्यान्नेत्रात् सळ्या विशःश्रुरःरी।

दें त र्रें न न से त की अर्थ र न अन न से स्थान के अर स न म जावत था नर्देश्यायासेन्यार्यात्राचित्राची सक्त हिन्न् पासुरस्यायाने नह्यायास्य न बुद्र मी 'क्कें न्र अ मा खुद्र अ अ अ स्दर्भ न वित्र दे । वद्भ न न वित्र । विद्य । विद्य । विद्य । वा वर्ने वे के शक्त्रस्थरा ग्री के राष्ट्रेन के साम्युर्स साने व्यान्त निवाने सा नव्यानाधिवाने। नर्डे सासासीवानान्य प्राच्यान्य स्याप्य सासीवानां नि निनि भेरिने। वह्नावरोयायमा हिन्यम्न्यस्नाम्यस्यानिन्ध्रान्ते रदःचित्रःश्चितःदर्भेदःश्चेशःवयःश्चेशःचवेशःयःविषाःधेदःद्रशःवेःद्याः यदः वी'न्नर'न्'अहंन'त्रश'नर्डेश'ख़्त'यन्श'ग्रीश'ने'नवित'वालेवाश'स'त्रसश' য়ৣ৴৻৸৴৻য়ৢ৴৻৸৴৻য়ৢ৴৻ড়য়য়৻য়ৢ৽য়য়য়৽য়ৢ৽য়য়য়৽য়৽য়৸৻য়য়য়য়৽য়৽ हेन्द्री विशक्त्राधरमासुरसायार्केसहिन्छेसात्तान्ते पॅन्द्री विसा हिन् हेश जु न प्रेन । अवाष्य स्वाराय प्रेन प्राप्त । प्रेन । यो वाष्य स्वाराय प्रेन । प्राप्त । वैं। । ने न्यायी महामित्र विवास विवास के वा ने न्यायी मर्केश सामाधित यक्तिन्द्रमान्वरायक्ष्रियायसेन्यान्यान्येत्रायक्षेत्रयासेन्यायि स्वास्त्रेत्र <u> ५८:ज्ञयःवदेःवेशःमशःह्रेगशःमरःज्ञःवदेःस्टःवीःहेःवेदी ।हेःदेःवेदः</u> बेर'र्रे'वेश'रे'श्नर्'शुश्चा गयाहे'बेर'व'वे'वे'रेवे'र्रेव'र्, ग्रुर'कुन'बेसबा नमयः इस्रायः रेताः तृष्टिवायदे त्यसः श्रीसायराद्यूराते। यारायी छिराकेशः केन्द्रिम्यायस्य ज्ञानवे भ्रीत्र ज्ञान्य क्ष्या से समान्य समय समय सम्याप्त सम्याप्त सम्याप्त सम्याप्त सम्याप्त नकुः ध्रमः क्रिंसः सः धेरुः है। विश्वासदिः विश्वान्ते द्रान्द्रान्य स्थानसूत्र स श्री

दें त सूर के राष्ट्र समय उर्ज वा स्टर्ज वित मुन पा सामा माना माना सूरा दा वी र्ह्मेश निव्वास राज्ञीत राज्ञे के साम्रस्य साम्य स्टर्गी र्टे के स्तुन राज्ञे स्टर नविवादी म्याउँ साप्परासे दार्दे विशादि में उगा नी सायवादा समासूसा समा नेसान ने पदानि निर्मानि नि कॅंशकेन'र्नेव'न्य'यदे'वनेव'य'ने'धर'त्युव'य' छ्र 'बन'ग्रूर'सेन्'ने हेंग नर्रेश्रायापादिवास्यायात्राच्यायायात्रीयाद्युपानायायीत्रायापादिवा कुदेःकं नवसाकुं रेवान्दायर्रेवायसारेदारें न्दाः बुदः दुः कुराकुं न्दाः क्रेतः यानिहें सामान्दान्यसाम्याणुरामान्योत्रामाने स्टानिवे यो तामा नर्हेन्ने। विःसेवेःस्टानीःरेंनेंनेःक्षुन्स्युर्यानेः विन्नाने नेनेः र्रमी में में अपीं न सबर सपी वाया सेन सबर सपी वार्वे । ने व्यापी वार्वेन ग्री.पूर्य.ग्रेट.केष.स.सू.क्ष्राश्री.भैयो.स.स्ट.यर.घी.यषु.सु.यथेया वशग्वाहर्मिन हुने व्यान में नियान हैं नियान होते। वियास निवाने व्यान रदानी दें तें अ मुन राजगाना त्रा मान्य मुन दु र् जिन सर मानुद्र अ से । । नाय हे १६५ र र रेंदि भ्रुवा र भ्रद्द न दे भ्रिय पुर कि न मुन्य र मुन्य र मान्य स्था न भ्रद्द र मान्य स्था स्था स्थ मशर्षेत्रमरभे निवेत्ते सूर्यम् दे दे दे निवाय मास धित है। देवीय मा देवे भ्रेम्प्र्वान्यम्याम् अप्यान्त्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य ने न्या ग्रम् से न्यम विष्य विषय क्षेत्र में विषय क्षेत्र के निष्य श्चित्रिक्षेत्र्वात्र्वात्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्र्वेत्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्याः द्योयःयस्य स्टान्तेव्यः स्ट्रेन् स्ट्रेन्न स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन्न

निवनिन्ने निष्नु निवे श्री मानु प्राया निर्देश स्थान स भ्रात्युर्त्रात्रराष्ट्राह्म केंद्रा केंद्राह्म अराया स्टानी में मेंद्राह्म स्टानी स्ट नविव गाह्रव से प्टेंद्र भाद्र स्ट्रीं तुर द्र र नविव प्रशास्त्र सामा है सासे वयायानराम्बरादी वह्यावयोषायया ग्रेस्यायायादावियान्देयार्थे इट वट ग्राट से पर्टेट हेट । र्से ग्राट पर्ट साम स्थापित पर प्राप्त विदाय ढ़ॕॣॺॱय़ॱऄ॓ॸॱय़ढ़ॆॱॸॸॱॸढ़ॏक़ॱॴॸॱढ़ॸॕॸॱय़ऻॎऄॖ॔ॸॱक़ॆॱय़ॺॱख़ॖ॔ॺॱढ़ॻऻज़ॱॸढ़ॆॱॸॕॺॱ नर्हेन्यविगार्गे ।नर्हेन्यराग्चारे। विन्योगानस्त्रावर्षेयायीप्रांत्राया अन्तेनानानिनाने। वर्ते धे प्रमेरिकामनी नायाने सेनायार्सेनायास्स्रया ᡚ᠂ᠽᠵ᠂**ᠪ᠂ᢅᢟᡳᡱᠻᡨᢋ᠂ᡷᠵ᠂**ᡇᡜᠬ᠋ᡃᠴᠽᡊᢩᢩᢖᠸᠵᠴ᠄ᡚ᠍᠕᠂ᠴ᠈ᢅᢅᡘᡬᡷᢠᢅᠾᠫᢅᡯ᠕᠂ *ॻऻॿॖॸॱॸॸॱॻॖॱॸॱॻॸॱ*ऄढ़ॱय़ॱय़ॸऀॱढ़ऀॸॱॸ॓ॱक़ॖॺॴॻॖऀॱॸॸॱॸॿऀढ़ॱऄढ़ॱढ़ॱढ़ऻ रट नविव ने भ्रिव के खेंचा हु शुरान्या ग्राट हैं नाया मदि भ्रिया कर्या सर र्श्वेर्प्यार्देवासेर्प्यरप्रमुस्या ग्रामी श्वेरप्ये केर्प्यरप्वेवासप्येवास नेवे भ्रिम्ने प्राष्ट्र प्रवे में बर्द्र क्षार्य में द्वार्य प्राप्त क्षार्य प्राप्त क्षार्य र्रे। । दे : पद : वद्या यी अ : ग्रुव हैं व : ग्री : वदेव : य : व्हें अ : व रुव : वर्षे अ : य से व नक्षानरा व्याना साधिवाया दे कित्र के रहा निवास के सम्मान के स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स श्रीशर्नेवन्यायन्देशसंस्थाधेवन्विनन्देशसंस्थिन्यवन्याधेवने। दे वे र्मायविव भी अवि य हे न प्षेव यदे भी मार्च में विकाम सुम्क की प्रिन्स न्रें अभि भेर से न्ये न से न जिल्ला है अ सु सु न ति सून अ सु न न न न म से न न न मिन्द्रिंशक्त्राध्यम्यान्द्राधिन्द्र्यम्

८.के.क्र्र्अ. क्रिश्च का.क. प्रत्राची हि.चूच या वीच प्रत्याचा विष् ह्याउँ सायदा से दास रागा हुत या सरा सरी स्टार ति ते ही सा से दासी से हिए। हेन्दी वात्रुवाशःश्रेवाशःग्रीःक्रेशःवर्नःन्वाःग्विनःगविनःग्रुशःभवेःश्रेनःन्ः <u> वित्रः के अः शुः पेत्रः मञ्जा के वा वी । धुवा करे । वाहे अः गाः पेत्रः सः से । ववावः ।</u> विरागिहेशःसूराने सार्वेगाःमशासूराहेराने ने देतान्यानने तायान नगरा यानरावशुरार्से विषयी के रमानिक से प्रमारिक स्थानिक से केन्'र्गेसर्याप्य 'र्नेद'ने'सर्नेद'सुस'न्'हेंग्य'पदे'रेन्द्रेन्द्र'ने 'र्न्ट'नविद'सेन्' नविवर्रः स्टर्नविवर्र्भ्यानविष्यः स्टर्मियाः स्टर्मियाः स्टर्भावाः स्टर्भा *ढ़ॆॸॱॸॆॱॺॸॕढ़ॱॺॖॺॱॸ्ॱॼॖॺॱॸढ़ॎॱऄॺॱॸॺॱक़ॕॺॱ*ढ़ढ़ॱॻऻॿॖॻऻॺॱऄ॔ॻऻॺॱॸ॓ॱॺ॓ॱ न्धेम्रायाया ने भ्रानुदे के या हैन न्दर के या उत्रामहे या हैं ने दे ने दे ते से न मर्थाने महिराकेरा हिन निर्देश हिरा निर्देश हैं मान्य विगामी देशद्यापविगापमिया । दे सूर्य देव प्रायय प्रिय देव । र्रमी में में अयुन परे क्वें अपा वस्र अर क्रम वि न वे क्वेम न्य मान नविवर्रिनेरञ्चर नदे विद्यास्तर में हैं राय बसरा उर्ग्यार हसा पर विवा राउँ अप्यायहिं पाय्या दे विया तुर्या गुरास्ट में हैं के गुरासेट स्ट नविदानरा सुराना दार्नीया केना नाराया यारा रहेरा संदेश स्थारा

ग्री खुल र त्यार है। दें र्वे रे केंद्र रे र वा वी रहा न विवर् र क्या पर न विवा में विश्वान्ता नर्देशमें इस्राया ग्रीन्स्यविदान् ग्रून्य स्ट्रीन सेनाय है षदः के 'षदः अ'षेत्र' संकेतः श्री राज्ये सामें सोतः संस्थितः संस्थितः संस्थितः संस्थितः । यदे भ्रिम् नर्से अर्थे दे सम्प्राचीत मुर्थे यार-र्वार्देव-र्यायदे-यर्वेव-य-र्वावा-ग्रु-यर्वा-वाहेश-य-श्रेवाशः मदेः श्रें राम इसामरा न उत्। यं साया से पहें वा पर श्रें से राया से वा रा राःक्षेत्र। धेत्रःस्वाराःह्रवाराःसदेःह्वाःस्वव्याः वदेःस्वयः न्याः स्टान्नरः न व्यवासदे द्वाराष्ट्री अप्यकरावाद्या देश स्थाप के हैंग्रयायदे स्थान धेन सम्पर्दे प्रचेता सेसया उत्तर हस्य या ग्रीया नाम स्था नन्गामहेशःशुःवेदःमदेःमविःशुःदरःमीःकैशःदरेः इससः स्टानवेदःसेरः धरःहिंगुरुः संदे । धरः द्वाः संदे । स्वाः संदे । सेवाः संदे । सेवाः संदे । सेवाः संदे । कुरानी गुरुरास्ता त्रस्या उराया श्री दिया हु शुराया धेता है। सेस्या उता वस्र राज्य वित्र निर्मा प्रकेर निर्मा निर्मा निर्मा का निर्मा का निर्मा निर्मा का निर्मा का निर्मा का निर्मा का वे पर्देन पा ने अपन्या हु म बुर म वे म वि ने स्ट म वे व से न स्ट हिंगा अप मश्राने के क्षेत्रामम् ने प्रमायने वा के प्राची के का पालक की पा निकास म थॅर्नर्भराहेन्यार्थर्थर्भराविनाः पुरवहेत्रस्थेन्यार्थर्भर्दित्रस्थे हिरसे । विदे वे निर्मर्यः भरः श्रुंग्रायः व श्रुव्यः येनः चित्रः नुः व्यन्नः व श्रुव्यः श्रुव्यः क्रे क्या नक्य नर शुराय देया नक्य क्या विया पर स्या का कर स्या का इट वट ग्रट सम्बाद में सूरा द्वार न सम्बाद स्वाद से के से वा नी विद्या

भूग अर्बेट या नसून खुं या र्शे गुर्श

स्वास्त्र स्वास

বাপ্তরম্যা

रदःस्यायाः ग्रीःद्यायाः ग्रुःदेशः न बुदः नः यः यासुस्रा

न्देशः श्रेन्त्राम् । न्यायाः श्रेष्ट्राप्तः न्यायाः न्यायाः श्रेष्ट्राप्तः न्यायाः श्रेष्ट्राप्तः न्यायाः श्रेष्ट्राप्तः न्यायाः न्यायः न्या

५८:स्र्

<u> र्</u>द्रस्य ग्री देव द्याया ग्री देश य बुद य **रे**

श्चिर्द्रम्यान् ज्ञुःलाल्यस्य श्चीः द्रम्यान् ज्ञुः द्रद्रम्यान् ज्ञुः विदेशः व्यन्ति । ने व्यन्तर्भे ने न्त्र्यायम्य व्यव्यायम् हेन स्वर्यायाये क्षेत्रायान्ता | भेर्या हुरे क्वेन पा छेट्र, प्रसूत्। | देर हे क्वेन पा बस्य अउट हो | दे वट ह्या श्चेन'स'महिस'र्से । एट्टे'वे भ्वेस' ग्रु'त्य'र्धेट'सदे'ट्यामा ग्रु'धेर'हे। एट्टे'सेट' तःसुरु उत्रः व्रस्र राष्ट्र । देवारु । व्याप्त । व यदे नगमा राष्ट्री हिन हिमा यथा धर दान हमा हुय यथी। विन सेन य वे तुन् सेन सूत्रा विंगा वहें व वतुर न सूत्र या धेरा विवेग होन वहें वे ने भाषीया विशासने महायमेषायया यह सुरान् प्राप्त हेना सुरा सदे नुन्: बेन् : स्ट : निव : क्री अ : क्रूं द : या धेव : या देव : न्या या स्तुन : बेन् : देव : देव : व वैवायरविद्वयरविष्ट्रर्भे । देवे भ्रेरदे वेवायरविद्वयं देवावदेंद ळग्रान्त्रभेट्राना दे नविव ग्रानेग्रास्यस्य दे नविव ग्रानेग्रास्य १६४ र्वेशःग्रेशःश्वयःपःविषाःश्वयःयःदेशःदेवेःवेषाःपरःवद्देवःपःदेःश्वेषाःपरः नवितः भेरान्य स्टिन या गरा भेराने हिंगा यर हो रात्री विशागश्रस्य

सःस्रम् श्रेत्रः श्रेत्रं वित्रः स्वायाः वित्रः या स्वायाः श्रेत्रः स्वायाः स्वायः स्वायः स्वयः स्य

वर्ते । धराहेत वर्ते वा ग्री या चारा वचा प्रत्ये के यी हो राष्ट्र । स्रा ची रें से या व्यवासके स्टानविवार्षे दासाक्षेत्रा साम्रान्य सम्बन्ध सम्बन्ध । द्याया चार्य । वे भे अ ग्रु य से ८ प्य विमा ५ में अ हे । व्य ५ व ५ प्य मा प्य प्र से श्रु अ प्र से श्री र वा वर्गेनामवरक्तेन्यानुस्यान्नेनामान्युन्तुःस्रेन्तुः सेन्यायासेनः धरम्भियायदे देयानेयायक्षेत्रायक्षेत्र यस्तियायाक्षेत्रायम् वहें तः संदे विद्यार ने अः व्रें गारा धितः वें । ने नि नि वित र र ने गारा सरा नि सुन यदरः अर्वेद श्री अर्धु गु निर्देत्र प्रमाय स्टर् से द से वा वा अर द निर्देश से व श्रेवर्गी। क्रेंशरेरहेरष्ट्रराधेवरमायारेरष्ट्रराधेवरमराहेर्वश्रामराग्रेर् देशक्ष्रानभ्रेत्रामधेष्ठार्वे । हिन् र्ह्मिनायश्यामा क्षेत्रासेत्राधरासेत् राधीः । दर्वीयाः प्रस्तुनः सरावशुरावेशः स्वा । देः त्यः क्षेयाः देः सेदः हेशः सरा । र्गे नर हेर है अय हेर भेषा विभागश्रम्भ भिरा देवे रह वहीय यभा ग्रमा हिन्गी अक्षेनान्ना सेन सम्प्रम् क्षेत्र क्षेत्रा समानित्र सम्प्रम बेर्'यदे'वर्गेन्'य'वर्ग्नात्वा रे'हे'र्नेस्यार्थे वस्य राज्य स्टानिव सेर्' राधितर्हे विश्वासुर्यायदे हिंद्रा ही किया देश के विषा हो द्रा के शासुर्याया पारा

धेव या पर्ने पा न वित्र पर्मा नुस्था निर्देश में विषय अन्य महार निवासे निवासे निवासे निवास में प्राप्त के प्राप्त में प्राप्त के प्राप्त में प्राप्त के प् वेशः ग्रु:नवे केंगाः वरे ने र्देशमें इससार रामवेद से राम हेर र् ग्रेर अधिवाशी द्वारान्द्रान्वविवासेन्यायान्द्रभार्यात्रस्थरान्द्रम्भार्यान् यर्दे विश्वार्ये प्रमाने प्राथित विश्वार्य । प्राथित विश्वार्य विश्वार्य । प्राथित । हिसादासेदानिवाद्याः श्रुष्ट्री वाहिसादाधेदार्दे विसाने सामाद्या दे सेदाया यापि देवा व रे से द दें वे या बेराव के वा देया सु श्रु श्रु व से द सर से होता यी अश्चेत्रियन्थे शेर्प्य स्ट्रेंन्य यादनयन्तियाः हु वर्षे । रेप्य विवर् <u> न्रॅसर्से क्रस्र सी म्राम्य विद्या से न्र्येन में विद्या सी सिक्ष सी स</u> क्रम्भागी रूरायविवासे रामाने रामाने रामाने स्वामान र्मिन स्वामान र्मिन स्वामान र्मिन स्वामान र्मिन स्वामान स्व वस्रश्चर्नर्म्यविद्याचेत्रस्य श्चित्रस्य श्चेत्रस्य श्चेत्रस्य श्चेत्रस्य श्चेत्रस्य स्वत्रस्य स्वत्यस्य स्वत्रस्य स्वत्रस्य स्वत्यस्य स्वत्रस्य स्वत्यस्य स र्ने प्रत्याय प्रत्याय स्थाय मः इस्र अः ग्री अः स्टः निवेदः दृष्टः निरुष्ट अः यः छेदः दुः क्रिं निरुष्ट अः यः इस्र अः यः स्टः निवर्षेत्रः अधिव सर्भे निर्मेत्रः हित्रः स्वित्रः स्वा दे स्वर्म् निवर्षेत् मः अधिव व के वा अे द सदद के वा अ वा है वा अ सर सद सद न वे व र से द मः अधितः सरः रवः तृः श्वानः सधितः त्वा रदः विवितः से दः दिवि शः शुः विदे कियाः ने अर्ड विया हो न्र हे अरङ्का अर्था यान धीत पर ने ने या अर्थ अर्थे । विश वार्याय प्रमासुरसाय सुर भेरायर होते।

नेवि श्रिम् व्यविष्य विषय । ज्ञाना श्रुम् विषय । ज्ञाना श्रीम विषय । ज्ञाना श्या । ज्ञाना । ज्ञा

यर में हो न्या दे वा सूर्य हो किया हिया या यह समाय समाय हो ने या या मःन्दःष्यःश्चेःन्यायाःश्चनःयादःष्यदःन्त्रंश्चेःसःन्दःन्तेवतःनुःवयायः वर्षिःचनः र्रेषः श्चानः धेरं है। स्टानी शः धेर्नः द्राना शे तु शः सः द्राने शे व द्राया से द्रों रायदे कुं सक्व प्रमुव वर्षा स द्रिय से द्राया क्षुत छीं न्धन्या होन्या वर्षे वा नंबेदान्यवा श्रुवा हा से क्ष्राय स्वेत्र से से हो से ५८। क्रु.अर्ळ्य.चर्गेर्य.देश.ग्रट.स.र्रेथ.स्.र्यामाञ्चय.ग्रुच.ग्र.दर्गेश.सर. वर्वावाः भेर्वे अयवे भ्रेर्से । देवा अयः द्या वर्षे वा यः वे भ्रेवः भे स्यान्त्री तिश्चितात्र हिंचा तार्के ची त्राची स्वाका त्र वाका त्र वाका त्र वाका त्र वाका त्र विश्व विश्व विश्व ध्रेत्रके अर्वे ना प्रदे रे अर्थ न अर्भे द्रायदे व्यवसाधित प्रमा ध्रेत्रके वे ना नी र्से য়ৢ৽৾য়ৄয়৽য়য়৽ড়ৢয়ৼয়৽য়ৼয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৢঢ়৽য়য়৽ড়ৢয়৽য়য় युःश्चरायःश्वायायदेःरेवायायदेः स्वायायदेः स्वायाः युः ह्यायाः युः ह्यायाः युः स्वायाः

वर्देन् :क्रम्यायाः सँग्रयायाय्वर श्रीः महेत्र सँ मशुन्याया दे श्रीम्या सेतेः गहेत्र में प्येत त्या अन्ते गानिय गहेत्र में गशुरु अन्य ते अन्य द्या गी गहेत् र्रेरप्रमुर्यम्। अरेगायंत्रेरहेशः क्रेत्रम्बस्याउर्ग्णेगाविष्पेत्रः हे। क्रेगः यार्यायया यद्याक्त्र्याह्मस्यात्री सर्दे त्ये स्थे स्वायायदेव पायाहेरा नहेन'नश्रम'म'म्याप'न्ग्। विदेग'हेन'म्यय्य'ग्रेश्वें न'र्रेर'कु'के'ग्र विगायदेर्त्रे प्यर्द्वा राष्ट्रमार्थः शुर्मा । देर्द्वे यदे द्वायः त्रया शुर मशुरुषाम्बर्भावे सूराबर्म्स होत् से । वि.सूरावस्यावर हा हीरा म्बुर्यास्य ग्राम् दे पर्दे द्राळम्य बद्धार हो द्राप्त स्थित । मार विमार मुलःश्रेनाशः वर् गुःधिरः नशुरशः यारेशः गुरः देः सः नाव्वः शेः वर्देसशा । देः धिरने वे के शाद्य संभित्र पाश्र में निया प्रमानित के तर के वा स्वीता । या है । *য়ৢ*ॴॱॿॸॱधरॱॻॖॱॺॖऀॸॱॴॶॗॸॺॱधॱॴॸॱधेढ़ॱॸ॓॓ॺॱढ़॓ॱढ़ॆ॔ढ़ॱक़ॕॸॺॱख़ॱख़ॖॺॱ वहें समा वित्र सेंद्र सम्मान माने सुना वाते । यदा प्राप्त ने स्वर सम्मान नः इस्रायः ग्रीयः ग्रीयः स्वा वियः स्वी

वर्षिरः नरः वह्रमा प्रवेष्यः वेत्रः तुः सुरः पः इस्राधः वस्रायः उतः तुः वयामायाः यशयिरानार्थेनामराइयामरानवनार्गाविशनश्रुतामये भ्रीरानभूत म श्रीन्यिः अर्मेन इस ने अर्हा । ध्रयः इस अर्ने धेर श्रीन् ध्रयः विषयः यानन्यासेनासर्वात्वी । श्रेनासदेश्यार्वेदायवायासरावसून् । हिःस्ननः नन्द्राये दुष्य ग्रीय पुष्य स्टान्ने व से दासर सर्वे दान्य क्राया स्टि हु <u> इस्रायर विश्वास श्रेत्यवे श्वाचेत्र र्जुर राज्यस्य प्रायस्य श्वर्र र्जुल</u>्जारा यथ। ४व.व्या. ४८.५८.४८४.भी ४.८८.भी यह.क्रू. यह.क्रू. यह.क्रू. यदे नुरक्त से समाद्यसम्माया वित्र नार्थे वा यर समाद्य वा वी विरामश्रम्यार्थे । ने हिन नने न पहें न विराधन प्यास्तर पीता है। सुरापास्य ननरःहे नविवर्षा । याहे स्यागावर्षायावसायस्य रहे। । ने स्रे रहें वर्षे रहा वस्र १८८ ग्यूटा विषे सुवा वर्षे सार्य वर्षे सार प्रमुत् । विशासदे विषे नकुःचितःवरोवायायम। गिनेःसुगाने ने इसमाया है क्षूराने ने पराहेंगा याययार्सेन्यायात्रेन्। श्रीम् नर्स्यार्थे मनेवायवे मनावी में में माध्यापमः क्रेंप्रदेग्रयास्य स्वाप्तित्व वार्यो विश्वार्थे । दे स्वरास सेवास विस्तित्व स नःलुवःवी वर्धवाःतःर्रःक्रुवाःवाश्वःरं वर्ह्याःक्षेःवर्ष्ट्रःचरः वरः वरः वहिमा सूर्वे निवेद रहें वा र्रें न दिंद मावद ही निवेद स दे से अप तु वहीर मी भ्रमशर्श्यम्भूनः वित्रः स्था वर्षे मः श्रीयः न्येतः ह्वायः यावायः प्रवेषः वित्रः व वै। न्तुःसःमःमान्दः इससःनेसः श्रेनः तुःननेनः परेः नर्देसः सः निवः परः

क्षेत्रभी अनुते क्षेत्रमान्य विद्वा विद्वा विदेश क्षेत्रमान कष्टित्रमान कष्टित्य कष्टित्रमान कष्टित्य कष्टित्रमान कष्टित्रमान कष्टित्रमान कष्टित्रमा

न्याः अर्हेटः यः नश्चनः स्वार्था

क्केंन'न्सेंब'क्केंश'न्तु'सदे'नश्रुव'नर्डेश'शु'न्याया'ग्रु'दर्वेया'रादे' रेग्रअ:घ:हे·श्रेट्रचेग्रग्रुट्य:घ:बय्य:ठट्रग्रट्यि;युग्रग्नेय:ळेंय: इस्रश्रायायर में दिन्त्रायाय स्ट्रिंग्य विष्य स्ट्रिंग्य स त्रअःळॅंशः इस्रयः ग्रीः स्टानी 'सॅं 'में 'हेट्' सेट्'सः 'सूर्व'स्टास्स्ट्रासः प्येद्र'स्या अ:रेग्।यदे:वहें तःश्रूरअ:शुत्र:<u>न</u>्दुर:च:विं:तदे:रेंत:न्:रेग्ग्य:य:श्रु:र्ळेग्रय: राम्बर्ह्यायाधिवायम्। तुन्इास्यो हार्ष्या हेरहेव्हिराद्वेयायमः वर्तुरानःहेशःशुःनसून्रायायान्त्रीयायाचे व्यापितं हे त्या नम्पराया क्षेतान्येतः त्रुपार्था हेते प्रत्या हेत् रहत श्रीरा से सरा रहत हसारा स्वाप्त स्वाप्त स्वार्थ स्वारा ग्री हेत पर पाने पार पर के 'दे 'द्या इस पर में या पर मुंच पर में स् र्रे इस्र राग्नी प्यत्त्वा पादी स्थान हित्र केट'वर्त्रेय'सर'वर्द्धुट'च'हेश'सु'नसूत्र'मर'वर्रुसश'हे। *सट'द्वा'स'सेत*' अर्वेद्राचावकेदा । यदाद्वाअर्वेद्राचा स्थानम् र्वेषा । विश्वाचाशुद्रशासदेः धेर्र्से । दर्रेश्चें इस्र राष्ट्रे प्यर द्वाप्य है स्थान है दार प्यर प्येत प्रत्र प्र র্নি 'हेन् : ঐন্ : মান্ত স্থান ক্রান্ত : ক্রান্ত : ক্রান্ত ক্রান ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান

नश्चेनर्भायात्री न्देशस्यस्यस्य स्टिन्दिन्द्रम् स्टिन्यायस्टिन्या व्यत्वर्देन् कवाश्वन्दर्वे सूरन्वा श्चेन्यर होन्दे । वारवी के हेन् हेन वर्तेषामरावर्द्धरानाने यामदे सूरानयानि सुनानी सुनामाययानि । नेयःर्या ग्रे सेया यो यः दर्दे यः से द्वस्य यो दे दे दि है द से द स है द स है द स है द स नेवे के तम्मवस्थेन प्रायमेवे वर्षेत्र कम्म निर्मेन निर वेश'मशुरश'वेट। रग'ग्रेन'हेर'तुम'मदे'सळसशार्श्वेर'त्। प्रेन'श्वरा या हिंद्राग्रीयाचेनायाळेवार्यदेशनात्रात्यायाग्रीयार्देवाद्यायायात्र्वा यन्ते प्रभूत ने विद्रास्त्र में अपने में अपने क्षा के प्रमूच के प् रायायह्वारार्स्रेवरहेवा । यदेरावयदाया सारेवावस्वेवसायसायदासेदा म्रेम् विश्वस्यायस्य विद्या स्वान्तेन्द्रिम् वत्त्वस्य स्वर्थस्य स्वर्थस्य स्वर्थस्य स्वर्थस्य स्वर्थस्य स्वर् न्तर। दर्नरक्ष्रभाषा नार्हिनाग्रीभाष्ठ्रवार्ष्ट्रभाग्नी वेगामान्दरास्र बुदासदे सर्दे बेदे अवदाया नहेत त्र राष्ट्रा नदे ह्र अपा की हो न राष्ट्रें त हेन । यदे रान १९ मा वर्षामवेर्ष्यात्र हुर वेषाद्रा विषार्श्वाषामाशुर्याम्यात् र्ह्मिनः न्सॅन्यम्याक्त्र्यान्युन्याग्रम्यम्यम्यव्यान्यक्ष्यान्यम्य यन्दिरासीयान्द्राचित्रः श्रीयदेवारायायाने न्यान्द्रा कृत्रास्टाययदा क्रॅंशःग्री:नद्याः सेदःहॅ्याश्राः निवाराः निवाराः विद्याराः विद्याराः विद्याराः विद्याराः विद्याराः विद्याराः व क्रिशः स्टानिव्यक्षेत्रः संहिषाया सदिः स्वानः होत् क्रिवः सिव्या क्रियः हो। क्रियः हो। क्रियः हो। विवास वहें त'यत्र व्यवा न दुःविहेश ग्री सार्रेवा सर वशुर न वर्षे प्येत सर विहा ধন:গ্রীমানীশ

नवि'नक्कु'रा'यथा हैंग्।रायायर्वेट्र'न'य्केट्र'न'स्री ।रे'ने'प्रे'र् न्यायाःसरः श्रा विकायाश्रुरकासदेः ह्रियाःसदरः ह्रियाःसःयारः धेवः बस्रकारुनः या हो दाया साधिव हो। के साह्मस्राया सदा वी दि विसा वा वा सदा हो । विदेश स्राया स्राया स्राया स्राया स्राया स्र यदे हैं गाय धेव है। देवे व्योय यायया हैं गाय वे प्यट द्याय या थेव यदे रहार विवासी देव हैं पर्देशकार है। वेक शक्ष हर करिए हैं पर हैं व बॅर्साउदान्ती सारेगायर निवेदास्यायरी परीके सूसार् नार हैंगा बससा उर्-ग्री-ध्युत्य-देवाय-ध्यायवींवा-धर-वर्देर्-ध-दे-विव-सॅर-धे-स-वह्वाय-नर्दे । निःश्लासप्पेनन्त्रं र्रोदिः क्रेन्ने निःनन्तिन्ते निःने निः स्त्रापाः सुन् नश्रास्त्रित्राची देव हेवा मासेव मसायहेव मने विषय के से दाया हेवा मन्यादःधेत्रः त्रस्रस्य स्त्रः स्त्रास्य महिद्वा देसः वेसः ग्रीः ध्याययर प्रविया नवे खें मान्वेश सरा नवेत हैं परें माशास सुर प्रशूर में। ने भ्राव वे श्राम्व प्रशायन्य प्रति स्व रायवित प्रवे प्यम् न वा प्रवे भ्राव स्वेतः धरादशुराद्वीं राध्या द्वायदे ग्वात्र इस्रयाय देश वस्रयाय स्वाय याचेरायात्रस्य रहार्देवासेरात्रायम् रहे। निवानम् याया निवानि शुःद्रवाद्रवाद्यूरावेय। । श्रृंदाशेवाश्रृंदाः स्र्रम् सर्वेदा सेवा हो। । विवा स्र *য়ुः*द्रतः से :यद्यः यद्य । दे :यद्येदः या-वेयायः सः स्रयः ग्रीयः याशुद्रया । वियः নাস্ক্রদেষ:মধ্যমী।

য়्राचन्द्राचित्रः स्रोच्याः स्रोचः स्रोच्याः स्रोच्याः स्रोच्याः स्रोच्याः स्रोच्याः स्रोच्याः

रेगा'मदे'वहें त'सूर्याग्री'ध्याने'हेन्'श्रुव्युर्ग्यात्र'हानाकन्यदेखें वापा स्रम्स्यवयन्त्राः द्वास्यम्यया नेयस्य अस्य द्वास्य स्रम्भेयः स्री अर्भेग्रामित्रे वेत्र धुत्र म्याग् इति स्यम् वेश सम् सु धी गुत्र मह्याश युनः अत्रवः क्षुः नः वनवः विवाः वी अः न नवा अः यः ई अः नवावाः यः व्युनः क्षुनः क्षुनः नर्से ग्रुस्रे देने स्ट्रिन्न प्राची वा प्राची वा प्राची ग्राची ग्राची प्राची प भेवाग्री न्याया ग्राने दे प्राया उवाग्री में या हैया ने भारो सभा उवाय विस्तान स वक्रेट्रन्य अर्बेट्र व राट्रेटे पुष्य सुव व ही व रापी व वा से सरा उव वसरा उदायविंदानरायकेदानाने ख़ूनाक्षेत्राणी सादेवापायाधीन सवे छितादा। गुन नह्रम्याश्रीः सन्देगाः पाने सुनासम्बद्धाः नाने न्याः वित्रायः वित्रायः वित्रायः नदेः इत्यर् भे तबर् पदे भे रार्ते । दर्ने त्यारे यापार भे नाया भे नाया हे नाया न्वेत्र पुरावाय केर्दे। । दे स्वर र्वावा ग्रुप्टें त्र संदे खें वा हें वा अवर वा पुराका यदी प्यत त्यमा महामहिषा ग्री प्रमार्थ क्षेत्र हिमा क्षेत्र भारे सारी मा प्राप्त स्था गुव-नहगवारी: दग्ना नि:इस्रया गुटारू सामित्र निया विस्ति सामित्र निया सामित्र र्वित्रःधेत्रःमश्रात् न्नरःभेश्वाःश्रीवाश्वाःमहिवाःभेन्तः भेशानिश्वः विदेतः स्रूट्याम्बस्याउन्दे द्याप्पटानेग्यायायास्त्रुतावन्नेतायासेदाने । नेदे स्रीता रेग्रायाययादित सूर्यासुन् न्युराचरात्राचिते से से प्रेयायाचि वर्ता देः प्यर्ग्यन्वा पुष्टिव सम्बद्धि सम्बद्धि सम्बद्धि । ध्यायाष्ट्रित्यरार्श्वेष्ट्रिवायायदे हिंवाया इस्य धिवासी हिंवाया वाराधिवा ষমশাত্ত বা মানী

दें त्रः अर्भे गार्था ने अरम्मा नवित्र श्चें प्यर्मे ग्रायपि खुं या ने में प्यम् न विगाणित सूस्रात् श्रेम र्सेन पर्मेन पर्मेन पर्मेन प्राप्त स्मान्य समान्य समान यदे देव द्वा स्थाय प्रतर स्ट निव त्र स्ट नि दे दे ते विष्य प्र विष्य स्ट निव स्ट निव स्ट निव स्ट निव स्ट निव स ब्रश्नून्सहन्यस्त्रस्त्र्यस्त्रस्य प्या दिन्स्त्रे वात्ववावास्यस्त्रं रुट्रप्रवेर्णुयः इस्ररायः र्हेदिः द्वट्यी राजविषाः यस्त्रेवः यस्रेक्रादे स्वर्यः रायदी धीत या देश है प्रूर न बुर न वेत खेत खुय कें शहर समा भी रहार र गी क्रेंन खुग्र अने 'त्य' वे 'नन्ग 'ग्र अस्ट 'न वे व 'वे व 'वे व 'न ह्या' य अवद न हुट ' गी क्षें त्र शर्रे या बुरावरा द्या क्षेत्र यदी गुरु ररा दिया वर्षे । इते या वर नन्गाने र्पेन् संभेता विश्वासंदे निवास में स्वेत स्व ग्राम्पर्ना में में प्राप्त मान्य के कार्य कर स्वाप्त के स्वाप्त क मक्षेत्रप्येत्रमादेश्यदी वेशन्तित्वाक्ष्यम्याम्यास्यास्यास्यास्यास्यास्य यान्वरायास्यास्यास्य विशासावे मुंत्रेतायास्यासायसायसायस्य विश्वीः ध्याउदान्नः सूर्याये भी सामायाना वदावे साम्रा से देते प्रारामी सामवना मः भेतः मभागवितः यः समा सः यश्या । देशः तः समा समा विशः शुः हेः ध्याने न्या वी न्रा न्या वी वावका ख्या राज्य स्रा स्रीत ख्या राज्य स्रीत । यदे दें विदें । दे हे द त्या रहा मी दें विदार रहा मी रहा रामी रहा विदार में विदार में विदार में विदार में विदार यर द्रोर व वर्ग राया श्रुवाद राजनग्राया रे श्रुवादिव ग्री क्विटे राज्या

भूग अर्बेट या नसून खुं या र्शे गुर्श

हे क्ष्र-प्रकृतिकार्या विकार प्रति प्रकृतिकार्य क्ष्रिया क्षर् प्रति प्रकृत क्ष्रिया क्ष्रिय क्षर्य क्ष्रिय क

नवि'नक्कु'र्भदे'त्रमेल'र्भ'त्रम् ने'ल'न्न्न्य'रेभ'त्रु'न'दे'ग्न्र्स्विग्

र्देशमें इस्रामी मान्य प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त बेर्'स'वे'नर्ग'सेर्'सर्वे ।रे'वे'केंब्र'र्राचनानी'र्हे'न्यानीहरू शुःह्रेग्रथःहे। क्रेंशःग्रीः नद्याः सेदःसः दरः यादः वयाः योः नद्याः सेदःसः वेद्राः नु नर्दे विशामश्रुरशासास्त्रम्हे । मायाने मारानमा मरामी सळदाने न ॻॖऀॺॱॼॖॖॖॖज़ॱय़ॸॱढ़ॾॖॕढ़ॱय़ॱॸ॓ॱॻऻॸॱॿॻॱॻ॓ॱज़ॸॖग़ढ़ॾढ़ॱय़ॱऄढ़ॱय़ॱऄॱॸ॓ॻऻॺॱ है। ग्वित र् त्यार बगायवित य र भेग्य तय र र में अळं त है र ग्रीय व्यवासमायहेवासयमायानाची वन्यायहेवान्यक्रमाया ने यहेन्य वे पहेना कें न्या वा प्राप्त निष्य के प्राप्त के प्राप् मर्भायहेगाः भूराभीः रेगार्भायिः धुरार्रे विः वा नारा वा नारा वा नारा विवार्षेतः धरावहें वारा वे श्रूराव १८ वा श्रूरा वारा ववा रहा विवार्धे दारा वारा ववा वी'नद्या'तु'याशुद्रश'स्था याद'वया'वी'नद्या'यद्देव'तु'यर्देद'द्वेर्यश्री। र्दे त्र त्रहे मा सूदे निर्मा पहें त्र त्य है त्र है ना सूत्र विमा र्मे मा सूत्र मा सूत्र मा सूत्र मा सूत्र मा नहग्राश्राभी नन्या वहें दाया अन्तर्भे अपन्या न्यादे हो पायवाद विवा यो अप स्रार्भि त्यान् भेग्राम्यान्या पुरि दिन्दा साम्रार्भि से साम्या स्री विष् क्षः ख्रुवः क्षेत्रेशः वे। वह्याः सरः सुरः से रहीया श्राः संधिवः सः नगायाः वेरः वर्षोवः यः इसे वासः सर्से हो द्रेयो वादः ववा रहें संविवा दसे वासः सर्दे । दे प्यदः दर्देः खूसःसदेःदहें त'राञ्चे 'नदेःगविरःशुरःसदेःगरः बगः ठेगः 'नर्गे स'ससः कुरः

ग्वित्रः श्रीःग्रानः व्याः वे 'न्स्येग्रास्यः संस्कर्षेत्रः वे ।

न्द्रीम्बर्गराने त्याहे स्ट्रम्पदे वर्षे वर्षे स्वर्गाते वर्षे प्रत्ये वर्षे व यायहैनार्क्षेन्यरायाक्षानाते प्राप्तान्य विन्नामा मा विश्वास्य स्था रदमी सळद हेट ग्रीश सुन मदे रदाविद पेट माउँ सानु प्रहें ताम से ता हो। दर्ते सूसानु प्रहें ताम विवाद वे सार्शे । प्रदा वह्नावनेयायमा वहेनार्स्वामायायायात्रानार्वेत्रस्य न्यानायेत्या दे षर:नद्याःवी:नद्याःभेदःसःहेदःविंदःत्ः&्दःसःस्थःश्चेंदःनरःवश्चुरःनश् वेशन्भेगश्राधरामुराधिः यन्गानेषे यन्गाभेनासे । स्टायवेवासेना राः हें गुरुष्य अप्तार्थ । सूर्य । यायायाय विष्ट्वीं स्वर्थः श्रेर्य । या शुर्य । यायायायाय । नेशस्यादेवे देवा श्वासायहें सद्वे स्था । दे प्यराचार वया स्टाची **ৼ৾৾৽ঽ৾৽ৡৼ৾৾ঢ়ৢয়৽য়ৢয়৽৸ৼ৽ঀৼৢয়৽৸ড়য়৽৸য়ৼৼ৽য়ৢ৽য়ড়য়৽ৡৼ৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽** मित्रे पर्ते स्रुव्यान् पर्दे । पराधी मायदे वामित्र पर्दे वा स्रुप्य पराने वा सर्वे वा <u>ॲंर्न्स्र्रेंद्रस्त्रेग्न्यं ज्ञार्यां ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान्य स्त्र</u> केंत्र:बॅट्बर:बर्धेत:यम्:बेरव्यूम:में। ।देरव्हम:वर्मःमी:मेंरेवेश:युव:यदेर र्रायविदार्थसायायर्गाः तुःयव्याः सार्राट्रे सूसारार्धसाग्रीः र्हेदिः धुया व्यन्त्रन्त्राः तुरुष्यः याष्ट्रिरुष्यया ५८ स्टि देन्द्रे स्वार्थः सदि द्वावा सुः धेदः व्य धे अदे न सूर्र र पर्रेर्प अभे पर्योग में । देश दे पर्देग सुन् सुन सुन ग्री-निर्धिष्य स्थानिक स्थित स्थित स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्य

मार्स्स्य म्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

यिष्ठेशःय।

ने नियाया ग्रायावव या श्री राया पर श्री स्वाया श्री राया है।

दे वित्र ने द्वार ने त्वार ने क्षेत्र क्षेत्र

व्ययः विवाः तुः वर्ष्णू रः त्र श्रु रः त्रे विवाः वर्षे वाः वर्षे वर्षे वरः वर्षे वर्

गवराधराष्ट्रराजनिरासक्रात्र्यायमात्रात्रात्र्र्त्रात्र्रेतास्तरेत्र ययाधीयविद्यादवियाहे। देख्याधिवावाद्यायाधियात्याधियात्याधिया र्'पिर्यासी से दाया न न न में स्वास से न स्वास से न से से सिर्या से से से से सिर्या से से से से से से से से से भे रुट नमा वर्ने वर्र न ने व्यय धेन में । वर्ने वर्र न ने व्यय संधिन में गुनःसबदःदर्भः भूरः नुःदबन् न्या विदे भूरः नुःसे विद्यन् ने विद्यायाया से नासः यदे प्रहेगा हेत्र य प्राप्त वा हेत् प्राया प्राप्त स्था प्राविचा चार प्राप्त होता वनरासेन्यरास्टानवेन्तीरासेंद्रायायादिस्यद्रातीः इसाम्वमा वस्रश्राह्म त्वन्यत्र विन्देश्य स्थान्य विन्देश्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान मर्वेद्रः ग्रदः दे प्यमें मार्यस्य पर्देद्रः व्यवेश्यावश्यः यवेदः चव्दः माद्रः ग्रीः मावश्यः धेवः र्वे; ;देशवरेरपायर्गेगायरमाशुर्श्यायेः भ्रवश्रश्चे वार्देवः भ्रेवर् विर्म्परमे श्रुर्मा वर्षे । वर वुना दुः सदे प्रयोग प्रम् दी। ननाना चुः प्रमेना साम छिन सम ने ख्रुम न के का

यर वर श्रूर त्या इ नेदे ग्वात्र र र तुर इ मू के ज र के वा वा यथ ५८। ५६वा:म:इ.५मेज.२५८.श्रु.२.५५.श्रूचश.२.म.श्रूट.चश.क्षेत्राक्षेत्राक्ष ळे'न'व्य'म्बिम्बर्य'र्य'८८१ अ'श्रुर'पर'श्रुर'न'ने'क्रस्यर्य'ग्री'म्बर्ट'ग्रीस' हैंग्रथःश्चःतःवःदर्गेद्रयःद्रयःयःश्चरःतवेःश्चर्वयःशुव्दःश्चरःदर्गेयःयःधेदः है। दे'द्रमा'य'श्चेॅ्र्स्अे'श्चेॅ्र्स्छे'छ्र्द् ख्रूर्स्बर्'ग्रह्सेर्द्से प्राविव धरःश्रुरःववदः अदः र्'ववुदःश्रेषे देः षदःश्रूरः वश्वदः धः स्रूरः स्टः वी देः वैशः गुनः तः धेतः द्धंयः नर्धे नः पवेः रेग्रायः प्रयः ह्रेनः नर्गे यः प्रयः ययः ह्रेनः प्रयः र्रमी देशें अञ्चरमंदे देव से दारे अप स्मानी स्म यदे र्दा राजवित से द रहे सामा प्राप्त राजविता कि वा कि वित्र स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स नक्कुःसदेःदर्शेयःसःयश् नायःहेःदर्देशःसःयदेःदन्याःसनायःसेदेःदर्वेरःर्वे देवे के देश सम्द्रित्य स्थान स्थान मान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स क्ष्र-र्रा में में के अवाश्यानर द्येषाश्रास्य वर्षे में प्राप्त है देवा है । डे'वेंवा'डं अ'ग्री'क्रु'डव'पेव'यथ। क्रय'यर'र्न्शेट्र'यदे'येथ'र्यक्षेवाथ'य'व' रदानी दें में सेदायर से विश्वराया से विश्वरा स्थित हैं। বাপ্তার্যানা

नगागाग्रायान्त्राम्याग्री। हिन्यमाश्ची राधी श्ची रामनियानी।

नगना ग्राया ने वान मार्ग मिना पर में राजा नगरा में राजा में वितःस्यायार्थः श्रुप्तावि क्रियायी स्त्रीयात्रा स्त्राया स्त्रीयात् । स्त्राया स्त्रीयात् । स्त्राया स्त्रीया इरमायायम् के दरायम् सम्मायम् । यर हे मिनामा से दिस्य दिन धराहेंग्रयाया सेनाय केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा केन्द्रमा त्रा व्याप्यत्राधित् अर्देव प्रमाहित्र शायदा धित् सेत् ग्री प्रविका ग्री स्वा ग्रीशक्षित्रकी । क्रेंन्ट्रयून्यक्ष्यक्षित्र विकासन्दर्स्यम् हेंगश्रामाने प्रहेगाहेता क्री प्राम्न प्रमा क्रिया क्रिया स्था डेग्। धेर देंदा न प्राप्त के के देंदा न प्राप्त के अपनित्र स्या अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के <u> ५८: ब्रह्म स्रोसस्य ५५८: अ८: व्यहिना हेत् की वःस्रूट् ५, धेत् की देत् ५ सः</u> यम् वे भैन प्राये द केर समें व सम्मेन स्थान से द में विकाम सुरकाय ढ़ॖॸॱॸॖॱॺॎॺॱक़ॖॸॱॸॿॕऻॺॱय़ॸॱढ़ॾॖॹॱढ़ॼ॓ख़ॱय़ॺॱॴॶॸॺॱय़ॱॸ॓ॱॸॸॱक़ॗॸॱ यदे सर्ने पीत वेश सूत्रमा ने पवित र्रे ने शर्ने त श्री सर्ने स्माम त्रा में त न्यायवे विन्यमञ्जूमानःविन्तुः समानमञ्जूमार्ने । क्रिमाने नित्राहाराः यशःग्रदः। ग्रम्भःभवसः भ्रीःवहिगः धेदःसेदःदस्य। । दस्रमः भवसः सद्रसः यत्याद्यन्तर्यर उत्रा । यद्याक्त्र्यादेना हेत् सून्निनर नेया । याश्रुर्यः ग्री:यर:द्या:द्यर:यीय:श्रेम्। विय:दर। देव:केव:बेर:य:यथ। यद्या:दर: नन्गामीर वित्र हेशासा । यदी है नियास वित्र हैं तर् सेना । हेशास निया वादा

मी'अ'र्चेन'नह्नन'य'देवे। भ्रिःन'नदेन'य'य'ख'नेग विकार्दा दे'ननेन श्चि तर्दे तर्दे वा हे ते त्या । श्चे निरंदे वा पा हे ने श्वर प्या । निरंदे वे त र्भुःनन्दा विदेषायक्षेत्रवेष्टिन्याधेवा विकर्देवन्ययमन्दरन्देवः रान्दरायदान्त्राचान्त्राचान्त्राचाः स्वराम्यस्या स्वराम्याः स्वराम्याः श्चर्यात्रेके धरार्द्या देशे दिस्तर्यात्रे वितर्द्या स्वाप्त के देशे दिस्तर्या वितर्द्या स्वाप्त के देशे दिस् व्यवायाओन्।यदे। विन्ययाञ्च रावादे भीवात्यायरार्टे। विन् इत्रायी प्राया ग्रम्। अम्याक्त्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र न्यायहेवा विस्याहेवःग्वरहेवःयनेवःयःन्या ।न्यःयवेःनेवःशःयनेवः नर्दे । विश्वाय हुरावशा दे व्यायहेषा हेदा ही ग्रावा है वा ही प्रदेश पार वीशा तुअमिष्प्रिन्दे अयाअप्पिन्दे विश्वान्द्रिन्याने हिन् ग्रीश्वान्य कमार्गे श्चार्याक्षेत्राचे विश्वादे प्रवासि ह्वायर प्यत्य स्वित्ते । विश्वास्य स्वित्य स्वत्य स्व नश्रमान्त्रस्यामान्द्रिके वे नुस्रामान्द्रश्रमास्यामान्त्रस्य यरः तुः नः धेदः यथः से । यथन् । दे । नृषाः कषाः यः नृष्टः क्षेषाः यः व्रुः यथन् । यरः यान्यावशुरा याववाधराने विवेदायानेयाया सदर वहेया हेवाशे ग्राव हैं या ग्री-द्रवर मी अन्दे नविद माने माया या नवी अन्तर्भे ने नविद माने माया साह्य <u> न्द्रायशयन्त्रार्श्वे त्राक्षास्यायम् अन्यह्नि हिन्दी । यान्यो के हेंद्रान्यायः </u> नश्रमानिके के ते ने निविद्यानिवाश्य हिन् से विद्यन्त निवेश्य प्रम्य रवायशायन्यायान्यायायम्यायायायायान्यात्यायायाया

श्चे न रंभ दर्गे न स श्वेद सम् न शुर्य हो। मेन य स ज्वा र स दे न रायम् इसाराग्राट्राग्रुग्रायन्द्र्वाद्रभेग्रायायन्द्रेवावरायन्त्रे नह्रवायराशुरायाविष्वाद्येग्रयाविष्यादे अभीश्वायराविष्ठे उगारी श्चर्ये विव ग्रम्यम्यादेन्यम् देने विद्यम् यास्य स्थापम्य विवासः ने केन न् ने स्था के स्था ने स्था केन मान ने स्था केन स्थ धरःचव्याः छे त्या वरेवः धरः शुरः धरः अर्देवः धरः वर्दे दः धवेः स्टः चवेवः रु:धेवाग्री नह्नवायवे दें ने राम्याधेवाने दे वे दें ने राहेवा के रावने या सरत्युरानराप्राञ्चर्यापदेधेरार्रे वियानह्र्यास्युःस्युदेश्चेः नः भे पर्वो वा पर प्रमान ने दार्य है । ना पर्वो वा प्रभा न हे दा द भा भे भा पा प्रमान प र्दानिवरश्चित्रास्त्रेस्त्राम् स्वादित्रास्त्रीयात्रायात्राम्यास्त्रात्रा है। देखेदायस्य *ने*दे ही र ने ख़र द क़े अप प्रत्य अहे अप प्रत्ये पढ़ि अप्युव्य व प्रत्य के प्राची । मुर्स्य द्ध्य त्याय पर्माय प्राप्त होर्म विश्व सन्दा यह वी के वि से मीशामारामहेवावशा क्रीशाया दे मा त्रुमाशामह्रवामिवा दुः स्टामिवा सीशा यः भ्रेयः श्री वियः भ्रूयः यः देवे के में यः विवे में भ्रूवयः वायः विवा हेयः नहेव वर्षा भ्रेरे अप्यान्दार्य निवासी अप्याभ्रेर्याय प्रायाया नरा न हारा परि यवर्त्राम्ब्रुद्रशःश्री । यह्मायायश्याय्या ने द्वीराने प्रवेशे से साम साम है सा गर्नेरव्या । देकेर्या भ्रेयायहेगाहेवाभ्रेयाचे । वियायाभ्रेयाया ने विं व हिन श्री हिन यर श्रुम य निमा तुम र्शेन य विन विन है हिन तु से न केरा । प्रदेगानेवास्यानुस्यान्यास्य स्थित् के निवेषा । ते निवेषा स्थिता स्थिता ।

वस्र १८८ वर्षे १ वर्षे वर्षे वर्षे १ व विशासी वरानी निर्देश में वस्र शंकर ने किंत्र रासे नाम निर्मा सून न् वें धरावाशुरशास्त्रा नवावा ग्रायार्ने बान्या ग्री । ग्रिना धरासा श्री सामा धराने । ৢৢয়ঽ৾ৼৢয়ৼৢঀঀঀড়ড়ৼ৾য়ৼয়ড়ৣ৽ড়ৢৼ৸ৼ৽ৠৄৼ৽য়৽ঀঢ়য়৽য়৽ড়৾ৼৼৼৼ৾ৢয়৽ न्यायमायने न्दायने धोवायाग्वराहें नातुः यने न्दायने वे वे वायवे याने वा यारःवर्षाःग्रारःष्ठाःचर्यत्रःचर्याःचरःह्रियाःचःवित्ववि । क्वियाःयार्थाःवर्षा <u> नवावा ग्रु.ल.र्ने ब.रका ग्री.विर.सरः श्रें रः वः वयावा सः वे व्यनवाः श्रेः व्यों वा सः </u> याधिवाशी क्री.याद्यायास्रवायाद्येत्यस्यात्रायात्राच्यायात्रा पह्या वर्षेयायश्चारा श्रूनान्धेवाष्ठ्रेशाष्ठ्रायम् अस्तायम् नन्नायश्चा धेवा वेशःश्चेरःश्चेरायगणायाधिवःदी । यारःवेगान्रेशःरीः इस्रश्वेरेद्वः न्यायरानन्याययाञ्चेरायाधेवाने। धेन्यवे द्वेम् येययायाउवानवेवा र्वे। विश्वाधनायम्, भ्रीनायाने वित्ते म्यायम् विश्वाधनायम्, भ्रीनायम्, भ्रीम्, भ्रीनायम्, भ्रीम्, येन्नें वियान्नात्रयाम्य नियान्य वियान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान वर्त्रसःस्ट कुर्यार्द्र व्यायस्य स्याप्त विश्वार्या विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विन्यम् क्रें म्के क्रें म्के क्रें क्र के क्रें ने क्षा क्षे में क्षे मान क्रें मान क्रें मान क्रें मान क्रें नवित्रः श्रुद्रः द्रायोगि से प्योगि मित्रः धेरः स्या स्रायो स्रायोगः र्देव'द्रस'सदस'षद'द्रवा'सर'रस'नदेव'सर'वेश'सदे'हिद्'सर'वासर'र्द्

नश्चनःश्चः नर्वेशः निविद्यः न

दें तर्देव द्यापर से दायि देव यार धिव स्रुस वा दे त्य देव वे भेरा यम् मुनर्दे । न्याम दे सर्वे वा हे या मुन्त से वाहे या ना वादि समुदार्दे । न्यःस्। । पपरः वः नेवः न्यः यः यः सेवः सुयः नः हिनायः यदेः से हिनाः पो भीयः ने <u>५८. ई अ. शु. अ बुद : पंदे : ले अ. २२ व्या ज. दे दे अ. दे अ. दे अ. व्या अ. व्या अ. व्या अ. व्या अ. व्या अ. व्य</u> यःश्रेषाश्रासन्ता दिवान्यासम्ते प्रत्यूनायाभेता विशासवे प्रयोगासम् हैंगामो प्यम् नायमा देव न्याय विषा ग्रामाय देव विषा ग्रामा देश विषा यरः ग्रुः नः धेवः यदेः श्रेरः र्देवः हे। नह्याः यरः ग्रुः नः न्दः योः नरः ग्रुः नः वेवः ग्रुः र्वे। दिन'न्यानेयान्युपाने ने देने देन पर पीन पान्यान्य प्राप्त पीन प्राप्त देन न्यामर्वे । यदान्यामये देन हे क्यायम् से हें नामये यो भी या न्यायये र्नेत भेत प्रमानमान में दिता । भार कर्ने त न सामान सम्मान से है। ने त न्यामार्हेग्यामान्दरहेयासुरासम्बन्धिन वियास्याम् विराह्यामाने । विदा

मर्थान्त्रम्यामान्द्रम्य श्रुवामान्त्री । विश्वामाश्रुद्रश्वामा नेवान्यामाने सार्थितः यासाधितावेशायवसासेनार्ने विशानार्देनायदे रेतान्साया दे शिसाने धिता हे। देक्षेद्रायमा दें दर्देव द्याया दें ग्राट द्या हैं। श्रम्य एट प्यमायद्या राधिताया नर्से असि देश्वे किन प्रमाना प्राची थी मोदी खुवा धीवा प्रभाने देश धिर-द्याया सः सेदः सर् से व्याप्तः रस्य विष्ठा देवः दसः सः विष्ठाः है। ने न्या विवादी अर्देन प्रमायन् होन पा केन प्रमायन प्रमायने प्रमायने प्रमायन यशयद्यायात्राच्यायासे दारा ह्यें याया से दायदि । याहे याया से सर्दे दायरा वर् होर मन्दर्वरुष स्टब्स्या मन्द्र्या सामर्थे द्वस्य स्ट्र प्ये स्वेश ही स्वेश ग्री हे अ शु अ शु द प द वा पा प्र विद्या हे द प्र पे प्र पे अ वे अ शु प्र र हूँ अ प द र नरुषामा भे पर्ने माने प्रायय प्रायय विद्यान माने प्राय विद्यान स्था है । बेन्दी विकामशुरकामका नेविंदिकिन्यस्य स्वापनिवन्त्रिन्यि র্ষমানমমান্ত্রীপ্রমাননাথের ক্রেন্থান ব্রদ্বা বিশ্ববামানের ইমার্সিন বিশ व'वाशे' जुदे।

त्तुः सञ्चरः तः यथ्यः ग्रहा वारः प्यरः हेतः त्यः यरः श्चेः त्यः येतः व्याः यदः श्चेः त्यः यदः हितः त्यः यदः विश्वः विश्वः विश्वः यदः यदः यदः यदः विश्वः विश्व

यः भ्रेअः यः वित्यस्ते अः श्री । देअः वः वदीः भ्रदः दुः देवः द्यः ययः भ्रेः वः योदः देः वेश ग्रुम्म दी दी न्या पर न्या मदे ने श मश्रु नर स ग्रुम स प्षेत्र हैं। वेशन्तन्तर्यस्यक्ष्रस्री विश्वाम्यस्यास्य स्वान्यस्य स्वान्त्री । त्रा अःक्वरश्चीःनगवःवश्चेवःवकःग्यनः। देःवःहःक्ष्रनःनन्ववेवःभेनःसःहेनः धेत्रसूस्रायायप्पराद्याप्यस्त्रलेशातुः नार्सूस्रो यराद्यापालेशातुः नदेः भ्रुरु है 'द्रेर्र अर्थेदे भ्रून अर्ग्ने अर्ज्जा नर्थे है अर्जु 'द्रम्या' नर्था है या अ यर ग्रुप्त ने किं त हिन् ग्री में किं त्या ग्रुप्ते। ने किं त हिन ग्री शाह्य यर प्राप्त प्र वःश्रॅम् विश्वान्त्रः विश्वान्ते । यदिश्वाने विष्वाने विष्वाने । वेश ग्रुप्त त्यार्शे वाश्व प्राप्त स्थाप्त राज्य भित्र हो। । यदा स्व प्याप्त प्रिया प्राप्त स्व स्व र्वित्रः प्यदः द्वाः सः त्यः श्रीवाशः संवेः श्रूतः वर्हेदः दे। देवेः दक्षेवाशः सः प्येतः संवेः राधित श्री ग्रां हैं ना शे भी शासदी प्राप्त में शासित हैं लि शासी प्राप्त से स क्षेत्रानी विश्वानाश्चरशाही स्टानविद्वासेन्यायायायायास्त्रीन्यास्य हिन्यर श्रें र न दी नेश रन श्रें द से प्राप्त हैं माने प्रवर्भ न स्था षर:सर:र्:मशुरशःष। हिर्:सर:र्:रत:हेर्:वर्डे:ख्:सदे:दर्शेय:सःवेशः र्न क्रिंव से त्या वर्तर प्यर ज्या है हैं के दिसे हैं दे से दार प्येव के हैं है है से र न्देशर्भे भेता हे क्षे न्देश में भेत कर के में में किन के न मा अपीक मारा न नरुरायायाने हिन् श्रीयाने वाने त्या सुन्याय निमाय स्थि सुनि विष्या <u> नर्देशस्यक्रार्देश्वेन्सेन्देश्वेन्देश्वेक्षान्यान्यस्यायास्यान्दर्योः क्षेत्रान्दर</u>

यायायते क्षेत्रिं स्वाप्ति स्वापति स्व

यर दे केर यथा देव र समस्वर में रहें शर्म समस्वर में रहें केर बेर्या हेर्य नर्हेश्यान्द्राच्यान्द्रेश्च द्रम्य क्षुः स्राम्ब क्षुयान्द्रेशः यःश्रेंगश्रामानिवाने । विशास्तानिवाने वितानिवाना यामिना धररेश्राधररश्चेराववेधिरर्भे । देखर्नेवर्मश्चरशेर्धेर्छश्राधवेर्नेवर वै। धेवरद्धयायाद्देश्वरधेवरद्धयानविवर्र्र्त्रिंदर्यदेश्वेषायास्याद्वया ধম্বগ্রহ্বর ব্রম্পর্টির ধম্ম গ্রাব্র বাদে গ্রীর্র ধর্ম র ব্রম্বর প্রম্বর বর্ষ বাদের বাদে उर् अश्वर राधिवार्वे । देशवार्श्वर र्यवार्वे वात्र स्वराधितर है। वि *वर्षेद्रः* अर्बेदः वर्दरः हे अरुषु अशुवर्धदे 'द्युद्र' धर्या वर्षुण 'धर' वे अर्गुद ह्रेन'वहेंग'रान'रे'क्रूर'याशुरुश'व्या रूट'नविन'वर्गेग'रावे'कें'रेगश' मश्राम्यापरान्धुनायाम् अनार्ने । वेशाम्युन्यायायान्यामान्या बृ'स'इसरायद्वि वित्युट'र्र्मानी दें के स्वान स'या धेत रहें य' न हिंद

ञ्चा अर्वेट या नश्चन स्वा अवा श्वा

न्याया ग्रु त्यों या स ने प्रवास या मान यो अ ग्रेन् स व्याप मिन स

वयः रदः वी देवः देशः वा बुदः व दी

र्श्वेन्य स्वर्ध्व स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धि स्वर्धि स्वर्ध

राभेन् राधे भूँ त्र नर्गेन् त्र श्रुत् सुन्दे । । ने भू नुषे भूँ त्र ने स्र राज्य । स्र र

ने वर्षाया स्टर्मिक स नवावायान्यान्या स्टावी खुवाका वववायां । न्याया व्याया विकास वर्षेत्रा । नर्हेन्'स'न्न्। ने'न्याया'सर्वे। । न्नःसं'हे। बल'त्युर-न्नःस्ट हुन्'ल'वहेया द्धयः ५ सः विवा स्रूट से १ दिव ग्राट ने ५ वा मसस उट सुः विवा वी राजन् १ यम्बुर्या नेवे धेमने नवा त्यरायवाय विवा नहें न यम होते। विने त्य हूं त्य षात्रकृति वर्ते सूर्राक्षे वह्रमा संदे वर्षे वःरो नायः हे : वयः वशुरः नाहवः क्षेना यः शुः वर्दे दः वः दे : क्षदः ययः शुवः यः धेव वय देव हे य गुन राधेवा हे या गय हे हिंग्य राहर से सूर व हे दे हें यद्विशागा यदर श्वान राधित राया यवित श्वीय विया ह्वर्य राविय है । क्षेत्र नर्हेत्। र्रेवाशामिश्रामाध्रमान्यावनाग्रीशामशामेनामा से विश्वासानि धेव रम्याविव श्रीयाप्या स्ट्रम्या वियाहे स्ट्रम्य हिंदा हे त्या प्यव वै। क्रन्ःस्रसःग्रुनःसःग्रानःधेवःसःनेःग्रिसःगाःषःग्रुनःसःधेवःवै। विसःसः ने हिन्दि से अक्षेत्र है। यन सुर से या नश्चान होन नर्गेन प्रये नु अस यार या प्रवः के या अप्यमें दिन्य है। त्या कि दा अश्वा वा प्राप्त विष्य कि दा विषय कि व

ययान्य सम्मेशहे । यावन में से सम्मेशहे । यावन से से सम्मेश सिन सम्मेश रुषाद्रमः हे या शुःद्रमणा मदेः खुवा साधे स्वेतः स्वेतः स्वेतः हो स्रमः हे दावादाः क्रन्यमा गुनायम् हे स्मारे ने माने विषया निष्या मिने सक्रम गुमारे माने माने स्मारे स्म वयःवत्रुटःववेःध्रेरःवश्चावःश्चेरःवयःश्चे ।देवेःध्रेरःर्केषःवःदरःध्रेरःर्केषः ব'ববা'বীঝ'ঊব'ঝ'ৡব'ব্'বিঝ'রুবঝ'ববি'ঈুবঝ'গ্রীঝ'ব্রবিঝ'র্মী'রুঝঝ'গ্রী' रदःचवित्रावरायेत्रयाधेत्रात्री ।देशत्यावत्राधेशावरात्रात्रस्यादेःश्चर वर्षामानवर्ग्नीः र्सेम्बर्ध्यवर्ग्नीवर्ग्याधेवर्त्ते निष्यः नेर्मान्यः स्वार्थः ळॅ८्रअरागुन्यागुन्यूर्नेवागुर्याभेत्रियाने नेवान्ययापाने यूर्नेवा ग्री:ळॅ८'स'ग्रिस'ग्रीस'से'दगुन'सस'सें। १८८'मेस'ग्रट'ह्यास'ळॅ८'सस' गुनःसरः क्षे भ्वेषः है। रदः ग्रीषः रूदः स्रषः गुनःसरः त्रगः न उदः गुदः न ह्युः नः श्चेर्यश्चे । दिवे श्चेर्याहेश्याय छर्यस्य श्च्याय स्वाय सेर्याय র্ছ্র-মম্বিমান্ত্রমান্ত্র প্রবাদেষার র্ছ্র-মেষামান্ত্রমান্তর বিষান্তর

स्मः क्ष्मः स्मान्त्र स्त्र श्री व्यान्त्र स्त्र स्त्

यायने व्यापन स्वी व्यापने स्वी न स्वी स्वी न से न से प्राप्त न से प्रा नर्हेन्य राष्ट्री ध्रयात्रस्य राष्ट्र नार्ये दाया दे साधित है। इसा शुन्यना मयाग्रम्साधिवाने। ने प्यमाध्ययानेयामा उत्राधिवामया वि । यने स्थमाहेया शुःन्यनाः मदेः खुवः देः बस्र सः ठन् सः धेदः हे। न्यानः ने सुनः नामः दः निश्चनः यर ग्रुप्त प्रदाय विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ र विष्ठ नेयामा क्री निराद्यूराना धेवाची ध्रायान्द्रात्र सम्माया है। र्दे। ।रेशन्यत्रेषाःहेरायदे।पश्चर्यायाः इयाग्नेः क्षेत्राध्यायाः गुनायः लेव मी। क्र स्था वे सालेव स्था वया वया न्यू र मी गानव के ग्रा मी वा निव ग्रीः र्सुनाया सुनाय होना या है। सून्य से माना नियान्य विकान्य प्राप्त विकान्य स्थान बे र्षे द प्र द्रा इयापाया के ह्रमा प्रयाधियाया क्ष्या स्था श्रीयाया स्था हिया स वबर्ग्यूरक्षे वर्गुनक्षे व्यर्भियात्युनक्षे सुवार्भियात्यान्यस्य वर्ग्युन् न-१८ श्रुः सार्था से व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा यानञ्चनायवे अर्देव शुक्षान्दा हे यान्यना नी याळदा सदान्दा नुका यवे हे द उसार् प्रयानामसाम् हे के नाधेमाने हिसार् । निसान हिनासन् । प्रस त्रूरश्रारार्डश्राश्चीश्रायश्चानान्त्रीश्राराधीत्रार्दे विश्वाचेत्रात्रे। यदेशदी स्वा यश्रियः रूर्यं स्यायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स्वय দিশ-ব্রুদ্শ-শ্রী-মন্নদ্রনা-ধ-র্ম-শ্রীশ-শ্রীদ-র-রন্ম-র্মুদ-র্নুদ-র্ম-\$\f\\\

मङ्गेष्ठानेते क्रेंन्या वेष्ट्रांन्या ग्राम्य मिन्ता मुन्ता मुन्त

शुःदर्देन्यादर्गेषायाउँ अयापिष्याअयादेयस्य वी न्यान उदान सेन् उदा क्रॅंश उत्र यः श्रें वाश्वाया देश गा यः वावाश यदे । बुद्र श्रेंट वा सः वादा प्रश रटः कुट् से तबदः द्वी । देवा या या स्याप्तरा द्वा प्रत्य या प्राप्तरा स्याप्तरा द्वा या प्राप्तरा स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स् यावर म्री मुन समद पर्देर न रहें संविषा धिर पा दे प्रश्र पावर परि रह यर्ने न से न स्टा क्रुन् के प्राया स्टा क्रुन् के प्राया स्वयं स्ययं स्वयं स्य सरक्षे नुर्दे । देशदान्नयादमुरार्दे दाधेदाया देखदानमूनायदे नया वर्गुर-वे र्रा कुर्गे अवर व्याप्य श्रुव वर्गे विष्टे लर.ध्यात्र.रेर.विय.रा.याष्ट्रेत्र.पित्र.धरत्रात्र.धर्यः यद्र. त्रुगामदे त्रवान प्रेत म्यापर प्राप्त स्वतं स्वतं साम प्रेत स्वतं । वित्र प्राप्त हेत त्रभःगाल्वनः म्रीः।प्रभःयेवःव्रसः श्रेष्ठभःया में दः प्रतिः प्रविदेः श्रेष्ठित्र सः म्रीटः दे। देः यायग्यायात्रात्रहॅन्यदेष्वयायग्रून्दी यार्रेयार्रेष्ट्रेग्ने, नार्ने दानरुषान्द्रम् नरुषाशुःवर्देन् देन् नन्याञ्चे वर्देन् यावानन्यायशञ्चे त्यार्षेन् याञ्चे नका वर्देन्यः क्षेः देवार्याया ने सः वर्देन्य निवायाया क्षेत्रे ना वर्देन्यः क्षेः देवार्यः र्शे विशयनायायर् नहें न्या दासरे या रेश ने माने शत्रा सुना सहता वर्देर्न्य उं अ श्री व्यव्या तु उद्य दें । भावद श्रामा अ श्री हे अ द्रमा दी। वद्या यश्रुं नर्वेद्रायंदे प्राचित्रुं मुंदि नर्वायश्रुं न्या से से प्राची नर्वा क्षेत्रपुर्धेत्रपदेध्वेत्रभे । विश्वावविद्यायाव्यव्यविकेश्वेत्रपद्याद्याया यःश्रेवाश्वारान्त्रें द्वशायः देवार्याः वर्षेवायदे । वद्वायश्रेशे वासेदादे

विशःश्चर्यायाद्यात्वराष्ठीः यद्याः श्चीः प्रयोगाः यः राष्ट्रयः धिवः श्ची स्टः यो सः यद्याः यश्रुं नः सेन्यां अत्रुवायशन्यावरुषः सेन्त्र् । अत्रुवा हेन् वश्रुवा हा न्दासर्ह्यस्थापन्ते। सर्स्यार्धसार्यानीः श्चिम्रान्युनापिः श्चिरानु न्देश कुः सळ्दः सळ्ट्र सः रादेः सर्वे स्ट्रें सम्भाने । यदे । प्रशासे दः तदे । प्रशासे दः वेश कु अळव हिन्य सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य हिन्य वासार्सेवासिविश्वमायोवायमें नायों नायमें नायों न नरुवःधोत्रःमशःदे नश्चनःमवे स्टः कुन् ग्रीः ह्वाशःधिनः मरःवशुरः दे। । सेनः व'ग्ववरमी'।प्रशायेव'वर्गेग्'र्यवे'रेग्र्य'रार्में र प्रशाय मेर् न्यायान्ध्रिन्यते भ्रम्यायाः सुरम्याविष्या सेन्यायाः भ्रीत्या विष्यायाते । नश्चनः ग्रुःवर्देन् न्दरः कुन् ग्रीः न्यान्यव्यन्दरः ह्वायःवर्देन् न्वीयः याय्यः ने से वर्ने न प्रश्र क्रें व से न ने विने न प्रति । वर्ने न प्राप्ति । प्रति । प्रति । प्रति । प्रति । प्रति । व वस्य अ उत् द्वा निवास विद्या स्वा निवास विद्या निवास वि रदायाध्यायान्य क्षेत्राक्ष्या क्षेत्राक्ष्य व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापता व् मर्पित्युहर्न्यान्ववयभेत्रम्द्रा स्टर्सिन्यस्येत्रम्पदर्देवर्न्यस्य यान् श्रीन् पिते भ्रम्याशु स्टामित्र वित्र सेन् पाया सेन् या प्रति न्या महत्र से वर्हेग्'रा'व्य'होत्'श्री विश्व'वेद'ग्नर'धेद'व्यश्वार्यं वर्षेत्'व्यश्वार्यं वर्षेत्'वर्षेत्' प्रभा र्नेत्रन्ययायान्धेन्यवे भ्रम्ययाशुर्म्यवित्रयेन्यवे नश्चनः चु पिर्याञ्चरयाव्यादे र्दराख्याया शुरवञ्चराया वे रदा कुर्राया दे रहेर

भूगाः अर्वेदः यः नक्षुनः रुं यः र्शेग्राया

प्रश्नात्रेत्रस्य विवाधी पर्देत्। या प्रश्नीया सार्ध्या होत्। या प्रश्नीया सार्ध्य होत्। या प्रश्नीया सार्ध्य होत्। या प्रश्नीया सार्ध्य होत्। या प्रश्नीय हो

नःक्षन्त्रः सम्यावस्य स्वर्तन् स्वर्तन् स्वर्तन् स्वर्ताः स्वर्तन् स्वर्ताः स्वर्तन् स्वर्ताः स्वर्ताः स्वर्ताः रा.चोट.तम्बराच्झ्यश्रासदी.विश्वासुष्ठे, व्यःश्रुट्रे, तत्रार्मर्स्यस्य विश्वास्य स्त्रेत्र दे। ग्रायाके दे त्या प्रवेत्या प्रवेत प्रायं प्रवास के प ग्राम्पर्देन्द्रम् अप्या ने स्वर्पन्य स्वर्णन्य स्वयं स्वय वर्गुर्रानायार्द्राय्यायात्राप्याराध्यदासे हिंदा हिंदा स्थाप्या वायाने द्राराया नडरायनायः भेरा । देशक्षात्रः तथः क्षेत्रं ने भेरा । दाया द्या नडवः से दाया वा । ८ वे श्चित्र से ८ वि व । याय हे सर्वे शुस्र य से यास स्वी । देव ग्रीशप्यायः विवाप्त्रीवाश्यः दो । विश्ववाययः वर्श्विवायः प्राप्तः व्याप्ते । विश्ववायः म्रेर्ट्रायास्त्रम् गासेन्। हेर्यान्ना रेग्यायान्युगाद्धारायसास्त्रम्। केर्वदेः नन्गाकेन्छन्नेन्न । इस्रायास्मित्रास्येन् स्त्रिन्यसेन्। । नाम्यस्यरायाः वे द्विम्य से द मा दि या मालव द्विम्य माय प्य पिता विश्व स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त म्। । ने व धुव वे ने न के विषय । विषय । विषय । विषय । न्तुःस्रायास्त्रिम्सान्दान्सान्यस्योत्।स्राम्यस्यस्यस्यस्यस्य ग्रम्भायम् नृतुःसःमध्येत्ववे स्टामी क्रून्गी हे सासुःन्यग्याया ग्रान्य विश्वान्ता वयानरावनुरानान्त्रीनापिये देवान्ताया स्वासिये हिन

धेरःर्रे विषर्पा वह्यायाययाया सुरावधेराययासुराहुराधः यास्तर्श्वतंत्रे पर्वेदर्वेदर्वेदर्या विद्याते स्वर्त्वयाप्रवेदर्वे यास्त्र स्वर्त्वया रायदेरायारायाः इरेशायरास्यागार्थेरादेशयायस्य रायदेश्वरासी। यास्य विषया द्रयान्वनाने न्ना वस्य उद्दे न्तु सार्य नाव्व ग्री दें न् गुर्य प्रदे द्रया गवगारं असे। वह्नायायया है सूर हिंद शेयाव्य द्वर द्वर दें क्ष्म । ग्रावः हे नः ग्राटः वे : नद्याः वी श्वा स्थाः स्वा । त्रव्य श्वी सः तदे : द्याः बेर्ग्यरप्पर्रेन्रं बेश प्रदेगाहेदर्रेन्युअपन्नादेश्चानम्बेर् । विश वाश्रम्याया हेर्नाह्मवाययायमा नवावा द्वाहिष्टायम् स्वाहिष्टे यरक्षे वर्षेवार्षे । ने छेर वर्षेवायर छेर में बेया। सुर यरे वे छिर छेया वेशःश्चानरः हो दःदे॥

श्रृंत्रः श्रीः त्तुः स्वाः स्त्र्रेतः त्तुः त्तुः त्तुः स्वाः त्रिः त्

संस्थित्र्यात्वेषाः स्वेष्ट्रस्यात्रेष्ट्रस्यात्रेष्ट्रस्यात्र्याः विद्यात्रस्यात्र्याः स्विष्ट्रस्यात्र्याः स्विष्ट्रस्यात्र्याः स्विष्ट्रस्यात्रस्यात्र्याः स्विष्ट्रस्यात्रस्यात्रस्य स्विष्ट्रस्य स

यिष्ठेश्रामाने 'न्याया'मायामिले 'या श्राया श्राया सामि । प्रमान यदे दर्शेषान-१८ शै सुवास ह्वास हिन क्ष्य स्थास शुन पदे ह्वास क्ष्य स्रायान्य स्रोत्रः क्रुं स्रळ्तः ने दि दि स्रोत्रायः स्राधितः ने दि स्रोतः ह्या शः क्रियः धुःर्मेषःगद्गेराःगयःरूट्ययायुवः वेदःदर्गेराःर्यः वेयः वर्देदः पदेः सुवायः यापारा धुःर्मेषायाग्रुनामार्श्वसेषाग्रीयायानेयात्राह्मायाश्वाद्वीता रायाधेवायम् कुष्यक्वादेयाधे केयायाक्यायम्यावायाद्वीयायाक्षे विग्रयायि ही स्प्रा ही हिल्या ही जावित स्रोध स्राध स्रोध स्राध स्राध स्राध स्राध स्राध स्राध स्राध स्राध स्राध ळ्ट्रस्यस्य व्यापार स्थे स्वेरायर प्रहेषात्य वावव क्षेत्र रेतारे प्रयास्य नर्णरक्षे नेरामरास्यार्म्यार्मे विश्वराह्मर्या क्षेत्र स्वरायो वारार्भे वारा ग्राट की तबद संदे ही र है। य रें या में का वि में तदे खूर वरें द दें बे का संदे क्षेत्रासर्दि,श्रंसर्रिस्याग्रद्धि,क्षेत्रःश्च्र्यात्राक्षेत्रःवियालेवःसर्स्यादेयः यदे हिर्दर्भ ग्वित सेस्र से स्वेर प्रेर हिर है। वित्र प्रक्र स्र स्र गुनःमदे कुः सळ्दः प्यान् से त्वनः ने। क्रांसान ने। से तानुः प्रिनः प्रामे प्रिनः ग्रेश हिन यान श्रुन यान हिनाश यम हानदे निने कि कि सम प्रेन निने क्षेट्र-५:हॅग्रम्भ-सर्ग्यानदेर्देव-वे.५:खॅट्र-यामे खॅट्र-ग्रीमाह्यन पाउँमाधेवः मी। कर सर मी र् पेर पाकर सर मी से पेर मी साम्य पर दिन पा गहराभेराममा ध्रयः रुभः श्रिंगमः रेजियः प्रवासन स्टानायः प्रेरा हैः क्षुः अप्धेत्र त्र ने प्रदानि देश हिना साने हे साम देश नि वि स्वरास है । से स्वरास है । गिवे वरिवे सेट र्रेट रेश र्वो शर्य रेगिवे गिस्त र्वो शर्ये । । र्वे र त्यू वे क्षेट्र-र्रेश्य-र्ये केंद्र-वश्चर्या चित्रः क्ष्या श्री हिया परि श्वा विश्वा या या हे अरुषु वर्त्ती निर्मा के किया के किया है से किया ह प्तुः शे. तुर्न न्द्राद्वी दिवायाया देया हिनाया न सुनाया है या द्वा वा ययर:ळॅंद्रासासेद्रायर:वर्देद्रायासी:देवासायर:वेसायर:वृदें। ।देःक्ष्ररः धितःवेशःश्चानायाः भेषायाः याधितःहे। प्रशःत्रूट्याः संस्कृ सर्वतः रु होत्वायार्रियार्थे से विवायायर प्रशूर हे। देवे विया सुर्यायय से देवाते मुनाया क्रन्याने स्टामान्न महिषामा या सेन्यते भ्रम हिन्दे हिन्दे । রুদম'অ'ছিদ্'ঘম'ষ্ট্র'রম'দে<u>দ</u>্ব'দম'দেশ্রুর'অ'দেদ্বীর'র রী'দেশ্রুর'উম' वर्गेन'वंदी ने 'क्षेत्र'वर्गेन'चवर'विश्व ह्वर्स ग्री कु सक्व ग्री श वर्गेन'वंदी नश्चन गुन्द अर्द्ध रशया कद अर्थे द से द गुरु र गुरु र ते कद स से द धरःवर्देरःधः १ अरुः श्री

ख्यायायाहेयायायायादी देविंदाहेदायदेहिंदायदेश्चर्यात्री

रम्यविवासेन्यित्यान्यत्याम्यासे सेवास्य स्वास्य स्वास् वहेंगामवि देन द्वारे प्राप्ति स्टान बिन प्यें दा से दान है। से स्टान बिन प्यें दा से प्राप्त से प्र નેશ શૈશ્વાન્ય વરત દેશાવસુત્ર પશ્ચાન સામાર સામાર છે. વિશ્વાસ સે ત્યે તે વ્યામાં સે वया द्य. हे. ने. च्य. हेन. त्य. न हिन. या. ने हिन. या. की माय. या. या. विया हिनाया. शुःनर्गेन्द्रस्यःन्सःन्द्रद्याप्यःसे खेत्रःसरः वर्देन्द्रः संधेत्। न्दः से ख्रूरःतः रदःचित्रः भेदः परः द्याय उर्यः पदे देवः दे देवायः वेयः ग्रीयः भेषः प्राप्तः वा रम्प्रविवर्धेन्यम्प्रयावस्यायदेशम्बर्ने । यम्मेवस्य विकर्णे असी विवाश प्रमायक्ष्म हो। क्रु अळव अळ्ट श प्रिये क्रिम्में विवाश हे में विवाश है में वि *ৡ৲৽৽৽৲য়ৢ৲৸ঽ৽ৠৢৢৢৢয়৸য়৻য়ৣ৽য়ৼ৽৸ঀৢঀ৽ড়ৢ৾৸ৼৼৼয়৽৸ঽয়৽৸ঽ৽ঢ়ৢ৾ঀ৽ড়ৼ৽* भे विवास से सूस दा ने दे भेद हु भे ने वास है। सूर ने वास स सम ग्रीशः इसः सरः न्युनः सः ने गाव्रास्यायश्योगश्यः सः धेरादे विशः श्रूशः सदेः म्रेर्प्तरा अप्रमुप्तरावे ने अप्यायान्त्र म्री ख्राया अप्रम्यापा प्रम्ये त्रासदे भ्रिम्प्रा यावव प्रवास एस वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षे प्रवेष र न्भेग्रास्य के प्राचित्र के प्राचित्र के विष्य षरके पर्देर मदे ही र दें

यानग्रापाराधेदार्दे विशान हिंगादशा हुशादायदा छे थिंद्र। स्टान विदासेदा यः धिरुषः शुः वार्डे दः वः रदः विवः वार्दे वः श्रेः वः वरः क्ष्यः धरः व उदः द्वे शः मश्रार्शिश्वसम् ने भ्राप्त स्टामिन स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स *য়ेॱॿॱॸॸॱॸॸॱॸढ़ॏढ़ॱऄॸॱॸॱऄ॔ॸॺॱॶॱॻऻऄॕॸॱॸॖऻॊ॔ॺॱय़ॱॺख़ॕॖॸॺॱय़ॱ*ऄढ़ॱ र्वे। ।गयः हे : ने : विं त : हे न :यः न हीं न :यः अन्य : धे त :यः ये : ही स्टा स्टा न वितः बेद्रायार्श्विष्याच्याद्याद्याच्याची देवे कुष्याद्या देवे कुष्याद्या ह्यूंबर्भन । वे क्षेरे ने विं व के न त्यान हीं न स्वेर अन्य शुः ह्युन व वी ने व न या धरः ग्रुवः दर्गे अः धरे द्वे रः विश्वः शे त्ये दः दें स्त्रुश्चात्र दें दें दे प्रवासः धरा स्तर है। यन भूर ने विष्ठ हैन यान हिन यदि भूत्र यह से यर्ने न व ने नि अ'यदे'रेग्रअ'र्अ'र्इअ'यर'र्द्युर्'यदे'र्अ'श्रे'श्रेर'यर'दर्रेर'र्व्युअ' व्या अन्यरे व्हेंना व वे नहीं न सम्मान नहीं न सके से नाया सन्दर नहीं न मदेःगिविः न्रामारः न्राक्ष्र के गान् शुन् मदेः श्रेः में व्यः श्रें ग्रायः ग्रामारे स्यापा वर्देर-दर्गेशनशा देवे-भ्रवशासु-ग्रुव-भाषस्य अरुद-देव-द्यापर-ग्रुव-गः यः दर्गे भा वयः नः रं अदे मावदः ग्रे अप्य अस्य स्टरः यय अप्य स्टरः सन्नर्मुमाराधितरम्भा कन्सासेन्गुन्मयानः होन्ने लेखाङ्कानाधनः धेर्क्किंसप्रस्त्रेर्प्यस्थेर्प्यस्य स्र्रिष्यस्प्रद्रिंस्यग्राण्यायित् र्'न्यायाः सर् चुःच प्षेव हैं। । याववः प्यरः ने विं व हिन् प्यन् हेंन् प्यते स्नायशः *शु* प्रभायोव से प्राप्त श्रुप्त प्राप्त से वार्षे प्राप्त से से स्थाय से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से स वन्नद्रासायाधीवाते। दे।वित्वकेदायाद्येद्रासवेःभ्रम्यस्वे देवाद्याद्ये अद्रा

नश्चन्त्र्त्र्त्त्र्व्यात्र्यः विद्यायः नतिः श्वितः विद्यायः विद्

ख्यायायार्थ्यायार्थायाः नदीः यत्यायाः स्त्रीत्राप्यायेत्रः बेर-र्रे-वेश-श्च-वर्त-वर्त-वर्त-वर्त-देन्याया-वर्षन्याया-वर्षेन्य-वर्त-र्देशः अञ्चेदः प्रथा रदः प्रविदः प्रयोगः प्रदेः देग्रयः प्रस्ययः ग्रीयः यदः यः नगमानामा दुरायानर्ज्ञिमामवे के रूरामी सुम्रायायर है सुनामित सर्दुरशः धरः पहुनाः धरः सर्वेदः स्ट्री स्टः नीः खुन्न शः नवनाः तः र्सेतः स्टेरः धेः सः नेयामयाविरावन्याग्री हेतावनेया मयया उन्निन्य धुनान्दार्धेन सेन वर् वर् स्वर्भेर व धेवर्से । देवे धेर देवे द्वा सामाय सुर पादिवसा विर नेवरहान्नकरायधेवरया देर्यागाययरम्बर्यस्तर्राचनरानेवर्हे। । ५५ः अ'रा'ल'पिश'लेव'र्लेट्'सेट्'न्हेंट्'रमश'वे'न्तु'स'वेश'रा'ग्नट'ट्रह्य'व' न्तुःसःसरःव्हेषाःसःविशःत्रद्वेषःसशा नेतःन्यःसरःह्वःदसःधदःसः ग्रुनःसन्दा वःसून्नुःवस्रारुन्सुःस्तुदेःहेनःद्र्वेषःग्रीःर्नेनहेंग्रारः रायर्देन्द्रमें अर्थअविश्वास्त्रम्य स्वाप्त्रम्य ने प्यत्ते मार्थे अर्थी हैं मा धुँग्रमःर्देवःन्यायरःर्धेन्यान्द्यः श्रुन्तुः येन्यरः वर्देन्यवेः श्रुःनः द्वायः नगाना'न्रश'नवना'न्ने श'मशा ननाना'श्चन'ग्री'ने न हैं नाश'मदे'ळ'न'श'र्षे न मन्द्रा र्मिशह्मार्थायाष्ट्रमान्नव्यास्त्रेव्यस्त्राच्या शुन् दुर:बर्'ग्रर'दिवेत'पर'से'तुर्शपर'दिशुर'हे। क्रु'सळंत'बसर्शरहर वयासद्धद्यासदे भ्रिम्भे । प्रयाये वासे नाममञ्जूषा पाया प्रयाये वासे न मित्रेन् स्वान्या नेत्रे स्वान्या नेत्रे स्वान्य स्वान यान्नरयापदे भ्रेरार्रे वियाग्रह श्रुप्ते त्याहे। दे भ्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त धेतर्ते विराध्यापायदा क्षेत्रा वस्त्र क्षेत्र हे । विराध्य प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्राने हेन्यने व क्षेत्राधेव स्वये न स्वर्धित स्वर्या स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्या स्वर्य स ववायानानभूतानराभी त्यापवे भ्रीरान्ता वह्वापायया वायाने नन्ता विषय प्रस्था विषय । विषय स्मार्थ विषय । भ्रे त्यूम् । विभाग्वस्थास्य स्प्रास्य स्प्राम्य विष्या व निभाग्वस्य स्प्रास्य स्प्राम्य स्प्राम्य स्प्राम्य स् नर्हेन्-न्-सेन्-मदे-नन्ना-ह्रस-पेन्-निस-सुन्स-स-स-स-प्र-। ह्रस-पेन्-पेन वःस्टर्भेर्न्द्रमाठेमात्रन्न्यारःस्टर्न्<u>ञ्</u>यनम्बर्गेष्णःश्चे। देन्नाःहःनर्हेन्न् बेर्पा बेप्य विश्व के अर्थु व प्रमित्र स्था में कि विष्टि क्या मी अपने हिर <u> ५८.वावय.२.वर्ह्</u>ट.२.सूर.यद्ग्यन्याः इत्रः शुः खॅट. हेत्रः श्रूत्रः यः यः दे हिटः <u> ५८:मावर मार ५८:५:माई ५:५:खॅ५:५में ४:खॅ| विश्वासंदे ५५५५:मा ५२:</u> बेर्पिते धेर्रे ते अप्यव्यव्यव्यव्यक्ष केवापिते धेर्रे विष्या विष्य धॅर्डेशः श्रुप्तः स्ट्रिं र्र्रिं र्र्रिं र्र्रिं र्र्रिं व्यावितः र्रे सेर्प्याव्यावितः र्रे , ज़र्न्स्ट्रिन्, सेन्या से प्यम्य प्रमान्य प्रमाने प्रमाने कि साम्राम्य के विकास स्थान के प्यम पिर्यासी खेत ति पिर्याचेत से दार्चे विर्यासन्दर वि न या ह्या सी सुदान साम् वर्यासक्रुंद्रसार्से । विर्ने यार्वे रासे दारे विराध्यस्य स्वर्ते रासे दारे विरा

ने हित है पा हे अ य प्रमा वि में या प्रभाये व से प्रमेश है अ क्षु अ य व प्रमा येव से न म ने हिन् प्रयायेव के विया हु। न महिया ग्राम सह म से बेर न वे। द्विम्राश्रस्यस्य में नर्श्वान धेवाने। यदे सूर्वि में रुमान्य येव सेदा मनिक्षित्रावर्षात्रेवर्ते विराधी श्रुवि वित्रिक्षेत्र विवाश्वराष्ट्रिया श्रूष्ठा विराधित बेर-र्रे-वेश-वे-नशःश्चान-रेश-नश्चान्यन्तेर-सर-नश्चान-र्गेश-र्श-वेश-क्रॅ्रें इ.स.लु स्रा स्ट.क्ष्मामी नर्ययान क्रें ट्रायर से व्यासी । व्रिट्र ग्रीस लर.यथ्या. थे.सुर.जा अरश.में अ.स.यांवय.मी.खेयांश.शेंवर.सु. १८८ यश. र्केशपदी प्रशासी देवा है। प्रशास है। । प्रशास प्राप्त है वि स्टार स्था ग्राटा है। या र्वे॥

देनिविद्राद्वायम्बद्धाः स्थान्य स्थान

बेर्'रा'ल'के'सर्'रार्'बर्'वार्देर्'रा'यर'पेर्दो । ग्राय'हे'र्र्रास्य बेर्'र'र्र्पावदार्रे'र्बं अर्, विश्वास्यार्थे विश्वायदरार्दे रेवारे सुर्या श्रूयाची विद्रारमानी दें ता श्रूदाना धेतार्ते । वियायहै मा हेता कुटा सदा सया ॻॖॸॱॸऻऄॕॗढ़ॱय़ॸॱऄॱढ़ॖॺॱय़ढ़ॆॱॺॸॕढ़ॱॶॖॺॱय़ॱॸऻऄॗॕढ़ॱढ़ॱढ़ऻ॓ॗॎॿॖॆॸॱॸॸॱॻॊॺॱॻऻॸॱ र्रे अळर-र्रे। । दे ख्रुः धेव व । प्रथा येव : ये दाय श्रें प्रथा ग्रें : कें पा देश या उव : वे : विगानु नर्गे राते। है पर्न विगा ह्यूरा ग्राम् सबर ने पान हें दारार हैं गामरा श्चेॅ्रवर्गयर, सेर संदे श्चेर्स्य विषय है न्नय दशुर पर वाववर रेंडिसर् वर्हेगामी रूटमी खुग्रायाया के वर्हेट हैं विया श्राय है। रूट कुट ग्री खुग्राय নশ্বান্ত্র সার্থার ব্রু সার্ভী বার্ত্তি নের্র বার্ষার বি ক্রি ব্রার্থার বি <u> ५५.सश. व्र. व्रीया शिक्षे स्ट. क्यू ५.स्ट. ख्या श्राया श्री ५.८.स. यविष ५.५. व्राय</u> वशुराधराभे रुपाया वयावशुराग्वित देरारुपायवित रुपाया ग्राम्पर्वे अप्रदेष्ट्रम्परमे अप्राविष्ट्रम्पर्वे म्यादेष्ट्रम्पर्वे स्थाप्ते । याम्परिवा सेससर्स्याप्तवरार्देर्पर्देर्ग्ये। स्टासुग्रस्यासीयर्देर्पराने वे सेसस र्यस्य प्रमान्त्रवा स्वाप्त स्व गान्त्रायायवेन्रयायवे त्रयायक्ष्मा स्टानी खुन्यायाया थे स्टाया गान्त्राही दश्र-देश्यान्तर्भेतात्र्यान्ययात्रयुर्ग्यन्त्रे सुद्वित्रस्त कुत्रप्रदासेतः मश विर्मे उपादी न्तु अभाया अधिव वे विशापा शया नमा नमून माधिव वे । वज्ञराष्ट्रीरावरे प्रवासे राग्यराधे राष्ट्रे ते स्वा विदेवा हेत रें राग्य स्वा

वे क्षुप्रमः होत्। । डे अप्यदे देव प्यमः क्ष्यापाल्या म्रथ्य उत्याल्य देन होतः मदे। तिर्याशुः से रुद्रा है। केंश ह्रम्ययाया स्टानी दें में या नुनाम दे रहा नविवासेनामने स्टानविवाधेनासेनास्यानविवान् निर्मानिकासि निशर्देर पहेंचा मे । वरश्रू र प्रदेश्वेश पर र र र चाय चरे रे र से पहेंचा प्रदे धिराने। देशास्टानविदासेनायात्वानादारीयात्रात्वेशार्नेदासेनान्यानरा वशुरानवे भ्रेरान्ता मल्राहेरायया ग्राम वित्रे लेखा विह्याहेरा रेर चेत्रा वेत्रामश्रुद्रशास्त्रा म्बुम्रशास्त्रम्यशास्त्रम् मा रायहेवा हेत रावे देर यहेवा यर वाशुरशासवे श्वेर रे । ग्वेर हें नावश य.धर्यात्रेयायश्रेरयायात्री श्रेययाद्याययायावयाद्याययाद्यरया राष्ट्रम्सा स्ट्रम्सा वेसा नवे में स्ट्राणे सा स्ट्रम्स स्ट्राणे सा स्ट्रम्स स्ट्रम्स स्ट्रम्स स्ट्रम्स स्ट्रम् शेखेत वेश संभेत है। हे सूर हिंद शेश मावत द्यार देर अपरेंद सूर विरामश्रम्यापि भ्रम्भ मित्राने विरामे के स्वास्थ्य स्थ्रिम स्वास्थ्य स्थ्रिम स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स वन्नद्राच्यारीयायाययायाव्याद्रवर्ष्यायात्वेद्रास्टरमी रीयायाया स्ययः ॻॖऀॺॱॸॺॱॻॖॸॱॿॖॆॸॱॻॖऀॱग़ॖढ़ॱॾॕ॒ॸॱॺ॓ख़ॱख़ॕॱढ़॓ॺॱॸॹॸॗॱॸढ़ॱख़ढ़ॱख़ढ़ॱख़ढ़ ग्वित प्रवर रेग्र अध्य प्रमुत् वर्षेत्र ग्री प्रदेश से स्वित वर्षेत्र प्रमुस गुवः हेन या इस्राने भूर देन से प्येन प्रमान स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्व व्याधिः सद्धर्यार्थे वियासदे देवाधिवासदे ध्रीमार्से । विह्या हेवा ध्री देना नुरानेरामाने प्रमासारीयारा होता प्रमास मानित हैं। या सूर यदेन्ने अप्यापार्वे दासे दास्य अप्यासे दाराधि वाते है। गुरार्हे वायदे देवा स्याप

युः स्ट्रिं स्थान्य स्था स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान्य स्

सूसाता ने यान्यान उत्पन्त सुँग्या सेना सम्मन्त्र मन् । स्वा निया इरश्रासंक्ष्र्राया प्रश्ना विश्वात्वर्मान्वीश्रासंयार्त्, साविवाः गशुरुअः षेत्रः प्रशः दे । उत्राः विवा । इरुषा द्वराः श्रेष्ट्रा वार्षः । विवा । वार्षः । त्या दिन्गार सर निवेद से द सिवेद साम कर पर्णे द सर कुर से से प्रकृत से से र्रे विरुप्यये रें गुरुप्य भ्रे प्राचित्र कुर्य के माने विरुद्ध विरुद् हु:झ:नवे:नगव:वावर्थ:शु:श्रूट:नवे:श्रुट:नेवे:प्रेट:व्यव:वे:नट:खुवार्थ:वर्हेवा: यदे भ्रम्मन्य सु प्रकर् प्रमायगुर में । ने प्य हिं में मा प्रया प्रयान हर से र धराम्बुर्यासंत्री द्रियासी स्टानिव सेटार्ने वियान्तु सामया ह्यूया माया न्रेस्याङ्कान्यमाने स्वराद्यावळवानवे क्षेत्राने त्यार्या निवार्षेत्र व न्रें अभे वस्य अप्तर्थ स्टान विवासे नाम के प्रमान स्टान विवासे नाम र्दानिव र्षेत्र यावर्षे वा से व्या से वियान इत्या यसावर्षे साया धेवाया र्रायित्रसेर्पायापर्प्याम्ब्रियासी स्वर्धित्रस्य स्वर्धित इत्रमेयान्यस्यान्ध्रम्भेवार्ते। । नैयान्यम्यस्य विद्यान्यम्भे बेर् हेर्पायाधेवर्षी। दर्भारी वस्राया वर्षाय स्टाय विवासेर् हेर् न्यानरुयान्ये केंगाया स्टानिव पेर्नि सेन् केंन् पेर्नि संयो ने प्रतानि वस्रकार्यन्य स्टान्य विवासे नाम स्टान्य प्रकार्य स्टान्य विवासी स्टान्य स्टान् र्थेन्द्रवर्ग नेन्द्रे सुरक्षे पर्देन्य राष्ट्रें वर्षे ने प्राया केन् के रापि देव प्रीव ममा न्यानरदासेन्यदेश्वनार्रेन्न्से इतास्त्रे इतास्त्रे इतास्त्रे इतास्त्रे

बेर्'यावेश्वाहर्'यरःवेद'तुःके'यदे'हेर्'र्रा

नाय हे अर्दे द सुस य से नास मिल्री । विस से नास ग्रीस सर्दे द सुस य য়য়য়য়ৣ৽য়ৢৼ৽য়ৼয়৽য়৽য়ৼড়ৼ৽ড়ৼ৽য়৽ৼৼ৽য়৻ঀয়৽য়ৢ৽য়৽ৼৼ৽য়৾৽ৼ৾৽য়৾য়৽য়ৢয়৽ यदे न्रेम्याया मुन्दर न्रेम्याया मुन्येन स्रेन्य स्रेन्य स्रोम्या स्रेन्य स्रोम्य स्रोम स्रोम्य स्रोम्य स्रोम स्रो गी र्ट्यन साम्यान्य मुस्ति सम्बद्धित स्थान मिर्ग्यम मिर्ग्यम मिर्ग्यम स्थान वा न्रेशसेंदिः स्टामी सळव हे दासेंदा सुसामी साम्यान वर्षा पर्मे पान वन्नद्यत्य द्वास्यस्य द्वास्य द्वास्य विष्य स्वास्य विष्य स्वास्य विषय स्वास्य स्वास् वेशः भ्रुप्तावा सर्देवः शुस्राप्तराने शासुत्यायहत्यायास्यरा प्रदेशः सेविष्टर प् शेष्वीं पार्ची सूर्य र्वायस्य स्थान हो। प्रवृत्ते ही। हें न हिंगायस। रे विगान्द्रसार्रे सद्दर्शसामुना । नुस्रेग्सन्स् र्ज्ञूगास्य होनाधे स्वा |ग्राटाची अप्ट्रिंश इस्र अप्ट्रिंग अप्ट्रांट्र प्राची | स्ट्रिंग शुस्र दे हे से दाराधी वा विरामनिवेष्यमधीम्या नेवेष्यमेयाममध्यम् ग्रायने।मिन्गीरान्सेरा ই·ঘয়য়৽ঽৢৢৢৢ৽য়৾ৼ৾৾য়ৢয়য়ৢয়৽ৢঢ়য়য়য়৽ঽয়ৢঢ়৽ मर्दे। विश्वार्ह्मेषायमः हो नाव दे स्परायम् माया के दे ध्रेरावेखा नर्स्यार्भा वस्या उर्ग्यी वरात् वे यर्देव शुया श्री कर्मा यदरा वर्षासंदे भ्रेर क्रेंट संधिव वाः दिसारी वार्य देशे वार्य स्ट्रीट संवादः धेवन्यने प्यतः क्रेंद्रम्य धेवन्ते। दिवे द्वेत्रः स्वतः स्वयः द्वेष्ययः यः सेदःहैं। सि स्वायास्त्रीत्वास्त्राच्यात्वास्त्राच्यात्वास्त्राच्याः स्वयास्त्राच्याः स्वयः स्व

ने स्वर स्ट की हैं के श्राचन पर है स्था खें दाने ना साम है ना साम है ना स्था का स्था के स्था

यशन्त्रस्थानं ते खुरादेवे व्यवेषायम् नारानी के दे खूरादेर अर्धे से र मश्यानियान्त्राचित्रक्षेत्रियात्रास्त्रीत्रान्त्रेत्रक्षे देत्स्रम्स्स्रीत्राम्स्रम् ग्री क्रिंब स्थान इसका देश प्रमान प्रमान प्रमान स्थान मदे कु अळव रू र्देश में से र मा सुरस या रे प्यर र मी सळव हे र न्यःस्टानविवःयःन्देशःस्यः नवनाःयःधेवःहे। देवः होनःयःयः ह्यः वःनेः बेद्रायम् अर्वेद्रायमा क्रिंत् क्षेद्रमा त्याया यम् याशुद्रमाया प्रायाया यमा श्री |देशदःस्टःवविदःग्रीशःदर्देशःसँ विश्वःयेदःसदेःश्वेषाशःसेदःसःयःश्वेषाशः बेर्यस्याशुरुष्यः यथिवाते। खरारेदे वेदि त्रिम्यस्य प्राप्ता द्वाप्यः रायम्। वारान्वाहेवाडेरावज्ञेयासरावज्ञुराववे केंग्राहेनावने वाहेराम होत्रमने न्यात्यन्देश सें राष्ट्रभाये वर्षे न्या देश देश सार्वे वर्षे न क्यायाने स्टायग्रहायां । सिया सामान साम निर्देश्चित्रम् । विराद्देशः में वार्यः स्टानी सक्ति हेट ह्रीं वर्देग्रायः स यन्द्रभःस्र्रावराखेवन्त्रावासुद्रभःसदेःस्र्री दिस्रवःस्ट्रन्त्रावीर् न्तुःस्रायास्यास्यास्यास्यो स्मार्थेन्यस्य द्वितास्य द्वितास्य द्वितास्य स्मार्थेन्यस्य द्वितास्य स्मार्थेन्यस्य नकुःमःइन्याद्यास्यावव्यावयः।वयः।व्याद्यासःसेन्ःमदेःध्रिनःर्नः ।वियः क्षेत्रान्त्रयाययात्रयम्बर्धरयायदेन्द्रवातेन्त्रम्भ्रात्न्त्रे

मदिः ध्रायाः श्रीः न्यायाः श्रायाः श्रीः स्थितः स्याः स्थितः स्याः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थित वर्वीवा प्रमःवाश्रुम्य प्राची सेवाय प्रया स्वयः उत्तर्वी म्वावा शुक्षे वर्देवायः या होते। । नेते वहीया यस वर्षीया हो न ग्यान थे न प्यान थे न यस या शुरुषा धर्यादे पार्वे राखेदायादे स्टावी अळ्ठा हेटा ग्रीका ग्रुवायदे द्वावा ग्रुट्टा वर्वेषि। ब्रेन् सेन् संप्राने स्ट्रिन वित्र सम्बन्ध वर्षेष वर्षेष वर्षेष वर्षेष वर्षेष वर्षेष वर्षेष वर्षेष वर्षेष विशाहिंद्राग्रेशः भूराया प्रतानिशानिश्वास्याया धिवाग्री देः पादिशः श्रुः स क्षुन्तुःसे निवेद्रायायाधेवाते। हेर्ने ह्रिनायमा ह्यूयायाधेमावे ह्यूयायाद्रा श्चुःसप्धेन्ते स्रोत्रान्ते वा श्रुःसराञ्चा स्राप्ते वा स्रोत्ता स्वरी वा स धराने प्रविदायगुरा विशानमा गया हे प्रहें दाने रमा प्रविदार्थेन। प्रहेदा वशायग्रुटानराभी प्रशुरार्से । प्रहें वारामारा विमानहेव वशायग्रुटा । दे हिन्द्विन्हिन्साधिवन्वमा । यायाने यहिवासा समामविवाधिन। । यहिवासा ने त्यः शुः धेशः नर्ज्जेन । भूना सम्माया सम्माया सम्माया । ने सी माने ने सेन ने । विश्व भ्रेग कु त्य कुर वहें व साय रहा नविव र्थेन व रहा मी कु मेवायानहेवावयावतुरावाक्षानुरावाक्षान्या विदेवायाने सुर्याण्याता हीया हु भे रुट नर गुरुट्य पदे भ्रेर रें । किंग गुरुष प्या रट पर साम हर नः सेन् मिन्स्रे । विशामसुरस्य मदरस्य म्यासेन् मिन्स्य स धेव है। ने वे रूट कुट की प्रायय विषय के दार के दिया के विषय कि की रामित के विषय के विष

यह्मायायम् स्विम्रास्य स्विम्रास्य म्यास्य स्विम्रास्य स्विम्य स्विम्रास्य स्विम्रास्य स्विम्रास्य स्विम्रास्य स्विम्रास्य स्

हिन् कु त्वर्रास्ट नविव क्री राज्य प्रस्ति । प्राया खन्य राज्य । या खन् धरःक्रुशःवज्ञशःतुःवक्क्षेट्राडेशःरेषाश्रःधदेःवह्षषाःधः ग्रुशःदशः वगाषाःधदेः श्वायन्त्रीत्राविष्ठमात्याभीत्रह्मान्धे। देमाश्यास्यामह्मानर्वेत्र्रात्रेत्र शे'न्वें रापदे'हीर-रें'वेरापदे'नेंद'णेद'ग्री रन्तुगरायेर्येन्पदे'गान्द अधीव है। सुर देवे वर्षेयायायया विक्रिं उपापी सुँग्रायायसुर्यायर वयः वरः भे व्यूरः है। वारः वी श्वेरः वि वि रंग वी श्वेषा थः य वि श्व व्यविवः নমাস্ত্ররার ব্রুলানমান্ত্রানাপ্রদার্থর স্থান্তর্ভার নমামী ত্রীরানা দিব बेन्ने। सुनन्तुरानन्त्रसुनावितामानिसामान्यान्यस्यवितास्या यदे भ्री मेदे भ्री मार्च <u> न्र्रेशः क्षुः नशः नर्गेन् रायदे ने नश्या यादे न न्या यादे विष्य स्वर्ति स्व</u> रदःचित्रचीरास्याच्यानायान्योद्यी विराधेत्रसेदास्यानमेद्रासदेःद्वीरः वर्चेर्या भ्रेशाचार्या अर्थेशाच्या के श्री शाचार की शास भी शामित के शासित है नामा वर्षेत्र हे अन्त्रधुन् द्वराद्वे अन्याद्वा ने वाहे अना अवर्षेत्र या वाचा प्राप्त वी रेदे:तुर्भा दें तर्षे न पर्दरहें गुरु पर से द द स ले स हे स पर ता सूर द र स राष्ट्रराने गहिराधें दार्शे दारी गहिरा शिख्य शिरा है से दारी । दे प्यरान য়ৢ८-५-धोव-छो-देव-८म-सम्प्रेट-दे-विमाम्बर्ध-सम्प्रेट-सम्प्रह्ट-विमाम्बर्ध-सम्प्रह्ट-विमाम्बर्ध-सम्प्रह्ट-सम्प्रह क्षरावराञ्चरावरावश्रद्याने। वह्यावर्षेयावया वर्षेयाहे स्रामानेया

विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास

देराया बद्दा त्याहर क्षेत्र क

हे अदे न् ग्रेया वर्षि र न् र श्रु प्रवस्था स्था श्रु पर हो ले र ग्रु न दे हिंगा प क्यायात्रयया उत्तु से श्रीत् से त् से त् स्वाया से त्या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाय ग्राञ्चन्यायः प्रकृतः ५, ५ स्रोग्यायः य उत्ते । स्वायः प्रकृतः । स्वायः स्वायः । स्वायः स्वायः । स्वायः स्वायः यन्तिविद्या स्टानिव्यक्ति अस्टिन्यदेश्य स्टिव्यक्ति स् शुन्दिन्तेन स्टानिन स्टानिन स्टानिन स्ट्रीय स्ट्रिट विटायम् स्टान्य स्ट्रिय प्राप्ति स्ट्रिय स क्रियाया ग्रीयायञ्चाताय स्थापाय व्याप्तिया व्याप्तिया व्याप्तिया स्थापाय स्थापाय स्थापाय स्थापाय स्थापाय स्थाप नियायम् हरि वियाममायायायि मेवायायि स्वीत्राचि स्वीति हरिया वह्रमारावे व्यव ने व्हरमा शुरुषा श्री स्टा खुमा श्री न में विश्वासा मा शुरुषा श्री विवयत्तर के त्यंश्रास्टायं वेष की श्राचीय त्रस्त्रेर ताता के श्राचिर वयायय। याद्यन्यम् त्वयातु निर्देष्ट्रम् निर्माया व्यापाया प्रदेश क्केंत्रास्टायाक्षे प्रह्मायाप्यदास्टानवित्राक्षेत्रास्य प्रदेत्रायाकु सक्त्रात्र वह्रमायमेयायया हिंदाग्रीयाहे स्ट्रम् लेखा मराधेरावरे प्रमामहेया उर षर्विःश्चुःसन्दर्दे । विद्याः । धेन्द्रस्यं इसस्य ग्राट पेन्। निट में स्ट्रम् इट में सक्द हेन्न होन यर: ठु: न: क्रेन: नृत: क्रेन: यर: ठ्रेन: येत: य: ने: य: क्रय: यर: नृ वशुराशी गरामी क्षरामा नर्देश में इससार्यमा परागुन नहमारा परा नश्चेत्राम्भेत्राभ्याञ्च स्वास्त्रम् साञ्चेत्राम्भेत्रम्भेत्राम्भेत्राम्भेत्रम् अन्। स्वादेवाक्ष्यां क्षेत्रः विश्वाद्यां विश्वाद्याद

ग्रम् पर्देशसे वुम्य विवासय। हि सूर वर्गेवायर यहवाशय सुरा हि नविव न्याम इस्र राष्ट्रीय गुरु । श्रु सा हुर प्रतिवा मा नविन । हिस न्ना जन्नियानहेवावयान्द्रियारीं ह्रस्या । कुःधे ह्वानाः सुः तुर्दाते । ेष्पना न्वासाधेवार्येवासेवासम् । वर्नेन्याने न्वाकृषासे वर्सेवा । हेशान्या वहेवा हेत तथा वर्षा सम् वर्षेत् साथा स्था स्था वारा न्या कु तथा सुरावा क्रमा । दे से द स्पर्ते : व्येद : से द समा । या त्र या मा त्र व हे द : द द स स्वर स येद्रम्या विस्तानित्रेद्राचे निर्मायेद्रम्य विस्ताने प्यान्तर्मा विस्तानित्रम् यमा विश्वरात्ते वित्योगानम् वा वित्र द्वर देवा वित्र व सर्में हिंद्र ग्रेश प्रवेद प्रायम् । विश्व द्रा दे विमा विमा प्रदे हु । यश ग्रम्। वित्रुषातुः वितुम् वर्षः निष्युषाया। व्याविषाः वर्षाः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः व वर् निर्मे निर्मे निर्मे विद्या विद्या विद्यान्त्र हिन्दि के त्रिक्ष के निर्मे विद्यान न। निःहेन्। हिन्दे द्वेन्यनः नवेन। हिर्याम्यन्यः व्याप्तिनः वर्षे ग्रम्। अविश्वास्त्रामीशः स्वीवाशायने ते क्क्रीतः सेन सेन स्वार्धेव न्या वर्षा नर्देश्रुअ:र्'नश्रुश्राने मार्टेव श्रे वान्य निर्मात्र स्ट्रिं । विर्माद्रा नेवि:ध्रेम:हेव:हेट:वर्जेव:धम्:वर्जूट:वर्जेव:हेट:वर्दे:धर्डं अ:वर्ष:ब्रूट्य:धः क्षरामहेरात्रशाम्यायात्रशाम्या स्वर्यायते स्वर्मा वित्रे उपामी स्वित्राया वःश्रून् वस्रारुन् कन् सम्वयः वम् से विश्वम् यः में यः में यः ग्राम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् व विश्वास्य स्थान्य स्था

खुन्यायानि स्त्री प्रियानि स्त्री स्

गहेशःसःस्टानीःसुनाशःनवनाःसःह। वयःदर्

ষক্ষরেক্ত্রীম্বর্সাম্ম্রের্ট্র

यदे खुन्य अञ्जू सुर क्र अर्ट मी खुन्य अपन्वना य हेट न हेट के नहिसाना । हैंग्रायरप्रस्त्यूर्यर्यात्रे नहेंद्रायर हुदी । वदी वा क्षेत्रा नायवाययाय नु'माशुरश'ग्रद्रकेमा'सरश'सश'यहेमाश'त्रश'यदेर'ते'म्रें में 'क्सश क्रेंब्रस्थिवरम्या नेर्यमिष्ठेया स्ट क्रुन्सुवरन्तुन्यन्दियर्ना नेरस् यासी सर्दुरसामित सुवार्ये। । ५८ में या पादि से सामित स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स र्धेग्रथःग्रेःश्रुवःनश्रवःयः १८१ श्रुवःनेशःग्रवःकेग्रथःग्रदःसःग्रवःयरः नश्रुव पर्दे । ५८ में त्या पार्वेश वर्दे ५ त्या ने इंद्या ने द्या पार्वेश । ८८.सू.यु। स्रेयकारदे.क्षका.क्ष्या.याकातात्वका.याकीटका.स.क्षका.ग्री.यटा त्रशः ग्रामः भेतः हुः हैं ग्रायः न्यायः न्यमः श्रूमः न्यायः के ग्रायायायः ग्रीः के ग्रायम्यः है । नन्त्रा है अन्त्र वे के है है क्षर क्षु के ह्ना वे या ग्राम के या न्या के या उदामिक्रार्श्वे किन्न बुन्न न भी क्षेत्र मिन्न मन्त्रे सामिक्र मिन्न मन्त्र स्थित त[.]ते हे अ.शु.८मग्।म.८८ हे अ.शु.८मग्।मर.ग्रु.नवे न्नःश्रु८ से८ परः वर्गुर-र्रे विदेश्वरामयाने वर्गुरान केत्रिंग्न विश्वरागुरामये श्वादितः वन्ते ने सर्रेय में या अयुन में। विवन्ते वया अविवे पेविन त्र पर्देव व वे ने र्रेन्स्रिन्स्र साम्यास्य सामुनायाधीत्र हैं। । ने निवेत्न नु हो ज्ञाना सु से । ह्यायर द्यायळवाचा द्या शुर्या स्थाय द्या स्थाय १ने निवेद नु के मेग्रास्य प्रदेश मन्द्र गाय है कु न्दर निवस मध्येद द वे ने अरम मुम्यामरायायायायायायायायाया देव ने मुम्मेरायायीव वि ने सर्स्यासँ या सामुना साधित हैं। हि ते श्वित्त हैं। हि ते श्वित्त हैं। हि ते श्वित्त हैं। हि ते से स्वति स

वर्देदेर्देवर्दे। अरम्भक्तम्भार्यः विद्याप्यः स्वार्धेश्वर्याः वळवन्त्रात्रा वर्त्युरार्युराग्चीः श्वालेशाळे शाउत्रात्त्रात्रा हो। ह्या प्रायाः शा वर्यायाया वयायापरे प्रवाहित मुन्ने मुन्ने या के या उत्तर् मुन्न या से व वर्युन नि । ने नि वितर् हो ज्ञा मश्रा ग्रम् ना श्रा हो न स्या श्रा के हिना सर <u> न्यापळवाना व्यापवेश्चावेयाळेयाउदान्यव्याययावेनायया</u> श्चीयाया श्रूमार्यम् मेत्राचीयायाययायमः चेत्राये भ्वावेयार्क्याउतः त्नबुर्द्रस्यक्षेत्रवानर्भे ।देशक्रिकेष्ट्रिक्रम् बुद्रस्य सेद मर्केशरुवर्त्त्व त्र्राच्या स्ट्रा केश्वर केश्वर केश्वर विश्वर विश्वर विश्वर विश्वर विश्वर विश्वर विश्वर विश्वर धर ग्री के अर्देश राष्ट्रिया विष्येव स्था विष्य ग्री सम्बन्ध र र ग्री राष्ट्र सम्बन्ध र र ग्री राष्ट्र सम्बन्ध विगान्नी अपने भ्री में भ्रम् के अपने अपने स्थान में अपने स्थान में अपने स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स गहेरागराज्ञ न्त्रीयाहे। देः धराद्ये रागरान्त्रीदायाया स्त्रु सुराद्यः गुनःमःविगानञ्चनःगुनःमदेःश्वारुःद्वार्तां श्वार्यः भेवार्ते। भूनमेःने नविवःरुः <u> ५२, अ.सश्चात्रात्यःश्चित्रायः स्वरःमीःश्चे अक्षेत्रः न्यःमाञ्चनायः व्यायाः श्चित्रः </u> या द्विति क्षे अके दाक्ष्रभाग्य वा त्या भी ना से दाय प्राप्त विवासे व्याप्त क्ष्री वा विवासे वा विवास ८८। वावव प्रश्ने न से प्रमास्तर है पर्देश में स्झुन प्रान्सुन पान

महिश्रासने न्वावास्य पाहिश्व देंद्र से त्वन्त न्ति निये निर्मा निर्मा के वित्त क

नः र्येन् स्वास्त्र स्वास

दिन्ते म्यान्ता म्यान्ते स्थान्त्र स्थान्त स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्

कुर्पायवरार्टिकेषिर्धेर्पायरञ्चातालेशाचेरार्धेर्णाए। वर्दरादेकिषा न'य'र्गे'नर'तु'य। रद'नविद'र्धेद'यर'श्चु'न'वेश'यंदे'द्रेश'र्येर'श्चु'न' <u> २८:२८:कु२:याक्रेशःगाःयार्गे वरः हुर्दे। । वा ब्रुवाशः ग्रेःश्लेः यळे २:ळॅशः</u> ठव-र्-नवग्नानि त्युन स्यामानि देने प्रदेन प्रदेशीया वी ने मानि स्रिन शुंशळॅंद्र'स्रस'द्युव'द्वेंस'य। दे'प्पट'स'द्विय'वर'दे'द्वा'वीस'स'युव' वर्नेवरम्ब्रम्यर्थः अर्देवरश्यान् स्थेर् सुरान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य बेर्'स'दिवय'नर'दशुन'स'दे'रे'र्ग'गै'ख़ग्राय'य'ग्राराय'सहिय'नर' र्शेटरशादेवेर्यटाची अळव हेट्र ग्रेश ग्रुवाय मे देश्वट विट खूट वा सूर पेंट्र यायादेशायमार्देशाश्री । देग्ध्रमाताष्ठी केलायाळ दायादेगायीशा क्रॅंश उत्र गुन मदे क्रन सने दे सूर्ते वाया से मुन स्रे। क्रेंश ग्राम प्रदास मी'सळंद'हेट्'ग्रेस'ग्रुच'मदे'र्से'म्'सूट्'त्द्रसेट्'मस् दे'सूच'ग्रेट्'ग्रे' ळ५'स'से८'सदे'सेर-२ॅरस्रुस'५'से्र्रिन'५२ॅर्निस'दिस'दिस'दस् वर्गेनामधीतर्भे । नेष्परमर्भेयर्भेष्यम्भार्भेत्रस्थर्भरम्मवित्रसेन धरःहिवाश्रासदेःक्षानावाश्ररःतुःचक्क्षेत्रःधदेःधवःखवाःतुःसदःकुतःदवीश्रासः वर्गेना'रादे'र्ख्य'वळन्'रा'धेर'ग्री नृतु'य'त्रय'वर्गुर'न'त्रन्यर र्ख्रुर'र्न्'हे ब्रेन्-पर्वेन्न्न-प्रमायः विवार्ह्मम् अप्यवेरह्या अपन्यमा क्रोन्-पर्वे प्यवायमा पुरस्य कुर्र्र्विशक्षेर्वेश्चेर्युर्यं केरे वेग्वविग्वे

ने मिल्र मिल

রুদ্ধান্দন্তিদ্রান্তি

वेश्वर्यदेन्द्रित्ते। नश्चुनः च्रित्रेक्ष्यः च्रित्रं क्ष्यः च्रित्रं क्षयः च्रित्रं क्ष्यः च्रित्रं क्षयः च्रित्रं क्ष्यः च्रित्रं क्षयः च्रित्यः च्रित्रं क्षयः च्रित्रं क्षयः च्रि

पिश्राञ्चरश्राश्याश्यते। देवाद्यायमः श्लेष्ट्राच्यायायायाचे केशाउवादे न्यायानश्चन ग्रिते के शाशानहेदायाने देश के है। नेदे श्वेरा हे में पि दर ग्रुवा वनि नहेव भाष्यायानवे श्वेमर्से वित्तने सूमावका येव सेंदाने का हैम वशुरःश्रुअव। दे विंत्ररः अशुन केरादे विंत्र केराशे देवा परा अधित परे *ॻऻॿॖॻऻॺॱॺॱॺॕॻऻॺॱॸॱॸ॓ॱॸ॒ॻॱ*क़॓ॱॺॱढ़ॿॖॎॺॱॸढ़ॱॸ॓ॺॱय़ॺॱॾॖ॓ॸॱॸढ़ॱॸॕक़ॱॸॖॱ भे रुटानमा ध्रयाउदानह्दारायहेदारादे वासूरारादे के यायया हेटारा धेव नश्याने निवा ग्राम्य स्वा नश्यान स्वतः प्रश्चित्य साधेव स्वा । निवा व सायवियायशाहेरायदार्त्र्यायवियानेशायाश्चास्त्रा यवियानेशायासूरा नदेर्न्त्याद्वियानदेर्वेयान्यः हेन्यायाधितः है। ध्रेत्रं वेयाद्विया नेशन्त्र द्वित है सार्वे वा मासायह्वया नदे ने सामाविसा महामहानी धुवा यत्रः द्वं तः श्रू न रायते : श्रू न रायायायाय त्रू वा यदे । श्रू न रायाये । श्री रा र्रे । विश्वासन्ति। द्वीत्राचे व्यापान्याने व्याप्तान्याने व्याप्ताने व्याप्ताने व्याप्ताने व्याप्ताने व्याप्त

वियाम्बर्म्यास्त्रे में वियान क्रिन्य न्रीम्रायायायार्थित्। हेरायदेः नर्से । ने या द्वेत हे वें मा हेराय है भेगायार्शेग्रायारिक्षेयायात्रासूर्यायारीयाययातसूर्यायस्थारी ।रे न्यायी अप्पेन्य अप्पेन्य पेन्य पेन्य केन्य प्रसेन्य प्रसेन्य प्रसेन्य प्रसेन्य प्रसेन्य प्रसेन्य प्रसेन्य प्रस र्रिवेश्वेर्यायरार्धेर्यस्य बुर्यायश्चे हिंगा सेर्येष्ट्रा स्वेर्यायरा बुर्यायरी <u> बूट न उसाय मुन्तों या प्रयास्ट मी अर्द्ध के द द्वा मुन्य ये प्रयास बूट </u> नर्दे । नेते के ते पें न पर शुर्म पते में त कर अप पप पर न से मारा पाया वशुमा वेशमाने में भूमम्माया अळन से मानविन मुं सूरा निर्धा नेश राने न्या मी शर्मर मी अळव हे न ग्री शर्धिन प्रिये में व खार्से प्यम प्रमुव प्रमः गायावशुरावेशासदेर्देवर्ते। । स्टामी सळवरहेट्री श्रास्त्राचासदेर्देवरसेट्र नवित्रः नुः श्वरः नवे दि। श्वर्भान्यः श्वरः संभ्यः विश्वराये । निः नवाः गैर्भान्ने गात्रुगर्भाञ्चार्भार्भेग्रार्भ्यस्यत्रे प्रमान्त्रे स्वर्धात्र विष्यामाधितः प्रसा र्देवःस्टामीः अळवः केट्राञ्चयः होट्राट्राञ्चे स्ट्राट्यस्य मुद्धस्यः श्री । अयम्ब्रयः नदेःवेशनश्रादेगा बुग्राश्चार्यम्यादापराधराधी वहें दार्हे वेश सूर्वारा वै। ग्रामी के र्या रेया उदाया धेदायया वेया सँग्रासी । दे त्या धेदारी अ'र्येन्।'रा'ते'अ'त्वियानदेःनेश्वान्ति। ।ने'ते'ने'मिं'त'हेन'अर्नेत्र्युयान् सहर्मायाधेर्गीयावम्यासेरार्मे॥

र्'शु:रेर्यु:या वियाश श्रु:श्रीयाश श्रुं:शु:यर्त्याश सें:लूर्र्यं रायर श्री:यह्रियः मर्दे । निरोक्तरमार्देन निराम्य निरोधियाः भेषाः भेषाः भूषिन वहं वा मदेः बूट न अ द क्षेत्र अ प्राप्त होत्र हो । गुव हें न ह त हु द हु र न हो न ह न स्था अ नह्न निर्देश्वित्रे । पिर्ना संस्थित निर्देश स्टामी सर्व के निर्मेश संस्थान मर्दे। । ने वर् नाने सावहिकायह के साम ने विष् में हैन ही खेता हम ने साक उयापर से विद्युन से । दे द्या दे या या विषय या विद्युन से वियाय दे दे द र्वे। र्निननेन्नात्यः अर्वे वर्षे सुः श्रुनः श्रीः मालुनः मी श्री श श्रीनः नर्वे । गयः हे विश्वः श्रें ग्राशःहे। यदेशः अर्दे तः शुर्यायः श्रें ग्रशः प्रदे स्वदः सः प्रविशः रदानी'अळद्राक्षेद्राग्रीशागुनापदे देवादाणदायायायायायायायायाया वर्तराह्यरमासुःसहर्पाधिनार्ते। । वारावीः ध्रीरारे व्हरावेशः स्वामानी ब्र-निन्निन्दिन्द्रिन्द्रन्ति। या यादावियाः क्रिं राउत्हिन्द्रात्र्युन्दिर भेगाःग्वाङ्ग्यायायाधेन्छेश्याये । गुवाङ्ग्यायदे भेगायासँग्रायदे क्रॅंश उत्र से द स्मृत या से त्री स्र राजनित साम्य स्र राजनित साम्य स्र राजनित स्र स्र राजनित स्र स्र राजनित स <u> न्: इ: क्षून: न्दर: अ: मुनः हे अ: सदे: न्देन: हे ने अ: स्वीय: मैं ने स</u> वै। रम्पी में वें राज्य प्रति रम्प विवासी मार्थ प्रमासी विवासी स्थाप गिरुश्याया त्रुग्या शुःश्चे अकेट केंश उत्र त्रुप्य विषा प्रदे कें अप्रह्मिया प्रदे सर्दि-श्रुस्रास्त्र सुद्द-रूपः याद्वानायम् पिर्वेरागादेः ख्राम्यायास सुद्दः सूदः रू गुनःमदेः क्रॅंशः उत्रुचा ग्रेन् ग्रेः क्र्नां स्टा ग्रुन् म्वाश्राक्षेत्रः भ्रेन् ।

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

क्रियायानश्चुनायम् न्नानिः श्चिम् शङ्कीत् स्त्रेन् न्याना त्रिसे स्वानि स्त्रेन् स्त्रेन्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन्द्रेन्त्येन् स्त्रेन्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रेन्त्त्रेन् स्त्रे

मिंहेर्रायान्ये मिंग्रियान्य हो । के मान्यायया निया यदात्र नर्येदायायी | दिस्ते श्रुवे श्रुवे स्वाप्त हेदा श्री श्री । <u> इन्यर्य हेन्यर भेष्ट्रियय क्रिया मुख्य पर पेन्य</u> नेय विवर्त से मा वी श्वे के श्वेंट पा हेट पट श्वेंट पा हेट आधीत पट श्वापा वी या गुंद हैं व हुःष्परःविश्वासः सुरशाया देवःद्यायरःष्यरःसाधेवःयश्वाद्येःयःवर्दाः ल्रिन्सः अप्पेत्रः हैं। विश्वासर्वे। वर्षेत्रः देव वर्षेत्रः श्रूनः निश्वास्त्रः ঐর'দর'গৃষ্ঠয়'দ্র'য়ৢয়'য়'দ্র'য়ৄয়'ঐদ্'য়ৢয়'য়ৢয়'য়য়য়'য়য়য়য় भे ह्या स श्रे उस स विया भें दाया निव ह्व या दाया से दाये भे या या र्शेम्बर्यास्थान् सेन् से स्ट्रिन्य संस्थान हो। ने से से स्थान ने प्राप्ती स्थान से प्रमेन स्थि धिरन्ता ने स्वाननिर्मे ने निर्मान ने मिन्न ने मिन्न के अधि अद्धान सम्बान सम्बान सम्बान सम्बान सम्बान सम्बान सम श्चेत्रासदेः ध्चेत्रः स्वाद्याद्याद्यात्रः भ्रम्भात्वा वर्ष्युत्तः श्चेत्रः भ्रम्भावेत्रः सवसः त्रयः यापिते : प्रेंत्र : प्रेन्तु : श्चा : त्रे स्वित् : या स्वितः या स्वितः या स्वितः या स्वितः या स्वितः य

या न्या या प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्

यायविषायात्री क्रीम्त्रीम्यायम्बर्धायम्बर्धयात्रायम्बर्धायात्री सहस्रामावमाधिवासें द्राप्ता यदे मावे स्थूराधुयाम्मासस्य स्थाया स्थिया नवे अर्देन शुअ रहन् अ न्दा लेव पुरा रहा अरह न या अ वह या न वे हे अ न्यमाः क्षन्यामाद्गेर्यामाः या स्त्राम्या क्षेत्रास्य स्वार्या स्वार्याः स्वार्याः स्वार्याः स्वार्याः स्वार्याः गशुस्रानञ्जूनारादे क्टनासाने प्यताना गृह्य सेनास्या साम्बुद्या नदे प्लेखा मश्राह्मेन्द्रमेने के शास्त्रम् स्थाने स डेश्यान है हिंगानो सन्गायरें न साक्ष्र रें व होन सावि व त्या होन साबे व हो। न्रें अःर्रे वस्र न्रें अःसेन् ग्राम् व्यास्य स्मानी स्मानित्र वित्र वित्र वित्र वित्र स्मिन नविवःस्र-नन्दाराष्ट्रातुःयाचेदारस्य नदानविवार्धेदासमःह्यानाह्यस्य য়ৢঌ৽ৡ৽ৢঽৼয়৽য়৾৾ৢ৽৽ৼৼয়৽য়৾য়৽ৼয়য়৽য়ৼ৽ঢ়৾৽য়য়৽য়ৼ৽য়৾ঀয়৽য়ৢ৽ वेव खुयायायायवियान रायर् राया वियाची । रे.क्षे.येव ररायवेवायाया विष्यानिक के रामाधीन न सूराध्यान होते । खुयानि वासामिक न

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

धेव'ग्रुट'दे'विं'वदे'देव'य'अ'दिवय'नर'दर्शे'नश् रट'वी'ख्वाश'ग्री'रूंद' अने प्रम्यः के अः उत् प्यः शें ग्रयः यः यात्रा वात्रः प्रम्यः विष्यः विषयः वादि अः गदे कुर्य अगर्र ग्रुवाराय सँग्राय प्रवास यासेन्यम्यम्प्रियासेवार्वे। भुष्ठीः क्ष्मियाचीः क्षून्यीयम्प्रम्या ब्र-निन्दासक्षात्रेतिमोर्ने दासे दारी साम्यान्य स्थान धॅर्डं अर्र्दे अर्धिरे रेअप्नेअर्गुः धुव्यव्यक्ते रेषा अर्धिर पार्दे रासेर् ने। ने प्यर विन हु न विन हु न् प्यें र प्यर प्रदेश से न प्याप्य के वि गशुस्राक्षे सुःग्ःषःररःगेःरेंनेंशःग्रुवःसदेःररःवविदःर्षेरःसरःवहेदःसः ननेवःसरःषेतःसरःवहेवःसन्दा हुःग्ःरदःनेःदेशेयान्यनःससेदःग्रदः श्चु सः क्ष्रमः नुः विन् प्रमः विद्वेतः या नितः विन प्रमः विद्वेतः या नितः नह्न ने न्यायार यो या ग्राप्त वित्र प्रस्तु या श्रुवा प्रस्ति वित्र । पुःवहें वःचवें । ह्युःच्। ह्याःक्षे ह्याःयः क्षेयाका सदे रहेवा प्राप्ते व सदर खेंद्र खेंद्र खें। ददे वाशुक्ष वाद खद सुद र विवा वी दिहें द खेंदा केद धरावहें का संभेदास्यादे प्रवालिक स्वालिक स्वाल र्रे : स्टानिव : बेट : प्रसः हैं गुरु : प्रदे : क्षुन : क्षुन : प्राप्त : क्षेत्र अवा अवा अवा क्रश्रायावे प्पेंट्राड्स, द्वादेव प्राप्ट्रायने वाप्यरापेंट्रायर प्रहेव प्रापा है शा र्थिन्गी। रमनी में में अभेन्मि के स्थान स् 到

केंश इसरा हु सामृ तुरे मृ नाया हु न में नि मो से सरा उदा इसरा ही।

हैंग्'मशर्थेर्'मर्गर्गर्न् बुर्म्बस्थाउर्'नरेव्'वहेंव्'र्'हेर्न्सहस्या वस्र १८८५ में १८८५ से *ॸॸॱॸॸॿॎ॓ढ़ॱऄ॔ॸॱऄॸॱॸॸॱऄ॔ॸॱऄॸॱॸॿ॓ॱॼॸॱॺॖ॓ॱॸऄॱॠॸॺॱॶॱॺॸॱॸॖ*ॱ नन्द्रवित्रहें। दिःक्षायाधीवायरास्ट्रानिवायोदायदेःक्षानायाचीं नदेःचेदा गी हैंगा मर्था श्रुप्र ग्राप्त हो प्रस्था रहिता प्रदेश हो । वहिता हेता राष्ट्राचासून्यात्राचास्यात्र्यात्राच्यात्राच्याः स्वात्राच्याः स्वात्राच्याः स्वात्राच्याः स्वात्राच्याः स्वा धरःचविषाः प्रदेः देवः श्रुद्रः दुः द्वः स्राध्यः प्रदे दः द्वे सः प्रश्रास्त्र स्राधः । रेग्रभः प्रदेश्मार्वेदः प्रत्यवायम्। द्वरः धुम् द्रः भेदः भेदः भिदः प्रदः भेदः धरःश्रॅटःवशः ध्रेवः वे व्यवाः वी व्यः वशः न्तुः अवे न्त्रेवः हैं वाशः धवे वीवाशः केवः र्रेरःवशुरःववेःध्रेरःर्रे । वदेःवदःववेःक्षें वशःभ्रेंदःयःकेदःवेवाःयरःवीःववेः ह्वार्थाश्चा स्टर्नेवाय्या चुर्वे यायदे र्वो श्चे रश्चे रार्चे प्राय्या स्वार्थित राइस्र रेडिशक्षेत्र हेर्तरादेखिये राशिश्चिराया के साम्र स्र स्र स्र सरप्रदेशियायिरानरप्रकेराने राज्येरात्या र्गे श्रेरिये राज्ये वर्रे वर्र नवे रे अर्दे व मु स्वाया अर्दे र स क्रिया मुस्य स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्व में नः भ्रेमानमा हिंगाना वसमा उदाया भ्रेमित द्वानी वित्ता हैंगा नी या के मा यर.र्.ब्रॅर.च.भिद्र.यावय.स्.क्रंर.धेंर.स.सर.रं.बैर.ह्.॥

ने त्यास्तानिक से तामित्र त्या से तामित्र त्या से तामित्र विष्ठा से तामित्र विष्ठा से तामित्र त्या के स्वर्था से तामित्र के तामित्र

यः क्षूरः रदः वी 'दें 'वें यः व्यवः यदे 'वें दः ययः व्यवः यदः यदे 'वें दें दें र यः |रेदेगावर्गीशरराविवासेर्भायदरसेर्भश्वावर्गस्य सुरावस्य रटानविवाग्रीसार्द्वेटायायाकुःवज्ञसानवनाः हासीस्ट्राटे विसासटार्ट् केया नःलुष्रःष्ट्री रिटानवुष्रःभूरःह्यात्राक्षेत्रःम् क्रियःक्षेत्रःभक्षेत्रःसदःक्रिटालः ल्रिन्स्र प्ट्रिक् ख्याम् शुक्षामा प्रमुद्दा है। दिन ग्राह्म स्वाहित स श्चेर-देवे प्दर् होर अफ़्स्यायने श्चेर-र्-देवायायया इसायर-रहार दया र्रमी दें में भाग्न ना मुन न सम्मान के। र्रमी दें में भाग्न न प्रमान स येव परि यनेव परिव में विवा से भ्रे मा प्येव भी ने प्य भ्रव भ्रे भागी यनेव वहें तर भे भ्रे निर्मात के निर्मात स्टर्मी में में मानुन स्वीत स्वीत से निर्मात के निर्म ৾ढ़ॕॻऻॴॻॖऀॱय़ॖॱज़ऄॗॖॴढ़ॴॴढ़ॴॴय़ढ़ॱक़ॗॖॖॖॸॱॻॖऀॱॷॖॱग़ॖॱऄ॔ॸॖॱढ़ॾऺढ़ॱॿॴॴ उर्गण्यास्य स्वात्र स्व नवे:ध्रेर:र्रे॥

श्चितः त्रें व्यवाश्य व्यवेतः यहीतः याः श्वे व्यवेतः याः याः व्यव्यावाः याः व्यव्यावः याः व्यवः याः विष्यः याः व्यवः याः विष्यः यः विष्यः विष्यः यः विष्यः यः विष्यः यः विष्यः यः विष्यः यः विष्यः यः विष्

ब्रस्ट्रन्, स्ट्रम्पणायायायविषाया ने स्ट्रायेष्ट्रम्म यविष्यः स्ट्रायेष्ट्रम् र्थेन्यम्प्रहेव्ययेहेन्याययम्बेव्यथ्यायायायायविवायायाये धेव सर ने न्या वहुय सर विन न ने रासे र हू य हस्य न्य मि गदिःस्वारायास्त्रस्त्रस्तर्नुत्रम् स्वाराये स्वाराये । स्वारायायाया निवेद्रामाञ्चरास्ट्रासळ्याञ्चरानाञ्चरानी स्ट्रामिन स्ट्रीसाञ्चरानि । न्नरःभेशः इसशःग्रीशः न्र्रिशः स्राम्यः नश्चनः वात्रः वे। क्रिशः उवः व्याग्रानः मन्दर्भन्ति से द्राया स्वाप्त से विष्य से स्वाप्त स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप देव-हे-स-र्रेय-र्रे-रूट-पानुव-धर्याः केवा-ध-धेव-द्यी ५५:याध-रूपहेराः गायास बुदा सूर र् गुना से प्रों राजें सुसादा हे दे रूर पर से प्रेंट्र हैर रेग्रायायदर्याधेव हे। दे सुव न सुव प्रते ह्याया हुँ र प्रस्य यह प्राव्य म्यायार्थ्यात् । त्युराययाययायायेते हेयासु । त्यायायायेते होरा र्रे; ।श्चिन'न्येंद'वे'न'वर्ळे'त्य'श्चिम्य'य'श्चे'र्रेव'श्चर्युन'न्'येन'यर' निवेद्रायाम्यस्य ग्राप्ता स्वेदारी त्यासी वास्य सम्बद्धार विदेश प्राप्ते देता प्राप्ते देता प्राप्ते वास्य स्व য়ৢ८-५-१००४-४१-१००० वित्राम्या देन्याः स्रूट-प्रवेश-इस्रायः देन <u>५ना ल हें राहे रूट नी अळव हेट ग्री राग्न राये दें व वहें व राधे व राया हैं ।</u> डंसायार्द्ध्रियात्र्यायह्म्यायायायीतार्दे॥

अवात्यःश्रवाश्वाशः भूवा हु शुर्वा व्यापः यह देवः क्षेत्रः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्व

गहुग्रारायात्रासर्देवासुसाविगाया मुगान्ग्रीयायात्रे गुनासमय सुना स्राया वर्देन्'रा'भेत्र'ते। हेशन्यमा'र्वेद्र'रा'त्रुमुनु'भेत्र'भेत्र'त्रेसे होत्रा नेवेः इनिरेश्वन होन्यार अर्देन शुराया श्वना यर वर्देन प्रशासी । निरेशके इ नवे अर्देन शुअने ने अपरान गान्न रेगा अप्यविकान र्रा स्टार्स गा सायवियायावियातायर्ट्रेराया देग्यरास्ट्रराचन्तरायास्ट्ररास्टराची सळवः *क्षेत्रः ग्रीश्रः ग्रुवः सदेः देवः सूरः स्था सूरः व्याप्तः सूरः सुरः पुरुषः सूरः द्वावः दर्गेश्वः सः सः सः स* ने न्या मी अप्येन न्या ने न्या न्या निया निया मिर्ट में भे मुन्य से स्टाम बिन बेर्'नर-क्रु'नदे'र्तु'स'नदे'सुग्रागिहेरा'य'स्त्रुत्रक्रूर'र्, गुन'नदे' सर्देव-शुस्रायात्वियानासेन्याधेवन्ते। ।ने व्हर्मासर्देव-शुस्रायासामानुमासा ग्राम्यरमान्नाम्य क्राने। यने स्रम्यम्य विवाधीन सम्बाधिका वि वर्षानुषावर्षायानुषान्यापराने प्रवास्तर्भान्य वित्रे ने नगमी रूट रूट मी क्षें न खुग्र र भी रें ने निग खुव क्षेट नु खें न सदे ने व विद्युन दर्गे अर्थ प्येत्र त्या दे दे दे या अर्थ अर्थ या प्राप्त स्त्र अर्थ हो स् होत्राची कंत्र सम्से सुरारेगा

याहेश्वराश्चित्रित्राचाहत् क्षेत्राश्चात्राध्यात्रात्रात्र्यात्रात्र्यः श्चित्राच्यात्रात्र्यः श्चित्राच्यात्र श्चित्राच्यात्र श्चित्र व्याप्त्र श्चित्र व्याप्त्र श्चित्र व्याप्त्र श्चित्र श्चित्र

वी कें व्यान विश्व भी खुनाया व्याय श्रुव स्थूर र तु श्रुव र विश्वेर कें या उव स्थून हो त ग्रैं क्ष्म अंतर्भ रम् कुन्ह्याय ग्री क्ष्म उत्राचा त्राया ग्री क्षे अकिन ८८.घ८वा.जश्रुं.च.स८.स५.क्ष्र्याविश्व.चर्त्रेययास५.स्वा नश्चनः ग्रुः सेन् प्रमान्य विष्य प्रमाने या विष्य प्रमाने या विष्य प्रमाने या यान्त्रःक्षेयायाः ग्राम् रेयाक्षेयाग्रीः ख्यायायायाय श्रुतः स्वरः श्रुतः स्वरः धेव हो नार में धेर हे अर नमूर महे दें वि दें वि हिमा में पायरे अरहा हेर्-ग्रेशम्बरम्बर्भान्यः भिवन्ते। हिन्ह्रम् वेन् वर्गे ह्रो सकेर्न्स्ययः क्केट्रायम्बेट्रायक्रायार्थेष्ययार्थेन्ये यानेवार्यास्याम्ब्रेट्यासंदेधेर्ट्या । याटाने निवेदायानेवार्यास्याहे अन्त्राम्बर्धरमान्तेनेनेनविवाने। निर्मान्यसाम्बर्धान्यसाम्बर्धानेन नर्दिः बेश चुःन नबेद दे । विश चुःन माबद चुश नर्गे दः पदे सुन चेद पदे वा वर्ने र हिंद के अवाहत के वाय के देव दु वर्षे द या वार पी वा दे न विवः ग्नेग्रं प्रश्नामुद्र हैं च हु ने भ्रद्र म्यूद्र स्वे ही र र स्व देव हे देव द्रा धरःगशुरशःधवे श्रेम वायः हे ग्युदः ह्रेच हु द दे रहः यः वाहद के वाशः शेः र्देवःसः ग्रुवः संकेदः देश विकादमा देवः दसः सम्यान् सम धर हो त : भंत : भ्राया व : भ्रेत : भ्र वयायानवे रें व के दार्ची विशायदेश क्रिवायदे क्षूश्राम प्येव के विषय में हिन

ने भूर पर्ने अर्रा है द ग्री अर्द्ध या पर्ने अर्गा हुत कि ग्राया ग्राया प्रसाम अर् ब्रम्यायानेवे भ्रिम्प्रमेया स्वाप्त के या या त्र के या या त न्मग्राम्भः वस्र अरु न्यः या तृत्र क्षेत्रा अर्थः श्रेत्रा अर्भः म्हः यः अर्गु नः प्रदेः श्रेम् श्चरायर होत्रय श्वर्य राज्य स्थायर वहीया यर वर्ष्य राज्ये । विश्वाय श्वर्य रायदेष्टर्भेत्राया ह्यानामारायदे हे या शुरवहर वर वर्षे दारा प्याप राये शके दिवान्यायमाञ्चानवे दिन्धायोव को वहुमान प्रोत्ताय हो हो हुमा नविवर्ते विकर्त्वा मो प्यनम् न र्रेषाका कु न में द्राप्त में द्राप्त में प्राप्त में द्राप्त में प्राप्त में प्राप नःधेनःभवेः धेरः वेशः वर्षे ५ तः ४८ मीश्राः सामुनः या गुनः हेनः हुः वर्षु ८ नः धेव परि द्वेर वेश पर्वे प्रत्वे के विश्व के विश् व्यवास्याद्यत्रास्य स्टर्म्यायात्र्यात्र स्वत्यायात्र विषाचे स्वा वि ठेवाते'यञ्चरात्र'ठ'रावेवा'यर्गेर्'त्र'रेवार्यंनेर्य'ग्रेर्यायात्रात्र'यर्गेवा'य' धेव दें विश्व ने र रें। १ वर्षे ग्री:न्वेन्सायावाव्याध्येव केट ह्यें नान्येव ने ध्या ने खूर न्यविन यवर अधीव प्रशास्त्र वा के शामा शासी वा के विवा कि क्षा वा के विवा के विवा

वाशुरुरुष:प्रश्रेष् । ने ःक्षुः व : पर्ने र : प्रश्नुर : के रूष: उव : प्रताप्त व : के वार्ष नश्चनःमदेःसद्देन्सुस्यः सुन्तुःने विद्यासायद्वयामहेरायश्चे वद्याय विश्वयाम् अः ह्रेन् पविः देव पान्व क्षेत्रा अः वः श्री वा अः प्रस्ति व दिन् व दिन स् ळ्ट्रस्थास्त्राचाचाप्रस्य स्टास्त्रुट्रस्य स्ट्रह्म्य स व्यवासमार्थेवात् प्राचित्राचे हे भ्रान्ति स्वान्ति । विषय त्तरश्रासः भ्रेंत्रः संदे ने दे दे स्ट्रिसः ने निवाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाय वेशनायाननेत्रमहेशा भी क्षेप्तरामह्याना सहन्त्राया वेराना धेता दे। नेदेन्द्रिक्ती नेप्नविवायानेवायाययाग्वाहर्मिनः तृपाशुन्यायदे ध्रीनः विया ह्वार्थासु पर्वो दिन द्वा देव द्वार्य स्वार्थ डेशनह्नामान्नेनमाने त्यां साधिताने। सूरार्स्नेन्यस्य स्त्राह्यस्य ठव निर्वे न इव निर्मे अ ग्राम् विर्म्भ म् नु अ ग्राम् निष्म ग्री गवर,रं.४.सूज,सूज,सूज,यर,४८.याङ्ग,जार्य,स्याचित्र,त्यीर,यर,परूर् यःचविवःत्ःचान्रवःक्षेषायःन्दःन्येःषःश्रेषायःयवदःनेःष्ट्रमःवर्देन्ःयय। रवाश्वाराने वर्षा वर्षे वा क्रिया क्रिया क्षेत्र व्या क्षेत्र हिं वाश्वारा वे सिंहे का वर्षे विद्या नमात्यःश्चेन नेयान्नेनविनम्बन्धान्यस्य मार्थन्यः स्वेर्धन् वेयासदेः ह्वार्था शे देव दे निव विश्वा के स्वार प्येव विश्व पदी न प्येव स्वा ग्वा है न स धेवववे रमाहेन्ने सूमा के प्रमेन स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

धेव'व'हेन'ग्रेश'र्नेव'न्य'र्'वश्रथ'र्'युर्थेन्'य'न्ट'सेन्'य'र्द्र्याहेश'ग्। कुःषरुःक्षेःचःचगावाःपरुरिःषःक्षेःवशुचःहिरः। वदेवःविदेशःवारःदुवरः बेन्यि देव देव के के प्रदेन्य अने या अव्यान सम्बद्ध के दर्श अर्थे । । ने प्या वर्जुर्न्य धेव सदे भ्रेम वेश नर्गे द्राया द ह्वा शासु नर्गे द्राय दे द्राया है। ननेव गहिरामार धेव वेश वर्ते व स्थाय न र वर्त न धेव शी। ननेव गहिरा ग्रीप्यत्यान्य वाराह्यायासुप्यमें दिने वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र ख़ॖॸॱॸॸ॓ऀढ़ॱॻऻढ़ॆॴॱॻऻॸॱऄढ़ॱॸॖऀॴढ़ॴॸॕढ़ॱॸढ़ॵऄढ़ज़ॱॸॸॱॵॵॹॗॸॱॴ धिव ग्राम् ग्रव हैं न म धिव व ग्रावव या स ग्राम के स है । सूम महें म मुन है। ने द्वाराधीत तर्के राउत न्यानिया सदी तर मी ही सके न ग्राम ग्रीत हैं न हुः धेर् प्रवेष्ट्रेय द्वेर केंवारे प्रवामी श्राया व्याप्त प्रव्याप्त प्रवेष्ट्रेर से । ढ़ॕॱ**ढ़ॱहेॱॠॸॱॸॷॸॱय़ॱॸ॓ॱ**ऄॻऻॺॱॷॺॱढ़ॻॖ॓ॸॱॻॖॏॺॱढ़ॻऻॺॱख़ॱॸॸ॓ढ़ॱॻऻढ़ॆॺॱॻऀॱ नह्ना'स'नुरु'स'नेरु'म्बर'त्रुन्य से 'सूर्र'धेर'सूरु'त्र न्यूर'सर ग्रुः हो। यर्नरः ह्यून न्यून ग्रीयायायविषान विष्यायया हेनाया ने न्यून प्रा यन्ता विष्यानवे ने सामसाह्ने नामने मुन्हें नामधी नामान ने निर्मा वर्षानिव निष्मित्र विष्मानि ने निष्मित्र विष्मानिक विष्म वेशन्तर्मात्रन्यार्रम्, पर्यो न्यो राज्यायस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य ह्याश्रास्त्रीं नामित्रादे देवाने गावा है नामान्या देवान सामान्या प्राप्त सामान वःह्यायः देः याञ्चायः यसः विद्युसः द्वीयः यः प्रदायः स्वायः शुः वर्गेदः यदेः देवः देः अप्यक्षियानान्द्रप्रविषानवे भी यामानियाना है याना सुन्द्रामी या है नाम वे 'हें नाम के से सामानियाना के सामानिया वःह्याश्राश्चार्याद्रीन्यदेःर्देवःदेः साम्राम्याद्यम्यात्रम्याः मुःसळ्वः सळ्ट्रस्याः या दिशम्म मिर्यास्य सम्याने साम्यास्य साम्य साम्यास्य साम्य साम्य साम्यास्य साम्य साम् त्त्रम्याया स्रीतार्वे । निवेशिक्ष मान्याया स्थानमे निष्या स्थानमे स्थान इसमा वेसर्देसर्वेदेस्स्मान्स्य न्यायायात्रीयायात्राम्य स्वराम्य स्वराम्य <u> न्रॅब्रिक्षेम्रअः विज्ञेन्दे स्टरमेश्यानर्गेन्यवे ह्याश्वरे प्रमाधिक्षेयाः वे ।</u> सर्देव-शुस्रायातिवान्यान्यान्द्र्याशुन्ता वि.क्रेमान्त्रीःसन्नरमानुम्यायादेः भून हो न सर्वे स्थाय विषय न विषय न विषय में न स्थाय हो न स्था हो न स्थाय हो न स्था हो न स्थाय हो न स्था हो न स्थाय हो न स्याय हो न स्थाय हो न स ने वर्षेनामाधिवार्वे। विने प्यम् स्मान्यस्य प्रमान्त्रमान्यस्य प्रमानिका मंदेर्न्त्राप्तमाञ्चरान्यस्थेर्भेषामायदेश्च्यान्ते न्यान्यस्यान्यः श्रीवाश्वादी विशःश्रीवाशः इत्राद्यशं स्तः सळ्दः वहवा नवे स्वतः स्रासेतः धरावाशुरश्रास्यशाचीशा श्वितान्धितायोवाशास्त्रावहीत्।ग्रीशिवाशा वह्रवायायञ्चनश्रमवे भ्रम्

मिन्नाम्यास्य अध्यक्ष्य स्थानि म्यान्त्र मिन्ना स्थानि स्

न्यवाः इस्रश्ने श्रु रावायाः चुर्वे । यहाः कुन्। वसाये वस्तरायाः वस्ताः नेशः गुनः प्रदेः र्द्धः याशुर्यः याहिशः गाः यः गुनः प्रशः नश्चुनः गुः नश्चुनः नर्गेशः या ने भूर द रहन अने सेन प्रकार्टे या उदाया सँग्राया द सम्यास गुना पर वर्षुरर्ने । न्दरकुट्रावर्शक्षेरवेदाद्यर्भेयाद्देशर्भेरम् क्षुप्राचरायाळ्ट्र अ'दे'वर्'वर्'व्याच्या केवा वी | रूट'व्यं क्ष्यं अ'देश चुव से 'द्वे स'से | नेश्वात्राव्यात्र्वात्र्वात्र्वात्रे हेश्वात्यवाः इस्रायाः व्यात्र्वात्र्वाः व्याप्यात्र्वाः नःवर्गेनाःमःरुषःश्चीःन्नेषःमःरुदःनावदःयःश्चनशःमदेःहेशःन्मनाःधेदः शुःररः क्रुन् भेव दें। विने वे नियम वा क्रिकेट राम्य सामा स्र ने रूरमी वर्षा हेर्दी । ने खासू वासाधे व हेर्। । वार विवाय र्षा खासे नक्षःना । ने मान्य न्याया हे स्ट्रम् नस्ट्रा । विश्व म्माया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया च्रमान्यमान्यावनायान्य विष्यम् वर्षान्य विष्यम् वर्षे विष्यम् विष्यम् वर्षे विष्यम् वर्षे विष्यम् वर्षे विष्यम् में अ'ग्रह पर्दे ह' प्य' ह्या न उद्याविद प्य' न क्षु' न' रहा में हिं में अ'ग्रुन' प्र' से ह' ययर द्रास्य स्पर्ने द्रास्य क्षेत्र प्रायदे यह क्रिस्य स्था विष्ठ या ग्राया स मित्रे हे अप्तम्मा हे अ हे स्पाय भी मित्रे र क्या कि मित्रे र मार्च स्माय स्थाय स्था मित्रे र मार्च स्माय कुर्ग्ये हे अरुप्रम्याया के श्रें राहे। हे अरुप्रम्याय प्रमाने यावन श्रे न्यानरदानायोगायारयाग्रीप्रत्ययाग्री रहाराष्ट्रियाये स्वीत्रास् न'नर्गे न'म'इसम्भ'रम् कुन्भेव'म'नम्मावव क्री'न्य'नरुवन्य वर्षे ग्राम उयाग्री:न्वें यायाउदान् निदाययार्श्वे राजायी नियाये वित्रा

र्श्वे रामन्त्रीत्वरानेवेत्रसम्बद्धरास्त्रस्य स्त्राप्त सुरानेवे यह्वाकिन्द्रमा दर्भेष्ट्रम्यावद्रायाधेवान्यस्ट्रेविशः ग्रुप्तमः हैवान्यने दे श्रेया या स्टायी यद्या हिन् से प्रकृति हैं स्था या व्यवस्था विदेश विदेश क्रॅंशसेन्द्रसेप्त्रुम्पारेतृत्रम्पायश्चरस्यायधित्रेतृ नेवेष्ट्रिम्पाम <u> ५८.वाट.क.रट.वी.वर्वा.केर.वक्ष.व.झ.र.स.रे.रट.रे.क.के.वालव.वक्ष.</u> नवर वित्राया से वरित नियम् वर्षे नियम् वर्षे वर् नन्गानिनः से निस्तानिन स्थितः है। नेति सि स्थानिन त्यानिस्य निष्टा वि बेन्ने। नेदेश्चिर्र्स्योग्वन्गाहेन्से वस्रावाद्यायात्रः व्यव्यायात्रः व्य नः धेन दें। विकारे वा मुनः परि हे का कुर मगा मका के वा नमः हो दा मधिनः र्वे। विश्वान्यरुर्वाने। द्वीःर्केषान्यरायान्यान्यान्यर्मान्यर्मेषान्त्रासायाः ৾ৼৄ*ঌ*৽ঢ়৾৽য়৻ঀয়৽য়৽য়য়য়য়৽য়৽য়ঢ়৾ৡয়৽য়ঢ়য়ৼয়৾৾ঢ়

रद्या अया विद्या या विश्व श्री द्रा त्या या विद्या हिया या विद्या या विद्या

म्द्राची में में स्वाया मान्य मान्य

दें त'ने वर्र नवे कंन अप श्रुन त्वर अेन समाने मा गुन सम वर्नेन यन्ते स्ट निवेद हुँ पर्देवायाया सूर सेवायायया विद्यायया हुन हुन ने न्या य नहेत्र त्रान्तु सदे स्वान हे स्वान हे ना कन्स्य यहिन सदे हु सळ्यात्रान्तेयात्रमात्रात्रात्रात्रात्रात्रम् स्वत्रात्री युनासमयाध्येत्रात्रेयाः ৾৾ਫ਼য়৽ঽ৾৾য়ৢঀ৽ৢঀৼৼৢঀৢয়৽ৼৼ৽য়৽য়৽ঀড়ৢ৽ঀ৽ৢঀৼ৽ৢঀ৾৽ঀৢয়৽য়৽ৢঀৼ৾৾৾য়৾৽ र्रे :र्रेग्र अप्यः से :नक्षुः नः प्षेत् :प्र नः दहे तः प्रदे :प्रुवः द्वस्थः ते :स्टः नी :सुम्र अः ग्रैराग्रद्ध स्ट्रूट् दुः व्येट् स्ट्रूट् द्राय्य स्ट्रेट् स्या दे द्रवा त्या स्वाय स्वाय स्वायेट् स्या अधीव वें। विव ग्राम् श्री कें व्याने अने न्या समायी में विव व्यान स्थित राज्ञित्रार्शेर्शेर्स्से राधे दुन्य या दे । इस्य या राष्ट्री या विष्या विष्या ฎ:प्रह्यःनवे:र्रुट्:अशःग्रुनःप्रमःर्ह्वेअःपवे:धुवःवःनेग्रशःपशःगर्वेदः ग्रम्। विद्यः कुन् ग्रीः श्रम् प्रदेशे अर्था यहिन् प्राये के निर्द्यः कुन् ग्री अर्था यहिन रारेग्रायाययायायवींग । देशक्षिरेशस्यायाद्रम्यायायाये यः रद्यो दिर्धे अः गुर्वः पदिः ग्वियः गुः दहयः पदे रळेष्टः अः अश्वरः श्वरः रुप्तः

त्रम्यायायायायास्र्रियायार्थ्याह्येन्याधियार्वे । निवेर्द्धयादी स्मानगेनिः मंदे'वावव वावाया शे श्रे र न ने वा सर्वे व व के या उव सेवा ने वा र र वा से नक्षःनवे ह्या राजे । इस्ति । स्राप्ति । स्रा त्रुन'स'ते'ने'त्य'त्र'सून'त्तर'सेन'सस'सू'स'ने'सु'स'तर्गेष्'होन'त्'तुर' वी । श्रेवा त्यः हवा शर्ने : ५८: ५वावा : इति : क्रेंशः ने : वाहेशः व्याप्तः स्वाप्तः सहसः <u> ५८ से ५ त से ५ सहस्र ५ से ६ त ५ महिला महिला महिला से ५ स</u> यान्द्रा देशन्यविदायायायाग्रीःश्चेर्न्यदेःह्याराउदान्द्रह्यायाः इस्रयात्रास्त्रपुर्त्राधेत्राप्तिवार्त्वेयाः श्री विसाधित्राप्त्राप्त्रास्त्रस्याप्त्रसः ग्रीस से केंग में । केंस उद सेग य सेंग स म दे दग दे खेंद सर दि रहा मीशामश्योदाराशान्तुः साराशाने 'न्या' मञ्जूनः या'यः न्वीं शा यायः ने 'ने ' ययदः नर्श्वेत त्र शर्ति ते रचा या या मुना रच र भे मुन र भे मा हे र नि से । नर्श्वेद्रायात्वादायदासे दास्यादे द्वाप्त्राच्यात्वस्य स्वर्थात् स्वर्यात् स नेवे हुः में सुः विया यी या हो ना

तर्न्रावान्त्रेयात्रान्ते यायाने सर्यया स्वान्त्रान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्य

गिर्देशमार्स्य में शादि । यायाया निर्देश मिश्रा सुर्देश ग्री श ववायानरावहेवाया अत्वदाया राजीयाववायानरावयान्त्रस्यायया वर्हेगान ने फार प्रमाय है। में लाय हिन ग्री अपने से प्रमाय नम पर्देन ख़र:क्रुर:रुट:ख़ुख:वा क्रुॅंव:दे:वे:बेट:दे। स्ट:ख:बे:वख़:व:स्ट:वी:टें:वॅश: युन'मदे'रूर'नविव'र्षेर्'मर'दवाय'न'वे'रूर्'स्थायुन'मथा विश'तुर्यः उयाग्रीयासे वहें नामें विंत्यक्षन्याने सारे यारे वायायायाया देशासराज्ञ स्था कें वा सेंद्रा विदेश विश्व सुरका त्या वहेता संवेश सुर्या र्वेशः मुनः सदेः म्वावयः मुः यह्यः नं मुनः सः यः द्वेतः भीतः। ने प्यतः से नः सतः मैशन्।प्राञ्चरश्रात्रश्रहिःश्वराव्यावानानञ्जून। मानवाज्ञावानरामीःहः र्वेशः मुनः प्रदेष्टः प्रविद्येष्ठः स्त्राप्तः स्त्रापतः स्त्राप्तः स्त्रापतः स्त गुन वेद द्र दर्भ ने प्रदानि कर् स्थर सुन द दे के राह्म स्थर स्टानिद से र धराहेंग्राराये क्षाता हेराया थेताया दे त्यार्य त्या क्षाता खेताता स्ट मी दिन्त्र भाग्नान सदि द्वान प्यान स्वाय न प्यान स्वाय न स्वाय देशक्षात्रात्रक्षात्रवार्थाः श्वायाः हिंग्यायस्य दिन्त्र दे न्यायः विवाहः न्धिन त्याविन न्या क्ष्या स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान होता दशस्टाया क्षे नक्षानाया वदाया नक्षानास्य में दिने वानुनाया केट्रायवा

धरः हुर्दे। । द्रधेरः वः कुः दृदः ध्रवः ध्रथः शः शः वः क्वतः दृदः। से दृदः ध्रवः ध्रथः कुः यःळः नः न्दा अयो अरो में ना न्दा स्वाप्त स्थाने अर्थः दे विसायः निसे ना सा दे। कुःवःर्सेन्।राःन्।सुसःर्सेन्देःवःकुत्वःर्सेन्।राःन्।सुसःर्सेन्देःद्रीन्।रा यायार्बेशन्त्रें साम्यास्त्रें दिन्। हिन्स्याधार्येन्याने निवस्तु *न्*रॅंश-सॅंर्-इस्रश्राय:र्र-जी-र्रेर-वेंश्यायाय:विजा-पेंन्र *वयर:सर:मविव:रे:सर:य:द्रधेम्।श्रःवश:रे:वश:रे:दर:यव:यश:म्वद:यः* षरः द्रशेग्र अद्वेश्यः प्राप्ते व विष्यः हे दे विष्य असः स्ट त्यः अद्वेश्वा अः वरेरित्र्यूवर्यवाववर्याष्ट्रिस्य अर्वेर्यं वर्युरहे। द्येरवाञ्च यदे से के किया था दे से बिया पाया द्येग या या दे दि ए स्वापित के से साथा पर द्रैन्द्राचार्र्भन्द्रभेग्रस्य प्रविद्रार्देश विश्वास्त्री विश्वास्त्री विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विष् नशहेशःशुःवर्गेःध्वादेशःशुःनद्वादश देवसभूनशःग्रेःदेवःयःश्वेरः नदी नेदे भ्रम्भेग ययम् भ्रम्मे नदे समानिक विकास मानिक नन्द्रीयाश्वरम् ने द्रश्राया तुयाश्वराया श्रीयाश्वरान्द्र स्टियाश्वराया तुयाशः यान्ध्रानायान्द्रभेग्रामान्यम् त्वन्यान् भेगायान्द्रामाभेत् यशःग्रदः। नर्देशःर्रेःग्वाम्भः सदः नविवादी। विवासरः नन्वायः बूदः वश्वरः वा विमान्नेन त्याप्पर सेमामी शादी विश्वी स्वाप्त स्वाप्त विश गशुरुषःमःसूरःर्रे।

गाय हे से अ रूट से रासे या ग्राट या ब्रह्म रासे या राज बेह रहा से या यो अ

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

र्राया भी प्रमुष्पर पाव्राया प्रमुष्य भी स्वाया में सूर्य प्रमेश स्वाया से र बेबान्त्र-भिरामश्चेमानान्दराश्चेमानीबाम्बान्यानानुम्बान्यान्द्रमान्द्रम् अधिव श्री अवायाववरायाः स्वानिक क्ष्रणिव प्रदा अेश जुन भीर प्रश्चेम पर दें में हिन ग्रीश ग्रुव पर प्रमेर होन न्वे राम्यानेते के न्वे प्यन्त्रभून ग्रुन्वे तुन् से प्यन्ते वर्षे स्थन से *५८:तु५:वि८:वाहेश:वः:स्ट:वोःर्दे:वेश:तुवःसवे:स्ट:वविवः*र्षे*५:वःस्ट:* नविद्यारेगान्त्यान्त्याहेशायश्चार्थाः यन्यान्याने याहेशायानाधेदा गरिमाधिवावादी सेरास्टाहेट्यसेमाधस्यसूराया ग्विवाधरासेसेमा वेन न्दर्तुन भीत्र न श्रेना वस्त है । भूस प्रकृता वसूस न ने । मिर्ने शासा श्रेर वे नश्चेम हर्ने । तुन्ने न्वे श्चेम हेन्ने लेश श्चूश व त्यव हे लेग प्पेन गयाने र्मायविदार्थे र्थे नाधिदादादी। युन्ने नासे नामाया स्थानिस्य यर दशुराहे। हासेर यर या त्यर दसे वा सारा विवादी। विवाद मुला या सा ग्रमा से अदि रहं न हिन न हो गा हो। हिं न सं धित है सूर न हो गा नि अद न्द्रिक्ष्यान्त्रः स्वार्धेन् । दिः स्वार्षेन् स्वार्धेन् । स्वार्धेन् । स्वार्धेन् । स्वार्धेन् । स्वार्धेन् क्षरःर्रे । दे क्षरः नश्चेना सः वः रहः नी र्हे र्वेशः ग्रुवः सवे रहः निवेदः विश्वायश्येदः व'वे'र्र्र्से'नश्चेम्'व'म्ब्रि'प्रशे'नश्चेम्'यर्ष्यूर्'न्यःथूर् श्रेम्'यः नक्षःनवेःस्रानिकः विकासकारोक्षः विवास्य स्रोतिकः विवास्य स्रोतिकः नर वर्रे ८ 'दर्गे अ' श्रुअ 'श्रुव 'श्रु' अ' की 'वार्थे वे ।

ने भूर रूर निवेद विश्व सूर्य पाय विदे नि हो न सूद र स्वय अर्थे र

नन् रम्भी दिन्त्रभागुन प्रदेष्ट्रम्भवित स्पिन्यम् प्रदेश स्वाप्त स्वाप्त वर्देर्न्यर्व्यक्रुर्या देव्यर्भर्म्यविद्यं सेन्यं स्वात्त्रं सेन्यं सेन्यं सेन्यं स्वात्त्रं सेन्यं सेन वशुराया देवे श्वेरास्टानबेद र्षेट्रा सन्दर्षेट्रा सामा स्थान स्थान वशुरावर्षा रदाविवासेदासदेगावयात्रायारदाविवासेदासदेखदा स्रायह्यानायार्सेग्रायायारहेग्रायायाराय्युरानायीत्राते । दित्यपदेशा बे निर्मुन्निरम्मानिवाबेन से नामानिका स्वीता श्रे त्वर्भशहेशर्भगाः हु त्वर्दे र द्वे अवा दे व्युक्त देवे हेव पाह्रव के पाश हे सूर धेव सूस्रात्र रूप विवाधें प्रत्या हेगा प्रमान प्राप्ता स्वाप्त नरः अर्वेदः दशः गुरु गः वः ददः ग्रीः सदः निवेदः विवाशः यः दः सदः निवेदः सेदः নমান্তিমনম্মের্ট্রেমা র্জুমান্ট্রিমারের্রামানা নার্ডনার্মরের रटानिव सेटासरादेश संत्री सुँग्रास केंश ग्री खुंया धेवास सा खुंया ग्रासुस यदे ह्या अप्पेर्ण रे प्यानहेत त्र अभे प्रत्युर् भेर प्यास्ता वित्र सेर हैं श्रुसर् रेशरा है हे सर्मना में विदेश है स्र न में र सदे न विदेश है ग्रे क्वें र र र यदर द्वार पाशुक्ष ५८ हे क ५ यग क्वें द्वार के क सम् ग्रुके । वयः वशुरावे से न्दानुनि निरायार्दानिव पेर्दिन स्टानिव पार्वे गार्दा श <u> ५५ मर ५५ ५५ १५ १ विश्वास्त्र में मुद्याधिव व से श्रास्त्र है ५ </u> नश्चेनाःसरःदशुरःर्रे विशःश्वाशःगविदःश्चेशःपशः ह्रनशःसःह्राशःशः नर्गे दात्र अप्यार्से या से प्यारी प्रदे दा प्रदे त्या स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध

नेशः अर्कें दाद्याः वयः वावदा द्वययः ग्रामः हें ग्रयः यमः होत्री ने भ्रात्र द्ये कें वाने या है। श्रेन न् निर्मे या से श्रुप्त विष्णुन समय सार्ने स्पन ने श्चेर-र्-र्-ामे-रे-र्नेश-गुन-धदे-ग्विय-गु-द्रह्य-न-गुन-ध-य-क्रेंश-द्रशः र्देन'वर्गुन'ग्रेन'ग्री'र्ळन'सर'वर्गुन'स'धेन'त्य| ग्रान्'गे'र्ळे'न्देरेश'र्से'वर्गव' विवास्तरवी में में अञ्चान संसेत् सम्राह्म स्था हैवा अस्य स्थान में अस्ति । र्भु:नदे:गुन:अवव:नहर:न:धेव:र्वे। । क्वेंग:ग्रम्थ:प्यम:ग्रम:। पर:हे:ग्रम: लर.पेर.च.ज.चीच.सपु.ईअ.थी.रसची.सपु.धू.यश.चीर.ईअ.थी.रसची. मश्यार्वेद्रामार्थेद्राद्यालेखा थेद्रादे। देः धरास्टरहेदायाः स्वानासदेः याह्रवः क्षेत्राराष्ट्रेत्राध्येत्राधी जाल्यायात्रात्रात्रात्रात्राध्येत्राते वहेताहेतः हिन्न् अर्थेन् निर्देश । यहेगा हेन निर्देश ने अय्यायन् मन में में या न ८८. ही. मूजा वेश. गीश. कर अर घेर घेर घेर के या यो शक्त वा राया संस सराद्युराया रेखादवादावे रहावी क्षेत्रावि व्याप्त स्थाप्त व्याप्त व्याप्त विष्य हो। क्षेत्राची शर्वे कुया नवसायसाय स्वयुर्ग न दे साधिव दे । विह्ना हेव व है। स्रमः धेवः याने विवादः मेगायायाय व्यवस्थिव हो। यहेगा हेवाय वेश संस्रुतः वि वःरेग्रायःमदेःनसूवःनर्डेयःसुःस्र्वय्यःसुःननःमःधेवःमदेःसुरःरे । वियः नावर त्य मनाश्वास स्वास शुः रुट निये दिये दियः वेस मित्र स्वस्य नाशुद्रस निटा हैनानो पाइसमा धे में याया कंटा सामाट मी मार्ख्या मार्स्साया सेंग्सा यः व्युनः सदेः स्वदः सः देशः श्वः क्रियः यः प्याप्यः व्युनः द्वीत्रः स्वया क्रियः श्वेः क्रियः विष्ठेशगात्यः श्रुवः द्वींशः धरः वर्दे दः धः वर्वी वाः धवदः वाशुद्रशः हे। दे छे दः

वस्य गरःविगागरःगहेसःगःवःदेसःमःगईरःमःनेवे स्त्रुनःमवसःसुदः वर्चेत्रपाधेत्रम्। ग्राम्परम् राम्याम्याम्यस्याने स्थित्र नामान्यस्य धेव वें सूर्य पुरसे समार्थ यह वा हेव ही क्या पर प्रवासिय नहेन नगा हे भारा प्राप्ता पारा पारी भूत हु। भारते रहे ता परी हिता प्रभारति । नरः गुर्दे। । वर्दे सूरः खुरः वी अः वार्दे दः यदे वाहे अः गाः यः गुनः यदे खुरः विः वदेः क्कें वर्षायाधीवाते। दें वर्षे वेषा रदाया गुनामदे क्कें वर्षा गुराधीवा र्वे। । ररावी देव दी हे या शुर्राया यर वे विश्वयय उर् र्रास्ट व्या द्याया या हेर नक्केट्रन प्येत्र ही। महिकामात्य ह्युन सक्ते साधित ही। नि हिट्र ही ही रहेंगा गेदि'सळ'द'हेर्'गर्हेर्'रा'दे'र्गेर्यायासेर्'रा'धेद'हे। सरस'क्रुरा'द्रस्यरा' ग्रीश्रास्टाया है । सूराम्याया श्रायदे । त्राया है । विष्यु सामित्राया है । विष्यु सामित्रा नश्चनः ग्रुनः श्वन्यः यः यः यः रहा कुनः श्वीः हिषा श्वाः विश्वः श्वः श्वीः विश्वः विश् नर वहें ना स वहे हैं हैं न हमें द ही ह ने हिस सर के द हु न सव न से द हैं। বাইশ্বা ने'मिहेश'शुदे'हेश'शु'वज्ञम्श'वर्श'वर्श्व'न'कुन'व्यनश्चेन'र्यादी

ने सूर प्रयाश्रामण्याश्रश्रा शुःहेशाशुः प्रज्ञा प्रति स्ता सा के दार्थे

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

নার্যুম:না

वेद्रामं दे त्यां नहेदाद्या क्षुना क्रुद्राया नक्षेद्रामंदे क्रुंया या ग्रास्य

यादः वयाः यो : यद्याः सेदः याह्रदः त्यः द्वयः याद्वयः यादः व्याः सेदः याह्रदः त्यः द्वयः याद्वयः याद्

नार बना नी निर्मा से द ना हुत त्य दिन न न स न स स म

नन्गःस्रान्वेवः सेन्यस्यान्वः यः न्वनः यः न्रेसः नेसः नन्याः योः नः धरः रदः निवेदः भेदः धरः दशुनः धरः नश्चवः ध। देवाशः धः देः इस्रशः वाववः ययर श्रु र नवे रहे या वे | १८८ में या नवे १८ में श्रुर्न्तर्वे । १८८ में दी वहुना वर्षेय ५, सर्ने ५८ मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त नन्त्रःग्रे सेसम् । वित्वे क्षान्य ग्रुम्य भीता । वत् ग्रेन्य प्रमाने क्रॅंट क्षेत्र वित्ते त्या के सका उता वित्ता स्था है न्यू मा प्यता के वाका क्र सका या निहेत्रत्रशंभिरहरान्हेर्याक्ष्मा नियनेत्रस्यर्यात्रहेतः वया ।गुवःहेनः सेस्र अञ्चले शास्त्रीं । विसार दानी प्यवायना वितरायें यःश्रेवाश्वायायानहेत्रत्रशानिराहरायर्देवाश्वायान्येरासह्दात्रशा सुरासे मश्रार्वेषाःसरःविरःहवेःद्रयेःचल्दःसरः चुर्वे। ।वदेःसःचेव। विरःहःसरः नविवासेन्यितन्त्रवाराधेन्त्र्वस्या नेयार्हेन्यासून्या सेन्यी हिन्यर में क्षें वर्ष मुन पदे खुया ने या नहेव वर्ष हुर न् व्या हेन्य है यव प्रव के । प्र में वे वह या या या विर हम्म प्र प्रया या या विव वर्देन सेवा । पावव सेव संयोधन में ख़्व प्यम सेव विमा । प्यव व्यपा या सेव विराक्षित्रम् स्टामी प्यम् व्यवा व्यवा विराज्य व विराज्य व विराज्य व विराज्य व विराज्य विराज्य विराज्य विराज्य मर्भायम्बार्भास्य स्थापित्र स्थापित्र प्राप्त वित्र त्या प्रमाप्त स्थापित्र स्यापित्र स्थापित्र स्थापित्र

वर्देरःविरःहःषःररःवीःरेंवेंशः ग्रुवः धवेः ररः विवः धेंदः वः वार्देवः शेः बन्दरम्बिम्दर्वर्त्रस्मान्द्रस्यायान्त्रस्यायान्त्रस्य बेर्'र्हेर्'रवेरेरेग्रथ'र्याय'र्याय'र्वेश्य'यथा वर्त्र'रेरेर्'र्वायार'र् श्रॅग्'नेट'न्ट'यर्वेर'र्से'न्ट'ग्र्वेर'तु'य'श्रॅग्रथ'रादे । नेट'हरी'यर'यग्' ने न्यान्य स्टान्विव यांच्या साधिव हो। यांच्या धिव व प्यव प्या ने क्रस्य रु:अ:धेव:य:ववेव:रु:वेट:ह:धट:रु:अर:वश्चरःव:दटा वेट:हःवाठेवाः धेवन्यनिवन्त्राध्यवास्यम् स्थर्या ग्रह्मा हेना तृत्वग्रूर्या हेन्य हेन <u> ५८: चु:चवे:व्यथः ग्रहः वाडेवा: हु:व्यूह्रः वः श्रेवाथः ग्रेः श्रें हु:व्यह्रें । ४८:वी:</u> *५८*:श्रूअ:तु:नवित:र्:प्यतःग्रम:त्रम:श्री:श्रीम:५३ग्रेग्रय:प्रम:प्रकुम:न:यशः अन्भेग्रायिष्ट्रिरन्। गन्ग्रायिष्ट्रिसेन्यर्वे हुर्सेन्यर्वे हुर्से हित'न्र'नहेत'यथे स्मिश्याहिशकी प्रायम यार्वेट त्यार्वे यात्र श्रास्य र्रमी प्रवायना इसरा शे हेवर् से देखा रेखे वा खे है वा नवसाय हर यवायमान्स्ययायानहेवावयायारायेनाने। ने महियावे स्टामी में में हिना ग्रीमार्से सिंग्नराषें दान वर्ग्ययायायमा दे से दायते सिरासे विरासि द्ध्वः भॅराया राज्या थे पर्योगा यो हेव र्राया महेव या स्रायी अळव हेर्या थे था

व्ययःसःवर्षेषाःसर्वे । प्रसेरःवर्हेषःषाद्येशःषाद्युदशःसःपेः धरःसःरेषःरेः याने न्या स्टामी अळव हेन ग्रीया हेव नहेव सर ग्रुव संदे या वव ग्रायाया वर्गेन्याक्षे वन्यम्बस्याउन्याने निवन्त्रं वेशायम् नुर्वे । युन्यवे मुंग्रायाराक्षात्वरादे। यदे स्रमाञ्च क्षेत्राच्चात्वराद्यात्वराद्यात्वरा न्यान्दरः ध्रवः यानेवेवः तु। नेदरहः ष्यदः स्टरमीः ष्यवः ययाः न्दरः ध्रवः यसः यदे दः वनी नःयर:नरःख्रःश्चेवःश्रेंश्चेतःश्रेंनःवहेवःयःनेःहेःवर्नःनेःनवेवःन्। विरःहः धिरने सूर सूर प्रतासे निहा श्रिक्षेत्र स्वान निहास स्वान स्व हण्यत्यमान्दरः ध्वाराण्यदाक्षे स्वाराहे। स्दानिव सान्दरायामा प्रदे <u> भ्रेम्स्या म्हामी दिन्ति हेर्न्सी असूनायायाय युवा दुवा ने वे म्हामविवापा हेर्या</u> यदे र्स्ति म्राधिव त्या ने प्यम् सूर्य माना यदे रिस्से इतने प्यम् सूर्धे व स नन्दरः स्वापार्यस्य स्थून न्त्रं पित्राचीया पास्त्र विदाहाया प्राप्त प्राप्त स्थाप मशा महामी अळव हिटा श्री शासुना मित खूवा भारतीं ना मी

स्वा अर्हेट या न सुन रहेवा र्रोग्या

अक्टरन्येन्यरक्षिण्यायान्यदर्भिराहर्षेन्यरावश्चरहे। यन्यायाः वर्ने र र र हो र र रें र ह्यू न र वा प्यव त्यवा र व र वे र हो । पव त्यवा वर्षायार्थं अविवापर्दे दास्यादे व्ह्रम्य प्याया ग्राम्ये दासम्प्रम्य हे। धवःवनाः उवः भेरः पदेः श्चेरः र्हे। । देशः वः धवः वनाः वर्शः पः धरः भेरः रायायायायी र्कें वायायायी राह्मायी प्रवास के प्रवास के स्वीत हास का वितास का स्वीत का स्वीत का स्वीत का स्वीत क यगःर्केनारुपार्चसाधेदारायर्गेनापायार्श्वेनप्रसेदायदेवेपनेदेपार्थाष्ट्रप धरःश्रुरःशेःदर्गेशःह। व्हेंगशःधःविदःहवेःगद्गशःगविःधेवःधवःधेरःह। सुर-भें क्विन्यायान्यायी यान्यायायी धेराययायन्या पुर्धे सुर-वरः <u>नाशुरश्रास्थाओं । नावाने प्यतायनार्क्षेनाश्वासार्धश्राने राह्माश्वीपर्देनाश्वी</u> वर्हेगार्गे सूस्रात्व वर्दे वास्रूर न्वित्रा सूर प्यत्र व्यवा उत्रेश सर वर्दे द नश्राध्यत्रायाग्यारासेरामरावय्यारानदेश्चिम् ध्यत्यवानीप्रीतस्यार्थः निरम्पर्देगामक्षिप्रभागम् । वियमित्रभेष्ठित्रभेष्ठाम्यम् नर्दे । वरमी क्षुन्दे कें नाया राज्या विराहर थे रुपानर या निराहे या परि। ग्वितः षटाने व्यानवे न्त्री नशाकी राह्य वर्षे न त्या वर्षा श्री से स्वीत न्दीनर्भाषीत्रत्रम्। यत्रायमार्केम् मार्यादेन्तिन्मः वित्रस्तर्मिन्। न्दार्भेः

धेव'वया ४ूर'ग्री'द्रश्चेनश'द्रद'शे'वर्द्र'वर्द्धेद्रश्चाल्वर'वेग'धेवा ८८.स्.केर.यो ब्रिट.८ विषयात्रात्रा. प्रत्या. प्रत्यात्रा विषया विषया हरमिर्वेष्यराययराने नविवाव। विभागरा कुरायाने नवाया है सुरा । ने ख़ॖॸॱॴॸॱवेॱऄऀॸॱहॱऄॕॸॱॴऄॴॗॿॎ॓ॴॴॶॸॴऄऄॗ॔ज़ॱॾॗॕज़ॱॸॕॗॴॸ॓ॱ यदे न्त्रीनर्भाषा से प्रदानदे विन्यम् सेन्यम् । स्यानदे से पिन्ह सेन् राःस्रम् नक्षेत्राक्षास्य के त्याम् विदान्त्र से स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य য়৻ঀয়ৢঀৗয়৻য়৾ঀ৻ৼয়৻য়ৣ৻ঢ়য়ৼ৻ড়ৣ৻ড়৻য়ৣঀৗয়৻য়৻ড়য়৸৾য়য়য়৻য়ঢ়৻ कें प्यत्रायमा स्थाय दे द्या मी द्वी यथ द्रा स्था यह त्या मान्य निया प्रह्य हा य यःविरःहरःवर्देवाववी रःक्षःवायःहेःविरःहःहेर्र्यःवरेरा ।वयरःवेंः र्शेग्रायायान्त्रीत्रयाशन्त्राणिन्त्रा ।यदीःन्त्रुरःत्यूरःवादेःष्यरःषेत्रःभेवःहेः ;ने·छेर-न्द्रीनशर्यंश्विरःहर-पेन्। अप्तिश्वाश्वरश्यदेः श्लेतः ने। इ.वेदेरत्यर.जू.र्रर.ब्रूचा.क्रेर.ब्रूचाश्वरत्य विचश्वर्या विचर्यर माल्वर लेगा भेरत्या ने प्रश्नेमार पर्मे राज्य राष्ट्र स्थूर प्रश्ने ग्यूर पेर प्र नन्धेम्यास्यो न्वेनयस्य न्त्रेनयः निटम्हरसे रेग्रस्स् । ग्रायमे प्यत्यम् से से प्रदे प्रदे प्रस्ते से सं प्रदे हराशे पर्देराग्री अव यमार्केम् रायदे र श्रीन रायदे । र्गे सूर्यम् न्या स्टिन् हिन् हे के न्या स्टिन्स ने प्यत्र यमार्केम्बरग्रीः अप्पेदाद्या मिराविमारी प्यरासायी वारे निविद्या । यही रा

युवा अर्वेद या न सुन रहें या र्शेव श

ते निश्चित्रभाश्वास्त्र विवाद्दे स्वर्धः स्वर्धः निश्चित्रभाश्वास्त्र स्वर्धः स्वर्

यहें से हे हे हुर वर्रे ५ ने हुरा । के जरे व राणी कु ला जहें व नुका का विश्व का विश

मुतिः इस्यापासी मित्रे स्टाप्ति विष्ठा । वस्य सार्वि सुति । सुति । स्वयः । स्

निरम्दे प्रोप्ति अवि गा त्रुग्याय स्वायाय स्वयाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वयाय स्याय स्वयाय स राउँ सायानु सारायार्से मार्या सार्वे मारा प्यान स्थान स षर:रूष:नकुर:रूष:शु:गुन:प:य:नहेत:त्राःगुय:प:य:शॅग्राःप:ह्या वर्देग्रयायान्द्रायायायायायायायाया इयया ह्याया युन्यायाया र्शेम्बर्धित्रित्राहित्यर्वायायर्देत्यायर्वत्यम्। मृत्याया यःश्रेवाश्वारायास्टानविवाग्रीशास्त्रीनासेटास्या देन्वास्टानविवासेटा राधित्रप्रदेष्टिर्त्त्रह्राशुःग्रुन्यरायरक्षेष्वन्यदेष्टिर्दे । १२१४राषर वह्यायायमा वर्षे रात्रे या त्यायाया र्याया विष्या र्क्के विश्वानुदर देवारा पाया धोर्द हेता । क्रे ना से दाया वा नुवारा से वारा ग्रम्पिन्सेम् । नेप्पेन्धेमप्पमनेन्यान्धेनस्सी रिवास । विस्रसि । गवाने निराहाष्ट्ररातुष्ठायार्यराची प्यतायमायत् वायवे द्वीतवायाप्येतः वा द्वें ह्वेर न व रेवा राप देवे सक्त हेर स धेव पर प्रमुर हे। दे द्वा वे न् हीनश्राधेव निर्देश्वर में श्रूष्ठावा निर्देश निर निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश रेट्रायार्श्रेवारान्देवी:तुस्रायाधेवायरावर्देन्छ। द्वेंग्याधेरायार्श्वेयायाधीः न्वेनशःनुसःसर्भेःवर्देन्ने। ग्विनःनुःनःक्षेःनःन्रःसर्वेनःसरःधरःवर्देनः न्वीं अः सरः वशुरः र्रे॥

ने या हैं न या श्रूमान है। यने मानमें अप्यान मान मे। ममान विवार्षेता

बेन्-नर्धेन्-प्रवेन्नेग्राम्यान्-स्नुन्-प्रवेन्द्वंयान्-इस्यापानन्त्रान्तेः वर्षानिरहानरंषानावादेशासाहेदावानिरहासेदादर्गेषाया देख्यात्रेषा हेव'व'भेट'हवे'ब'श्रूद'वर्देग्रथ'य इससा हुर'सेद'यर वश्रूर'वा दे'पट' श्रे त्वर्दे ने नेरहर्षेव हैय हिंग विषय विषय विषय हैया है विषय अर्वेदःतः धरधेतः वि । देवे हे रः नेदःहः यः वेष्यं वावायः वे व्येदः यः हेदः दे वे वा दर्वेदेः यव र र : दर्गा दर्गेय : यथ अ क्रिव र रे र र र र र क्रु न वि व र य र पेर र यन्ता स्टायाधेनायदे द्वायाहेशायाश्रम्भाने। न्दार्येदी विटाहार्देवा ठेग । ठेश ग्रुपाय शॅग्राय पदे पदेगाहेत पदे च सूर् इस्य हो र सूर त बेन्यर वशुर न्वें राने। हिन्शी राने राने रामें प्रेन्यर वहें वाय हमा र्राचित र्षेत् सेत् र्केषा प्रदेशेषा स्थानस्य स्थानस्य प्रमानस्य होत्या रेग्रासन्सान्सान्स्यानस्यान्त्रास्तिन्तान्त्यान्ति धिरावा निराहासेरायरावसूरावसार्सी । सराविवार्धेरासेरार्सेयाविः रेग्रायाययायर्यायदेखें। देयाविरहायाक्रेरायायाविरहार्येरायाधेवार्वे। ¡बेशन्तुःनवेन्द्रेशर्येरःश्चानवेःहिन्याविनेनेन्त्रःमन्तुःसवेःदेवःश्चानरः वर्देन्याम्बर्यान्तुःसायवेःखन्यायासुःवर्देन्यमःभूनर्दे। ।नेयावावदेःसूमः वर्देन्यः इस्रयः यार्देव्ये । वायरः वासून्यये दस्यावाववा वस्रयः उत् ग्रुरः बेन्यिः क्रिन्त्र्वार्र्स्य । स्टाया हेश्या सेन्यि द्वाया है। ने दे ने हेन् र्'त्रअप्टिमाहेवर्। विस्थायानर्वाचीर्यप्यानप्यान्यीरासेवरसेर्याः विस्था

ण्याने द्वाराय स्थान स्

मशुश्रामाश्चेदान्ते। विद्यान्ते। विद्याने। विद्याने।

यःश्रेषाश्रासाहे नराये दार्पये ग्राचाया है श्राद्या ग्रीत्रा । हे नरा येव पाया देव अपवेश वर्ष के प्रमायेव पार्चि के मानी प्राप्त प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय प्र ह्यों । महार्थे प्रवाद विवा । प्यवायवा नहा क्षाय व्यवस्था विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास बेन्यम् क्षुयान्म। नेयविवन्यव्यव्यव्यविषार्थेन् ग्रेनेन्यमें बेन्य ८८। हे.चर.जेव.स.जम.च.८८.सर.म.चम्याम्याम्ये हे.चर.जेव. यःधिनःग्रीःहेःवरःयेवःयःसिं येनःने वियाञ्चःवाने नियाने विवाहेवःययेः ग्वाहें नाया द्वेत के विवा हु क्षान धेत है। ने क्षम तायत या वा वा की वाका सा क्रथ्यः ग्राम् स्वेतः सम्बद्धाः स्वेतः स वह्रमान्नेत्रः म्यायायायाये स्वाद्धान्यः म्याया स्वाद्या । देया । देया स्वाद्यायायायाया । देया वर्देवर्वअभ्यर्वे । व्यवायमा उवर्यः श्रेम्श्रायः सेद्रायः सूरः व्यवः व्यमाः यः र्शेनाश्चाराध्या श्रेनाश्चा गुर्ना हैन हुने प्यतायनाय सेनाश्चाराधेन साक्ष्म વ્યચાયાજુઅચાયાપીનાર્કે 🛭

स्रमः वे वा इस्रायत्व की स्रायेत यात हो है स्रायुम्। यित के साम्याय ही मा मश्यिदियें भेरिके हिन्। निर्वादे किन्ययम् मने स्वाप्यह्या प्रसूत्र निर्वादि । यर्नरनेवे सुन भने नविन पर्ने न सर्म सुन भवे र स्वे र स्वे र सुन भने पर्ने पर्न नन्याने भाने भी मिर्ग्याने स्थान स्य धराम्बुर्यास्या दर्ने वे भीव हु मावर के चरा सूर हैं। दिने सूर धीव &्य:इस:पर:५३ॅ५:पदे:इय:५३ॅर:पर्य:पाय:हे:वेट:ह:वेश:ठु:प:रट: निवरग्रीश्राग्ननार्भविषार्भेन्द्रादेश वेर्केषासेन्धराष्ठ्रणान्द्रावर्नायः र्शेषाश्चारतिः इस्रायानत् वार्यो नेतिः श्चीत्रस्यान्यति । रेग्रास्यान्यस्यान्त्र। नत्त्रार्भे ने न्याम् न्यान्त्र नियाः हु हे न सर विद्यार वनिन्यायादात्राध्यदाक्षेत्रहेत्ति। निष्ट्रमायाहेत्यादानित्रहेत्यासूत्रवर्षेत्र भेज्यासम्भूताना निराहानेयान्तियानेयास्यास्यानिया मुँदिः भेगाः १ अर्थः परः गुर्थः परं नगाः वित्रः ग्रीशःग्रुनःपाने साधिनार्ने स्रुसान् रोशाना स्रुग्ने निराप्ति स्यापर्गे रा यनेनेवित्वकेन्याननेत्र्यारुव्ह्यायरव्यूरमें विश्वनेकेन्यवर वेशप्रदेख्यामी भ्रुषादे ग्राव हैं न हम्रायाम प्याय भेरती है न स्रोत नतुन्तु नह्ना भा हो दाया विदाय निया विदाय केशानाश्रयानशा यदी यानहेतात्रशासी राहण्यरानीता से दाराहें नाशासरा श्च-नःधेवःर्दे॥

यहिश्वास्त्र श्री न्दर्से स्वर्णियायदे नुश्वास्त्र श्री साम्या निवास स्वर्णियायदे श्री स्वर्णियायदे श्री स्वर्णियायदे श्री स्वर्णियायदे स्वर्णियाययदे स्वर्णियायदे स्वर्णियायदे स्वर्णियायदे स्वर्णे स्वर्णियायदे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्ययदे स्

स्वाः अर्हेटः यः नश्चनः स्वाः श्वाश

स्यान्य स्थान्य स्थान

ने त्य भ्रें वा सर निर्वा निर सुर से वाहिश सर निवेद वाहेवा हु ग्रा श्री वा व पार्वे ५ मा अ १ विया प्ये ५ श्रुष्ठ ५ १ विया पर्वे ५ श्रुष्ठ १ विया पर्वे १ श्रुष्ठ १ विया पर्वे १ श्रुष्ठ १ गर्वेर्नेन्नेर्नारर्षेर्न्यावर्ष्यावर्ग्नेष् । वर्षेन्यः श्रेव्यर्भेन्यः स्थान्यः नशुरुषःग्रीषःगर्वेदःग्रेदःगशुष्ठःगशुरुषःह। नद्याःहःश्चःनःदेवःभेदःषः न्दा नन्नाः अदः सँ रावशुरः नः नदा क्षेष्टेनाः रुवः नुः वशुरः नर्दे । नेः वः <u> ५८.स्.च.च८मा.२८.स्.र.स्.म्.स्.म्.स्.म्.स्.म्.स्.म्.स्.म्.स</u> पिर्शास्त्रम्भारावे देवा सेटारी स्टारीवे स्माम्याद्या स्यान् प्राप्ति सेटारी स्टारीवे स्याम्याद्या स्यान् स्वा है। नर्भरत्वा ह्यान्यन्यन्तर्भे में राउदानिवादी। विने दे संभीराध्याम्बर्धर्याः हे। स्वान्तेन हेर वर्त्रायाया हे वर खेरायाया है व्यापारी । वर्वाः र्षेर्भायीत्र हुर्भायवे के । हिन्नमायेत्र हेर्भन्न वाधित् ही । हिन् ही निन्ना वे से द स प्येवा विश्व र्शे विश्व श्व विश्व विश् नविव मिठेग हुनुन व मार बना मिठेग य अर सुर में न् स ॲन्स नविव र्नित्राग्रम् अरासे प्रिन्यम् वर्षा यद्या यहिया यश्रासे दाविदार्

सुर्-र्से इसस्य ग्रार्-पिंडे प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

ने सूर निर्मा अन् के ना मी श क्ले निरम् दिना मा कहा नु प्रसूर न गशुरुषात्रे। भ्रु:न:इदायाधी:वन्नदाय:दरा व्यव:ग्रुषाय:कुदःर्वेवाय:दरा यश्यात्र्यात्र्यात्राचित्रं भेत्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे न'न्र'दिन्ना'न'न्न्ना'र्र'में र्रेने अ'ग्रुन'सदे' ह्रो'दिन्ना'धेन'सअ'न्न्ना' <u>शृष्टीः इसरारम्पा अळव हेन्यी राज्य कें ज्ञान्य प्रमुक्त</u> नेते नुस्राम् मार्था मार्था मार्था मार्थि । विस्राभी मार्थि निस्राभी मार्थि मार्थ मार् वशुराने। रायशान्देशनन्यान्दरार्ह्रम्यदेशनन्यायानेशास्त्रम्या हिन्गीराज्ञनमदेशें रें नाधेनमदेशिन्हे निमन्त्रस्थानीन में नःइवःमःवःदःसळेदःश्चेवःद्ःशुरःहेःश्वयःद्ःसेःइवःमःनविवःदे। ।देःश्वःसः धेव'सर'रद'मी'अळव'हेद'ग्रेश'ग्ववद'र्'ग्रुव'ग्रुट'सूर'र्श्चेद'र्सेद'र्देव'दे' धु समाद्वरमा से प्रमाया वा सुमा हिवा ही मार्से दाना सर्के दार्से वा ही माद्वरमा

भ्रे.श्रेन्यायाभ्रेय्न्यते क्रुं अळ्व्यम्भ्रव्यत्वे अव्यन्ते प्यतः क्रेन्या अप्येवः र्वे। ।वर्रे वे अञ्चुमामहेशस्ट मी में वे हिन् ग्री अगुन पवे स्ट निव् दु लट. तर्ट्रेट. का क्रि. तर्रा अ. श. लट. या विष. ट्या. तर्ट्रेट. स. क. ट्रे. तर्रा स. क्रि. वर्चश्र-रेट.य.सु.कु.जश्र-प्रथित.स.सु.चर-वर्चेर.यदु.यावयःसु.वर्ग्या यदे देवा राय प्राप्त से वा वा प्राप्त से वा विवा का प्राप्त में प्राप्त से से प्राप्त से प्राप्त से वा प्राप्त से वा प्राप्त से प्र से प्राप्त से प्र से प्राप्त से प्र से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप र्श्वेययाचेन्द्राचित्रम् । दिन्द्रम्बन्यन्द्रान्द्रम्ययानु यहियायदेगः मुर्देव वया सूत्रा नगाय परिका के क्रिन पावन पर्वो गाय पीन की। या हे गा मुः क्रेंब मा क्षेत्र के विश्व धेत सूस्र त'ने सूर से न सुर से विश्वा सुर साम धेत पर से न दिन सुर यदःवियशःयविदःसःधिवःह्ये ।देःक्ष्र्रःयाशुद्रशःसदेःसर्देःतःयन्नियःसः।यः गरिमा'धेव'हे। अर्दे'त्यरूप्ट'वे'र्श्वेव'र्र्क'त्दीर'शुरुरहेरूप्टेग्पहेरूपाठिमा'हु' गशुरुराया देः पर वर्षा गुरुष्ये व सुरुष्ठे गामी राष्ट्रे गामिरा परिया हुः क्षे स्ट्रान्ते से स्ट्रेरा हिषा गान्त्रा सर्दे विषा श्रुप्त हो। श्रृव ही अवदाया नहेन्यते भून प्रत्यापने निष्या स्थापने प्रत्यापने प्रत्या ने प्रतिपार यर्स्यमें वर्षे सुर्मु वर्षे वरत् वर्षे वर हुर हुर हेश। हिंन देवे से प्रवाद दी। क्षेत्र के तस्य श्रामार हुर न। दि हेन:यने:वे:अ:धेव:वें। विश्वाम्युरशाहे। ने:व्रु:धेव:व:यर्क्री:व:माठेमा:ग्रुर: वर्ते न दुवा ग्राम वर्त्युम हे। दे इस्य या ग्रीया में वाया दुवा हु में सामा विदाद

सुभः सुर्यायि । दे प्रवित्तः प्रश्नितः दे प्रवास्तः वित्तः वित्रः स्वितः स्वतः स

यशः तुरुषः सः कुन् च नदे छे अः यः दे। नद्याः भूनः देवाः रे रे रे रे रे रे रे सक्ष्याक्षेत्राचीयान्त्राच्यान्त्राचीत्राचीत्राचीत्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्या ग्री प्रत्यकार्य प्रत्या स्थि अवार्य देवा के प्रत्ये या का वर्दरन्ते वर्षास्य स्राच्या स्राचित्र वर्षा स्राच्छी स्राच्या स्राच्या स्राच्या स्राच्या स्राच्या स्राच्या स्र होत्रसर्वित वत्वा वह्य राज्य अर्धित विदेशोत्तर्तु विवासवे से स्ट्रा वत्वा ग्वितः धरः सेनः मनेः भ्री । नेः धरः सः भ्रीतेः नर्दे सः सें त्यः सरः गीः रें से सः ग्वर,र्,ग्रुन,रासेर,रस्य,र्यस्यस,र्रे,म्य,र्यस,द्वी,सदी,यदीनम्यासेरः र्वे । क्रुन्याठेवाधेव्यवेश्यव्यव्याम्देवाः पुःवर्वेवाः प्रश्वः वश्यशः ग्रुर्यः । कुन्रें अभ्यर्ष्यम् नार्श्वेद्यम् अभ्यात्रे । विश्वास्य निश्वास्य स्वित् यदे हे या पार्त है। या या हे स्थाय दे या विया ग्राम्य या सी स्थाय स्था स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स वेंद्रशर्श्वेंद्रायशानुश्राया कुदानेंशायि क्षेंद्रित सेदारें स्नुस्राया दे स्नुप्तायश

বাদ:রবা'বাৰ্ব'শ্রীঝা বাদ:রবা'বাৰ্ব'শ্রীঝ'বঝবাঝ'ঘরি'অঝ'শ্রী'রের্ঝ' नुःवःवेद्रशःश्चेद्रायरःवर्षुरःहे। रदःवीःदेश्वेशानुनःववेशवदः वरावाव्व ग्रीशानश्चात्रास्तरे व्यवसातु व्याने प्राप्तराची में में सामाप्तराचीर वारा वर्षा गवरमीशर्येदशर्भे रायवेसी रो । रेस्ट्रिस्पर प्रह्मायायमा सुर्द्र वन्यः श्रॅनः भ्रमः हेवा हेनः वादी । भ्रेः विद्या होनः संस्थाने विद्यया सेना |पावर ग्रेश नयमाय तापवर ग्रेश वास्तर प्रमा | वियापाय राज्य विद्यायायया भ्रुवाववायश्वयायस्य विद्यास्य स्यास्य वित्येत्रित्रायर्गेषायम् श्रूर्वित्येत्रम् श्रुव्येत्र्र्त्र्त्योषायम् यर्देत्यस् अन्तर्गेर्दी दिवासायदेगिहेसाग्रह्मा होर्हेरान्त्र्यायस् वाया हे पर्दे है जाब्द पशुराद्या । दे से दायर प्याप्त सम्बद्धा । दे न बेद नेरके मान्यादश्र किया । नेर संभी नर ही नर वश्र । । कर प्र वश्र क्रम् क्रम् क्रम् वात्र विषय क्रम् विषय क्रम् विषय क्रम् विषय क्रम् र्शेर-श्रिट-न-५८। १८े-त्य-श्रेष्यश्चर-म्बय-नर-त्यूर्म विश्वाशुर्शित्र-हे।

यायाने त्ये ने यावान त्या माने स्वानि स्वान स्व

श्चेर्यायात्रास्थायात्री । स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया । स्या । स्थानिय । वर्देरःश्चे नरव्युर्वे अपवे रेंबर्जे विषये हे श्चे नर्थ श्चे दे नर्या इसस रदानी दें ने अनुनायदे से से ना पेत्र ग्रादायस कुत् में सामाद्र सानुसाय न्दः स्रन् रावे श्चित्रं सेन्द्री कुन्या देया धीत्र रावे श्चित्रः सें ले त्या विनः धारः सरः में अळद हेट ग्रेश से से नास गुन प्रस्त नुस्त दर्गे साम दर वहा से दर मी में में अप्राप्त निक्र ने क्रून मिडेमा अप्याप्त की प्रमान निम्म निक्र मा निम्म निम निम्म निम् ८८. धेर. में श्राचलिय हों हे . केर. त्या हे . केर. टे. केर. हें दे . केर. व भ्रुविस्थेन्त्व। भ्रिम्स्यान्धन्त्वे कुन्त्याहेयान्वनः वेव। वियानश्रम्या निरा स्रम्भे भूमान् स्रमान् स्रमान् स्रमान्त्रमा स्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमा क्रिंशः इस्र शरी। विविद्धः हिन् द्विनः विद्याः विद्याः विद्याः स्रोतः हो। विनः न्याः र्रायळव् १३८ ग्रीश्रार्शे श्रीत्रा १८ प्राम्य मुत्रायिया महिनाश्रास्य देवाश्रास धेवा विशर्मानी सर्व्य हेट् ग्रीश से से नम्मुन व कूट् मान्य पाहेश नविवर्तुः क्रुन्गिर्वेगाः हुः नविगाः हुः सेन्याः सेन्याः स्वानित्रः स्वानित्रः स्वानित्रः स्वानित्रः स्वानित्र यश्राग्रदा नायाने ख्राक्षी नावन प्येन ना क्रिन्ने प्रवर्ग प्रमास्त्री प्रमुक्ते विरामशुर्यार्थे । सर्देर्त्रर्रा में रें में यानुनायि मान्न धेन न धेन द्धवान्धिन् प्रवे सेवायाययान्धन् वर्षेत्र प्रदेत् न्वीयाया सेवायायाने बेट्रप्रश्चर्मी दिन्त्रिं श्चर्ट्रप्रदेश्च स्रमान्यवायाप्रदेश्यया श्चे स्रमा श्रीम्या कुन्यन्नायायायम्यात्र्यस्यास्यस्य विश्वस्यास्यस्य विश्वस्यास्यस्य विश्वस्य

मायदे दे यदे यद्वे अवश्वस्य उदार् नेयामर में याने विष्ट दार्थ ৢয়৾য়ৣ৾য়ৢয়৸ঽ৻৴ৼয়ৣ৾৴য়য়ৣ৾ৼঽয়৸ঽ৻য়৾ৡয়৻য়ৡঀ৻য়৻ঢ়ঽয় नमग्रामित्राम्य भागी प्रमुक्ष मुख्य भी कार्य म्या मुक्ति मा श्चित्रसेट्टी वर्टर्ने कुट्याडेगा धेत्र रासे व्यायाया ग्वत् श्ची स्याया यः क्रुन् याडेया प्रासी सुरायदे से स्रोत्या । निये स्वार्षे स्वार्थ से नियम प'त'ग|त्रश'रावे 'र्रेग'र्रु' 'पश' गुरु'पवे 'स्रेट'त'ग|त्रश'रावे 'स्रा'र्रेत'र्रु' र्वेवे ' मद्रातिविः र्रेद्रिः द्वित्राया त्याया स्टार्निया मद्रात्रेया या प्रविद्या कें विदेवे ग्राम् वर्षा में अर्भे नास् अवे त्या सुरा सी वर्णम् स्मानी हीं मान इसरायदेर्द्रद्र्यायराधरास्रीयायात्री निवित्तकुः परित्रोयापायाया कुः <u> २८.५च ४.५.२५ म.५.५८.५५५ विष्ट्र. १५८.५५५ के.५८.५ के.५८.५ के.५८.५ के.५८.५</u> धराग्रीशाम्याधराचराग्रुराधावर् ग्रीत्राग्री क्रुवाशी ह्याधार्वि वरार्धे दावादी देवे हे नर लेव पाउव निम्मा सर भेंद्र पवे नद्या में अ क्रे न है अ क्षु इवर्त्वे लेश ग्रुम् देवाश श्रें इट्रिंश में इस्राय महावी अळव हेट्र ग्रीयाय गुनःमः हे। ने क्रम्भः वः क्रमः में न्यू नुते क्रिनः हे नमः ख्रम्भार्यः विष्टान्। गवर र त्युर र हिर् से रेग्या र साथ वित्र है। देवे श्वेर दिसारी र र में सक्द हेर्गी अ.स.चीय.सह.मैं. २४.ची.यह.विर्.सर.यश्रामी अ.स.विय. यः धेर्मा शुः मह्या यमः गुर्दे। । यमे स्थूमः यम् सामित्रः विते स्थूमः । यमे स्थूमः यम् सामित्रः । यद्यः स्वार्म् त्रुं वित्राम् हे श्रान्ध्या श्राम् हे। क्रिश्म प्राप्त विवास यद्यः स्वार्म स्

न्दे न्यू अः अदे ने दान १ दो ने भू मान ना सुमारी निर्माण के ना हा वर्देर्पायास्यान्तेराहेरावर्वायायया हेरवरान्न्याने हेरवरा येव में प्येव प्रमायग्रम् । विश्व माश्यम् भाषा प्रमाय विष्य मित्र प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय प्र र्वे । दे प्य मदः वमः पदे अः सुअः पदे : त्तुद्र अः श्रें : वे अः वः श्रूदः हो दः प्र अः दः सुदः र्रे दे हे नर तुर नर गुरायधेद या नर्या दे रे खेद य रेवें । रे यहिष याडेया हु पर्दे द त्व ज्ञु निवे प्यक्ष द्वर ज्ञेद पर्से इस्रक्ष याडेया हु प्रज्ञू र निका गर्डेन्'स'र्से'न्र्रम् गुरुन्त्। तुरु'स'न्र्रम् स्मावर्'न्त्। से'न्र्न्तुन्नेर यःश्रेवाश्वासम्बर्धश्वाद्याविवाःहुःदश्वरहो। स्वान्तेद्वादायश्वराया नुन्निरमारने से प्षेत्रम् । हिन्य में न्राय्य महिमायकुरा । से न्रा निरमीर्यायन्यान्दरन्ती हिन्यसन्तर्याते स्थायागुत्र । तुर्याञ्चयार्थेयार्था यशःग्रम्। येवःसॅ सम्हेम्येवःग्रेगारेग्रम्प्रम्सेव। ।देःव्रवःयशः <u> चे</u>न्भ्याचेषाकेन्द्रम्या विश्वार्था । नेप्श्वान्यन्यास्त्रार्थान्याचेषाः धीवन्त्रन्त्वान्त्रात्वर्षाः स्वर्षः सः र्देवः स्वेदः सः दृद्याः सद्वाः सद्वाः सद्वाः स्वर्षः सः स्वर्षः सः स <u>दर्भ ग्रुज्यदर्भेद्रस्य विष्णुरुष्युर्द्भात्रम् यथाग्रुथायः कुर्</u>वेश यन्ता अञ्चर्यायन्त्रम्यन्ता क्षेत्राच्यत्रक्षेत्राचासुनस्यायः वबर्मः क्षेत्रुमा व्याप्ति । प्रकामिका मुद्दानिका मुद्द

यिष्ठेश्वराष्ट्राच्यते द्वियाश्वर्यायाः यदी हे स्ट्रेन्यन्यान्दरस्टार्से गिरुशः स्टः चित्रः गिरुगाः स्याधितः स्टा स्टा नितः वादितः वादितः वादितः वादितः वादितः वादितः वादितः वादितः वादि श्चित्रं हे प्येत्रश्चरात्वा वदे व्यास्त्र होत्र वर्षे तक्कत्य वाया हे स्वर्धे क्रमायमायवा । स्टर्नियं सळव हेर्से न्यर प्रमाय विमाय हेर् मुश्रुद्रशःश्री । देःषः नद्रमाः सुदः शें ख्रशः दें श्रः मुनः पदेः श्रः द्रदः पदः प्येदः वनी स्टार्सिये अळव हेट्र हो प्रहेगा गावरा पर दर हो ख़व पर प्रशूर हो। न्मेर्न्स्नायरायरायरायविद्यात्रायरायरायरायी सळद्ये हेन्द्रायराय श्रेव मानविव के । नि स्थापीव सें मानवा के वा म्रेम नमेरावावसायिते से हिंगायाया सार्वा त्याया सार्वा वेया याब्द्र:म्यायार्थ:मुर्नेर:व:चु:क्रे:क्षेया:यार्थव्यःयार्थर्यःस्र्रा । यद्याः भ्रे पहेनानी अळव के न न स्था स्वापन वशुरावासेदासायां के प्यारा सुरासेदासमा वदवा तुः वत्रवासास देवासेदा धरःवशुरःहे। वह्रवाःध्रेवाःवारःधरःश्रेःस्टरःववेःध्रेरा वेशःश्लेवःदर्वतः श्रद्धाः भ्रुष्टा वर्षे द्वा वर्षे द्वा । वर्षि वर्षे द्वा वर्षे द्वा वर्षे वर <u> शुः तुरः वः श्रें गुश्रः वश्यः रहः विवादाः प्रदः धरः धरः वी विश्वः हः धरः दः द्री गुश्रः । विश्वः दः द्री गुश</u>ः न्वीं अप्ते। न्ये स्वाम् ब्या अप्तर्से अअअम्म न्यु प्रेम अप्यान विवासी । ने भूर पहें क राष्ट्र के दारा का निवा में का निवा के दारी का निवा

हेर-वर्त्रमायमा वर्षान्ते हे वर्षेत्रमायमा । वाव्र र् व्या अधिवा । गाय हे मावव व येव से द सम् । म बुर खेँ द से माय व म बुर दु मेर्। विकारमा वह्यामायमाग्रमा रे.म्रेमस्रम्भेग्यमावदानर्याः येनने । स्टार्सियमिनियरने प्टिन्स्य सुना द्वेरा वियम्बर्धर स्थि। देशक्षासुन्नराम्सस्यरासुदार्सात्यराद्वित्वविदार्यते वद्यार्भे वर्देवासः मदी नन्नासेरारस्यान्याहेनासम्वर्ग स्रार्मिन्यासेनासेनासन्य भे त्वर्भर्भर्भिर्वे त्र्यामुन्यवि द्वर्भाम् वि स्वर्भा न्यायी क्रुन् खे वासून प्रदेशिकाया स्टान्याया नका ने खूर सर्वेदान से दर्शि ने भू तुवे ने गुरु पा इसरा ग्रीया निमा सुर में जिया नर मी है किया नर ह र्'स्रिन्स'स'मिर्वेर्'स्रेन्स्स्रिन्स्स्रिन्स्स्रिन्स्स्रिन्स्स्रिन्स्स्रिन्स्स्रिन्स्स्रिन्स् ब्रे। गडेगायप्रमान्यप्राचित्रायप्रमानेत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राची क्रअन्याः अप्टेर्ट्रेन् अस् यादः वयाः स्टान्यवे व से दः स्टान्य व स्वाः यह दः ग्राहः द्रसः नरदर्स्यान् पर्वो नर्भाष्ट्राना इसान्या से हिनासदे हिनार्ने।

 गर्वेर हेर र से प्रमूर में इरे निवित र मिर्ट स्मिर स्म धेन्द्रम् बुम्र न्द्र सेस्र निव्दुर् से से स्याप्त हो । ॡर:अ:अर्वेट:नअ:वेअ:वेअ:प:रट:न्गव:नअ:अे:वहेंद:पवे:मर्वेट:हेट: वर्रे क्रेंब नी। गुन सबद बुब सेंह साधिव सामार्वे द ने द से वित्र में । नेशक्रिन्देश्वरित्यान्ध्रित्यदेश्चर्यश्चर्याः वर्षेत्रवेत्वर्यस्य उत् सबरःगिरियोशारादुः झारादु। सूजादीः सूजादीः सूचादीः सूचादीः नेशाराः गर्वेद्रासंभेद्रासंभा श्रुवासंधिद्रास्था देक्षेद्राञ्चेत्रस्थाः स्वार्वेद्रा रासेन्। विकामस्रम्यापाना स्मानक्रम्येन्वित्वित्रित्वास् अस्त्रेत्र वेश पवेट प्राधेत् स्त्री दे वित्त केट त्य द्विट प्रदे स्नित्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् बश्चूर्'यदेःनेस'यार्वेर्'य'सेर्'या ह्रस्य सम्वर्देर्'हेर्'र्,से'यहेर्'या सेर् हे। ने ऋष्यधेव व र्शे श्रिवे वर्ने न मा शुव श्रिन साधेव मा इस रापार्वे न हो न र्निन्नुन्रस्थासेर्न्हर्। खरायराप्रस्थासेन्स्रिक्ष्येत्रस्थास्य येव'रा'क्रम्थराग्रट'इट'टेश'य'से'सबुव'राया दे'प्पट'देग्रय'रायान्युन' न्वीं अन्तर्भेग्रायावावन् के विगार्सें वा सर्भेया से दिशाया सम्भाया वर्षे पिर्यायेत्र'त्र'वर्द्र'प्यर'पिर्याञ्चर'र्द्गिर्यार्थे'लेयायार्द्रा वर्द्र'पिर्याञ्चेत्र' वायदी पाराप्रकारा के वा के का क्षेत्र माप्या दे स्वराधित मार्थ कु अळवा ग्री देवार्य या से दायर है । श्रूर देया यर ग्रेन देया वे वा वे दा है न देया विकास से स्थाप के स्थाप के विकास से स्था से स्थाप के विकास से स्थाप से वेर्'ग्रे'इ'न'वस्राउर्'सवर'गिरुग्राराया केंपान्ने केंपाने वारी नेश्रासमित्रियासेन्यास्य स्वारित्य नेन्द्रात्यायान्य स्वर्थन्य

न्याः अर्हेटः यः नश्चनः स्वार्था

याःश्चित्त्र्याः वित्रां वित्

गशुस्रायाने सार्श्वे ग्रायाञ्च्या सात्त्रस्य सार्याटा विवासायर विद्यूराया दे। रदःचित्रः व्यद्भाद्यः व्यवसः वार्तिदः वर्षे देशः वर्षः व नन्गान्दान्नन्यात्यासुदार्भे नहेनान्याधित्रायि हेनान्दानहेनायि स्थित्र गिरुशार्थेर्पायशा स्टानिवामाववार्षितास्याहेवार्पायहेवार्पास्थेरा मने निरम्भायन्तरमायने वर्षे । यह्वामायसायमा सुरमें स्पन्य ॲंन्'अ'भेत्र'नन्ग'ख'अम्। ।सुम्'र्से'ने 'क्त्रअ'र्धेन्'सेत्र'ग्नम्'र्धेम्'रदेन्। |गाववःहेरःथॅरःवःहेंगःयःवरीरःवशुरःव। ।गाववःहेरःरे सेरःरेवे धेरः वर्रे हेंग पर्वे विश्वार्शे विर्वादित स्तर्भे स्वर्धित स्वर्या स्वर्य स्वर् यानम्दाराद्यान्याने निवेदात् भीयायम् ग्रास्ते दे हितायया नद्या वे मात्रम्थः ध्वरक्षे प्यर्देन मानः धेरः यदम्। प्यिनः क्षेत्रः ने धेरः ध्वरं देवः क्षेत्रः । नःसेन्। । गावनः नःगानमाः धनः गावनः सेनः गा त्रान्यः निन्नाः नेः ग्रा बुग्र राय अपने 'हेन' पावन' हेन' सेना । हे अप्से । पान पा खून हे 'खूर्य होन'

य.जर.र्टर.र्ज्य.स.क्षे.येजू । वा बिवाया.र्ज्य वे .क्षेत्रा श्चिय वा बिवाया.र्टर.र्ज्य

दें व सुर में वर्षा पार्च या निवा धीव वया सूत्रा व रे पार से सेवाया है। स्टार्से ख्रायानहेन नगान्त्र प्रत्येषाया स्टाम्स्यास्य स् रायमा सर्ने यमासुरार्ने महेत्रत्याधित मासुरमा । दे सिरासुरार्ने वर्षाउषाचर्यायाधेवा विषार्शे । याववाधरास्र सें कें या शास्या नन्ना धेव व त्य य न्द्र हो न स्य विना कु त्य हु न न हो न स ह वर्षेयात् माश्रुद्रशाते। सुदार्था ने से स्वर्था मन्या मी है मनः सुदा सुना स्वर् दि मश्रे स्रामें ख्रामें हे नर ह्मर नर हु नर वर्षे द द्वीयाया हे ख्रे द स्र र्रे इस्र राग्ने क्रिंग्य प्राप्प राष्ट्रे प्रमासूद सुद सुद राष्ट्र सुद राष्ट राष्ट्र सुद राष्ट्र सुद राष्ट्र सुद वर्षेश्रासुरार्वेदेः क्रुवायायरार्षे । व्ययार्वे । व्यवारे ने न्वान्वन्वास्य धेव ग्रम् निम्द्रिक्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र र्शेनार्यास्त्रस्य राज्ञीनार्यासदे छे । त्रीनर्याष्ठ्र । यस्ता हे त्राया से ति । हर वहेंगायानविवात्। गाञ्जायायार्थेग्यायार्थेग्यायात्रीत्रयात्रित्यात्रात्रा व्यानन्याः तुः वर्हेषाः वीं स्रुस्यान्। वें त्यान् चीनस्य ने या बुवास्य उत् वित्याः वित्याः यायमा न्रेन्यावेयरे न्या त्यायायाय स्था । विन्याने न्याकेन

त्रमार्डेश्वर्युर्यो। शिस्रश्रिम्याधित्रार्थेन्त्रम् हिन्द्युर्यस्ति हिन्द्युर्यस्ति हिन्द्युर्यस्ति । निर्मान्ति । निर्म

קפים ביד איישרים שיאייאיים בינים ביד איישרים שיאייאיים

ने ल नहेन न र पाट वया श्रु साक्ष नुर तकर नवे खुल दी

श्वर-ताने श्रु अवसानह्न संदे श्वर-त्र-रेशन श्रु निन्न तित्ति । वार-वर्षा स्थर-ताने श्रु निन्न संदे श्वर-ताने श्रु निन्न संदे श्वर-ताने श्रु निन्न संदे स्थर-ताने स्थर

वर्रे वाष्पराष्ट्रस्य विष्टाराष्ट्रस्तु प्रवाचा हिते क्षत्र वेवा या सम्सा हितः धराम्डिमा मार्ट् स्थिता राज्य सेमार्थ स्थान स्थान स्थान हे प्रमान्य महिन रासर्वेदानदेखें वादाववाता संवाधारा देखें हो तर्वा वे सूस्राय प्राय वनायःश्रेन्यायः प्रदे प्रदेश्यार्थः इस्रयः रे विष्यो प्रायः श्रेन्यः विष्यः प्रदेश वेद्रायात्रसम्भाउदान्त्रीमार्स्रेदायदे द्रिमार्सिसे स्वाद्या सुद्राय द्वित्तर्वे कदा व्हः केतः सॅं प्येतः प्रकाप्यदः द्वाः प्रवेतः विवाध स्थान्य स्थान्ते । विवाध स्थाने विवाध स्थाने विवाध स्थाने व धिव व हे सु तुर् । श्रिन्य श्रु या वर्ष या । विश्व यदे विश्व यह यदे । वर्षेयापम् हेर् केर वर्षेयापमाय वर्षे स्वाप्त वर्षे या त्र या भारत से त्र प्रत्यू राष्ट्री विषय मिल्या की ता से त्र ते विषय में विषय है। इस्रायरान्ध्रनायने साक्षेत्री नाइस्रायात्रस्य स्टन्त्राचापायायस्य दन्सः गुर्भाक्षेत्राचेत्राच्यान्यस्व स्वरायस्य विष्ठा नेवि के ने क्षुं साक्ष्य के निष्ठा भेर्युर्गी। भेर्मिश्रामी म्यामिश्रामी स्थित्र मिर्मिश्य मिर्मिश्रामी स्थिति । वशुरान विवादा हेव केट वर्रेषा पर वर्रेट पर सेट पर वया नर वशुर

चतः त्रहेषायाय्या ने द्वाद्या प्रस्ता श्रुव्य प्रस्ते हो दे द्वाद्य प्रस्ति श्रुव्य श

त्ते : धरः श्चुः न् दे : द्वु र न् दे : द्वे र : द्वे द : दे द : द

यर महित् से अदि दिन प्रेंट् स्प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त

देशवः देवाश्यस्य इस्य स्ट्रिंद्यं वा वादा वा व्या स्था विवा स्टर्गा वे द्रा स्टर्गा स्टर्गा वे द्रा स्टर्गा स्टर्गा व्या स्था स्टर्गा स्टर्गा के स्टर्गा स्टर्गा के स्टर्गा स्टर्गा के स्टर्गा स्टर्गा के स्टर्ग

तुःश्रॅन्यशन्तुःस्रवेश्वानित्रः हुंत्न्यायः वाधितः ह्र्याः विवायः हेत्रः ह्र्याः विवायः विवा

द्युर्श्वेत | मावद्यंग्वेशःग्वर्शःस्य । देवःक्वःश्वेनाः अद्भित्रः न्युर्श्वे । मावद्यंग्वेशः ग्वर्शः स्वर्णः स्वरं । विकर्णः स्वरं । विकरं । विकरं

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

द्रायः वाश्रुद्रश्चात्रे व्याः व्याः देवाशः व्याः व्य

देशमाने के वास्त्रम्थन है। सूरामन्दासासूर देग्रास्टरम्या सुदेर श्चे त्येग्रयम् त्रकम् नुग्विष्या म्हासून् ग्री सम्मान्य स्टान्वेतः हे सूर क्वें नित्रवाय प्रस्थय येवाय पर न्यस्य या देश हेत पर ह्या हे *ढ़ॺॱ*ॸॸॱॸॿ॓ढ़ॱॸ॓ॱढ़ॸॖॱऄॕॸॱढ़ॱॻऻऄॻॱॿॱॸॸॱख़ॺॱऄॱढ़ॸढ़ॱॸढ़॓ॱख़ॗ॔ख़ॱॸॸॱॗ ने'मिहेश'हर'मिश'त्रुट्रश'स'त्य'मिर्वेट'हिट'स्प्रिम्श'द्रश्चेम्श'सेट्रासर' नश्रश्रात्य वर्षेत्रचेत्रसर्वेत्रसर्वेत्रस्थान्त्रम् वर्षेत्रस्थान् वर्षे यः रदः निव रुदः वदः ग्रदः सेदः दें स्रुसः सदेः देशः सः नह्वः सदः ग्रुः क्षेः क्षेदः मुँग्रायायाने वर्षाया र में प्रयापार वर्षा वी वासूर पर्सू वासी व्या धरःश्रूरः नः इस्रशः र्हेदिः धुवः नुः वळरः नुः ग्वृत्वाः वा नेः वश्रः गर्शेवाः सः सेंः ८८.५च्या.ची.श्रीट.च.सूर.५हूचा.सपु.मुच.प्रचेता.मी.सूर्या.स्या.सूर्या.सूर्या.स ठुःविद्य रदःवविद्यसेद्यायाःहेदायनेयायम्दायदेष्यम् सुवाद्यास्यस्य देशसः हेत्यमः हर्ति । देः महिशायमायः नमः श्रूमः नदेः छेः नः महिमशानह्न यःश्रेवाश्वाराद्रोरः ह्यात्रात्रायायात्रवे रहेषात्रयाश्रेषे वदे स्ट्रिरः

ढ़ॕॱ**ढ़ॱॻऻॿॖॻऻॺॱॻॾॢढ़ॱख़ॱऄॕॻऻॺॱय़ॱढ़ॸऀॱॸॄॻॱॻऻॸॱॸॖ**ॱॺॗॸॱय़ॺॱॾॗॕॸॱय़**ॸ**ॱ देशनायदी दे द्वाची स्टानबिव से दास हैं नशास धिव व से से से हो के दि सर्वि-शुंसान्त्रीयान्द्रान्तिवित्रसेदाराः ह्रियायान्द्रान्द्रान्त्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान् धरावशुरार्से । अवावायदी हसस्यारा विवासे दायदे प्रधेरा है खूरा र्दरक्षे। द्ये दे द्या ग्रम्स्य विव से द्या स्वाय त्य वहेव वय हिंगाया न्वें रात्रा नेवे न्ये न यान वहें या वा र्ये या राये खुवा की रायह या राय ह्या राय येद्र-द्र-त्र्म्य-स्र्यात्र वद्र-व्य-स्र्यात्र-हेम ।मञ्जाय-मङ्ग्यः र्शेग्राश्चार्यस्थराते स्टानिविद्योदास्य स्टिन्शुस्य र्हिन्यश्चाराय्यम्य धर्मे वर्ष्युरिते। कें राउदाही कें निवे हैं रिहेर्ड साविना हैं निरास्ते हीरा र्रे। । प्रयम्भारारायम् रायम् रायाने के स्थानस्था स्टर्मी रायाने स्थित स्थित स्थित स्थित स्थान यर्दिन शुयान् हिंग्यान् ने वाराप्येव हिं विया शुर्येन ग्रामा ने ग्रायायायीता है। नवि'नक्कु'स'स्था नर्देश'सें'मडिम'मी'सू'सें'म्ना । ने'वे'ग्वाकु'सू'सेंर' नर्हेन्। । याडेयायी सूरि हेन्यार धेव या। । ने वे ग्यूव शे सूरि या । वे या

केंश मिर्मा में। रहार विवासे हार में हिंदा है हो हैं मार्थ मार्थ के शाम् में हो। हैं हा क्षेत्राह्मण्यानुयायराम्यास्यास्यादेष्टीरास्य ।देयादामानुयायायह्नदाह्या ग्राञ्चन्य प्रम्हेर प्रमेत्र प्रमः धेर् प्रमः प्रमेत्र प्रायः प्रमायः प्रमेत्रा विवा धेर्। वर्रे । धर नह । या अ । जुर । संदे । जै अ । सा रहर । तु स अ । जुर । न वि त जी । मा जुन । अ नक्रुवःसर्वेदःनःवःदेःषःक्रेःनःसँग्रयःहेदःस्यादेःद्रगःग्रेयःवे हुदःनवेवः र्निन्देवर्धरायहिंवरया म्वर्धेरवहर्षा ग्रह्मया मुह्यस्य ग्रीया वेर्नेर्पा ग्रह्म नविवर्र्भेर्ननविवर्र्भ्यत्विवर्श्वेष्ठा श्रीष्ठा श्रीत्राच्या स्वर्भनविवर् बूट'नदे'ग्रा बुग्रभ'नक्कुत'ने 'हेन्'रूट'मे 'टें'ने अ'ग्रुन'सदे'ॲन्'सर'दहेन्'स' वे निवर्वेव वहेव धेव वा दे धर रहा कुर वा धेर पर हिंद वर्ष वश्चा ने वि ने भू भी का कर स्टर्स विवासे ना स्ट्रिस के स नेविन्देन्त्र्याक्ष्र्राच्याम् प्राप्तान्त्र्याम् वित्राचेत्राम् वित्राचेत्राच्याः ग्रीशः ग्रुवः प्रशा दे छिदः द्वेदः यः धिवः वे । वादः दः श्रूदः वः देवेः स्दः नविन ग्री अ क्रेंट पर ने ह्यु ग्राप्य के नाका प्रति क्रेंट प्रत्यक ग्राप्य करते। ह्यु गुवे रदाविव सेदास हैं गुरु साधेव स्था गुरु गुरु तरह व से गुरु दारे वर्त्रो विदेशकी व्यार्श्याशवदीर्याने हिन्द्र सेन हिन्। विदेश हेन र्यः हुः ज्ञायायः यरः विद्यां विद्याः नुष्यः यः स्यायाः स्यायः स्टायविद्याये । यदे प्रमेर प्रस्था स्थान में प्राया मा स्थान स्य मः भूर है कें निवे कें निवे कें निवाधी ने निवाधी स्मानिव निवासी न

नन्द्रभः भेदः हाया श्रेवाश्वारा दे द्वाया स्टान विद्रासेद्र स्टान श्रुवः मन्त्रमार्थित्राम् । देन्विवन्तुः हम्मार्श्याश्रायदेवायरपद्विवाचेरा श्रुष्यायावत् ग्रीश्राहम्मारवह्वा सम्भेषामापान्ते के निर्देश्वित्यमि । भ्रेष्य प्रमुन्त्र वहुन् ग्रेन्स्य में न्भेग्रयायायाया अन्यवे भ्रम्यायायु ने न्या है स्ट्रम् सूरायाने या सूरा नवे नह्न सर वहेन सर्हा गहेर वें ग सवे कें रे क्र वहेन संग्र धेव'धर। क्षे'षयाची क्षेत्राचा न्यान क्षेत्र न्यान क्षेत्र व्यान व्यान क्षेत्र व्यान व्यान क्षेत्र व्यान गवराग्री अः क्रेंट प्रस्पदित प्राधीत त्रवरा क्षे प्रयास्ट प्रवित यो दासरा हैंग्रथायायायीताहे। द्येरादाग्राञ्चग्रथायह्रदायार्थेग्रथायायाञ्चात्रविदा येट्रस्ट्रस्ट्रस्ट्रस्ट्रस्ट्रस्ट्रम् । यूर् श्रुण्यःश्रुण्यःश्रुण्यः श्रुण्यः स्ट्रस्ट्रस् यारा । ने न्या वहेया हेत त्य या ग्राम धेता वेय इत्याय सूत्र भ्रेया कु:८८:श्रु:अ:८८:श्रे:वयावाः कु:८८:हाग्नु८:८८:श्रेशःय:तु८:शे८:शेवायः र्षेत्रस्य प्रदेशियाय। ब्रस्कृत्यिकेत्रस्य स्टान्यायायस्य मेति स्या दे <u> न्यायी अलो वाया भूरा श्री में वा से नायर भी साम की के साम माने विवासे नायर श</u> हेनाशपदि सुन्य भेतर्दे॥

हे सूर्वयायावयद्रयायर हु भरावा । दे धे वा बुवायावहुव द्रयायदे सर्हें भूति कुष्णे क्रान्त्र क्षेत्र क्षेत ने वर्म के अयम की आ | है क्ष्म की न्यान या अपने हैं कि निर्मान का । ह्या येत्रश्चर्तरर्मेत्रत्र्र्यायय। विषाकर्मेयाग्यर्भूत्रायरेत्र्या क्रिंशः इस्रयः वस्रयः उद्दे निवेदः वेयः प्रमः श्रीया । श्रुः दृदः रेयः से दे निवेदः इ.य.लटा । रे.ज.यहेव.वयाच्या.क.यद्यर.सूर.की । श्र.ज.र घरशारे.वया यट प्रेंट् संपेता । कें शंह्रस्य शंह्रस्य शंह्र दे 'त्र विदः के संस्ट की शाहि । क्ष्रम् क्षे त्यायात्रायम् वर्षेत्रायाः भूभे यात्रायम् याम्यात्राम् वर्षायाः या है। विभागनिताहायर्देनायाळग्यानितावेता विभाद्रसम्भावस्याउनाने नवितः नेशः प्रमः श्रीश । श्रुः सः श्रीः प्रमः ना श्री शः मा श्री वा शः श्री वा । हः प्रः म्राम्भिन्द्रम् अस्ति। विष्या विष्या विष्या विष्या मिर्ने स्थान विषय इसरा वसरा उदादे निवेद ने रायर श्रीया । दि सूर तु से पार्वेद व्रेट से यसन्। वि.स्.विरःषुरःते.य.रेसासब्रटःयमा विरःयसःरवादःषेरःते. वर्याभे प्रवादाक्ष्म । केंग्राह्मस्य राष्ट्रसम्य स्वरं प्रवाद निवास निवास । वि | कु: ब्रः क्रेंट प्राचार्रे मा क्रेंप बुट प्राचे | क्रिंश क्रम्य राष्ट्र प्राचेता नेयासराग्रीया हिःसरार्थयागादेःहें यासेरात्या । सेयात्राः स्रीयासया गर्दश्विद्धार्मित्राधिया श्चिमाकुद्मायाखुधिरस्द्रित्स्यर्भेद्दा । क्रिया

इसस्य वस्य कर्ने निविद्य के स्वर्ण मिल्ल मिल्ल के स्वर्ण मिल्ल के स्वर्ण मिल्ल मिल्ल

गिर्देश्यायासीटामी। हिन्यमासी क्षेप्यन्त्रीय स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स हे सूर प्यर वें व्य कें वाका साया वहेव वका निर हर वह वाका सावा धवः यगाने द्वस्य अ हे निराह्म निराह्म हो निराह्म हे निराह्म हे निराह्म हो निराह्म हो निराह्म हो निराह्म हो निराह्म यने निवेत्र नुस्र में ख्रान्दाविस्र शहुमान्दा क्री सकेन हुमा या नहेत्र त्रा नन्गः हः वर्देग्रथः या देः न्याः हेः नरः ह्याः हः न्यः न्याः वे हः नरः वे वः यःसॅॱ८८ःवे८ः६८८ःदेवेःष्पदःवनाद्मस्यः हो८ःयःसॅ ५८८ःवसःसुःवहेनाः यनिवर्त्। । वन्यादे सुरार्थे श्रेयायाये दायवे ग्रुपा ग्रेन्यया ग्रेन्य र्रे ५८। स्टार्से व्यास्मित्रा स्टार्ने स्ट्रा स्ट् नःश्विनःहे। वह्नाःसःस्था देःनविनःवहेगाःहेनःग्रम्भःस्थःस्टार्सःद्रा विस्थान्त्र ने निविद्या सकेत्र निविद्या निविद्या स्थित । निविद्या सकेत्र निविद्य सकेत्र निविद् र्रे हिन्द्र पर्देन । हेर प्येव प्ययाधिव पर्दे हे होन् रेप्टर धेवा । वियार्थे। १वर्रे । धरःविरः हः श्वरः रे । विं व १हेर् । खः र हीं र । य व । इस । य र व र व । व र व । व र व षर नन्ना ने क्रेन सम् से प्रमुम नमा मह निवेद सुद बन ग्राम से न ग्राम स

न्धनःसरःगुकः ह्रेनः हुः व्येनः न्।

गिरुअः यः ने अः निना भीः नः प्यमः विना अः यमः नश्रुवः यः ने । विना से देश नन्गाने स्टान्ने दार्थेन सेन सेंग्रान्ये सेना सामसान संयान दानन्त सेंग ने मार र् प्यर साहेर रामा नन्या या राने वित्र विवास राने वे के रीवास मर्भायदी है मन्यादेवे सेया या सेया सार्वे विसाही सूर है न सर प्रमुन्। दे ख्नरः तः निवानी निवासाधारः स्टानित स्थानित स् नन्गामी नवे नर्भन्व त्याद धर्म अन्से मुक्त वर्षे म्या स्थान धरः मैंवानर वशुराने विशेषकर धरावशुरारी । रवा हो रावर्षे व कुरा यायमा नन्नाकेनार्धेनायायायीताता । नन्नानीर्धेनायमायायायाया वेशन्ता वह्नायाययाग्रमा ग्राधिमाग्रेन्स्रोन्स्राययाययायेन्सा ।ने धैरः नद्यायी नद्या सेदः सराधेदः सेत्। ।देः धैरः नद्याः ददः नद्याः वीः द्वेदः क्षानम् । इत्यावर्द्धेरायारे इसायर र्त्तेयानर वर्त्तुर्म । वेशार्से । नद्याया रदानिव सेदायरहें गुरुष्य रेश स्त्रुरुष्य प्रमानी नायदार प्रमानिव सेदाय ৾ढ़ज़ॺॱय़ॸॱढ़ॹॖॖॸॱज़ॱॸॕज़ॺॱज़ऻऄ॔ॸॱॸॸॱक़ॺॵय़ॱढ़ॏॱॺ॒ॸॱज़ॾॕॸॱॿ॓क़ॱय़ॱय़ॺॱ প্রথান মূর্

याश्वासारित्राश्वासारित् स्वरायाव्यत् त्यायाः श्वासार्तिः स्वरायाः स्वर्यः स्व

५५'ल'र्श्रेम्बर्सदे'५५५५'सब्सर्स्स्यित्से द्राक्षेत्र'र्स्स्य स्वर्धे क्यायानत्वातु न्यायाना ने प्याप्तानिवायिक्यायानात्त्र विद्या यन्धन्यदेश्वासून्यदेश्वेयार्देन्यायाधेत्राते। वयन्यायारार्देयाया गशुस्रानसूत्रारायम्। यहेगाहेतारान्याहेताये। रावे यहेगाहेतान्या र्हेन्ने वहेगाहेवावामराधेन्यान्याकेन्यस्वरेन्यनेप्यानेप्राध्य वर्देर-दे । विश्वानाश्चरश्चाश्चा वहिना-हेत्र-ग्री-ग्रानाश्चार-देनाश्चारश्चा शेर्वोग्रायम्बयाग्रीशनबेशयदेश्चिममें । देख्रमण्यरद्वायायश नुस्रान् भूसानुः ने रहे नसमान्दरम् मार्था स्वरासे दान हिन्दे निराद्दा । प्रदा B्रिअ:वि८:ह:ध्रव:८८:अर्चेव:पावशःय:श्रेषाश:८६४:इसशःपाट:८पा:८८। १ने निवन नार नगः श्रीं न्या श्री परीया नश्रून याने स्यया है नाया हा श्री । नार धेरः द्यनः ननरः ने दिना हेतः धूतः ठेना हिनः शे सहनः धेरः री। प्यतः प्यनाः ल्य भित्र भित्र त्ये निष्ठ विष्ठ विष्य विष्ठ विष ह्रवास्त्र व्याप्त क्रिया हिंदि हिंदि है । ह क्रम्भिन्द्रिःक्रम्भन्धन्। हुम्भाम्भाक्रम्भाम्। निः यशमाव्य र् मुर्म पर पहिना हेव मान्य परि हैं त्र शर्धे र पर्धे वा विश নাগ্যদ্রম:শ্রী।

दे 'ल' ग्राट गी 'र्झें 'द रा 'र्झे 'र्से 'प्रहे गा 'हेद 'रा 'प्रदे रा 'प्रसूद 'रा 'दे 'ह्र स्र रा ' ग्राट सामहित्र रा 'र्से 'द्र 'र्से प्रस्ति 'र्से 'र्से प्रस्ति 'र्से 'र्से 'र्से 'र्से 'र्मे 'र्से 'र्मे 'र्से 'र्स

व। तुस्रामाने प्यतायमा उत्राप्ता प्रेता प्रताप्त प्रताप्त प्राप्त विष्येताय। क्री ब्रॅं यः श्रें नाश्रामं ते यात या प्रमान्दर श्रें तः से प्रार्थित स्त्रे विष्ठ प्रतान हैं। ৾৶৴*৻*৴৻৴৻৸ড়ৢ৻ঀয়ৢ৴৻৸ৼৢ৸ড়৾ঀৢ৸ৼ৾৴৻৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ हे। श्रूसातुःर्सेनासायाप्परादे निवेदातुः श्रुमार्से । वर्देदाळनासादे ख्रूनायमः वेवरमन्दरळग्रस्य दे देवे हेव हो दे प्यरळग्रस्य द्वा भारत वार्य वर्रोयः नभरः यथः नभरः द्वा । यो वे से मार्रेना सुरः भेरः वे रासे मार्रि |ने'य'प्यत'यमा'य'नहेत'त्रश'प्यत'यमा'उत'वर्नेमश्या प्यत'यमा'उत' यः नहेत्रत्रागुरः प्यतः यमा पर्रेम्या यस्य यसे । यः नहें यः त्रान्त्रः विरः ८८.येर.क्ट.का.चक्ष्र्रं अ.व.का.क्षेत्र.कर्त्रे वाका.संदे.चर.रं. क्षु.स.स् । ४च.वेर. नकुर्यायमाग्रमा होर्यायमायानहेन्द्रम्भिना ।यमग्रमहोर्या ने हिन्या । नहेन न्याय हुन न या महिन्या । शुन परे हुने या अर्वेन र्दे। विरुप्तः होत्यार्वे प्रत्यायायायाया । प्रत्यार्थे स्वायायायाया व्य विश्वास्यस्य वर्सेन्चःस्रेन्चन्नः वर्सेन्नःन्द्रः न्ना नक्षज्ञक्षज्ञेनन्न। कन्यन्यन्यन्यक्यज्ञक्षज्ञम्यम् ই র্নিষ্টির শ্রী মামান্সুর স্তির বার্ক্তর রার্ক্তি মামার শ্রী বার্মার ক্রি মার্মার ক্রি মার্মার ক্রি মার্মার ক্রি মার্মার ক্রিমার মার্মার মার্ जुर्दे। १२ १ मुम् त्र निष्णु तु निष्णु तु निष्णु मान्य दि १ १ मुम् मान्य मान्य निष्णु का क्रॅंट-य-५८-४८-४विव-से८-य-य-ग्रु-ग्रेट-४८-४८-४८-४८-४५-४७-४६-४-४ द्ध्यानेशाम् दे केंशावस्याउदाया हिराद्या वस्याउदा ही रदाविदा बेर्यानरे व्या हुर्हेग्यायस्त्र्यायया स्राचनर्यते र्वे र्वे र्वे विष्

यादेश्वास्त्रवित्तास्य स्वर्ति । दे १८६८ स्वर्ति स्वर्ति । दे १८६८ स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति । दे १८६८ स्वर्ति स्वर

বাইপ্রমা

केंश्राणी निमाने निमाने

भूगा'सर्वेट'ल'नसून'कुंल'र्सेग्रा

विश्वास्त्रमात्वत् सेयास्य स्थान्यत् स्थान्य स्

त्रित्युम् । विश्वास्त्राध्यस्य प्राप्त । विश्वास्त्राध्यस्य प्राप्त । विश्वास्त्राध्यस्य प्राप्त । विश्वास्त्र । विश्वस्त्र । विश्वास्त्र । विश्वस्त्र । विश्वस्त्र । विश्वस्त्र । विश

ठे से नावत्र्र्यस्य के त्राचि त्र विषय । वर्षे न्य स्व सदे हिम् ग्वित यश श्रेरे स्थ्रम न मर मवित म मिर सदे हैं यश प्र म तुः भ्रे व रो भ्रे व्ययः ग्रदः सुर पाद मुना में विद्युदः नरः वशुरः है। नावरः धेरः राद्र.ब्रेन्ट्री ।याववरत्तरः क्रेन्ट्यून्यायुन्यस्य उत्तर्भावत्रभावः प्रेवे भेव नम्भ राष्ट्र भे निर्देश निर्देश निर्देश मानि है निर्देश में स्थित स् विश्वासर्वे । यदिवे देवि श्रेष्ट्रमाया स्टामी दे विश्वास्य स्टामिव पिर्यायेवाव। यास्रवेर्धुःगुःदेःस्टागेःश्चेद्राचेदाद्राधेःस्टर्मयेर्धेगयाः रायश्चर्रान्द्राची दिस्ति क्षेत्र व्यास्टाय विवाद प्राप्त स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद साम्याद स्वाद स ने निर्म स्मिन् कुर्भाखुदेश्यर्भे द्वाययास्मिन् विद्यान्ति दुर्भे स्मिन् विदेशित ख्नायानियानियान्यस्याम्यस्य स्वर्धान्यस्य स्वर्धेन्याम्यस्य दि। ।दे स्वर्धेन क्षरःक्षेत्रः होत्रः द्वार्धः द्वारायक्षः स्टानिवः व्याद्वारः स्वरः व्यादकसः निवः कें। वर्त्रस्रित्यर्यस्यायाय्यायकर्त्राचित्रःत्रस्यीः अख्देर्यः र्वेत प्रश्नाचन प्रमानिक के प्रमानिक क

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

५ श्वर प्रति खुं या ने १ ने १ न्या मी १ म्हा भी १ में १ में १ श्वर श्वा या प्रति १ म्हा १ महा १ म्हा १ म्ह

ने भूर प्यर वह्या वर्षेया भूर भूर भूर प्रमः हेर प्रदेश साम् अॱर्वेदॱररःगे'दन्रअःतुःअःखुदेःशुःग्'खशःग्वदिःहेरःधेदःयःदेःनविदःतु षरःगव्रवःषेत्रः । षरःहः भ्रूरः अः खेदेः अः र्वेतः गव्रतः नु शुरः यः यश्यः अः खुदेखुःगुःक्रुःननेनविदःन्। बेन्द्रःश्रयःनन्दर्वशःग्रेःशःर्वद्रायःश्रीम्र रान्नायश्चरायम्पर्मे । यहाहे स्ट्रेस्थास्त्रेते सुःग्नान्नव्नान् सुराधः खुदेरमर्जेद्रायमाद्यूटाचर्चे प्वेदान्। तुम्रामन्दरम्भमानुःयार्भेगमामः इसराग्राम्यम् नाविषान् ने के सर्वेम्य साधिन है। ने वे श्री मायदे । वे स मः अधितः हैं। विश्वानाश्रयः नरः नश्चरश्चा श्रमः मार्थेना स्वेन् स्वार्थः नश्चर वस्याग्रीशाष्ठ्रनामाने निश्चनामान्यम् वर्षेत्रामाने स्थितः विष्टामाने निश्चनामाने वर्षेत्राण्यम् वर्षेत्राण्यम विना नेवे मार्वेन होन ग्रान्क न्यान मी स्ट्रेन नुप्तेन उसाय से पेन उस ग्रीशाह्यनायासी विद्यानायान प्रति स्मन्यास्य स्वापन विद्याने । स्वाने दिन नुःचायश्राग्रद्धा कुःद्दायञ्चरातुःमाववःहेद्दा । कुःद्दाकुः सेवः सर्द्धद्रः धरावशुरा विशादरा वह्यायायशाश्चरा याववायावहेवावशायायाहे मान्त्र निमायन्त्र त्या प्रमार्थिया स्वार्थ स

क्री नार्ट्य भी निर्देश में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्ट्य में मार्ट्य में मार्थ में मार

गिर्देश स्थानिक स्थान

रतिः रेवाश्वास्थाः नावात्वा वाववः व्यश्चः श्चेः विदेश्चेः विवाद्यः स्थाः विवादः स्थाः विवादः स्थाः विवादः स्थाः विवादः स्थाः विवादः स्थाः स्थाः

र्<u>टे ने के दाय अपनु</u>दान सङ्घाया है। स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत यन्नासदे प्रह्मामा इसमा है प्रवाद विवा वी मायन प्रमा होना सामा से हैं रा द्रा । ने निवेदर्भा द्वाया श्रेषा श्रायाय विषा वीश्वाय द्वारा द्वारा देवा ऄॸॱय़ॴऄॗॖॱढ़ॱॶय़ॱॸॸॱॸॖॴॻॏऄॻॱढ़ॱऄॕॸॱय़ऄॱऄॗॖॱॸॱॸ॓ॱॶय़ॱॸॖॴॿय़**ॴ**ॱ उद्दर्भिद्राद्वीराया धरावाद्याराधरासेदादवीराहे। ध्रयाद्रसाददेरा वर्त्वरायावर्देरासे वर्त्वरावदे कुं सळवारे प्रवामी कुं पेरिसेरावस्वर् बेर्'यदे हिर्दे । इ.इदे अर्रेट्य ग्रूट हुःरेवा या पट पेर् पाया श्रीवाया धरावशुराते। अर्देरावा गडिगाःश्लेशावाष्ट्रश्लासाः व'व्य'णर'भ्रें'नर'भे'वशुर'न'दर्। वत्र्य'तु'वर्षेन'मवे'भ्रेर'तु'वर्देग' हेव इस्र राने दे कु त्यावन पानु सा होना पात्र स्था स्था स्था स्व दे दे ते सेना पर प्रसूर र्रे। विद्यान्यकाय्या यायाने कुं सेन् विन्त्र से विवायसूर्यः द्या नितःक्रे अवयन्ता ह्या हु वस्य अरु न्य अरग्रम क्रे प्रमुक्त विद्या विद्यका

द्युरकेन्द्रव्हेषाहेव विश्व वि

ने सूर सु निवेदे हुं निया परितास सिंदा निया महित स्था समय निवे यश्रभुं न से द प्रायम् दे या दे राम हो राम ह रास्र अवयाविव पर्वो वा परे भ्रम्य रास्य विष्ट । स्र रास्य पर्वा व विषे ध्रेर्द्रिंशर्भे क्रियायार्द्रायां विदायेत्या प्राप्ति । यात्रित्वयारेयायरः वशुराने। वदी वे वायावशुराग्रमाये के देवे ग्रेनाया महेव वया हेया न्यगः श्रे अः यः प्ये दः श्रे । न्रे अः शुः न्यः य उतः यश्च यः य श्रे रः म्याः से नः र्दे। विद्यान्यस्था यादाची भ्रीत्रात्र निष्यान्दरायां विद्यान्दरायां है सामा स्था क्रें नित्र विकास निर्देश स्त्रिया स्त्रिया स्त्र निर्देश में स्त्र स्त्र निर्देश स्त्र स्त्र निर्देश स्त्र स्त वेशःश्चे नदेः समदः नवे त्यः मर्दे न हो न नर्दे न पर्मा सम्भागः हो ने त स्थान ग्रस्यायात्री वयानानगेन्यियवयात्रायास्यायायात्रेवाया नमग्रे १ १ मेर ही नदे रहे वा नह्म न प्राप्त न ही। न न मेर से ही है वा वा न न न म्यायारे स्वरायमें दाया के वर्षे । दे स्वरायहाय विवर्धी या श्री प्राया नाया या व नहेन नगर्ने अभि इससार माने न से माने में स्थान के निया में स्था में स्थान के निया में स्था मे मेन्यायापारम्याविवासेन्यम्मेरायाहेन्यम्भ्रावम् हेरावसम् उदारदानविवासी अर्थेदासराहें ग्रायापाद्यायाये स्थानायदे स्वापाता है दिया गाल्व प्यर र न हो र न र्व साय या हेव है र व हुर न मार धेव या । रे वे रें र्ने हेर् भेरावी वियादरा वहुमायायया ग्राम मराधिर दर्भ में पहेर

वश्यम्य वर्ष्ण वर्षा । हिंगा य वर्षे प्रवा यह्ना यम् से व् श्या । पे शिम हेव वजुर-रेग्रथ-प्रवि:धेश्वादी ।क्षुन्द्र-५-४ अववःन्ग्राग्रेन्-प्र-होन्। । डेशनाशुर्याराष्ट्रम् हेरावडोवाडी ह्वायायानहेरात्या शुन्ता वार्याया यः स्टानिव मुक्ता क्रिंदायायादे याया क्रेन्य वे में याया में नाया के वार्ष र्वेशः ग्रुवः प्रवेश्यमः विवासे माने स्वामित्रः मेने वार्षः विवास हीरा रमेर.व.वा त्रवाश वहेव.विवा वेश वावव वावाश ही हे शर्मा होर्रे। । प्रोरः व हार प्रवेद हो या त्र या कर सूर प्रायः हो या पर हिराही इसरासेना'इ'र्सेनारा'शु'सूर'न'रे'ते'रे'त्र'नवे'र्सेदे'रें'त'रे'सूर'धेत'त्री। <u>ই</u>'৽ৼৢয়ৼয়ৢৼয়ৢৼয়ৣ৾৽ৼৢ৾য়ৼৼয়ৢ৸য়ৢয়ড়ড়ড়ড়য়য়য়ড়ৢয়ড়য়ৼয়ৢয়ৼঢ়ৢয়৾৽ড়ৼৢয়ৼয় देव'दे'र्द्राची'यावर्षासुयार्थार्थ्यस्ट्रिट्स्यार्थार्थ्युप्टिव'रा'विवर्ट्,र्येयर्थः उव क्रम्भ राग्न हिंदा निर्मा निरम्भ र निरम र निरम्भ र निरम्भ र निरम्भ र निरम्भ र निरम र निरम र निरम्भ र निरम्भ र निरम र निरम्भ र न्नराची यानव्या प्राधिव प्रमा र्ने वार्च है । हुरा सूरा सूरा ची स्रा व्यून्यमःश्चित्वयाम्यः क्ष्यः त्येष्वः या नेतः त्युत्यः श्चीः महः मिष्व स्ति। यहः वे सहः वर्ते कु क्रेव नावव त्यारमा यश्याय वर्षा के वर्षा वर्षे नाव विषय वर्षे नाव वर्षे वर्षे तुयामं सूरायर कुं क्रेवायया स्रे से प्राप्त मान्य सूर दु से दुर प्राय्य स् वै । निःसूरः धरः वंबे वक्कुः यः यथा वारः यः वहेवः वयः वहुरः धेनः या । नेः भेतर्ते॥

क्षेत्रस्य स्थान्य स्थान्य

ने भूम नर्देश में जार या नहेन नशावतुर न थें न पाने ने ने मर न नर र् अं प्रश्नुर है। कु र्र के वाया राष्ट्र है के राष्ट्र के राष्ट्र वाया राष्ट्र है से विदेश विदे ननरसेन्यः है। नेवे हिर्न्स्यार्थे मारायाधरानन्ता है सरानि विवाधिन मः अधिव दे । विश्वास्य अभि । स्टार्निट न वे स्टामी दे से श्रास्य स्टामी ब्रूट निवे के तुर्भ अप दे द्वा या निव या स्वा अप अप शु ब्रूट विटा । ब्रूट नःक्षरःषरः ग्रुनः सदेः र्ने वर्षे वर्षः ग्रुनः क्रुं क्रेवः ग्रुवनः यान्यः स्याः सः सः सः त्रुराद्याने नगाना दादे स्टार्से त्यानसून से दर्गे या पर्ता है विनाया ग्रहा न्तुःसदेःक्षःनःह्रेन्यमःवर्देगाःसे नुसःमस् ध्रवःह्रेनःनुमन्ते देःर्वदेः क्षें त्रशम्दरः द्वं वाशः श्वाराये देवें द्वावाशायः स्टर्न वरः वर्षे । दिशः होत्राचीः त्रिहोत्रप्रित्र्र्रम्भार्थाः सेत्रप्रमा हेत्रप्रहोत्राधीतः रादे कुं सळ्द की सार्रा प्रविद प्राया वुरा साधिद है। खर स्था सादे सह्या हेन्द्रमा नेवे भ्रीन्तिन्देन हेन्दि । वर्षे व्यापन वर्षे निवासिन वर्षे विकास व

र्वे प्रत्यायाय विष्ट्रीय। स्टार्यायाय विष्ट्रे विष्ट्रीयाय विष्ट्रे विष्ट्रीयाय विष्ट्रे विष्ट्रीया विष्ट्रीय ग्री-र्नेत्र पीत्र ग्री। वस्र राउट् रहें सार्थे से से राये रहें ता से साथे दार्वे। विसा महारमार्थे। भेरेकाम देवा हो रायवे प्रदेश में स्थेर यर क्षा पार्म हारा ही । हेव त्येता श्रु साक्ष्य प्राप्त श्रु रायरे नया धेव राया धेव के विवाधिव त्या ररा नवित्रः श्रीशः श्रीनः भवेः न्देशः सें व्येन् । यदः व्येन । यदः नविन ने वर्षा नाम वर्षा प्रमासी नि वर्षे ने वर्ष खरनेवे अह्मान्या नेवे छेर पर्ने पाहेन हैर प्रवेष पर प्रवृत्त वृत्र निर्श्वुः अप्दर्ग्नग्गुत्र त्र अर्हेत् सेंद्र अप्याद्दर हु अप्यास्त्र हु । या सूर यन्त्रन्यस्य देखेद्यस्य स्वानित्रं वित्रं धेव परि द्वी स्वा निक्र से साम स्वाप्त ख़ॣॸॱॺॱॸॖऀॸॕॴऄ॔ॱॸॸॱॸॿऀॺॱॸॸॱॻड़ॴॴॸॱॾॗॖॱॸॱढ़ॺॴॵॱढ़॓ॺॱऄॸॱय़<u>ऄ</u>ॴ धरत्वुरावासेदाधादमा ह्याधादमाळदाधराक्षावदेः क्रीवादाव्युरार्दे । वेशमाशुरशःश्री । देशदाह्माक्ष्यः भ्रान्दान्त्रयान्यः वर्षेद्राधश्रास्यः

मुल्यक्षावक्षः स्टर्न्य याद्य स्ट्रिं स्ट्रिं

नुन्यविवर्न्यनेवर्यर्यहेवर्याक्ष्य हेवरवर्षेयानेर्यास्य विवर्धेया युनःधरःश्चें नितृष्यायात्रयः दर्देयः सेविः सरः वीः देः वें दिः द्रः वा हेनः धया वा हेव'यवेय'दे'नवेव'स'हेंग्रथ'रा'न्रा'दे'नवेव'सेव'यर'नहेंन्'या विं'नेंश' वे र्मायविवासेन्यम् वर्नेन् हेम्ने व्यूम् क्षुर् क्षुर् ह्या वर्षा ह्या वर्षे ने विवादि हो। षर:दे:अ:वनानी:खर:देवे:अह्नावशा हे:क्रेन्यव:हे:सर:दनर:अेद:सवे: देन रुवा व वर्षेन प्रस्तर वर्षेन प्रस्ति निर्मा हेन रुवा व विन प्रस्ति रे वे विन श्रुवा न् सेस्रान् नन्त्रप्रचा हो न्या हिन् ग्रीया हेन हेन प्रोत्या प्रमाय हुन नदेर्ने तर्हे स्वानान विवर्ते निष्यामान्य नहें निष्यामान्य विवर्ते निष्यामान्य र्रे । हि:क्ष्र्रः ह्रेअ:धः पार्वेदः तुः श्रश्नुरः यः अः ह्यः प्रत्यः पा ह्या अः पह्नुदः यः नदेवःसरः गुनःसरः ध्रूषाः सरः क्रुष्टे निष्ठां निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः निष्ठाः । रदःविवः क्रेंदः यः क्षेदः वर्षायः वर्षः रदः विवः ददः वरुषः यरः हेवाः यः वः ग्राबुग्रभाग्रह्मताहिष्मे भीश्रामाने प्रविदात्। विनाग्रीशाग्रमाहेन हेन प्रविद्या सर'वर्जुर'न'विश्व'त्वरश'ग्रर'ग्रा बुग्रशंनक्षुत्र'न्र'स्रद्धंदश'सदे हेत्र'हेर' वर्तेषामरावर्द्धरानासरानिकाश्चिषाञ्चेरामानेत्रात्त्रम् स्टानीर्देने हे सूर ग्रम्भ राजविदाविंद र्जु द सर से लेख है। रद नविद से द स स रदानिवासेदासकिदान्या स्वापनिवासिक स्वापनिवास मी दें में त्या पेंद्र मित्रे मदा मी दें में हिद्र दुः खूमा सम् क्वें महमाया वया वहें व यदे हिर्दे । वर्हेर्यूर से लेख है। स्ट वर्षेद से द स हैर्द् से वर्हेर

यदे भ्रिम्प्रमा न्रेस संदिष्म मी में में हिन् म्यदे भ्रिम में बिका के । कुःतत्र्र्याश्चीःहेत्रावत्रेयाप्रशत्न्र्र्यायरायरायरायरा *ॸॸॱॸॸॱॸॿऀढ़ॱऄ॔ॸॱय़ॸॱॾॗॗॱॸॺ॓ॱॾॗॕॱढ़ॺॱहेढ़ॱढ़*ॿ॓ॺॱॾ॓ॱॸॿऀढ़ॱॸ॔ॱॾॕॖॻऻॺॱॺॱ हैंग्या नहेंद्रिक्य से क्या हिंद्र स्ट्रिस्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वय स्वय न्देशस्मित्राखेदादान्देशस्मित्र्यूनाह्मस्याने त्याननेदायरानुद्यान्यानेस श्चानरायनेत्रायराधेन्। सेनायार्हेन्। याते सेनायार्हेन्। याते सूस्रायान्। ने। नविवर्, वर्ष्वर्र्, देवरहेर् प्रदेर्द्र राज्ये प्रदेश में प्रदेश वर्षे वर्षे प्रदेश करें क्षेत्रग्रीर्यागुन्यत्रिस्तानिवर्षेत्रसेत्रायास्ता कुत्रमान्तर हेत्रमावे सेता डसायार्हेन्यास्थे रमकुन्यसायम्ने त्यारम्यी सळन्देन्यीसायुन धरः श्रुप्तरु से स्रुर्य पुरदेश दार हरा सामा स्राध्य स्थान स्यान स्थान स न्येर्ज्ञान्याञ्च । यद्यान्य । ये व्यान्य । यो व्यान्य । यद्या धरः श्चानमा व्रवस्त्रेमा ग्री पुत्यः नुः म्यामा स्वरे देव वदी वदे न सुः ह्या सः वर्गेनामने भेराउँ सायासूरानरे वे साक्षाना नरावरानर सूरारे ॥

श्रेश्वश्व विवादित्र स्था विद्या विद

स्रावसारा केत्र सेदी । दित्र श्री प्रवरायदी वाश्चितासात्र साम्रसाय स्रायहेसा स्रव प्रवर्ष ग्रीया गराविगा में दायया भ्रेया परे त्या भ्रेया । दे त्या भ्रे प्रदे रहा नविद र्धेन्यः धेव। मिवः यः न्याः यशः यानः नेः क्षेत्रः यनः यन्। । यानः विवाः क्षेत्रः भ्रेशपायाम्यान्याविवाग्रीयायाभ्रेशपायाग्रियायमाग्रीप्यावया म्रापा ॻऻॶॖॖॖॖॖय़ॱय़ॺॱक़ॖॖॆढ़ॱख़ॱॸॻऻॱख़ॺॱय़ढ़ॆॱहॆढ़ॱढ़ॼ॓ख़ॱॼॖॆॱॸॆ॔ढ़ॱॸ॔ॸॱॸढ़ॏढ़ॱॹॖॆॺॱॾॢॕॸॱ यदे देव द्वा म्या माराय विषय के देव है द है द देव का स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्व मदेःमदःर्धेदःनभूदःहैं। ।देःनविदःद्। सामसःमसःहेदःद्युदःर्ह्यः स्सस् हैंग्राश्चराते। विषयराक्षानायानहेनायराधेराधीत्। विशहेनायोया हैंग्रथःस्थाःसबरःवहेंदाःग्रेंदाःसरःग्रस्थाःश्री । ग्रावदःधरःसरःग्रेःदेः र्ने अः ग्रुवः पविः स्टः विवः विदः विदः मुषः वः कृदः विशः न्दः वह अः प्रशः देः स्ट्रसः योत्रेयार्थः दर्शे र्थः यथ्यः स्यात्रेयार्थः स्टान् स्टान् विदाने व्याक्रेदः क्रीर्थः नशर्मेवानासेनामानम् निमाने स्थाने क्रथान्द्राचिवाधेन्युरावा ।क्रुयानाष्ट्रवार्षेयानवयापयाने सिह्नेवा वर्गमा विमः विषाः के रावे शादियः वद्याय विष्या विषयः स्वर्थः वद्याः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः र्श्वेशन्दर्ज्ञयाक्षेत्रम् विश्वान्यस्यान्यस्य । स्वान्तेन्यस्य *न्नावि पान्ना*कृषाम् क्राः भेत्रे सकेन न्याः स्टानिक्षयायाः स्टानिक्षयाः थॅर्ना पर्वो वा परि देवा या या इसया ग्रीया केंया या वर्वा से दाया वा वर्षा

भूगाः अर्वेटः यः नक्षुनः रुं यः र्शेग्रा

स्य वदर नेव र तेया श्रास्त्री केया सर शर्भ सहिया श्रास्त्र स्य

म्रुम्या स्याप्ता विकासम्बन्धः स्थाप्ति । स्याप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति ।

यरसेन्यरसर्वेत्त्रमा नेदिन्त्रम्यास्य स्वाप्तरस्य स्व वीरविद्वार्यवेष्टिवाष्ट्रवेषाया देखेंवात्रवर्देदाराहेर्वरायेत्रयार्थेवारा रूर-न-१८-१८-१८ तो तामान के प्राप्त के स्वाप्त इस सम्बद्ध के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के सम्बद्ध के स्वाप्त के सम्बद्ध के स्वाप्त के सम्बद्ध য়৽ঀয়ৣঢ়৽য়৽য়৾ঢ়৽য়য়৽য়ৢঢ়৽য়৾৾ঀ৽য়ৢয়৽য়ৢঢ়৽য়৾৽ঢ়য়য়য়য়৽য়ৄৢ৾য়৽য়৾ঀ৽ भ्रे पा बद्दाराया वर्षा पर्वे वास्त्री स्वा बेदा वर्षे पर्वे प्रक्षित्र पर्वा वर्षा प्रदा प्रका नन्गामी वि नदे भ्रम । नर्य वहेन मध्य प्रहेन से न प्रमुस् । वि राप्त । बर-५८⁻भ्री-देश-५वी-ला । वर्षा-५८-वर्षानी-श्रुअ-३५-वः । हे-वरः येव संप्रताना प्रमुक्त विद्या । दे विद्य स्थान क्षेत्र विद्या । दे अपन्य सुद्य स्था ने सूर गुरु व के नर लेव पांचे केंब्र केंद्र अपन्य केंद्र पांचे पर्या पीव पर्या क्रें निते कु यश्नादर हैं द से दश्या वदायश्वर वर वर वर दशुर है। दे हैं द यश्व बर्यर्व्यूर्यं प्राप्त हेर्यं यथा यथान्त हेर्यं स्थाहेर्या यथा नि न्वार्श्वेरायरार्श्वेरायती । स्ट्रिंट या हेट ग्रीरायवावायर वश्चेरा । विरा

गश्रम्यार्थे। भेरे त्याक्री स्वेदायिमाना महामान्य हो त्याया व्याक्री त्या हेता ब्रॅंट्यामा उव मी से या प्राप्त के में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में न'वर्गुन'रादे'यश'पेत्'राश यश'ते'र्हेत्'र्सेट्श'यश'स्रुदि । पुयः इसशः यास्याः से या त्या से या सामित्य सहित्य सहित्य सार्से । वर्षे या सामित्य स्थान सिवा सामित्य स्थान सिवा सामित्य अधिव सदे क्या यम हैं गाया या न खुगा यम प्रदेश सुदे सान उव भी हैं व ब्रिट्य. इस्या श्रे भें नया क्याय. यूट स्याय श्री देव स्याय हिया स्रे दे इन्तर्वन्ते न्याः द्वार्यायविवायाधीवायि इसाहेवायया क्रेटिं । यहिया हेवा क्रिंशनक्रुन्द्रः भ्रेश्वेश्वः यातुन् स्रोतः द्वार्यः यात्रः स्रुवः तुः द्वाराः विवार्यः *न्रःक्षेत्रः चःश्रेष्राश्चाः वर्ते । न्रनेवःवें :श्रुश्चः न्याः स्वेतः धत्रः विवः धः न्याः विवः श* द्ध्यासेत्राधेन होन हो इसायम हैंगायस सुवाने न्याय हैंगायम होन प्रदे धेरा इसर्हेगाने ने नने न पहें न छी हैं या न या या हो है। के ना न या या या वहिना हेत परे हैं अपाने प्यासा खुरा सम्बूदा संवेद की या है। दिसा से वस्रश्चर हेंद्र संदेत्र मुन्त्र प्रयागा स्र प्रयुक्त हैं। हि स्रूर वे वा गर गै। धैर पर्रेश में र प्रेग्याय पर्णे प्रत्ने है। है। भूप प्राप्त प्रिया है। र्धेन्यम्प्रकृम्की र्वेषान्यम्भेष्यक्षेत्र्यं स्यन्धेम्यायम्दे स्वायायाय न्वानेवे पुरा उत्र ह्वा यर दिवा यर से हो न ही । ह्वि या या य द्वा पर दे। नेविःधुवाद्धवानविवासाधिवासराह्मसासराहेनासावहुनासराधीःवशुरा र्रे । इस्राधराहेनायासामञ्जापराधरापरापराद्यानेसासाहेनायरावेनाया यशर्हेत् सेंद्रस्य प्रदे सेंग्रस्य दिया सेंग्रस्य या सुर्वि स्वाप्त सुर्वे र

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

बे हो द दें। दें व के दें दें के कार्य के के कार्य के कार्य के कि नश्चेत्रप्रस्ते व्ययम्या होत्रप्रस्थे वश्चर्या व्ययम्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या वे.भ्रे_.न.८८.म.५.७.७४.२.५५.५५४४.श्.श्रूट.नर.ल८.भ्र.५शूर. र्रे विश्वर्शे व्हिट्यंहेर्हेग्राय्यार्थरे द्वारावर्ह्णेयायर ने हेन तथा जार नी हिराने सूर हें राय हेन हैं अपाय सास अपाय है जराने यन्त्रव्यावर्षाण्यात्रम् स्वाधरम् स्वाधरम् स्वाधरम् स्वाधरम् स्वाधरम् स्वाधरम् क्रेंब्राब्रें स्थाया व्यथान्य क्षेत्राच्या स्थान्य विष्या स्याने विष् ध्रेरः र्ह्रेटः मः हेट् विंतः र्ह्हे सः मः वससः उट् विंगः मदेः सळवः हेट् उदः धेदः मया शुःरदःययायन्यायावेयानुर्वे वियानेदः ग्राययानरःगश्रद्यः है। यरे अवे क्रेंट्य हेट्यो क्ष्य अंद्राय के इत्य विक्राय कर्य वि यमःग्रीःश्रेषाः ५८: ५५: ५२: श्रुवः ग्रेष्टः । यदः ५ वाः मर्गः वस्त्रः । यदः । वारेशमानह्रम्भिन्यप्ति शर्भे।

र्श्वेर:नर:शे:त्रार्श्य

ग्रट्स क्रिन से समाद्र महामाद्र महामाद्र महिला है। हैं निमाद्र महिला है। हैं निमाद्र महिला है। हैं निमाद्र महिला है। हैं निमाद्र महिला है। रदाविरावायमार्चियावाउँ साम्रीकार्केषायर से प्रदेशियम् से समाउत् वस्रयार्वि में वर्षे स्वर्धा क्रिया में वर्षे हे नर्झे अप्राधिव हैं। । दे सूर श्वेन प्रापि अप्रोदे अप्रेन दूर अप्रदेव यदे विदेव हैं ते सूर विदाय देश हैं राय है रायी है वा प्रें रेटर्र्न्स्स्रिय्यायायस्स्रिय्याग्रीःस्रित्यार्द्धेन्यायाय्यास्त्रित्रः त्याची नेयाच्वे क्षेतायाये क्षेत्राचाची त्येत्रावनवायेताये हिवया यः वार्डवा हिन् अर्बेट श्वर न्दर श्वें या श्वर वाहे या वाहे व से प्येव से र ग्रम्। नन्नासेन्सर्वरस्यान्सर्वर्गान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान् मि द्वियाञ्चरार्श्वेराभे तुर्यापयार्श्वेयाञ्चरार्श्वेरानायार्नेरानु नर्श्वेयान्नेयापा र्रे या नक्षन्य पाया पाटा हें या ये। । ने या क्षेत्र ग्री महेत्र में रानक्षेत्र पाये रा विता द्वेत् भ्रेतः श्रेतः वित्ववया दयात् । वश्रेया व्याप्त । व्याप्त व्याप्तीः नन्नाः भेन्द्रिन् साराधित्यासुः हैनियायारा नर्झे साराः भेन्यारा नुस्याया लेव.हे। वर्यात्व्येतात्वर्या ४व.ब्रूग्रान्टान्टाश्रद्या क्रिया व्यापा विष्या विष्या हेन केर वर्रेय पर पर्युर निर्देश केन किर पर पर अर्थेर सेंदर से दि से दि

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

भ्राच्या के प्राचित्र के क्षेत्र के के क्षेत्र के क्षेत्र के क्षे

द्रिः तर्दे । यदे । सुवारा । यो राष्ट्रे न । य र्वेजाः अभिन्यान्याः स्टानिवाधिन्यमः विवासिवान्यमः वेदारादे क्वें होत् श्रेमारोधमा क्वाया क्वाया महत्र प्रमानव्या प्रदे नगःळग्राशःशुःन्नरःग्रेशःस्टःनवेदःशेन्।नवेदःन्ःस्टःनवेदःर्थेन्।सरः ब्रूट नदे गहिरा ब्रूट में विद्या या इस राधित है। वह मा विद्या या है <u>৸ৼ৽ঀঀ৾য়য়ৼৼৼৼয়ৼয়৽য়ৢয়৽ৼৼঢ়ৼড়ৢয়৽য়য়য়য়ৼয়ৼ৾ৡ৾ঀ৽য়ৼয়৽</u> यः ठवः ग्रीः सः रेवाः यः श्रूट्यः या वर् । ग्रेट्रा ग्रुवायः वर्ष्वः या स्वायः यदेः र्थेन्यकेन्द्राचराम्बिम्रायाः इस्रायाः वी वर्षेत्रास्रे स्टानिवा धेवानी। ननेवामरावे साधेवाने। ननेवामरासर्वे रामराह्में सामासेनामि म्रेर्-र्रे विश्वाराम्बर्यायादी निश्चार्या ने यया विदा मः इसमायात्री श्रुः सायार्भेगमायाः सूराहेतः हेरावर्षेयाः परावर्ष्यः पर्वा ॻॖऀॴॱग़ॖढ़ॱॾॣॕॸॱढ़ॹॱ॔ॱढ़ॹऀॸॱॸॣऻ॔ऻऻड़ॱॴटॱॶॴॱॻऀढ़ॱॹॕॗॸॱॸढ़ॎॱॴख़ढ़ॱढ़ॖऀॸॱ स्वान्यः स्व स्वान्यः स्वान्

तस्याभासाध्यनःश्वराग्रीःचित्रेन्त्यः विषान्यत्रः न्दान्ते विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः

यानितः वनायान्य वर्षा क्षेत्र स्थित्र स्थ्या स्थ्या स्थ्या स्यापा ग्निस्ररासदे संवेष र् न्वा इत है। कुष स्र्रा कुष स्राप्त हैं स्राप्त व हर द्रा हैं र रात्यःश्लेयःसर्वे विदेरःश्लेषःया देः नगरः ग्रः सेन्दरः सें विषः ग्राम्या मदी । सन् शुर् संपद्देव सर्वे वाने मासदि वाने वास्त्र स्था । संके वाह्मस रातुगाः तृपार्थे सहंदाके । विदानकः दिन् ग्रीसादगेनसादि के तस्याः ग्रीय। वियासयार्यास्याम् स्यापारास्याः । विर्टे स्वायावियः गदिःत्यसःश्चिःश्र्वाःक्षःश्च विस्ववासःसदैःश्वसःगुदःनश्चिदःसदेःध्यसः क्षेत्रः र्शे । येग्र न्न न्न है से द ने स र न स र या ही वा । खर न सूव न है स परे र न्ययः वें सुर्भुवः श्रेषा हिः विवेदः वर्णयः विवेश्वावुदः वी सर्वेषा शुरुः या हिः वे न्यय ध्व स्व विश्व राज्य हि भूर म्याय राज्य है स्वर म्याय राज्य है स्वर म्याय राज्य है स्वर म्याय राज्य है स मेर्या कियायदार्थीयी. सरमाक्षित्रायभिष्यात्रीयार्थियात्रीयाया धरःचल्रायः येवासःचल्रात्। यिवासःधरः हैवासःवसः क्रुसःधरःचग्रयः नदी । ह्यानदे नित्र नवर के निर्मे न निरम्भाव के निरम्भाव के निरम्भाव के निरम्भाव के निरम्भाव के निरम्भाव के नि सेन्यते खुनामा । मन्यवित्र सेन्य क्षु वहते न्ये मार्चे व्यविमायन्यः हेव पर्रेष राष्ट्र राष नन्।। वनः संन्तुः सदेः ग्व्राल्यः श्रुप्सः नदेः मैंग्य। वितः ग्रेः र्र्वेः र्रेः नवित्रसेन्यया । कुःतन्त्रसःहेत्रतन्तेयः वहेताः सःनगवः सेन्याः । निःवनः न्तुः सर्वः खुम्राश्वः विवादि विशा । नेः भ्रमः श्चः नवेः खुषः वः नहेवः वः सहेश। ने भू से त न मा वित थ न में न मिले हुँ ता । मन मी श है न वित हुँ न न मा स

ञ्च्या अर्वेद यो रच रह द्वे न दी

ने भूर भ्रेशन्तर्भाषानिहेत्र यान्तर अतात्र क्रिया परिष्ठ नर्वान न्दर्स्य निवन्तु से असाम है। भूगा सर्वेद नी र्स्व मारासुस क्रॅंबर्देयर्वर्याययात्र्यत्यात्र्रेद्रययात्रेवर्यायर्वहेवर्ययात्र्या बेट्रपानिकार्द्रियारायदेख्या हेट्रपान खूना सर्वेट्रपान्स्रीय पर्दे । र्रितः भ्रूषा अर्घेट इससारे विषा पार्डे र्वेट से से दुर ही । र्रे र्से से रेर्ने र्रे रेरे र् नर्झेम्यम् नुनिवे खूना सर्वेद्या स्टें के म्सून्य धेन हैं। । ने धे खूना सर्वेद <u> ऍरशःशुः हें गुश्रामः ते 'ह्रस्यामानि 'द्राह्मस्यामानुस्यादा हुना गीः</u> ब्रुवा'अर्हेर'नर्सेअ'मर्दे। | इस'म'नवे'दे। नर्वेरस'म्योय'यस'वासुरस' यदे इसायर पर्वेर या सेवासाय विदेश । इसायर पर्वेर या दे। हे स्ट्रेर या या न्रीम्बर्भर्दि । स्वर्तुः इस्रायस्य वहीन् या देश्वे । द्वाया व्याप्ती । द्वा र्रे या प्रेंट्र शुः हैं वा या ५८ व्येंट्र शासु १५ हीं ५ या विष्ठ या विष्ठ शासा व्याप्पराहेनायान्दरान्धेन्यानाहेशापेन्ते। देवारनाश्याप्यान्द्यानाह्यस्य

वर्तेन्यर्थे ।ने.क्षेत्र.लट.केष्य.काका ने.क.क्षेत्रा.कर्त्रूट.क्ष्य.का.चर्ष्व.वाट. वे वा यरे यर्ने से पा यरे से से वर्षों से स्था में वि या वर्षाय प्रेत वशःकेषाद्वस्य द्वाराय । स्वाप्तः द्वारा स्वाप्तः द्वारा स्वाप्तः द्वारा स्वाप्तः द्वारा स्वाप्तः द्वारा स्वाप्त यन्ता वित्रासुःहैनायम् होत्यन्ता वित्रासुन्हित्यम् होत्यवि। ने परि भूर इस मर पर्वे न परि हो निर्मा स्थापर क्रिं निर्मा न्द्रीवार्यायान्द्रान्यावर्यायवे न्द्रीवार्यायान्द्रात्रेत् स्वार्यान् स्वार्यनः श्रुटि र्ने । इ.स.च.चबुब.लूर्य.स.कुर.ग्रीय.ब.स्य.ध्यस्य स्वीर.सर.ग्रीर. राधिवार्वे । भेरास्वाद्याध्वायवेधिदायात्तेदाराह्यायसहिंगायाद्या नरुशामशासळ्दासरावहेदासराग्नेताये छे दावे पेरिशाशु हैंगासरा होत्रसधिवर्ते। । यदःद्रमासरःहेमासरहोत्रसदेळे व वे वेदस्सस्य सुद्रहितः धर हो ८ दे । विश्व श्री । गुरु व्यय न तुर्य व्यय गुरा ध्रुवा सर्वे र वी व्यय वा नविःर्यः नेरः गशुरश्यने । नेरः धेवः अवः रगः तृतरः ने ः रगः मीः रेशः वहेवः व्रवः राष्ट्रमः वाशुस्यः श्री

स्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र यथात्त्र्यायात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र यथात्त्रात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र

ग्रेन्सित्रः भ्रम् सर्वेद्यान् । व्यव्यान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्व वेवा नेप्रप्रेम्भेर्यस्याधिरातुष्येवार्यस्यार्हेवार्यप्रेकेर ने न्या हैन विव हु खेवा अध्यस हैं वा अध्यस ग्रुप्त है स्व धेन खा ग्रेन धिन वि ञ्चनाः अर्थेरः नारः धेरः पर्दे । र्थेः श्रॅरः हेनाः यायशः हुरः नः नारः ने सा हे परः देरः ने अः रवः ग्रीअः ने वः हुः खेवा अः धरः हैं वा अः धवेः के अः इस्रअः खः इस्रः धरः वैषिष्यं नश्चित्रं तुः सेवाश्वास्य प्रदेशं विष्य स्वर्धित्र स्वर् या हो दारि खूना अर्वे दाना प्येत पर्दे वियाना शुद्र अर्थे । विदे वा कुत अर् र्वेश्वराप्तरात्र व्याप्त के स्वरायात्य स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त र्यायदेः धेनः या होनः प्रशासिनः या होनः हेनः स्रोध्यायः स्था होनः या हिनाः या <u>ব্রব্যের ব্রব্ধ রুম দ্বির্যান্তর প্রতির্বার্য করে । রুম শ্রী রুম প্রা</u> ल्यायायाद्या यादायी के सेस्यायाद्या है यस है या यस हे दारा दे दे के ते[.]ऍरशःशुःनरंवःनवे:हेशःशुःत्वायःगःन्तः। नेःक्ष्रःवान्तःवःयःयः ने'नविवर्र्'र्से'सॅर्नेन्प्ररहेर्'यावे'र्धेर्स्स्युप्रदंधानायार्से'सॅर्नेन् रादे हे अ शु ख्वा या पश्चे ने माश्या है 'सूया अर्घर मी 'र्से माश्या र माश्र र या श्री दिनने न्या अर्देर यह शाना दर से है। यद या अर परे देन हा सुरा या न्भेग्रम्भःत्रभःनेदेःसळ्द्रःसंधिनःत्यःह्येन्यःधेदःह्ये। ग्राह्यःत्यःद्येनस्यः यर र् से हो र पर्ये । पहिषाम है। सूर सारे या परे या पर हा परि हो र र गहरायायनेनयायी ।गशुयायाती देयानेनायये देवायासूरानविदाता नश्चित्रयम् श्चेत्रयम्।

क्रायानुवानी वाले नुवाल प्रसेवायाया हो। ने प्यर पेरिया सुर्से वा नवे खूना अर्बेट नी कें लाखना अर्थे। निर्दे प्यट दें त दें निर्दे प्यट हें त दें निर्दे प्यट हें निर्दे प्यट हें <u> बे</u>द्राचेदावर्ष्याद्यस्थाग्रदादे द्वाप्यार्थे स्थित्रहेवाप्यदे । देप्यार्देदार्केयावा वै। क्षेत्रायनेवेरेववेरवेर्ये प्येववेर्वे वेशक्षयात्रे । नर्रेशर्ये क्षेत्रायात्री वर्ने ने नर मेर्दि। वर्ने ने मेर्दि रहें मेर्टि असें लेश कें या नर्दि। अक्ष ने ने सें या न वै महिराहे। यने वे नर्मा अळव हिराने। यने वे हे वे अळव हिराने विरा यत्या त्रुवः सॅटः नः न्दः त्रुवः सॅटः सः धेवः यः स्वा वर्षे । सुन्य सः स्वा वर्षे थॅव निव निव निव में में विकास में वि र्अवित्रे क्षेत्रः श्रीत्रे । । अर्वेत्रायिः र्यायिः र्यायः वर्षे । क्षेत्रः वर्श्वातः हे । । प्राय्वेतः नवेर्त्याते प्रतेष्ट्रम्पेन्ने वियार्केषानवे । मेनायामार्केषान दे। मेनाया रायविष्यम् द्विमार्यदेःरेग्रम्भार्यदे। वर्षमार्थः सम्मार्थः वर्षमार्थः वर्यमार्थः वरम्यः वर्षमार्थः वर्षमार्थः वर्षमार्थः वर्षमार्यः वरम्यः वरम्यः वर्षमार्यः वरम्यः व यार्द्धेश्वास्त्री । यदी प्यताम् वाह्मेया प्रतादेव प्रतादि । प्रतादि । यदी प्यतास्त्री वाह्मेया । र्शे र्शिक्षे त्र शर्के या निष्ठा । ज्ञाना ज्ञेना यो निष्ठा । ज्ञाना ज्ञेना स्वी ᢖ᠑᠋ᢖᢓᡪᡃᡳᢤᡏᢂᡠᢆᢂᢋᢂ᠉ᡚᢂᠵᠵᠵᠵᡥ᠑ᢖᠵᢃᢓᡪᠮᡬ*᠖*ᠾᠫ षरविने के के अर्थे विने के ने न पर्ये के अविश्व के ने न विने के क्ष्यानर्दे। विषद्भन्यम् नश्चनः प्रदेश्चेष्यम् । क्ष्यः मान्यः भ्राप्यः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । र्देव नश्चन मर्दे। १८६ : प्यान के प्यति । प्यान स्वान स्व केश्यति ख्रान्ते। क्रिंत्या मुख्यते ख्रिंत्य स्थित स्थाने क्रिंत्य स्थित ख्रान्ते । क्रिंश क्रिंत्य स्थित ख्रा क्रिंत्य स्था क्रिंत्य स्या क्रिंत्य स्था क्रिंत्य स्था

ने सूर दुग हु नवग भन्ने इय पर्चे र मर्भ ने र मर ग्रु न ने गारु र र्ने अप्ते श्रुअप्रिक्तिन्द्रिक्षित्र विश्वास्ति । विश्वास्ति र्रेदि: न्वर: न्व्यान्यः स्वाप्तः न्यान्यः । विष्ठेयः प्रदे: न्वर: न्वयः न्यः न्देशसी केंद्राचान्त्रम्यो अळव हेन्केंद्राचा पहिला है। नगरन्, जुरान्या भूगाया या सुरान्दर्भे दे सक्त हेन के वा ना ना नि क्र अप्यथा देखे खूना अर्वेट नी क्वें ना शुखा दर ना वि रन हु द्वे ना क्वा मन्त्रमायान्स्रीम्यासाधीताने। सर्मेरानस्या नेयाने स्वासर्वे स्वस्य उदः पदः द्वाः पदः वर्ष्यः यः प्येदः द्वां । विश्वः देरः वलदः यः देः द्वाः वीश्वः भ्रूवाः ख्र्वाः अर्वेदः निवेदे क्वेदिः विश्वास्त्र अध्या ने विश्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास् *૾ૄ૱*ૹૢ੶ૡૢਗ਼૱੶ਖ਼**ઽૺૐઌ**ૡૢਗ਼૱੶5ૢਗ਼੶ঢ়ৢ੶ਗ਼ૹૢઽ૱੶ਖ਼૱ૹૢ૾ૼ੶ਗ਼ૹૢ૱੶ઽઽૐઌ੶ नः तुना दे स्थाय विस्तर् न्य सूर दे ।

स्राचन्द्रियामिकेस्यादे मुद्रास्त्रिया प्रदेश्येद्रास्त्रे स्याध्या स्राच्या स्राच्

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

सर्वेद्रायायदायेद्रायाचेद्रायाचित्रं क्षेत्र क्षेत्र

বাধ্যম'না

स्वा अर्घर नर्से अ मिरे खुं या या निश्व

स्वाश्रावावद्गान्यान्यान्या स्टानी स्वाश्यायाः स्वाश्यायाः विद्यास्यायाः स्टानी स्वाश्यायाः स्वाश्यायः स्वश्यायः स्वाश्यायः स्वाश्यायः स्वाश्यायः स्वाश्यायः स्वाश्यायः स्व

क्षेत्र-देश-स्वाध्यात्र-स्वाध्यात्र-स्वाध्यात्र-स्वेश-स्वाध्यात्र-स्वेश-स्वाध्यात्र-स्वेश-स्वाध्यात्र-स्वेश-स्वाध्यात्र-स्वाध्य-स

के खे के के अपने निवाधित छुं या निर्देश ने या के से या निर्देश के या नि

ग्रन्थित् स्याम्य निर्मेश्वर्थः स्थित् स्थित् । स्थान्य स्थान

ॻऻॿॺॱॴॸॱख़ऀॺॱॻॖऀॱॻऻॺॺॱख़ॻऻॺॱॸॸॱॾॣॕढ़ऀॱढ़ॾॣॕॻऻॱख़ऀख़ॱॸॖ॓ॱॻऻढ़ॖ॓ॺॱ समुद्रायाने यादा वापावदा विवायी सम्वेशास सार्के वाप्त है। सुरेश सा <u> बे</u>दायःश्रीम्रायायदादेरावशुरावावर्क्षमापुःश्रेदाया वेःश्रेपेदायश्रीयदाः ह्री यदेरवे मार बगारे अरे महिरास बुद सर ले अ द अरे द राय विग राधिवार्वे सूत्रात् ने प्रतानिक समुत्र सुना राष्ट्रे ने रात्र सूत्र ना से न ममा क्षानासार्वे प्यान्ते रायान्त्री यहे तामानवना मार्च सामी साहित हैना नर्झें अरु सर परेंद्र संप्रवाय न धेव दें। विय हे वाद दुः हैंवा ग्रद हैंवा सरें वस्र राज्य का विष्य निष्य निष् मर्ज्ञिया हो द्रार्ची त्या अर्था अर्था वर्षा है स्थान स्थान है स्थान स्थान है स्थान स्थान है स्थान स्थान स्थान न्भिरावी ख्रिवाकात्वाप्यराष्ट्रित्रवर्देवाका क्रुं ख्रराबन् ग्राटाक्षेन् प्रमायग्री स् क्षेत्रान्त्रेयात्रायाया वाराविवार्येययाची द्वयायर हिवायया वर्षेत्रायया न्नो न न्र न्र ने न्ने नि न्य अभी न्य न्य की अभी अभा उत्र हम अभा अर्थे ने अभ वार्श्ववाश्वास्त्रे विज्ञासातु श्रिटा बिटा वर्षिय यात्र यात्रिय स्त्री । वाटा द्वार श्रेष्टा भे·भेस्रभःके·अ८:भेन्द्रेन्।यादेःवित्रःवःव्ययःधेन्यःशुःवरःवरः वशुरार्से । ने व्हानमान के प्याराभी निर्मे न माना में निर्माण में नःश्रुन्यम्भ्रेः गुर्दे । श्रुवायायार्थे ग्रायाः श्रुन्यावे श्रुः में त्रुवारे दिन्दा

नुः अहं नुः त्र राज्यस्व पार्वि वा धीव वि स्वयानुः से स्वयानि । ने स्निन् ग्राम् ननेशनेश्वेग्रामः केत्रमास्यवयन्त्रास्य स्थानः धित्रमे । विग्रामः वस्य स्ट ग्रीः इप्तादी मेनापा केदार्थे प्रियाया दे सुरकाद मेनापा मसका उदासुरका यर दशूर में विदेश्वर है प्यर से नश्य से विश्व हूं न वा पर द्या पर श्रॅंश्रॅस्ट्रेंग्रपंदेखळ्दाकेट्यी:वेशस्य स्ट्रास्ट्र्स्य । प्यट्ट्या मदे थे ने अ ग्रे इ न हे थर न्वा मर से से रहें वा मधे द मस ने सुरस वः इत्याव वद्या देवा हेव त्या वद्या स्वर्थ व्यवस्था विश्व व्यवस्था वद्या विश्व व्यवस्था वद्या विश्व व्यवस्था व वर्गुरर्से । श्चेत्रायार्थे वाषायाश्चरायरश्चेत्रायराधीर्ये विषाश्चरायराधीत्र यायार्श्रेषायायायवयाः विदातुन् सुन्यम् सुन्यायाधिदार्हे। । यर्देन् द वर्रे सु है। ने अर्जन प्राचित्र के ने वार्य के त्रे वि । ने ने नु प्राचित्र वर्ष यापायार्वे देख्या ग्रम्या सुर्या है। ग्रम्सुया सेस्या द्वारा ह्या सी र्यः वृद्धि । यसम्बर्धारान्ते । यबिव मिलेम्बरायि म्बरायाया । स्याने। वनसान्दानेसार्वादियानेसारीसारीसारीसारीसारीसारीसारी यसम्बस्थारुन्नस्थारम् त्यून्नर्ने वियायतुन्स्री नेदे से नामा केता र्रे श्रॅट्य ने त्यर्थ ग्रे श्लेन प्रकेत में ग्रिया प्रमान प्रमून में । दे त्या न से वा मळेत्रस्र्रें मार्चिमामास्या विष्या विष्यामी स्वाप्य के वा तुरहितामा क्रें में स्रावसायायस्रेत्रावग्रस्था हुसाय। दे विविद्यानेवासायदे वासुरास्वा ग्री:र्सुत्यःसःह्रेषास्यःय। यन्षाःसुनःत्रमःग्रुसःत्रसःग्रीन्या

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

र्मत्रास्त्र स्त्र स्त्

राष्ट्री:कॅर्पिव्यम्भा र्राचे व्यासेस्य वारात्या पर्या विष्य विष्य वै। हैं प्रयेव प्रवे व्यवा अर्वे व्याप्ति व राष्ट्रिव प्राप्त प्रवासित स्त्री सुरा रहेत् सी रा वर्षाम्बर्धिन संभित्र हें। इतेषात्र स्थान मान्त्र त्यायने नषा संदे सुदारी मार्था म्ययायार्भे रामने मासूरामये के मार्यस्य प्रमायाय म्याय मिर्ग विकासूरी । पर्ने दे·अ८अॱक्रुअॱग्रेॱगशु८ॱ८२'८८ क्रुद्र-5ुग्गःयःश्रॅग्रअःयदेःअविशःयदेः रेग्रअ:स:५८:खु८:ग्रीअ:र्देव:दे:ग्राह्व:ख:दवेवअ:स:बिंक:अ*इ५:*सदे:धुर: र्रे। विवर प्यट निर्वा विदेश शुः सळ्द सर नि बुट निर्देश हैं से हे सूर नि बुट न-दे-हे-वर्-न-विग्वाधिव-य-दे-विग्वश्व-य-दश्च-वश्व-स्थ-य-द्व-य-दि-खर-देवार्था ग्रेर्था विर्यान बुर-न सूर-सेन-साय-देश-पाद्य-सिन्य-विष्यासदीः विद्यासादिवासादिवासादिवासाविषाः भी देःवर् विदेशेसासादिः प्या अक्केन्यम्कोअस्यम्बन्यान्यस्थि। नेतिःकेष्मिन्याम्बिक्याः स्थानि वर्षे न भेतर् खुना ग्रम्ने उस ग्रीय निना सेन मिने में न में न स्थान हे। देःष्ट्रःसधित्वत्वाहेदःवश्चवार्सःविवासद्दःवज्ञुवानःवार्सेवासायदेः कें प्यर दे द्या या शेस्र सार्वे पा से दारा है द्या वी शाग्र रायद्या से द हैंग्रथासमान्य उदायासमाय मुम्में विदेशे प्रोमान सक्त सें क्रिया बेद्रमदे न्वन स्वा हु बेद में पेद्र द्रा केद्र ख्रुव द्रा केद्र विषय का विषय के नित्रान्त्रभाने स्वत्वा शेष्ट्वा खेवा श्रायस इत् न उत्त्र श्वहिवा श्राय है।

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

श्रेत्राचित

क्षेत्रान्त्रे या वाया विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय वःवर्वाःवेवायःसरःवक्ष्यःहे। देरःसर्वेवःवन्ते द्रादनेदःसदःर्वेःसूरःसेः वेत्रप्र न्याः द्वाः द्वेत्राः ध्वायां अर्थेत् । यद्यायाः वर्षाः द्वेत् । यद्यायाः वर्षाः द्वेत् । यद्यायाः वर्षाः यन्त्रत्राचराम्युर्याते। है भूत्त्। तसम्यायायायस्यान्याः इसायरः र्रेयामदेखर्गियरागुरानगदस्याने। तुःस्। हे सूराव गुरा स्वारा स्वारा न्ययः वाधुवः वशः इसः यरः क्रुवः वः धेवा वार्शेवः या वहसः नयवा इसः यर नहम्मारा के राष्ट्र स्था राष्ट्र स्था प्राप्त निष्य स्था राष्ट्र हिरा वर्चरार्ट्रा दिःक्षान्यान् इतावर्चेराययाधे क्षेत्राग्चे सेवा सेवा क्षेत्रा र्ना ग्री अर्कें द ग्री अर्हे द से रस्य प्रेट न्या हस्य अप्यस्य प्रम् ग्री स्ट्रिया स रासेन्यरम्यव्यास्य स्था से स्रम्सानिवर्त्यम्य स्थानि ह्या विश्वास्य स्था मेर्गा मेर्गा मार्थ स्थान स् वा विषयानाने विषया यापी वार्षी क्षुया यापी वार्षा वार्षी वार्षी क्षुया यापी वार्षी वार्षी वार्षी वार्षी वार्षी नश्चेन्द्रमा विष्यामान्द्रभूगामित्रम्यानस्याने स्वानम्यान्त्रम्यानस्याने स्वानम्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्य र्व यर्वाःविष्ठेशःस्र्रायम् वर्षायम् वर्षायम् वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायः रादे वित्र निवे सूर्या नस्य प्या निवा वित्र में प्राय से निवा से स्वर्या । वर्डिन् रावे खुन् रेवाया ग्री रेयाया इत्यावया वर्षे वाने विद्याया स्थी नन्ता नेवसनेविन्द्रवर्षिससायसार्थेवाता नेविवासनेसाम्भेत्रप्रे

वर्षिर नवे सूना नस्य वस्य उर्देग नस्य त्र र्त्त स्वास स्व र्शेवाश्वासराध्यवात्त्रस्थरात्यात् ध्वत्तात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम् है। वसम्बर्भाराञ्च्या ध्रयायायनमासेन्सर्वेन्स्त्रेन्। श्रिन्सर्वेन्सर्वेन् वयायाःसरःवर्गुरा विकान्दा वह्याःसःसकाग्रदा हैयाः इसकान्देकारीः र्थेन्द्रान्त्रभूम् । न्द्रिंश्ये हिन्द्रम् सेन्यम् र्थेन्स्य स्वान्धन् वेदा । वेद्रा सन्नर्वहेत् मुंदिनायसप्तरेसारी खेत्। सराव बुदावात ते द्वस्य सुंद्री वस्त्र ने न्यायी धुवा से नाम इसाय नु सम्पन्धन प्रमाण स्थाप विद्या विद्या विद्या धर होत्। विश्वामाश्चरशार्थे। दिवाशायवे द्वारा होवा वीशा ग्रहा वही ध्यास्त्रमञ्जूरासेरायराची ।रे क्वेंरायराचे त्रसासाधेना । धेंनाहन क्वेंना <u> ५८: हे अ: प्रतेष: नवे। प्रदेर: ५८: इट: अँग्रअ: श्रॅर: नः है। परे: ५ग्रा: धुव: व्यः अ: </u> अर्बेट नया धिर श्रेय ही खुंय द्या यीय सेता विय द्राय विया या सुरसः र्शे।

ह्नेन्यान्यान्येन्यस्य अन्तिन्ति स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

र्वेर्याः विष्यायः प्रमाधितः श्चान्त्रं विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः

र्रमी धुल है। है किं ब है द की हैं ब धेव सर के लेख स्था नार बना नाववः श्रीयाने त्यास्तराची ह्वाया श्रीयाने वित्व केना वश्रीया प्रति हिंदी निवाया स्वाया स्वया स्वाया स्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स यान्यामंद्रीनविद्याद्यी पाद्याधेत्र है। क्षेत्र स्यायस्त्र सुसामीया युना मायार्स्स् नान्स् मार्चे भाई भान्यवाची र्स्से म् सानस्य निस्तर्मे नामस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स निते भ्रीत्रामात्रमाते पद्माना के त्रिमाया पानिया पा क्रिया मित्र मात्रा प्राप्त का प्राप्त का प्राप्त के प्रा बे·बुर्वे ।दे·विंक्छेदःग्रे-देवःबर्वेदःशुब्रःग्रेयःग्रुवःग्रदःवःश्रुदःहग्रयःग्रेयः नश्चन प्राधित के लिया ग्राम् श्वासी त्या है। देवास प्रियं प्राप्त वित्रा वीसा है। वे भीव फुर्से रश देव है। । यावया है से यर यायाश हैर में । विश देव या य तः त्रः श्रू ५ . वर्षे वा श्रावेश वा त्रवा हे वे वरायः वा वा वा श्रावेश हे ता वा इरिकामात्वास्त्रवाकाने प्रविद्धित्यम् वाक्षुरकामका ने प्रदानवे हेरिकामका ग्राम्पे क्रिन्से के प्रस्ति शुस्र प्रमेन क्षेत्र स्त्रे स्त्र स्त्रे क्षेत्र स्त्रे स्त्र स्त्रे स्त्र स्त्रे स्त्रे स्त्र स्त्रे स्त्र स्त्र स्त्रे स्त्र स्त्रे स्त्र यदे बुद में है प्दर विवा थें द साथ द वहें द सर ब्रेश विवा

ने 'विं ब'हेन' धेव' नुं खुमा ग्रम्। नियम व' म्यम् म्यम प्याप्त धिव' ध्यम न्यम में अळव हेन नुं अर्थ में प्राप्त के प्राप्

पिश्रः त्रुप्तः प्राप्तः प्रवायः प्रश्रमः श्रुपः पश्चितः तुः श्रुः पः ते । वे सः क्रुशः र्येट्र प्रमान्य प्राप्त है से हिंदी विषय है से दिन हैं से साम में हैं प्राप्त से सिन्त से सिन सिन्त से सिन सिन्त से सिन सिन्त से सिन्त से नन्गासेन्या क्रेन्या हेन्यो नेत्राने क्रेंगा हु सुराया धेवावावी क्रेंगा सुरासी र्देन:हॅग:ज्ञव्य:क्रे:वेश:पश:वहेंन:पर:वर्देन:पने:जन:क्रे:ग्नन्य:क्रें। | अर्देर:वः क्रेंद:वक्षें अ:यंदे: क्रें: क्रें र्ह्में विकास मिल्या के स्वास्त्र के निर्मा के निर्मा के निरम्भे के निरम्भे नि ध्ययः दे स्वर्देन द्वेना पाटः स्टरमा डेमा हु देश स्वेटा दे खा यदमा से दासदिन शुर्र, पर्देन नवें राजा नेवे के ननवा सेन सवे नेव ने नेव हैं वे खें या श्री रा हैंग्ररायाधेत्रयम्हेंग्।ज्ञयायायायायाधेत्रते।।ग्राव्तायायाधेत्रा सर्केना के दार्शे राया ग्राटा नद्या से दारि देवा दे देवा है वे खुवा ही या है नाया धरपर्देर्पतिवर्तु। राक्षेत्रेष्यश्राद्यार्थेष्यश्रेष्ट्रित्वर्श्वेष्यार्थः हिन् ज्ञयार् पर्देन मंभीतारु प्रयायाया । जनवा सेन मंदे में ताया में वा ज्ञया पीता वनी साम्बिकानाने क्षा ग्रामारम्यानामम् स्वान्तर्भेमार्थेन सम् वश्य रहे। नन्ना सेन प्रते में त्राय में ना न्या सामा स्वाप प्रति सामा धीत प्रति । धिरःर्रे। १२ अन्तरम्याः पुरिष्ट्रितः यदेः खुत्यः रेग्याः ययः शुत्रः धुरः यदेः खरः न्वायदेख्याया अक्ताया वर्वायाहे याया स्वायाया वर्षे विश्वया भे तर्दे नरन बुरन रंभ की अन्तर्ग भेर पदे रें द नहीं अपर दरें र प ८८। श्र.श्र.श्रे.य्र.चर्वा.स्.र्ह्वा.चल.क्रे.लेश.तश्र.वर्श्व.तर्द्रा.त. वै। सुर-५८-देग्रमः मदे-सम्भायमः क्रेमः केर-दिश्वम् मर्दे।

याव्यास्यम्भः न्यायाः सः याद्वेशः सः द्वी । यः द्वयाः सः न्याः सेनः सदेः क्रॅ्रिं र प हिंद्र भी क्षु न स क्रेंद्र पर हेर पर से हेंग पर पर हैंग पर उस है। क्रॅंट हेट्र नर्झे अपरास्थे सेवायाया वित्ते रचता ग्राट वर्देट प्रयास्था अप्रे सेवाया बॅर्ना दॅवःग्रम्यन्यासेन्यदेन्स्यान्त्रं वार्क्षान्स्याहेन् स्रेवःस्त्रान्याः नेशक्षे हेंगामरानवगामात्रस्य राउटा स्ट्रिट हेटा न स्रीस्य राज्ये दार्वे वेश ह्यर्दे । तर्रे वे शे रेग्र राधिव हे। गर वगरे यरे यर्दे व शे के राहे र राधितासमा विभाभे हिंगारा यादा नर्भे समारा वसमा उदादेश दें न्यी सु नश्यान्त्रायाः स्वायदे देवान द्वीस्रश्यान्य स्वायत् दे विद्यानदे वादा वर्षा देश⁻ ह्या हुन ही से संस्थान क्षेत्रस्थान देश देश देता ही क्षेत्र ना सक्षेत्रस्थान स श्राद्युर्रात्रवे कुं अळव हे धेव क्रिया विष्य हे ग्रुरा कुरा ग्री श्रेसरा नर्झे अरमर्ने देशर्ने दर्शे सुरनर हेन्सि यादर बना मी खें अर्थि दर्शन। सुरनर *ने ने वे के 'इव 'यम 'ग्रुयावया'ने वे 'ये हे म*ुन्'न् नव्या'ने या नर्से या या से वा प्रथा थें ' श्रुयात्रा दें त्र ते यार वया ने या ने या ने त्र त्री स्थान हे न ग्राम न ही या न त्री या न त्री या न त्री या न *ড়ৢ*ॱनॱनेॱहेन्ॱइत्रःपरःग्रुरुःत्रराष्ट्रः र्वेनः हुःनव्याः पदेः र्क्वेरः धेतः र्वेनः नर्झेम्यायाधेवात्रुक्ष्यायात्। नेयाभे हेंगायरायात्रवयात्रस्य उत्सूपा नश्चुर्रायर हे भूर दशुर् ने यात भूर त हे र ग्रार है र ग्र ग्रार है र ग्रार है ৽ৠয়য়৽য়ঢ়য়৽য়৽য়য়৽য়য়৾ৼ৾য়৽য়য়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়য়ৢয়৽ঢ়য়ৢয়৽ঢ়য়য়য়৽ ॻॖऀ। ठेरप्परक्षित्रं पार्यदेश्वयादहिवार्ड्याविवार्ग्यस्थार्स्ट्रेरिवर्स्स्य

गवर सुगर नगग रामशुरा मही । य हेग र मे। क्षान साहे र परे बे हेंग'यर'यहेंग'य'ब्रेंट'हेट'ब्रेंब'यर होट'यदे'दट'वें'यट बे 'यरेंट'या ৽য়ৢ৽য়৾৽ৡ৾৾ৢৼৢ৽য়৵৽য়৽ৡ৾য়৽য়য়৽য়ঢ়৽য়৾ঢ়৽য়য়ৢঢ়৽য়য়ৢয়৽য়য়৽য়য়৾ঢ়৽ ॻॖऀ। द्रवःग्रदः हरायदः क्षेः ह्रिनाः यरः क्षेष्टः देशः ग्रीशः देवेः क्षेवः देवः द्रायः तः क्षेत्रः हैंना सदे ले अ र न शे अ र शहर साळ र माडे मा न हर हो। हे वे वे वे में मा हु से हिंगा धरःगटःचवगःवस्राउटःक्षेटःकेट्यीःदेवःचक्षेस्राधरःवर्युरःदेवेशः श्चर्ये । यदे प्यत् से प्यत्र दे। दे स्थान पारे द वे पार्य स्थान से प्रति प्रति । यदे प्यति । यदे प्रति । यदे प्रत गठिगानुरात्रानेति हे सासु गठिन तत्रुगार्से लेंगा प्रते से हिंगा पापार सेंदर हेन्'नर्झें अ'मर'न्'रुट'ष्रय'नर'वशुर'हे। क्षु'नवे'न्ध्न'पःर्धें व'न्'र्शें नरःगहेशःगाःषःअद्धंदशःषा रदःत्रात्रःषुःनवेःश्वेदःत्रःनवगःसवेःश्चेत्रः धेव से प्रें राज्य सुर प्रें से प्रें प्रें ये प्रें राज्य से प्रें राज्य से प्रें राज्य से प्रें राज्य से प्र रदानिवरभेदासरामाहवायासमासमित्रिवायानवमासाधिवाग्रदा देवका इट वट र्सेट न द से विया है न विया संस्थित कर ही र हैं है ला पट से हिया क्षे. व्या. धे. यावश्राची यावश्राची स्त्री स्त्री

गव्रस्यायरम्यायायम्बियादी पि.क्रेयाद्यसे देःक्ष्रस्थायासुस्रसेः वर्ने न शी क्रें न हेन न क्रें साम वे के क्रें में हैं न ला में साम हम सामे। ने न सामे वे र्देव-दे-त्य-भेस्रस्य-त्र्य-दे-त्यस्य-जावव-त्-से-त्र्येत्-स्य-त्र्देज्-स-त्रेत् क्रॅरकेन्धेवक्रियमियरवर्ष्क्रियमधेवक्रियम्भ यः र्ह्वे । वार्षा वार्षा व्याया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्र नदे के र्रेट हेट ग्रे प्राचा इत पर से होट पा पर से त विटा खुन रा ना सुस राः क्षरः क्षः नवेः न्ध्रनः सर्वे तः नुः नहरः धरः ने त्रशः क्षे नाः तुः से गात्रशः स्वेः *बे 'हॅग्'रा'पर'बेद'येद'ये से स्ट्रियादी वर्दे 'वे 'क्ट्र'वदे'त्युर्'या ग्रुया वेर*' नदेन्द्रिक्षाना इत्रं अञ्चला सुर्वेना हुन्या क्षेत्रं वा क्षेत्रं क्रॅंटरहेट्रपक्कें अपरायरें द्रायाधीवरयमा देवामायासाधीवरहे। देख्यं वर्षे क्रॅरकेर्ज्यवर्मिन क्रिंया क्रें या होर्ज्य विष्णवस्य क्रिंया हो। रहर्जे क्रिंया क्रिंया सर्वेट्सी क्रिट्स् वासेट्स राजे खूना गढ़िया वहे वा वट्से हिंद्र वासेट्स रे ই্রিনামানাউনামানীরামারীমার্নী।

यहिरागान्त्रीराणी हियारान्त्रायराष्ट्रीत्राक्ष्या वहिया क्षेत्रान्द्रन्ध्रम् क्षेत्राचाहेरामा न्वेत्राचित्र स्वेत् कुः सळ्ता देःवा क्षेत्र स्वा श्चेरिः र्ह्हा का मानि । यह वा स्वार के निवास के यासु वना केंद्र प्रदे सु पदे देश रास से दान सुना सर्वेद मी हिन्य रास से हु। से ने ने ने ते कुरमा शुरुषा परि द्वीर प्राप्ता क्षाय ने प्रकर परि या प्रसास किया नर्ड्र अप्युत्तर्या वि नावय प्रम्य अर्घर कु नार प्रयायाया चित्रयान्। कुषावित्रयाम्यान्यान्ते कुष्यान्यान्यान्या नश्रश्रायात्रश्चिराचतुः भ्राचा इसासरान्या प्रते कुः यश चुराचा धेव देँ। विराद्या वस्यारायदेःयात्रसाद्द्याः विराधार्वे साम्याद्याः सर्वे स्थानास्य विराधारे योग्रयाधेदार्देश विश्वासुर्यास्य स्टि: द्वीराप्ता श्रेत्रसेत् ग्री: तुश्वास्य यथा व्रथायायश्लेयास्यायग्रुटावेटालेयास्याग्रीयाहेदार्थेट्यायार्श्वेटा नःश्रेषाश्रःश्रूनःत्र्यावेषाः इत्राराः भ्रूनः षाशुत्राः पदेः श्रुनः देष

क्ष्रनाने त्यकाक्ष्मा सर्वेट हो ख्याका दी

द्रासं गित्र वा विवस्त विकास विक्रा स्वा क्षेत्र के विकास विक्रा क्षेत्र विकास विकास विक्रा विक्रा

रमादिना हुरायरा भ्री नियात्र सम्बद्धा विष्यात्र सम्बद्धा सम्हितः यदे के न्युन्त्र अर्भेन्द्र निर्मे अर्थे। । यदे या विष्ठे व । न्दर्भे त्र असे न्युन् धर्भे पर्देन् गुर्भे अप्यथ्य ग्री अप्यान्त्य प्राय्य ने वेत्र व्याय क्षेत्र प्राय्ये के न्धनः र्से सः चुरानः हिंगा सः इसरा सळवः वहें वः धेवः सूसः न् वहः स्रे। ने हैंग'ज्ञय'ग्रे:नेस'यस्य वर्गासेर'वर्झेस'यर'वर्रेर'स'सर'र्,'वग्राग'यस' भे त्वर्द्धा । ग्वत्र पर हेंग् र दे र्गा वस्य उर्द नि दे दे वि स्थान नर्झें अरमदे कें पर्मे मान्त्र मान्त्र प्यादने न अरमदे कें प्याद हें मारम से दिना तुःदर्वी अः स्र अः द्वावाःदर्वी अः सरः दशुरः विदा क्षेत्रः सः सः व्यव्हरः सः दहः र्हेन्-स-न्द-र्हेस-स-न्द-क्ष्र-हेन्-ग्रेन्-स-सेन्य-वस्य उद्-ग्रद-विद्-ग्रेय-हैंगाम्य ग्रुप्तर्गेयाम्य देवे के प्यर पर्मेगा र्नेया पर्मेयाम प्रमुक्त हो। यदेव वहें तर्श्वें अ हो द र वा वा द वी अ वा द अ वा वतर हो र के से द वी अ स दे र ष्ठिन्यम् द्वर्वन्यन् योद्ये वेद्ये स्ट्री । याया हे ने प्रमुक्त के प्यर्ने न येद्र ॻॖॸॱख़ॖॸॱॸॸॱॸॆऀॻऻऺॺॱय़ॺॱॾॣॕॱॸॖॱय़ॱढ़ॺॱॸऻॖॕॖॖऀॸॱॸॱढ़ॆॱॸॸॻॱऄ॓ॸॱय़ढ़ॆॱॸॆ॔ढ़ॱॺॱ हैंग्रथःसहेंग्रथःसरःद्यःनदेःद्वेरःधेदःय। क्षःनःधरःह्वेरःवेदःस्यानङ्ग्रसः शुअ: र् हेंग्र अर्थ भेर यथा दे द्राय प्राप्त से द्राय है से विद्राय है स यर्देवसेट्यर्यर्युरर्दे । वायर्हेर्नेवेरवर्षेयर्वेयर्हेस्यस्य

यदेन्स्याः भूरार्थे अत्यान्य अत्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

दे सूर पर क्षेत्र रेत्र ग्रुस ग्रूस ग्रूस वि ग्रुस ग्रुम द्रुस प्रके कें निधन प्रायम निष्या वर्षा वर्षे या सम्मासुन या सिष्या प्रायस ग्रम्। इयादर्वेरायाधेयावद्यादेख्येयायरात्रेत्। वियार्थेयायाग्रीया नर्झें अर्भवे के न्ध्रन्यने न्वा होन्यम्याश्रम् अत्रात्रें म्यावर्धे म्यावर्थे म्यावर्धे म्यावर्थे म्यावर्थे म्यावर्धे म्यावर्थे म्यावर्ये म्यावर्थे म्यावर्ये म्यावये म्यावर्ये म्यावर्ये म्यावर्ये म्यावर्ये म्यावर्ये म्यावर्ये ञ्चनानार-रुट:ह्रेट:य:बेना:य:होट:यदे:होट:पटा वे:नावय:य:यानःयदे: द्यात्रेशस्याग्रीःभ्रयश्राक्षायदेः द्युद्रायः इस्रायासुद्रायश्रादेदेः देसः न्वीरश्रामाधीताया न्वासाक्षेरामें त्यशाग्रामा क्वें के साम्याप्ता पुःवी । वासूनःक्षेत्रस्या बुदः ग्रः नदी । क्रिसः इससः न्देसः से पदीः नवाः वा विरास्तरीयाते वर्षे विरामहण विरामश्री वर्षे वरमे वर्षे वर हैट:दे:वहें **त**्रश्लेश:यंत्र:देंग्।हु:वदे:दध्द:य:इस्रथ:ग्रु:वर:ग्रुट्य: यन्ता र्रेनियह्याययाग्यमा वियादयानययाग्रहाये दुरावहुराना निवन निर्मान कर्या दे निर्माले यान्यान हों या यान निर्माण या निर्म नर्झेयायराम्बर्द्धर्यायदेः ध्रीरार्से । नियादायराध्रीदायायादेयाधीः रेया यप्तरानक्ष्रतायाष्ट्रीः अपाष्ट्रेशाचीः देअपाष्ट्रस्था विष्ट्रा स्ट्रीता है ता है ता है ता है ता है ता है ता ह

नश्चनशन्त्रभ्वेशन्तानर्श्वेशन्तिः देशन्तिः स्थान्य विश्वान्तिः नर्श्वेशः विश्वान्तिः नर्श्वेशः विश्वान्तिः स्थितः स्थितः स्थान्तिः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थान्तिः स्थानिः स्यानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्यानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्यानिः स्थानिः स्यानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्थानिः स्य

ने ॱक्षर-त्र-वि ग्वत्रभः श्वनः प्रवे र्देना हु ख्रूना अर्बेट नर्द्धे अ प्रवे के न्युन श्चेंसायनयः विवा ग्रस्य स्ट्रम् ग्री विवायस्य प्रदेशाया वासर र प्राप्त स्था नश्चनशर्भते भ्रीत्रित्वे मान्या सेत्राम्य स्वाप्त्र मान्या देते भ्रीत्र स्वाप्त सेत्र सेत्र स्वाप्त सेत्र सेत्र स्वाप्त सेत्र सेत्र स्वाप्त सेत्र सेत् ग्रम् र्भुम् प्रवेषिया न्यम् र्भुम् अयाम् ग्रम् विकास ने प्यत् भूना अर्थेट नी न सुन र्से अ सुरु र से से अस्त में से देन ने त्या वहें ना र्से अ तुषान्यान्यान्येदायायाद्येग्यायादे विःभूगा तुदावत्रेयावतुत्रायायेदा स्याने। दे सूर्भेत्यायावयायादेयार्श्वेयायावययाउदाद्वायावरा ᢖᠵ᠋वेटिशेम क्रॅन्पिकेन्प्रक्षियायायाद्वयावर्शेम्प्रहोन्दि। ।नेर्केन्प क्षेत्रपञ्चित्रायास्य विषया स्वाप्त्र विष्या से स्वाप्त अर्देव'सर'न्याय'नवे'यावर्थ'ने 'न्रा'ने 'न्या'नी 'र्दे'ने 'हेन' खें रूथ' खु'नडे ख'न क्रॅट्सरहें न्या के विवयमार धिव सरे प्यार वर्ष या वर्षे दासरहें न्या र्शे । श्रेययमारमीयहिंग्यायमि परिरेशितमात्रम् म्यान

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

हैंग्रभःहे। ने स्ट्रम्हेंग्रभः स्थायक्ष्यः स्थायक्षयः स्थाः स्थाः

स्टार्ट्रेशक्षेत्रभावर्ष्यः निर्दे स्थाय निर्देश स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय नहग्रायायार्द्वेतायम्हेग्रायाप्ताप्ता क्रेंदायम्हेग्रायायाप्तायद्या বনমন্ধ্রন্দের শ্বীন্দের দ্বীকামান্দ্রন্দ্রিন ক্রান্তর্মান্দ্র कें होत्यरम्बर्द्धर्याचेता न्ध्यत्वराक्षेत्यराहें वायायातेयायक्त बेर्गी; इत्यत्वेरित्यत्व्ह्वाः धर्मा शुरुषः धषा धरिषः शुरु धर्मः ध वर्क्केयानवे नेग्रासवे न्युन्य क्षेत्र न्यान हम्या क्ष्या वर्षेत्र प्रा बेद्द्रम्भः से हिंगा प्रस्ति मृत्या से सेद्राप्त प्रमान म्या प्रमान स्वा हिंगा । देश वःस्रावन्त्राध्राद्धरःकेषाद्वस्रायावद्याःयद्विषाग्रीःरेजे द्याउद्यापरः अ:ग्रुव:सर:रेग्रअ:सदे:अर्टेंद्रग्रीअ:वर्नेग्राया वद्या:सेट्रय:य:देश:स: इरा ने क्ष्रर निर्मामिक रामे निर्मा के रामे के निर्मामिक के निर्मा के निर्मामिक के निर्माण के निर्म बेन्'सक्र 'धरन्या'सर्'युन'सं हे 'बेया' धेन्'ने। बे 'या नुबा ग्री'तु 'बेन्'सरे' न्देशसेन्धेन्धरादिक्षान्ति स्वानिक्षान्ति स्वानिक्षान्ति स्वानिक्षानिक स्वानिक्षानिक स्वानिक स्वानिक स्वानिक स ने महिरावयापर सन्धेम्यावा से मिन्या में निरायेन स्वापिता धरःदग्रशःग्रहः श्रुद्रः शेःदर्ग्यायः सूर् द्रियः सः विद्यायः विद्यायः षरःगिविःवगरःषरः सः नुभेगशः नु नेवेः नुर्देशः भेनः ननेवः यः नः पेनः यरः वहें त'रावे हें ना'रा'पर हो नर से 'वर्गुर रें। इने स'त सक्त सर वहें त' यदेःहिंगायात्रस्य उर्वेगायरावश्चरहे। यदेवायहेवाशेःहिंगायाधेवावा <u> न्रॅशर्सेवस्नर्देशसेन्यनेवयस्यहें वयसेहें ज्ञासज्जन्य</u>न्थेवयस्य वियानेन्य्यात्रवियान्यः वियान्यः वियान्यः वियाने स्थान्यान्यः वियाने १ने सूर नर्देश में जिंद से दावार या प्यर निवास स्वास्य स्वास्य बेर्-धर-देश-ध-वाहिर-दश-वर्देरश-धवे-देश-ध-वश्चेर्-ध-दर-देश-ववा-नरुन्यदेर्नेत्रायादहेवायाविकारेर्स्स्यासुरहोन्यादेर्स्स्यायरसेर्हेवाः यदे पो भी मान मुनाया पी मानी पुराया है प्यार से प्रश्नित सम्पीत होता नसूर्यायार्ड्याभ्रें याद्वीतात्रम् स्थान्त्र व्याप्ते नित्र प्रमान्धितायार्थे द नरंशे तुरुपरिधिराहे। देवे नदेव परार्थे दाराराशे हैं गारा हरा थेवः म्री ननेवः भेनः हैं गुरुष्यः भेवः भेवः भ्री ने नवेवः तुः नन्याः भेनः भरः भे हैं गाय रं अपीत ही। नन्ना भेन हैं ग्राय प्रेत प्रया ने नर्झे अय प्रया नन्गायहेन्याकेष्परकेष्मिन्यवे स्थित्राची । नेयान्यनेनायरार्षेन्या गिरेशःहेंग्रायः संदेरः यरः द्यः दर्गेयः यरिः ग्वरः दीः ग्वरः स्वरः दिवा गिहेश्यासः हिन्या श्रम्याची । गाया हे निम्या सेन्य से मिन्या से स्वासी सेन्य से सेन्य से सेन्य से सेन्य सेन्

यहिंगायधिवयय। देख्याह्यायरक्षेहिंगायदेखेलेयाङ्गेपादमायाहे। वार्त्ते नर्डे साध्य वर्त्य हिन् ग्री सान् में निरान्य सामा मुख्य साने। विना श्रुम्याग्री खेतु ख्या देन श्रुम्या वर्न क्षेत्र हो निरम्त निरमहिया हुर मीर्थानुन्याने व्यक्षासे विद्वान हो। हुन द्वर्था भीता पादिर हो विदान्। ग्री-८नट-सॅ-भ्री-भ्री दे-भ्रीयानयाध्याध्यान्यम् सॅर्-सॅन्स्नायाने हिन्-स्रोताः धर हो ८ दि । विश्व श्रेर से प्राचित्र । विश्व श्रेर से विश्व प्राचित्र । विश्व से विश्व प्राचित्र । विश्व से वाशुररात्या क्षेत्रानेसानमाययाग्यमा नेयाने सूमानेयाम्या ग्रीयाम्या धरन्धन्ने। यान्यो के इयाद्धिरध्य न्दियां यान्यो में विदेश <u>न्यायम् नेयायम् से प्रहेताय नेते के क्यायम् से हें जायते हेट से प्रहेत</u> यादह्वार्गे । कें या बसया उत् ग्री में में हित् से त्राय हित् ग्रम हिंवाया से । वादा विगानिसार्या ग्रीसार्ट्सा रेविटेटे में हिट्से से रामहग्रस स्था से प्रस्तिस म्री धेर्यामेर्यास्त्रास्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य नेदे इसम्मर्हेनाम दस्य पर से देना केर में केर से दिन से दार केर दस्य पर हैंग्रथःसरःक्षेःदशुरःहे। नेयःस्वःश्चेःश्वरःवःक्षेरःसवेःश्चेरःसें। दिनेःक्षरः मदेखे सुरम् नाइन निरमाइन सम्मेष्टे से मिन्से मार्थ निरम से नि में वियानर्रेयाध्वापन्याग्रीयानगायास्याने वियासे । निःक्षायापीयाया गयाने भी शास्त्राणी सार्सेया नुष्ठी दारायश्य ग्राह्म स्वाराय श्री दाराय स्वाराय स्वार

न बुद्दान रहें साया साधी दारा दे र सूद्रा सद्दु न स्वतः विदारि । दे र सूर साधी दाद सर्ने भे ने न्या यथा वटा कुन से समा न्याय से समा न्याय के तार्य भेगा र्याग्री:सर्रेयानुष्टिवायायार्श्वेन्छिता नेयार्याग्री:सर्रेयानुष्टिवायाया नर्झे अरमश्रादिने सूरके नरनिह्या हिरादिने सूर देश सर नश्र असर नहीं। है। नेशन्तर्गीः सर्स्या हु ही दारा पदी यादा धेव। नेशन्तर्गी सर्स्या हु ब्रेवःयःवर्देःगरःगेःधेव। हेःकेंशःगरःसेन्यःन्रःसेःन्सेग्रयःयःनेःवेशः र्या ग्री स रें य हु ही द रा पीद द स विस्ता वाय है हे सूर है वर यह वासा ने सूर रेश पर प्रश्रम्भाता वेश केर द्वित पर्झे स प्रवे के प्रिंत पर मिश्रद्रश्याप्ताद्वा नेश्राद्रवाश्चेदार्थे त्या नेत्राधित वतार्थे त्याहे स्ट्रमाञ्चर राष्ट्रेश्रासदेख्यत्तु सुरार्धेख्यार्थेन्त्राण्यरास्टानवेष्यक्रीश्रार्थेटासरा क्रायर पर द्यायर हे अ शुर्व होते | विश्वाय द्रा कृत्य वश्या यारःक्टें तर् अः श्रम् अः अः श्रम् श्रम् श्रम् । विश्वास्य स्याः धरःवर्नेगावयः ह्याउँ या शे द्वीयाया के। । यहिना हेव द्वा व स्वेया रा सर्रेषा द्वेत मुरुषा विकालेश र या ग्री का र्केश द्वारा या प्राप्त प्राप्त व म्याउँ सायार से प्रीम्यायार सर्वे र स्वे र से व र प्रीं प्रमाम्य स्याने ने प्रदानि ने वार्थ से से स्वह्वा न्वे साम दुः साम्युरस्य पान् र है प्रूर से ववावा ने सूर्के वर्देन व के राह्म स्थान हुए से वहवा पर वाशुर र राने ता कु अळव के पेंद्र राधिया द्रान्द्र में ना राजार ग्रुया श्रम्य राजे ग्रीशप्तिर्वरप्रकेरप्रस्तरपर्देर्द्वा शे हेंग्परादेवे ग्रान्स्थरम् वृदे दे निर्म्भ अर्थे सुर्यायाया श्रीम्थाया स्थ्याय स्थ्या स्या स्थ्या स्थ्य

ननेत्रस्य तहीत्र प्रते हिंगा प्रत्योगित दी। निर्मे स्वाधारा त्र श्रुवा रु विषय्त्रम्भ्यान्यस्यानभ्रीत्राम् क्रिन्यान् स्राम्य मेन्यर देशं दश प्रविषाय है प्रक्रियाय धिद ही। यावद व्यवश्रेन्य क्ष्र-नित्रम्न बुद्दनित्र खुत्यनित्र वित्रम्न हो स्रोत्य क्ष्या स्वर्ष मैशरेशक्शरेवेरेंदिन्यावर्षेशयरहित्यात्रीक्षाम् नित्राधरावर्षेत्र यदे से सम्रास्त्र माया नापा पार सम्ब्री माय मार से नुसार्थे । पावन यर निर्मेष प्रहेष ने प्रविकास स्त्रिय स्तर्भेष स्त्री का प्रविकास प्रमेषि यदे देव से दायदे ही सदी विदेश प्राप्त का स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्व ध्ययादे सेदारम्स के शावाद्याया सरहे सुर के शाहे। क्वें विद्या साविया वे न बुर न क्षेत्र ही 'धुष थें द से द दि त त्या श्रुवा न दे ही त दे व दि व ग्रीश्राद्दे स्वराव बुदावदे पुषादे से दाया प्राप्त द्वा वा विश्वा के स्वर् मर्था दे.पश्चरामदे.स्ट्रान्ट्रम्यायामदे.क्ष्यायादे.सम्प्रम्ययाया नर्हेश्यायाधीवार्ते। १ने सूरा ग्रुयावया ननेवा सेना ना नवा सेना ने नवया ननेवायमा के हिंगायमा यहें गाय है। विं ने रुगाय है। यहें नाय के स्था के र्शेर-हेना प्रदेश्वेश रवा ग्री प्रधुत पर स्वित तु सिरायदे से हिना पा प्रमें शा ग्री भे हैं गाम उस मी शकें गाम साधी करीं। भिर्म सम्माम सम्माम है भू नश्चन्द्रसम्बद्धेर्क्षश्चर्यात्रम् स्वत्रम् स्वतः नने । प्यतः प्यतः न्याः सर्वे । श्रें राहें याः स्थें तः तुः वर्षे । तः प्येतः सरः नक्षः नरः त्रः क्षे। गटामी धिराधटाट्या सरार्थे क्षेत्रः हेवा संक्षेत्र ग्रीका इतास क्षेत्र सा <u> ५८.लूट.ज.घुट.स.सूट.स्ट्रीट.चेंबा.की यावय.रं.स.लूट.चूं । विय.८८.१</u> ञ्चनाः अर्वेदः वे । प्यदः द्वाः यदः र्शे । श्रें रः हेना यदे । देः वे दे हेन । प्येवः यदः ययन् शः यन्त्रीत्र अर्केनाः श्वेत प्रमान्त्रीत्र या रोग्य स्थाने या प्रमान्य स्थाने या स यशःग्रादःचगादःस्रूखःहि । वसवाशःसःदग्रीदःसक्रेवाःश्चेदःयशःचगादःस्रूखः या भ्रमासर्वेद्राची अपन्तम्या अपनेद्राचे दिन्दे दिन्दे दिन्दे प्रक्रिया अपनेद्राच्या अपनेद्राच अपनेद्राच अपनेद्राच्या अपने स्राम्नेन्यायात्र्वाचे विकाद्यूरारी विस्नवाकारायराग्राम्यानेवाका रायश्यामा व्रिक्तिंशकेवारी ग्रामी भ्रिम् व्रिश्चिश्वान्त्राया वर्षा महिला यक्षव केन से हिंग्या है। ने या व के या समय एक में केन से न या वे या व गुर्दे विश्वानगद सुरा है।

न्याके स्वराध्य स्वर स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य

सिव्यानिक्यान्यान्याः विष्याः स्थानिक्याः स्यानिक्याः स्थानिक्याः स्यानिक्याः स्थानिक्याः स्यानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः स्थानिक्याः

नरेवासरान बुदावयान्यायु या शुर से गुदाना प्यार सूरान भदारा सूरा ने 'न्या' नने व' सर्से न' सर्हे ग्रम् सं स्था र्या स्था स्था ने 'यह 'नवे से ' ग्रवश्याप्तराक्षे हेंगायराग्रह्मश्यायात्रस्थ । उत्त्युया द्वस्थ । स्टान्वेद ग्रीशः ग्रुवः सदसः वर्दे वः सः दर्वे वाः सदेः धरः द्वाः सदेः से रः है वाः सः स्ट्रेवः र्'तर्मे याष्ट्रियायाश्चरयायाध्ययायाच्ये याच्यायायाच्यायाच्याच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्या ঀৠৼৼয়৽য়য়৽য়য়য়৾য়য়য়৾৸য়৾৽ঢ়য়৽য়৽ৼৼয়ৣ৾৽য়য়৽য়ৼয়৽য়৽য়৽য়৽য়৾ঀয়৽য়৽ *पाशुर्र्रासन्दर्वे :बनःसॅदिन्द्रॅव*र्षेक्षःसन्दर्शेस्रक्षःसन्धरम्भिकः धर हैं अरध द्वावा परे दे भेरा दे हम अरद्यवा अरध दे रें के रूट वी अरेवा यर:तु:तःधेत:यशःग्वत:त्रीशःतशयःत्रीशःशे:व्रितःयःयःशेंग्वशःयरःश्रेतः क्षेत्राचित्रात् देप्टरदेरचित्राच्याद्रात्रेय्याच्याद्याच्याद्यात्रेत्र्याद्याद्यात्रेत्र्यात्रात्र्यात्रेत्र धरःवारःदवाःश्रेश्रश्रादाःदेःदवाःवीःश्रद्धिः स्वरेःरःक्वयःदवावाःसवेःश्चेरा

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः श्वाश

केंश्राह्मस्य श्री श्री स्टामी श्री स्वाप्त स

सुरः सरः रें दिरः विषयः वरः विष्टुरः रहेषा दी दिनः सुरसः ग्रीः वे दुः यस्। द्रि-श्रुम्या न्तुःसदेःयसःक्र्याद्वस्ययःयःयःयन्त्राःसरःश्रें-श्रेरःह्रेग्नाः यार वे त्रा देर श्रुरमा यार त्य यह या से र सर श्रें श्रें र हैं या सहर से सम उद्यासेन्यान्द्राञ्चेषाःसेन्यान्द्राष्ट्राञ्चेन्यान्द्राञ्चेन्यान्द्रा यादः वया सेदः संदूरः भेदः स्थार भ्री या सेदः संदूरः भेदः तुः सेदः सर्वेदः स्थार हैंगानाक्षे देंन्सुन्या वर्ने हे न्तु सवे वसाळें साहस्य सामाया प्यानित्र र्शे शें र हैं ना रा वे श हुदें वे श नशुद्र श रा य शें नश रा वदे वद र न इसस ८८.तयाय.यपूर्व । श्रुषा. रुषा. ८८.सू. त्या. या. १ स्था. यदे न्वा बुद्रसायस्य धेदायासे होदास्यान बुन्यसाया स्वा सामित्रस्य स्व स्था र्श्वेरःद्री विश्वानाशुरश्चानामायादाधिवायादे।ध्याना विश्वास्त्राश्चिश्वास्त्राश्चायादा भ्रेन्द्रभग्रम्भायादाधेवायादेन्द्रेयाधेदायाभ्रेन्धेदायस्द्रमेद्रियाधी धेदाया होत्रयासेत्रयाद्यादेश्याधेदाते। वर्षेयासेत्रपदेश्र्वस्यापरावह्यापः सूर् र्वेनाससे द्राये द्राया स्वासाय स राधिराया होराया श्वर्याया उद्या ही या श्वर्याया विष्णा न श्वर्या ।

है। ग्राह्म अप्याप्त । ज्योषायाः श्रिता प्रमेषाय । ज्याप्त विष्य प्रमेषाय । ज्याप्त विष्य प्रमेषाय । ज्यापित विषय । ज्यापित । ज्यापित विषय । ज्यापित । ज्यापित विषय । ज्या

सर्रेर्त्र नेवा य केत् रें या वसवा राष्ट्र शुन्दर वसवा राष्ट्र वारा बेद्राची मात्राम् अक्षास्य न्याया नदे स्वानदे खुषा महिषायशाम्बद यदे भ्राप्त के से दाया कु में दारी सावस ग्रुव दस स समस ग्राप्त दे वाहिस ग्रीअप्रायायायायासूराग्री स्थानापिक्षानारा सुरायारे अप्राय स्वित्र स्वरास्त्र नथा गर्नेव से जन्मे ने निहेश गर र र मी भ्रान र र र र मी गालु र वश वर्तुरानः क्षेत्रावरं यात्रत्र्वे । दे । यादावस्यात्रासायात्रास्यात्रासायाः स्रात्रासायाः स्रात्रासायाः स्रात्रासायाः यानहेत्रत्र्यावर्ळेषास्त्रवासात्रेष्ट्रमान्त्रत्या वसवासारार्वेवासासेनः ग्रे हे अ शु प्रज्ञ र द्वर र ने किं द र ग्रा जुर न र प्रहें द स ह अ शर्र र स्था द्रयापात्रययाउदार् क्रिंदापदा व्रीयापाद्रययापादे द्रवाह्यात्रप्ता निवत्तुः श्रूरः नः वदेः हे व्यूरः श्रूरः नः व्यूरः नः ने तः परः वहे तः परे प्यूयः ग्रूतः नहग्राश्राह्मस्राग्वितः नगरःगी स्ट्रेटः नुःख्रिटः नटः नेग्रसः स्राध्यः स्राध्यः नगः धरःचग्रामाः सदेः महिका शुः से दः सदेः देवः धें दका सुवा वादे का सावह्वा सें। क्रेन्यर ग्रुमान्य स्था स्वाने दे से स्नुन्त् प्रवासि प्रदेश स्त्री साम्या स्त्री स्वानि स्वानि स्वानि स्वानि स द्याग्रीशः र्रेट्छेट्टे नर्से समान्य स्थापर्योवी । ख्यामाने दे स्थान पान्त या वनेनशः द्धयः वितः हुः ग्राथयः नः न्दः ग्राहतः यः यनः यनेः नेतः विः ग्रात्रशः न्दः

युवा अर्वेद या न सुन रहें या र्शेव श

ञ्चनाः अर्वेदः श्रें देश्रें दिः सुंवाद्या न्या व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता सवःरयाःवः क्रेशःयाश्रयः यरः धेरः प्रशः नेरः नक्षः यरः नुदे । सुयाशः यरेः येग्रयास्ट्रिंग्रयात्रयादेवेःग्रव्हात्रयात्त्रूटाचाः सूराञ्जीयास्ट्राचेटाद्रदरा नेतरहुः धः अळवर्या धेवर्ते । । विषाय छेवर्ये देशम् शुर्म्य स्यास्य स्य वन र्रोदे ने न सुरापा ने प्यत् कर न सूत्र पा की ता कुरा के ता के ता कि त नश्रुव पतर में अंद र्थेंद प्रश्रा अ नश्रुव पर देन नश्रुव पति जात्र प्रश्रुव प न्वें राषा भे कुराय ने राष्ट्र कुराय वर्षा इट न्वें रार्शे । ने निवेद न् कु:के'नदे'र्सुग्रायदर:वेयायर:तुर्निय:ग्री वन'यवय:कु:के'न'ग्रा इरसेर्पिते स्वार्थित वार्या ने स्वर्पित सुर्पित स्वार्थित स्वर्णित वार्षित वार्ष वार्षित वार्षित वार्य वार्ष वार वर्यायस्त्रेत्रपिते त्रुप्ति सर्वे सर्वे सर्वे देत्र वित्यास् हेत् या सामा हेता पा वस्य उट्-ताःस्वरान्यःसःसः र्-ताश्रुद्यः स्त्री। বাপ্তাম'না

शुँदःकुंषाचीःमानदःनशुगानदी।

स्रानित्राध्यात्रे प्रति स्रियाः द्वा स्रियाः द्वा स्रियाः स्रियः स्रियाः स्रियाः स्रियाः स्रियाः स्रियाः स्रियाः स्रियाः स्रियः स्रियाः स्रियाः स्रियाः स्रियः स

माञ्चेत्रास्त्रम् । नेते के नधन क्षेत्रस्य स्याम्य मान्या क्ष्य क्ष्य न वहेंगाः क्षेत्रास्तरम् नुराया नात्र्याक्ष्य । वहेंगाः क्षेत्रास्तरम् नुरायाः यदे समुरामान्या का के निर्देश निर्देश से दिन स्थान स्था स्थान स्था वरे।विविधित्रिक्षेत्रायादेवायान्त्रवायान्त्रवायाक्षेत्रवाद्याचेता देवा देवा विविध देश'रादे'ॡ्रेंग्'सुँग्रारान्ग्यानेश'र्षे ५'राद्र'स्ट्रेंस्'रादे बुँग्दर्ग्याराप्ते' उयान् से महिन्यमा न स्निन्से सासन् न् स्यापित से सिन्या वि स्वापित से स ळ सहसायान क्षेत्र से क्षेत्र में सम्माय स्थाय नर्झें अरु पर्या भेरा राजित कि प्राप्त के निराद्या राजित है। विपाद राजित है। कुरश्यिते धेरासरा से कुरायान विषायान विषात्र से समापी प्रमाने कि वंभीव रुपार्ययानम् से सर्वे नियम् स्यूम हे। देवे से मदेवे के विपाद्य नर्झें अरमर होर्ने विगानस्य शेष्वस के नदर गहिन शेस वेपार परेसे नवितर्रिने वित्रं भीतर्णमार्थाय नरस्य वित्रं नर्भे वशुरिने हे भूपार्थात देवे केंदर वेशस्य नर्से अपर नुकें वेश श्री

खुन्यश्चार्यात्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम

नेशम्य निर्माधित स्वर्मन स्वर्मन स्वर्मन स्वर्मन स्वर्मन स्वर्मन स्वरंभित्र ने हेन पा वे पावरा ही र्र्सेन रहे या ह्या वर्षा के स्वेत सुन्या न से ने प्राप्त पान प्राप्त पान प्राप्त पान प्र ने या भ्रमा सर्वेद मी निर्म क्षेत्र स्था निर्मा स्था निरम् न्वाःश्रॅःश्रॅम्युनःसन् बुम्नुःश्लेषःनम्याशुम्श्रःहे। वर्षे स्रम्निम्स ८८.७हूचाराचाद्वेशःक्वेच्याद्वचाराचीरायदीरायदाह्यायात्रा ब्रुवःश्रः र्शेष्या तुर्यास्य ग्राम्ट किंवा सम्याबेन में विनेम वाया के ना है। मम वी सा रेगाःमर्थाः हे । क्षेत्रः श्चें । यहमार्थाः यहे वाह्ये । स्थार्थं वाह्ये । यह । स्थार्थं । यह । स्थार्थं । यह व ब्रैंगार्सेनार्यान्यतिवासीर्यासेन्यते स्रेंन्या हेन्यी सेन्द्राने स्थायः भ्वारा इम्'नक्केन्द्रस्केन्द्रहेन्द्रम्'हेन्द्रम्'न्य्रेस्य द्रम् स्याधित हो। नन्म प्रदेशन्द्रस्य रेग्'सदे'दद्देत्'श्रूट्य'शुद्र्'य'ह्यूट्'चर'श्रूट'हेट्'<u>बुर</u>'स'वेग्'य'ग्रुय'द्र्य' नर्झें अरु गुर निर्मा पहें दा महिरा पा है । पर है । पर हैं निर हैं र गर्वेर-भाषासूर-त्राक्षेर-गर्नेर-न-५८वि विश्वार्गेर-सक्ष्याणरः षरःगशुरुशःशःवेःवेवःषुः अतःयरःश्वरःर्दे। ।तेःक्षरःश्वरःववतःयःवतेः न्वान्ते स्वार्थारा उर्था प्रेत्र हो। नर्झे या प्रते स्नान्य हो। स्रार्थित स्नित्र प्रति स्नान्य स्वार्थित स् इस्रयादी निर्माणिक साम्यामा निर्माण महिताही स्टामीया ग्राटा नर्झे स्रया दयःवेयायराग्चार्योयाययायाञ्चयार्थे॥

नर्झे अरुष्याने 'न्याने 'यय से स्थाने 'यान्य अर्म्याने अर्था स्थाने स्थ

हेन्। विवासस्य न्यूस्य स्थित्य हेन्य विवास स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स र्अक्षेर्वस्य । याद्यार्ट्र्व्या हेत्र द्वेयाया स्वामा । याटाया वीसमा मश्रार्शेर्शेर्यन्त्रम्मा छेटा । छुट बट् से हें मा छेट दुरद मान्या हो । हे सूर नर्झें सरा त्र हें त्र सें र सा नहें त्र हों । श्रु मिं हे सा शु प्रचर पर परें र विदा । यारेषा द्वीत खुनाया श्रीत प्रमायदेत प्रमा । वियासना नार्श्वेसा प्रदे ख्यायाने दे पे प्येता । दे प्यर याद बया यदया से द र्यो स्था या । दे द या दे क्षराहेशासुपद्वाचा विसप्तवृत्याक्षरारी विदेवताहारीसा हैताहेत यार यो अ हिं या अभिता । दे प्रविव या ने या अप अप अप अहर प्रमुव कि अ हेन्-वनेव-यावीवायायायी । शुःश्चवःश्चित्रायाञ्चावायायीय। ।ने-व्ययः नकुर्यंत्रे अव र्या मी शा विष्यं हेर् यने व या है या अप या प्रमूर्य विषय ग्रह्मरुष्यः नित्रं विद्वात्रित् कुष्यः धरः हैं से सन्तुः सदेः ग्रह्मरुष्यः ह्याः हुः वाश्रुद्रश्रायाः भूमा नुस्तुः भूभान्द्राने । भूमानुस्ति । प्राप्ते । प्राप्ति क्षेत्राञ्चेत्यास्य पाशुरस्याया दे प्येतार्वे । दि ते क्षेत्राद्येता गासाया के त्यदे ख्रवार्थान्दराष्ट्रित्रं स्रेत्रं स्राचनित्रं संस्तित्रं साम् श्वेर-र्से न्दर्श्वेन न्देर्व वि न खुः इस्र या ग्री न्वेद्य पदर ने खूर पेव डिटा नन्दिःस्वाराधितःहैनःस्वाराधितःस्वारास्यः मश्लेराधितःसन्द्रानुः प्राप्तान्यस्य न्यात्यः नश्चा स्वासि हितः

भूगाः अर्वेटः यः नक्षुनः रुं यः र्शेग्रा

द्धयात्रे भू भू नाम्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

नवि'ग

नर्श्वेषराम्याः स्वाः सर्वेदः स्वानः सर्वे स्वतः दी

ने सूर शें शेंर हेंग पदे लेश रग ग्रेश नग्रन तश गर्झे सश पत्र ब्र-निश्नित्रक्षेत्रक्ष्यायाने याश्चेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षित्रक्ष्याय समुद्रानाधीदाया विद्राप्ता भेदापुत्रभूरमानाभी मानासमितासमितासमिता राधिवाने। विवासुर्याणीर्नेनेन्द्रान्त्रभुःख्यायानेन्स्रान्त्रनासूराने । वर्रे । पर सूर वि । पात्र श शुन । या अ अ अ श सर । पेर । या रे अ । इर अ । यरे । वि व য়ৣৼয়৽য়ৢৼ৽ড়৾ৼ৽য়য়৽য়। য়ৣৼ৽ঀ৾য়৽য়ৣৼয়৽ড়৾ৼ৽য়৽য়য়য়য়য়৾য়৽য়ৄ। विःतःमहः धेव सूस्रात् न्युन र्से साग्य साने वे स्टार्से न साग्री सामित सुर सामित स व्यायात्राने त्रश्राञ्चना अर्वेट र् प्रमुक्ता । ने ते हे ख्रेट या या द्रीया श्राया ८८.ह.से.च.ज.८शुचारायदुःसैचा.शहूट.चाधुरा.चा.ज.वर.च.लुप.धूरी ।टु. क्षेर्यायर अर्रे के प्रोर्या द्योपायया वर्षे अष्य व्यव्या ग्रीर क्रिया से स्था न्ययःने हे श्रेन्न् खुरान्द सेस्रा भिन्नु स्यायास र्वेन की नर्न् ख़ॣॸॱऄॻऻॴॸॸॸॴॴॴॸऄॎऄॕॴॸ<u>॓ॱॸ</u>ॻऻॱॴॸॖऀॸॱॸ॓ॱढ़ॾॣॾॱॻॖऀॱॾॕॗॣॕऀॸ॔ॱऄ॔ज़ *ॻऻॿॖॻऻॺॱॸॾॖढ़ॱढ़ॸॱॸॖॱऄॸॱख़ॱॸॻॖऀॸॱॸढ़ॎॱऄॸॱख़ॱॸॻॖऀॸॱय़ॱॸ॓ॱख़ॱ*ऄॱढ़॓ॺॱ नहीं राम्याना स्वाम्यहर्ति संपिति हिना सर्वर रहे सार्यासहर

यदे से अपाप्त प्रमुद्ध स्था सम्बार स्था सम्बार स ८८। निरःद्वेतःसरःरमाःषयःग्रम्। देयःस्याःनरःस्रेसयःनितःहःस्रुरयः यार्चिनायाने हिनायान्य यात्र यात्रे हिन्दूरान्य सम्यास्य साने हिना की निता दे प्रदेश की मा बुग्याय इंदर की हैं दि एपया या ख्रेगा पर से या या या से रा ने श्रेन नु ते ख़ूना अर्थेन नि हो अर्था अष्ट्र नि स्थित खो नि स्था हो ने सि स्था स्था स्था स्था स्था सि स्था स गरमी के भ्रुराम देवे के ख़्या सर्वेद धेव विराम्य मार्थ है। स्रेन्यायान्स्रेग्रास्यते वियानस्यन्यः म्यास्य स्रिन्यः स्रित्यः स्रिन्यः स्रिन्यः स्रिन्यः स्रिन्यः स्रित्यः स ळुंवाद्मस्याहे स्वानावाद्येग्यायास्यस्यसान्दावदान्यासुदसार्से । विदा श्रुट्यःस्टः श्रूव्यः ग्रीयः यदेवः श्रुवः वः यो स्याः हे गिरुवाः यवटः देयः यदेवः धर-त्राध्यात्। र्रो-र्रेन्हिन्। धिरे-त्युन्-र्स्स्या ग्रीया से । गडिगामायदेवामायदे वे वे गावशायुनामये प्यवापन के प्रवास के । য়য়য়৽ঀ৾য়য়৽য়ৼয়ৣয়৽য়৽ঀ৾য়৽য়৾য়৽ৼয়ৼয়য়৽য়ৢয়৽য়য়৽য় ग्री:ग्रेंग्राश्रादर्शे नःस्ट्रिंन्स्य। श्रें-श्रेंन्रहेंग्रास्ट्रेन्ध्रास्यात्र्यात्र्यः ळॱळु८ॱ८ुॱ५र्शेर्दिॱश्रूअ[,]८ुॱशे[,]न्त्रु८[,]टें।।

हे 'क्षु' च' त्य' द्रिया श्री या त्ये दे 'द्रिया क्षेत्र 'द्रिय 'द्रिया क्षेत्र 'द्रिय 'द्

यम् भ्रे नुष्यः भ्रा विष्यम् । ध्याध्या उत्राम्धे अरशु श्रूट प्रते श्रूट प्राम्या अर्थ स्वाम्य अर्थ स्वाम्य अर्थ स्वाम्य अर्थ स्वाम्य अर्थ स्व त्रअमितःनाधवःन्नाःभःभःतुःवःश्रेश्रशःनेनाःकेनःनाशवःवःन्नशःभवेः हिन्यम्न्य्यस्य स्थान्य ५८। ही:५८:वट:वी:ध्राय:ब्रूट:इस्रमःधेर:दें तःवहवःक्वें तःवसः५:नःश्रवः ब्रॅवि:इस्रायायम्य वस्तिम्ने व्यामेम्य विद्याने व्यामेश्याम्य र्दे'त्र'न बुद्र'नदे'धुष्य'त्'वाद'दळर्द्र'न बस्रश्रे उत्र्राशेस्रशःग्रीशयाहर्द्राः वा महर्-द्वरः बर्-ग्रुट्-से-वर्बेर्-धर-विमान्स-दिमान्द्र्ये-विद्या दे-प्यटः द्र रॅर्ग्या बुवार्याञ्चात्यार्थे वार्यायाचे भ्रेट्रे स्वाची देव स्वार्थायाया हे स्वरायकरा वा व्यास्त्रम् स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप यदे इसमारे राष्ट्र पार्विद राष्ट्र विद्या दे खदर सेस्र शीस या प्रदास वःगहरः इटः बर् ग्रटः भे वर्षे राम्यः वशुरः वः यः श्रें ग्रथः शृहः प्यदः। देशः वे·ग्रेशः अें <u>-</u>र्चे 'में 'क् 'हे - हिंग्रश्य दे 'क्षु' न 'हे - प्र' न् - क्षूट 'न नव न्तुव ' न्यानाने द्वार्या ग्राम्य व्याप्त व्याप्त विष्ट्री स्वाप्त विष्ट्री स्वाप्त विष्ट्री विष्ट्री विष्ट्री विष्ट्री इट वट ग्रट वहूँ वा पर शे व्राप्ते। क्षेत्र का भू वा का भू ग्रवशकःरेटर्ग्नभूटरायात्र देख्रातुःवकरावर्ग्यार्थेर्ग्यवेधेरर्गे। यर्न स्मरक्षुः सास् तृते रेत्वा स्र राजनि रास्य स्मर की रेत्वा स् यः क्षेत्रः यतः वर्षाः वर्षेत्रः देवा राष्ट्रे रोषः योः देराः यद्दः सूदः वः वर्सेत्रः तुः बेर्'यर'त्र'त्रुर्'यदे'ळॅर्'यया युर्च'या विकाया विकाय विकाय कर्रात्वे का

वा धेर्द्रित्वा बुवार्या श्रीवार्या इस्रया वह वः क्षेत्र द्रा वर्षा वर्षा विष् निव ' तु ' दू द रूप र परे ' इस ' पर ' पर कर ' परे दे वा र र द वा र श है वा र श है वा र श है वा र श है वा र श ह न:८८। व्याय:६वाय:८४:२, येट.क्ट.व.त्यय:ये.चटु.वाहेय:क्ट्रियाय: उँ संधित संस्था ने व्हूर देश संने व्यार्ट निवित से दासर देश संग्रान्त से द यदे भ्रिम् न्याया ग्रास्ट मिन्द्र स्ट मिन्द्र स्वास स्वीस मिन्द्र स्वास स्वीस स्वीस स्वीस स्वीस स्वीस स्वीस स धीव'नरने'नर्नन्ति'न्त्रास'वस्य निन्दि स्त्री वर्देन'म् वहवन्दर्नुन्यञ्चन'र्सेन्ध्रन्यम्'ग्री'म्बिन्य्पेन्यम्'न् बुद्यम् ने न्यायास्य निवार्षे न स्वराय देशका है या स्वरा है या स्वरा है। इन गिविः धॅर्परम् रेशासारे किरासूराया सरामिव समेरासारे सामाधितासके। धेरःर्रे । षरः र्वेगश्रामधेरे नेगा ग्राष्ठिरः गविरः गव्हरः वश्राने । षार्यरा विवरः बेर्यंत्रिः देश्रास्य इतः त्रुं बेर्यंत्रे । हिन्यां विष्टेश्रासः ते केन्यर विवार्षेत् यमःविद्वाराधिवःयवेःधिमःभे । देशःवःगात्रुगशःशेंगशःदेःश्वमःश्वमःववेः ळे त्रश्चन हेट द्रस्य संदे द्रसम्पर्य प्रताने हेट खुय हे द्रवा वी र्सेट खुय ॻॖऀॱॻऻढ़ॺॱख़ॖॻऻॺॱॺॖॱढ़ॾऺढ़ॱय़ढ़॓ॱॶख़ॱड़ॖॸॱॿॸॱॻॸॱॺॖढ़ॱॾॗॸॱॸढ़॓ॱढ़ॺॱय़ॱ बेन्द्रियः प्रकरः नकात् श्रुः साम्रान्द्रियः हेत् सेन्द्राया क्रिन् भ्रान्त्र स्वान्त्रा हेन् वश्यानहेर्यायावेरेर्वाञ्च याष्ट्रात्ररवळरावाळेर्दो स्रावन् वेद हैं।

न्गे निक्रान्में द्राप्त द्राप्त द्राप्त क्षा निक्ष प्रमानिक क्षा क्षेत्र

हेन्'ग्रे'हॅन्य्र'य'नेवे'श्ले'खंय'ने'वर्न'क्ष्म'वर्नेन्'ने। नन्'र्येम'ग्रान्यानी' नन्गा सेन् नर्झे स्रा ने न स्था के सारी निन्या सेन् री ने साथ निस्ता साम निस्ता साम निस्ता साम निस्ता सेन् री स निवन्धीय विवन्धन प्रमानुयान्य विवासीय देश ने प्यान्य विवन्धन विवास ग्रीश्राभ्राभ्रित्राम्यानेयाचित्रानेयाक्ष्यान्यान्त्राम्यान्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्य <u> चुरुष्ठरुष्वापाठेगायः बुरुप्ठ इता हुः चुरुष्ठे राष्ट्रेया । वार्ययः वदसः </u> क्रम्याशुः श्रुट्यासूमा होत्या द्रमा द्रमा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा हो। दे स्मर्य वर्षे समाप्या *धुव-*देर-स-वर्श्वेसर्थ-सूस-वर्श-वर्श-उ-वर-दि-स-दु-दि-। वर-वर्षाञ्चरवासेस्राचेत्रायीताया देरास्यानञ्जूस्रास्रुसाव्यानस्यानः वर्षे प्यत्यार्थेत् सूत्र सेस्याया वेवाया पेता सेस्या वेवायि से स्रित् यार्हेन्सेर्स्साकुरानान्दाम्हेन्गुराङ्गेनायासीर्देरातसम्भ्रामार्देर। ने त्रश्रभः र्दे त्यः श्रेषाश्रामः श्रुतः रे त्या वहिंद्रश्रामः त्रासंत्र श्रेतः त्रितः विष्युतः र्र् है। क्षेट्रिंगायदी सहस्यायरानव्यायात्रात्र्य्यायादीः वरात्राह्याः क्रॅं-नर-न्तुग्राय-दरहेंग्नाय स्रम्सेट नर्दे । ग्रायय नहीं सूँव न्या ग्रीहे अ*. ब्रेन* क्री.रेश.की.यश्रायपुर,टकीयायाश्वरायान्ट्र विट. सुन. सुन्या मदी हैट वार्ड ट सदे वट दुं सुवार वर्ष है साय विवादर वह राय है न्दर्यामान्दरावर्षितावर्षे । सामाने । सामाने । सामाने निष्या सामाने । नक्ष्रामान्द्रम्यार्भे श्रुदे हे से मान्वायायदे क महिना हुमानदा सर्वेम नर्दिर नर्दे । ने प्रमान ने से हिंगा थे भी राष्ट्री नवे हे राखा समुदाया से বাধ্যম'না

विष्युंगाने गाहेश तुर पु प्रत्येय प्रति खुया दी।

मर्भाः भ्रे नायदे ययदा वाशुद्रसामसाधी दा हो दानि सासू साम भिरा सुरा भ्रेमामिक के म् बुरावर्षेया र्पवर्षे भ्रेम रेपार रहार भ्रेमा हुमामिक स्थान वर्हेग्'र्झें अ'तु अ'वेट'न सुट्रअ'रा'दे'वे'ग्वर अ'र्वेच'रा'हे'वर्ठ'न'दे'वर्ठ'नवे' वहेंगार्श्वेसर्ग्युर्म्यान्येनर्वे । नेत्रुर्ध्यापराष्ट्रन्यायमा नेत्याहेर्ड्स ग्रीश्वात्व विष्वात्रश्चार्या अर्थेट वर्देश यर ग्रुट केट अद्रश्चार स्ट्रा सुट र् वह्रमान्यान्या मानामी अव बुरान् विषय मनावह्रमानवे व्यवस्था विषय हुने धरःचव्याः धरेः इसः धर्युः धयारः धेवः धर्षेवः धर्युः स्वरुः छेरः। हिरः हेः वहें तर्धेर्यासु गुनारा ने त्यानहेत त्या खूना संदे लेया रना के या ह्या सर वर्चेन्यायास्यात्र्वर्हेवायस्येन्ते। नेवेक्टेंबाक्टेंबाह्यायस्य वर्चेन्या देवे[.]षस्रास्टानी पट्टानी स्रायहुना प्रायहाल स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्व केरा वियावशामी त्यसाहे स्थानानविवान् सर्देन समायन् मेन संभा ञ्चनाः अर्बेदः ऍदर्भः शुः द्वनाः सः ददः ऍदर्भः शुः ग्वदः नः ददः विः नवस्यः ग्रीः हेर्सः शुःर्शेरःनःन्दःकुस्रशःनदेःनशःथेंदशःशुःत्रेतःपरःवशुरःहे। देवेःश्चेरःदेवेः वि'ग्राद्य अ'र्दर ख्रुया' अर्बेद 'या है अ'य्दे अ'य्द सुम्' है द' अहु अ'य्द य'य्द या'य' न्दःवि'ग्राव्यान्द्रभ्याः अर्थेदः बुदः नुः पद्रोयः चरः पह्र्याः पदेः ययः वेयः वृद्धा विरादरा क्विंयरियात्राययायमा हासे ग्वारमी के हिरान दर्से दारा यशन्त्रेत्र सदे सुरासहसामर ल्वास भीर स्टर्गी रहर वी सारह्या ससा दे·विंदिःहेंदायाओससाविदातुःग्रम्ययायातुदानरातुरायादेवे छेः इति

यत्रेयानवे यस सुन्य स्थान स्था

कॅर्निन्दर्भात्रे त्या हे दे श्री मा बुद्दर्भात्र विष्या वा वे प्यक्षा वा वे प्यक्षा वा ने·अर्चनःमदे·वॅदःत्ःशॅर्शेर्स्न्वाःमदेःत्ध्रुत्ःश्चेंशःचीःस्टःश्वेनशःचीशःशेः हैंगायदेगावयाळावदेवासे त्यायया न्यन्स्याप्तियास्यापिया क्रियान शें शें शें शें रान श्रीयान में यात्रीया ने यात्रेया से शें शें शें रा हेंग्राप्रदे:<u>नध्र</u>ाञ्चेराध्यायाः हेन्। ग्रीयावेश्यव्येवः प्रमः व्याप्ययायः ब्र-्न्रव्येयानर्थे । यद्गे प्यन्त्र्यं द्वेन्यान्ये व्याप्ये व्या ग्रवसाय के विष्मुवसाह्य प्रमाय कर हिंद हेद खाद से ग्रास स्वी । विस हिंद यव रवा यय ग्रम् देवे देवा हु इय यम हैं वा य प्रम्य या विवास नक्रुवादे किदायाद्यीयायाते। येययादे किदायायादायी के क्रुवायी प्रकर मंन्द्रान्य सार्क्ष स्वतः स्वत शुःश्चित्रनिते के लि मान्याप्त मान्याप्य मित्र स्त्रीया नित्र स्वाप्त स्त्र स् नर्हेन्द्री ने त्यावि मान्यान्य स्वाया अर्घेन्द्री बुर पीताया वर्षेया निष्या रास्री सर रहेत नहेर अस्य अदिष्या निया मुर्ग स्था कराया *वे न्ध्र क्षें सन्दे केन् भ्रै न्थ्रे विवाय विवाय क्षे क्षे क्षें वा प्रमाय विवासे न्वें का प्रमा* <u>नद्यनः भ्रें अने केन के अभ्रे में जारा प्रदेव पर्वे । जाके अणा क्रय अर्थे हीं ना प्र</u> वे से हैं न प्रदेगा त्रुवाश वहुव या द्रिवाश प्रदेश वे वावश दर ह्या । यः प्राप्त विष्णा । विष्णा विष्णा विष्णा । विष्णा विष्णा विष्णा विष्णा । विष्णा विष्णा विष्णा विष्णा विष्णा वि

ञ्चा अर्वेट या न सुन रहेया र्रो वा रा

क्षयाशुः र्ह्यान्य स्त्री ने प्यम् त्रुवा स्त्रीय स्त्रीय प्यम् स्त्रीय प्रमाय स्त्रीय स्त्री

दें त्रस्र वि नात्र ग्युन त्र राजें राजें राजें ना प्रदे न्युन क्षेत्र श्री राजें रा वावर्षःकःवर्युनःधरःचन्वरःधःदरःववायःविःसूसःवा रे वे विःवावर्षःसःस्वा मित्रेश्वर्त्याप्राप्तर्पात्र्यात्र्यात्राच्या स्वर्षेत्रास्य स्वर्षेत्रास्य स्वर्षेत्रास्य स्वर्षेत्रास्य स्वर ग्रवसारग्र्या से से प्राप्त वि ग्रावस हे प्रवस्त ने प्रमः ग्रुस स्याप से सम् मर्भावे नाम्राप्त्युन मदे हिन्न म्रुम्स माधिम मर्भावनायान सेन हिन् ग्वितः धरः भ्रूगः अर्वेरः वशुनः सदेः सूः रेषः ने सः वगः गोः न्धुनः क्षेत्रः श्री यः हेः ग्रेग्'स'य्द्रेत्'सर्'त्र्रा'संदे'भ्रून्य'ग्रेग्'प्रॅन्'स्य'ने'य्दर'न्यस्य रास्री भूगाः अर्थेटः अः गुनः परिः सूँ तः नुः पटः नृहः पटः नुः नृहः परिः अवरः वर्ह्ने न प्रति श्रेषाया ग्रुया देशियात्र या विष्यात्र या विष्यात्र या विष्यात्र या विष्यात्र या विष्यात्र या वे न धन क्षेत्र श्री राज्ये में ना या प्रदेव की त्रायम में मानु प्रायन पर न्द्रीम्बार्यान्ययाने ने राजवे ने वे स्वार्यान प्रवे न्वर न् जुका पर्वे। । अर्देर-त-विःग्वत्रभः सः ग्रुयः सदेः श्रृंत-त्-त्वेष्णः रेशः ग्रीशः त्युत्-सदेः सबरः वर्ह्ना मदे वर्ह्न अस्त्र स्वाप्त स्वा ग्वर्राक्षः चह्रदार्थे स्टार्स्स्वर्रा ग्रीराइट्राया से दिटावर्रा से से से हिंगा परे। क्रेन्याने खूना अर्वेन वेन न्यानेन नया नुन्य ने वा प्रमानिक विष्य

खेत्र्त्त् । नितः द्वे राद्धः श्रे माळा नराम् श्रान्तः श्रे राद्धः स्वराहे द्वे राद्धः स्वराहे स्वराह स्वराह

यसःश्वेदिःदेवःनशुःन

इत्वित्वहित्यराध्यः श्री क्ष्यायराध्यः विक्रान्यः विक्

स्वाः अर्वेदः यः नश्चनः स्वाः अवाश

रानश्चेत्रायाञ्चन्यावर्षे व्रुवार्येदानवे श्वें यायायात्रवात्रकी दाने वे प्रश्नेता हाः यानसून। देवसान्गरकेंसाबस्याउन्गी मावि केत्रसे यसावन्याया धेन्टिश्रामदेन्त्राम्ब्रींन्यावर्गन्त्रीन्यावह्वामराग्रुशाने। न्नीःश्रे न्नो न दुवे वह्ना क्रेंना यावन हिरा क्रेंन्य न विवे त्यया नु क्रून नु विन्य राविगाचा ने सूराक्षेत्राचु छूटा द्वि के त्राक्षेत्र इस्य राक्ष्याया शु छुटा या त वर्षिरः नः श्रुः न्दः हो : इवा वी : हे अ : न्ये वा अ अ दः न् : न अ अ अ व्या वि दः न व श्चे त्यश्च भ्राष्ट्रिया व्याप्त ने त्यश्चित्र न यादायश्च प्राप्त मुल्यश्च न *ৡ৾য়*৽য়৾৾৾৾৾৾ৼয়৽য়৾য়ৢৼয়য়৽৾৾ঢ়৽য়ৢ৾ৼ৽ড়৾ৼ৽য়৾য়৽য়৽য়য়য়ৢৼ৽য়য়ৣ৾ৼঢ় विर्म्स्यायमार्भेषानवे यमानस्रमायाम्स्रमार्भे यार्थे वार्यमान्या धर-र्-र्-रामेश-वाद-विश्वात्वदशः धरे श्रेर्-श्रेर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रिर्-श्रि ने भूराक्षेत्रातु पदीरापी कें राष्ट्रीरा ह्या राष्ट्रपार्था राष्ट्रीरा श्रेन्'सर्कें र'ख़ूर'न'हे'वर्न'न'ने'नविव'न्। स'इसस'ग्रूर'ने'वर्न'नर'र्सेर' नःधेनःयः गुरुषे। गुरुषान्दरिश्वेदाहेते हत्याउदागुरा कुनःग्री सेसरा श्रुम्यायायमे हे श्रेष्ट्रीयायमम् मर्गेयाने ने से मार्थे मार्थे मार्थि म रेस्राम्हेर्रास्म्यास्य स्वारासेन्या सेन्या सेन्या स्वार्थित ।

र्बेस'म'र्के'म्याप्त बुद'या रद्य कुद्र श्चेत'म्य होद'मेवे' श्चेत दुर्ग'द्रद्यावतः कुर्भेन्छेर्छेर्छेर्थे नर्भानिके स्वायायायायायाया । विद्रायर र्रम्पूर्थे यायाय राद्यार्धेशःश्रेयाः नर्धेशः व्या व्याः स्ट्राय्त्रीरः दर्षेशः वृशः इस्रशः ग्रेशः अमिरायायायन्दिर्वीयाद्यराष्ट्रीरावर्ष्ट्रभाषायायन्दि । दिव्य यर धेत प्राया वेश व्या विदाय र प्राया प्राय प्राया प्राय प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राय प्राया प्राय प्राया प्राया प्राया प्राया प्र ख्यायायायाययायर त्याया हिरारे वहीं वास्त्राया वर्षा सेरायाहिया ग्री भुग्नाह्मा कर प्रत्याया निष्ठा हुए। के प्राप्त के रान्द्राक्षे विवादेरावववावयाक्षे द्वाद्वाक्षेत्राच्याक्षेत्राच्याक्षेत्राच्याक्षेत्राच्याक्षेत्राच्याक्षेत्राच्या यान्सुरारी । देखरानवेष्मस्यानिवादरानेसार्यानेसायाने बेट नित्रम्थ माधित हो। सर हित माया पित्र स्था हुर मा विवा से दाया दिर्न पीत्र दें। । यदे प्यर देंगा अ देंगा अ निर्मे अश ग्रीत वेंदि अ वेंदि अ या र्वेन पर्देन के र पर्वे न न न वे दिया में दिया में दिया में कि स्थाने कि स्थाने में स्थान स्थान नश्चनायर्ने नाहे रहे रहे रहे रहे नाहे नाहित्य यः इसरा है 'पट सेट 'सर से सरा ही 'वादरा करे रहे साट्ट क्षा प्रदेशों 'प ग्री खुर्राष्ट्रें रार्रा ह्रें वार्रा संविवा त्यारे रारा तर्हें रत्रा द्वें रारा धेद दें।

क्रायह्माद्रमें भारते। यदी स्माराययायायविदासंदेश्याने भाराहे साराग्या पःकुरःनरःश्रूरःतःयेग्रायःर्क्षेग्रायःवस्यःउन्ःग्रेःहःनःवहनःप्रयःनश्रेतः क्ष्यायायन्। ने निष्ठानु निष्ठानु निष्ठा स्थाय हैं भुगाया कुरया निष्य पर्छिता शुः भ्रें र प्रदेश्या अर्देव वेव के प्रर श्रें र व शे ह्या श प्रप्र प्रवेषिः ৡয়৻৴য়ঀয়৻৸ৠয়৻য়৻য়৻য়৻য়^ৼয়ৼয়৻য়য়৸৻য়য়৸য়য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়য়৻ राक्त्रस्थात्याचीयेयात्रमः स्रूटाकायसायत्रसायातेसामा स्कूटानाधीवास्त्रसात्। नमसमाया यमारन्यमानर्भिमायायार्थे निर्माता योग्ने नामायाया यः र्र्भुः भ्राकुर्यात् वर्या र्वेत्याहेरः ग्रीः र्र्भुः कैवा उया त्रवेत्रः नदे हे अन् भेना अन्स्य अन्य अया है हो न से स्य उद ही ने द हो न पदे र्ह्से 'भुग्नर्थ' इग्' श्रे स्वरंद ने वा के द ही स्वरंद मा क्रिंद से स्वरंद है द नरमानामान्य मुना मुनास्माने स्मानास्मान्य स्मान्य स्मान्य स्मान मान्दरास्त्रक्त्यमादिन्द्रमान्द्रियाकेरानाः भूषायाः स्वायाः नेशःग्रीशः सळ्दः सरः वहेदः पदेः क्वेंशः न बुदः नदेः न्येगशः गान्नः वयशः उद्दानिवाया वयायाययः सुन्तुन्दा शुः सुन्ते से दिः हे दाया श्री शुः श्रेश्रश्राद्यो नदे द्रियाश्रासायाश्री र्ह्स्ट्रासदे इसायापेट यो त्रुत्र तुरूर सर बूट'व'हे'गिठेग'मदे'गव्रशक्ष'क'ल'गर्डे 'र्नेर'र्सेट'वर'र्गेट'स'ह्रस्थराग्रह्र है। नेश्रासर्वेदाद्यायान्त्राम्यस्यसःग्राम्येश्रासम्।ग्राम्य सर्देम्द र्धेग्रायः रे नर्याः सेंद्रन्यः कुत्त्वो नवे र्धेग्रायः वस्य उत्यानर्गेषः तुः उट्टान विवादमें अर्थे । भ्रेअ अर्ज के द्रार्ध त्या श्री देया या या श्री स्थाप स्था

বান্ট্র ম'মা

विन्यं मर्नु हैं है वे वेवायायाय सून पवे खुवा दी

ने भूर अर्रे स्वारापिक्रा गिरे प्या मुत्र सेंट न इससाय सुर् देवा हु दे वार्रे द से वार्य स्वाय र स्वाय वार्य ह्वा यर हु हो विस्ति दे हैं। ळॅंश'ग्वित'इसस्य प्रायं के संवित हु'न गें त'य'न र सु र न् केंग्रस'ग्हिस' <u> हॅ</u>न्यश्चर होत्र प्रदेश होत्र त्या प्रह्मा द दी त्य अङ्ग्रेत त्य श्वा शुरु श्वा श क्ष्र-र्ह्मिणअर-मुः अन्त्रेष्ठ नगुर-८८ नगवन सुनः अनि अर्थे अर्थे अर् नन्द्रमित्रस्य स्वरंदे देश सम्बद्ध स्वरंदि । विष्या विष्य स्वरंदि । विष्य वश्रवासरश्चेव छेट्छी प्रदार कुट्से हित्य स्वयं वश्रविवा वीया कुरश्चेत्रपराद्य देवसादेवे के न बुदानवे द्या के नाद्दरश्चे सामा क्या सहत्वस्त्रस्त्रिं स्तर्त्त्रस्त्रस्त्रम् स्त्रित्त्रस्त्रस्त्रम् स्तर्त्त्रस्त्रम् स्त्रम् लूर्यारा त्रंत्राची.लूर्ये भेरे प्रति में राजा कुरावारा प्रताम का मान्या किया विकास में भाषा मूर्य यायायनदारादनार्यात्र। क्षेत्रार्यवेष्ट्रदान्यायान्येत्रायायायनदारेदान्तः यार्वी शाव वटा श्वरावर्के शायवे वित्र श्वराश हु श्वरी वदी द्वा के व्या वर्श्वेश मदे निवे प्रेम में ने निवा से निव्यास स्वास स्वास मिन में निवा में हिन

यश्चर्यात्र श्चर्यात्र स्वर्यात्र स्वर्यात्य स्वर्यात्र स्वयात्र स्वर्यात्र स्वयात्र स्वयत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वर्यत्य स्वयत्य स्वयः स्वर्यत्य

ने सूर न्या के वा न्दर के या ना सुदा ना ने या कृता या गी व्यया न क्षेत्रा यर ग्रुपाया विवासर वर्षेत्र प्रदेश देसाय खूदे विवर्ष र विवर्ष कर वा कुर है। हिर्यायात्रयात्रम्परायेवा नश्चिया नश्चिया ने स्वाया ग्री यया ग्री श्वर सेरा अ'भेव'मवे'श्वर'तु'वे सुर'र्से 'त्राप्ययात्र हुं अकेत्'या सरात्वायात्र र वेव मंदे च अया मंदे क्या हैं ना पर्ने धेव त्या ने क्वें मान मान अपन्म खुरा ५८.जूटश.श्रुर. इस्रम् १९८.सर. २४.श्रु.संट. यर.श्रुर. यर.श्रुर. यर.श्रुर. रेसकेर्पिरपिर पेरे हिर्दे । देप्सर श्रम्य ही हिस्स हैं ना श्रूर्य पर है हिया व শ্বমানতমাশ্রীমানুমাশ্রবাদ্য শ্রীবাশ্রীমার্ক্রীনাউদানমিন্বমমাশ্রীক্রীনামা ब्रैंन्न्,रुन्न्यः धेव्या ने वया है न्याया दे दे सामा कुन् हे । हिन्या सावया शुःवर्, नःडं अः श्रीः व्ययः श्रीः कः ११ शः रे रहे अः वः श्री हः नः वे स्कूर् श्रे र् नः ने च्याची द्वीं त्या स्वीं या क्षेत्र स्वां स्व हो स्वां स्वीं स्वां स्वा

रमयाध्रवायेषायारारायन्तरायेषा । पारारे प्राचित्र सरसे सहर के अदी । वारम देवे बिर दु वामय वर सहर प्रायम। । र्धेग्रयायदिरःकुषायदेःषयाय वराष्ट्रायदेःस्रेग्। द्यायरःविग्। तृ स्यायरः याशुराने । ने तया नभूता परि यात्र न इसया या सुया मही पति त वितास हिता यदे स्राप्तरा इसरा बदाया । यसा प्रवादि स्पर मेर से विपादरा दुसरा |र्द्धयादे।सर्वेदावस्वरायस्वरायाक्त्र साधिताद्वात्य स्थिताद्वराहि।स्वेदा यश्रिद्रश्राराग्वा विवास्यकेवायी पर्वेद्रास्य पर्वे प्राधी अवापन यदियाची प्रथा ची देशाया है। वियायाय सम्यस्य स्था देशाय्य स्था है। वियायाय सम्यस्य स्था देशायायायायायायायायाया कुंवा । ५७ उट क्रु अ सेव देव की पावर क्रस्य ग्रावा । सरकंट सेट हें मुंशक्दरद्वायाता । वर्ते स्वार्हेन्यायस्य त्यायदे ख्रारं देन्याया ग्रीया । कुषानिवर्निर्दिन्यवेष्यस्य स्यानियानी सान्त्रमा । क्रियास्य सन्द्रमा र्देग्रअःवित्रः हुर्मेग्रअः सर्रात्य । नर्गान्ते : ह्रीअः सदे न्दरन्दरः ही अःसः है। दि:क्षरायदेरावे वेंद्रशासरागुरायाता दि विवाय विवाय हराया श्रुतःश्रूरः नद्याः तळग्राशःश्री।

न्रस्ते स्टर्र त्यन् त्यम् क्रिया । क्रिन्त्र त्या क्रिया व्याप्त त्या व्याप्त व्याप्त त्या व्याप्त व्या

याहेश हो दः र्वेया । स्टायी है प्रविदः हैयाश प्रदेश्य असी यावदा । श्याश द्या <u> चुरात्र्या । कुलानदेः नसूत्रायाधुत्रः नेटावहेत् सूर्रः नेवा । नसूत्रायः नेत</u> क्रेव्रायक्रेवाचीयायात्रमा विचायाराष्ट्रययायराष्ट्रस्ये स्थितायार नेरावी । श्वेराहे केवार्य याधीरास्यान श्वेर्ग्ना । धवायने वे याहेरा ने'नार्ययानर'तेन'सर'वेन । श्रुरानरुराक्तुयानदे'स्न् तुराद्येदायरा यश विवाश श्रुन रहर कुन यश श्रु देश प्रश्न श्रुट । विस्तर्दे द ह्र स्र श श्रु । धेर्यान्यया क्षेराविता । क्यानिया सहित्या रेता रेता रेता । यस नवरःश्चेताःमदेःसञ्चनःश्चेतःश्चेतःश्चेतःशेतःश्चेतःशेतःश्चेतःशेतःशेतः भ्रे.भ्रेव.भीयो क्रि.स्यम.भीय.धे.भीका.यमायम्यामात्राह्मी विष्यार्यात्रमा न्दायन्य न्या शुरुषे । वादा के विवाय सके वाया के का के न्या विकास द्धयानविदानसूनायानहेंदायाने प्ये के । सम्मायन सम्मानिताने सम्मानिताने । मैंग्रायाचेर्डिर। । नग्राक्ष्रामुं अर्क्षेत्रामुं ग्रायाच्या सुराहेग

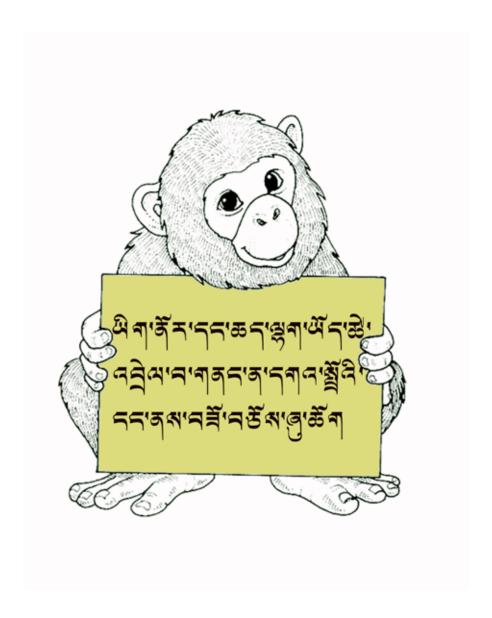
ठेशक्ष्यानिः मुख्यस्य केत्र स्वाक्ष्य क्ष्य क्ष

वरःरेगःगवे से से रूरायास्यास्य स्य सुरसावसारे वे रेव न सुरायसार्ख्या नवित्र-त्-श्रुग्रायाष्ट्रस्य सु-नवियाने। वर्गे न-तु-सदे-वर्ते न-स्यास्त्र-सदे-क्षें त्रानिष्ठ्रत्यः रेत्रे रेते केते हाया न्यान्य स्त्रुर्यः न्येत्र सर्वेता कुष् विस्थान्ता र्वेदान्याग्रीस्यान्हेदाह्मस्याग्रीयास्यान्याहेगानुष्टिया *য়ৢ*ॱनश्नामःपदेःन्मःपःग्रुःदन्यःनःदहेनःपदेःग्रुवःळनःमष्ठेनःपःन्नः नहें न त' त' श्रेवाश पदि हिंगाश पद द खुट वी 'पें व हुव देव से के दु अश नकुत्रप्रयाप्रद्यादेवे वित्रिं भेर्ष्या नहें त्र ह्यया भी वित्र त्र कुषा यहंत ग्री हिंगा भूर अर्दे द पर अर्थे निर्देश के दारे के दारे का प्रदेश के दारे के दारे के दारे के दारे के दारे के द न्गॅ्रेन्यकेंग्नान्ययान वरासें न्रा ग्राव्यायरानें व्यावेराव्य सार्थे अस् र्यानभ्रताब्दा र्याष्ट्रियायर्राक्ष्यायाण्याव्यात्र्यायाया धरःश्रुद्रअःधर्यात्वुदःखुवार्यायः इस्रयः ग्रीःवार्डेः वेदः ग्रुद्रः वेदः वश्चवः धः रेत में के पाशुयाय के या के रापा हे या शुर्या शुर्या स्ट्रा या है या पुरा सूत रारेत्रसॅंकेदे।ह्यरवह्यरावायाञ्चाद्राव्यवदे भूदाविशाञ्चावाये *शः* ह्रेंग्रयः पदे न ने या गहेत : ये अया न्यद केत : ये : भून्य : यकेंग : न्ययः नवर में विषा धेर्म शुःग्राम्य सदि द्या स दे स हे नमः न सूयः नदे नगदः सुत्य न्दरनु सुद्रमा क्या हे न दुव न्याय वया समिते सळव उव त्या न वे वि रानाव्याकेतु बुरायायानकुरायाद्या श्रुवाक्यानकुरायिया ग्री देशपार्चे अभीता हे नहुं व द्वात्यान न न में देश समय उव त्या में हैं न अ न्नरायायकुर्पार्या रेंहिंग्यक्षार्थियायायायकुर्पायेयायाकुर् रा. व्राथा स्थाया में प्राथा निया प्राथित । यथा क्षेत्र में अपन्त বাধ্যমান্ত্রী শ্রী বি মর্কর 'हे দ শ্লির দার্ড মানার্ট বাশ দবি ঠে বা ক্রম শাস্ত্র না यान्यस्य त्रास्य विद्धानाः केत्रः निर्मे सुरामाणनास्य ग्री'यस'रेस'ग्री'विंग'इसस'य'गवि'ग्रस'दस'यस'रेस'र्'स'दस'गवर्' इसरान्ध्रात्रे रात्रे। यसामी कार्यराया वित्रात्रे रात्रे वित्रा में रिसासाय विवासा धरावर्गेन्यावने दे। यारशासेवे बिन् ग्री भेना हु के वार्या या श्रानास्या वर्चस्रायासी वहिषारायदे स्वित्रायान प्रोप्तायास केतासी यानक्केत्रापिक क्षत्रात् ज्ञूतानिक के अस्यात्यक केत्राचे हे न द्वतात्र सामानेत् सन्दर्भाषाः सेवासायदे न्नुः सन्दर्भाषाः इससायीः विनयः ग्रीः ह्याः श्रीः नेद्राः योदः या अट.र्. क्रेंश संदे र्यो क्रेंट क्रेंट या संभू र क्रेंट विषय क्रेंच वट य्या श मदेः नमयः श्रीशः श्रुमः नुष्यः नदेः नने नः ग्रन्थः श्रीः प्यमः नित्रं न्याः र्भरागेवे विषामी में विष्र्र, प्रेम्यायायम् श्रुमानवे पी मो पाने पर्से प्रस्त्रय न्ययान बन्धेत्। । यने या ग्राम्य स्वास के से विष्य स्वर्थ के से विषय स र्धेग्रयागुन एक्ष्यायम होन न्यायम सुम हेग्। श्रम् श्रम् । ।।

न्यरः जुरः श्रें दः केंग

हे स्यार्त्ता वि निर्दे क्ष्या हु न्यु के ना हु न्यू के ना हु न्यू के ना हु न्यू के ना हु न्यू के ना हु ना के ना न्यू ना निर्देश के निर्देश के ना निर्देश

त्रज्ञरःग्रारः यदरः श्रुरः र्केग् पदे रिगे नर्थे दे र्श्चेत् रक्षेत् । हुः तृ ग्रुदे रिगे र्श्वेरः र्केशः श्चार प्राप्त राज्या द्वार स्वार्य स्वार्य



รู้ ซู้ ซุ๊ ซุ๊ ซุ๊ ซุ๊ marjamson618@gmail.com